हमारे घर में पुनरुद्धार की ज्वाला तेज़ी से जले!

परिचय

खबर है कि ईटन आग (Eaton Fire) के कारण—यह एक जंगल की आग है जो ईटन के पास तेज़ी से फैल रही है; ईटन वह इलाका है जहाँ मैं अभी ला क्रेसेन्टा, कैलिफ़ोर्निया (USA) में रहता हूँ—असंख्य लोगों ने अपने घर खो दिए हैं। इसके अलावा, इस आग ने 16 लोगों की जान ले ली है, 6 दमकलकर्मियों को घायल कर दिया है, और 5,718 इमारतों को नष्ट कर दिया है (16 जनवरी, 2015 तक के आँकड़ों के अनुसार)। पिछले बुधवार की सुबह ही मुझे ईटन इलाके में जंगल की आग भड़कने की खबर मिली थी। उसके कुछ ही देर बाद, हमारे अपने मोहल्ले के लिए भी खाली करने की चेतावनी जारी कर दी गई; नतीजतन, जंगल की आग के खतरनाक धुएँ से बचने के लिए, मैं अपनी पत्नी, सास, साले और अपने कुत्ते के साथ वहाँ से निकल गया। मेरी पत्नी, सास, साले और कुत्ता मेरी साली के घर रहने चले गए, जबकि मैं चर्च चला गया, जहाँ मैंने पादरी के दफ़्तर में लगभग तीन दिन बिताए। उस दौरान, जब मैं ऑनलाइन स्थिति पर नज़र रख रहा था—न केवल ईटन आग पर, बल्कि विशाल पैलिसेड्स आग पर भी—तभी अचानक मेरे मन में "Revival" ("Behold the Desolation of This Land") नामक एक समकालीन ईसाई गीत की दो खास पंक्तियाँ कौंध गईं। ये वे पंक्तियाँ थीं जिन्हें मिश्रित-लिंग वाली स्तुति टीम ने पिछले बुधवार की सेवा (1 जनवरी) के दौरान ईश्वर को समर्पित किया था, और जिन्हें "Victory"

स्तुति टीम और मैंने भी नए साल की सेवा (5 जनवरी) के दौरान इसी तरह समर्पित किया था: "पुनरुद्धार की ज्वाला तेज़ी से जले," और "पवित्र आत्मा की हवा अब हम पर बहे।" शायद इन पंक्तियों के मेरे विचारों में आने का कारण सांता एना हवाओं की ज़बरदस्त तीव्रता थी—जिन्हें अक्सर "शैतान की हवाएँ" (Devil's Winds) कहा जाता है—जो उस समय चल रही थीं। वे इतनी शक्तिशाली थीं कि मेरे घर के सामने बिजली की दो लाइनें टूटकर सड़क पर बिखर गई थीं; नतीजतन, जंगल की आग पर काबू पाने की दर 0% ही बनी रही और वह पूरी तरह से बेकाबू होकर फैलती रही। उस समय—गुरुवार, 9 जनवरी की सुबह—जब मैं अपने चर्च के दफ़्तर में था, मैंने मरकुस 4:35–41 पर आधारित एक छोटा-सा भक्तिपूर्ण चिंतन लिखा (विशेष रूप से *मॉडर्न कोरियन बाइबल* अनुवाद का उपयोग करते हुए)। मैंने इसका शीर्षक रखा: “चाहे मैं एक भीषण जंगल की आग के बीच डरा हुआ और संघर्ष कर रहा हूँ, मेरी आत्मा हमेशा शांत रहती है; मेरी आत्मा, मेरी आत्मा शांति में है...” मैं यहाँ उस लेख का बस एक छोटा सा हिस्सा साझा करना चाहूँगा: “जैसे-जैसे मैं उस अंश पर और अधिक मनन करता गया जिसमें कहा गया है कि ‘जिस नाव में चेले यीशु के साथ यात्रा कर रहे थे, वह डूबने लगी’ (मरकुस 4:37, *आधुनिक कोरियाई बाइबिल*), मुझे धुंधली सी याद आई कि लगभग 22 साल पहले स्वर्गीय पादरी ओक हान-ह्यूम ने कुछ कहा था। यह कोरिया के अंशान में एक रिट्रीट सेंटर में ‘चर्च पादरियों के नवीनीकरण परिषद’ (Kyogaenghyeop) द्वारा आयोजित एक रिट्रीट के दौरान की बात है; उन्होंने कोरियाई चर्च का वर्णन करने के लिए एक जहाज का रूपक इस्तेमाल किया था, यह सुझाव देते हुए कि—ठीक उसी क्षण—यह जहाज (चर्च) डूबने की प्रक्रिया में था। जहाँ तक मुझे याद है, उनका मुख्य बिंदु यह था कि यदि हम, यानी चर्च के नेता, अपने मानकों को गिरा देते हैं, तो कोरियाई चर्च पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगा—ठीक एक डूबते हुए जहाज की तरह। शायद इसीलिए—जब मैं हाल ही में लगी जंगल की आग की तस्वीरें और वीडियो ले रहा था, और उन्हें इंटरनेट पर तथा KakaoTalk के माध्यम से दूसरों के साथ साझा कर रहा था—तो मुझे अचानक समकालीन भजन ‘Revival’ (*Buheung*) के बोल याद आ गए। हमने पिछले सप्ताह बुधवार की अपनी आराधना सेवा के दौरान (https://youtu.be/8jC7qEvXVcw?si=hwLdzcNiJD90KnVp) और फिर रविवार को भी परमेश्वर की स्तुति में यह गीत गाया था: ‘नवीनीकरण की ज्वालाएँ तेज़ी से जलें...’ ‘पवित्र आत्मा की हवा चले...’ जब मैंने इस भीषण आपदा के संकट को अपनी आँखों से देखा, तो मैंने प्रार्थना की—और अभी भी कर रहा हूँ—कि पवित्र आत्मा की हवा हम पर चले, जिसकी शुरुआत हम चर्च के नेताओं से हो, और जो सच्चे नवीनीकरण की ज्वालाओं

को प्रज्वलित करे। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि एक सच्चा नवीनीकरण—वह जो पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित हो—पश्चाताप से ही शुरू होना चाहिए। हम, यानी चर्च के नेता—जिनमें मैं भी शामिल हूँ—हमें अपने हृदयों को फाड़ना चाहिए और परमेश्वर की ओर लौटना चाहिए (संदर्भ: योएल 2:13)।" [पश्चाताप] (पश्चाताप), मेल-मिलाप, बहाली, सुधार, नवीनीकरण। पश्चाताप के बिना मेल-मिलाप, बहाली, सुधार और नवीनीकरण सब अर्थहीन हैं! मैंने उस दिन (गुरुवार, 9 जनवरी) KakaoTalk के ज़रिए अपने चर्च परिवार के साथ यह छोटा-सा बाइबल-आधारित विचार साझा किया। इसके जवाब में, हमारी मंडली के एक सदस्य ने मुझे एक निजी संदेश भेजा जिसमें ये विचार थे: "आपने 'Victory Room' में जो संदेश पोस्ट किया था, उस पर विचार करते हुए—और नए साल की शुरुआत में हमने जो भजन 'Revival' साथ मिलकर गाया था, उसे याद करते हुए—मेरे दिल में एक गहरी कृपा का अनुभव हुआ। हालाँकि ये शब्द उन लोगों को असंवेदनशील लग सकते हैं जो अभी हाल ही में लगी आग के बाद के हालातों से गुज़र रहे हैं, लेकिन अगर हम अपने नज़रिए को प्रभु के वचन पर आधारित करें, तो हम इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते कि पवित्र आत्मा—अपनी पवित्रता और अपनी गहरी समझ के साथ—हमें व्यक्तिगत रूप से यह निर्देश देते हैं कि हम जिन *सभी* घटनाओं का सामना करते हैं, उन्हें केवल मसीह के नज़रिए से ही समझें। मैं यह स्वीकार करने का साहस करता हूँ—और यहाँ तक कि मैं उस भीषण आग के लिए धन्यवाद भी देता हूँ—जो इस नए साल की बिल्कुल शुरुआत में अचानक लगी थी। मैं इसे एक दयालु उपहार के रूप में देखता हूँ: 'पवित्र आत्मा की आग'—ठीक वैसे ही जैसे हमने अपने भजनों में गाया था—जो हमारी मूर्तियों को भस्म करने के लिए ज़ोरदार ढंग से नीचे उतरती है, चाहे वे बाहरी हों या आंतरिक (मुझे लगता है कि यह एक ऐसा विचार है जिसके लिए लोग मुझ पर 'पत्थर बरसा सकते हैं,' है ना? 😅)। इस दुनिया में, Santa Ana हवाओं को अक्सर 'शैतान की हवाएँ' कहा जाता है; उनके बारे में कहा जाता है कि उनकी दिशा इतनी अप्रत्याशित होती है कि वे आग बुझाने के प्रयासों को बेहद मुश्किल बना देती हैं। यह सचमुच बाइबल की सच्चाई की पुष्टि करता है: पवित्र आत्मा सचमुच हवा की तरह है—हमें न तो यह पता होता है कि वह कहाँ से आती है और न ही यह कि वह कहाँ जाती है [(यूहन्ना 3:8): 'हवा जहाँ चाहती है, वहाँ बहती है। तुम उसकी आवाज़ सुनते हो, लेकिन तुम यह नहीं बता सकते कि वह कहाँ से आती है या कहाँ जा रही है...']। यह परमेश्वर का एक ऐसा अदम्य कार्य है जिसे कोई भी इंसान कभी समझ या नियंत्रित नहीं कर सकता—पवित्र

आत्मा की वह हवा जिसे कोई भी कभी रोक नहीं सकता!" मेरी दिली उम्मीद है कि, इस दुख-तकलीफ़ के बीच भी, परमेश्वर के लोग—जिनके पास सुनने के लिए कान और देखने के लिए आँखें हैं कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है—एक दिन मसीह यीशु के जीवित गवाहों के रूप में स्थापित होने का परम आशीष प्राप्त करें। प्रभु द्वारा दिए गए पहले अवसर पर, वे पवित्र आत्मा की उस अद्भुत शक्ति का पूरे आनंद के साथ प्रचार करें और उस पर गर्व करें—वह शक्ति जिसने उन्हें आत्मा की उस अग्नि को कृतज्ञतापूर्वक अपनाने में सक्षम बनाया, जिसने व्यक्तिगत रूप से उनकी मूर्तियों को भस्म कर दिया (एक ऐसी अग्नि जो एक विरोधाभासी प्रेम का प्रतीक है)। क्योंकि सभी चीजें हमारे पवित्र और धर्मी सृष्टिकर्ता, यहोवा परमेश्वर के सृष्टि-पूर्व के इरादों और योजनाओं के अनुसार पहले ही पूरी हो चुकी हैं। इस प्रकार—भले ही एक पल के लिए हम चौंक गए, भले ही एक पल के लिए हम डर गए, भले ही एक पल के लिए हम दुखी हुए—ऊपर से उतरने वाली एक चमत्कारी शांति से पूरी तरह अभिभूत होने के आनंदमय निशान हमारे जीवन में और भी अधिक और और भी गहरे होते जाएं। मैं पूरे दिल से, पूरी लगन से यह प्रार्थना करता हूँ। हल्लेलूयाह! मैंने इस पोस्ट का जवाब ज़ोरदार "आमीन" के साथ दिया।

फिर, लगभग छह दिन बाद—कल, 15 जनवरी को—हमारी ऑनलाइन बुधवार की आराधना सेवा के दौरान, हमारे वरिष्ठ पादरी ने हमसे उन लोगों के लिए एक साथ प्रार्थना करने को कहा जो कष्ट झेल रहे हैं। जब मैं प्रार्थना करने के लिए मास्टर बेडरूम में अपने बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठा, तो मुझे पादरी यू की-सुंग के एक उपदेश की याद आई, जिसे मैंने कुछ ही दिन पहले अपनी कार में बैठे हुए YouTube पर सुना था। उनके संदेश का सार यह था कि कोरिया में अलग-अलग परिवारों को जिन संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है—विशेष रूप से घरेलू मुद्दे—वे कुछ मायनों में, पूरे राष्ट्र के सामने आने वाली चुनौतियों की तुलना में कहीं अधिक गंभीर और विकट हैं। यह बात मेरे दिल को गहराई से छू गई; परमेश्वर की कृपा और मार्गदर्शन से प्रेरित होकर, मैं एक ऑनलाइन सेवा (ministry) में संलग्न हूँ, जहाँ मैं अपने Naver Blog (https://blog.naver.com/kdicaprio74) पर निजी टिप्पणियों के माध्यम से या KakaoTalk (ID: jamesthemonk) के ज़रिए विभिन्न लोगों से बातचीत करता हूँ। इसके अलावा, लगभग हर साल, विदेशों में मिशन क्षेत्रों से लौटने के बाद, मैं कई अलग-अलग लोगों से मिलने के लिए लगभग दो सप्ताह तक कोरिया में

रुकता हूँ। इन मुलाकातों के माध्यम से, मैंने एक ऐसी सच्चाई देखी है जिसे नकारा नहीं जा सकता: बड़ी संख्या में लोग वैवाहिक कलह, अपने बच्चों से जुड़ी समस्याओं और परिवार से संबंधित अन्य संघर्षों के कारण गहरे कष्ट में हैं। वास्तव में, जिन सात जोड़ों के लिए मैं प्रार्थना कर रहा था, उनमें से तीन का तो तलाक भी हो चुका है। इस बात ने मुझे "Revival" (*Buheung*) नामक एक समकालीन ईसाई गीत के बोलों की याद दिला दी: "पुनरुद्धार की ज्वालाएँ तेज़ चमकें!" और "पवित्र आत्मा की हवाएँ बहने दो..." और इसी बात ने मुझे इस किताब का शीर्षक दिया: "हमारे परिवार में पुनरुद्धार की ज्वालाएँ तेज़ी से जलें!" इस तरह, मैंने आज सुबह—गुरुवार, 16 जनवरी को—परमेश्वर के वचन पर ध्यान करने के बाद इस किताब को लिखना शुरू किया। मेरी एकमात्र इच्छा यह है कि प्रभु, अपनी दया से, हमारे परिवारों पर कृपा-दृष्टि डालें; कि वे हमारे पापों को क्षमा करें, हमारे टूटेपन को चंगा करें, और हमें ऐसे परिवारों के रूप में मज़बूती से स्थापित करें जो सचमुच उन्हीं पर केंद्रित हों—"प्रभु-केंद्रित परिवार।"

प्रभु में, जो हमारे परिवार के स्वामी हैं,

जेम्स किम द्वारा साझा किया गया
(16 जनवरी, 2025 | एक प्रिय मित्र को) (भाई किम इक-सून के 58वें जन्मदिन की याद और उत्सव में)

विषय-सूची

प्रस्तावना

भाग 1: पश्चाताप

पश्चाताप
पश्चाताप हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए...
घर में आने वाली विपत्ति कभी भी महज़ एक संयोग नहीं होती
क्या यह दावा करना समझदारी है कि आपका विश्वास-जीवन बहुत मज़बूत है, जबकि आप अपने पारिवारिक जीवन की उपेक्षा कर रहे हों?
चर्च की उन परंपराओं के कारण, जिन्होंने यह सिखाया: "जब तक आप प्रभु और उनके चर्च की पूरी निष्ठा से सेवा कर रहे हैं, तब तक आपको अपने परिवार की ज़रूरत नहीं है (या आप अपने परिवार का बलिदान भी दे सकते हैं)"...
मैं परमेश्वर की महान कृपा के लिए प्रार्थना करता हूँ, ताकि आप व्यभिचार के पाप से शीघ्र ही पश्चाताप कर सकें
"आप ही वह व्यक्ति हैं"
पिता की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है—जो घर का मुखिया होता है?
भले ही इसके लिए हमें अपने ही घरों में दुर्भाग्य का सामना क्यों न करना पड़े...
जब मैं इस वचन को अपने स्वयं के परिवार और 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' पर लागू करता हूँ, जहाँ मैं सेवा करता हूँ...
जिस किसी ने भी वास्तव में यीशु का अनुभव किया है, वह घर या चर्च को नष्ट करने वाला नहीं, बल्कि दोनों का निर्माण करने वाला होता है
वैवाहिक संबंध...

जीवनसाथी के किसी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध (विवाह-बाह्य संबंध) होने के विषय में

द वाइफ़्स क्वालिफ़िकेशन्स (The Wife's Qualifications) नाटक देखते समय...

गलत दिशा में सबवे (ट्रेन) पकड़ने और फिर 'यू-टर्न' लेने के अनुभव के माध्यम से...

"पिता" होने का मूल सार

जहाँ मैंने बहुत बड़ी भूल की

क्षमा

अपने जीवनसाथी को क्षमा करना (1)

अपने जीवनसाथी को क्षमा करना (2)

अपने जीवनसाथी को क्षमा करना (3)

अपने जीवनसाथी को क्षमा करना (4)

एक अस्वस्थ परिवार की कड़ी?

एक माँ का अपनी बेटी के प्रति "लगाव"; एक बेटी का अपनी माँ के साथ "प्रेम-घृणा" का संबंध

एक सांसारिक माँ—जो यीशु जैसी नहीं है—का अपने बच्चों के प्रति जो प्रेम होता है, वह किसी भी तरह से उन्हें 'प्रभु के प्रेम' के साथ प्रेम करने जैसा नहीं होता!

पाप करना भी एक अवसर हो सकता है

हृदय का कष्ट; हृदय का आनंद

भाग 2: मेल-मिलाप

घर में शांति वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है

एक सामंजस्यपूर्ण परिवार

एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर जीवन जीना... यहाँ तक कि उस दम्पति के लिए भी, जो ऊपरी तौर पर सामंजस्यपूर्ण दिखाई देते हैं...

परिवार क्या है?

परिवार कोई ऐसी जगह नहीं है, जहाँ पति और पत्नी एक-दूसरे से केवल अपनी मनचाही चीज़ों की माँग करते रहते हैं। अगर कोई परमेश्वर के घर में आराधना करने आता है, लेकिन उससे पहले अपने भाई या बहन से मेल-मिलाप नहीं करता...

पति-पत्नी के बीच के झगड़ों पर

पति-पत्नी के बीच के मनमुटाव पर

गरीबी में भी घर में शांति और मेल-जोल होना, धन-दौलत के बीच लगातार झगड़े करते हुए रहने से कहीं बेहतर है।

"आइए, हम आपस में झगड़ा न करें।"

हमें अपने वैवाहिक रिश्ते की रक्षा ज़रूर करनी चाहिए!

'भावनात्मक निकटता'

भावनात्मक बेवफ़ाई?

अपनी पत्नी या घर की शांति से भी ज़्यादा ज़रूरी क्या है...

जब मम्मी और पापा आपस में झगड़ते हैं, तो एक बच्चे के दिल को कितनी गहरी चोट पहुँचती होगी?

पूरे मन से मिलकर किया गया पारिवारिक भोजन

भले ही ज़िंदगी का कोई बड़ा तूफ़ान आ जाए और हमारे परिवार की नाव डूबने की कगार पर पहुँच जाए...

हमें मरने से पहले आपस में मेल-मिलाप ज़रूर कर लेना चाहिए।

भाग 3: बहाली

बहाली क्या है?

काश, हम अपनी पुरानी स्थिति में वापस लौट पाएँ।

"हे प्रभु, अब हमें फिर से बहाल कर!"

बहाली की खातिर...

प्रभु अपनी बहाली के वादे को ज़रूर पूरा करेंगे।

क्या कहीं हम अपनी ही बहाली में रुकावट तो नहीं डाल रहे?

जब हम अपने परिवारों के बारे में सोचते हैं

परिवार से जुड़े सबक (1)

पारिवारिक समस्याओं और संकटों पर मेरे विचार

परिवार का संकट

पारिवारिक संकट के बीच भी...

जब परिवार पर कोई संकट आता है

परिवार के भीतर मिला प्यार और मिले ज़ख्म

क्या पारिवारिक संकट, प्रभु के बचाने वाले प्यार को और भी गहराई से महसूस करने का एक अवसर है?

इस संकट के बीच भी, मैं एक सच्चा और खरा इंसान बनना चाहता हूँ।

माता-पिता से मिले नकारात्मक प्रभाव

एक सांसारिक माँ—जो यीशु जैसी नहीं है—अपने बच्चे को जो प्यार देती है, वह किसी भी तरह से उस प्यार जैसा नहीं है जो प्रभु के प्यार से भरा हो! "माता-पिता द्वारा दिए गए ज़ख्म और दर्द... क्या वे ठीक हो सकते हैं?"

शीर्षक वाला वीडियो देखने के बाद...

दर्दनाक भावनाएँ

स्वार्थ

वैवाहिक रिश्तों में मनमुटाव और संकट

वैवाहिक संकटों से उबरने के सिद्धांत और तरीके

मन में बसा प्यार का तरीका (ILS)

प्यार का 'बचने वाला' तरीका

प्यार का 'खुश करने वाला' तरीका

टूटे हुए वैवाहिक रिश्ते में फिर से भरोसा जगाना

काउंसलिंग (परामर्श) से सीखे गए सबक

"[डॉ. किम जिन-से का K-काउंसलिंग रूम] मुझे पता चला कि मेरे पति गे हैं... क्या मुझे तलाक़ ले लेना चाहिए? या क्या हमें बस एक जोड़े होने का दिखावा करते रहना चाहिए?"

हमारे बच्चों पर आए संकट के बावजूद भी...

मेरी सबसे बड़ी बेटी, जुयॉन्ग (चारिस) की प्यारी याद में

लोग कहते हैं कि ऐसा कोई परिवार नहीं है जिसमें कोई समस्या न हो। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए?

यह सही और गलत का मामला नहीं है, बल्कि यह उद्धार का मामला है!

पति-पत्नी के तौर पर हमारे और हमारे बच्चों के बीच के रिश्ते के संबंध में...

सबसे पहले, हमें सभी चीज़ों को बहाल (ठीक) करना होगा!

हमें प्रभु के कभी न बदलने वाले प्रेम के द्वारा बहाली मिलती है।

"हे प्रभु, तू हमारे हृदयों को फिर से अपना बना ले!"

जब प्रभु हमें बहाल करता है...

ईश्वर की बहाली की कृपा

भाग 4: सुधार

एक मसीह-केंद्रित परिवार...

एक मसीह-केंद्रित परिवार

एक ऐसा परिवार जिसमें बदलाव आ रहा है

एक ईश्वरीय परिवार

हमें इस घमंड के प्रति अत्यधिक सतर्क रहना चाहिए कि हमारा परिवार और कलीसिया मज़बूत हैं।

जब हम लौटते हैं, तो वह हमें बहाल करता है!

परिवार पर सीख (2)

पारिवारिक सेवा, अनिवार्य रूप से, एक आत्मिक युद्ध है!

एक ऐसा परिवार जो आत्मिक युद्ध में लगा हुआ है

शैतान: वह धूर्त शत्रु जो हमारे परिवार पर हमला करता है

हमें अतीत से आज़ादी पाने के लिए खुद को समर्पित करना होगा!

बुद्धिमानों के रिश्ते: विवाह पर लागू—आपको अपनी पत्नी को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए।

आपको अपनी पत्नी को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए।

परिवार के संबंध में कई सीखों पर विचार...

हमें भी—अय्यूब के उदाहरण का पालन करते हुए—पारिवारिक सेवा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

परिवार का निर्माण

"हे प्रभु, हमारे परिवार का निर्माण कर!"

मेरे परिवार का मिशन वक्तव्य

हमें अपने परिवार का निर्माण कैसे करना चाहिए?

प्रेम सब कुछ सहता है, सब कुछ विश्वास करता है, सब कुछ की आशा रखता है, सब कुछ धीरज से सहता है।

कठोर प्रेम (Tough Love)

एक मसीह-केंद्रित जोड़ा

हमारा वैवाहिक रिश्ता, जिसे प्रभु ने बनाया है

एक ऐसा जोड़ा जो मसीह का अनुकरण करता है

विवाह में विश्वास का निर्माण

अपने प्रियजन के साथ विश्वास को और गहरा कैसे करें?

क्या आपका वैवाहिक रिश्ता बढ़ रहा है?

नवविवाहितों के तौर पर कलीसिया का चुनाव कैसे करें? "पवित्र साहस"

मैं एक "सीढ़ी" जैसा पति बनना चाहता हूँ

मैंने अपनी पत्नी के सामने अनगिनत रुकावटें खड़ी की हैं

धीरे-धीरे, अपनी पत्नी के साथ कदम से कदम मिलाकर...

शादी में "स्पेस" (दूरी)

क्या "स्पेस" ज़रूरी है?

वह समझदार स्त्री जो अपना घर बनाती है

वह गुणी स्त्री

जन्मदिन मुबारक, जेन!

अपनी प्यारी पत्नी का जन्मदिन मनाते हुए...

माता-पिता का कर्तव्य

बच्चों के बारे में परमेश्वर के वचन पर एक छोटा सा चिंतन

डिलन, येरी और यीउन के लिए—वे बच्चे जो यीशु से प्रेम करते हैं

अपनी प्यारी बेटी यीउन (कैरिस) का चिंतन पढ़ने के बाद: “हेनरी नौवेन की किताब *Beloved* के साथ साल पर नज़र डालते हुए”

हमें अपने बच्चों को जाने देना चाहिए!

“बच्चों को भेजने वाले माता-पिता बनें”

हमारे प्यारे बच्चों के प्रेम-संबंधों और शादी के बारे में...

मेरे बच्चों की शादी पर मेरा दृष्टिकोण
हमारा घर, जो समझदारी से और भी मज़बूती से बना है
विश्वास में मेरी माँ
ताकि हमारा परिवार प्रभु के सेवकों को पालने-पोसने का आशीष पा सके—पीढ़ी-दर-पीढ़ी—जब तक यीशु वापस न आ जाएँ...

भाग 5: पुनरुद्धार

सच्चे पुनरुद्धार के लिए
वचन का पुनरुद्धार
“हे प्रभु, इन वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर!”

जब हम अपने परिवारों के बारे में सोचते हैं...

सच्चा पुनरुद्धार? एक ऐसा हृदय जो परमेश्वर के पुनरुद्धार का अनुभव कर रहा हो
परमेश्वर की भलाई का स्वाद चखने के बाद
मसीह-केंद्रित परिवार का हर सदस्य, जो समझदारी और ज्ञान से भरा हो
परमेश्वर का प्यारा बच्चा (परमेश्वर का प्यारा बेटा/बेटी)
एक ऐसा परिवार जो प्रार्थना और स्तुति के चमत्कारों का अनुभव कर रहा हो
वह विश्वासयोग्य परमेश्वर जो पक्षपात करने वाले माता-पिता का भी उपयोग करता है
ताकि बच्चे और भी ज़्यादा फलें-फूलें...

“हे परमेश्वर, हमारे परिवार को भरपूर फसल दे।”

“हे प्रभु, हमारे पूरे परिवार और रिश्तेदारों को प्रेम का घर बना।”

एक ऐसा परिवार जो कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करता है

2023 में अपने परिवार पर चिंतन करते हुए...

निष्कर्ष

भाग 1:

पश्चाताप

पश्चाताप

"पाखंडियों के लिए पश्चाताप आवश्यक है।

पाखंड पवित्रता का दिखावा है;

पाखंडी—यानी आध्यात्मिक अभिनेता—केवल नैतिकवादी से एक कदम आगे जाता है,

और खुद को धर्म के वस्त्रों से सजा लेता है।

वह ईश्वर-भक्ति का *रूप* तो दिखाता है, लेकिन उसकी *शक्ति* से इनकार करता है (2 तीमुथियुस 3:5)।

पाखंडी उस घर जैसा है जिसका बाहरी हिस्सा तो सुंदर है, लेकिन अंदर का हर कमरा अंधेरे से भरा है।

वह एक सड़ा हुआ खंभा है, जिस पर ऊपर से सोने की सुंदर परत चढ़ी है;

अपने धार्मिक दिखावे के नकाब के पीछे, वह अपने पापों के सड़ते हुए घावों को छिपाए रखता है।

हो सकता है कि पाखंडी चेहरे पर बनावटी मेकअप करने का विरोध करे,

फिर भी वह खुद पर बनावटी पवित्रता का मेकअप चढ़ाए रखता है।

ठीक इसी वजह से कि वह बाहर से अच्छा दिखाई देता है, वह अंदर से वास्तव में बुरा हो सकता है।

पाखंडी ऐसा प्रतीत होता है मानो उसकी आँखें स्वर्ग के राज्य पर टिकी हैं,

फिर भी उसका हृदय अशुद्ध, सांसारिक वासनाओं से भरा होता है।

वह गुप्त पाप में जीता है, और अपने ही अंतरात्मा की सीधी अवहेलना करते हुए काम करता है।

वह वचन को सुनता तो है, लेकिन केवल अपने कानों से।

वह कलीसिया (चर्च) के प्रति अपनी भक्ति में बहुत उत्साही होता है—ताकि दूसरों की नज़र और प्रशंसा पा सके—

फिर भी वह घर पर अपने कर्तव्यों और एकांत में की जाने वाली अपनी निजी प्रार्थनाओं की उपेक्षा करता है।

पाखंडी विनम्रता का दिखावा करता है, लेकिन केवल दुनिया में खुद को आगे बढ़ाने के एक साधन के रूप में।

वह दावा करता है कि उसके पास विश्वास है, लेकिन विश्वास को ढाल की तरह इस्तेमाल करने के बजाय,

वह इसे केवल एक नकाब के तौर पर इस्तेमाल करता है।
वह अपनी बगल में बाइबल दबाकर चलता है, लेकिन वह उसे अपने हृदय में धारण नहीं करता।
वचन की दीपक-ज्योति को थामें और अपने ही हृदय की गहराइयों को टटोलें;
ध्यान से देखें कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आपको वहाँ कोई ऐसी बात मिल जाए जिसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता हो।" [थॉमस वॉटसन की किताब *Repentance* से]

पश्चाताप हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए...

“उस दिन प्रभु, सर्वशक्तिमान यहोवा ने तुम्हें रोने और विलाप करने, अपने बाल नोचने और टाट ओढ़ने के लिए बुलाया। लेकिन देखो, वहाँ तो आनन्द और उत्सव है; बैलों को काटा जा रहा है और भेड़ों को मारा जा रहा है; लोग मांस खा रहे हैं और दाखमधु पी रहे हैं! तुम कहते हो, ‘आओ, हम खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना ही है!’” (यशायाह 22:12–13)।

ठीक इसी क्षण, परमेश्वर हमसे *पश्चाताप* करने को कह रहे हैं, फिर भी हम उनसे *बहाली* (restoration) के लिए गुहार लगा रहे हैं। इस समय हमें जो आँसू बहाने चाहिए, वे “पश्चाताप के आँसू” होने चाहिए, लेकिन इसके बजाय, हम “बहाली की गुहार वाले आँसू” बहा रहे हैं। बिना पश्चाताप के कोई बहाली संभव नहीं है; फिर भी, हम इस समय पश्चाताप की आवश्यकता को पहचानने में भी असफल हैं, जबकि हम केवल बहाली के लिए ही तीव्र बेचैनी महसूस कर रहे हैं। इस हद तक हम बेखबर बने हुए हैं—हम उन पापों को देख या स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं जो हम परमेश्वर के विरुद्ध कर रहे हैं। अब हम पाप को पाप नहीं मानते; इसके बजाय, हम अपने पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध बार-बार उन्हीं अपराधों को दोहराते रहते हैं। इसके अलावा—न केवल परमेश्वर के विरुद्ध, बल्कि अपने परिवार के सदस्यों और अपने कलीसियाई परिवार के विरुद्ध भी—हम पाप करते रहते हैं; फिर भी, हम इन कार्यों को पापपूर्ण नहीं मानते, और हम निर्भीकता से इन्हें दोहराते रहते हैं। इस पूरे समय के दौरान, यह विचार कि हमें पश्चाताप करना चाहिए, हमारे मन में कभी आता ही नहीं। हम पाप के प्रति पूरी तरह से असंवेदनशील हो गए हैं। इसके विपरीत, हम परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली बहाली और भौतिक समृद्धि जैसे विषयों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो गए हैं।

हमसे—ठीक इसी अवस्था में—परमेश्वर आज एक आज्ञा देते हैं: "रोओ और विलाप करो, अपने बाल नोचो, और टाट ओढ़ लो" (यशायाह 22:12)। इसे संक्षेप में कहने और एक ही वाक्यांश में लागू करने के लिए: परमेश्वर इस समय हमें "पश्चाताप के आँसू बहाने" की आज्ञा दे रहे हैं। मैं उस क्षण के लिए कितना तरसता हूँ—वह समय जब हम सचमुच इस बुलाहट को समझ पाएँगे। मैं मई 1987 की एक शाम बहाए गए अपने पश्चाताप के आँसुओं के लिए तरसता हूँ—वे आँसू जो पवित्र आत्मा के अद्भुत कार्य के द्वारा बहे थे, जब मैं एक कॉलेज मिनिस्ट्री रिट्रीट के दौरान एक अतिथि पादरी को यूहन्ना 6:1–15 पर उपदेश देते हुए सुन रहा था। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि पवित्र आत्मा एक बार फिर मुझे पश्चाताप के वही आँसू बहाने में समर्थ करे—ठीक वैसे ही आँसू, जैसे उसने उस समय मुझे बहाने के लिए प्रेरित किया था। इसका कारण यह है कि कृतज्ञता या आनंद के आँसुओं का तब तक कोई खास महत्व नहीं होता, जब तक उनके साथ पश्चाताप के आँसू न हों। जब मैं अपने आप पर, अपने परिवार पर और कलीसिया—जो स्वयं मसीह का शरीर है—पर विचार करता हूँ, तो मेरी इच्छा होती है कि मैं परमेश्वर के सामने पश्चाताप के आँसू बहाऊँ। फिर भी, वे आँसू मेरे भीतर सूख चुके हैं। और इसलिए, ऐसे आँसुओं से वंचित होकर, मैं अपने पारिवारिक सेवकाई और पादरी के कर्तव्यों को पूरा करने में बस संघर्ष ही करता रहता हूँ। इस पूरे समय के दौरान, मैं पाप के पश्चाताप को पीछे धकेल देता हूँ, और इसके बजाय ऐसे भविष्य के सपने देखता हूँ जहाँ मैं—अपने परिवार और कलीसिया के साथ—बस आनंद मना रहा हूँ और मौज-मस्ती कर रहा हूँ। मैं सोचता हूँ, परमेश्वर की नज़रों में यह कैसा दिखता होगा? आज के वचन—यशायाह 22:13—में परमेश्वर ने यहूदा के लोगों को आज्ञा दी थी कि वे "रोएँ और विलाप करें, अपने बाल नोचें और टाट ओढ़ें" (पद 12); फिर भी, उन्होंने इसके जवाब में "आनंद मनाया और मौज-मस्ती की, मवेशियों को काटा और भेड़ों को मारा, मांस खाया और दाखमधु पिया, और कहा, 'आओ हम खाएँ और पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना ही है!'" (पद 13)। यह कैसे—यह कैसे संभव है कि कोई पश्चाताप के आँसू बहाए बिना यह कह सके कि, "आओ हम खाएँ और पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना ही है"? क्या यह अविश्वासियों का रवैया नहीं है—उन लोगों का जो यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते? (1 कुरिन्थियों 15:32) क्या ऐसा नहीं था कि, नूह के दिनों में जलप्रलय आने से पहले, "लोग खा-पी रहे थे, विवाह कर रहे थे और विवाह में दिए जा रहे थे," जब तक कि "जलप्रलय आया और उन सभी को नष्ट कर

दिया"? (लूका 17:27) यहूदा के लोग ऐसे समय में "मौज-मस्ती और आनंद" कैसे मना सकते थे, जब उन्हें पश्चाताप के आँसू बहाने चाहिए थे? (यशायाह 22:2) क्या हम भी इस समय ठीक वही काम नहीं कर रहे हैं? क्या आज का चर्च इसी तरह का व्यवहार नहीं कर रहा है? हालाँकि प्रभु हमें साफ़-साफ़ कहते हैं, "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है" (मत्ती 4:17), क्या आज का चर्च पश्चाताप को पूरी गंभीरता से खोजने के बजाय—आराधना सेवाओं, विशेष कार्यक्रमों और अन्य विभिन्न माध्यमों से—एक उत्सव जैसा माहौल बनाने की कोशिश नहीं कर रहा है? परिणामस्वरूप, भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा, परमेश्वर ने यहूदा के लोगों से ये शब्द कहे: "निश्चय ही, जब तक तुम मर नहीं जाते, तब तक यह अधर्म तुम्हें क्षमा नहीं किया जाएगा" (यशायाह 22:14)।

ऐसा लगता है कि अब आनंद करने और खुश होने का समय नहीं है। मेरा कहने का मतलब है कि अब मौज-मस्ती करने और दावतें उड़ाने का समय नहीं है। बल्कि, अब पश्चाताप का समय है। हमें अपने पापों, अपने परिवारों के पापों और अपने चर्च के पापों को स्वीकार करना चाहिए और उनका पश्चाताप करना चाहिए। हमें पवित्र और धर्मी परमेश्वर की ओर न देखने की अपनी असफलता का, और उस प्रभु का आदर न करने की अपनी असफलता का पश्चाताप करना चाहिए, जो हमारे जीवन के हर पहलू को संचालित करते हैं (पद 11)। इसके अलावा, हमें इस संसार के सुखों और विलासिताओं में लिप्त होने के पाप का पश्चाताप करना चाहिए—और अधर्मी लोगों का रवैया नहीं अपनाना चाहिए: "आओ, हम खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो हमें मरना ही है" (पद 13)। अब हमारे हँसने का समय नहीं है; यह पश्चाताप के आँसू बहाने का समय है। एक बार फिर

पश्चाताप के आँसू बहाने की लालसा

जेम्स किम के विचार
(26 जुलाई, 2017 — यह प्रार्थना के साथ प्रस्तुत है कि मैं न केवल अपने पापों के लिए, बल्कि अपने परिवार और जिस चर्च की मैं सेवा करता हूँ, उसके पापों के लिए भी पश्चाताप करूँ।)

घर में विपत्ति: कभी भी कोई संयोग नहीं।

हम मसीहियों के लिए, जो परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास करते हैं, "संयोग" जैसी कोई चीज़ बिल्कुल भी नहीं होती (सभोपदेशक 9:11b)। जो कुछ भी घटित होता है, वह परमेश्वर की संप्रभुता और उसकी व्यवस्था के दायरे में ही होता है; एक भी घटना महज़ संयोग की बात नहीं होती। मेरा मानना है कि हर चीज़ परमेश्वर की संप्रभु इच्छा के अनुसार ही घटित होती है। इसी कारण से, मैं व्यक्तिगत रूप से "शुभकामनाएँ" (Good luck) वाक्यांश को नहीं अपनाता—यानी, "मैं आपके लिए अच्छे भाग्य की कामना करता हूँ।" इसके अलावा, मेरा मानना है कि इस मौजूदा "दौर" में, कोई भी विपत्ति अचानक और अप्रत्याशित रूप से हममें से किसी पर भी आ सकती है—चाहे वह व्यक्तिगत रूप से हो, हमारे परिवारों में हो, हमारे चर्चों में हो, या यहाँ तक कि हमारे राष्ट्र में भी हो (सभोपदेशक 9:12b)। ठीक डोमिनोज़ की कतार की तरह—जहाँ पहले टुकड़े को एक बार छूने से उसके बाद के सभी टुकड़े एक-एक करके गिर जाते हैं—हम अक्सर खुद को अभिभूत और हतप्रभ पाते हैं कि क्या करें, जब विपत्तियाँ हम पर तेज़ी से एक के बाद एक आती हुई प्रतीत होती हैं। फिर भी, सर्वशक्तिमान परमेश्वर निश्चित रूप से हमें पश्चाताप की ओर ले जाएँगे और, बिल्कुल नींव से शुरू करते हुए, हमें एक-एक करके फिर से बनाएँगे। इस प्रकार, वे अप्रत्याशित और विपत्तिपूर्ण घटनाएँ जो परमेश्वर की संप्रभुता के संदर्भ में हम पर आती हैं, वास्तव में "अवसर" हैं—प्रभु के लिए हमें गढ़ने के अवसर, ठीक वैसे ही जैसा उन्होंने वादा किया था (मत्ती 16:18; सभोपदेशक 9:11)।

क्या यह दावा करना समझदारी है कि कोई व्यक्ति एक निष्ठावान आध्यात्मिक जीवन जी रहा है जबकि वह अपने पारिवारिक जीवन में असफल हो रहा है?

जब हम एल्काना को देखते हैं—एक ऐसा व्यक्ति जो हर साल शीलो तक यात्रा करता था ताकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की आराधना कर सके और उन्हें बलिदान चढ़ा सके—तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह वास्तव में एक निष्ठावान आध्यात्मिक जीवन जी रहा था। हालाँकि, इस बात पर विचार करते हुए कि उसने हन्नाह—अपनी दो पत्नियों में से एक जो निःसंतान थी—के प्रति विशेष प्रेम दिखाया; जब भी वह बलिदान चढ़ाता था, तो वह उसे बलिदान के मांस का दुगुना हिस्सा देता था, जबकि बाकी हिस्सा पनीन्ना और उसके बच्चों में बाँट देता था—तो ऐसा लगता है कि उसने अपने पारिवारिक जीवन का प्रबंधन ठीक से नहीं किया। (1 शमूएल 1:2-5, *द मॉडर्न इंग्लिश वर्शन*) क्या सचमुच यह दावा करना समझदारी है कि कोई व्यक्ति एक निष्ठावान आध्यात्मिक जीवन जी रहा है, जबकि वह अपने पारिवारिक जीवन में असफल हो रहा है?

चर्च की एक ऐसी परंपरा के कारण, जो यह सिखाती थी कि यदि कोई व्यक्ति पूरी निष्ठा के साथ प्रभु और उनके चर्च की सेवा करता है, तो उसे अपने परिवार की आवश्यकता नहीं है—या वह अपने परिवार का बलिदान भी दे सकता है...

क्या कपटियों ने—ठीक फरीसियों और शास्त्रियों की तरह, जो यह सिखाते थे कि यदि कोई व्यक्ति बस यह दावा कर ले कि उसने अपने माता-पिता का जो हक़ था, उसे परमेश्वर को समर्पित कर दिया है, तो उसे अपने माता-पिता का आदर करने की कोई आवश्यकता नहीं है—परमेश्वर के वचन को एक ऐसी कलीसियाई परंपरा के द्वारा व्यर्थ नहीं कर दिया है, जो यह सिखाती है कि जब तक कोई व्यक्ति प्रभु और उसकी कलीसिया की सेवा पूरी निष्ठा से करता है, तब तक उसे अपने परिवार की परवाह करने की (या यहाँ तक कि अपने परिवार का बलिदान देने की भी) कोई ज़रूरत नहीं है? (संदर्भ: मत्ती 15:5–7).

मैं प्रार्थना करता हूँ कि भगवान की बड़ी कृपा हो, जिससे व्यभिचार के पाप के लिए जल्दी पछतावा हो सके।

जब राजा डेविड को यह खबर मिली कि बतशेबा—एक शादीशुदा औरत—उनके बच्चे की माँ बनने वाली है, तो उसने सच को छिपाने की कोशिश की। इसके लिए, उसने बतशेबा के पति, उरियाह को बुलाया—जो अपने कमांडर, जनरल जोआब और इज़राइली सेना के साथ युद्ध के मैदान में लड़ रहा था—ताकि उसे घर भेज सके ताकि वह अपनी पत्नी बतशेबा के साथ सो सके, जिससे वह लंबे समय से अलग था। हालाँकि, राजा डेविड के इरादों और योजनाओं के विपरीत, उरियाह अपने घर नहीं गया; इसके बजाय, उसने वह रात महल के गेट पर शाही पहरेदारों के साथ सोकर बिताई। जब राजा डेविड ने उससे पूछा क्यों, तो उरियाह ने जवाब दिया, “हमारी सेना अभी युद्ध में है; यहोवा का सन्दूक उनके पास है, और मेरे कमांडर, जनरल जोआब, और उसके आदमी खुले मैदानों में डेरा डाले हुए हैं। ऐसे हालात में, मैं अपनी पत्नी के साथ खाने, पीने और सोने के लिए घर कैसे जा सकता हूँ?” उरीया ने राजा दाऊद के सामने कसम खाई कि वह ऐसा कभी नहीं करेगा। फिर भी, राजा दाऊद ने उरीया को खाने पर बुलाया, और उसे तब तक खाने-पीने के लिए कहा जब तक वह नशे में न हो जाए, यह उसे घर जाने के लिए मजबूर करने की एक और कोशिश थी। फिर भी, उस रात भी, उरीया अपने घर नहीं गया; इसके बजाय, वह महल के मेन गेट पर गार्डहाउस में गार्ड्स के साथ लेटा रहा (2 शमूएल 11:5–13)। जबकि उरीया—एक वफ़ादार सैनिक—अपनी पत्नी, बतशेबा से लंबे समय से अलग रहने के बावजूद, उसके साथ सोने से बचता रहा, राजा दाऊद ने अपने शाही अधिकार का गलत इस्तेमाल करके अपने पड़ोसी की पत्नी, बतशेबा के साथ इतनी जल्दी अडल्टरी का पाप किया। आज कितने ईसाई अडल्टरी का पाप कर रहे हैं, जैसा दाऊद ने किया था? मैं प्रार्थना करता हूँ कि भगवान की बड़ी कृपा हो, जिससे अडल्टरी के पाप के लिए जल्दी पछतावा हो सके।

“तुम ही वह व्यक्ति हो”

“नाथन ने दाऊद से कहा, ‘तुम ही वह व्यक्ति हो!’” (2 शमूएल 12:7).

जब मैं खुद की जाँच करता हूँ, तो कुछ ऐसी बातें हैं जिनका मुझे अक्सर एहसास होता है—भले ही देर से ही सही। बेशक, उन बातों में से एक है परमेश्वर का अनुग्रह। यह केवल पीछे मुड़कर देखने पर—यानी वह पल बीत जाने के बाद ही—मुझे आखिरकार परमेश्वर का मार्गदर्शन, सहायता और उसकी ओर से की गई व्यवस्था समझ आती है। एक और बात जिसका मुझे अक्सर देर से एहसास होता है, वह यह है कि मैंने बिना सोचे-समझे (घमंड में आकर) बातें की हैं। विशेष रूप से, दूसरों के साथ अलग-अलग बातचीत करने के बाद, जब मैं बाद में सोचता हूँ कि मैंने क्या कहा था, तो मुझे अक्सर एहसास होता है कि जिन बातों को मैंने उठाया था, वे असल में मुझ पर भी लागू होती हैं—फिर भी मैंने इस तरह बात की थी, मानो मैं किसी बिल्कुल ही अलग व्यक्ति के बारे में चर्चा कर रहा हूँ। उदाहरण के लिए, हाल ही में हमारी प्रेस्बिटरी की एक बैठक के बाद, कई पादरियों के साथ रात के खाने के दौरान हुई बातचीत में भी ऐसा ही हुआ था। मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ—शायद *कुछ ज़्यादा ही* आत्मविश्वास के साथ—अपनी निजी राय ज़ाहिर की कि जो विश्वासी हमारे चर्च में आना चाहते हैं, उन्हें—ठीक वैसे ही जैसे कोई पादरी नई प्रेस्बिटरी में शामिल होते समय स्थानांतरण पत्र (transfer letter) लेता है—कम से कम अपने पिछले चर्च के पादरी से अनुमति ज़रूर लेनी चाहिए। फिर भी, जब मैंने अपने खुद के जीवन पर विचार किया, तो मुझे एहसास हुआ कि मैंने खुद ऐसा केवल *एक ही बार* किया था; इसके बावजूद, मैंने इस तरह बात की थी, मानो यह कोई ऐसी सामान्य प्रथा हो जिसका मैंने *हमेशा* पालन किया हो। इसके अलावा, मुझे अपने शब्दों पर पछतावा हुआ जब मुझे एहसास हुआ कि कई साथी पादरियों के सामने यह राय ज़ाहिर करके, मैंने असल में यह संकेत दिया था—इस तरह से कि वे इसे साफ-साफ सुन सकें—कि “आप सभी को

ज़रूर ऐसा करना चाहिए; आगे बढ़ने का *केवल यही* सही तरीका है।" बिना पहले ठीक से अपनी खुद की जाँच किए, इस तरह बात करने पर मुझे गहरा पछतावा हुआ। मुझे ऐसा लगता है कि मैंने अनगिनत बार इस तरह से बात की है। जब भी मुझे देर से इस बात का एहसास होता है—भले ही मैंने जो बातें कही हैं, उनमें से यह केवल एक छोटा सा हिस्सा ही क्यों न हो—तो मैं और गहराई से आत्म-चिंतन करने और भविष्य में ज़्यादा सावधानी से बोलने का पक्का इरादा करता हूँ; फिर भी, अक्सर मैं खुद को वही पाप दोबारा करते हुए पाता हूँ।

आज के पाठ का यह अंश—2 शमूएल 12:7—एक ऐसा वचन है जिससे हम सभी काफी अच्छी तरह परिचित हैं। जब डेविड ने अपनी वफ़ादार सैनिक, ऊरिय्याह की पत्नी, बतशेबा के साथ संबंध बनाए (11:4)—और जब उसे यह खबर मिली कि वह गर्भवती हो गई है (पद 5)—एक ऐसा पाप जिसे वह शायद कोई अपराध नहीं मानता था—तो उसने अपने अपराध को छिपाने के लिए एक चालाक योजना बनाई। इस योजना के तहत उसने अजन्मे बच्चे का पिता बतशेबा के पति, ऊरिय्याह को ठहराने की कोशिश की (पार्क यून-सन)। इस चालाक योजना में ऊरिय्याह को युद्ध के मैदान से शाही महल में बुलाना, उसे घर जाकर आराम करने का निर्देश देना, और यहाँ तक कि उसके पीछे-पीछे खाना भी भेजना शामिल था (पद 8)। हालाँकि, वफ़ादार सैनिक ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया; इसके बजाय, वह महल के द्वार पर राजा के सेवकों के साथ सो गया (पद 9)। नतीजतन, डेविड ने एक दूसरी चालाक योजना बनाई। उसने ऊरिय्याह को बुलाया, उसे खाना खिलाया, उसे तब तक शराब पिलाई जब तक वह नशे में चूर नहीं हो गया, और फिर उसे घर भेजने की कोशिश की (पद 13)। डेविड ने ऊरिय्याह को उसके घर भेजने की दो बार कोशिश क्यों की? इसका कारण यह धारणा बनाना था कि बतशेबा के गर्भ में पल रहा बच्चा डेविड के साथ संबंध बनाने का परिणाम नहीं था, बल्कि ऊरिय्याह और बतशेबा के वैवाहिक मिलन की संतान था। उन दिनों—DNA परीक्षण के आगमन से बहुत पहले—कोई भी यह कैसे पता लगा सकता था कि बच्चा डेविड का है या ऊरिय्याह का? फिर भी, जैसा कि हम जानते हैं, ऊरिय्याह ने एक बार फिर घर जाने से इनकार कर दिया, और इसके बजाय राजा के सेवकों के साथ अपने बिस्तर पर सोना चुना (पद 13)। अंततः, डेविड ने युद्ध के मैदान में ऊरिय्याह की मौत की साज़िश रची (पद 14–25)। फिर, जब उसे योआब द्वारा भेजे गए एक दूत से यह खबर मिली कि ऊरिय्याह युद्ध में मारा गया है, तो डेविड ने दूत को योआब तक यह संदेश पहुँचाने का निर्देश दिया: "इस बात को लेकर परेशान मत हो, क्योंकि तलवार एक को वैसे ही निगल जाती है जैसे दूसरे को..." (पद 25)। डेविड, जिसने जान-बूझकर और सोची-समझी योजना के तहत अपने ही

वफ़ादार सैनिक की मौत का कारण बना था, वह फिर यह कैसे कह सकता था, "तलवार एक को वैसे ही निगल जाती है जैसे दूसरे को"? वह ऐसे शब्द कैसे कह सकता था, जबकि उस हत्या के लिए ज़िम्मेदार वह खुद ही था? क्योंकि दाऊद के काम परमेश्वर की नज़र में बुरे थे (पद 27), इसलिए परमेश्वर ने उसके पास भविष्यवक्ता नातान को भेजा; एक शहर में रहने वाले एक अमीर आदमी और एक गरीब आदमी के बारे में एक दृष्टांत के ज़रिए, नातान ने दाऊद को उसकी उस पाप के बारे में बताया जो उसने ऊरिय्याह की पत्नी को लेने के रूप में किया था (12:1–4)। उसी पल, दाऊद गुस्से से भर गया और उसने भविष्यवक्ता नातान से—जीवित प्रभु की कसम खाकर—कहा कि जिस आदमी ने ऐसा काम किया है, वह निश्चित रूप से मौत का हकदार है (पद 5)। शायद इसलिए कि उसने अपने पाप को छिपाने की इतनी ज़ोरदार कोशिश की थी—यहाँ तक कि अपनी ही अंतरात्मा की आवाज़ को भी दबा दिया था—दाऊद यह समझने में नाकाम रहा कि *वह खुद ही* वह आदमी था जो मौत का हकदार था। तभी भविष्यवक्ता नातान ने दाऊद का सीधे इन शब्दों में सामना किया: "वह आदमी तुम ही हो..." (पद 7)। वह कितना चौंकाने वाला सामना रहा होगा! दाऊद ने निश्चित रूप से कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि *वह* मौत का हकदार है; जब नातान ने उससे कहा, "वह आदमी तुम ही हो!" तो वह कितना हैरान रह गया होगा! जब हम पाप को पाप के रूप में पहचानने में नाकाम रहते हैं—और जब एक पवित्र परमेश्वर हमारे किए गए कामों को पाप के रूप में उजागर करता है—तो क्या हमारी अंतरात्मा को गहरा झटका नहीं लगेगा? मैं ही वह हूँ जो सचमुच मौत का हकदार है, फिर भी मेरा पक्का मानना है कि मौत का हकदार कोई और ही है; यह अपने बारे में कितनी गहरी अज्ञानता को दिखाता है! आप उस बयान के बारे में क्या सोचते हैं—"जिस आदमी ने ऐसा किया है, वह निश्चित रूप से मौत का हकदार है"—जो गुस्से में आकर एक ऐसे आदमी ने कहा था जो अपने ही पाप के प्रति अंधा था और अपनी ही असली हालत से बेखबर था?

हर मई में, मैं परिवार के विषय पर एक उपदेश देता हूँ। एक बार, मई के महीने में—जिसे "परिवार का महीना" कहा जाता है—जब मैंने पारिवारिक जीवन पर एक उपदेश दिया, तो सभा में मौजूद एक व्यक्ति ने कहा: "यह एक ऐसा संदेश है जिसे मेरी पत्नी को सचमुच सुनने की ज़रूरत है..." मुझे लगता है कि उस दिन मैंने जो संदेश दिया था, उसका मुख्य ज़ोर शायद पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहने की सलाह देने पर था। अक्सर, मैं खुद भी—परमेश्वर का वचन सुनते समय—यह सोचने लगता हूँ, "काश फलाँ व्यक्ति यहाँ होता और इसे सुन

पाता," बजाय इसके कि मैं इसे परमेश्वर की आवाज़ के रूप में पहचानूँ जो सीधे मुझसे बात कर रही है। निस्संदेह, उस पल परमेश्वर *मुझसे* ही बात कर रहे थे, फिर भी मैंने उनके संदेश को ऐसे समझा, मानो वह किसी और भाई के लिए हो। यह बात तब और भी ज़्यादा सच लगती थी, जब मैं पाप के विरुद्ध फटकार भरे संदेश देता था; वह 'वचन'—जो 'आत्मा की तलवार' है—उसे तो एक कटार की तरह सीधे मेरे अपने हृदय को बेध देना चाहिए था, फिर भी मैं उसे इस सोच के साथ प्रचार करता और सुनता था कि उसकी धार मुझ पर नहीं, बल्कि किसी और व्यक्ति पर वार करने के लिए है। यहाँ समस्या क्या है? यह इस बात का परिणाम है कि मैं खुद को परमेश्वर के पवित्र वचन—उस आध्यात्मिक दर्पण—के सामने पूरी लगन से नहीं रखता। जब हम अपनी जाँच-परख और आत्म-निरीक्षण में ढीले पड़ जाते हैं, तो एक ऐसा पल आता है—अक्सर बिना हमारी जानकारी के ही—जब हम पाप को पाप समझना ही छोड़ देते हैं; नतीजतन, यह स्वीकार करने के बजाय कि "गलती मेरी है," हम परमेश्वर की आवाज़ को इस रवैये के साथ सुनते हैं कि "गलती तो *उस* व्यक्ति की है।" परमेश्वर के वचन को इस विश्वास के साथ सुनना कितना बड़ा अहंकार-भरा पाप है कि अपराधी कोई और है, जबकि असल में, पाप तो *मैंने* किया है! जब हम इस तरह से पाप करते हैं और अपनी गलतियों को छिपाने की कोशिश करते हैं, तो ऐसा लगता है कि हम अनजाने में परमेश्वर द्वारा हम पर बरसाई गई असीम कृपा को भी धुंधला कर देते हैं; अपने अहंकार के जाल में फँसकर, हम परमेश्वर के उन फटकार भरे वचनों के प्रति भी बहरे हो जाते हैं, जो विशेष रूप से हमारे लिए ही कहे गए होते हैं। जब हम इस तरह से अपने किए गए पापों को छिपाने की कोशिश करते हैं, तो ऐसा लगता है कि हमारी अंतरात्मा धुंधली पड़ जाती है, परमेश्वर की कृपा धुंधली पड़ जाती है, और यहाँ तक कि हमारे कान भी बंद हो जाते हैं। निश्चित रूप से, हमें इस तरह से जीवन नहीं जीना चाहिए... आत्मा की तलवार पर भरोसा करते हुए,

— जेम्स किम का एक चिंतन

(उस कृपा की चाह रखने वाले हृदय के साथ, ताकि मैं उन पापों को ईमानदारी से स्वीकार कर सकूँ जिन्हें वह दिखाता है, और सच्चा पश्चाताप कर सकूँ)

घर के मुखिया के तौर पर पिता की भूमिका असल में कितनी अहम होती है?

अपने सौतेले भाई के हाथों बलात्कार का शिकार होने के बाद, तामार अपने भाई अबशालोम के घर में एक बेहद उदास और अकेली ज़िंदगी बिताने लगी। इस दौरान, अबशालोम—जो अपनी बहन तामार को बेइज़्ज़त करने के लिए अम्नोन से नफ़रत करता था—ने उससे एक भी शब्द बोलने से इनकार कर दिया (2 शमूएल 13:20, 22)। दो साल बाद (पद 23), अबशालोम ने अम्नोन को मार डाला (पद 29)। उन दो सालों के दौरान, अबशालोम ने अपनी बहन को बेइज़्ज़त करने वाले अम्नोन के प्रति अपनी नफ़रत से प्रेरित होकर, बदला लेने की अपनी तलवार को कितनी शिद्दत से पैना किया होगा, जब वह उसे मारने की साज़िश रच रहा था? इस बीच, अम्नोन ने तामार के साथ जो कुछ भी किया था, उसके बारे में सुनकर उनके पिता दाऊद ने "बहुत गुस्सा" होने के अलावा और कुछ नहीं किया (पद 21)। बाइबल में राजा दाऊद द्वारा अपने मूर्ख बेटे अम्नोन को प्यार से अनुशासन सिखाने—या उसे डांटने-फटकारने का भी कोई ज़िक्र नहीं मिलता। इसके अलावा, बाइबल में इस बात का भी कोई ज़िक्र नहीं है कि दाऊद अपनी बेटी तामार से मिलने गया हो—जो अबशालोम के घर में इतनी तकलीफ़ में रह रही थी—ताकि उसे दिलासा दे सके। शायद दाऊद, इज़राइल के राजा होने के नाते, राज-काज के मामलों में इतना ज़्यादा उलझा हुआ था कि उसे अपने ही परिवार की ज़रूरतों पर ध्यान देने के लिए समय ही नहीं मिल पाया।

परिवार में बुरी किस्मत आने पर भी...

भले ही परिवार में बुरी किस्मत आ जाए, हमें अपने घमंड को समझना होगा, पछतावा करना होगा, और एक छोटे बच्चे की तरह खुद को विनम्र बनाना होगा ताकि हम स्वर्ग के राज्य में जा सकें (cf. मैथ्यू 18:7–9, *द कंटेम्पररी बाइबिल*)। इसके अलावा, एक विनम्र दिल के साथ, और यीशु की बातों को मानते हुए, हमें सावधान रहना चाहिए कि "इन छोटे बच्चों में से किसी को भी नीचा न समझें" जिन्होंने खुद को विनम्र बनाया है। इसका कारण यह है कि "स्वर्ग में उनके फ़रिश्ते हमेशा मेरे [यीशु के] पिता का चेहरा देखते हैं" (cf. v. 10, *द कंटेम्पररी बाइबिल*)।

जैसे ही मैं इस वचन को अपने परिवार और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च पर लागू करता हूँ, जहाँ मैं सेवा करता हूँ...

परमेश्वर का अद्भुत कार्य इस बात से ज़ाहिर होता है कि कैसे उन्होंने आज्ञा न मानने वाले नबी योना को एक बड़ी मछली के पेट के अंदर से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया; कैसे, जब परमेश्वर का वचन दूसरी बार उसके पास आया, तो उन्होंने योना को आज्ञा मानने में समर्थ बनाया; और कैसे—उसकी यह घोषणा सुनकर कि "चालीस दिनों में नीनवे उलट दिया जाएगा"—नीनवे के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उपवास की घोषणा की (यहाँ तक कि अपने पशुओं को भी पानी पीने से मना कर दिया), और अंततः, नीनवे के राजा से लेकर हर नागरिक तक, सभी ने अपने बुरे रास्तों को छोड़ दिया और पूरी ईमानदारी से पश्चाताप किया (योना 3)। जैसे ही मैं इस अंश को अपने परिवार और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—जिस कलीसिया की मैं सेवा करता हूँ—पर लागू करता हूँ, मैं, अपने घर के मुखिया और विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च (जो प्रभु का अपना चर्च है) के वरिष्ठ पादरी, दोनों की हैसियत से, परमेश्वर द्वारा किए गए इस अद्भुत पश्चाताप के कार्य का व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने वाला सबसे पहला व्यक्ति बनना चाहता हूँ। मेरी यह दिली प्रार्थना है कि, जैसे-जैसे मैं लगातार परमेश्वर के वचन को ग्रहण करता और उस पर ध्यान देता हूँ—जो "आत्मा की तलवार" (इफिसियों 6:17) का काम करता है और "हथौड़े और आग" (यिर्मयाह 23:29) के समान है—मैं, मुझमें वास करने वाले पवित्र आत्मा के शक्तिशाली कार्य के द्वारा, लगातार अपनी अंतरात्मा में छेदा जाता रहूँ (तुलना करें: 1 शमूएल 24:5; 2 शमूएल 24:10; प्रेरितों के काम 2:37); और यह कि, जैसे-जैसे मेरा कठोर हृदय टूटता है और मेरा ठंडा हृदय पिघल जाता है, मैं—अपने परिवार और अपने चर्च के साथ—अपने पापों का ईमानदारी से पश्चाताप करूँ और उन्हें लगातार पूरी तरह से त्याग दूँ।

जिस किसी ने भी सचमुच यीशु का सामना किया है, वह घरों या कलीसियाओं को नष्ट करने वाला नहीं, बल्कि उन्हें बनाने वाला होता है।

शाऊल—जो कलीसिया को नष्ट करते हुए, पागलों की तरह घर-घर जाता था, और स्त्री-पुरुष का भेद किए बिना विश्वासियों को घसीटकर बाहर निकालता और उन सबको जेल में डाल देता था (प्रेरितों के काम 5:42)—उसमें एक बड़ा बदलाव आया। दमिश्क के रास्ते पर यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र, जो जी उठे थे, स्वर्गारोहण कर चुके थे, और परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान थे—का सामना करने के बाद, उसने पश्चाताप किया और उसे एक ईश्वरीय कार्य सौंपा गया (9:3–7)। उस क्षण से, वह घर-घर जाकर यह गवाही देने लगा कि हर किसी को पश्चाताप करना चाहिए, परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए, और हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास करना चाहिए (20:20–21); इस प्रकार उसने प्रभु की कलीसिया को बनाने के कार्य को पूरा किया। यदि हमने सचमुच यीशु मसीह—परमेश्वर के पुत्र—का सामना किया है, तो हम घरों या कलीसियाओं को नष्ट करने वाले नहीं, बल्कि उन्हें बनाने वाले हैं। हमें अपने घरों और कलीसियाओं को केवल अपने होठों से यीशु मसीह के सुसमाचार की गवाही देकर ही नहीं, बल्कि उस सुसमाचार के योग्य जीवन जीकर बनाना चाहिए (फिलिप्पियों 1:27)।

वैवाहिक रिश्ते...

वैवाहिक रिश्ते... यहाँ तक कि सबसे छोटी-छोटी बातों पर भी, पति-पत्नी के बीच बहुत बड़ी बहस छिड़ सकती है। नतीजतन, उनके रिश्ते में काफ़ी दूरी आ सकती है। वे एक-दूसरे से दूर हो सकते हैं—शारीरिक रूप से भले ही वे एक ही छत के नीचे रह रहे हों, लेकिन उनके दिल एक-दूसरे से इतनी बुरी तरह से अलग हो चुके होते हैं कि उन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है। इसलिए, जोड़ों को यह सीखना चाहिए कि 'अच्छे तरीके से कैसे लड़ा जाए'—यानी यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि एक छोटी सी चिंगारी भड़ककर एक भयानक आग का रूप न ले ले। विशेष रूप से, उन्हें उन मुद्दों पर झगड़ा करने से बहुत सावधान रहना चाहिए जिनमें किसी तीसरे व्यक्ति का हाथ हो, जैसे कि उनके बच्चे या माता-पिता। सबसे ज़्यादा मायने यह रखता है कि झगड़े के बाद क्या होता है। इंसान को पिछली असफलताओं से भी सीखते हुए, मेल-मिलाप करने की कला को लगातार सीखते रहना चाहिए। इंसान को अपना गुस्सा शांत करना चाहिए, प्रभु की ओर मुड़ना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना के उस पल में, जो उंगली अपने जीवनसाथी पर आरोप लगाने के लिए उठी हुई थी, उसे अपनी ही ओर मुड़ जाना चाहिए। पछतावा महसूस करने, अपनी गलतियों को स्वीकार करने और प्रायश्चित करने के बाद, इंसान को अपने जीवनसाथी के पास जाकर अपनी गलती माननी चाहिए और माफ़ी माँगनी चाहिए। मेरा मानना है कि इस ज़िम्मेदारी का सबसे ज़्यादा बोझ हम पतियों पर ही होता है।

जीवनसाथी की बेवफ़ाई के विषय पर

आज सुबह-सुबह, मसीह में एक बहन के साथ बातचीत और प्रार्थना में कुछ समय बिताने के बाद, मुझे अपने विचार लिखने की प्रेरणा मिली—भले ही वे कितने भी साधारण और अपूर्ण क्यों न हों—ये विचार जीवनसाथी की बेवफ़ाई के मुद्दे से संबंधित हैं। मैं ऐसा इस आशा के साथ कर रहा हूँ कि इससे दूसरों को कुछ हद तक मदद मिल सकेगी।

सबसे पहले, जब भी "बेवफ़ाई" का विषय उठता है, तो दो विशिष्ट व्यक्तियों के चेहरे मेरी आँखों के सामने आ जाते हैं। दोनों ही पुरुष हैं, और दोनों ही इस समय जेल में बंद हैं। उनकी कैद का कारण अलग-अलग है: एक व्यक्ति जेल में इसलिए है क्योंकि, पत्नी और बच्चे होने के बावजूद, उसने अन्य युवतियों के साथ बलात्कार किया; दूसरा व्यक्ति 20 साल की सज़ा काट रहा है—जो अब अपने बीसवें वर्ष में है—क्योंकि उसने एक ऐसे व्यक्ति को गोली मारकर हत्या कर दी, जिस पर उसे (सही या गलत रूप से) अपनी पत्नी के साथ अवैध संबंध होने का शक था। इन दोनों पुरुषों की याद आने का कारण यह है कि मैं उनकी पत्नियों के साथ एक गहरा जुड़ाव महसूस करता हूँ। वर्तमान में, दोनों महिलाओं ने अपने पतियों को तलाक़ दे दिया है और वे अपने बच्चों की परवरिश अकेले ही कर रही हैं। इन दो मामलों के अलावा, दो अन्य व्यक्तियों के बारे में भी मेरे मन में विचार आते हैं। इनमें से एक महिला है जिसके चार बच्चे हैं; उसके पति ने व्यभिचार किया, जिसके कारण उसने तलाक़ लेने पर विचार किया, हालाँकि—जहाँ तक मुझे पता है—अंततः उसने तलाक़ न देने का ही फ़ैसला किया और वे अभी भी साथ-साथ रह रहे हैं। दूसरी महिला, मेरी नज़र में, उन सभी महिलाओं में सबसे बेहतरीन उदाहरण है जिनसे मैं अब तक मिली हूँ और जिनके पतियों ने उनके साथ बेवफ़ाई की है। मेरा ऐसा मानने का कारण यह है कि जब उसके पति ने व्यभिचार किया, तो उसने पति द्वारा माँगे गए तलाक़ को देने से साफ़ इनकार कर दिया; इसके बजाय, वह पूरी श्रद्धा और लगन के साथ प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की शरण में डटी रही। परिणामस्वरूप, उसके पति ने अपने किए पर पश्चाताप किया और उसके पास लौट आया, और आज वे एक स्वस्थ और सुखद वैवाहिक जीवन का आनंद ले रहे हैं। जिस पल से उसके पति की बेवफ़ाई शुरू हुई थी, ठीक उसी पल से उसके

साथ प्रार्थना और बातचीत करते हुए, मैं सचमुच यह देखकर चकित रह गया—यह मेरे जीवन का पहला ऐसा अनुभव था—कि परमेश्वर किस अद्भुत रीति से कार्य करता है: वह पति को पश्चाताप और सुधार की ओर ले आता है, और इस प्रकार एक टूटे हुए परिवार को फिर से जोड़ देता है। परिवार के पुनर्स्थापन की इसी कृपा की चाह रखने वाले हृदय के साथ, मैं "बेवफ़ाई" के विषय पर अपने निजी विचार आप सबके साथ साझा कर रहा हूँ:

1. शैतान की यह इच्छा होती है कि वह हमारे परिवारों को एक जीता-जागता नरक बना दे। इस प्रकार, शैतान हमारे अंदर नरक की आज्ञाएँ भर देता है—विशेष रूप से, एक-दूसरे से नफ़रत करना (Gen 37:5; Deut 22:13; Matt 24:10; 1 John 2:9)। हमारे वैवाहिक रिश्तों में बढ़ती दरारों का फ़ायदा उठाकर—जो हमारे जीवनसाथी के प्रति बढ़ती नफ़रत से और गहरी होती हैं (cf. Neh 4:3, जहाँ हिब्रू शब्द का अर्थ "दरार" या "खाई" है; Neh 6:1)—शैतान हमें दूसरे पुरुषों या स्त्रियों में दिलचस्पी लेने के लिए लुभाता है। इसके अलावा, आँखों की हवस और शरीर की हवस (1 John 2:16) दोनों को भड़काकर, वह हमें विपरीत लिंग के अन्य सदस्यों की लालसा करने के लिए उकसाता है, जो अंततः हमें व्यभिचार के रास्ते पर ले जाता है। शैतान का अंतिम उद्देश्य हमारे परिवारों को तोड़ना और नष्ट करना है, जिससे वह हमें अपने घरों के भीतर "धरती पर स्वर्ग" बनाने से रोक सके; इसके बजाय, वह हमारे घरों को नरक जैसी जगहों में बदलने की कोशिश करता है।

2. एक मूर्ख पति जो व्यभिचार करता है, वह अपनी पत्नी से ही अनन्य प्रेम नहीं करता (Prov 5:15, *Modern People's Bible*)। और सटीक रूप से कहें तो, वह व्यभिचार इसलिए करता है क्योंकि वह अपनी पत्नी को खुशी देने में असफल रहता है और उसे अपनी पत्नी के साथ में कोई आनंद नहीं मिलता (v. 18, *Modern People's Bible*)। हालाँकि, यदि वह अपनी पत्नी को प्यारी और सुंदर मानकर उसका आदर करता—उसकी गोद में हमेशा संतुष्टि पाता और हमेशा उसके प्रेम में आनंदित होता (v. 19, *Modern People's Bible*)—तो वह कभी भी अपना स्नेह किसी दूसरी स्त्री पर नहीं लुटाता, न ही वह किसी दूसरे पुरुष की पत्नी को गले लगाता या उसके साथ बच्चे पैदा करता (vv. 16, 20)।

3. लालच से प्रेरित होकर, वह मूर्ख पति जो व्यभिचार करता है, न केवल अपनी पत्नी की गोद में निरंतर संतुष्टि पाने में असफल रहता है (v. 19), बल्कि वह सभी उचित सीमाओं को पार करके दूसरी स्त्रियों की लालसा भी करने लगता है। परिणामस्वरूप, आँखों की हवस से प्रभावित होकर, वह अपनी पत्नी के अलावा दूसरी स्त्रियों पर नज़र डालता है। इसके अलावा, उसके कान उन स्त्रियों से संबंधित बातें सुनने की ओर झुकने लगते हैं। फिर भी, उसकी आँखें चाहे कितनी भी औरतों को देख लें या उसके कान कितने भी शब्द सुन लें, वे कभी तृप्त नहीं होते (सभोपदेशक 1:8)। इस प्रकार, शैतान उसे अनैतिकता और शारीरिक वासनाओं के ज़रिए लुभाता है, और उसे पाप करने की ओर ले जाता है (2 पतरस 2:18)। उसे पाप की ओर ले जाते हुए, शैतान उसे किसी दूसरी औरत की चाहत करने पर उकसाता है। ऐसे लालच की कोई सीमा नहीं होती (यशायाह 56:11)। परिणामस्वरूप, यह लालच उसे अपनी पत्नी में संतोष पाने से रोकता है (नीतिवचन 5:19) और इसके बजाय उसे अपने पड़ोसी की पत्नी की चाहत करने के लिए प्रेरित करता है (निर्गमन 29:17)।

4. एक मूर्ख पति, जो व्यभिचार में लिप्त होता है, वह मन ही मन अपनी पत्नी को क्षमा करने से इनकार कर देता है (तुलना करें: कुलुस्सियों 3:13)।

5. जब कोई विवाहित जोड़ा अपने आपसी यौन दायित्वों को पूरा करने में विफल रहता है—एक-दूसरे के शरीरों को अस्वीकार करता है और इस प्रकार एक स्वस्थ यौन जीवन बनाए रखने में असफल रहता है—तो पति के लिए किसी दूसरी औरत के साथ अंतरंगता खोजने का जोखिम बहुत बढ़ जाता है, ठीक वैसे ही जैसे पत्नी के लिए किसी दूसरे पुरुष के साथ अंतरंगता खोजने का जोखिम बढ़ जाता है। यदि वे बाद में किसी अन्य व्यक्ति के प्रति आकर्षण से उत्पन्न होने वाले यौन प्रलोभन का सामना करते हुए आत्म-संयम बरतने में विफल रहते हैं, तो शैतान उनकी इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर उनकी परीक्षा लेगा, और अंततः उन्हें व्यभिचार और बेवफ़ाई की ओर ले जाएगा (1 कुरिन्थियों 7:1–5)।

6. विवाह परामर्शदाता एम. गैरी न्यूमैन ने एक अध्ययन किया जिसमें उन्होंने इस बात का विश्लेषण किया कि पुरुष बेवफ़ाई क्यों करते हैं; इसके लिए उन्होंने 200 पुरुषों का सर्वेक्षण किया (उन पुरुषों का भी जिन्होंने बेवफ़ाई की थी और उनका भी जिन्होंने नहीं की थी)। उनके शोध के परिणाम इस प्रकार बताए गए हैं (इंटरनेट के माध्यम से): 48% पुरुषों ने अपनी बेवफ़ाई का कारण अपने साथी (चाहे वह पत्नी हो

या प्रेमिका) से भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक प्रेम की कमी को बताया। हालाँकि आमतौर पर यह माना जाता है कि पुरुषों की बेवफ़ाई का मुख्य कारण उनकी पत्नियों से शारीरिक अंतरंगता की कमी होती है, लेकिन सर्वेक्षण में शामिल केवल लगभग 8% पुरुषों ने ही यह उत्तर दिया कि ऐसा था। ऐसा कहा जाता है कि पुरुष भी अपनी पत्नियों से शारीरिक या दैहिक निकटता की तुलना में भावनात्मक और आध्यात्मिक अंतरंगता की अधिक इच्छा रखते हैं—जिसे "हनी, धन्यवाद" या "हनी, मैं तुमसे प्यार करता हूँ" जैसे वाक्यों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। हालाँकि, पुरुषों और महिलाओं के बीच मुख्य अंतर यह है कि, महिलाओं के विपरीत, पुरुष अक्सर अपनी इन आंतरिक भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में संघर्ष करते हैं। ऐसा बताया गया है कि 77% पुरुषों का कोई न कोई ऐसा दोस्त या जान-पहचान वाला होता है जिसने किसी के साथ अफेयर किया हो। इसके अलावा, 40% पुरुष अपने अफेयर के पार्टनर से काम की जगह पर ही मिलते हैं। ज़्यादातर पुरुष उन महिलाओं के साथ अफेयर कर बैठते हैं जिनसे वे अपनी ही काम की जगह पर मिलते हैं; इसका कारण यह बताया जाता है कि उन्हें अपनी महिला सहकर्मियों या अपने से नीचे काम करने वाली महिलाओं से तारीफ़ और इज़्ज़त मिलती है। दूसरे शब्दों में, पुरुष उन महिलाओं की तरफ ज़्यादा आकर्षित होते हैं जो उन्हें अहमियत देती हैं और उनकी बातों का समर्थन करती हैं।

7. जब हम पुरुष अपनी पत्नियों को छोड़कर दूसरी महिलाओं के पीछे भागते हैं और व्यभिचार करते हैं, तो हमें अपने इन पाप भरे कामों के नतीजों का सामना करना ही पड़ता है। इन नतीजों—या सज़ा के रूपों—में "इज़्ज़त का खोना" (नीतिवचन 5:9), "समय का बर्बाद होना" (पद 9), "धन-दौलत का खोना" (पद 10), "सेहत का बिगड़ना" (पद 11), और "मन की शांति का छिन जाना" (पद 12–14) शामिल हैं।

8. ऐसे व्यभिचार वाले रिश्तों में पड़ने से बचने के लिए, हमें अपने जीवनसाथी के अलावा दूसरे लिंग के लोगों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए (नीतिवचन 5:8)। यह बात खास तौर पर उन लोगों पर लागू होती है जो हमारे और हमारे जीवनसाथी के बीच दरार डालने की क्षमता रखते हैं। हमें लालच से बहुत सावधान रहना चाहिए (निर्गमन 20:17)। अगर हमारे मन में लालच घर कर जाए, तो हम अपने जीवनसाथी के साथ रहकर भी संतुष्टि नहीं पा सकेंगे (नीतिवचन 5:19); इसके बजाय, हम गलत तरीके से दूसरे लोगों की तरफ देखेंगे (सभोपदेशक 1:8), उनके बारे में सोचते रहेंगे, और उनकी बातों पर कान देंगे। हमें

एक-दूसरे को माफ़ करते हुए अपना जीवन जीना चाहिए (कुलुस्सियों 3:13)। जिस तरह प्रभु ने हमें माफ़ किया है, उसी तरह हमें भी अपने जीवनसाथी को माफ़ करना चाहिए और उन्हें अपनाना चाहिए। अगर हम एक-दूसरे को माफ़ नहीं करते—और अपने जीवनसाथी के प्रति मन में शिकायतें जमा होने देते हैं—और अगर हम एक-दूसरे को स्वीकार करने या माफ़ करने से मना कर देते हैं, तो हमारे वैवाहिक रिश्ते का बिगड़ना तय है; आखिर में, इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि हम दूसरे लिंग के लोगों में दिलचस्पी लेने लगेंगे। हमें अपने वैवाहिक जीवन की समस्याओं और झगड़ों को नज़रअंदाज़ करने—या उन्हें और बिगड़ने देने—का आसान रास्ता नहीं चुनना चाहिए; इसके बजाय, हमें प्रभु की मदद से उन्हें सुलझाने की कठिन कोशिश करनी चाहिए।

“पत्नी की योग्यता” नाम का यह ड्रामा देखते हुए...

आजकल मैं एक ड्रामा देख रहा हूँ। उसका शीर्षक है “पत्नी की योग्यता,” लेकिन न जाने क्यों मैं बार-बार इस शीर्षक को “पत्नी का निशाना” पढ़ लेता हूँ। हाहा।
इस ड्रामा के बारे में बात करने से ज़्यादा, मैं व्यक्तिगत रूप से यह साझा करना चाहता हूँ कि एक पति होने के नाते मुझे अपनी पत्नी के प्रेमपूर्ण “निशाने” की आवश्यकता क्यों महसूस होती है।
मैं अपने सेमिनरी के सहपाठी पादरियों के काकाओटॉक समूह (18 लोग) में अपनी पत्नी को अक्सर “स्नाइपर” कहा करता था, और इसके कुछ कारण हैं: पहला कारण यह है कि मेरी नज़र में मेरी पत्नी का “निशाना” बहुत ही सटीक होता है। उदाहरण के लिए, कुछ वर्ष पहले मैंने अपनी पत्नी से अपने प्रवचन के बारे में उसकी राय पूछी थी। आज भी उसका उत्तर मुझे याद है। उसने कहा था कि मेरा रविवार का प्रवचन बुधवार की प्रार्थना सभा में होना चाहिए, और बुधवार का प्रवचन रविवार की आराधना सभा में। हाहा।
उसकी बात सुनकर मैं काफ़ी चकित रह गया था, क्योंकि मुझे लगा कि उसका विश्लेषण बिल्कुल सही था। उस समय मैं हर बुधवार नीतिवचन की पुस्तक पर प्रवचन दे रहा था। पत्नी का कहना था कि वह प्रवचन रविवार की सभा में अधिक उपयुक्त रहेगा — और मैं उसकी बात से असहमत नहीं हो सका।
साथ ही, उसने यह भी कहा कि रविवार वाला प्रवचन बुधवार की सभा में होना चाहिए। उसकी इस बात से भी मैं सहमत हुए बिना नहीं रह सका, क्योंकि बुधवार की प्रार्थना सभा में आने वाले लोग पहले से ही कुछ हद तक समर्पित विश्वासी होते हैं, इसलिए वे गहरे और गंभीर संदेश को बेहतर ढंग से ग्रहण कर सकते हैं। लेकिन मैं तो ठीक उल्टा कर रहा था। पत्नी की यह बात कि रविवार के प्रवचन को थोड़ा अधिक सरल और सामान्य लोगों के लिए सुलभ बनाना चाहिए, और बुधवार को समर्पित विश्वासियों के स्तर के अनुसार गहराई से बोलना चाहिए — उससे मैं सहमत हुए बिना नहीं रह सका।
उस समय भी मैं उसकी बात सुनकर सिर हिलाने पर मजबूर हो गया था। सच कहूँ तो, कई बार मुझे स्वयं भी आश्चर्य होता है कि मेरी पत्नी का “निशाना” कितना सटीक होता है। हाहा।
(उसके बाद से मुझे याद नहीं कि मैंने अपनी पत्नी से फिर कभी पूछा हो कि आज मेरा प्रवचन कैसा था। हाहा। शायद इसलिए नहीं कि मुझे उसकी सटीक टिप्पणी से डर लगता था, बल्कि इसलिए कि मैं अपने भीतर की उन कमियों का सामना करने से बचना चाहता था जिन्हें मैं जानता तो था, पर बदल नहीं पा रहा था।)

दूसरा कारण यह है कि मेरी पत्नी का यह सटीक "निशाना" मेरे अंतःकरण को चुभता है। और यद्यपि उस समय वह चुभन आसान नहीं होती, अंततः वही मेरे लिए लाभदायक सिद्ध होती है।

मुझे याद है, विवाह के शुरुआती दिनों में, जब मेरी पत्नी मुझे बेहतर समझने लगी थी, तब उसने मेरे विश्वास जीवन के भीतर मौजूद फ़रीसियों जैसे पहलुओं पर "निशाना" साधा था। बेशक, उस क्षण मैं उसे स्वीकार नहीं करना चाहता था; मैं उसे नकार देना चाहता था। असल में मुझे आत्मचिंतन करते हुए अपने भीतर की उस कपटपूर्ण धार्मिकता का सामना करना चाहिए था, पश्चाताप करना चाहिए था, और सच में यीशु के समान बनने वाला एक सच्चा विश्वासी जीवन जीना चाहिए था। लेकिन अब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मानना पड़ता है कि उस समय मैं ऐसा नहीं कर पाया। हाँ, पत्नी के "निशाने" ने मेरी कपटता को उजागर किया और मुझे उसके बारे में सोचने का अवसर दिया, लेकिन मैं गंभीरता से पश्चाताप नहीं कर सका।

तीसरा कारण यह है कि प्रभु मेरी प्रिय पत्नी के इस प्रेमपूर्ण और सटीक "निशाने" के माध्यम से मुझे गढ़ रहे हैं। जैसे कुम्हार मिट्टी को आकार देता है, वैसे ही प्रभु — जो स्वयं कुम्हार हैं — मुझे, जो दोषों से भरा हूँ, अधूरा हूँ, और जिसे बहुत तराशे जाने की आवश्यकता है, मेरी प्रिय पत्नी के साथ जोड़कर गढ़ रहे हैं। मुझे विश्वास है कि पत्नी के "निशाने" के माध्यम से प्रभु मुझे तराश रहे हैं, मुझे आकार दे रहे हैं, ताकि मैं यीशु के समान बन सकूँ। यह उनकी महान कृपा, कार्य और प्रेम है।

शायद इसी कारण जब मैं "पत्नी की योग्यता" नाम का यह ड्रामा देखता हूँ, तो उसका शीर्षक बार-बार मुझे "पत्नी का निशाना" पढ़ाई देता है। हाहा।



गलत दिशा में सबवे लेने और फिर U-टर्न लेने के अनुभव से...

इस अनुभव से मैंने एक कीमती सबक सीखा। वह सबक यह है: (1) मुझे सावधान रहना चाहिए—या यह पहचानना चाहिए कि यह मानने (या यकीन करने) का बहुत बड़ा खतरा है कि मैं सही रास्ते पर हूँ, जबकि मैं असल में गलत रास्ते पर चल रहा हूँ (अपनी मंज़िल से उल्टी दिशा में); (2) हो सकता है कि मैं खुद यह न पहचान पाऊँ कि जिस रास्ते पर मैं हूँ वह गलत है; (3) भगवान मेरे जीवनसाथी या दूसरों को यह एहसास दिलाने में मदद कर सकते हैं कि मैं गलत दिशा में जा रहा हूँ; (4) सबसे ज़रूरी बात यह है कि एक बार जब मुझे यह एहसास हो जाए तो मैं "U-टर्न" (पछतावा) लूँ; (5) हालाँकि, मुझमें खुद से पछताने की अंदरूनी काबिलियत नहीं है; (6) सिर्फ़ भगवान ही हैं जो मुझे पछताने के काबिल बनाते हैं; और (7) मुझे पछतावे का फल भुगतना होगा। भगवान ने मुझे इन्हीं सबकों को अपने शादीशुदा रिश्ते में भी लागू करने के लिए प्रेरित किया। उदाहरण के लिए, जब मैं—पति—गलती करने वाला होता हूँ, तब भी मैं सोच सकता हूँ (या इतना यकीन कर सकता हूँ) कि मेरी पत्नी ही गलत है; फिर भी, इसके बावजूद, मैं यह पहचानने में नाकाम हो सकता हूँ कि *मैं* ही समस्या हूँ और *मैं* ही गलतियाँ कर रहा हूँ। हालाँकि भगवान अक्सर मेरी पत्नी का इस्तेमाल मुझे यह एहसास दिलाने के लिए करते हैं, लेकिन मैं अक्सर उनकी बात सच में नहीं सुन पाता। इसलिए, मैं भगवान से मिलने वाले इस एहसास को कृपा का एक बड़ा काम मानता हूँ। इसके अलावा, मैं इसे भगवान का एक बड़ा आशीर्वाद मानता हूँ कि, इस एहसास के बीच, मैं अपनी गलतियों को मान पाता हूँ—भगवान और अपनी पत्नी दोनों के सामने। इसलिए, मैं भगवान की इस कृपा के लिए दिल से तरसता हूँ। और, भगवान की कृपा से, मैं पछतावा करना चाहता हूँ और उस पछतावे का फल पाना चाहता हूँ। इस तरह, मुझे उम्मीद है कि मेरी पत्नी और मैं एक ऐसे जोड़े के रूप में बनेंगे जो भगवान पर और भी ज़्यादा ध्यान देंगे, जिससे भगवान की महिमा होगी।

एक "पिता" की छवि

ईश्वर का काम बहुत ही अद्भुत है। आने वाला रविवार (16 जून) यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में 'फादर्स डे' (पिता दिवस) है। इसलिए, इस शनिवार दोपहर को, मैंने अपनी पत्नी, डिलन, जेसिका (जिससे शायद वह शादी करेगा), और हमारी सबसे छोटी बच्ची, यीउन के साथ रात का खाना खाने का कार्यक्रम बनाया है। हालाँकि, आज ही—गुरुवार को—मैं दोपहर के भोजन और कॉफी के लिए दो साथी विश्वासियों (एक भाई और एक बहन) से मिला, और हम तीनों के बीच अपने-अपने पिताओं के बारे में बातचीत शुरू हो गई। निस्संदेह, यह एक ऐसी मुलाकात थी जिसे ईश्वर ने अपनी संप्रभुता और अपने तय समय पर होने दिया (या जिसकी योजना बनाई); इसके अलावा, लगभग 37 वर्षों से एक-दूसरे को जानने के बावजूद, मेरा मानना है कि यह पहली बार था जब हमने अपने पिताओं के बारे में इतनी खुलकर बातें साझा कीं। इसलिए, जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं इस मुलाकात पर विचार करना चाहता हूँ और यह सोचना चाहता हूँ कि प्रभु इसके माध्यम से कौन से सबक या संदेश दे रहे हैं—कम से कम मुझे व्यक्तिगत रूप से:

1. यह एक ऐसी बातचीत थी जिसने मुझे एक बार फिर इस बात पर सोचने के लिए मजबूर किया कि एक पिता की भूमिका उसके बच्चों के जीवन में कितनी महत्वपूर्ण होती है। इसलिए, अपने प्यारे बच्चों—डिलन, येरी और यीउन—के पिता के रूप में, मैं आज की इस कृपा-भरी मुलाकात को एक अवसर के रूप में इस्तेमाल करना चाहता हूँ, ताकि मैं फिर से जाँच सकूँ कि मुझे उनमें से हर एक से ईश्वर के प्रेम के साथ कैसे प्रेम करना चाहिए, और उन सबकों तथा संदेशों से सीखना चाहिए जो वह मुझे दे रहे हैं।

2. अपनी इंटरनेट सेवकाई के माध्यम से, प्रभु ने मुझे पहले ही एक छोटी सी अंतर्दृष्टि प्रदान की है: एक बेटी के दृष्टिकोण से, यदि उसे अपने पिता के हाथों गहरे और गंभीर घाव मिले हैं, तो उसके लिए उन घावों को अपने साथ लिए हुए किसी अन्य पुरुष के साथ रिश्ते और विवाह में प्रवेश करना बेहद कठिन

हो सकता है। दिलचस्प बात यह है कि जिस बहन से मैं आज मिला—हालाँकि मुझे ठीक-ठीक नहीं पता कि उसे अपने पिता से किस तरह के घाव मिले थे—उसने मुझे और दूसरे भाई को, पहली बार यह बताया कि उसके अविवाहित रहने का कारण "बचाव" (रोकथाम) का मामला था। मैंने उसके शब्दों का जो अर्थ समझा, वह यह था: जब हम पिछले साल मिले थे, तो उसने *केवल* मुझसे यह बात कही थी कि उसे अपने पिता के प्रति कोई स्नेह महसूस नहीं होता। हालाँकि, आज उसने विस्तार से बताया कि उसके पिता ने उसे, उसके भाई-बहनों को, और—विशेष रूप से—उसकी माँ को कितना कष्ट पहुँचाया था। उसने बताया कि अपने पिता से मिले भावनात्मक ज़ख्मों की वजह से, उसने शादी न करने—और इस तरह बच्चे भी न करने—का फ़ैसला किया है, ताकि आगे कोई परेशानी न हो; उसे डर है कि अगर वह शादी करती और उसके बच्चे होते, तो कहीं उनका भी हाल वैसा ही न हो जाए जैसा उसका हुआ है। (आह।)

3. फिर भी, मैंने उससे पूछा, "क्या तुमने अपने पिता को माफ़ कर दिया है?" उसका जवाब था कि उसने *हाँ*, उन्हें माफ़ कर दिया है—इस हद तक कि अब वह उनके लिए खाने के साथ परोसी जाने वाली चीज़ें बनाती है और कई तरह से उनकी सेवा करती है—फिर भी उसने माना कि उसके दिल में अभी भी कड़वाहट और नाराज़गी बाकी है। मैं इसे एक बहुत बड़ी कृपा मानता हूँ कि वह अपने पिता को माफ़ कर पाई, जो अब नब्बे साल से ज़्यादा के हो चुके हैं। और मुझे उस पर गर्व है। उसने अपनी बात कुछ इस तरह कही, जैसे उसने अपने पिता को सिर्फ़ इसलिए माफ़ कर दिया हो "क्योंकि वे उसके परिवार का हिस्सा हैं।" इसलिए, मैंने भी उससे और उसके भाई-बहन से यह बात साझा की, "मैंने भी कभी अपने पिता के लिए अपने दिल में कड़वाहट पाल रखी थी, लेकिन अब मैंने उन्हें माफ़ कर दिया है।" यह बात सच है, भले ही मेरे पिता ने कभी मुझसे माफ़ी नहीं माँगी।

4. लेकिन, दूसरा भाई-बहन जो यह बातचीत सुन रहा था, उसने यह नहीं कहा कि *उसने* अपने पिता को माफ़ कर दिया है (या शायद वह बस ऐसा कह ही नहीं पाया?)। इसके उलट, उसने कहा कि वह इसे एक वरदान मानता है कि वह और उसके पिता अभी अलग-अलग रहते हैं (उसने यह भी बताया

कि उसकी माँ भी उसके पिता से अलग रहती है)। जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे वे ईमानदार सवाल फिर से याद आ जाते हैं जो उस भाई-बहन ने कभी अपने पिता से पूछे थे:

a. क्या मैंने, शायद, अपने तीनों बच्चों को एक बहुत ही सख़्त—शायद पाखंडी जैसी—धार्मिक जीवनशैली सिखाई है, और इस तरह उनके सामने अपनी ही धार्मिकता का दिखावा किया है (चाहे वह अतीत में हो या आज भी)? और क्या मैंने, शायद, उन्हें आस्था के प्रति एक बहुत ही नियम-कानूनों वाली सोच सिखाई है?

b. मैंने ज़रूर कभी न कभी अपने बच्चों को गुस्सा दिलाया होगा; क्या मैंने कभी उसके लिए उनसे माफ़ी माँगी है?

c. मेरा मानना है कि यह सही नहीं है—भले ही किसी के बच्चे पचास साल से ज़्यादा के हो गए हों—कि कोई पिता उन पर भरोसा न करे और प्यार की आड़ में, उनके हर काम में दखल दे—यहाँ तक कि उनके कपड़ों पर भी टीका-टिप्पणी करे। इसलिए, मैं इसे एक सबक के तौर पर लेता हूँ: जिस तरह मैं ईश्वर पर अपना बढ़ता हुआ भरोसा रखता हूँ, उसी तरह मुझे भी अपने तीनों बच्चों पर अपना बढ़ता हुआ भरोसा रखना चाहिए।

5. जब मैं इस छोटे से पल में "पिता" होने के असली मतलब पर एक बार फिर से सोचता हूँ, तो मैं खुद से पूछता हूँ: "सच में, मैं अपने तीनों बच्चों के लिए किस तरह का पिता हूँ?" मेरी एक सच्ची प्रार्थना और सबसे गहरी इच्छा यह है: कि मैं पवित्र आत्मा के फल—जो कि प्रेम है—से और भी ज़्यादा भर जाऊँ, और प्रभु के प्रेम का एक माध्यम और ज़रिया बनकर डाइलन, येरी और यीउन को ईश्वर के ही प्रेम से सँवारूँ। इसके अलावा, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मेरे ज़रिए काम करें—भले ही मैं कमियों से भरा, पापी, नाकाबिल और कमज़ोर हूँ—और पवित्र आत्मा मुझे पवित्र करता रहे, और मुझे ढालकर यीशु जैसा बनाता रहे। मेरी उम्मीद यह है कि, जब डाइलन, येरी और यीउन मेरे गुज़र जाने के

बाद मुझे याद करेंगे, तो उन्हें एक "छोटे यीशु" की छवि याद आएगी और वे अपने दिल की गहराइयों में महसूस करेंगे: "पिताजी ने मुझसे यीशु के ही प्रेम से प्यार किया।"

मेरी बहुत बड़ी गलती

21 जुलाई, 2024 — रविवार की सुबह।

आज, एक बार फिर, मुझे "पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो" [कुलुस्सियों 3:19: "पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ कठोरता से पेश न आओ"] शीर्षक के तहत अपना छठा उपदेश देना है। हालाँकि, मेरा अंतर्मन परेशान है। इसका कारण वह बातचीत है जो पिछले सोमवार को कार में मेरी प्यारी बेटी, येरी के साथ हुई थी, जब हम अपनी प्यारी चचेरी बहन, सु-जियोंग के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे थे। उस समय, मैंने येरी से पूछा, "अगर तुम्हारे मन में मेरे—तुम्हारे पिता—के प्रति कोई कड़वाहट या नाराज़गी है, तो कृपया मुझे बताओ।" मैंने उससे यह सवाल पूछने की योजना नहीं बनाई थी; हालाँकि, मेरे प्यारे बेटे, डिलन ने पहले ही मेरी पत्नी और मुझसे कहा था, "मेरे मन में आप लोगों के प्रति कोई कड़वाहट नहीं है" (एक ऐसा अनमोल तोहफ़ा जो उसने हमें दिया, भले ही माता-पिता के तौर पर हम इसके लायक नहीं थे)। इसके अलावा, 'मदर्स डे' पर—जब मैं अपनी पत्नी और हमारी सबसे छोटी बेटी, यीउन के साथ खाना खा रहा था—तो मैंने यीउन से भी ठीक यही बात पूछी थी: "क्या तुम्हारे मन में मेरे प्रति कोई कड़वाहट या नाराज़गी है?" चूँकि उसने जिस तरह से जवाब दिया, उससे लगा कि उसके मन में कोई खास बात नहीं है—या शायद कुछ भी नहीं है—तो मुझे लगा कि येरी से पूछने पर यह सिलसिला पूरा हो जाएगा, क्योंकि अब मैं अपने सभी बच्चों से पूछ चुका था। हालाँकि, मुझे हैरानी तब हुई, जब येरी ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उसके मन में अतीत में *कड़वाहट थी*—शायद न केवल मेरे प्रति, बल्कि मेरी पत्नी के प्रति भी। मैंने येरी का उसकी बेबाकी के लिए शुक्रिया अदा किया। नतीजतन, मैंने उससे तहे दिल से माफ़ी माँगी और कहा, "मुझे बहुत अफ़सोस है।" फिर भी, जिस बात से मुझे सचमुच सदमा लगा—या कम से कम एक ज़ोरदार झटका लगा—वह यह नहीं था कि उसके मन में हमारे (उसके माता-

पिता) प्रति कड़वाहट थी, बल्कि वह खास वजह थी जो उसने इसके लिए बताई। उसने समझाया कि उसे इस बात से नफ़रत थी कि जब मेरी पत्नी और मेरे बीच कोई बहस होती थी, तो हम दोनों अलग-अलग उससे अपने मन की बात कहते थे—और एक-दूसरे माता-पिता की पीठ पीछे बुराई करते थे। (आह।) उन शब्दों को सुनकर, मुझे एक बहुत ही गंभीर एहसास हुआ: "मैंने एक बहुत बड़ी गलती कर दी है।" मुझे एहसास हुआ कि मैंने अतीत में कितनी बेवकूफी की थी—खास तौर पर, जब हमारी आपस में बहस हुई थी, तो मैंने अकेले में येरी से अपनी पत्नी के बारे में बुरा-भला कहा था। हमारे वैवाहिक झगड़ों में अपने बच्चों को घसीटना मेरी बहुत बड़ी नासमझी थी। यह मेरी तरफ से एक गंभीर गलती थी। इतने लंबे समय तक, मैं इस सिद्धांत पर विश्वास करता रहा और इस पर ज़ोर देता रहा कि किसी भी जोड़े के रिश्ते में किसी तीसरे व्यक्ति—चाहे वह बच्चे हों, माता-पिता हों, या ससुराल वाले हों—को कभी भी शामिल नहीं करना चाहिए; फिर भी, असल में, बहस होने के बाद मैंने ठीक वही किया—डिलन, येरी और यीउन को अपने वैवाहिक मामलों में शामिल कर लिया। पिछले सोमवार तक मुझे इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं था, जब येरी ने कार में मुझसे खुलकर बात की और समझाया कि अतीत में उसके मन में मेरी पत्नी और मेरे, दोनों के लिए कड़वाहट क्यों थी। यह जानकर सचमुच बहुत दुख होता है कि मैं इस बात से कितना बेखबर था। येरी की बातें सुनकर मैं अंदर से हिल गया; फिर भी, मैं उसका बहुत आभारी भी था कि उसकी ईमानदारी की वजह से मैं आखिरकार—भले ही कुछ हद तक ही सही—अपनी गलती की गंभीरता को पहचान पाया। नतीजतन, मैंने एक बार फिर येरी से दिल से माफी मांगी। जवाब में, येरी ने मुझसे कहा कि भले ही अतीत में उसे ऐसा महसूस हुआ हो, लेकिन अब उसे ऐसा बिल्कुल महसूस नहीं होता। उसने समझाया कि—शायद इसलिए क्योंकि उसने अपने दोस्तों के माता-पिता के वैवाहिक जीवन में होने वाले झगड़ों और बहसों के बारे में बहुत कुछ सुना था, या शायद इसलिए क्योंकि वह अब समझदार हो गई है (ऐसा लगता है कि यह दोनों बातों का ही मेल है)—अब उसके मन में अपने मम्मी-पापा के लिए कोई कड़वाहट नहीं है। अगर यह एक पिता को अपने ही बच्चे के ज़रिए मिली कृपा नहीं है, तो और क्या है? मैं सचमुच बहुत आभारी हूँ।

क्षमा

“क्षमा की कीमत बहुत ज़्यादा होती है, लेकिन क्षमा का फल बहुत ही सुंदर होता है...।”

[पॉल डेविड ट्रिप, “व्हाट डिड यू एक्सपेक्ट?”]

मुझे क्षमा करना मुश्किल लगता है। बौद्धिक रूप से, मैं जानता हूँ कि मुझे अपने जीवनसाथी को उन गलतियों के लिए क्षमा कर देना चाहिए जो उन्होंने मेरे साथ की हैं; फिर भी, अपने दिल में, मैं उन्हें क्षमा करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाता। सच कहूँ तो, मेरे अंदर का एक हिस्सा ऐसा भी है जो क्षमा *करना ही नहीं चाहता*। खासकर जब मैं इस बारे में सोचता हूँ कि उन्होंने मेरे साथ कैसा बर्ताव किया, तो मैं गुस्से से भर जाता हूँ—इतना ज़्यादा कि कई बार मेरे मन में बदले की भावना जागती है और मैं उनके साथ ठीक वैसा ही बर्ताव करना चाहता हूँ। फिर भी, मैं खुद को रोक लेता हूँ। क्योंकि बाइबल हमें बताती है कि “प्रेम धीरजवान होता है” (1 कुरिन्थियों 13:4), इसलिए मैं बार-बार सहन करता हूँ। और फिर भी, वे बार-बार मेरे दिल को चोट पहुँचाते रहते हैं। इस पूरे दौरान, वे मुझसे कोई माफी नहीं माँगते; वे मुझसे क्षमा नहीं माँगते। असल में, ऐसा लगता है कि उन्हें मुझसे क्षमा माँगने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती। शायद उन्हें इस बात का एहसास भी नहीं है कि उन्होंने मेरे साथ कुछ गलत किया है या मुझे दुख पहुँचाया है। नतीजतन, वे ऐसे बोलते और बर्ताव करते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझे उनका यह रवैया बिल्कुल भी पसंद नहीं आता। और इसलिए, मैं उन्हें क्षमा करने से मना कर देता हूँ।

एक विवाहित जोड़े के तौर पर साथ रहते हुए, हम अनजाने में एक-दूसरे के साथ अनगिनत बार गलतियाँ करते हैं। सच तो यह है कि पति-पत्नी के बीच अनगिनत गलतियाँ होना स्वाभाविक है। बेशक, चूँकि दो व्यक्तियों का व्यक्तित्व अलग-अलग होता है, वे अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हैं, और उन पर माता-पिता का अलग-अलग

प्रभाव पड़ा होता है—और भी कई कारणों से—यह पूरी तरह से समझ में आता है कि उनकी भावनाओं और आपसी मतभेदों के कारण वे एक-दूसरे के साथ गलतियाँ कर बैठते हैं। हालाँकि, इसका मूल कारण यह है कि दो पापी लोग शादी के बंधन में बँधकर एक परिवार बनाते हैं। ज़रा सोचिए: जब दो पापी लोग शादी करके एक घर बसाते हैं, तो वे एक-दूसरे के साथ गलतियाँ करने से कैसे बच सकते हैं? हम सिर्फ एक-दूसरे के साथ गलतियाँ ही नहीं करते; ऐसे अनगिनत मौके आते हैं जब हम असल में एक-दूसरे के खिलाफ पाप करते हैं। लेकिन, समस्या यह है कि इतनी सारी गलतियाँ और पाप करने के बाद भी, हम एक-दूसरे को क्षमा करने का काम ठीक से नहीं कर पा रहे हैं। भले ही हम माफ़ कर भी दें, फिर भी हमारी माफ़ी उस हद तक नहीं पहुँच पाती, जितनी बड़ी गलतियाँ और पाप हमने एक-दूसरे के साथ किए हैं। इसी वजह से, हम माफ़ करने में देर लगाते हैं; और इसी वजह से, हम माफ़ करने से इनकार भी कर देते हैं। क्योंकि हम आपसी माफ़ी वाली ज़िंदगी नहीं जी रहे हैं, इसलिए हमारे दिल ज़ख्मों और कड़वाहट से भरे रहते हैं। ये ज़ख्म और यह कड़वाहट हमें अपने जीवनसाथी से पूरी तरह प्यार करने से रोकते हैं। मिसाल के तौर पर, हमारे दिलों में छिपे ज़ख्म और कड़वाहट हमें इस बात पर ज़्यादा ध्यान देने पर मजबूर करते हैं कि हमारे जीवनसाथी ने हमारे साथ क्या गलत किया है, बजाय इसके कि उन्होंने हमारे लिए क्या अच्छा किया है। और हम जितनी ज़्यादा उन गलतियों के बारे में सोचते हैं, उतना ही ज़्यादा एक-दूसरे को परखते हैं—यहाँ तक कि एक-दूसरे की बुराई करते हैं और उन्हें दोषी भी ठहराते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में हम अक्सर यह समझना भूल जाते हैं कि एक-दूसरे को परखकर, उनकी बुराई करके और उन्हें दोषी ठहराकर, हम असल में अपनी ही "खुद को सही मानने वाली सोच" दिखा रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, एक पति जो अपनी पत्नी को उन गलतियों और ज़ख्मों के लिए माफ़ करने से इनकार कर देता है जो उसने उसे दिए हैं—और जो इसके बजाय, अपने दिल के ज़ख्मों और कड़वाहट के नज़रिए से ही उससे बात करता है—वह हर बार जब उसकी पत्नी कोई गलती करती है, तो उसे परखता है, उसकी बुराई करता है, और उसे दोषी भी ठहराता है (कम से कम अपने मन में तो ज़रूर)। ऐसा करके, वह असल में अपनी पत्नी से यह कह रहा होता है: "तुम गलत हो, और मैं सही हूँ।" इसके अलावा, अपनी खुद की अच्छाई पर ज़ोर देकर—यहाँ तक कि भगवान के सामने भी—वह भगवान से अपनी बात को सही साबित करवाना चाहता है। नतीजतन, घमंड में अंधा होकर, वह उस पाप को पहचान ही नहीं पाता जो वह खुद भगवान के खिलाफ कर रहा है और, इसके परिणामस्वरूप, उसे भगवान से माफ़ी माँगने की कोई ज़रूरत ही महसूस नहीं होती। तो फिर, वह भगवान के खिलाफ कौन सा पाप कर रहा है? वह ठीक वही पाप कर रहा है—अपनी पत्नी को माफ़

करने से इनकार करने का पाप। फिर भी, ज़ख्मों और कड़वाहट में डूबा हुआ वह अपनी पत्नी की गलतियों और पापों को बारीकी से जाँचता रहता है—उसे परखता है, उस पर उंगली उठाता है, उसकी बुराई करता है, और उसे दोषी भी ठहराता है (भले ही सिर्फ़ अपने दिल में)। तो फिर, भगवान की नज़रों में ऐसा बर्ताव कैसा दिखता होगा? और एक पत्नी को कैसा महसूस होता होगा जब उसका पति उसके साथ इस तरह का बर्ताव करता है—उसे परखता है, उसकी बुराई करता है, और उसे दोषी ठहराता है? उसे निश्चित रूप से कभी भी अपने पति का प्यार महसूस नहीं होगा। लाज़मी तौर पर, उसे अपने पति से गहरा ज़ख्म मिलेगा। इसके अलावा, वह न सिर्फ़ अपने पति को माफ़ नहीं कर पाएगी, बल्कि उसे लगेगा कि वह ऐसा करने में पूरी तरह से असमर्थ है। अगर कोई जोड़ा इस तरह एक-दूसरे को माफ़ किए बिना साथ रहता रहे, तो उनका क्या होगा? उनके दिलों में ज़ख्म, कड़वाहट और नाराज़गी लगातार बढ़ती ही जाएगी। आखिर में, वे एक-दूसरे पर ज़रूर भड़क उठेंगे, और उनका शादी का बंधन इस तरह टूट जाएगा कि उसे फिर से जोड़ा नहीं जा सकेगा।

बाइबल कहती है: "लेकिन अगर तुम दूसरों की गलतियों को माफ़ नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारी गलतियों को माफ़ नहीं करेगा" (मत्ती 6:15)। जब पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ गलत करते हैं, तो उन्हें एक-दूसरे को माफ़ करना चाहिए। जिसने गलती की है, उसे सिर्फ़ यह कहकर नहीं रुकना चाहिए कि "मुझे माफ़ कर दो"; उसे यह भी कहने के लिए तैयार रहना चाहिए कि "मैं गलत था।" इसके अलावा, उन्हें साफ़-साफ़ बताना चाहिए—कि उन्होंने असल में क्या गलत किया और अपने जीवनसाथी के साथ कैसे गलत किया। उन्हें यह दिखाने का भी सच्चा वादा करना चाहिए कि वे भविष्य में उस गलती को दोबारा नहीं दोहराएँगे। हालाँकि, इस तरह माफ़ी देना कोई आसान काम नहीं है। इसकी वजह यह है कि हमारा "पुराना स्वभाव"—हमारा पाप वाला स्वभाव—अंदर से ही मतलबी होता है, जिसकी वजह से हमें लगता है कि हमारे जीवनसाथी की गलतियाँ हमारी गलतियों से कहीं ज़्यादा बड़ी और ज़्यादा हैं। इसके अलावा, हमारी आदतें हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि हमारा जीवनसाथी *हमें* माफ़ करे, और हम उससे इसकी उम्मीद करते हैं—यह चाहत हमारी उस चाहत से कहीं ज़्यादा होती है कि हम *उसे* माफ़ करें। इसलिए, अपने जीवनसाथी को माफ़ करने के लिए अपने अंदर की इन पाप वाली, मतलबी आदतों से लड़ना और उन पर काबू पाना—यह सच में एक बहुत ही मुश्किल काम है! इस तरह अपने जीवनसाथी को माफ़ करने की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है; इसके

लिए खुद को नकारना पड़ता है और अपनी तरफ़ से कुछ त्याग करना पड़ता है (मरकुस 8:34)। फिर भी, जब हम अपने जीवनसाथी को माफ़ करने के लिए यह बड़ी कीमत चुकाते हैं, तो उस माफ़ी का नतीजा सच में बहुत खूबसूरत होता है। जब मेरा जीवनसाथी मुझसे माफ़ी माँगता है—भले ही इसके लिए मुझे कितनी भी बड़ी कीमत चुकानी पड़े—तो मुझे उसे माफ़ कर देना चाहिए। फिर भी, माफ़ करते समय, मुझे ठीक वैसे ही माफ़ करना चाहिए "जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें (मुझे) माफ़ किया है" (इफिसियों 4:32)। एक पापी होने के नाते, जिसने किसी भी दूसरे इंसान की तरह, एक पवित्र परमेश्वर के ख़िलाफ़ अनगिनत बार पाप किए हैं—और जो यह जानता और मानता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में मुझे माफ़ कर दिया है, अभी भी मुझे माफ़ कर रहा है, और भविष्य में भी मुझे माफ़ करता रहेगा—मेरे लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि मैं अपने जीवनसाथी को माफ़ करूँ। इसके अलावा, मुझे उसे ठीक वैसा ही अपनाना चाहिए जैसा वह है, और मुझे उससे परमेश्वर के ही प्यार से प्यार करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम प्रभु से यह प्रार्थना कर पाएँगे: "हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी हर उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जिसने हमारे विरुद्ध पाप किया है..." (लूका 11:4)।

आपसे क्षमा माँगते हुए—ठीक वैसे ही जैसे मैं परमेश्वर से क्षमा माँगता हूँ—

पास्टर जेम्स किम द्वारा साझा किया गया
(29 जुलाई, 2014: जिस तरह परमेश्वर ने मुझ जैसे पापी को क्षमा किया है, ठीक उसी तरह मैं भी आपको क्षमा करता हूँ।)

अपने जीवनसाथी को माफ़ करना (1)

“एक-दूसरे के प्रति दयालु और करुणामय बनो, एक-दूसरे को माफ़ करो, ठीक वैसे ही जैसे मसीह में परमेश्वर ने तुम्हें माफ़ किया है” (इफिसियों 4:32)।

“मुझे माफ़ करना बहुत मुश्किल लगता है। बौद्धिक रूप से, मैं जानता हूँ कि मुझे अपने जीवनसाथी को उन गलतियों के लिए माफ़ *करना चाहिए* जो उन्होंने मेरे साथ की हैं, लेकिन अपने दिल से, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर पाता। और सच कहूँ तो, मेरे अंदर का एक हिस्सा उन्हें माफ़ *करना भी नहीं चाहता*। खासकर जब मैं सोचता हूँ कि उन्होंने मेरे साथ कैसा बर्ताव किया, तो मुझे बहुत गुस्सा आता है—इतना गुस्सा, कि कभी-कभी मेरे मन में भी ठीक वैसा ही उनके साथ करने की इच्छा जागती है। फिर भी, मैं खुद को रोक लेता हूँ। क्योंकि बाइबल कहती है, ‘प्रेम धीरजवन्त है’ (1 कुरिन्थियों 13:4), इसलिए मैं इसे सह लेता हूँ; मैं बार-बार खुद को रोक लेता हूँ। लेकिन फिर भी, वे बार-बार मेरे दिल को दुखाते रहते हैं। और इन सबके बावजूद, वे मुझसे कभी माफ़ी नहीं माँगते। असल में, ऐसा लगता है कि उन्हें माफ़ी माँगने की ज़रूरत भी महसूस नहीं होती। शायद उन्हें इस बात का एहसास भी नहीं है कि उन्होंने मेरे साथ गलत किया है या मुझे दुख पहुँचाया है। नतीजतन, वे ऐसे बोलते और बर्ताव करते हैं जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझे उनका यह रवैया बिल्कुल पसंद नहीं; मुझे यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं होता। और इसीलिए मैं उन्हें माफ़ नहीं करना चाहता।”

जब एक विवाहित जोड़ा साथ रहता है, तो वे अनजाने में अनगिनत बार एक-दूसरे के साथ गलतियाँ करते हैं। सच तो यह है कि पति और पत्नी के लिए एक-दूसरे के साथ गलतियाँ *न करना* लगभग असंभव है। क्योंकि उनके व्यक्तित्व अलग होते हैं, उनकी परवरिश अलग-अलग माहौल में हुई होती है, और उन्हें अपने-अपने माता-पिता से मिले संस्कार भी अलग होते हैं, इसलिए उनके बीच होने वाली छोटी-मोटी तकरार और झगड़े

आसानी से उन्हें एक-दूसरे को दुख पहुँचाने की ओर ले जा सकते हैं। हालाँकि, इसका मूल कारण इस तथ्य में निहित है कि दो पापी लोग शादी के बंधन में बंधकर एक परिवार के रूप में साथ आए हैं। ज़रा सोचिए: जब दो पापी लोग शादी करके एक घर बसाते हैं, तो वे एक-दूसरे के साथ गलतियाँ करने से बच ही कैसे सकते हैं? हम सिर्फ़ एक-दूसरे के साथ छोटी-मोटी गलतियाँ ही नहीं करते; ऐसे अनगिनत मौके आते हैं जब हम असल में एक-दूसरे के साथ *पाप* करते हैं। लेकिन समस्या यह है कि एक-दूसरे के साथ इतनी सारी गलतियाँ और पाप करने के बाद भी, हम एक-दूसरे को सच्चे दिल से माफ़ करने में नाकाम रहते हैं। भले ही हम माफ़ कर भी दें, तो भी हमारी यह माफ़ी उन गलतियों और पापों की तुलना में बहुत कम होती है, जो हमने एक-दूसरे के साथ किए हैं। हम माफ़ करने में बहुत देर लगाते हैं, और कभी-कभी तो हम साफ़-साफ़ मना ही कर देते हैं। क्योंकि हम आपसी माफ़ी वाला जीवन नहीं जी रहे हैं, इसलिए हमारे दिलों में ज़ख्म और कड़वाहट घर कर जाती है। ये ज़ख्म और यह कड़वाहट हमें अपने जीवनसाथी से पूरी तरह प्यार करने से रोकते हैं।

अपने जीवनसाथी को माफ़ करना (2)

“क्योंकि यदि तुम दूसरों के अपराधों को क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा; परन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा नहीं करेगा” (मत्ती 6:14–15)।

हमारे दिलों में छिपे घाव और कड़वाहट हमें एक-दूसरे के लिए किए गए अच्छे कामों को देखने से रोकते हैं, जिससे हमारा ध्यान केवल उन गलतियों पर केंद्रित हो जाता है जो हम एक-दूसरे के साथ करते हैं। हम जितना ज़्यादा इन गलतियों के बारे में सोचते हैं, उतना ही ज़्यादा एक-दूसरे को आंकते हैं—यहाँ तक कि एक-दूसरे की आलोचना और निंदा भी करने लगते हैं। फिर भी, इस प्रक्रिया में हम अक्सर एक बात समझना भूल जाते हैं: जब हम एक-दूसरे को आंकते हैं, आलोचना करते हैं और निंदा करते हैं, तो असल में हम अपना "खुद का सहीपन" (self-righteousness) दूसरे व्यक्ति पर थोप रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, जिस जीवनसाथी ने हमारे साथ गलत किया हो या हमें दुख पहुँचाया हो, उसे माफ़ करने के बजाय, हम उसके पास अपने दिलों में अभी भी मौजूद घावों और कड़वाहट के साथ जाते हैं। नतीजतन, जब भी हमारा जीवनसाथी कोई गलती करता है, तो हम उसे आंकते हैं (भले ही केवल अपने मन में), उसकी आलोचना करते हैं, और यहाँ तक कि उसकी निंदा भी करते हैं—और इस तरह प्रभावी रूप से यह घोषणा करते हैं, "तुम गलत हो, और मैं सही हूँ।" ऐसा करके, हम अपनी खुद की नेकी को भगवान की नज़रों में भी सही साबित करने की कोशिश करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हम अहंकारी हो जाते हैं; भगवान के खिलाफ खुद किए जा रहे पापों के प्रति अंधे होकर, हमें उनकी क्षमा मांगने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं होती। तो, आखिर वह कौन सा पाप है जो हम भगवान के खिलाफ कर रहे हैं? यह ठीक वही पाप है—अपने जीवनसाथी को माफ़ करने से इनकार करना। जब हम अपने ही घावों और कड़वाहट में डूबे रहते हैं—अपने जीवनसाथी को आंकते हैं, उसकी गलतियाँ निकालते हैं, आलोचना करते हैं,

और यहाँ तक कि उसकी निंदा भी करते हैं (फिर से, भले ही केवल अपने मन में)—तो भगवान की नज़रों में यह कैसा दिखता होगा? और उस जीवनसाथी के दिल का क्या होता है जिसे इस तरह के फैसले, गलतियाँ निकालने, आलोचना और निंदा का सामना करना पड़ता है? वह व्यक्ति अपने जीवनसाथी द्वारा प्यार न किए जाने का एहसास करेगा और निश्चित रूप से उसे गहरा दुख पहुँचेगा। इसके अलावा, उस घाव के कारण, वह न केवल अपने जीवनसाथी को माफ़ करने से इनकार करेगा, बल्कि शायद खुद को ऐसा करने में असमर्थ भी पाएगा। ऐसे जोड़े का क्या होता है जो इस तरह एक-दूसरे को माफ़ किए बिना जीते हैं? घाव, कड़वाहट और इसी तरह की शिकायतें उनके दिलों में लगातार जमा होती रहेंगी। आखिरकार, यह दबा हुआ रोष अनिवार्य रूप से एक-दूसरे के विरुद्ध फूट पड़ेगा, और उनका वैवाहिक बंधन अनिवार्य रूप से टूट जाएगा।

अपने जीवनसाथी को माफ़ करना (3)

“उसने भीड़ को अपने चेलों के साथ बुलाकर उनसे कहा, ‘यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो वह अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले’” (मरकुस 8:34); “और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी हर एक को जो हमारा ऋणी है, क्षमा करते हैं। और हमें परीक्षा में न डाल” (लूका 11:4)।

बाइबल कहती है: “क्योंकि यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा” (मत्ती 6:15)। जब जीवनसाथी एक-दूसरे के साथ कुछ गलत करते हैं, तो उन्हें एक-दूसरे को माफ़ ज़रूर करना चाहिए। जिसने गलती की है, उसे अपने जीवनसाथी से सिर्फ़ यह कहकर नहीं रुक जाना चाहिए कि, “मुझे माफ़ कर दो”; उसे यह कहने में भी सक्षम होना चाहिए कि, “मैं गलत था।” जब वे अपनी गलती मानते हैं, तो उन्हें यह साफ़-साफ़ बताने में सक्षम होना चाहिए कि उन्होंने क्या गलत किया और उन्होंने अपने जीवनसाथी के साथ कैसे गलत किया। इसके अलावा, उन्हें यह दिखाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए कि वे भविष्य में उस गलती को न दोहराने की पूरी कोशिश करेंगे। हालाँकि, इस तरह माफ़ी देना किसी भी तरह से कोई आसान काम नहीं है। इसका कारण यह है कि हमारे “पुराने स्वभाव” की सहज प्रवृत्तियाँ स्वार्थी होती हैं, जिससे हमें यह लगने लगता है कि दूसरे व्यक्ति की गलतियाँ हमारी अपनी गलतियों से ज़्यादा बड़ी और ज़्यादा हैं। इसके अलावा, हमारी सहज प्रवृत्तियाँ हमें यह उम्मीद और अपेक्षा करने पर मजबूर करती हैं कि दूसरा व्यक्ति *हमें* माफ़ करेगा, न कि हम उन्हें माफ़ करेंगे। तो फिर, अपने जीवनसाथी को माफ़ करने के लिए अपने अंदर की इन पापपूर्ण, स्वार्थी प्रवृत्तियों से लड़ना और उन पर काबू पाना कितना ज़्यादा मुश्किल और कठिन काम है! अपने जीवनसाथी को माफ़ करना तभी संभव है जब इसके लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाई जाए।

इसके लिए अपने आप का इन्कार करने और व्यक्तिगत त्याग करने की ज़रूरत होती है (मरकुस 8:34)। फिर भी, जब हम अपने जीवनसाथी को माफ़ करने के लिए यह बड़ी कीमत चुकाते हैं, तो उस माफ़ी का फल बहुत सुंदर होता है। और जब मेरा जीवनसाथी मुझसे माफ़ी पाने के लिए कोई बड़ी कीमत चुकाता है, तो बदले में मुझे भी उसे माफ़ कर देना चाहिए। हमें माफ़ करना ही चाहिए—लेकिन हमें ऐसा "ठीक वैसे ही करना चाहिए जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें (और मुझे) माफ़ किया है" (इफिसियों 4:32)। हमें अपने जीवनसाथी की गलतियों को माफ़ कर देना चाहिए, इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर—जो पवित्र है—उसने मेरे जैसे पापी को माफ़ कर दिया है, वह लगातार माफ़ कर रहा है, और यीशु मसीह के द्वारा मुझे—जिसने उसके विरुद्ध अनगिनत पाप किए हैं—आगे भी माफ़ करता रहेगा। इसके बाद, हमें अपने जीवनसाथी को ठीक वैसा ही स्वीकार करना चाहिए जैसा वे हैं, और उनसे परमेश्वर के प्रेम के साथ प्रेम करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम प्रभु से यह प्रार्थना कर पाएँगे: "हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी हर उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जो हमारे विरुद्ध पाप करता है..." (लूका 11:4)।

अपने जीवनसाथी को माफ़ करना (4)

“इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, उसके बहुत से पाप माफ़ कर दिए गए हैं—क्योंकि उसने बहुत प्रेम किया। लेकिन जिसे थोड़ा माफ़ किया गया है, वह थोड़ा ही प्रेम करता है।” (लूका 7:47) (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)

पहले, मैं कभी-कभी अपनी पत्नी से काफ़ी साफ़-साफ़ कहता था: “तुम मुझे सबसे ज़्यादा हिम्मत देने वाली हो, फिर भी ठीक उसी समय, तुम मुझे सबसे ज़्यादा हतोत्साहित करने वाली भी हो।” मैंने उससे इस तरह इसलिए बात की क्योंकि उसके कारण मुझे ठेस पहुँची थी। एक बार तो मैंने उससे ये शब्द भी कहे: “जेन, मेरे दिल में बहुत दर्द हो रहा है। तुम्हारे शब्दों ने मेरे दिल को किसी कटार की तरह छेद दिया है, और यह दर्द असहनीय है।” यह सुनकर, मेरी पत्नी ने जवाब दिया: “मुझे यह बताने के लिए धन्यवाद।” उस समय मैं उसके जवाब से थोड़ा हैरान था। मैंने मन ही मन सोचा: “रुको—मैंने अभी जो कहा, उसके लिए वह ‘धन्यवाद’ कैसे कह सकती है? क्या उसे सच में यह एहसास नहीं हुआ कि उसके शब्दों से मुझे ठेस पहुँची थी? अगर ऐसा है, तो अब से, जब भी मेरे दिल में दर्द हो, मुझे ईमानदार रहना होगा और उसे ठीक-ठीक बताना होगा कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ।” हालाँकि उस बातचीत के बाद भी मेरे और मेरी पत्नी के बीच वैवाहिक झगड़े होते रहे, लेकिन कुछ बदल गया था। हमने थोड़ा और साफ़ तौर पर सोचना—या शायद *अंदाज़ा लगाना*—शुरू कर दिया था कि एक-दूसरे को ठेस पहुँचाने से बचने के लिए हमें क्या *नहीं* कहना या करना चाहिए। धीरे-धीरे हमने खुलकर, सावधानी से और ईमानदारी से उन खास तरीकों पर चर्चा करने की आदत डाल ली, जिनसे हमने एक-दूसरे को ठेस पहुँचाई थी—एक ऐसी आदत जिसका हमने पहले से थोड़ा ज़्यादा अभ्यास किया।

जब हमें ठेस पहुँचती है, तो उस ज़ख्म का दर्द और तकलीफ़ हमें सांत्वना और, उससे भी बढ़कर, ठीक होने की चाहत जगाती है। यह हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। फिर भी, कई बार हम ऐसे जीते हैं जैसे कि उस प्रवृत्ति को भी नज़रअंदाज़ कर दिया गया हो—अपने जीवनसाथी द्वारा दिए गए ज़ख्मों को अपने दिल की गहराइयों में दबा लेते हैं, और न तो हमें सांत्वना मिलती है और न ही हम ठीक हो पाते हैं। जैसे-जैसे यह सिलसिला चलता रहता है, अंदर छिपे हुए वे ज़ख्म एक-एक करके जमा होने लगते हैं; आख़िरकार, कोई नई चोट एक विस्फोट को जन्म देती है, जिससे वे दबे हुए ज़ख्म सतह पर आ जाते हैं। अंत में, वे किसी बम की तरह फट पड़ते हैं, और वैवाहिक रिश्ते को संकट में डाल देते हैं। ऐसा होने से पहले, हमें अपनी शादी के अंदर गहराई से छिपे हुए "बमों" को खोजना और उन्हें निष्क्रिय करना होगा—ठीक वैसे ही जैसे बारूदी सुरंगों से भरे मैदान से विस्फोटक हटाए जाते हैं—उन्हें एक-एक करके हटाना होगा। ऐसा करने के लिए, हमें खुद को—अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर और प्रभु में एक आत्मा होकर—इन बमों को निष्क्रिय करने के काम के लिए समर्पित करना होगा। हालाँकि, जब हम खुद को समर्पित करते हैं, तो हमें समझदारी और कुशलता से सही "बम-निष्क्रिय करने वाले औजार" का इस्तेमाल करना चाहिए। इस संदर्भ में, वह औजार और कुछ नहीं, बल्कि "क्षमा" है। अपने दिलों के मैदान से बमों को हटाने के लिए, हम दोनों को मसीह यीशु के हृदय से एक-दूसरे को क्षमा करने का संकल्प लेना होगा। इसके अलावा, क्षमा करते समय, हमें इस बात का इंतज़ार नहीं करना चाहिए कि हमारा जीवनसाथी पहले हमारे पास आकर माफी मांगे; बल्कि, पहल हमें ही करनी चाहिए और अपने जीवनसाथी को पहले क्षमा करना चाहिए। यह कैसे संभव है? हम अपने जीवनसाथी को पहले कैसे क्षमा कर सकते हैं?

सबसे पहले, हमें उन पापों को पहचानना होगा जो हमने परमेश्वर और अपने जीवनसाथी, दोनों के विरुद्ध किए हैं।

लूका 7:39 देखें: "जब उस फरीसी ने, जिसने यीशु को आमंत्रित किया था, यह देखा, तो उसने मन ही मन कहा, 'यदि यह व्यक्ति भविष्यवक्ता होता, तो वह जान जाता कि उसे कौन छू रहा है और वह किस तरह की स्त्री है—कि वह एक पापिन है।'" ये शब्द "एक निश्चित फरीसी" ने मन ही मन कहे थे—वह व्यक्ति जिसने यीशु को अपने घर भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था (पद 36)। उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उसने देखा था कि "उस नगर की एक स्त्री, जो पापमय जीवन जीती थी," फरीसी के घर आई—यह जानकर कि यीशु वहाँ भोजन कर

रहे हैं—और, इत्र की एक संगमरमर की शीशी लेकर, उनके पैरों के पास पीछे खड़ी हो गई; रोते हुए, उसने अपने आँसुओं से उनके पैरों को भिगो दिया, अपने बालों से उन्हें पोंछा, उन्हें चूमा, और उन पर इत्र डाल दिया (पद 37–39)। फिर भी, यीशु ने इस "पापिन" स्त्री को दूर नहीं हटाया; इसके विपरीत, उन्होंने उसे अपने आँसुओं से अपने पैरों को भिगोने, अपने बालों से उन्हें पोंछने और उन्हें चूमने दिया—और जब वह उनके पैरों पर इत्र डाल रही थी, तब भी वे शांत खड़े रहे। इस फरीसी के दृष्टिकोण से, ऐसा व्यवहार पूरी तरह से समझ से परे रहा होगा। फरीसी ने शायद सोचा होगा: अगर यीशु सचमुच वही नबी हैं जिनका इंतज़ार वह और यहूदी लोग कर रहे थे (व्यवस्थाविवरण 18:18)—और इस तरह वह जानते थे कि यह औरत कौन है जो उन्हें छू रही है, और यह भी कि वह एक पापी है—तो वह भला ऐसी पापी औरत को खुद को छूने की इजाज़त कैसे दे सकते हैं? यहाँ हम एक बात यह समझ सकते हैं कि जहाँ एक तरफ इस फरीसी ने यह तो पहचान लिया कि "पाप भरी ज़िंदगी जीने वाली औरत" सचमुच एक "पापी" है, वहीं दूसरी तरफ वह यह पहचानने में नाकाम रहा कि वह खुद भी एक पापी है। और ज़्यादा साफ़ शब्दों में कहें तो, ऐसा लगता है कि यह फरीसी खुद को एक नेक इंसान मानता था। इसीलिए, अपने मन ही मन में उसने उस औरत को—जिसने अपनी संगमरमर की शीशी तोड़कर उसका इत्र यीशु के पैरों पर डाल दिया था—एक "पापी" का नाम दे दिया। इसके अलावा, उसने बिना किसी शक के इस पापी औरत को अशुद्ध माना होगा। नतीजतन, फरीसी ने ऐसी पापी औरत से दूरी बनाए रखी होगी। फिर भी, यीशु ने न तो उस औरत को अपने पास आने से रोका और न ही उसे अपने पैरों पर ये काम करने से मना किया; फरीसी के नज़रिए से देखें तो, यह कितना हैरान करने वाला रहा होगा! जब एक मर्द और औरत शादी करके एक साथ ज़िंदगी बिताते हैं, तो उन्हें एक-दूसरे के बारे में कई ऐसी बातें पता चलती हैं जो उनके लिए हैरानी की वजह बन जाती हैं—ऐसी बातें जिनके बारे में उन्हें शादी से पहले के दिनों में कभी पता ही नहीं था। लेकिन, एक बार जब वे शादी कर लेते हैं और अपना घर बसा लेते हैं, तो ये छिपी हुई बातें सामने आ जाती हैं; जब हम उन्हें अपनी आँखों से देखते हैं, तो हम हैरान हुए बिना नहीं रह पाते। क्योंकि ये ऐसी आदतें हैं जिनके बारे में हमें शादी से पहले पता नहीं था, इसलिए जब हम एक साथ रहते हुए रोज़मर्रा के अनुभवों से उनके बारे में और ज़्यादा जानते हैं, तो हैरान होना स्वाभाविक ही है। लेकिन, असली समस्या यह है कि यह प्रतिक्रिया सिर्फ़ हैरानी या सदमे तक ही सीमित नहीं रहती; बल्कि, इन बातों के सामने आने से हमें अपने जीवनसाथी से निराशा होने लगती है और हम इन्हीं बातों को अपनी शादी में झगड़े की वजह बना लेते हैं। बेशक, शुरुआत में हम शायद इन बातों को कोई बड़ा मुद्दा न बनाने का फ़ैसला करें; इसके बजाय, हम अक्सर सब्र और सहनशीलता दिखाते

हैं, और बिना कोई एतराज़ उठाए बातों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। लेकिन, जैसे-जैसे समय बीतता है और ये कमियाँ और ज़्यादा साफ़ तौर पर नज़र आने लगती हैं, तो पति-पत्नी के बीच टकराव होना तय हो जाता है। आखिरकार, पति-पत्नी आपस में लड़ने-झगड़ने लगते हैं। और गुस्से से भरी बहस की गर्मी में—जो गुस्से से ही भड़कती है—हम अपने जीवनसाथी से बिना सोचे-समझे बातें करते हैं, जिससे हम एक-दूसरे के दिलों को चोट पहुँचाते हैं (भले ही बोलने वाले को इस बात का एहसास भी न हो कि उसने कितना नुकसान पहुँचाया है)। बेशक, हम एक-दूसरे को जो भावनात्मक दर्द पहुँचाते हैं, वह सिर्फ़ बोले गए शब्दों से ही नहीं होता; जोड़े बिना बोले किए गए व्यवहारों से भी एक-दूसरे को उतनी ही आसानी से चोट पहुँचा सकते हैं। असली मुद्दा यह है: जब हमें चोट पहुँचती है, तो हम अक्सर अपने जीवनसाथी को अपना दर्द बता नहीं पाते और उन्हें माफ़ करने से इनकार कर देते हैं। नतीजतन, हमारे दिलों में जो ज़ख्म बिना भरे सड़ते रहते हैं, वे हमारे नज़रिए को बिगाड़ना शुरू कर देते हैं, जिससे हम एक-दूसरे को एक ज़्यादा ही टेढ़े-मेढ़े नज़रिए से देखने लगते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हम एक-दूसरे की आलोचना करने लगते हैं (मत्ती 7:1)। हम एक-दूसरे को नीचा भी दिखाने लगते हैं—भले ही सिर्फ़ अपने दिलों में (रोमियों 14:3)। इसके अलावा, हम यहाँ तक चले जाते हैं कि एक-दूसरे की बुराई करने लगते हैं (याकूब 4:11)। हम एक-दूसरे पर फ़ैसला सुनाने की हद तक भी पहुँच जाते हैं (लूका 6:37)। हम अब एक-दूसरे की कमज़ोरियों को बर्दाश्त नहीं करते; इसके बजाय, हम एक-दूसरे के शब्दों की भी आलोचना करने लगते हैं (रोमियों 14:1)। जब हम इस तरह से काम करते हैं, तो हम "कानून का पालन करने वाले" नहीं रह जाते, बल्कि इसके बजाय "न्यायाधीश" बन जाते हैं (याकूब 4:11)। एक बार जब हम इस हद तक पहुँच जाते हैं, तो हम उन पापों को पहचान भी नहीं पाते जो हमने किए हैं—न केवल एक-दूसरे के खिलाफ़, बल्कि परमेश्वर के खिलाफ़ भी। इसका मूल कारण यह है कि, परमेश्वर—जो सबसे बड़ा न्यायाधीश है—की उपस्थिति में खुद को देखने के बजाय, हम खुद को केवल अपने जीवनसाथी के संदर्भ में देखते हैं; नतीजतन, हम अपने पापों को पाप के रूप में देखने की अपनी क्षमता ही खो देते हैं। तो फिर, हम उन पापों को कैसे स्वीकार कर सकते हैं, मान सकते हैं, और उनके लिए परमेश्वर से माफ़ी माँग सकते हैं जो हमने किए हैं? यदि हम परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करने और उससे माफ़ी माँगने में असमर्थ हैं, तो यह बात साफ़ है कि हम उसी तरह अपने जीवनसाथी के सामने भी उन पापों को स्वीकार करने, मानने और उनके लिए माफ़ी माँगने में असमर्थ होंगे जो हमने उनके खिलाफ़ किए हैं।

हमें उन पापों का स्पष्ट एहसास होना चाहिए जो हमने परमेश्वर और अपने जीवनसाथी, दोनों के विरुद्ध किए हैं। इसके अलावा, जब हमने अपने जीवनसाथी के विरुद्ध पाप किया हो, तो उनकी उपस्थिति में *उनके* पापों की संख्या और गंभीरता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हमें सबसे पहले परमेश्वर के सामने *अपने* पापों की संख्या और गंभीरता की जाँच करनी चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए, हमें यीशु के कष्टों और क्रूस पर उनकी मृत्यु पर मनन करना चाहिए। जब हम यीशु पर विचार करते हैं—जिन्होंने हमारे पापों की खातिर कष्ट सहे और जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया—तो हम, कम से कम कुछ हद तक, अपनी पापमयता की वास्तविक सीमा और गंभीरता को समझ पाते हैं। और जितनी गहराई से हमें अपने पापों की बहुतायत और गंभीरता का एहसास होगा, उतना ही कम समय हमारे पास अपने जीवनसाथी के पापों पर ध्यान देने के लिए होगा; इसके बजाय, हम परमेश्वर के सामने अपने पापों की जाँच करने में ही व्यस्त पाए जाएँगे।

दूसरे, जिस प्रकार परमेश्वर ने हमारे पापों को क्षमा किया है, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवनसाथी के पापों को क्षमा करना चाहिए।

लूका 7:42 पर विचार करें: “क्योंकि उनके पास चुकाने के लिए कुछ भी नहीं था, इसलिए उसने दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया। अब उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?” ये शब्द यीशु ने शमौन नामक एक व्यक्ति से कहे थे—जिसे पद 40 में “एक फरीसी” (पद 36) के रूप में पहचाना गया है—और ये शब्द एक दृष्टांत के संदर्भ में कहे गए थे जिसमें एक “कर्ज़ देने वाला” और दो “कर्ज़दार” (एक पर 500 दीनार का कर्ज़ था और दूसरे पर 50 दीनार का) शामिल थे। जब कर्ज़ देने वाले ने “दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया” क्योंकि “उनके पास चुकाने के लिए कुछ भी नहीं था,” तो यीशु ने यह प्रश्न पूछा: “उनमें से कौन उससे [कर्ज़ देने वाले से] अधिक प्रेम करेगा?” (पद 41–42)। शमौन का उत्तर था: “वह जिसका बड़ा कर्ज़ माफ किया गया” (पद 43)। शमौन से ये शब्द कहने के पीछे यीशु का क्या उद्देश्य था? यीशु ने शमौन के साथ कर्ज़ माफी का यह दृष्टांत क्यों साझा किया—शमौन, जो एक फरीसी था और जिसने उस स्त्री को, जिसने यीशु के पैरों पर इत्र डाला था, एक “पापिनी” (पद 39) से अधिक कुछ नहीं समझा था? मुझे उस सवाल का जवाब आज के पाठ के 47वें पद में मिला: “...इस औरत के बहुत से पाप माफ़ कर दिए गए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसने मुझसे बहुत गहरा प्यार किया। लेकिन जिसे

कम माफ़ी मिली है, वह कम प्यार करता है" (मॉडर्न पीपल्स बाइबल)। यीशु साइमन को यह साफ़ करना चाहते थे कि इस औरत के—जिसे साइमन एक पापी मानता था—बहुत से पाप सचमुच माफ़ कर दिए गए थे (पद 47–48)। इसके अलावा, यीशु ने साइमन को समझाया कि उसके बहुत से पापों के माफ़ होने की वजह ठीक यही थी कि उसने उनसे बहुत गहरा प्यार किया था (पद 47)।

शादी के संदर्भ में, एक सचमुच गंभीर समस्या यह है कि हम उन पापों को पहचान नहीं पाते जो हमने परमेश्वर और अपने जीवनसाथी, दोनों के खिलाफ किए हैं। फिर भी, एक और भी ज़्यादा गंभीर मुद्दा यह है कि, जब हमें अपने उन पापों के बारे में पूरी जानकारी होती है जो हमने परमेश्वर और अपने जीवनसाथी के खिलाफ किए हैं, तब भी हम अक्सर उनसे माफ़ी माँगना भूल जाते हैं। ऐसा लगता है कि, दोनों पक्षों से माफ़ी माँगने के बजाय, हम अक्सर सिर्फ़ परमेश्वर से माफ़ी माँगते हैं, जबकि अपने जीवनसाथी से माफ़ी माँगना भूल जाते हैं। हम अक्सर अपने जीवनसाथी के लिए अपने प्यार का इज़हार करते हैं, फिर भी हम माफ़ी माँगने में हिचकिचाते हैं—और आखिर में, बिना माफ़ी माँगे ही वह मौका हाथ से निकल जाने देते हैं। इसकी वजह क्या हो सकती है? शायद इसकी वजह यह है कि हम अपने जीवनसाथी की नज़र में खुद को नेक साबित करने पर अड़े रहते हैं (लूका 10:29)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हम अपने जीवनसाथी के सामने खुद को *सही ठहराने* की कोशिश करते हैं, इसलिए हम उनसे माफ़ी माँगने का अहम मौका गँवा सकते हैं। या शायद हम अपने जीवनसाथी से माफ़ी माँगने से इसलिए इनकार कर देते हैं क्योंकि, परमेश्वर के सामने खड़े होकर, हम अपने पापों की गंभीरता और हद को देख नहीं पाते, और इसके बजाय—बहुत ज़्यादा—अपने जीवनसाथी के पापों की गंभीरता और हद पर ध्यान देते हैं। अगर हम सचमुच उन पापों की असलियत को समझ पाते जो हमने परमेश्वर की नज़र में अपने जीवनसाथी के खिलाफ किए हैं, तो हम सिर्फ़ परमेश्वर से ही माफ़ी नहीं माँगते; बल्कि हम सक्रिय रूप से अपने जीवनसाथी के पास जाते और, विनम्रता और ईमानदारी के साथ, उनसे भी माफ़ी माँगते। जब ऐसा होता है—अगर हमारा जीवनसाथी सचमुच इस असलियत को समझ पाता है कि परमेश्वर ने, मसीह यीशु में, उसके अपने पापों को माफ़ कर दिया है—तो वह भी, पूरे दिल से, हमें वैसे ही माफ़ कर देगा जैसे परमेश्वर ने मसीह यीशु में उसे माफ़ किया है। इसके अलावा, वे हमें पूरे दिल से स्वीकार करने का साहस जुटाएँगे और हमसे पहले से भी ज़्यादा गहराई से प्रेम करेंगे।

मैं यहाँ 'वचन' पर अपने इस मनन को समाप्त करना चाहूँगा। एक पति को न केवल उन गलतियों को स्वीकार करना चाहिए जो उसने परमेश्वर और अपनी पत्नी के सामने की हैं, बल्कि उन विशिष्ट पापों को भी स्वीकार करना चाहिए जिनका उसने उल्लंघन किया है। उसे न केवल परमेश्वर के सामने अपनी पत्नी के विरुद्ध किए गए पापों को स्वीकार करना, उनका अंगीकार करना और उनके लिए पश्चाताप करना चाहिए, बल्कि उसे उन पापों को सीधे अपनी पत्नी के सामने भी स्वीकार करना और उनका अंगीकार करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर की क्षमा के आश्वासन के साथ, उसे अपने दैनिक जीवन के माध्यम से यह प्रदर्शित करना चाहिए कि उसका पश्चाताप सच्चा है। परिणामस्वरूप, पत्नी को यह महसूस हो पाना चाहिए कि उसके पति ने वास्तव में पश्चाताप किया है और उसमें एक परिवर्तन आया है। जब वह यह देखती है, तो पत्नी को अपने प्रिय पति को क्षमा कर देना चाहिए। फिर भी, उसे क्षमा करते समय, उसे ऐसा कृतज्ञता और अनुग्रह से भरे हृदय के साथ करना चाहिए—इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर ने, मसीह यीशु में, स्वयं उसके जैसे एक पापी को क्षमा किया है। विशेष रूप से, उसे अपने पति को प्रेम के कारण क्षमा करना चाहिए—इस एहसास से प्रेरित होकर कि परमेश्वर के सामने उसके स्वयं के भी अनेक गंभीर पाप क्षमा किए गए हैं, और इस ज्ञान से कि परमेश्वर से उसे जो प्रेम मिला है, वह असीम और गहरा है। यही बात पति पर भी लागू होती है। उसे भी अपनी प्रिय पत्नी को क्षमा करना चाहिए—परमेश्वर के महान प्रेम और उमड़ते अनुग्रह से प्रेरित होकर, जिसने स्वयं उसके जैसे एक बड़े पापी को क्षमा किया है। उसे उसे क्षमा करना चाहिए—ऐसा करने का साहस जुटाते हुए—और मसीह यीशु के ही हृदय से अपनी पत्नी को गले लगाना चाहिए। मेरी यह हार्दिक प्रार्थना है कि, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के माध्यम से, हम अपनी स्वयं की पापमयता की गहराई और विशालता को पहचान सकें; और यह कि, मसीह यीशु के उमड़ते अनुग्रह और हृदय द्वारा सशक्त होकर—यह जानते हुए कि परमेश्वर ने मसीह यीशु में उन अनेक और बड़े पापों को क्षमा कर दिया है—हम ही वे लोग बनें जो अपने प्रिय जीवनसाथियों को क्षमा करने की पहल करें। अपनी पत्नी से प्रेम करने, उसे क्षमा करने, और उसे ठीक वैसे ही स्वीकार करने के लिए समर्पित, जैसी वह है—

एक अस्वस्थ परिवार में जुड़ाव?

1. जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमें निस्संदेह अपने माता-पिता से सकारात्मक प्रभाव मिलते हैं; फिर भी, साथ ही, हमें उतनी ही निश्चितता से नकारात्मक प्रभाव भी मिलते हैं।

2. हालाँकि, ऐसा लगता है कि हम अक्सर उन नकारात्मक प्रभावों से अनजान रहते हैं जो हमें अपने माता-पिता से मिले हैं—या, भले ही हम उनसे अवगत हों, हम उनके महत्व को पूरी तरह से नहीं समझ पाते—जिसके कारण हम अनजाने में वैसे ही बोलते और काम करते हैं जैसा हमारे माता-पिता करते थे।

3. अंततः, अपने जीवनसाथी के साथ होने वाले झगड़ों से उत्पन्न दर्द और परेशानी के माध्यम से, और ईश्वर की कृपा से, हम कभी-कभी उन नकारात्मक प्रभावों के बारे में कम से कम आंशिक जागरूकता प्राप्त करना शुरू कर देते हैं जो हमें अपने माता-पिता से विरासत में मिले थे।

4. यह बात विशेष रूप से उन पतियों या पत्नियों के लिए सच लगती है जो "दूसरों को खुश करने वाले" (people-pleasers) होते हैं। वैवाहिक कलह के माध्यम से—और उसके बाद होने वाले गहन चिंतन और आत्म-मंथन के द्वारा—वे उन नकारात्मक प्रभावों को पहचान सकते हैं जो उन्हें अपने माता-पिता से मिले थे। इसकी विशेष रूप से तब संभावना होती है जब उनका जीवनसाथी एक "टालने वाला" (avoider) हो—कोई ऐसा व्यक्ति जो अत्यधिक स्वतंत्र हो और बिना अधिक गहन विचार या सोच-विचार के सीधी-सीधी, खरी बातें कहने का आदी हो। जब ऐसे बयानों का सामना करना पड़ता है, तो दूसरों को खुश करने वाला जीवनसाथी गहन आत्म-निरीक्षण करने के लिए प्रेरित होता है; आत्म-परीक्षण की इस प्रक्रिया के माध्यम से, वे उन नकारात्मक प्रभावों को पहचानना—और स्वीकार करना—शुरू करते हैं जो उनके अपने माता-पिता ने उन पर डाले थे।

5. हालाँकि, यहाँ एक काफी गंभीर मुद्दा उठता है: दूसरों को खुश करने वाला जीवनसाथी, अब पहचाने और स्वीकार किए गए नकारात्मक प्रभावों के बोझ तले दबकर, अक्सर अपने जीवनसाथी के प्रति अत्यधिक अपराधबोध महसूस करता है। परिणामस्वरूप—और शायद इसलिए कि अपने जीवनसाथी को खुश करना ही उनके लिए स्वयं को खुश महसूस करने का एकमात्र तरीका है—इस बात का जोखिम रहता है कि वे अपने जीवनसाथी को अपने ही हृदय के भीतर "सिंहासन" (या राजा की गद्दी) पर कब्ज़ा करने की अनुमति दे सकते हैं। विवाह से पहले, उस सिंहासन पर माता और/या पिता का कब्ज़ा था, जिन्होंने उन पर इतना गहरा—और नकारात्मक—प्रभाव डाला था; अब, विवाह के बाद, उन्होंने बस उस व्यक्ति की जगह अपने जीवनसाथी को बिठा दिया है।

6. जिस कारण से मैं इसे इतना गंभीर मुद्दा मानता हूँ, वह यह है कि हृदय का सिंहासन—वह परम सत्ता की गद्दी—सही मायने में प्रभु का है, जो राजाओं के राजा हैं। फिर भी, यदि उस गद्दी पर प्रभु का नहीं, बल्कि किसी मनुष्य का कब्ज़ा हो—चाहे वह माता हो, पिता हो, या जीवनसाथी हो—तो यह मूर्तिपूजा का कार्य माना जाता है।

7. इस हद तक, माता-पिता या जीवनसाथी सचमुच हमारे दिलों में मूर्ति बन सकते हैं। हालाँकि, यह मूर्ति-पूजा वाली मानसिकता सिर्फ़ अपनी पूजा को माता-पिता से जीवनसाथी की ओर मोड़ने से ही खत्म नहीं हो जाती; बल्कि एक बहुत बड़ा खतरा यह भी है कि यह और आगे बढ़ सकती है, जिससे व्यक्ति अपने बच्चों को मूर्ति की तरह पूजने लगता है और उन पर हद से ज़्यादा, यहाँ तक कि जुनून की हद तक प्यार बरसाने लगता है।

8. फिर, परमेश्वर के असीम प्रेम और कृपा के ज़रिए—जो अक्सर किसी बड़े पारिवारिक संकट के बीच भी प्रकट होती है—हम भीतर झाँकने और अपना आत्म-परीक्षण करने के लिए विवश हो जाते हैं। ऐसा करते हुए, हम उस पाप को पहचानते हैं कि हमने परिवार के किसी ऐसे सदस्य को मूर्ति की तरह पूज लिया था जिससे हम बहुत ज़्यादा प्यार करते थे; हम इस पाप का पश्चाताप करते हैं, अपने दिलों से हर

मूर्ति को बाहर निकाल फेंकते हैं, और अंत में प्रभु को अपने दिलों के सिंहासन पर उनका सही स्थान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

9. एक बार जब ऐसा हो जाता है, तो हम विनम्रतापूर्वक अपना नियंत्रण प्रभु को सौंप देते हैं, और उन्हें अपने जीवन का संचालन करने देते हैं; इसके अलावा, हम अपने वैवाहिक रिश्ते को भी विश्वास के साथ उन्हें सौंप देते हैं, और उन्हें पति-पत्नी के बीच के इस बंधन की पूरी बागडोर संभालने देते हैं।

10. जैसे ही हम ऐसा करते हैं, और विश्वास की नज़रों से देखते हैं, तो हम सचमुच कुछ अद्‌भुत घटित होते हुए देखते हैं: कैसे प्रभु चमत्कारिक तरीकों से दो बिल्कुल अलग-अलग व्यक्तियों को—एक पति या पत्नी जो दूसरों को खुश करने की कोशिश करता है, और एक जीवनसाथी जो अक्सर चीज़ों से बचने की प्रवृत्ति रखता है—एक साथ लाते हैं, और उन्हें एक-दूसरे की कमज़ोरियों को पूरा करने और उन्हें मज़बूत बनाने में सक्षम बनाते हैं। इसके अलावा, जैसे-जैसे हम एक जोड़े के रूप में अपने प्रति प्रभु के प्रेम की गहराई का व्यक्तिगत अनुभव करते हैं, हम धीरे-धीरे अपने माता-पिता के नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति पाते हैं, और हमारा विवाह धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से एक ऐसे रिश्ते में तब्दील हो जाता है जो पूरी तरह से प्रभु पर केंद्रित होता है।

एक माँ का अपनी बेटी से "लगाव",
एक बेटी का अपनी माँ के लिए "प्यार और नफ़रत"

एक माँ का अपनी बेटी से "लगाव" उस बेटी के मन में अपनी माँ के लिए "प्यार और नफ़रत" की भावना पैदा कर सकता है।

यहाँ रविवार की सुबह है। पिछले शुक्रवार और शनिवार को, मैं कुछ साथी विश्वासियों के एक समूह के साथ एनसेनाडा, मेक्सिको की यात्रा पर गया था (नीचे तस्वीर में दिख रहे लोग अलग-अलग चर्चों से हैं; इनके अलावा, मेरे अपने चर्च के आठ सदस्य भी इस यात्रा में शामिल हुए)। इस पूरी यात्रा में लगभग 14 घंटे लगे। नतीजतन, मेरा शरीर थका हुआ महसूस कर रहा था; हालाँकि, प्रभु ने मुझे गहरी और सुकून भरी नींद दी, जिससे मैं आज सुबह जल्दी उठ सका और चर्च के पादरी कार्यालय में तय समय से पहले पहुँच गया। आज की रविवार की सेवा के लिए अपनी तैयारियाँ लगभग पूरी करने के बाद, अब मुझे कुछ पल का शांत खाली समय मिला है—एक ऐसा समय जिसका उपयोग मैं पारिवारिक जीवन से जुड़े उन सबकों पर विचार करने के लिए करना चाहता हूँ जो प्रभु ने मुझे इस हालिया यात्रा के दौरान हुए अनुभवों के माध्यम से दिखाए हैं।

1. एक पूरी तरह से अप्रत्याशित नए अनुभव के माध्यम से, मुझे यह सोचने पर विवश होना पड़ा: एक महिला के पारिवारिक जीवन में कितनी भारी पीड़ा, anguish और कठिनाई रही होगी कि उसने अपने सिर के सारे बाल पूरी तरह से मुंडवा लिए? ऐसा प्रतीत होता है कि इस महिला की गहरी पीड़ा का मूल उसकी अपनी माँ के साथ उसके रिश्ते में छिपा है।

2. एक बेटी और उसकी माँ के बीच का रिश्ता वास्तव में स्वस्थ कैसे हो सकता है? यह मेरे लिए बहुत गहरे महत्व का प्रश्न है—एक ऐसा प्रश्न जो मुझे लगभग रुला ही देता है। स्वाभाविक रूप से, एक बेटी के

दृष्टिकोण से, वह निस्संदेह अपनी माँ से प्यार करती होगी। फिर भी, ऐसा क्यों होता है कि जब एक बेटी अपनी माँ के बारे में सोचती है, तो उसके दिल में न केवल प्यार, बल्कि नफ़रत भी होती है? तो क्या यही कारण है कि एक बेटी और उसकी माँ के बीच के बंधन को अक्सर "प्यार और नफ़रत" के रिश्ते के रूप में वर्णित किया जाता है?

3. ऐसा क्यों होता है कि एक माँ—अपनी बेटी से बहुत प्यार करने का दावा करते हुए भी—अपनी बेटी के दिल पर इतनी गहरी पीड़ा, दर्द, ज़ख्म और आँसू देती है कि अंततः वह उसी बेटी को अपने प्रति नफ़रत पालने के लिए विवश कर देती है? ऐसा क्यों होता है कि एक माँ अपनी बेटी के अपार कष्टों से अनजान बनी रहती है—वे कष्ट जो उसके अपने "मोह" (जिसकी परिभाषा है: "किसी से इतनी गहराई से प्रेम करना या उसकी ओर इतना खिंचाव महसूस करना कि उससे अलग रहना असहनीय हो जाए; या ऐसी भावनाओं के पीछे की भावना" [Naver Dictionary]) के कारण उत्पन्न होते हैं? यदि एक माँ का अपनी बेटी के प्रति प्रेम केवल "मोह" का ही एक रूप है, तो मेरा मानना है कि यही मोह बेटी को अपनी माँ के प्रति "प्रेम-घृणा" (love-hate) की भावनाएँ रखने पर विवश कर सकता है—जिसमें वह एक ही समय पर अपनी माँ से प्रेम भी करती है और उससे नाराज़गी भी रखती है।

4. यदि कोई माँ—जो यह दावा करती है कि वह अपनी बेटी से इतना गहरा प्रेम करती है कि वह "उसके बिना जीवित नहीं रह सकती," और जिसका जीवन अपनी बेटी के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ महसूस होता है—अपने विश्वास के माध्यम से अपनी बेटी को ईश्वर की देखरेख में सौंपने में विफल रहती है, तो मुझे यह आशंका है कि वह बेटी अपना संपूर्ण जीवन कई मायनों में एक "विकलांग" व्यक्ति के रूप में बिता सकती है (मानसिक, भावनात्मक और अन्य दृष्टियों से)—यह एक ऐसी स्थिति होगी जो पूरी तरह से उसकी माँ के कारण उत्पन्न हुई होगी, और जो माँ के इस संसार से चले जाने के बाद भी बनी रह सकती है।

5. इसके अतिरिक्त, माँ और बेटी के बीच का यह अस्वस्थ समीकरण (dysfunctional dynamic) केवल एक ही पीढ़ी तक सीमित नहीं रहता; मेरा मानना है कि जब वह बेटी अंततः विवाह करती है और उसकी अपनी एक बेटी होती है, तो माँ-बेटी का वह आगामी रिश्ता भी इसी प्रकार से प्रभावित हो सकता है।

यद्यपि वह बेटी—जो अब स्वयं एक माँ बन चुकी है—का अपनी माँ के उस तीव्र मोह को अपनी संतान पर थोपने का कोई इरादा नहीं हो सकता, फिर भी मेरा मानना है कि वह अनजाने में उसी मोह को दोहरा सकती है—और वह भी इतनी हद तक कि उसकी अपनी बेटी उसे स्पष्ट रूप से महसूस और अनुभव कर सके।

6. तो फिर, हम उस असहनीय पीड़ा के इस दुष्चक्र को कैसे तोड़ सकते हैं, जो ऐसे परिवारों में माँ-बेटी के रिश्तों को जकड़े रहता है? हाल ही में मेक्सिको के एन्सेनाडा में आयोजित 'यूथ अलायंस कॉन्फ्रेंस' के स्तुति और आराधना सत्रों के दौरान, जिस गहन शिक्षा पर मैं चिंतन कर रहा हूँ, वह यह है: "यीशु मसीह ही पर्याप्त हैं!" मेरा मानना है कि यदि कोई माँ अपनी पूर्णता और संतोष यीशु मसीह में पाती है, तो वह अपनी बेटी को अब और अवांछित घाव, पीड़ा और संताप नहीं देगी। और मेरा मानना है कि यदि कोई बेटी अपनी पूर्णता और संतोष यीशु मसीह में पाती है, तो वह अपनी माँ के कारण उत्पन्न हुए उस अपार कष्ट में अब और डूबी नहीं रहेगी; इसके विपरीत, वह मसीह के ही प्रेम से अपनी माँ को प्रेम करने के लिए सशक्त हो जाएगी।

एक सांसारिक माँ—ऐसी माँ जो यीशु जैसी नहीं है—का अपने बच्चों के प्रति जो प्रेम होता है, वह किसी भी तरह से उन्हें प्रभु के प्रेम से प्रेम करने जैसा नहीं होता!

यीशु के शिष्यों में दो भाई थे, जिनका नाम याकूब और यूहन्ना था। उनके पिता ज़ेबेदी थे, और उनकी माँ याकूब और यूहन्ना को यीशु के पास ले आई; वह उनके सामने घुटनों के बल बैठ गई और एक विनती की। उसने यीशु से पूछा, "कृपा करके ऐसा वरदान दें कि आपके राज्य में, मेरे इन दो बेटों में से एक आपके दाहिने हाथ और दूसरा आपके बाएँ हाथ बैठे" (मत्ती 20:20-21)। याकूब और यूहन्ना की माँ ने यीशु से ऐसी विनती क्यों की? निस्संदेह, उसने ऐसा इसलिए पूछा क्योंकि वह वास्तव में यह नहीं समझ पाई थी कि वह यीशु से क्या माँग रही है (पद 22); हालाँकि, मेरा मानना है कि उसका अंतिम उद्देश्य केवल यही इच्छा थी कि उसके दोनों बेटे महान बनें और शिखर तक पहुँचें। परिणामस्वरूप, उसकी बातें सुनकर, यीशु ने अन्य दस शिष्यों को—जो इस बात से नाराज़ थे (उसके बेटों, याकूब और यूहन्ना को छोड़कर)—संबोधित करते हुए कहा, "तुम में से जो कोई महान बनना चाहता है, उसे दूसरों का सेवक बनना होगा; और जो कोई प्रथम बनना चाहता है, उसे दूसरों का दास बनना होगा" (पद 26-27)। यीशु सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आए थे (पद 28); फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि याकूब और यूहन्ना की माँ चाहती थी कि उसके दोनों बेटे ही सेवा पाने वाले बनें। एक सांसारिक माँ—ऐसी माँ जो यीशु जैसी नहीं है—का अपने बच्चों के प्रति जो प्रेम होता है, वह किसी भी तरह से उन्हें प्रभु के प्रेम से प्रेम करने जैसा नहीं होता!

अभी कुछ ही समय पहले तक, मैं मुख्य रूप से मत्ती अध्याय 20 के उस अंश पर मनन कर रहा था; मैंने इस अंश पर आधारित एक संक्षिप्त भक्तिपूर्ण चिंतन लिखा और उसे विभिन्न स्थानों पर साझा किया। उसके बाद, मेरे मन में यह इच्छा जागी कि मैं उन विशिष्ट चिंतन-बिंदुओं में और भी अधिक गहराई और विस्तार से उतरूँ,

जिन्हें मैंने ऊपर उस संक्षिप्त भक्तिपूर्ण लेख में रेखांकित किया था। शायद इसका कारण इस तथ्य में निहित है—जैसा कि ऊपर दिए गए भक्तिपूर्ण लेख के शीर्षक से भी संकेत मिलता है—कि मैं निम्नलिखित सत्य को अत्यंत गंभीर महत्व का विषय मानता हूँ: "एक सांसारिक माँ का अपने बच्चों के प्रति जो प्रेम होता है—ऐसा प्रेम जो मसीह के प्रेम जैसा नहीं है—वह किसी भी तरह से अपने बच्चों को प्रभु के प्रेम से प्रेम करने जैसा नहीं होता!" व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि—भगवान के प्रेम के बाद—सबसे महान प्रेम एक माँ का प्रेम होता है। यह विश्वास इस तथ्य से उपजा है कि मैं एक ऐसा बेटा हूँ जिसे अपनी माँ का प्रेम भरपूर मात्रा में मिला है—और आज भी मिल रहा है: एक ऐसा प्रेम जो विशाल, गहरा और असीम है। विशेष रूप से जब से मेरी माँ अस्सी वर्ष की हुईं, उन्होंने अक्सर मुझे कहानियाँ सुनाई हैं—उन कठिनाइयों के किस्से जो उन्होंने मुझे घर पर एक दाई की मदद से जन्म देते समय सहीं (यह एक कठिन प्रसव था, क्योंकि मेरा सिर काफी बड़ा था), या मेरे बचपन के वे संघर्ष जब मैं अक्सर बीमार पड़ जाता था, जिसके कारण उन्हें मुझे अपनी पीठ पर लादकर, दो बार बसें बदलकर, और अस्पताल में मेरा इलाज करवाने के लिए एक लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। परिणामस्वरूप, हर मई में—'मदर्स संडे' (यहाँ अमेरिका में, हम 'मदर्स डे' और 'फादर्स डे' के लिए अलग-अलग दिन मनाते हैं) के अवसर पर—जब भी मैं भगवान की आराधना करता हूँ और *न्यू हिमनल* (New Hymnal) से भजन 579 गाता हूँ, जिसका शीर्षक है "एक माँ का असीम प्रेम," तो मैं अक्सर भाव-विभोर हो जाता हूँ। मैं यहाँ उस भजन के पहले दो पदों के बोल साझा कर रहा हूँ: (पद 1) "एक माँ का असीम प्रेम—कितना अनमोल और दुर्लभ है यह! वह प्रेम हर कदम पर मुझे घेरे रहता है और मुझे अपने आगोश में ले लेता है। जब मैं रोता हूँ, तो मेरी माँ प्रभु से प्रार्थना करती हैं; और जब मैं खुशी से हँसता हूँ, तो वह स्तुति में अपनी आवाज़ उठाती हैं। (पद 2) जब मैं अपनी माँ की बाइबिल के उन पदों को निहारता हूँ—जो सुबह और शाम के पाठ के दौरान उनके हाथों के स्पर्श से घिसकर चिकने हो गए हैं—तो मुझे ऐसा महसूस होता है मानो मैं उन्हीं पदों में उनकी छवि देख सकता हूँ। 'जो कोई विश्वास करेगा, वह अनंत जीवन पाएगा'—ये अनमोल शब्द जो उन्होंने मुझे कंठस्थ करवाए थे, अब मेरी शक्ति का स्रोत बन गए हैं।" मेरी माँ की जो छवि मैं आज भी नहीं भूल पाता, वह है जब मैं उनके घर जाता था और उन्हें डाइनिंग टेबल पर बैठे देखता था—वे बाइबिल की प्रतिलिपि बना रही होती थीं, और अंततः अपना सिर टेबल पर झुकाकर सो जाती थीं। एक और याद जो मेरे दिल के बहुत करीब है, वह उस समय की है जब

उन्हें एम्बुलेंस में ले जाया गया था और वे आपातकालीन कक्ष (Emergency Room) में भर्ती थीं; जब हम दोनों—सिर्फ मैं और मेरी माँ—एक साथ भगवान की आराधना कर रहे थे, तब मैंने उनसे उनकी पसंदीदा बाइबिल आयत सुनाने का आग्रह किया: यशायाह 41:10। मुझे वह पल आज भी साफ़-साफ़ याद है जब उन्होंने जवाब देते हुए कहा था: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; घबराओ मत, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा; मैं तुम्हें अपने नेक दाहिने हाथ से थामे रहूँगा।" हालाँकि मेरी माँ की अनगिनत और भी यादें मेरे दिल में बसी हैं, लेकिन अगर मुझे सिर्फ़ एक और याद साझा करनी हो, तो वह उनकी मेरे सामने रोने की तस्वीर होगी। मैंने उनके उन आँसुओं को अपने दिल के अंदर एक बोतल में सहेजकर रखा है [तुलना करें: "मेरे आँसुओं को अपनी बोतल में रख" (भजन संहिता 56:8)]। फिर भी, साथ ही, मैं यह बात कभी नहीं भूल सकता कि मैंने अपनी माँ के दिल को कितनी गहरी तकलीफ़ पहुँचाई थी—कि मैं ही वह इंसान था जिसकी वजह से उनके वे आँसू बहे थे।

मुझे लगता है कि मैं असल में जो जानता हूँ—सिर्फ़ 1%—वह उन मौकों का बस एक छोटा सा हिस्सा है जब मैंने अपनी माँ को रुलाया है। बाकी 99% की बात करें तो—वे अनगिनत मौके जब मैंने उनके दिल को दुख पहुँचाया और उन्हें रुलाया—मैं आज भी उनसे अनजान हूँ, बस अंदाज़े ही लगा सकता हूँ। ऐसा ही एक अंदाज़ा यह है कि मेरी किशोरावस्था के दौरान, उनके ज़बरदस्त प्यार से आज़ाद होने की अपनी कोशिश में, मैंने अपने शब्दों और कामों से उन्हें गहरे ज़ज़्बाती ज़ख्म दिए; मुझे लगता है कि उन्होंने अकेले में, मेरी नज़रों से दूर, बहुत देर तक और फूट-फूटकर रोया होगा। उस समय, मुझे उनका प्यार—जो मेरी नज़र में हद से ज़्यादा लगता था—एक बहुत बड़ा बोझ लगता था। मुझे उनकी लगातार चिंता करना, उनकी कभी न खत्म होने वाली घबराहट और उनकी टोक-टाक बिल्कुल पसंद नहीं थी। संक्षेप में, मैं उनके हद से ज़्यादा प्यार और ज़रूरत से ज़्यादा हिफ़ाज़त से आज़ाद होना चाहता था—आज़ादी पाना चाहता था। इसलिए, आज़ाद होने की अपनी ही बेढंगी कोशिश में, मैंने उन्हें कई कड़वे और सीधे-सीधे शब्द कह दिए। मेरी माँ के नज़रिए से—जिन्होंने मुझे इस दुनिया में लाने के लिए इतनी तकलीफ़ें सहीं, और मुझे कोरिया में पालने-पोसने के लिए इतनी मेहनत की, जहाँ मैं इतना कमज़ोर था कि उन्होंने अपने तीन बच्चों में से सिर्फ़ मुझे ही अंडे खाने की कीमती सहूलियत दी—उनके दिल

पर क्या गुज़री होगी? वह एक ऐसी माँ हैं जिन्हें आज भी वह दिन साफ़-साफ़ याद है जब हम अमेरिका आकर बस गए थे: अंग्रेज़ी वर्णमाला का एक भी अक्षर न जानते हुए भी, मुझे अगले ही दिन एलिमेंट्री स्कूल में होने वाले एक टेस्ट के लिए बीस शब्द याद करने थे—यह काम इतना भारी था कि उन्होंने मुझे बेकाबू होकर रोते हुए देखा, जब मैं उन्हें याद करने की कोशिश कर रहा था। फिर भी, मेरे अपने नज़रिए से, उनका बेहिसाब और बिना शर्त प्यार इतना घुटन भरा लगता था कि मैं बस उससे आज़ाद होना चाहता था—ताकि मैं अपने फ़ैसले खुद ले सकूँ और अपनी शर्तों पर ज़िंदगी जी सकूँ। इसके अलावा, मेरी दिली तमन्ना थी कि वह मेरे पीछे पड़ना और मेरे बारे में इतनी ज़्यादा चिंता करना बंद कर दें। इसकी वजह सीधी-सादी थी: मुझे *उनकी* सेहत की चिंता थी। मुझे आज भी अपनी माँ का वह नज़ारा साफ़-साफ़ याद है—जब मैं एलिमेंट्री स्कूल में था—जब उन्हें, एक पारंपरिक कोरियाई डॉक्टर या चर्च के किसी बड़े-बुज़ुर्ग से, पूरे शरीर पर एक्यूपंक्चर की सुइयाँ लगवानी पड़ी थीं; ऐसा तब हुआ था जब, अपनी उम्र के चालीसवें दशक की शुरुआत में ही होने के बावजूद, उन्हें स्ट्रोक आया था और वह बेहोश होकर गिर पड़ी थीं। जब भी मैं अपनी माँ के बारे में सोचता हूँ—जो उस समय से लेकर आज तक लगातार ब्लड प्रेशर की दवा ले रही हैं—तो मेरी हमेशा से यह इच्छा रही है (और सच कहूँ तो, आज भी है) कि वह अपनी सेहत को मेरी सेहत से ज़्यादा अहमियत दें।

मैं अपनी माँ के साथ अपने रिश्ते की बातें इतनी बेझिझक होकर इसलिए बता रहा हूँ: क्योंकि मेरा मानना है कि माँ का प्यार ही इंसान के प्यार में भगवान के प्यार के सबसे करीब होता है; लेकिन साथ ही मेरा यह भी मानना है कि अगर माँ का यह महान और अनमोल प्यार भगवान के प्यार को नहीं दर्शाता, तो यह बच्चे के लिए फ़ायदे के बजाय नुकसान का सबब बन जाता है। मैंने खुद बहुत गहराई से महसूस किया है कि माँ के ऐसे नुकसानदेह प्यार के नतीजे कितने गंभीर हो सकते हैं—और इस बात पर मुझे बहुत गहरा दुख भी हुआ है—इसलिए मैंने आज एक छोटा सा धार्मिक लेख लिखने का फ़ैसला किया है, जिसका शीर्षक है: "एक सांसारिक माँ का अपने बच्चे के लिए प्यार—जो यीशु के प्यार जैसा नहीं है—वह किसी भी तरह से 'प्रभु के प्यार' से बच्चे को प्यार करने जैसा नहीं हो सकता!" इस लेख के बाद, मैं अपने दिल में दबी कुछ और भी गंभीर बातों को लिखकर ज़ाहिर करना चाहता हूँ, ताकि उन्हें कुछ और ज़्यादा साफ़ और व्यवस्थित रूप दिया जा सके:

1. सबसे पहली और ज़रूरी बात—जैसा कि मेरे इस छोटे से धार्मिक लेख के शीर्षक में कहा गया है—मैं एक ऐसी "सांसारिक माँ, जो यीशु के जैसी नहीं है," उसे एक बहुत बड़ी समस्या मानता हूँ। बेशक, एक "सांसारिक बच्चा, जो यीशु जैसा नहीं है," वह भी एक बड़ी समस्या है; लेकिन मेरी नज़र में, वह सांसारिक माँ जो यीशु जैसी नहीं है, वह उस बच्चे से भी कहीं ज़्यादा बड़ी समस्या खड़ी करती है।

2. भले ही वह एक ऐसी माँ है जो यकीनन यीशु में विश्वास रखती है, लेकिन अगर उसके बच्चे उसे देखकर यह सोचते हैं कि, "मेरी माँ चर्च में सेवा का काम करती है और दावा करती है कि वह यीशु में विश्वास रखती है, लेकिन मुझे पक्का यकीन नहीं है कि वह सचमुच उन पर विश्वास करती है और उन पर भरोसा करती है," तो मेरा मानना है कि—भले ही चर्च के लोगों या दूसरे विश्वासियों की नज़र में उसका विश्वास कितना भी बेहतरीन क्यों न दिखता हो—अगर वह घर पर हर दिन और हर पल अपने बच्चों को लेकर चिंता, फिक्र और घबराहट में डूबी रहती है, तो उन बच्चों का यह सवाल पूछना बिल्कुल सही होगा कि, "क्या मेरी माँ सचमुच प्रभु में विश्वास रखती है?"

3. विशेष रूप से, यदि कोई माँ अपने बच्चों से हद से ज़्यादा प्यार करती है—ठीक वैसे ही जैसे जेम्स और जॉन की माँ करती थी—और सबसे बढ़कर यह चाहती है कि उसके बच्चे "महान बनें और सर्वोच्च पद प्राप्त करें"; यदि वह इतनी शिद्दत से चाहती है कि उसके बच्चे सांसारिक सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ें और मान-सम्मान तथा पद के शिखर पर पहुँचें, कि वह परमेश्वर के पवित्र स्थान पर चली जाती है—ठीक वैसे ही जैसे सैमुअल की माँ हन्ना गई थी—और परमेश्वर पिता से यह विनती करती है, "हे परमेश्वर, कृपया मेरे बच्चे को सिर बना, पूँछ कभी नहीं" (देखें: व्यवस्थाविवरण 28:13, *द कंटेम्पररी बाइबल*), तो मेरा मानना है कि उसके बच्चे कभी भी अपनी माँ की अतृप्त इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाएँगे। इसके अलावा, उसके बच्चों को शायद इस बात का गहरा अपराधबोध सताएगा कि वे कभी भी अपनी माँ को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर पाए; इस नकारात्मक सोच में फँसकर कि "मैं कितनी भी कोशिश क्यों न कर लूँ, मैं अपनी माँ को कभी खुश नहीं कर सकता," वे शायद कम आत्म-सम्मान और हीन भावना से बुरी तरह जूझेंगे।

4. मेरा मानना है कि जो बच्चा इस तरह से अपने ही महत्व को कम आँकता है—जो खुद को तुच्छ समझता है—वह मानसिक और भावनात्मक रूप से अपनी माँ से बँधा रहता है, और इस तरह उसके साथ हेर-फेर (manipulation) होने का गंभीर खतरा बना रहता है। ऐसा बच्चा अपनी माँ की स्वीकृति पाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा; फिर भी, वह जितनी ज़्यादा कोशिश करेगा, वह अतृप्त माँ उतनी ही ज़्यादा यह कहेगी, "तुम इससे भी बेहतर कर सकते हो," क्योंकि वह चाहती है कि उसका बच्चा सांसारिक सफलता की सीढ़ियों पर और भी ऊँचा चढ़े। मेरा मानना है कि ऐसी माँ की अपेक्षाएँ—जो अत्यधिक प्रेम और महत्वाकांक्षा से जन्मी हैं—इतनी शक्तिशाली होती हैं कि वे उसके बच्चे की आत्मा, मन और भावनाओं को पूरी तरह से नष्ट कर सकती हैं।

5. जब मैं ऐसे बच्चों को देखता हूँ जो इतनी विकट स्थिति में फँसे होते हैं, तो मैं उनके और उनकी माँओं के बीच के बंधन को एक "विषाक्त रिश्ता" (toxic relationship) मानता हूँ—एक ऐसा रिश्ता जो ज़हर से दूषित है। ये माँएँ जितना ज़्यादा अपना प्यार उड़ेलती हैं, इस बात का खतरा उतना ही बढ़ जाता है कि उनके बच्चे इस खतरनाक ज़हर से बुरी तरह संक्रमित हो जाएँगे। ये बच्चे धीरे-धीरे मर रहे हैं, अपनी माँओं के सांसारिक किस्म के प्यार के ज़हर से; फिर भी, माँएँ अपनी तरफ से पूरी ईमानदारी से यह मानती हैं—और अपने बच्चों से भी यही कहती हैं—कि वे सबसे बढ़कर, सबसे अधिक आत्म-त्याग वाला प्यार दे रही हैं। मैं इसे वास्तव में एक दुखद वास्तविकता मानता हूँ।

6. क्या माँ और बच्चे के बीच के इस विषाक्त रिश्ते का कोई तोड़ (antidote) है? अगर ऐसा है, तो इसका इलाज क्या हो सकता है? मेरा अपना मानना है कि, सबसे पहले और सबसे ज़रूरी बात यह है कि जो माँएँ अपने बच्चों से इस सांसारिक तरीके से प्यार करती हैं, उन्हें उनसे *कम* प्यार करना सीखना होगा। उन्हें अपनी पूरी ज़िंदगी इस कोशिश में लगाना बंद कर देना चाहिए—यह सोचकर कि वे बच्चे की भलाई के लिए ही काम कर रही हैं—और प्यार की इस लगातार, खुद को कुर्बान करने वाली दौड़ को रोक देना चाहिए। ऐसा लगता है जैसे "माँ के प्यार का इंजन" इतना बड़ा और शक्तिशाली है कि, सिर्फ़ बच्चे को फ़ायदा पहुँचाने की चाहत में, वे इंजन को चालू रखती हैं और इतनी तेज़ी से दौड़ती हैं

कि आखिर में वे ब्रेक लगाने की क्षमता ही खो देती हैं। नतीजतन, भले ही कोई उनसे कहे, "तुम्हें अपने बच्चे से खुद को कुर्बान करके और अपनी पूरी कोशिश से प्यार करना चाहिए," ऐसा लगता है कि कुछ माँओं के लिए, *रुकने* के लिए ज़रूरी अंदरूनी सिस्टम पहले ही खराब हो चुका होता है। इसलिए, मेरा मानना है कि ऐसी माँओं को जान-बूझकर अपने प्यार को कम करने की कोशिश करनी चाहिए—अपने बच्चों से थोड़ा कम प्यार करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया, तो मेरा मानना है कि बच्चे के लिए यह ज़हर जैसा बन सकता है—या तो वह इतनी गहरी निराशा में डूब जाएगा कि मरने की इच्छा करने लगेगा, या फिर उसके मन में गहरी कड़वाहट पैदा हो जाएगी और वह अपनी माँ से नफ़रत करने लगेगा।

7. जो माँएँ अपने बच्चों को घुटन महसूस करते हुए देखने के बावजूद उन्हें जाने नहीं दे पातीं, उन्हें सबसे पहले कुछ दूरी बनानी चाहिए—शारीरिक रूप से भी और समय के हिसाब से भी। उन्हें ऐसा करना ही चाहिए, भले ही इसके लिए जान-बूझकर कोशिश करनी पड़े। भले ही ऐसा लगे कि उनके दिल के टुकड़े हो रहे हैं, माँओं को अपने बच्चों की भलाई के लिए कुछ सही सीमाएँ तय करनी ही चाहिए। खासकर, जिन माँओं के अपने पतियों के साथ रिश्ते तनावपूर्ण हैं—जिसकी वजह से वे अपना "सब कुछ" अपने बच्चों पर लगा देती हैं—उन्हें परमेश्वर के सामने अकेले खड़ा होना सीखना चाहिए और, विश्वास के ज़रिए, अपने बच्चों को उसकी देखरेख में सौंप देना चाहिए। जो माँएँ अपने बच्चों के बारे में सोचते समय चिंता करती हैं—जो परमेश्वर पर विश्वास की कमी से पैदा होती है—उन्हें पश्चाताप करना चाहिए। इसका कारण यह है कि बिना विश्वास के बच्चों को पालना एक पाप है (देखें रोमियों 14:23)।

8. जो माँएँ यह पहचान लेती हैं कि उनके और उनके बच्चों के बीच के रिश्ते में समस्या बच्चों में नहीं, बल्कि खुद उनमें है, उन्हें इस समस्या को सुलझाने के लिए परमेश्वर के सामने आना चाहिए। जैसे-जैसे वे पूरी लगन से पश्चाताप की कृपा माँगती हैं, उन्हें अपनी नज़र—विश्वास के ज़रिए—सिर्फ़ यीशु मसीह पर टिकाए रखनी चाहिए, जिसे उनके लिए सूली पर चढ़ाया गया था और जिसने उनके लिए अपनी जान दी थी। क्षमा के भरोसे के साथ पश्चाताप करते हुए, उन्हें लगातार इस बात की अपनी समझ को गहरा करने

का प्रयास करना चाहिए कि *उनके* लिए परमेश्वर का प्रेम वास्तव में कितना विशाल, आश्चर्यजनक और शानदार है। तभी माताएँ अपने बच्चों से परमेश्वर के अपने प्रेम के साथ प्रेम कर पाएंगी।

9. जो माताएँ अपने बच्चों से परमेश्वर के प्रेम के साथ प्रेम करने के प्रयास में खुद को समर्पित करती हैं, वे ऐसा अपनी स्वयं की शक्ति को एक तरफ रखकर और उसके बजाय पवित्र आत्मा की शक्ति पर भरोसा करके करती हैं। परिणामस्वरूप—पवित्र आत्मा की शिक्षा और उनके द्वारा दिए गए भरोसे से निर्देशित होकर—वे विश्वास के माध्यम से अपने बच्चों को परमेश्वर को सौंप देती हैं, यह मानते हुए कि परमेश्वर उनके बच्चों से उनसे भी कहीं अधिक प्रेम करते हैं। इस प्रकार, अपने बच्चों की अपनी अलग पहचान के प्रति सम्मान दिखाते हुए—और यह पहचानते हुए कि वे अब उस उम्र में पहुँच गए हैं जहाँ वे अपनी पसंद खुद चुन सकते हैं और अपने जीवन की ज़िम्मेदारी खुद उठा सकते हैं—ये माताएँ बुद्धिमानी से उन्हें माता-पिता का घर छोड़कर अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने में सहायता करती हैं।

10. एक बुद्धिमान माँ, जो पवित्र आत्मा से भरी होती है, यीशु के प्रेम को जान जाती है; और क्योंकि वह उनसे प्रेम करती है, इसलिए वह अपने बच्चों से भी यीशु के उसी प्रेम के साथ प्रेम करती है। इसके अलावा, यीशु में अपने विश्वास पर दृढ़ रहते हुए, वह अपने बच्चों के लिए परमेश्वर से लगातार प्रार्थना करती रहती है। और, अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर पाकर, वह कृतज्ञता और विश्वास से भरे हृदय के साथ अपने बच्चों के साथ अपनी गवाही साझा करती है। मेरी माँ भी ठीक ऐसी ही एक माँ हैं।



पाप करना एक अवसर है।

“इसलिए हर वह व्यक्ति जो ईश्वर-भक्त है, तुझसे प्रार्थना करे, जब तू मिल सकता है...” (भजन संहिता 32:6a)।

संकट एक अवसर होता है। संकट, ईश्वर की आवाज़ सुनने का एक बेहतरीन अवसर है। इसका एक प्रमुख उदाहरण होशे 2:14 में मिलता है: “इसलिए मैं उसे फुसलाऊँगा; मैं उसे जंगल में ले जाऊँगा और उससे कोमलता से बात करूँगा।” इस्राएल के लोगों पर जो संकट आया था, वह उनके अपने पापों के परिणाम स्वरूप ईश्वर का अनुशासन (दंड) पाने का अनुभव था। और वह अनुशासन उन्हें “ऊबड़-खाबड़ खेतों”—यानी, जंगल—में ले जाए जाने के रूप में सामने आया। फिर भी, वही संकट उनके लिए एक अवसर बन गया—विशेष रूप से, ईश्वर की आवाज़ सुनने का एक अद्भुत अवसर। जबकि हम दृढ़ता से मानते हैं कि संकट ईश्वर की आवाज़ सुनने का एक बड़ा अवसर होता है, तो क्या सचमुच यह कहा जा सकता है कि पाप करना भी हमारे लिए एक अवसर है? यदि यह वास्तव में एक अवसर है, तो यह किस प्रकार का अवसर है? वास्तव में, यह प्रभु से मिलने का एक अद्भुत अवसर है (भजन संहिता 32:6)।

आज का धर्मग्रंथ अंश, भजन संहिता 32, एक ऐसा भजन है जिसे दाऊद ने ईश्वर के विरुद्ध पाप करने के बाद लिखा था। यह तब लिखा गया था जब उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया था, उसके पति—वफ़ादार सैनिक ऊरिय्याह—की मृत्यु की साज़िश रची थी, और उसके बाद नबी नातान की फटकार के बाद पश्चाताप किया था। जब मैं इस भजन पर मनन कर रहा था, तो पद 6 में एक विशेष वाक्यांश—जिसमें “प्रभु से मिलने के अवसर” का ज़िक्र था—ने मेरे हृदय को गहराई से छू लिया। और जो विचार तुरंत मेरे मन में आया, वह यह था:

“पाप करना एक अवसर है।” पहले कभी ऐसा विचार मन में न आने के कारण, मैं कुछ हद तक हैरान रह गया। मेरे मन में संदेह भी उठने लगे, और मैं सोचने लगा, “आखिर पाप करने को एक अवसर कैसे माना जा सकता है?” इन परिस्थितियों के बीच, जब मैंने पूरी भजन संहिता 32 पर मनन किया—विशेष रूप से पद 6 पर ध्यान केंद्रित करते हुए—तो मुझे, भले ही धुंधले रूप में, एक गहरा सत्य समझ में आने लगा: कि ईश्वर हमें प्रभु से मिलने का अवसर प्रदान करता है, यहाँ तक कि पाप करने के कार्य के माध्यम से भी। वास्तव में, हम किस प्रकार के प्रभु से मिल सकते हैं?

पहला, पाप करना हमें उस प्रभु से मिलने का अवसर प्रदान करता है जो “मुझ पर दबाव डालता है।” भजन संहिता 32:4 पर ध्यान दें: “क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी रहा; मेरी शक्ति गर्मियों की तेज़ गर्मी की तरह सूख गई।” जब दाऊद ने अपने किए हुए पाप को स्वीकार नहीं किया, तो उसने अनुभव किया कि प्रभु का हाथ दिन-रात उस पर दबाव डाल रहा है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि उस दबाव को सहते हुए दाऊद की मनःस्थिति कैसी रही होगी। क्या उसका मन भारी नहीं हो गया होगा? हमें मन के इस भारीपन को एक आशीष के रूप में देखना चाहिए। इसका कारण यह है कि, अक्सर, पाप करने के बाद भी हमारे मन में कोई भारीपन महसूस नहीं होता। पाप करने के बाद ऐसे भारीपन का न होना यह दर्शाता है कि हम अपने किए हुए पापों को हल्के में ले रहे हैं। अपने पापों को हल्के में लेने की यह प्रवृत्ति अंततः यह संकेत देती है कि हम अपने अपराधों को एक पवित्र परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने में असफल हो रहे हैं। परिणामस्वरूप, हम न केवल परमेश्वर के सामने अपने पाप स्वीकार करने में असफल रहते हैं, बल्कि इसके विपरीत हम उन्हें छिपाने की ओर प्रवृत्त होते हैं (पद 5)। इसके अलावा, हम उन्हीं पापों—या उनसे मिलते-जुलते पापों—को बार-बार दोहराने के आदी हो जाते हैं। इसलिए, मैं इसे एक बड़ी आशीष मानता हूँ जब, पाप करने के बाद, प्रभु का हाथ हम पर दबाव डालता है और हमारे मन पर भारी हो जाता है। पाप करने की क्रिया के दौरान भी, हमें प्रभु के हाथ के दिन-रात हम पर दबाव डालने की वास्तविकता का अनुभव करना चाहिए।

दूसरा, पाप करना हमें उस प्रभु से मिलने का अवसर प्रदान करता है जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है और उनका उत्तर देता है। भजन संहिता 32:6 पर फिर से ध्यान दें: “इसलिए, जब तक वह मिल सकता है, तब तक सभी विश्वासी उससे प्रार्थना करें।” अपना पाप करने और भविष्यवक्ता नातान की फटकार सुनने के बाद, दाऊद

ने—अपने मन में भारीपन महसूस करते हुए—परमेश्वर के सामने अपने पाप को स्वीकार किया और पश्चाताप किया। और उसे अपनी प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर से मिला। उसे अपने पापों की क्षमा प्राप्त हुई। मित्रों, पाप करना परमेश्वर के सामने पश्चाताप की प्रार्थना करने का एक उत्तम अवसर है। इसके अलावा, यह उस प्रभु से मिलने का एक अद्‌भुत अवसर है जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है और उनका उत्तर देता है। इसलिए, हमें प्रभु से मिलने और उससे प्रार्थना करने के इस अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

तीसरा, पाप करना हमारे लिए उस प्रभु से मिलने का एक अवसर है जो संकट के समय हमारी रक्षा करता है और हमें बचाता है। भजन संहिता 32:7 पर ध्यान दें: "तू मेरी शरण-स्थान है; तू मुझे संकट से बचाएगा और मुझे उद्धार के गीतों से घेर लेगा।" अपने किए गए पाप के परिणामस्वरूप, दाऊद का पीछा उसके अपने ही बेटे, अबशालोम ने किया, और उसे यहूदा के जंगल में भागने पर मजबूर होना पड़ा। इस कठिन परीक्षा के बीच, दाऊद का सामना प्रभु से हुआ—वह जिसने उसका शरण-स्थान बनकर उसे आश्रय दिया, वह जिसने उसकी रक्षा की, और वह जिसने उसे बचाया। विशेष रूप से, जब प्रभु ने दाऊद को बचाया, तो उसने उसे केवल उसके विरोधी, अबशालोम के हाथों से ही नहीं छुड़ाया; बल्कि उसने उसे उस पाप से भी मुक्त किया जो उसने स्वयं किया था। जिस प्रकार दाऊद का सामना इस उद्धारकर्ता प्रभु से हुआ, उसी प्रकार हम भी उस उद्धारकर्ता प्रभु का सामना कर सकते हैं। जब हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं—जब वह हम पर अपना दबाव डालता है और हमारे हृदयों पर बोझ डालता है ताकि हम अपने पापों को स्वीकार करें और पश्चाताप की प्रार्थनाएँ करें—तब प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है और उनका उत्तर देता है, और वह हमें बचाता है। हमें इस उद्धारकर्ता प्रभु का सामना अवश्य करना चाहिए। चौथी बात, पाप करना हमारे लिए प्रभु का सामना करने का एक अवसर प्रस्तुत करता है, जो हमें निर्देश देने और हमें चेतावनी देने के लिए अपनी दृष्टि हम पर स्थिर करता है।

भजन संहिता 32:8 पर ध्यान दें: "मैं तुझे बुद्धि दूँगा और जिस मार्ग पर तुझे चलना है, उस मार्ग की शिक्षा दूँगा; मैं तुझ पर अपनी प्रेमपूर्ण दृष्टि बनाए रखते हुए तुझे परामर्श दूँगा।" परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के बाद, दाऊद का सामना प्रभु से हुआ—वह जिसने उसे निर्देश और चेतावनी देने के लिए अपनी दृष्टि उस पर स्थिर की। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? यह कैसे संभव है कि पवित्र प्रभु अपनी दृष्टि किसी पापी और अपराधी

व्यक्ति पर स्थिर करे? प्रभु पवित्र है, जबकि हम पापी हैं; तो फिर, प्रभु हमें निर्देश और चेतावनी देने के लिए अपनी दृष्टि हम पर क्यों स्थिर करता है? जो बात वास्तव में अगाध और समझने से परे है, वह यह तथ्य है कि पवित्र आत्मा—पवित्र परमेश्वर की आत्मा—हमारे भीतर (और हमारे बीच) निवास करती है, तब भी जब हम पाप कर रहे होते हैं। जिस प्रकार पवित्र परमेश्वर ने दाऊद को निर्देश और चेतावनी देने के लिए अपनी दृष्टि उस पर स्थिर की थी, उसी प्रकार वही प्रभु आज भी हमें निर्देश और चेतावनी देने के लिए अपनी दृष्टि हम पर स्थिर करता है। इस प्रकार, हमें पाप करने के बाद भी, इस प्रभु का सामना करने के आशीर्वाद का आनंद लेने का सौभाग्य प्राप्त है।

पाँचवीं बात, पाप करना हमारे लिए प्रभु का सामना उसकी प्रेमपूर्ण कृपा में करने का एक अवसर प्रस्तुत करता है। भजन संहिता 32:10 पर ध्यान दें: "दुष्ट के लिए बहुत से दुख हैं, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है, उस पर करुणा बनी रहती है।" दाऊद ने प्रभु के *हेसेद*—यानी उनके अटूट प्रेम—का अनुभव किया। दाऊद ने प्रभु के प्रेम को एक ऐसी चीज़ के रूप में अनुभव किया जो स्थिर और अपरिवर्तनीय है; हालाँकि वह स्वयं प्रभु से वैसी ही स्थिरता के साथ प्रेम करने में असफल रहा—और इस प्रकार उसने उनके विरुद्ध पाप किया—फिर भी, प्रभु ने उसे अटूट स्थिरता के साथ प्रेम करना जारी रखा। इस प्रकार, दाऊद का सामना ऐसे प्रेम वाले प्रभु से हुआ। परिणामस्वरूप, उसका प्रभु पर—जो विश्वासयोग्य प्रेम के स्वामी हैं—भरोसा और भी गहरा हो गया। क्या हमें भी, उसी प्रकार, उसी प्रभु पर अपना भरोसा और भी अधिक गहराई से नहीं रखना चाहिए?

मैं वचन पर इस मनन को अब समाप्त करना चाहूँगा। पाप करने के बाद, दाऊद ने अंततः पुकारकर कहा: "हे धर्मियों, यहोवा में आनन्दित हो, और उसके पवित्र नाम का स्मरण करके धन्यवाद करो!" (पद 11)। दाऊद ने इस प्रकार क्यों पुकारा? ऐसा इसलिए था क्योंकि उसका हृदय आनन्द और हर्ष से भर गया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि दाऊद का सामना प्रभु से हुआ था—वह प्रभु जिसने उसके ऊपर पड़े बोझ को हल्का किया, जिसने उसकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उनका उत्तर दिया, जिसने संकट के समय उसकी रक्षा की और उसे बचाया, जिसने उस पर दृष्टि रखी और उसे शिक्षा दी, और जिसने उसे अटूट विश्वासयोग्यता के साथ प्रेम किया। मैं पूरी

लगन से प्रार्थना करता हूँ कि हम भी—पाप करने के बाद उसी प्रभु का सामना करके—उसी प्रकार आनन्दित हों और उनमें प्रसन्नता पाएँ।

दिल का दर्द, दिल की खुशी

[नीतिवचन 14:10-35 पर ध्यान]

आप सभी, क्या इस समय आपके दिल खुश हैं या दर्द में हैं? अगर आपके दिल दर्द में हैं, तो आप क्यों दर्द में हैं? अगर आपके दिल खुश हैं, तो आप क्यों खुश हैं? एक कहावत याद आती है: "दुख बांटने से आधा हो जाता है, और खुशी बांटने से दोगुनी हो जाती है।" लेकिन, क्या आप और मैं सच में ज़िंदगी में अपने अनुभवों के दुखों या खुशियों को अपने आस-पास के प्यारे लोगों के साथ अच्छे से बांट रहे हैं? शायद हम अपनी खुशियों को दूसरों के साथ बांटने में कुछ हद तक अच्छे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हम किसी तरह अपने निजी दुखों को अच्छे से बांट नहीं पाते। मेरा मानना है कि इसका एक कारण यह है कि हम सोचते हैं कि अगर हम अपने दुख बांट भी लें, तो भी दूसरा व्यक्ति हमारे दुखी दिल को पूरी तरह समझ नहीं पाएगा। और निजी तौर पर, मुझे लगता है कि यह कारण सही है। कोई भी उस दुख को पूरी तरह नहीं समझ सकता जो हममें से हर कोई अनुभव कर रहा है। यह बात सिर्फ़ दुख पर ही नहीं, बल्कि खुशी पर भी लागू होती है। मेरा मानना है कि कोई भी उस दुख या खुशी को पूरी तरह नहीं समझ सकता जो हममें से हर किसी के दिल में छिपी है। अगर हम, एक शरीर के तौर पर, अपनी पत्नी या पति को भी पूरी तरह नहीं समझ सकते, तो मेरा मानना है कि चर्च के सदस्य, जो प्रभु में एक शरीर बन गए हैं, हममें से हर किसी के दिल के दुख या खुशी को पूरी तरह नहीं समझ सकते। फिर भी, रोमियों 12:15 को देखें, तो बाइबल हमें बताती है, "जो खुश हैं, उनके साथ खुश रहो; और जो रो रहे हैं, उनके साथ रोओ।" इसका क्या कारण है? जब मैंने इसके कारण पर सोचा, तो मुझे इब्रानियों 4:15 में लिखे शब्द याद आए: "क्योंकि हमारा महायाजक ऐसा नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति न रख सके, बल्कि हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जिसकी हर तरह से परीक्षा ली गई है, ठीक हमारी तरह—फिर भी वह पाप रहित था।" मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि हमारे चर्च के सदस्य एक-दूसरे के प्रति

सहानुभूति रखें, ठीक वैसे ही जैसे यीशु, हमारे महायाजक, रखते हैं। इसलिए, चर्च को एक ऐसे समुदाय के रूप में बनाया जाना चाहिए जो एक साथ खुशियाँ मनाए और एक साथ दुख बांटे।

आज के शास्त्र-वचन—नीतिवचन 14:10—को देखें, तो बाइबल कहती है: "हर दिल अपनी कड़वाहट जानता है, और कोई दूसरा उसकी खुशी में शामिल नहीं हो सकता।" आज इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, और "दिल का दर्द, दिल की खुशी" शीर्षक के तहत, मैं एक या दो बातों पर विचार करना चाहूँगा और उन सबकों को सीखना चाहूँगा जो परमेश्वर आप और मुझ दोनों को सिखाना चाहता है।

सबसे पहले, आइए हम "हमारे दिलों के दर्द" पर विचार करें। मैं लगभग आठ ऐसे खास मौकों के बारे में बात करना चाहूँगा जब हमारे दिलों को दर्द महसूस होता है:

पहला, हमारे दिल तब दर्द से भर जाते हैं जब हमारा "घर" ढह जाता है।

कृपया आज के हमारे वचन, नीतिवचन 14:11 के पहले हिस्से पर नज़र डालें: "दुष्टों का घर नष्ट हो जाएगा..." एक टीका के अनुसार, यहाँ "घर" शब्द किसी के परिवार के सदस्यों को दर्शाता है, लेकिन इसका मतलब किसी की संपत्ति या भौतिक धन भी हो सकता है (वाल्वोर्ड)। यदि यह व्याख्या सही है, तो वचन 11 का पहला हिस्सा यह बताता है कि दुष्टों का घर—यानी, उनके परिवार के सदस्य या उनकी संपत्ति—आखिरकार नष्ट हो जाएगी। बाइबल हमें बताती है कि, भले ही हम मसीहियों को, इस दुनिया में रहते हुए, ऐसा लग सकता है कि दुष्ट लोग तरक्की कर रहे हैं, लेकिन ऐसी तरक्की केवल कुछ समय के लिए होती है (देखें भजन संहिता 73)। इसलिए, हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि, भले ही दुष्टों का घर कुछ समय के लिए फलता-फूलता हुआ दिखाई दे, लेकिन अंत में उसे विनाश का सामना करना ही पड़ेगा। इसका कारण क्या है? इसका ठीक-ठीक कारण उस बुराई करने वाले की दुष्टता ही है। परमेश्वर—जो पवित्र और न्यायी है—दुष्टों के घर पर उनके पापों के कारण विनाश लाएगा।

मैंने इस वचन को हम मसीहियों—यानी, धर्मियों—पर लागू किया है। ऐसा करते हुए, मुझे यह एहसास हुआ कि यदि हम विश्वासी अपने घरों में ऐसे पापों को छिपाकर रखते हैं जिनके लिए हमने पश्चाताप नहीं किया है—ऐसे पाप जिनके लिए हमें परमेश्वर की क्षमा नहीं मिली है—तो हमारे अपने घर-परिवार भी ढहने के लिए मजबूर हो जाएँगे। समस्या की जड़ हमारे पाप में ही है। यदि हम अपने पापों का पश्चाताप करने में असफल रहते हैं, तो हमारे घर-परिवारों को अनिवार्य रूप से उस पाप के परिणामों को भुगतना पड़ेगा। ऐसा ही एक परिणाम यह है कि हमारा जीवन दयनीय और दरिद्र हो जाएगा। आज के वचन के पिछले हिस्से पर नज़र डालें, नीतिवचन 14:34: "...पाप किसी भी जाति के लिए कलंक है।" इसका क्या अर्थ है? यहाँ, "कलंक" शब्द "अभाव" या "दरिद्रता" की स्थिति को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि अगर कोई समाज पाप में डूबा हुआ है, तो उनका जीवन दुखमय हो जाएगा (पार्क यून-सन)। बेशक, यह वचन मुख्य रूप से इस बारे में बात करता है कि कैसे किसी देश के नागरिक पाप के कारण अपने जीवन में गरीबी और अभाव का सामना कर सकते हैं। हालाँकि, मेरा मानना है कि यह सिद्धांत हमारे अपने घरों पर भी समान रूप से लागू होता है। अगर हमारे घर पाप से भरे हुए हैं, तो हमारा पारिवारिक जीवन भी निश्चित रूप से दुखमय हो जाएगा। पाप के कारण हमारे परिवारों को जिस एक और तरह के दुख का सामना करना पड़ सकता है, वह है शर्म या बदनामी का अनुभव। वचन 35 के पिछले हिस्से पर नज़र डालें: "...एक ऐसा सेवक जो शर्मिंदगी का कारण बनता है, उसे उसके क्रोध का सामना करना पड़ेगा।" हालाँकि यह वचन विशेष रूप से एक सरकारी अधिकारी की ओर इशारा करता है जो देश पर बदनामी लाता है, लेकिन जब हम इस सिद्धांत को परिवार के संदर्भ में लागू करते हैं, तो इसका मतलब यह निकलता है कि अगर कोई घर पाप से भरा हुआ है, तो उसके सदस्यों को न केवल अपने रोज़मर्रा के जीवन में गरीबी और अभाव का सामना करना पड़ेगा, बल्कि पूरे परिवार को भी सार्वजनिक शर्मिंदगी झेलनी पड़ सकती है। उदाहरण के लिए, जब बच्चे भटक जाते हैं और कई पाप करते हैं, तो वे न केवल अपने माता-पिता पर बदनामी लाते हैं और अपने घर को शर्मिंदा करते हैं, बल्कि इसके विपरीत, जब माता-पिता कई पाप करते हैं, तो वे भी अपने बच्चों पर बदनामी ला सकते हैं और परिवार को गहरी शर्मिंदगी में डाल सकते हैं। मेरा मानना है कि ठीक इसी तरह के घर को हम "अस्त-व्यस्त परिवार" (dysfunctional family) कहते हैं। प्यारे दोस्तों, अगर हमारा घर कई पापों के बोझ के कारण इस तरह का अस्त-व्यस्त परिवार बनता जा रहा है, तो निस्संदेह हमारे दिलों में गहरी पीड़ा होगी। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें यीशु के क्रूस पर बहाए गए अनमोल लहू पर भरोसा करना चाहिए, ताकि हम अपने और अपने परिवार के हर पाप को परमेश्वर

के सामने खोलकर रख सकें, और हमें पश्चाताप करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमारे पापों और हमारे घर के पापों को क्षमा कर देगा, और उन सभी को पूरी तरह से ढक देगा। इसके परिणामस्वरूप, परमेश्वर हमारे दिलों की पीड़ा को बदल देगा, और उसके बजाय उन्हें आनंद और खुशी से भर देगा।

दूसरी बात, जब हम ऐसे रास्ते पर चलते हैं जो हमारी अपनी नज़रों में सही लगता है, लेकिन परमेश्वर की नज़रों में सही रास्ता नहीं होता, तो हमारे दिलों में बहुत तकलीफ़ होती है।

कृपया आज का धर्मग्रंथ का अंश देखें, नीतिवचन 14:12: "एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" यही बात नीतिवचन 16:25 में भी बिल्कुल वैसे ही दोहराई गई है। राजा सुलैमान—जो एक बुद्धिमान व्यक्ति थे—ने घोषणा की, "एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" फिर भी, जब हम इस बात को खुद राजा सुलैमान पर लागू करके देखते हैं, तो मेरा मानना है कि जो रास्ता उनकी अपनी नज़रों में सही लगा, वह उनका यह फ़ैसला था कि वे "फ़िरौन की बेटी के अलावा कई और विदेशी स्त्रियों से प्रेम करेंगे" (1 राजा 11:1) और उनके साथ रिश्ते बनाएँगे (पद 2)। हालाँकि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को साफ़-साफ़ चेतावनी दी थी कि अगर वे विदेशियों के साथ घुल-मिल जाएँगे, तो वे विदेशी इस्राएलियों के दिलों को अपने देवताओं की ओर मोड़ देंगे (पद 2), फिर भी राजा सुलैमान ने कई विदेशी स्त्रियों से प्रेम किया और उनके साथ रिश्ते बनाए, क्योंकि उन्हें अपनी नज़रों में यह सही लगा (पद 2)। इसका नतीजा क्या हुआ? 1 राजा 11:4 देखें: "जब सुलैमान बूढ़ा हो गया, तो उसकी पत्नियों ने उसके मन को दूसरे देवताओं की ओर फेर दिया; और उसका मन अपने परमेश्वर यहोवा के साथ पूरी तरह से लगा नहीं रहा, जैसा उसके पिता दाऊद का मन लगा था। उसने सीदोनियों की देवी अशतोरेत और अम्मोनियों के घिनौने देवता मोलेक का अनुसरण किया।" आखिरकार, राजा सुलैमान भी—जो अपनी बुद्धिमानी के लिए इतने मशहूर थे—बुढ़ापे में मूर्तिपूजा में फँस गए और परमेश्वर के ख़िलाफ़ पाप किया। हालाँकि परमेश्वर उनके जीवन में पहले दो बार प्रकट हुए थे और उन्हें आज्ञा दी थी, "दूसरे देवताओं के पीछे मत चलना" (पद 9–10), फिर भी राजा सुलैमान परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में नाकाम रहे (पद 10)। मेरा मानना है कि, भले ही देर से सही, लेकिन आखिरकार उन्हें यह एहसास हो ही गया कि जो रास्ता उन्होंने चुना था—वह रास्ता जो

उनकी अपनी नज़रों में सही लगा था—असल में, मृत्यु की ओर ले जाने वाला रास्ता था। दोस्तों, अगर हम नीतिवचन 15:25 के पहले हिस्से को देखें, तो बाइबल कहती है: "यहोवा घमंडी का घर उजाड़ देता है।" क्योंकि घमंडी सुलैमान ने परमेश्वर की चेतावनियों को नज़रअंदाज़ किया और उसके आदेशों का उल्लंघन किया—जिससे उसने पाप किया—इसलिए परमेश्वर ने सुलैमान के बेटे, रहबाम के शासनकाल के दौरान इस्राएल राष्ट्र को दो हिस्सों में बाँट दिया। इस बात पर विचार करते हुए कि एक ही राष्ट्र इस तरह दो हिस्सों में बँट गया, मुझे यीशु के वे शब्द याद आते हैं जो उन्होंने मरकुस 3:24–26 में कहे थे: "यदि किसी राज्य में ही फूट पड़ जाए, तो वह राज्य टिक नहीं सकता। और यदि किसी घर में ही फूट पड़ जाए, तो वह घर भी टिक नहीं सकता। और यदि शैतान अपने ही विरुद्ध खड़ा हो जाए और उसमें फूट पड़ जाए, तो वह भी टिक नहीं सकता, बल्कि उसका अंत निकट है।" यदि हमारे अपने ही घर में फूट पड़ जाए, तो हमारा घर मज़बूती से खड़ा नहीं रह सकता। यदि हमारे परिवार में ही कोई कलह या झगड़ा हो, तो परिवार के हर सदस्य को दिल की गहरी पीड़ा से गुज़रना ही पड़ेगा। दोस्तों, यदि राजा सुलैमान को भी—जिन्हें दुनिया का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाता था—यह एहसास हो गया कि जिस रास्ते को उन्होंने चुना था (परमेश्वर के वचन को नज़रअंदाज़ करके, क्योंकि वह उनकी अपनी नज़रों में सही लग रहा था) वह अंततः मृत्यु की ओर ले गया, और यदि अब वह आज के वचन—नीतिवचन 14:12—में हमसे यह कहते हैं कि "एक ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सीधा जान पड़ता है, परन्तु उसका अंत मृत्यु का मार्ग है," तो हमें इस संदेश को किस तरह ग्रहण करना चाहिए? हमें हर रास्ते को—यहाँ तक कि उस रास्ते को भी जो हमारी अपनी नज़रों में सही लगता है—परमेश्वर के वचन की कसौटी पर कसना चाहिए; हमें बार-बार उसकी जाँच करनी चाहिए ताकि यह पता चल सके कि जो रास्ता हमें सही लग रहा है, क्या वह वास्तव में परमेश्वर की नज़रों में भी सही है या नहीं। जब हम यह जाँच कर रहे हों, और यदि पवित्र आत्मा—जो परमेश्वर के वचन के द्वारा कार्य करता है—हमारे दिलों पर यह प्रकट करे कि जिस रास्ते को हम सही मान रहे हैं, वह वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में सही नहीं है, तो हमें उस रास्ते से मुँह मोड़ लेना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमारे दिलों की पीड़ा को बदल देगा और उन्हें आनंद से भर देगा।

तीसरी बात, जब हम इस दुनिया के सुख-भोगों के पीछे भागते हैं, तो हमारे दिल पीड़ा से भर जाते हैं। आज के धर्मग्रंथ के अंश, नीतिवचन 14:13 पर नज़र डालें: “हँसी में भी दिल दुख सकता है, और खुशी का अंत दुख हो

सकता है।" यह वचन दर्शाता है कि इस दुनिया के सुख न तो शुद्ध हैं और न ही स्थायी। इसका अर्थ है कि इस दुनिया के सुखों—यानी, शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति—के बाद दुख आना निश्चित है (पार्क यून-सन)। राजा सुलैमान पर विचार करें। क्या उन्होंने अपनी नज़र में, कई विदेशी स्त्रियों को पत्नियों और रखैलों के रूप में अपने पास रखना सही नहीं समझा था—और अंत में, बुढ़ापे में, उन्हीं की मूर्तियों की पूजा करने का पाप किया? शुरुआत में, जब उन्होंने उन कई विदेशी स्त्रियों को अपनी पत्नियों और रखैलों के रूप में इकट्ठा किया था, तब उन्होंने कितनी हँसी और आनंद का अनुभव किया होगा? फिर भी, जब हम विचार करते हैं कि राजा सुलैमान को बाद में उन्हीं के कारण कितना कष्ट और दुख सहना पड़ा होगा, तो हम इस सच्चाई से सहमत हुए बिना नहीं रह सकते कि इस दुनिया के शारीरिक सुखों के बाद दुख आना निश्चित है। जब मैं अपने अतीत के जीवन पर नज़र डालता हूँ, तब भी मैं आज के अंश के 13वें वचन के शब्दों से सहमत हुए बिना नहीं रह सकता। हालाँकि मैंने कभी इस दुनिया में अर्थ, खुशी और आनंद की तलाश की थी, लेकिन अंत में इस दुनिया ने मुझे केवल दुख और आँसू ही दिए। मुझे वह पल आज भी स्पष्ट रूप से याद है जब मैंने इस सच्चाई को सबसे गहरे रूप से महसूस किया था—कि यह दुनिया मुझे केवल दुख और आँसू ही दे सकती है—जब मैं अपने दो दोस्तों के अंतिम संस्कार में शामिल हुआ था, जिनके साथ मैं अक्सर समय बिताया करता था; उन दोनों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

आज के अंश में नीतिवचन 14:16 को देखें; बाइबल कहती है: "बुद्धिमान लोग प्रभु का भय मानते हैं और बुराई से दूर रहते हैं, लेकिन मूर्ख लोग उतावले और लापरवाह होते हैं।" बाइबल हमें बताती है कि मूर्ख व्यक्ति, जिसमें परमेश्वर का भय मानने की बुद्धि की कमी होती है, अपना भरोसा केवल स्वयं पर रखता है; परिणामस्वरूप, वह इस दुनिया में एक लापरवाह जीवन जीता है और तरह-तरह के पाप करता है। इस प्रकार, जैसा कि आज के अंश का 17वां वचन कहता है, सांसारिक सुखों और एक बेलगाम जीवनशैली की तलाश में, उसे जल्दी गुस्सा आता है और वह अक्सर मूर्खतापूर्ण कार्य करता है। इसके अलावा—जैसा कि 29वें वचन के उत्तरार्ध में बताया गया है—बाइबल यह भी बताती है कि मूर्ख व्यक्ति, स्वभाव से अधीर होने के कारण, अपनी ही मूर्खता को उजागर कर देता है। अंततः, वह मूर्खता को ही अपनी विरासत बना लेता है (वचन 18a)। ऐसे मूर्ख व्यक्ति के लिए—भले ही वह ऊपर से मुस्कुराता हुआ और खुश दिखाई दे—अंत में उसके दिल में केवल चिंता और दुख

ही रह जाते हैं। नीतिवचन 15:13 पर विचार करें: "प्रसन्न मन से मुख भी प्रसन्न रहता है, परन्तु मन के दुखी होने से आत्मा भी उदास हो जाती है।" जब मैं इस वचन पर विचार करता हूँ, तो मुझे हैरानी होती है कि क्या कई मसीही लोग—उस आंतरिक आनंद को रखने के बजाय जिससे चेहरा चमक उठता है—इसके विपरीत एक ऐसी मुस्कुराती हुई मुखमुद्रा धारण करते हैं जो एक दुखी हृदय को छिपाती है, जैसा कि आज के अंश (नीतिवचन 14:13) में वर्णित है। इसी कारण से, जब भी मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसे लोगों से मिलता हूँ जो लगातार मुस्कुराते रहते हैं, तो मैं रुककर विचार करने लगता हूँ। इसका कारण यह है कि उनके निरंतर मुस्कुराते हुए चेहरों के पीछे, शायद कहीं न कहीं चिंता की एक झलक छिपी हो सकती है। जब मैं साथी विश्वासियों को देखता हूँ जिनके मुस्कुराते हुए चेहरे वास्तव में कोई चमक नहीं बिखेरते, तो कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे केवल अपने दिलों में छिपे दुख या चिंता को छिपाने का प्रयास कर रहे हैं। मुख्य बात यह है: जब हमारे दिल उस आनंद और खुशी से भरे होते हैं जो परमेश्वर प्रदान करता है, तो हमारे चेहरे वास्तव में चमक उठते हैं। हालाँकि, यदि हम उस आनंद और सुख के पीछे भागते हैं जो यह संसार प्रदान करता है, तो अंततः हमारे दिलों में पीड़ा ही शेष रह जाती है, और हम दुख तथा चिंता के बोझ तले दब जाते हैं।

चौथी बात, अगर हमारे दिल भटक जाते हैं, तो वे दुख और पीड़ा से भर जाएँगे।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश के पहले हिस्से पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:14: "जिसका मन भटका हुआ है, वह अपने कामों का फल पाएगा..." यहाँ, "जिसका मन भटका हुआ है" वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है "पीछे मुड़ना (पुरानी बुरी आदतों की ओर)" या "धर्म-त्याग करना" (वाल्वोर्ड)। हालाँकि यह बहुत अच्छा होगा अगर यीशु पर विश्वास करने और मसीही जीवन शुरू करने के बाद भी हमारा विश्वास लगातार बढ़ता रहे और उसमें बदलाव आता रहे, लेकिन कई बार ऐसा होता है जब हमें पता चलता है कि किसी मोड़ पर हमारी आध्यात्मिक उन्नति रुक सी गई है—या इससे भी बुरा, कि हम वास्तव में पीछे की ओर जा रहे हैं। मेरा मानना है कि यह इस बात का संकेत है कि हम परमेश्वर से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे समय में अक्सर जो नकारात्मक परिणाम सामने आता है, वह यह है कि हम सच्चाई से मुँह मोड़ लेते हैं, झूठ के पीछे भागते हैं, और असल में, एक धोखे भरी ज़िंदगी जीने लगते हैं। दोस्तों, अगर हमारे दिल भटक जाते हैं, तो हम परमेश्वर से दूर हो जाएँगे, झूठ पर विश्वास करेंगे, झूठ के पीछे भागेंगे, और धोखे भरी ज़िंदगी जिएँगे। आज के अंश में 25वीं आयत के दूसरे हिस्से को देखें,

धर्मग्रंथ कहता है: “जो झूठ बोलता है, वह धोखेबाज़ है।” और यह धोखा बहुत गहरा होता है; अगर हमारे दिल भटके हुए हैं, तो हम अपने मन में बुरी योजनाएँ पालते हैं (6:18)। दूसरे शब्दों में, हम मन ही मन दूसरों को नुकसान पहुँचाने के तरीके सोचते हैं (पार्क यून-सन)। इसके अलावा, हम बुराई की योजना बनाते हैं (14:22)। अगर हम सचमुच इस तरह से बुराई की योजना बना रहे हैं और दुष्ट चालें चल रहे हैं, तो इस बात की बिल्कुल भी संभावना नहीं है कि हमारे भटके हुए दिलों को खुशी मिलेगी। इसके विपरीत, एक भटका हुआ दिल दुख और पीड़ा से भर जाता है। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर हमारे कामों के अनुसार हमारा न्याय करेगा। दूसरे शब्दों में, ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर हमारे कामों के अनुसार हमें उसका फल देगा (14वीं आयत का पहला हिस्सा)। डॉ. पार्क यून-सन ने ये बातें कहीं: “जब कोई व्यक्ति कोई पाप करता है, तो हो सकता है कि वह बिना पश्चाताप किए कुछ समय तक उसे छिपाने में सफल हो जाए। लेकिन, एक दिन ज़रूर आएगा जब वह पाप पुकार उठेगा और उसे जकड़ लेगा (याकूब 5:4; उत्पत्ति 4:10)। दूसरे शब्दों में, पापी को खुद पहल करके अपने पाप को उजागर करना चाहिए और पश्चाताप के द्वारा उस मामले को सुलझाना चाहिए। यदि वह ऐसा करने में असफल रहता है और बस उस पर पर्दा डाल देता है, तो वह पाप अनिवार्य रूप से उसका पीछा करेगा और उसका दंड चुकाएगा” (पार्क यून-सन)। मेरा मानना है कि ये ऐसे शब्द हैं जिनसे कोई भी असहमत नहीं हो सकता। यह दावा कि यदि हम अपने पापों का पश्चाताप करने में असफल रहते हैं, तो वे पाप अंततः हमारा पीछा करेंगे और हमसे उसका दंड वसूलेंगे—यह कथन एक स्तर पर मेरे मन को छूता है, फिर भी दूसरे स्तर पर, यह मुझे भय से भर देता है। इसका कारण यह है कि जिस पाप का पश्चाताप नहीं किया जाता, उसके परिणाम अनिवार्य रूप से भुगतने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए, याकूब द्वारा कहे गए शब्दों पर विचार करें—उत्पत्ति की पुरानी वाचा की पुस्तक का वह पात्र जिसने दूसरों को धोखा भी दिया और खुद भी धोखा खाया—जब वह मिस्र गया और मिस्र के राजा, फ़िरौन के सामने खड़ा हुआ: “...मेरी परदेश-यात्रा के वर्ष एक सौ तीस हैं। मेरे वर्ष थोड़े और कठिन रहे हैं, और वे मेरे पूर्वजों की परदेश-यात्रा के वर्षों के बराबर नहीं हैं...” (उत्पत्ति 47:9)। जब मैंने याकूब के इस स्वीकारोक्ति पर विचार किया, तो मुझे उत्पत्ति 37:34–35 का वह प्रसंग याद आ गया। जब याकूब ने यूसुफ का बहुरंगी चोगा देखा—जो एक बकरी के खून से सना हुआ था—तो उसने “अपने कपड़े फाड़ डाले, टाट ओढ़ ली, और लंबे समय तक अपने बेटे के लिए शोक मनाया”; फिर भी, याकूब ने अपने बच्चों से कोई भी सांत्वना स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उसने घोषणा की, “मैं अपने बेटे के लिए

शोक मनाते हुए कब्र में उतर जाऊँगा," और यूसुफ के लिए रोना जारी रखा। यह हमें क्या सबक सिखाता है? यह हमें सिखाता है कि जब हमारे हृदय कुटिल हो जाते हैं—जिसके कारण हम परमेश्वर से विमुख हो जाते हैं, झूठ बोलते हैं, और दूसरों को धोखा देते हैं—तो हमारी ओर से किए गए ऐसे कपटपूर्ण कार्यों के परिणाम निश्चित रूप से भुगतने पड़ते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति न केवल खुद धोखा खाता है, बल्कि अनिवार्य रूप से मानसिक पीड़ा और दुख के गहरे सागर में भी डूब जाता है। इसलिए, ऐसे दर्द और दुख में डूबने से बचने के लिए, हमें लगातार और पूरी श्रद्धा से परमेश्वर के करीब आना चाहिए, यह पक्का करते हुए कि हमारा दिल भ्रष्ट न हो जाए। ऐसा करके, हम खुद को भ्रष्टाचार में गिरने से बचा सकते हैं। इसके अलावा, जैसे-जैसे हम परमेश्वर के करीब आते हैं, हमें अपने पापों को पहचानने और उनका पश्चाताप करने की कृपा मिलती है। नतीजतन, परमेश्वर हमारे दिल के दुख को खुशी में बदल देगा।

पांचवां, जब हम सुनी हुई हर बात पर यकीन कर लेते हैं, तो हमारे दिल को दुख पहुंचता है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के पहले हिस्से पर नज़र डालें, नीतिवचन 14:15: "भोला-भाला हर बात पर यकीन कर लेता है..." यहाँ, "भोला-भाला" शब्द ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो "अत्यधिक सीधा-सादा" (अनुभव या ज्ञान की कमी के कारण), "नासमझ" (इतना कि उसमें सही-गलत का फैसला करने की क्षमता की कमी हो), या "जल्दी यकीन कर लेने वाला" हो—यानी ऐसा व्यक्ति जो दूसरों पर जल्दी भरोसा कर लेता है और आसानी से धोखा खा जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की बातों में आसानी से आ जाता है (वाल्वोर्ड)। अगर हम नीतिवचन 14:8 के दूसरे हिस्से पर नज़र डालें—एक ऐसा अंश जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं—तो बाइबल कहती है: "...मूर्खों की मूर्खता छल है।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि मूर्ख की मूर्खता में न केवल दूसरों को धोखा देना शामिल है, बल्कि इसका नतीजा यह भी होता है कि वह मूर्ख खुद भी धोखा खा जाता है। इस प्रकार, "भोला-भाला" व्यक्ति—जो दूसरों पर जल्दी भरोसा कर लेता है और आसानी से गुमराह हो जाता है—दूसरों द्वारा कही गई हर बात पर यकीन कर लेता है (14:15)। इसका एक बेहतरीन उदाहरण नीतिवचन 7:7 और उसके बाद के अंशों में मिलता है—एक ऐसा अंश जिसकी हमने पहले ही जांच की है—जो एक मूर्ख, नासमझ नौजवान (पद 7) का वर्णन करता है, जो एक चालाक औरत के लुभावने जाल में फंस जाता है (पद 5)। वह

नौजवान, उस चालाक औरत के शोर-शराबे से प्रभावित होकर (पद 11)—उसकी मीठी बातों से बहककर और उसके होठों की चापलूसी से ललचाकर (पद 21)—उसके पीछे-पीछे चल देता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बैल कसाईखाने की ओर जाता है, या जैसे कोई मूर्ख अपनी सज़ा पाने के लिए जंजीरों में जकड़ा हुआ जाता है (पद 22)। इसका क्या नतीजा निकला? धर्मग्रंथ हमें बताते हैं कि इसका नतीजा उसकी पूरी तरह से बर्बादी थी—उसे मार गिराया गया और उसे मौत का भी सामना करना पड़ा (पद 26–27)। अगर हम बहुत ज़्यादा भोले हैं—दूसरों पर बहुत जल्दी भरोसा कर लेते हैं और आसानी से धोखा खा जाते हैं—तो हमारे दिल को दुख पहुँचना तय है। हमें समझदारी की ज़रूरत है। हमें परमेश्वर से समझदारी माँगनी चाहिए। इसलिए, परमेश्वर की दी हुई समझदारी से मज़बूत होकर, हमें दूसरों की बातें बहुत सोच-समझकर और परखकर सुननी चाहिए। दूसरों की बातें सुनते समय हमें समझदारी से काम लेना चाहिए। ऐसा करके, हम अपने दिल को दुख से बचा सकते हैं।

छठा, जब हमारे पड़ोसी हमसे नफ़रत करते हैं, तो हमारे दिल को दुख पहुँचता है।

कृपया आज का वचन देखें, नीतिवचन 14:20: “गरीबों को तो उनके पड़ोसी भी ठुकरा देते हैं, पर अमीरों के बहुत दोस्त होते हैं।” यीशु ने हमें आज्ञा दी थी, “अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार करो जैसे तुम खुद से करते हो” (मत्ती 22:39)। फिर भी, भले ही हम जानते हैं कि हमें यीशु की इस आज्ञा का पालन करना चाहिए, हम अपने पड़ोसियों से प्यार करने के मामले में भेदभाव करते हैं। हम यह भेदभाव आखिर किस तरह करते हैं? हम लोगों को उनके बाहरी रूप-रंग से आँकते हैं (याकूब 2:1; तुलना करें यूहन्ना 7:24)। इस तरह, जब “कोई आदमी सोने की अंगूठी और बढ़िया कपड़े पहनकर” कलीसिया की सभा में आता है (वचन 2), तो आप कहते हैं, “यहाँ अच्छी जगह पर बैठो” (वचन 3); लेकिन जब “कोई गरीब आदमी फटे-पुराने कपड़े पहनकर आता है” (वचन 2), तो आप कहते हैं, “तुम वहाँ खड़े रहो,” या “यहाँ मेरे पाँव की चौकी के पास बैठो” (वचन 3)। ऐसा व्यवहार अमीरों और गरीबों के बीच भेदभाव कहलाता है; इसमें बुरे इरादों से फ़ैसले करना (वचन 4) और गरीबों का अपमान करना शामिल है (वचन 6)। पवित्र शास्त्र के अनुसार, यह एक पाप है। दूसरे शब्दों में, लोगों के बाहरी रूप-रंग के आधार पर उनके साथ भेदभाव करना परमेश्वर के खिलाफ़ एक पाप है (वचन 9)।

आज के वचन के पहले हिस्से—नीतिवचन 14:21—को देखें, तो बाइबल कहती है: “जो अपने पड़ोसी का अपमान करता है, वह पाप करता है।” यहाँ, "उसका पड़ोसी" विशेष रूप से पद 20 के पहले भाग में उल्लिखित "गरीबों" या पद 21 के दूसरे भाग में उल्लिखित "ज़रूरतमंदों" को संदर्भित करता है। इस पापमय संसार में, गरीबों और ज़रूरतमंदों से न केवल समाज घृणा करता है (पद 20), बल्कि उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार भी किया जाता है (पद 21)। इसके अलावा, उनके साथ दुर्व्यवहार भी किया जाता है (पद 31)। परिणामस्वरूप, मेरा मानना है कि हम एक व्यापक सामाजिक घटना देख रहे हैं जिसमें गरीब और ज़रूरतमंद लोग अमीरों से ईर्ष्या करते हैं। वास्तव में, आज के पाठ में पद 30 का उत्तरार्ध घोषित करता है, "ईर्ष्या हड्डियों के लिए सड़न है"; फिर भी, मुझे संदेह है कि हमारे वर्तमान समाज में, गरीब और ज़रूरतमंद लोग ठीक यही कर रहे हैं—अमीरों से ईर्ष्या। अंततः, जिस समाज में लोग इस तरह से एक-दूसरे से ईर्ष्या, घृणा, तिरस्कार और दुर्व्यवहार करते हैं, वहाँ शांति नहीं हो सकती—केवल पीड़ा और दुख हो सकता है। भले ही जिस समाज में हम रहते हैं, वह इस तरह से संचालित होता हो, लेकिन कलीसिया का समुदाय इससे अलग होना चाहिए। कलीसियाई समुदाय के भीतर, हमें पक्षपात दिखाकर गरीबों और अमीरों के बीच अंतर नहीं करना चाहिए—या उनके साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए। यदि कलीसिया के भीतर भी भेदभाव और पक्षपात मौजूद है, तो हमारे गरीब और दरिद्र भाई-बहनों को अनिवार्य रूप से अपने हृदयों में गहरी पीड़ा होगी, और उन्हें ऐसा महसूस होगा जैसे उनका तिरस्कार किया जा रहा है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसी बातें न हों, हमें लोगों को उनके बाहरी रूप-रंग से आंकने या उनके साथ भेदभाव करने से बचना चाहिए, चाहे वह कलीसिया के भीतर हो या बाहर। इसके अलावा, हमें पक्षपात नहीं दिखाना चाहिए। बल्कि, यीशु की आज्ञा का पालन करते हुए, हमें अपने पड़ोसियों से अपने समान ही प्रेम करना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो आंतरिक पीड़ा दूर हो जाएगी, और हमारे हृदय आनंद और उल्लास से भर जाएंगे।

सातवाँ, जब हम केवल बोलते हैं, लेकिन काम नहीं करते, तो हमारे दिलों को तकलीफ़ होती है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश के दूसरे हिस्से पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:23: “...केवल बातें करने से तो केवल गरीबी ही आती है।” यहाँ, “केवल बातें” वाक्यांश का अर्थ है बिना अपने शब्दों को काम में बदले बोलना (अय्यूब 11:2; यशायाह 36:5) (पार्क यून-सन)। आज का पाठ कहता है कि जो लोग केवल अपने होठों से बोलते हैं

लेकिन काम करने में असफल रहते हैं, उन्हें गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिलेगा (नीतिवचन 14:23)। सच में, जो व्यक्ति बिना काम किए बोलता है, वह असल में अपने ऊपर किस तरह की गरीबी लाता है? डॉ. पार्क यून-सन ने एक या दो खास तरीकों की पहचान की है:

(1) ऐसा व्यक्ति अपने शारीरिक जीवन में गरीब हो जाता है।

इसका कारण यह है कि वे आलसी लोग होते हैं जो काम करने के बजाय केवल बातें करते हुए इधर-उधर घूमते रहते हैं। इसके अलावा, क्योंकि एक आलसी व्यक्ति लगन से काम करने के परमेश्वर के आदेश का उल्लंघन करता है (उत्पत्ति 3:19), इसलिए वह एक ईश्वरीय दंड के रूप में गरीबी झेलता है।

(2) वह आलसी व्यक्ति जो बिना काम किए बोलता है, वह अपने आध्यात्मिक जीवन में भी गरीब हो जाता है।

एक पल के लिए इस पर विचार करें: यदि कोई व्यक्ति केवल आध्यात्मिक मामलों के बारे में बातें करता है, लेकिन परमेश्वर के वचन के अनुसार जीने में असफल रहता है, तो उसका आध्यात्मिक जीवन समृद्ध और भरपूर कैसे हो सकता है? परेशान करने वाली सच्चाई यह है कि, भले ही हम इन तथ्यों से पूरी तरह अवगत हैं, ऐसा लगता है कि हम अक्सर समृद्धि को सक्रिय रूप से पाने के बजाय—अपने शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों जीवन में—गरीबी की ओर ले जाने वाले रास्ते पर ही चलते रहते हैं। दूसरे शब्दों में, भले ही हम जानते हैं कि हमें केवल अपने होठों से नहीं बोलना चाहिए, बल्कि अपने शब्दों को काम में बदलना चाहिए, मुझे लगता है कि हम अक्सर उस सच्चाई के बारे में *बातें करने* के अलावा और कुछ नहीं करते। ऐसा लगता है कि हम, अपनी मानवीय कमज़ोरी के कारण, बोलने में तो तेज़ हैं, लेकिन काम करने में धीमे हैं। नतीजतन, आज के धर्मग्रंथ के अंश का दूसरा हिस्सा—नीतिवचन 14:24—घोषित करता है: "मूर्खों की संपत्ति केवल मूर्खता है।" इसका क्या मतलब है? एक मूर्ख व्यक्ति वह है जो अपनी गलतियों को पहचानने के बाद भी उन्हें सुधारने में असफल रहता है और मूर्खतापूर्ण काम करता रहता है। नतीजतन, ऐसे व्यक्ति को अपने दिल में पीड़ा झेलनी ही पड़ती है। हमें ऐसे लोग नहीं बनना चाहिए जो केवल बोलते हैं, लेकिन काम करने में असफल रहते हैं। इसके बजाय, हमें अपने शब्दों को तुरंत कामों में बदलने की आदत डालनी चाहिए। जब हम ऐसा जीवन जीते हैं जिसमें हमारे शब्द और काम एक-दूसरे के अनुरूप होते हैं, तो हमारे दिलों में खुशी भर जाती है।

अंत में—और आठवां—हमारे दिलों में तब बहुत पीड़ा होती है जब हम अंत तक अपने पापों का पश्चाताप नहीं करते।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के पहले हिस्से पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:32: "दुष्ट अपनी विपत्ति में उलट दिया जाता है..." यहाँ, "दुष्ट" शब्द उस पापी को दर्शाता है जो पश्चाताप नहीं करता और अंत तक अपनी दुष्टता में ही बना रहता है। इसके अलावा, "उलट दिया जाता है" वाक्यांश का अर्थ है "भगा दिया जाना"—विशेष रूप से, ज़बरदस्ती घसीटकर ले जाया जाना (पार्क यून-सन के अनुसार)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि वह दुष्ट व्यक्ति जो पश्चाताप करने से इनकार करता है, उसे सीधे विपत्ति की ओर धकेल दिया जाता है। एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर उस पापी का न्याय इस तरह करते हैं कि वे उसे विपत्ति में पूरी तरह से घिर जाने देते हैं, और इस प्रकार अपनी महिमा प्रकट करते हैं। मित्रों, जब हम कोई पाप करते हैं और उस अपराध का पश्चाताप नहीं करते, तो हमें अनिवार्य रूप से विपत्ति का सामना करना पड़ता है। लेकिन समस्या यह है: अपने उन पापों के कारण आई विपत्ति को सहते हुए भी—और परमेश्वर से उस संकट से बचाने की गुहार लगाते हुए भी—हम अक्सर उन पापों का पश्चाताप करने की आवश्यकता को पहचान नहीं पाते। इसके अलावा, जब मुक्ति के लिए हमारी दिली प्रार्थनाओं का कोई जवाब नहीं मिलता—और इसलिए हम अपनी विपत्ति में ही फँसे रहते हैं—तो हम यहाँ तक कि परमेश्वर से नाराज़ भी हो सकते हैं। अंततः, क्योंकि हम विपत्ति की इस कठिन परीक्षा के दौरान अपने पापों को पहचानने और उनका पश्चाताप करने में असफल रहते हैं, इसलिए हम परमेश्वर के विरुद्ध और भी अधिक पाप कर बैठते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे दिलों में पीड़ा और भी गहरी होती जाती है। भाइयों और बहनों, जब हमारे पापों के परिणाम स्वरूप हमें विपत्ति का सामना करना पड़ता है, तो हमें पवित्र परमेश्वर के सामने अपनी जाँच करनी चाहिए कि क्या हमने उनके विरुद्ध कोई ऐसा पाप किया है जिसका हमने अभी तक पश्चाताप नहीं किया है। जब हम ऐसा करते हैं—और जब पवित्र आत्मा परमेश्वर हमारे पापों को उजागर करते हैं और उन्हें हमारे संज्ञान में लाते हैं—तो हमें यीशु के क्रूस पर बहाए गए अनमोल लहू की शक्ति पर भरोसा करते हुए, अपने पापों को परमेश्वर के सामने पूरी ईमानदारी से स्वीकार करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। हमारे परमेश्वर निश्चित रूप से हमारे पापों को क्षमा करेंगे और हमें स्वीकार करेंगे। जब ऐसा होगा, तो हमारे दिल शांति और आनंद से छलक उठेंगे। अंत में, जिस विषय पर हम विचार करना चाहते हैं, वह है "हमारे

हृदयों का आनंद।" हम इस विषय की पड़ताल लगभग सात विशिष्ट उदाहरणों की जाँच करके करेंगे, जिनमें हमारे हृदय आनंद का अनुभव करते हैं:

पहला, हमारे हृदय तब आनंद से भर जाते हैं, जब हमारा "तंबू" फलता-फूलता है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश के दूसरे भाग पर दृष्टि डालें, नीतिवचन 14:11: "...परन्तु सीधे लोगों का तंबू फलेगा-फूलेगा।" दुष्टों का घर विनाश की ओर अग्रसर होता है। बाइबल हमें बताती है (वचन 11 के पहले भाग में) कि उसका परिवार न केवल जीवन की कठिनाइयों को सहेगा, बल्कि उसे अपमान का भी सामना करना पड़ेगा। हालाँकि, वचन 11 का दूसरा भाग कहता है कि सीधे लोगों का तंबू फलेगा-फूलेगा। इसका क्या अर्थ है? इसका तात्पर्य यह है कि सीधा व्यक्ति—अर्थात् वह व्यक्ति जो ईमानदारी से अपने पापों को स्वीकार करता है, प्रभु पर अपना विश्वास रखता है, और उसकी धार्मिकता को प्राप्त करता है (जैसा कि पार्क यून-सन ने उल्लेख किया है)—अपनी आशा स्वर्ग के राज्य पर टिकाकर जीता है; इस प्रकार, वह एक "तंबू" में निवास करता है। निस्संदेह, इसका यह अर्थ नहीं है कि हम सभी को अपने घर बेच देने चाहिए और सचमुच तंबुओं में रहना चाहिए। बुद्धिमान राजा सुलैमान ने, "दुष्टों के घर" की बात करने के ठीक बाद, जान-बूझकर सीधे लोगों के "घर" के बजाय उनके "तंबू" की बात करना चुना। इसका कारण यह है कि सीधे लोग अपनी आशा इस पृथ्वी पर नहीं रखते, न ही वे अपना मन सांसारिक बातों पर टिकाकर जीते हैं; बल्कि, वे अपना मन ऊपर की बातों पर लगाते हैं, अपनी आशा स्वर्ग के राज्य पर रखते हैं, और अनंत वास्तविकताओं की खोज में जीते हैं। इसलिए, बाइबल घोषणा करती है कि उनके तंबू फलेंगे-फूलेंगे।

मेरे मित्रों, हम विश्वास के लोग हैं जो एक बेहतर वतन की ओर यात्रा कर रहे हैं (तुलना करें: इब्रानियों 11)। यह संसार हमारा सच्चा घर नहीं है। वह घर जिसमें हमें अनंतकाल तक निवास करना है, वह स्वर्ग का घर है। इसलिए, जब तक हम इस पृथ्वी पर जीवित हैं, हमें अपनी आशा स्वर्ग पर लगानी चाहिए और आने वाले जीवन की बातों की खोज में जीना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमारे जीवन को फलीभूत करेगा। इस समृद्धि को लाने में, परमेश्वर हमारे घरों और हमारे गिरजाघरों को संपन्नता और स्थिरता प्रदान करेगा (वाल्वोर्ड)। मेरा मानना है कि यही सिद्धांत किसी राष्ट्र पर भी लागू होता है। जब किसी देश का राष्ट्रपति और सरकारी अधिकारी ईमानदार होते हैं—और देश पर अच्छे और न्यायपूर्ण तरीके से शासन करते हैं—तो वह देश एक "धर्मपरायण

राष्ट्र" के रूप में स्थापित होता है (पद 34)। बाइबल हमें बताती है कि जब ऐसे धर्मपरायण राष्ट्र की स्थापना होती है, तो उसकी जनसंख्या बढ़ती है (पद 28a), और परमेश्वर उस राष्ट्र को ऊँचा उठाता है (उसे "महिमा" प्रदान करता है)। जो लोग ईमानदार होते हैं—चाहे वे ऐसे राष्ट्र में रहते हों, किसी कलीसिया में, या ऐसे घर में जहाँ समृद्धि और स्थिरता हो—वे अपने जीवन के दिन परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए सच्चे आनंद और प्रसन्नता का अनुभव करते हुए बिताते हैं।

दूसरी बात, जब हम ईमानदारी के साथ जीवन जीते हैं, तो हमारे हृदय आनंद से भर जाते हैं।

कृपया आज के पाठ के पिछले हिस्से पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:14: "...और एक अच्छा मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार प्रतिफल पाएगा।" यदि हमारे हृदय भटके हुए हैं (पद 14a), तो हम परमेश्वर से दूर हो जाएँगे; हम झूठी बातों पर विश्वास करेंगे, छल-कपट का पीछा करेंगे, और धोखे भरा जीवन जिएँगे। इसके अलावा, हम झूठ बोल सकते हैं और दूसरों को धोखा दे सकते हैं। जब हम ऐसे छल-कपट में लिप्त होते हैं—और विशेष रूप से यदि हमारे हृदय कुटिल हैं—तो हम अपने मन में दुष्ट योजनाएँ पालते हैं। हम दूसरों को हानि पहुँचाने की साज़िशें रचते हैं, और सक्रिय रूप से बुराई का पीछा करते हैं (पद 22a)। ऐसा कुटिल हृदय अनिवार्य रूप से दुख भोगने के लिए ही बना होता है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर हमारे कर्मों के अनुसार हमारा न्याय करेगा। हालाँकि, यदि हम "अच्छे लोग" हैं (पद 14)—अर्थात्, यदि हम ऐसे मसीही हैं जिन्होंने परमेश्वर का उद्धार करने वाला अनुग्रह प्राप्त किया है, अपनी आत्माओं में सच्ची संतुष्टि पाई है, और ईमानदारी भरा जीवन जी रहे हैं—तो हमारे हृदय आनंद से भर जाएँगे। विशेष रूप से, जैसा कि आज के पाठ के 33वें पद के पहले भाग में वर्णित है—जो "समझदार मनुष्य" का उल्लेख करता है—जब हम परमेश्वर के उन सत्यों को सँजोकर रखते हैं जिन्हें हमने अपनी आत्मा की गहराइयों में आत्मसात कर लिया है, और उन सत्यों के अनुरूप अपना जीवन जीते हैं (जैसा कि पार्क यून-सन ने उल्लेख किया है), तो हमारे हृदय स्वाभाविक रूप से खुशी और आनंद से छलक उठते हैं। परमेश्वर के सत्य पर चलने वाले सच्चे संतों के रूप में, हम विश्वासयोग्य गवाह बन जाते हैं; दूसरों के जीवन बचाने के द्वारा (पद 25a), हम अपने पूरे जीवन भर उद्धार के आनंद का—वास्तव में, स्वयं परमेश्वर के आनंद का—

अनुभव करते हैं। तीसरी बात, जब हम अपना विश्वास पूरी तरह से प्रभु पर रखते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार काम करते हैं, तो हमारा हृदय आनंद से भर जाता है।

कृपया आज के अंश में नीतिवचन 14:15 के दूसरे भाग को देखें: "...परन्तु समझदार मनुष्य अपने कदमों पर विचार करता है।" यहाँ, "समझदार मनुष्य" उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो वास्तव में अपना विश्वास केवल प्रभु पर रखता है और प्रभु की इच्छा के अनुसार अपना आचरण करता है (पार्क यून-सन)। इसके अलावा, "समझदार मनुष्य ज्ञान का मुकुट पहनता है" (पद 18b)। इसलिए, परमेश्वर के ज्ञान पर आधारित होकर, वह अपने कार्यों में सावधानी और विवेक का प्रयोग करता है; उस सीधे-सादे व्यक्ति के विपरीत जो दूसरों की कही हर बात पर भोलापन से विश्वास कर लेता है और उनकी बातों से आसानी से प्रभावित हो जाता है, समझदार मनुष्य इतनी आसानी से प्रभावित नहीं होता। इसके विपरीत, परमेश्वर के ज्ञान का उपयोग करके दूसरों की बातों का सही मूल्यांकन और परख करते हुए, वह केवल प्रभु की इच्छा को ही खोजता है—और उसका ही अनुसरण करता है। यदि हम नीतिवचन 14:8 को देखें—एक ऐसा अंश जिस पर हमने पहले भी मनन किया है—तो बाइबल कहती है: "समझदार की बुद्धि यह है कि वह अपने मार्ग पर विचार करे, परन्तु मूर्खों की मूर्खता धोखा है।" इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि जहाँ एक मूर्ख व्यक्ति—जो न तो परमेश्वर का आदर करता है और न ही उसकी बात मानता है—उसकी इच्छा को खोजने में असफल रहता है (और इस प्रकार उस मार्ग पर नहीं चलता जिसकी परमेश्वर इच्छा करता है, बल्कि इसके बजाय अपनी ही सनकों और इच्छाओं का अनुसरण करता है, और उस मार्ग पर चलता है *जिस पर वह* चलना चाहता है—पद 8a)—वहीं इसके विपरीत, एक समझदार व्यक्ति उस मार्ग को जानता है जिस पर उसे चलना चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक समझदार मसीही अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को पहचानता है और उसी ईश्वरीय इच्छा के अनुसार अपना जीवन जीता है। वह स्पष्ट रूप से उस कार्य को समझता है जिसकी परमेश्वर उससे अपेक्षा करता है—वह कार्य जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप है—और वह उसे पूरा करता है (1 कुरिन्थियों 7:17)।

प्रिय मित्रों, यदि हम आज के पाठ के पहले भाग को देखें—नीतिवचन 14:35—तो बाइबल हमें बताती है कि "जो सेवक बुद्धिमानी से काम करता है, वह अपने स्वामी की कृपा प्राप्त करता है।" इसी प्रकार, जब हम

समझदारी (या बुद्धिमानी) से अपना आचरण करते हैं, तो हम प्रभु—जो राजाओं का राजा है—की कृपा प्राप्त करेंगे। वास्तव में, प्रभु की दृष्टि में बुद्धिमानी से काम करने का सच्चा अर्थ क्या है? इसका अर्थ है ठीक वही करना, जिससे परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। तो फिर, वह कौन-सा कार्य है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होते हैं? वह बस इतना ही है कि हम अपना जीवन उनकी इच्छा के अनुसार जिएँ। जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए जीते हैं, तो वे प्रसन्न होते हैं; और जब परमेश्वर प्रसन्न होते हैं, तो हमारे अपने हृदय भी उसी प्रकार आनंद से भर जाते हैं।

चौथा, जब हम परमेश्वर का भय मानकर और बुराई से दूर रहकर जीते हैं, तो हमारे दिलों में आनंद होता है।

आज के वचन के पहले हिस्से पर नज़र डालें, नीतिवचन 14:16: "बुद्धिमान मनुष्य डरता है और बुराई से दूर रहता है..." मूर्ख व्यक्ति, जिसमें परमेश्वर का भय मानने की बुद्धि नहीं होती, वह केवल अपने आप पर भरोसा करता है और इस दुनिया में मनमानी का जीवन जीता है, और दुष्टता के काम करता है (पद 16a)। क्योंकि वह परमेश्वर का भय नहीं मानता, इसलिए वह सांसारिक सुखों के पीछे भागता है और एक बेलगाम जीवन जीता है। परिणामस्वरूप, उसे इस दुनिया में दुख और पीड़ा सहनी पड़ती है। हालाँकि, बुद्धिमान मनुष्य परमेश्वर का भय मानता है और इसलिए बुराई से दूर रहता है। और क्योंकि वह बुराई से दूर रहकर जीता है, इसलिए उसका जीवन सुरक्षा की भावना से भरा होता है (पद 26a)। आज के वचन, नीतिवचन 14:27 में, बाइबल कहती है कि प्रभु का भय जीवन का सोता है। इसके अलावा, बाइबल हमें बताती है कि जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं, तो हम मृत्यु के फंदों से भी बच जाते हैं (पद 27)। पवित्र शास्त्र घोषणा करता है कि जब हम परमेश्वर के भय में जीते हैं, तो मृत्यु का सामना होने पर भी आशा बनी रहती है (पद 32)। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि हम मृत्यु में भी शरण पा सकते हैं (पद 32b)। इसलिए, हमें परमेश्वर की बुद्धिमान संतान बनना चाहिए। हमें परमेश्वर की बुद्धिमान संतान बनना चाहिए—ऐसी संतान जो उसका भय मानती है। और परमेश्वर की बुद्धिमान संतान के रूप में, बुराई से दूर रहकर जीते हुए, हमें किसी भी सताव या क्लेश के समय परमेश्वर पिता को ही अपनी शरण बनाना चाहिए (पद 26b)। परमेश्वर निश्चित रूप से हमारी रक्षा करेगा और हमारी देखभाल करेगा। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम उस आनंद और प्रसन्नता का अनुभव करते हुए जी पाएँगे जो परमेश्वर प्रदान करता है।

पाँचवाँ, जब हम भलाई से बुराई पर विजय पाते हैं, तो हमारे दिलों में आनंद होता है।

कृपया आज के पवित्र शास्त्र के अंश, नीतिवचन 14:19 पर नज़र डालें: "दुष्ट लोग भले लोगों के सामने झुकते हैं, और अधर्मी लोग धर्मियों के द्वारों पर झुकते हैं।" बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि दुष्ट और अधर्मी लोग भले और धर्मी लोगों के सामने झुकेंगे। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ यह है कि भले और धर्मी लोग दुष्ट और अधर्मी लोगों पर विजय प्राप्त करेंगे। फिर भी, किसी कारणवश, जब हम इस दुष्ट संसार की ओर देखते हैं, तो अक्सर ऐसा प्रतीत होता है मानो दुष्ट और अधर्मी लोग वास्तव में भले और धर्मी लोगों पर हावी हो रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, मानवीय दृष्टिकोण से, ऐसा लगता है मानो इस संसार में दुष्ट लोगों के पास भले लोगों की तुलना में अधिक शक्ति है—और वे धर्मी लोगों को सताते और कष्ट पहुँचाते हैं। परिणामस्वरूप, हमारे वर्तमान युग में, हम ऐसे उदाहरण भी देखते हैं जहाँ दुष्ट लोग धर्मी लोगों की हत्या करने तक चले जाते हैं। मुझे लगता है कि ठीक इसी कारण से, आज अनेक मसीही लोग इस सत्य पर पूर्णतः विश्वास करने में कठिनाई महसूस करते हैं कि अंततः भले और धर्मी लोग दुष्टों और अधर्मियों पर विजय प्राप्त करेंगे। तथापि, बाइबल में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ भले लोगों ने दुष्टों पर विजय प्राप्त की। उदाहरण के लिए, हम उस अवसर का उल्लेख कर सकते हैं जब यूसुफ के भाइयों ने उसके सामने सिर झुकाया (उत्पत्ति 42:6); वह समय जब मिस्र के राजा फ़िरौन और उसकी प्रजा ने मूसा के समक्ष समर्पण किया (निर्गमन 8:28; 9:27; 12:31–33); उन दुष्ट पुरुषों का हश्र जिन्होंने दानिय्येल की हत्या का षड्यंत्र रचा था, किंतु अंततः वे स्वयं ही सिंहों की मांद में डाल दिए गए (दानिय्येल 7:27); और एस्तेर की पुस्तक में वर्णित वह कहानी, जहाँ हामान को ठीक उसी फाँसी के फंदे पर लटका दिया गया जिसे उसने मोर्दकै की हत्या के लिए बनवाया था (एस्तेर 7:9–10) (पार्क यून-सन)।

जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे रोमियों 12:21 की याद आई: “बुराई से मत हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।” यदि, अपने विश्वास के जीवन के दौरान, हम स्वयं को बुराई के हाथों पराजित होने देते हैं, तो हमारा हृदय निश्चित रूप से संताप से भर जाएगा। तथापि, यदि परमेश्वर हमारे साथ है—और हमें भलाई के द्वारा बुराई पर विजय पाने में समर्थ बनाता है—तो हमारा हृदय निश्चित रूप से विजय के आनंद से भर जाएगा। तो फिर, क्या हमें इसी आनंद का अनुभव करते हुए अपने विश्वास के अनुरूप जीवन नहीं जीना चाहिए? आज के शास्त्र-अंश के उत्तरार्ध—नीतिवचन 14:22—पर दृष्टि डालने पर, हम पाते हैं कि बाइबल यह घोषणा करती है: “जो भलाई की योजना बनाते हैं, उन्हें प्रेम और विश्वासयोग्यता प्राप्त होती है।” इसका क्या अर्थ है? इसका तात्पर्य यह है कि हमें भले कार्य करने के लिए पर्याप्त तैयारी करनी चाहिए और बिना कभी रुके, अथक प्रयास

करना चाहिए (पार्क यून-सन)। इसका मतलब है कि जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर न केवल हम पर अपनी कृपा (प्रेम) बरसाएगा, बल्कि अपने वचन के द्वारा उसने हमसे जो वादे किए हैं, उन्हें भी पूरी ईमानदारी से पूरा करेगा। इसलिए, हमें हमेशा भलाई की ही योजना बनानी चाहिए। हमें अच्छे काम करने के लिए पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए। हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसमें हम बुराई पर भलाई से जीत हासिल करें। जब हम ऐसा करेंगे, तो परमेश्वर हमारे दिलों को खुशी और आनंद से भर देगा।

छठा, जब हम अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, तो हमारे दिल खुशी से भर जाते हैं।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश, नीतिवचन 14:21 पर ध्यान दें: "जो कोई अपने पड़ोसी का तिरस्कार करता है, वह पाप करता है; परन्तु जो कोई गरीबों पर दया दिखाता है, वह धन्य है।" यदि हम यीशु की आज्ञा का पालन नहीं करते—अपने पड़ोसियों से प्रेम करने में असफल रहते हैं और इसके बजाय उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते हैं—तो हमारे दिल निश्चित रूप से पीड़ा से भर जाएँगे। इसका कारण यह है कि ऐसा करके, हम परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर रहे होते हैं। इसके विपरीत, हम जितनी अधिक यीशु की आज्ञा का पालन करेंगे और अपने पड़ोसियों से स्वयं के समान प्रेम करेंगे, उतनी ही निश्चित रूप से हमारे दिल खुशी और आनंद से छलक उठेंगे। भजन 414 के पहले पद के बोलों पर विचार करें, जिसका शीर्षक है "जब प्रभु का प्रेम चमकता है": "जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो खुशी आती है; चिंताएँ और परेशानियाँ दूर हो जाती हैं, और खुशी आती है। वह हमें प्रार्थना करने की शक्ति देता है और अंधकार को दूर भगाता है; जब प्रभु का प्रेम चमकता है, तो खुशी आती है।" तो फिर, हम अपने पड़ोसियों से प्रेम कैसे करें? यदि हम आज के पाठ के दूसरे भाग—नीतिवचन 14:21—को देखें, तो बाइबल हमें "गरीबों पर दया करने" की आज्ञा देती है। धर्मग्रंथ घोषणा करते हैं कि जो लोग ऐसा करते हैं, वे धन्य हैं। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि ज़रूरतमंदों पर दया दिखाना प्रभु का आदर करने का ही एक कार्य है (पद 31b)। इसका तात्पर्य यह है कि यदि हम केवल अपने होठों से प्रभु का आदर करने का दावा करते हैं, लेकिन ज़रूरतमंदों पर दया दिखाने में असफल रहते हैं, तो वास्तव में हम उसका बिल्कुल भी आदर नहीं कर रहे होते हैं। हमें न केवल प्रेम की बातें करनी चाहिए, बल्कि उसे अपने कार्यों के माध्यम से भी प्रदर्शित करना चाहिए—अर्थात् ज़रूरतमंदों पर दया दिखानी चाहिए और प्रेमपूर्वक उनकी सहायता करनी चाहिए। इसे पूरा करने के लिए, हमें जिन चीज़ों की आवश्यकता है, उनमें से

एक ठीक वही है जिसका वर्णन आज के पाठ के 29वें पद के पहले भाग में किया गया है: गहरी समझ। जब हमारे पास गहरी समझ होगी, तो हम अपने पड़ोसियों पर जल्दी गुस्सा नहीं करेंगे (पद 29a)। इसके अलावा, हमें अधीर स्वभाव रखने से बचना चाहिए। ऐसा करने से, हम अपने पड़ोसियों से धैर्य और विनम्रता के साथ प्रेम कर पाएँगे—विशेष रूप से ज़रूरतमंदों पर दया दिखाकर। परिणामस्वरूप, हम अपने पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों में मन की शांति का अनुभव करेंगे (पद 30a)।

अंत में—सातवाँ बिंदु—जब हम लगन से मेहनत करते हैं, तो हमारा हृदय आनंद से भर जाता है।

कृपया आज के पाठ में नीतिवचन 14:23 के पहले भाग को देखें: "हर एक परिश्रम में लाभ होता है..." जैसा कि हमने नीतिवचन की पुस्तक पर मनन किया है, हमने देखा है कि राजा सुलैमान—वह बुद्धिमान व्यक्ति—आलस और परिश्रम के बीच के अंतर के बारे में बार-बार बात करते हैं। उनके संदेश का सार यह है कि हमें आलसी नहीं होना चाहिए, बल्कि परिश्रमी होना चाहिए। नीतिवचन 14:23 के पहले भाग में—आज के अंश में—राजा सुलैमान एक बार फिर इस बात की पुष्टि करते हैं कि हर परिश्रम में लाभ होता है। दूसरे शब्दों में, जो लोग बिना कोई प्रयास किए केवल बातें करते हैं, वे अंततः गरीबी में फँस जाएँगे (पद 23b), जबकि जो लोग लगन से काम करते हैं और पसीना बहाते हैं, उन्हें उसका प्रतिफल मिलेगा। ये प्रतिफल वास्तव में क्या हैं? हम इन पर तीन मुख्य बिंदुओं के तहत विचार कर सकते हैं:

(1) बाइबल हमें बताती है कि परिश्रमी व्यक्ति धनवान बनेगा।

नीतिवचन 10:4 को देखें: "आलसी हाथ गरीबी लाते हैं, परन्तु परिश्रमी हाथ धन लाते हैं।" वाक्यांश "परिश्रमी हाथ धन लाते हैं" का तात्पर्य यह है कि परिश्रमी व्यक्ति कड़ी मेहनत करता है—विशेष रूप से गर्मियों की कटाई के मौसम में—बिना थके काम करने और फसल इकट्ठा करने के लिए अपनी नींद का त्याग करता है (पद 5)।

(2) बाइबल हमें बताती है कि परिश्रमी व्यक्ति के पास भोजन की प्रचुरता होगी।

नीतिवचन 12:11 को देखें: "जो अपनी भूमि पर काम करते हैं, उनके पास भोजन की प्रचुरता होगी, परन्तु जो कोरी कल्पनाओं के पीछे भागते हैं, उनमें कोई समझ नहीं होती।" यदि कोई अपनी भूमि पर खेती करने के लिए लगन से काम करता है, तो उसका स्वाभाविक परिणाम—यानी प्रतिफल—भोजन की प्रचुरता होता है।

(3) बाइबल हमें बताती है कि परिश्रमी व्यक्ति दूसरों पर शासन करेगा।

नीतिवचन 12:24 को देखें: "परिश्रमी हाथ शासन करेंगे, परन्तु आलसी हाथों को बेगारी करनी पड़ेगी।" जबकि आलसी व्यक्ति अनिवार्य रूप से दूसरों के अधिकार के अधीन हो जाता है, वहीं मेहनती व्यक्ति नेतृत्व के पद तक पहुँचता है; इसे भी मेहनत का ही एक इनाम माना जा सकता है। दोस्तों, जब हम इन लाभों पर विचार करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि जब हम मेहनती होते हैं और पूरी लगन से काम करते हैं, तो हमारा दिल खुशी से भर जाता है।

मैं यहाँ परमेश्वर के वचन पर अपने मनन को समाप्त करना चाहूँगा। हम अक्सर परमेश्वर के भवन में भजन 330 गाने के लिए जाते हैं, जिसका शीर्षक है "दुख के जुए को उतार फेंकने के लिए।" इसके बोल कुछ इस प्रकार हैं: "दुख के जुए को उतार फेंकने के लिए, मैं यीशु के पास आता हूँ। मैं उस प्रभु के पास आता हूँ जो आज़ादी और खुशी प्रदान करता है..." जब मैं परमेश्वर के सामने यह भजन—जो "पश्चाताप और क्षमा" का गीत है—गाता हूँ, तो अक्सर मुझे यह एहसास होता है कि यह दुनिया वास्तव में दुखों से भरी है, और हमें अक्सर असफलताओं और निराशाओं का सामना करना पड़ता है। हालाँकि इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन जब मैं आज के धर्मग्रंथ के अंश पर विचार करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि दर्द और निराशा के पल अक्सर तब आते हैं जब मैं ऐसे रास्ते पर चलता हूँ जो परमेश्वर की नज़रों में गलत होने के बावजूद, मेरे अपने अहंकारी दिल को सही लगता है; जब मैं इस दुनिया के क्षणभंगुर सुखों के पीछे भागता हूँ; जब मैं बिना किसी कर्म के केवल खोखले शब्द ही बोलता हूँ; और जब मैं खुद को देखता हूँ और पाता हूँ कि, यह जानते हुए भी कि मुझे पश्चाताप करना चाहिए, मैं ऐसा करने में असफल रहता हूँ। इसलिए, जब मैं भजन 330 गाता हूँ, तो अक्सर मैं इसे इस विशेष इरादे से गाता हूँ कि मैं अपने अहंकारी दिल को क्रूस के सामने रख दूँ और परमेश्वर के पवित्र वचन का पालन करने का संकल्प लूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं अक्सर अनुभव करता हूँ कि परमेश्वर मेरे दुखी दिल को सांत्वना देता है और मेरी थकी हुई, निराश आत्मा को नई शक्ति प्रदान करता है। परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति से सशक्त

होकर, मैं अपना भरोसा केवल प्रभु पर रखना चाहता हूँ और उसकी इच्छा के अनुसार जीना चाहता हूँ। मैं ईमानदारी भरा जीवन जीना चाहता हूँ—एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर का आदर करता हो और बुराई से दूर रहता हो। मैं भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त करते हुए जीना चाहता हूँ। यीशु की आज्ञाओं का पालन करते हुए, मैं अपने पड़ोसियों से प्रेम करना चाहता हूँ और प्रभु के कार्य में पूरी लगन से मेहनत करना चाहता हूँ। मेरा विश्वास है कि जैसे-जैसे मैं इस तरह से जीने का प्रयास करूँगा, प्रभु निश्चित रूप से अपने शरीर—यानी कलीसिया—और हमारे परिवारों में समृद्धि लाएगा।

भाग 2:
मेल-मिलाप

परिवार के भीतर शांति सचमुच बहुत ज़रूरी है।

परिवार के भीतर शांति सचमुच बहुत ज़रूरी है।
बेशक, वैवाहिक रिश्ते में मनमुटाव होना शायद टाला न जा सके,
लेकिन ऐसे मनमुटाव के बीच भी हमें तालमेल बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए।
हम शांति बनाने वाले लोग हैं।
हमें अपने घर की शांति की पूरी तरह से रक्षा करनी चाहिए।

पति और पत्नी दोनों को इस बात के लिए पक्का इरादा रखना चाहिए कि वे किसी भी ऐसे तीसरे पक्ष के रिश्ते को अपने बीच नहीं आने देंगे, जो उनके वैवाहिक बंधन को कमज़ोर कर सकता हो।
चाहे वह तीसरा पक्ष उनके प्यारे बच्चे हों या उनके माता-पिता,
अगर इस बात का ज़रा भी खतरा हो कि वे शादीशुदा ज़िंदगी के तालमेल को बिगाड़ सकते हैं,
तो ऐसे किसी भी दखल को पूरी सख़्ती से मना कर देना चाहिए।

अगर पारिवारिक रिश्तों से होने वाला तनाव, उन रिश्तों से मिलने वाली खुशी से ज़्यादा भारी पड़ने लगे, तो आपको अपनी पूरी कोशिश करके उस तनाव की असली वजह का पता लगाना चाहिए और उसे खत्म कर देना चाहिए।

एक सुखद परिवार

“लड़ाई-झगड़े से भरे दावतों वाले घर से, शांति और सुकून के साथ सूखा टुकड़ा खाना बेहतर है” (नीतिवचन 17:1)।

आप सभी को क्या लगता है कि काम करने वाले पेशेवरों के लिए जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य क्या है? प्रीमियम जॉब पोर्टल ‘Career’ (CEO कांग सेओक-इन) द्वारा 239 कर्मचारियों पर किए गए एक सर्वे के अनुसार, 88.7% जवाब देने वालों ने कहा कि उनका सचमुच कोई न कोई सबसे बड़ा जीवन लक्ष्य है। सर्वे से पता चला कि दस में से नौ काम करने वाले पेशेवरों का कोई न कोई सबसे बड़ा जीवन लक्ष्य होता है, और सबसे पहला लक्ष्य था—एक सुखद परिवार। बताया गया है कि जवाब देने वालों द्वारा बताया गया सबसे पहला लक्ष्य—28.3% के साथ—एक “सुखद परिवार” बनाना था। इसके बाद 27.4% के साथ “अपने क्षेत्र में सबसे अच्छा बनना” और 16.0% के साथ “कोई व्यवसाय शुरू करना” था। अन्य लक्ष्यों में “पूरी दुनिया घूमना” (9.0%), “अपना घर खरीदना” (8.5%), “नौकरी बदलना” (4.2%), और “खुद को धर्म के प्रति समर्पित करना” (0.9%) शामिल थे। इन लक्ष्यों को पाने के लिए किए गए प्रयासों के संबंध में (एक से ज़्यादा जवाब देने की छूट थी), “कड़ी मेहनत करना” 60.4% के साथ सबसे ऊपर रहा। इसके बाद “बड़ी रकम बचाना” (45.8%), “नेटवर्किंग गतिविधियों में शामिल होना” (34.4%), “हर दिन लगन से पढ़ाई करना” (31.1%), और “वित्तीय संपत्तियों में निवेश करना” (26.4%) था। जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य तय करने के कारणों की बात करें तो, 72.2% जवाब देने वालों ने “खुशहाल जीवन जीना” बताया। अन्य कारणों में “धन और सम्मान पाना” (8.5%),

“अपने आस-पास के लोगों को शर्मिंदा होने से बचाना” (7.1%), “समाज में योगदान देना” (6.6%), और “अपने माता-पिता के प्रति अपने फ़र्ज़ निभाना” (2.4%) शामिल थे (स्रोत: इंटरनेट)।

आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 17:1—को देखें तो बाइबल कहती है: “लड़ाई-झगड़े से भरे दावतों वाले घर से, शांति और सुकून के साथ सूखा टुकड़ा खाना बेहतर है।” इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि गरीबी में रहते हुए भी एक मिल-जुल कर रहने वाला परिवार, उस अमीर परिवार से कहीं बेहतर है जिसके सदस्य आपस में लगातार झगड़ते रहते हैं। पुराने ज़माने के इस्राएल में, यह रिवाज़ था कि परिवार के सदस्य बलिदान की उन चीज़ों को आपस में बाँटकर खाते थे जो परमेश्वर को चढ़ाने के बाद बच जाती थीं (लैव्यव्यवस्था 7:16; 19:6; 1 शमूएल 9:24)। फिर भी, उसी मेज़ पर—जो खुशी से दावत करने और आराधना करने की जगह थी—वे आपस में झगड़ते थे... एक ऐसा परिवार जो लगातार झगड़ता रहता है, वह एक ऐसा घर है जो गहरी शिकायतों से भरा हुआ है (पार्क यून-सन)। क्या आप ऐसी स्थिति की कल्पना कर सकते हैं? अगर परमेश्वर को अपनी दशमांश और धन्यवाद की भेंट चढ़ाने के बाद, परिवार के सदस्य बचे हुए पैसों को लेकर आपस में झगड़ने लगें, तो आप क्या सोचेंगे? यह अंश हमें सिखाता है कि परिवार में सच्ची एकता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि कोई अमीर है या गरीब। इसके अलावा, मेरा अपना मानना है कि झगड़े की असली वजह हमेशा—या सिर्फ—भौतिक चीज़ों की कमी या ज़्यादाती नहीं होती। आज के पवित्र शास्त्र के अंश के आधार पर, मैं चार मुख्य बातों पर विचार करना चाहूँगा ताकि हम उन सबकों को समझ सकें जो परमेश्वर हमें सिखाना चाहते हैं: एक मिल-जुल कर रहने वाला परिवार कैसा होता है, और हम अपने घरों से झगड़े-फसाद को कैसे पूरी तरह से खत्म कर सकते हैं?

सबसे पहले, एक मिल-जुल कर रहने वाला परिवार एक-दूसरे की गलतियों को छिपाता है। घर में झगड़े-फसाद को दूर रखने के लिए, हमें एक-दूसरे की कमियों को बार-बार उठाने—या उन्हीं बातों पर अटके रहने—से बचना चाहिए।

कृपया नीतिवचन 17:9 पर ध्यान दें: “जो किसी की गलती को छिपाता है, वह प्यार की तलाश करता है; लेकिन जो बार-बार उसी बात को दोहराता है, वह गहरे दोस्तों को भी अलग कर देता है।” पिछले हफ़्ते, मैंने अपने निजी Facebook पेज पर एक चर्चा का विषय पोस्ट किया था जिसमें मैंने पूछा था: “चर्च समुदाय के अंदर अपनी सबसे गहरी और दिल की प्रार्थनाओं को बताना इतना डरावना—या मुश्किल—क्यों लगता है?” इसके जवाब में, एक मिनिस्ट्री इंटर्न ने एक टिप्पणी लिखी: “दिल के बोझ को प्रार्थना में बाँटना तभी मुमकिन है जब भरोसे की एक मज़बूत नींव बन चुकी हो। अगर उस भरोसे की कमी हो, तो इंसान को गहरे भावनात्मक घाव लगने का खतरा रहता है। ऐसी कमज़ोरी या दिल की बात बताना सिर्फ उन्हीं लोगों के साथ मुमकिन है जिनके पास इतनी आध्यात्मिक समझ हो कि वे किसी की गुप्त बात को पूरी सावधानी और समझदारी से अपने तक ही सीमित रखें।” आप इन शब्दों के बारे में क्या सोचते हैं? जैसा कि किसी ने सही ही कहा है, चर्च अब एक ऐसी जगह बन गया है जहाँ लोगों को लगता है कि वे अपनी प्रार्थनाओं को दूसरों के साथ बाँट नहीं सकते। इसका कारण कलीसिया के भीतर "चुगली करने वालों" की मौजूदगी है—यानी, वे लोग जो दूसरों द्वारा भरोसे में बताई गई निजी प्रार्थनाओं को बार-बार दूसरों के सामने ज़ाहिर कर देते हैं। जब कोई व्यक्ति इस तरह बार-बार किसी दूसरे व्यक्ति की प्रार्थनाओं को सबके सामने फैलाता है, तो रिश्तों में—भले ही वे बहुत गहरे दोस्तों के बीच हों—दरार पड़ना तय है। जैसा कि नीतिवचन 16:28 में कहा गया है, "एक कुटिल व्यक्ति झगड़ा खड़ा करता है, और एक चुगलखोर गहरे दोस्तों को अलग कर देता है।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि एक झूठा व्यक्ति गहरे दोस्तों के बीच फूट डाल देता है, जिससे उनके बीच झगड़ा हो जाता है। अगर हम घर के भीतर वैवाहिक रिश्तों को देखें, तो पति-पत्नी आपस में क्यों लड़ते हैं? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि शैतान—जो सबसे बड़ा झूठा है—पति और पत्नी के बीच फूट डालने की कोशिश करता है? शैतान किसी जोड़े को अलग करने के लिए क्या करता है? वह ऐसा झूठ के ज़रिए करता है; खास तौर पर, वह हमें अपने जीवनसाथी की कमियों पर ही ध्यान केंद्रित करने के लिए उकसाता है। फिर वह हमें मजबूर करता है कि हम लगातार उन कमियों को अपने जीवनसाथी के सामने—और यहाँ तक कि दूसरे लोगों के सामने भी—ज़ाहिर करते रहें, जिससे शादीशुदा रिश्ते में दरार पड़ जाती है, झगड़ा भड़क उठता है, और कलह पैदा हो जाती है। सच तो यह है कि 1 कुरिन्थियों 13:5 में साफ तौर पर कहा गया है कि प्रेम "गलतियों का हिसाब नहीं रखता।" फिर भी शैतान हमें मजबूर करता है कि हम अपने जीवनसाथी द्वारा

हमारे साथ की गई हर गलती को अपने मन में याद रखें; फिर वह हमें मजबूर करता है कि हम उन पुरानी गलतियों को बार-बार दोहराते रहें—जिससे हमारे रिश्तों में झगड़े और फूट के बीज बोए जाते हैं। मैं राजा सुलैमान के उन शब्दों से सहमत हुए बिना नहीं रह सकता जो उन्होंने नीतिवचन 18:8 में कहे थे: "चुगलखोर के शब्द स्वादिष्ट निवालों की तरह होते हैं; वे पेट की गहराई में उतर जाते हैं।"

तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें परमेश्वर के प्रेम पर मनन करना चाहिए—वह प्रेम जो हमारी अपनी कमियों को ढक लेता है। जैसा कि हम इफिसियों 2:1 में पढ़ते हैं, पवित्रशास्त्र घोषणा करता है: "उसने तुम्हें जीवित किया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।" परमेश्वर ने—जिन्होंने हमें, जो अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे, मसीह के साथ मिलकर जीवित किया—हमें उद्धार प्रदान किया है (पद 5)। इसलिए, भजनकार भजन संहिता 32:1 में घोषणा करता है: "धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, जिसके पाप ढक दिए गए।" इस प्रकार, यीशु मसीह में परमेश्वर का असीम आशीर्वाद और प्रेम प्राप्त करने के बाद, हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए बुलाया गया है। अपने पड़ोसी से प्रेम करने का क्या अर्थ है? नीतिवचन 10:12 के अनुसार, पवित्र शास्त्र कहता है: “घृणा झगड़े पैदा करती है, परन्तु प्रेम सब अपराधों को ढांप देता है।” हमें अपने सबसे करीबी पड़ोसियों—यानी अपने ही परिवार के सदस्यों—से प्रेम करना चाहिए, और ऐसा करने के लिए हमें एक-दूसरे की कमियों को ढांपना और छिपाना चाहिए। इसलिए, हमें आत्मा की एकता को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए (इफिसियों 4:3)।

दूसरी बात, एक सुखद परिवार वह होता है जिसमें सदस्य एक-दूसरे की सलाह को स्वीकार करते हैं। अपने घरों में कलह को दूर रखने के लिए, हमें दूसरों द्वारा दी गई सलाह को विनम्रतापूर्वक सुनना चाहिए।

नीतिवचन 17:10 पर विचार करें: "एक समझदार व्यक्ति के लिए सलाह का एक शब्द, एक मूर्ख पर पड़ने वाले सौ कोड़ों से कहीं ज़्यादा गहरा असर करता है।" दोस्तों, आप क्या करेंगे यदि आपके बच्चे परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करें—लगातार एक-दूसरे की गलतियाँ निकालते रहें—और, आहत भावनाओं के साथ, आपस में झगड़ने और लड़ने लगें? क्या आप बस खड़े होकर देखते रहेंगे जबकि वे झगड़ना जारी रखेंगे? निश्चित रूप से नहीं, है ना? कौन सा माता-पिता अपने बच्चों को लड़ते-झगड़ते देखकर खुश होगा? हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे

एक-दूसरे से प्यार करें और मेल-जोल से रहें। फिर भी, यदि वे लड़ने-झगड़ने लगते हैं, तो हमें उन्हें डांटना चाहिए। लेकिन हमें क्या करना चाहिए यदि हमारे बच्चे इतने मूर्ख हैं कि डांटे जाने पर भी सुनने से इनकार कर देते हैं? हमारे पास उन्हें छड़ी से अनुशासित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। हालाँकि, मान लीजिए कि हमारे बच्चों में कोई ऐसा बच्चा है जो सलाह सुनता है, अपनी गलती का पश्चाताप करता है, और अपने भाई-बहनों के साथ मेल-जोल से रहता है—वह सचमुच कितना बुद्धिमान बच्चा है! बाइबल हमें बताती है कि ऐसे बुद्धिमान बच्चे को दी गई सलाह का एक शब्द, एक मूर्ख बच्चे पर बरसाए गए सौ कोड़ों से कहीं ज़्यादा गहरा असर करता है। क्या यह दिलचस्प नहीं है? बेशक, हमें इसकी शाब्दिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है; फिर भी, यदि हम किसी बच्चे के नितंबों या पिंडलियों पर सौ बार छड़ी से मारें, तो कल्पना कीजिए कि उसके शरीर पर कितने गहरे और स्थायी निशान पड़ जाएँगे! फिर भी—बात यह है कि एक मूर्ख, अपने अहंकार में (नीतिवचन 9:7), शायद फिर भी अपनी गलतियों का पश्चाताप करने और उनसे मुँह मोड़ने से इनकार कर दे। इसके विपरीत, यदि हम किसी बुद्धिमान बच्चे को सलाह का केवल एक शब्द देते हैं, तो बाहरी तौर पर उसके शरीर पर कोई शारीरिक निशान नहीं रहता। हालाँकि, बात यह है कि माता-पिता की सलाह बुद्धिमान बच्चों के दिलों में गहराई से अंकित हो जाती है। बाइबल ऐसे ही एक बुद्धिमान व्यक्ति का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती है: राजा दाऊद। दाऊद ने कैसी प्रतिक्रिया दी, जब उसने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया—और उसके बाद उसके पति, ऊरिय्याह की हत्या करवा दी—और जब वह अपने पाप को छिपाने की कोशिश कर रहा था, तब परमेश्वर ने भविष्यवक्ता नातान को उसे डांटने के लिए भेजा? 2 शमूएल 12:13 के पहले हिस्से को देखिए: “दाऊद ने नातान से कहा, ‘मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।’” जिस पल दाऊद ने भविष्यवक्ता नातान की डांट सुनी, उसने तुरंत अपने पाप को मान लिया और पश्चाताप किया। प्रेरित पतरस के मामले में, जब मुर्गे ने बांग दी (लूका 22:60) और प्रभु ने मुड़कर उसकी ओर देखा, तो पतरस को प्रभु के शब्द याद आ गए—खास तौर पर, “आज मुर्गा बांग देने से पहले, तुम तीन बार मुझे नकारोगे”—और वह बाहर जाकर फूट-फूटकर रोया (पद 61–62)। यह सोचना कि उसने फूट-फूटकर पश्चाताप सिर्फ इसलिए किया क्योंकि मुर्गे ने बांग दी, प्रभु ने उसकी ओर देखा, और उसे वे शब्द याद आ गए जो प्रभु ने कहे थे—वह सचमुच कितना समझदार व्यक्ति था! ऐसे समझदार व्यक्तियों को छड़ी के सौ कोड़ों की ज़रूरत नहीं होती। प्रभु और उसके वचन से सलाह (या डांट) का

एक भी शब्द उनके लिए अपने पापों को मानने और पश्चाताप करने के लिए काफी होता है। क्या यह ठीक वैसी ही समझदारी नहीं है जिसकी हमारे परिवारों को ज़रूरत है?

एक समझदार व्यक्ति—यानी, वह जो सचमुच समझता है—अपनी गलतियों को स्वीकार करता है और सलाह का एक भी शब्द मिलने के बाद भी सही रास्ते पर चलता है। ऐसा कहा जाता है कि *द एनालेक्ट्स*—वह किताब जिसमें कन्फ्यूशियस और उनके शिष्यों के बीच की बातचीत दर्ज है—में चार अक्षरों वाला एक मुहावरा है जिसे *मुन-इल-जी-सिप* कहा जाता है। इस मुहावरे का मतलब है "एक बात सुनकर दस बातें समझना।" इसका इस्तेमाल आम तौर पर ऐसे व्यक्तियों—जैसे कि विलक्षण प्रतिभा वाले या जीनियस लोगों—के बारे में बताने के लिए किया जाता है, जो सिर्फ एक ही विचार सिखाए जाने पर उससे जुड़े दस और विचारों को समझ जाते हैं (स्रोत: इंटरनेट)। जब हम सलाह के एक भी शब्द को ग्रहण करने के लिए तैयार रहते हैं—न सिर्फ उसे दिल की गहराई से अपनाते हैं, बल्कि और भी ज़्यादा बुद्धिमान और समझदार बनते जाते हैं—और जब, परमेश्वर के वचन के ज़रिए, हम गहरी समझ हासिल करते हैं और उस सही रास्ते पर चलते हैं जो परमेश्वर चाहता है, तो हमारा परिवार सामंजस्यपूर्ण क्यों नहीं होगा?

तीसरी बात, एक सामंजस्यपूर्ण परिवार भलाई का बदला बुराई से नहीं देता। अपने घरों में कलह को दूर रखने के लिए, हमें भलाई का बदला भलाई से ही देना चाहिए।

नीतिवचन 17:13 पर विचार करें: "यदि कोई भलाई का बदला बुराई से देता है, तो बुराई उसके घर से कभी दूर नहीं होगी।" जिस परिवार से बुराई कभी दूर नहीं होती, वह ऐसा परिवार होता है जो परमेश्वर की अच्छी इच्छा का विरोध करता है, उसके वचन की अवज्ञा करता है, और अधार्मिकता का आचरण करता है। परिणामस्वरूप, क्योंकि वे अधार्मिकता में लिप्त रहते हैं, उस परिवार पर विपत्ति आती है। इसका एक बाइबिल-संबंधी उदाहरण राजा दाऊद हैं। राजा दाऊद एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भलाई का बदला बुराई से दिया। विशेष रूप से, उन्होंने जान-बूझकर ऊरिय्याह—बथशेबा के पति—की मृत्यु की साज़िश रचकर भलाई का बदला बुराई से दिया; ऊरिय्याह दाऊद और उनके राज्य, दोनों के प्रति वफ़ादार रहा था। इसके परिणामस्वरूप, उनके परिवार पर विपत्तियों की एक श्रृंखला टूट पड़ी: ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने बथशेबा के साथ व्यभिचार किया था, उनके पुत्र

अम्नोन ने तामार के साथ बलात्कार किया; और ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने ऊरिय्याह को मरवाया था, तामार के भाई अबशालोम ने अम्नोन को मार डाला। इसके अलावा, अबशालोम बाद में इतनी हद तक चला गया कि उसने अपने ही पिता, दाऊद को मारने का प्रयास किया, लेकिन अंततः वह स्वयं मारा गया। परिवार पर आने वाली ऐसी भयानक विपत्तियाँ परमेश्वर की इच्छा का विरोध करने, उसके वचन की अवज्ञा करने, और अधार्मिकता में लिप्त होने का सीधा परिणाम हैं।

आज, कई परिवार ऐसी ही घरेलू विपत्तियों का सामना कर रहे हैं। घर के भीतर कलह-क्लेश कभी न समाप्त होने वाला प्रतीत होता है। आधुनिक परिवार टूटन, चोट, घावों, दर्द और पीड़ा से भरे हुए हैं—इस समस्या की जड़ क्या है? इसका एक महत्वपूर्ण कारण हमारे परिवारों के भीतर मौजूद पापमयता है। आज कई परिवार पाप के कारण पीड़ित हैं—परमेश्वर की इच्छा का विरोध करने का पाप, उसके वचन की अवज्ञा करने का पाप, और भलाई के बजाय बुराई को चुनने का पाप। जब कोई परिवार परमेश्वर की भलाई का स्वाद चखने में असफल रहता है—और परिणामस्वरूप उसकी कृपा और प्रेम को समझने में असफल रहता है—और जब, उस कृपा और प्रेम के बावजूद, वे परमेश्वर के सामने स्वयं को विनम्र करने में असफल रहते हैं, और इसके बजाय अहंकारी और घमंडी बन जाते हैं, तो वे उसकी इच्छा का विरोध करते हैं और उसके वचन की अवज्ञा करते हैं; ऐसा करते हुए, वे अंततः अधार्मिकता के कार्य करते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें 1 पतरस 3:9 में पाए जाने वाले शब्दों पर ध्यान देना चाहिए: "बुराई का बदला बुराई से, या अपमान का बदला अपमान से न दो। इसके विपरीत, आशीष दो, क्योंकि तुम्हें इसी के लिए बुलाया गया है ताकि तुम आशीष के वारिस बन सको।" परमेश्वर के इस वचन के बारे में आपके क्या विचार हैं—कि हमें बुराई का बदला बुराई से या अपमान का बदला अपमान से नहीं देना चाहिए, बल्कि इसके बजाय आशीष देनी चाहिए? जब घर में झगड़े होते हैं—जब हमारे शब्द एक-दूसरे को दुख और घाव देते हैं—तो बाइबल हमें आशीष देने का निर्देश देती है।

कुछ समय पहले, जब मैं अपने MP3 प्लेयर पर बाइबल सुन रहा था, तो मैंने 1 पतरस 2:23 का एक अंश सुना, जिसमें बताया गया था कि यीशु ने कैसे, "जब लोगों ने उनका अपमान किया, तो उन्होंने पलटकर जवाब नहीं दिया; जब उन्हें दुख सहना पड़ा, तो उन्होंने कोई धमकी नहीं दी।" जब मैंने उन शब्दों पर कुछ देर विचार किया,

तो मुझे अपने रिश्तों के बारे में एक बात समझ में आई: भले ही कोई मुझसे दुख पहुँचाने वाली या अपमानजनक बातें कहे, मुझे भी वैसा ही जवाब नहीं देना चाहिए। दोस्तों, हमें बुराई से हार नहीं माननी चाहिए, बल्कि भलाई से बुराई को जीतना चाहिए (रोमियों 12:21)। हमें बुराई करने के बजाय, भलाई करने के लिए दुख सहने को तैयार रहना चाहिए। जैसा कि 1 पतरस 3:17 में बताया गया है, यही सचमुच परमेश्वर की इच्छा है। भले ही जब हम भलाई करते हैं और बदले में हमें बुराई मिलती है, तो हमारी आत्मा को अकेलापन महसूस हो सकता है (भजन संहिता 35:12), फिर भी हमें भलाई करने में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए (2 थिस्सलोनिकियों 3:13)। हमें बुराई से दूर रहना चाहिए, भलाई करनी चाहिए, शांति की खोज करनी चाहिए, और अपने घरों में शांति बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए (भजन संहिता 34:14)।

चौथी बात, एक सामंजस्यपूर्ण परिवार झगड़ा शुरू होने से पहले ही विवाद को खत्म कर देता है। अपने घरों में कलह को दूर रखने के लिए, हमें विवाद शुरू होने से पहले ही झगड़ा करना बंद कर देना चाहिए।

कृपया नीतिवचन 17:14 देखें: "झगड़े की शुरुआत पानी छोड़ने जैसी है; इसलिए झगड़ा शुरू होने से पहले ही विवाद को रोक दें।" दोस्तों, जब पति-पत्नी या बच्चे घर के अंदर आपस में झगड़ते हैं, तो आमतौर पर विवाद का कारण क्या होता है? क्या आप बड़े मुद्दों पर झगड़ते हैं, या उन मामलों पर जो पूरी तरह से तुच्छ हैं? मैं चार अक्षरों वाले तीन मुहावरे (चेनग्यू) साझा करना चाहूंगा जो मुझे इंटरनेट पर मिले: (1) *Baeknyeon Haero* (百年偕老): एक विवाहित जोड़े का सद्भाव और स्नेह के साथ एक साथ बूढ़ा होना; (2) *Haero Donghyeol* (偕老同穴): एक जोड़े का इतने सद्भाव से रहना कि वे जीवन में एक साथ बूढ़े हों और मृत्यु के बाद एक ही कब्र में दफनाए जाएं—जो गहरे वैवाहिक सद्भाव का प्रतीक है; (3) *Wagak Jijeng* (蝸角之爭): घोंघे के सींगों पर लड़ा गया युद्ध—जो किसी बहुत ही तुच्छ मामले पर विवाद, या छोटे राष्ट्रों के बीच संघर्ष का प्रतीक है। इस मुहावरे, *Wagak Jijeng* के पीछे की पृष्ठभूमि की कहानी इस प्रकार बताई जाती है: "वेई के राजा हुई (शासनकाल 369–319 ईसा पूर्व) ने क्यूई के राजा वेई (शासनकाल 356–320 ईसा पूर्व) के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने का एक गंभीर वादा किया था। हालाँकि, राजा वेई ने बाद में इस वादे को तोड़ दिया और उन्हें मारने के लिए एक हत्यारे को भेजा। यह खबर सुनकर, राजा हुई के एक मंत्री—गोंगसुन यान—ने तर्क दिया कि उन्हें हर हाल में एक सेना भेजकर दंडात्मक हमला करना चाहिए। इसके विपरीत, जी ज़ी ने तर्क दिया कि उन्हें आम

लोगों को कष्ट देने के लिए सेना नहीं भेजनी चाहिए। राजा हुई हिचकिचाए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। इस दुविधा को देखते हुए, दाई झेनरेन ने राजा हुई को संबोधित करते हुए कहा: 'घोंघे के बाएं सींग पर शू साम्राज्य बसता है, और दाएं सींग पर मान साम्राज्य बसता है।'" "एक बार, इन दोनों राष्ट्रों ने क्षेत्र को लेकर लड़ाई लड़ी। हजारों लोग मारे गए, और भागते हुए दुश्मन का पंद्रह दिनों तक पीछा करने के बाद, हमारी सेनाएं लौट आईं।" यह सुनकर, राजा हुई ने पलटकर कहा, "यह क्या है? क्या तुम बस बकवास कर रहे हो?" इस पर, दाइज़ेनरेन ने आगे कहा: "बिल्कुल। मुझे तुम्हें उस 'बकवास' के पीछे का असली मतलब दिखाने दो। इस विशाल ब्रह्मांड में, देश तो बस छोटे-छोटे कणों जैसे हैं। उन छोटे-छोटे देशों में से एक है 'वेई' राज्य; वेई राज्य के भीतर है उसकी राजधानी; और उस राजधानी के भीतर रहता है राजा।" "यह, सच कहूँ तो, 'घोंघे के सींग पर बसे राजा और देश' से कितना अलग है?" (इंटरनेट)। आखिरकार, इसका मतलब यह है कि पति-पत्नी या बच्चों के बीच होने वाले झगड़ों और मनमुटाव की जड़ें अक्सर बहुत ही छोटी-छोटी बातों में छिपी होती हैं। इसीलिए बुद्धिमान राजा सुलैमान ने आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 17:14—में कहा है, "झगड़े की शुरुआत, बाँध से पानी छोड़ने जैसी होती है।" इसका असल में क्या मतलब है?

मेरे दोस्तों, क्या आप में से कोई कभी लास वेगास के पास स्थित हूवर बाँध (Hoover Dam) पर गया है? अगर आप गए हैं, तो यह कल्पना कीजिए: अगर बाँध से पानी रिसना शुरू हो जाए—भले ही वह बहुत थोड़ा सा हो—तो क्या आप, यह अच्छी तरह जानते हुए भी कि क्या हो रहा है, उसके ऊपर खड़े होकर नज़ारे देखते रहेंगे? बस इसकी कल्पना कीजिए। अगर इतने विशाल बाँध में एक बहुत ही छोटा सा छेद हो जाए जिससे पानी टपक रहा हो, तो क्या आप या मैं, यह बात जानते हुए भी, वहाँ खड़े होकर नज़ारों की तारीफ़ करते रहेंगे? भले ही वह छेद इतना छोटा हो कि उससे बस पानी की एक पतली धार ही निकल रही हो, फिर भी बाँध का स्टाफ़—जैसे ही उन्हें उस रिसाव का पता चलेगा—शायद सभी पर्यटकों को वहाँ से हटने का आदेश दे देगा और किसी को भी उस जगह के आस-पास भी फटकने नहीं देगा। ऐसा क्यों है? क्या ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि इसमें एक अंतर्निहित खतरा छिपा है? जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो चार शब्दों वाला मुहावरा *सुजेओक-चेओनसेओक* (水滴穿石) मुझे सबसे सटीक लगता है। इसका मतलब है, "पानी की एक छोटी सी बूँद भी, अगर लगातार

गिरती रहे, तो आखिरकार वह ठोस पत्थर में भी छेद कर देती है" (इंटरनेट)। किसी विशाल बाँध में रिसाव चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, अगर उसे समय रहते न रोका जाए, तो वह निश्चित रूप से बाँध के ढहने का कारण बनेगा और भारी तबाही मचा देगा। इसलिए, राजा सुलैमान हमें यह सलाह देते हैं: "झगड़ा शुरू होने से पहले ही उसे रोक दो" (नीतिवचन 17:14)। फिर भी, जब हम किसी बहस या झगड़े के बीच फँस जाते हैं, तो हमें इस सलाह पर ध्यान देना चाहिए और झगड़ा बंद कर देना चाहिए; तो फिर, हम अक्सर ऐसा करने में असफल क्यों हो जाते हैं—और एक मामूली सी बात पर शुरू हुए झगड़े को बढ़ने देते हैं और उसे बेकाबू होने देते हैं? क्या आप किसी झगड़े को एक बड़ी लड़ाई में बदलने दे रहे हैं? जैसा कि याकूब 4:1 में कहा गया है, इसकी असली जड़ ठीक उन "इच्छाओं में है जो हमारे अंदर आपस में लड़ती रहती हैं।" अगर हम इन लड़ने वाली इच्छाओं को काबू में नहीं रखते और उनके अनुसार काम करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से—जैसा कि नीतिवचन 17:19 में बताया गया है—"ऐसे लोग बन जाते हैं जिन्हें झगड़ा करना पसंद है।" इसके अलावा, बाइबल हमें बताती है कि जिन लोगों को झगड़ा करना पसंद है, वे असल में ऐसे लोग हैं जिन्हें पाप करना पसंद है (नीतिवचन 17:19)। आखिरकार, हमारे घरों के अंदर एक-दूसरे से झगड़ने और लड़ने का कारण हमारे अंदर मौजूद वे लड़ने वाली इच्छाएँ ही हैं—ऐसी इच्छाएँ जो उन "ख्वाहिशों" से पैदा होती हैं जिन्हें हममें से हर कोई अपने अंदर पालता है (याकूब 4:2)। उदाहरण के लिए, जब पति-पत्नी आपस में लड़ते हैं, तो झगड़ा आमतौर पर तब शुरू होता है जब वे अपने जीवनसाथी से जो खास इच्छाएँ—यानी उम्मीदें—रखते हैं, वे पूरी नहीं होतीं; यानी, जब उन्हें वह नहीं मिलता जो वे चाहते हैं। हम झगड़े को तभी रोक सकते हैं जब हम इन इच्छाओं—इन उम्मीदों—को छोड़ दें। फिर भी, असल में, इन्हें पूरी तरह से छोड़ देना कितना मुश्किल है!

मेरे दोस्तों, मुझे लगता है कि आप *Letting Go* (Naeryeonoeum) किताब से परिचित होंगे, जिसे मंगोलिया में एक मिशनरी, ली योंग-ग्यू ने लिखा है। उनकी अगली किताब का नाम है *Letting Go Even More*। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने प्रतिष्ठित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से Ph.D. की डिग्री हासिल की है—एक ऐसा व्यक्ति जो आसानी से दुनियावी सफलता पा सकता था—लेकिन उसने इसके बजाय एक दूरदराज के इलाके में मिशनरी के तौर पर प्रभु की सेवा करना चुना। *Letting Go* में उन्होंने जिस बात पर ज़ोर दिया, वह सिर्फ अपनी अकादमिक डिग्रियों या दुनियावी शान-शौकत को छोड़ने का काम नहीं था, बल्कि—जैसा कि गलतियों

2:20 में कहा गया है—वह "मसीह में अपने 'स्व' (ego) का मर जाना" का विचार था। वह इसे ही "छोड़ देने" (letting go) की सच्ची भावना बताते हैं (स्रोत: इंटरनेट)। उस किताब के पन्नों में एक ऐसा अंश मिलता है, जो इस प्रकार है: "हमारे भीतर कहीं गहरे में एक बहुत छोटा बच्चा रहता है। यह बच्चा पहचान पाने की तीव्र चाह में रो रहा होता है। जब भी इस बच्चे की ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं, तो यह हमारे अंतर्मन को पीड़ा और कष्ट पहुँचाता है।" हम अपना जीवन अपने भीतर के उस 'अंतर्निहित बच्चे' (inner child) की भावनाओं से प्रेरित होकर जीते हैं—अक्सर बिना यह एहसास किए भी कि ऐसा कोई बच्चा हमारे भीतर मौजूद है। फिर भी, यह अंतर्निहित बच्चा केवल ईश्वर के प्रेम और उनकी स्वीकृति के माध्यम से ही स्थिरता पा सकता है और सच्चे विश्राम का आनंद ले सकता है। शैतान हमें लगातार इस बात के लिए ललचाता रहता है कि हम उन चीज़ों के प्रति आसक्त हो जाएँ, जिनकी हमारे पास कमी है। जब तक हम उन चीज़ों पर ही अपना ध्यान केंद्रित रखेंगे जो हमारे पास नहीं हैं, तब तक हम उन आशीषों की खुशी-खुशी सराहना और आनंद नहीं ले पाएँगे जो हमें पहले ही मिल चुकी हैं। जिस हद तक हम दुनिया की स्वीकृति पाने की चाह रखते हैं, उसी हद तक हम दुनिया के बंधक बन जाते हैं। और ठीक उसी हद तक, हम उस स्वतंत्रता को खो बैठते हैं जो हमें स्वर्ग से प्राप्त होती है। ईश्वर ने ये शब्द कहे: "तुम्हारे अस्तित्व के बिल्कुल भीतर, मैं कीमती इत्र से भरा एक पात्र (जार) देखता हूँ।" उनके द्वारा कहे गए ठीक अगले शब्दों ने मुझे गहरे आश्चर्य में डाल दिया और मेरे हृदय की गहराइयों को भेद दिया: "फिर भी, यद्यपि यह पात्र यीशु के चरणों तक लाया जा चुका है, फिर भी यह टूटने से बचने की ही कोशिश कर रहा है।" उन शब्दों में, मैंने अपने ही 'अखंडित स्वरूप' को देखा। मैंने अपने अहंकार को देखा—एक ऐसा अहंकार जो वास्तव में यीशु के चरणों तक पहुँच तो गया था, लेकिन जब टूटने का निर्णायक क्षण आया, तब भी उसने हठपूर्वक टूटने से इनकार कर दिया। मुझे एहसास हुआ कि मेरे भीतर कहीं गहरे में, सम्मान पाने की एक तीव्र इच्छा छिपी हुई थी। मैं यह समझ गया कि ठीक यही इच्छा थी जिसके कारण मैं दूसरों के शब्दों से आहत होता रहा था। मेरे भीतर से एक गहरी, आंतरिक सिसकी फूट पड़ी। अपने दुख और पश्चाताप की उस घड़ी में, मैंने ईश्वर के समक्ष एक गंभीर प्रतिज्ञा की: "हे ईश्वर, मैं अपने अस्तित्व के उन हिस्सों को देख रहा हूँ जो अब भी अखंडित हैं। मैं अपने इस पात्र को तोड़ देना चाहता हूँ।" भले ही उस पात्र को यीशु के चरणों में अर्पित कर दिया जाए, लेकिन जब तक वह टूटता नहीं, तब तक उसमें से सुगंध बाहर नहीं निकल सकती। केवल तभी, जब वह पात्र पूरी तरह से टूटकर बिखर जाता है—और उसके भीतर समाया हुआ कीमती इत्र पूरी तरह से बाहर छलक पड़ता है—तभी हम वास्तव में यीशु के 'क्रूस' (बलिदान) का सच्चा स्मरण और सम्मान कर सकते हैं (स्रोत: इंटरनेट)। कहा

जाता है कि कोरिया की एक पुरानी लोककथा है जो कुछ इस प्रकार है: "एक नई-नवेली दुल्हन, शादी के कुछ ही समय बाद जब अपने पति के घर आई, तो एक दिन रसोई में खाना बना रही थी। अचानक उसने खाना बनाना बंद कर दिया और फूट-फूटकर रोने लगी। उसके पति ने जब यह दृश्य देखा, तो उससे उसके दुख का कारण पूछा; उसने जवाब दिया कि उसने चावल जला दिए हैं।" यह कहानी सुनकर पति ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "मैं आज इतना व्यस्त था कि मैं केवल थोड़ा-सा ही पानी ला पाया; नतीजतन, पानी कम पड़ गया और चावल जल गए। यह पूरी तरह से मेरी गलती है।" पत्नी के आँसू रुकने के बजाय, वह पति की बातों से इतनी अधिक भावुक हो गई कि वह और भी ज़ोर से रोने लगी। ससुर, जो संयोगवश रसोई के पास से गुज़र रहे थे, उन्होंने यह दृश्य देखा और इसका कारण पूछा। परिस्थितियाँ जानने के बाद, उन्होंने अपने बेटे और बहू दोनों को सांत्वना देते हुए कहा, "अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, और मेरी ताक़त जवाब दे गई है; क्योंकि मैं लकड़ियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं काट पाया, इसलिए आग बहुत तेज़ जल गई, जिसके कारण चावल जल गए। गलती मेरी है।" ठीक उसी समय, सास, जो शोर सुनकर वहाँ पहुँचीं, उन्होंने अपनी बहू का बचाव करते हुए कहा, "मैं भी अब बूढ़ी हो गई हूँ; मेरी सूंघने की शक्ति कम हो गई है, इसलिए जब चावल चूल्हे से उतारने का समय हुआ, तो मैं तुम्हें सचेत नहीं कर पाई। यह गलती मेरी है।" इस कहानी को सुनाते समय, पुराने ज़माने के लोग अक्सर एक कहावत का ज़िक्र करते थे, *Gahwa Manseong* (家和萬事成)—"यदि परिवार में मेल-जोल हो, तो सभी कार्य सफल होते हैं।" दूसरे शब्दों में, जब किसी घर में आपसी तालमेल होता है, तो हर प्रयास में सफलता मिलती है। हालाँकि, यदि हम इस कहानी को गहराई से देखें, तो हम पाते हैं कि इसमें पात्र एक-दूसरे पर दोष मढ़ने या आरोप लगाने की कोशिश नहीं करते; बल्कि, वे अपनी कमियों पर आत्म-चिंतन करते हैं और दूसरों का ध्यान रखने का प्रयास करते हैं—यहाँ तक कि वे खुशी-खुशी दोष अपने ऊपर ले लेते हैं। ठीक इसी तरह के माहौल में सच्ची एकता की जड़ें मज़बूत होती हैं। और इसी एकता के बीच सभी चीज़ें वास्तव में फलती-फूलती हैं। इसके अलावा, हम सौभाग्यशाली हैं कि पवित्र आत्मा हमारे भीतर वास करती है। यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे दिलों और मनों को एक करती है। इसलिए, यदि हमारे परिवार का हर सदस्य पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और प्रेरणा का पालन करते हुए—एक-दूसरे को समझते हुए, क्षमा करते हुए, सांत्वना देते हुए और प्रोत्साहित करते हुए—जीवन बिताता है, तो हम निश्चित रूप से अपने ही घर में "धरती पर स्वर्ग" का निर्माण करेंगे। (स्रोत: इंटरनेट)

एक-दूसरे के साथ मेल-जोल से रहने के लिए...

यीशु कहते हैं, "अपने आप में नमक रखो, और एक-दूसरे के साथ शांति से रहो" (मरकुस 9:50)। एक-दूसरे के साथ मेल-जोल से रहने के लिए, ये बातें ज़रूरी हैं:

1. आत्म-बलिदान (मरकुस 9:50)
    a. ठीक वैसे ही जैसे नमक को घुलना पड़ता है

2. आत्म-त्याग (8:34)
    a. हमें अपना ध्यान इंसानी चिंताओं पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की चिंताओं पर लगाना चाहिए

3. नम्रता (9:34-37)
    a. एक घमंडी इंसान दूसरों के साथ शांति से नहीं रह सकता

4. सेवा (9:41)
    a. परमेश्वर से मिली ताकत से अपने पड़ोसी की सेवा करना, और छोटी-छोटी बातों में भी वफ़ादार बने रहना

यहाँ तक कि वे जोड़े भी जो ऊपर से मेल-जोल वाले लगते हैं...

यहाँ तक कि वे जोड़े (या परिवार) भी जो ऊपर से मेल-जोल वाले लगते हैं, असल में, एक ऐसे रिश्ते से गुज़र रहे हो सकते हैं जो गंभीर संकट में हो।

घर है...

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे की ज़रूरतें पूरी करते हैं, न कि यह माँग करते हैं कि दूसरा उनकी ज़रूरतें पूरी करे।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे की कहानियाँ सुनते हैं, न कि सिर्फ़ अपनी बात रखते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे के लिए शुक्रिया अदा करते हैं, न कि शिकायतें या दुख जताते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे के लिए रियायतें और त्याग करते हैं—ऐसी जगह नहीं जहाँ हर कोई मतलबी होकर सिर्फ़ वही चाहता है जो वह चाहता है।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे के ज़ख्मों पर मरहम-पट्टी करते हैं—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे और भी गहरे ज़ख्म देते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे की कमियों को जाने देते हैं—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे उन गलतियों पर सोचते रहते हैं और उन्हें बार-बार दोहराते रहते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे को माफ़ कर देते हैं—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे एक-दूसरे से नफ़रत रखते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ कपल एक-दूसरे को पैसे से सपोर्ट करते हैं—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे पैसों को लेकर झगड़ते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल अपने बच्चों को मिलकर पालता है—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे अपने बच्चों को एक-दूसरे पर थोपने वाला बोझ समझते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल एक-दूसरे को हिम्मत और ताकत देता है—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे एक-दूसरे के दिलों पर खंजर की तरह चुभने वाली कठोर बातों से घाव करते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल सब्र और सहनशीलता दिखाता है—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे अपना गुस्सा निकालते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल विनम्रता से एक-दूसरे की सेवा करता है—ऐसी जगह नहीं जहाँ वे एक-दूसरे के सामने घमंड, अकड़ या घमंड से पेश आते हैं।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल एक दिल शेयर करता है और साथ मिलकर एक कॉमन रास्ते पर चलता है—
ऐसी जगह नहीं जहाँ उनके दिल बँटे हों और वे अपने अलग-अलग रास्ते अपनाएँ।

एक ऐसी जगह जहाँ एक कपल...

घर वह जगह नहीं है जहाँ पति और पत्नी एक-दूसरे से सिर्फ़ वही चीज़ें माँगें जिनकी उन्हें खुद इच्छा हो।

घर वह जगह नहीं है जहाँ पति और पत्नी एक-दूसरे से सिर्फ़ वही चीज़ें माँगें जिनकी उन्हें खुद इच्छा हो। फिर भी, बार-बार हम पाते हैं कि हम अपने जीवनसाथी से यह उम्मीद करते हैं कि वह हमारी अपनी निजी इच्छाओं को पूरा करे। तो फिर, समस्या क्या है? इसकी जड़ उस गलतफ़हमी में है कि घर माँग करने की जगह है, न कि एक-दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने की जगह।

अगर घर सिर्फ़ एक ऐसी जगह हो जहाँ पत्नी लगातार अपने पति से माँग करती रहे—और पति भी बदले में लगातार अपनी पत्नी से माँग करता रहे—तो वह घर कभी न खत्म होने वाले झगड़ों और कलह से भरा रहेगा, जो अधूरी इच्छाओं से पैदा होते हैं। हालाँकि, अगर कोई जोड़ा अपने घर और शादीशुदा ज़िंदगी को एक "जंगल" की तरह देखे—एक ऐसी जगह जहाँ एक-दूसरे पर निर्भरता और विकास हो—तो वे अपनी इच्छाओं को पूरा करवाने की माँग करने के बजाय, एक-दूसरे की असली ज़रूरतों को पूरा करने में खुद को समर्पित कर देंगे।

जैसे-जैसे एक पति अपनी पत्नी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करता है और मसीह के प्रेम के ज़रिए उन्हें पूरा करने का प्रयास करता है, उसकी पत्नी उसके ज़रिए परमेश्वर के प्रेम का अनुभव करेगी। इसी तरह, जैसे-जैसे एक पत्नी अपने पति की ज़रूरतों को समझने में बढ़ती है—और, ठीक वैसे ही जैसे कलीसिया यीशु के अधीन रहती है, उसके वचनों को सुनकर और मानकर उसके अधिकार को स्वीकार करती है—उसका पति उसके ज़रिए परमेश्वर से मिली शक्ति प्राप्त करेगा। इस तरह, यह जोड़ा एक-दूसरे के ज़रिए अपनी-अपनी ज़रूरतों को पूरा होते हुए अनुभव करेगा, और इस प्रकार सच्ची संतुष्टि और संतोष पाएगा। साथ मिलकर, वे परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करेंगे।

एक-दूसरे के साथ एक स्वस्थ रिश्ता बनाने के लिए, जोड़े में से हर किसी को अपने-अपने दोस्तों के अलग-अलग दायरे के साथ भी स्वस्थ रिश्ते और मेल-जोल बनाए रखने चाहिए। इसके अलावा, किसी जोड़े का रिश्ता सचमुच स्वस्थ हो, इसके लिए उन दोनों को अपने-अपने माता-पिता को ठीक से "छोड़ना" होगा (उत्पत्ति 2:24)। यह "छोड़ना" पूरी तरह से होना चाहिए; वास्तव में, इसके लिए माता-पिता के साथ किसी भी ऐसे भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक बंधन को स्पष्ट और निर्णायक रूप से तोड़ना भी ज़रूरी हो सकता है जो शादीशुदा रिश्ते के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है।

अगर हम अपने भाई से सुलह किए बिना भगवान की पूजा करने उनके घर जाते हैं...

अगर, कुछ ऐसा करने के बाद जिससे हमारे भाई को शिकायत हो, हम उस भाई से सुलह किए बिना भगवान की पूजा करने उनके घर जाते हैं (cf. मैथ्यू 5:23–24), तो भगवान हमारी पूजा के बारे में ऐसा कहेंगे:

'तुम्हारी इतनी पूजा-पाठ मेरे किस काम के?'

'मैं तुम्हारी पूजा से थक गया हूँ।'

'मुझे तुम्हारी पूजा में कोई खुशी नहीं मिलती।'

'तुम्हें ऐसी पूजा करने के लिए किसने कहा?'

'तुम तो बस मेरे मंदिर के फर्श को रौंदते हो।'

'अब इस बेकार की पूजा को मत करो।'

'मुझे तुम्हारी पूजा से नफ़रत हो गई है।'

'मैं अब तुम्हें सब्बाथ मनाते और धार्मिक सभाएँ करते हुए भी बुराई करते हुए नहीं देख सकता।'

'क्योंकि जो पूजा तुम करते हो—जिससे मुझे नफ़रत है—वह मेरे लिए बोझ बन गई है, और मैं इसे सहते-सहते थक गया हूँ' (cf. यशायाह 1:11–14).

वैवाहिक झगड़ों पर

मेरी पत्नी और मैंने—लगभग बीस सालों के दौरान—बहुत ज़्यादा झगड़े किए हैं। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे वैवाहिक झगड़ों के बारे में सीखे गए कुछ सबक याद आते हैं:

1. हम छोटी-मोटी बातों पर झगड़ते थे। क्योंकि मुद्दे खुद ही मामूली होते थे, फिर भी हम झगड़ते थे—शायद आदत के कारण—तो ऐसा लगता है कि हमने इन झगड़ों को कभी गंभीरता से नहीं लिया।

2. लेकिन, जैसे-जैसे ये वैवाहिक झगड़े हमारे दिलों में एक-एक करके जमा होते गए, ऐसा लगता है कि हमारे मन में एक-दूसरे के प्रति गलत विचार और नज़रिए पनपने लगे। दूसरे शब्दों में, ऐसा लगता है कि हमने अपने ही मन में एक-दूसरे के बारे में गलत धारणाओं का एक ढेर बना लिया था।

3. नतीजतन, जब भी हमारा झगड़ा होता था, तो हम मन ही मन खुद से कहते थे, "ये ऐसा *इसलिए* कर रहे हैं क्योंकि ये इसी तरह के इंसान हैं," और इस तरह हम अपने जीवनसाथी को सिर्फ़ अपने नज़रिए से ही देखते थे।

4. इसके परिणामस्वरूप, ऐसा लगता है कि हमने एक-दूसरे को सचमुच समझने की क्षमता खो दी थी, और इसके बजाय, हम एक-दूसरे को और भी ज़्यादा गलत समझने लगे थे।

5. जैसे-जैसे ये गलतफहमियाँ हमारे दिलों में—एक-एक करके—जमा होती गईं, ऐसा लगा जैसे हम अपने साझा रास्ते से भटक गए हों; ठीक वैसे ही जैसे कोई ट्रेन अपनी पटरी से उतर जाती है, हम उस सफ़र से दूर होते गए जो हमें साथ मिलकर तय करना था, और अपने-अपने अलग रास्तों पर चलने लगे।

6. नतीजतन, हमारा रिश्ता एक-दूसरे से और भी ज़्यादा दूर होता गया। यहाँ तक कि एक-दूसरे में हमारी आपसी दिलचस्पी भी धीरे-धीरे खत्म हो गई, और ऐसा लगा जैसे हम और भी ज़्यादा खुदगर्ज इंसान बनते जा रहे हैं।

7. इसके परिणामस्वरूप, हमारे वैवाहिक झगड़े और भी ज़्यादा होने लगे; इसके अलावा, ऐसा लगा कि ये झगड़े और बहसें हमारे दिलों में और भी गहरे और बड़े ज़ख्म छोड़ जाती थीं।

8. खास तौर पर, हमारे झगड़ों के दौरान, हमने कुछ ऐसी सीमाएँ लांघ दीं जिन्हें कभी नहीं लांघना चाहिए था—हमने ऐसे शब्द कहे और ऐसा बर्ताव किया जिससे हमें पूरी तरह बचना चाहिए था।

9. खास तौर पर, ऐसा लगता है कि मेरे जीवनसाथी और मैं—उस पल में—इस बात से पूरी तरह बेखबर थे कि उन अलंध्य सीमाओं को लांघने से हमारे रिश्ते को कितने जानलेवा भावनात्मक ज़ख्म लगेंगे। बहुत बाद में जाकर, जब हमने आखिरकार इस सच्चाई को समझना शुरू किया, तब हमें एहसास हुआ कि हमारे दिल एक-दूसरे से पहले ही बहुत दूर जा चुके थे; ठीक वैसे ही जैसे कोई जहाज़ दूर क्षितिज की ओर चला जाता है, हम एक ही छत के नीचे साथ रह रहे थे, फिर भी भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से कोसों दूर थे।

10. परिणामस्वरूप, मुझे यह विश्वास हो गया कि किसी जोड़े के लिए शारीरिक रूप से करीब रहते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर रहने की तुलना में—भले ही वे शारीरिक रूप से अलग हों—भावनात्मक रूप से करीब होना कहीं अधिक बेहतर है।

11. हालाँकि, जिस दिल को गहरे और गंभीर घाव लगे हों, वह बिना किसी दैवीय हस्तक्षेप के न तो दूसरे व्यक्ति को सचमुच माफ़ कर सकता है और न ही ईमानदारी से क्षमा मांग सकता है। कोई व्यक्ति बौद्धिक रूप से इसकी आवश्यकता को समझ सकता है, लेकिन ऐसे शब्द और कार्य करना असंभव प्रतीत होता है जो वास्तव में दिल से निकले हों।

12. जब कोई जोड़ा माफ़ करने से इनकार कर देता है और क्षमा मांगने की तीव्र आवश्यकता भी महसूस करने में विफल रहता है, तो—पूरी तरह से मानवीय दृष्टिकोण से—रिश्ते को बनाए रखना असंभव प्रतीत होता है।

13. फिर भी, अपने असीम प्रेम और उमड़ते अनुग्रह के माध्यम से—और अपनी संप्रभु इच्छा के भीतर, उस परमेश्वर के रूप में जिसने हमें एक साथ जोड़ा था—ईश्वर ने अपना हाथ बढ़ाया और हमारे दिलों में से प्रत्येक को कोमलता से छुआ; उनके हाथों पर क्रूस के कीलों के निशान थे।

14. यहाँ तक कि एक ऐसे वैवाहिक रिश्ते में भी जो पूरी तरह से निराशाजनक प्रतीत होता था—इतना अधिक कि आपसी क्षमा असंभव लगती थी—ईश्वर ने धीरे-धीरे हमारे दिलों के भीतर की बीमारी को ठीक करना शुरू कर दिया।

15. यह ठीक वैसे ही था जैसे कोई सर्जन ऑपरेशन-टेबल पर किसी बीमार मरीज़ का इलाज कर रहा हो—जहाँ ज़रूरी हो वहाँ चीरा लगाना और रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकालना—क्योंकि प्रभु ने धीरे-धीरे उन तत्वों को हटा दिया जो हमारे रिश्ते को धीरे-धीरे मार रहे थे; ये तत्व, कैंसर के ट्यूमर की तरह, हमारे दिलों में गहरे तक जड़ जमाए हुए थे, और उन्होंने उन्हें हटा दिया—कभी छोटे-छोटे हिस्सों में, और कभी-कभी, बड़े पैमाने पर।

16. आमतौर पर, सर्जिकल प्रक्रियाएँ जनरल एनेस्थीसिया (बेहोशी की दवा) के तहत की जाती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि मरीज़ को बिल्कुल भी दर्द न हो; हालाँकि, अत्यधिक आपातकाल के मामलों में—जहाँ स्थिति इतनी गंभीर होती है कि एनेस्थीसिया नहीं दिया जा सकता—सर्जरी इसके बिना ही करनी पड़ती है, जिसके परिणामस्वरूप असहनीय पीड़ा होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे गंभीर संकट का सामना कर रहा वैवाहिक रिश्ता काफी हद तक बाद वाले परिदृश्य जैसा ही है: इसके साथ तीव्र पीड़ा जुड़ी होती है। चूँकि प्रभु की नज़रों में ऐसी पीड़ा को आवश्यक माना जाता है, इसलिए यह एक आध्यात्मिक सर्जरी का वह अपरिहार्य दर्द प्रतीत होता है जिससे हमें गुज़रना ही पड़ता है।

17. ऐसा प्रतीत होता है कि वैवाहिक रिश्ते की बहाली के लिए एक निश्चित मात्रा में पीड़ा अनिवार्य है। वह पीड़ा जितनी अधिक होती है, हमारे व्यक्तिगत दिल उतने ही अधिक पूरी तरह से टूटकर बिखर जाते हैं; और उस गहरे दर्द के बीच, ऐसा लगता है कि परमेश्वर हमें अपनी आवाज़ सुनने में मदद करते हैं—जो उनके वचन के ज़रिए हम तक पहुँचती है—और वह भी पहले से कहीं ज़्यादा स्पष्टता और तीव्रता के साथ।

18. इसके अलावा, हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा एक अद्‌भुत चमत्कार करता है: वह हमें—एक जोड़े के तौर पर—परमेश्वर के उसी वचन का पालन करने की शक्ति देता है, जो उसने हमसे कहा है।

19. इस चमत्कार का अनुभव करने के बाद, हम—एक जोड़े के तौर पर—अपने गहरे दुख के बीच एक गहरी समझ तक पहुँचे: परमेश्वर सचमुच जीवित हैं, और वह हमसे बहुत गहरा प्रेम करते हैं—यह एक ऐसा सत्य था जो इतना स्पष्ट था कि इसने हमें भी चकित कर दिया।

20. इसलिए, मेरा मानना है कि वैवाहिक कलह एक मूल्यवान अवसर का काम करता है: यह एक ऐसा मौका है जिससे हम स्पष्ट रूप से यह पहचान सकें कि हमारे अपने किन पहलुओं को पूरी तरह से टूटना और बिखरना ज़रूरी है; यह प्रभु के पास ऐसे हृदय के साथ जाने का एक अनमोल अवसर है जो उनके लिए प्यासा हो; और यह हमारे पूरे रिश्ते को प्रभु के हाथों सौंपने और आशा की एक नई भावना को अपनाने का एक अमूल्य मौका है।

वैवाहिक कलह पर

A. वैवाहिक कलह के माध्यम से हम जो बातें सीखते हैं, उनमें से एक यह है कि हम अपने व्यक्तिगत मतभेदों को *पूरक* कैसे बनाएँ—उन्हें दोनों साथियों के लिए एक *जीत-जीत* (win-win) वाली स्थिति में कैसे बदलें।

B. वैवाहिक कलह के लाभों में शामिल हैं...

1. यह हमारे मतभेदों को सामने लाता है।
2. यह हमें एक-दूसरे की कमियों को स्पष्ट रूप से देखने का अवसर देता है।
3. यह हमारे पापमय स्वभाव को उजागर करता है।
4. यह हमें एक-दूसरे की परवरिश और पृष्ठभूमि के बारे में गहरी समझ हासिल करने में सक्षम बनाता है।
5. यह एक-दूसरे की आदतों, व्यक्तित्व के लक्षणों और मूल मूल्यों को प्रकट करता है।
6. यह हमें यह पता लगाने में मदद करता है कि हममें से प्रत्येक दूसरे से क्या चाहता है।
7. यह हमें सिखाता है कि हमें एक-दूसरे के साथ किन शब्दों और कार्यों का उपयोग करने से बचना चाहिए।

C. वैवाहिक कलह को एक रचनात्मक अनुभव बनाने के लिए...

1. हमें अपने मतभेदों को स्वीकार करना चाहिए और धीरे-धीरे उन्हें अपनाना सीखना चाहिए।

2. एक-दूसरे की कमियों को पहचानते हुए, हमें एक-दूसरे की खूबियों पर और भी अधिक ध्यान केंद्रित करने का सचेत प्रयास करना चाहिए—उनकी सराहना और पुष्टि करते हुए—और इस प्रकार एक-दूसरे की कमजोरियों को पूरा करने के लिए काम करना चाहिए।

3. एक-दूसरे के पापमय स्वभाव को देखकर, हमें क्रूस पर यीशु मसीह की बलिदानी मृत्यु और उनके बहाए गए रक्त की शक्ति पर और भी अधिक गहराई से भरोसा करना चाहिए; जिस प्रकार प्रभु ने हमें क्षमा किया है, उसी प्रकार हमें—एक युगल के रूप में—एक-दूसरे को क्षमा करना चाहिए।

4. जैसे-जैसे हम एक-दूसरे की पृष्ठभूमि के बारे में सीखते हैं और एक-दूसरे के माता-पिता को जानते हैं, हमें अपने-अपने परिवारों और ससुराल वालों को जोड़ने वाले एक "पुल" के रूप में कार्य करना चाहिए।

5. जब हम आदतों, व्यक्तित्व या मूल्यों में अंतर पाते हैं, तो हमें बदलावों को थोपने या दोषारोपण करने के प्रयासों से बचना चाहिए; इसके बजाय, हमें धर्मग्रंथों पर आधारित सही निर्णय का उपयोग करना चाहिए, और—विश्वास के साथ—एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, और आशापूर्ण अपेक्षा के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए।

6. हमें अपनी स्वयं की मांगों और इच्छाओं को छोड़ देना चाहिए, और इसके बजाय यह समझने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हमारे साथी को वास्तव में किस चीज़ की *आवश्यकता* है—और उन विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए।

7. अपने शब्दों या कार्यों के माध्यम से एक-दूसरे को कष्ट पहुँचाने से बचने के लिए—और पवित्र आत्मा के फल (जो कि आत्म-संयम है) की सच्ची इच्छा रखते हुए—हमें केवल यह निर्धारित करने का प्रयास नहीं

करना चाहिए कि हमें क्या *कहना* या *करना* चाहिए; इसके बजाय, हमें पूरी लगन और विनम्रता के साथ यह सीखना चाहिए कि हमें एक-दूसरे के प्रति किन शब्दों और कार्यों से *परहेज़ करना चाहिए*, और फिर उस समझ को अमल में लाना चाहिए।

गरीबी में भी घर में मेल-जोल रहना, अमीर होने पर भी लगातार झगड़ा करने से कहीं बेहतर है।

गरीबी में भी घर में मेल-जोल रहना, अमीर होने पर भी लगातार झगड़ा करने से कहीं बेहतर है (नीतिवचन 17:1 देखें)। यदि परिवार में कोई एक व्यक्ति, जिसके मन में कुटिलता भरी हो, बिना सोचे-समझे बोलता है, तो उस घर में लगातार मुसीबतें आना तय है (पद 20 देखें)। झगड़े अक्सर छोटी-मोटी बातों पर ही शुरू हो जाते हैं; इसलिए, लड़ाई छिड़ने से पहले ही विवाद को खत्म कर देना चाहिए (पद 14)। हालाँकि, जो लोग झगड़ा करना पसंद करते हैं, वे असल में पाप से प्रेम करने वाले लोग होते हैं (पद 19); इसलिए, उनके घरों में शांति का एक भी दिन कभी नहीं आता।

“चलो हम झगड़ा न करें”

“इसलिए अब्राम ने लूत से कहा, ‘चलो तुम्हारे और मेरे बीच, या तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न हो, क्योंकि हम करीबी रिश्तेदार हैं’” (उत्पत्ति 13:8)।

लगभग दो हफ़्ते पहले, मंगलवार को हमारी ऑनलाइन पारिवारिक प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने “हे प्रभु, हमारे पूरे परिवार और रिश्तेदारों को प्रेम का एक परिवार बना” विषय पर चिंतन के सात बिंदु साझा किए थे। ये बिंदु इफिसियों 5:31–33 और मेरे द्वारा लिखे गए दो लेखों पर आधारित थे: (1) परिवार वास्तव में महत्वपूर्ण है; (2) पति—जो घर का मुखिया होता है—का आध्यात्मिक स्वास्थ्य वास्तव में महत्वपूर्ण है; (3) पति—जो घर का मुखिया होता है—की आध्यात्मिक परिपक्वता और नेतृत्व वास्तव में महत्वपूर्ण हैं; (4) एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति अपनी पत्नी से प्रेम करने को प्राथमिकता देता है; (5) एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति स्पष्ट रूप से स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करता है; (6) वैवाहिक रिश्ते में संकट या कठिन बाधाएँ आ सकती हैं; और (7) वैवाहिक रिश्ता मसीह और कलीसिया के बीच के रिश्ते का प्रतिबिंब होना चाहिए। पाँचवें बिंदु—कि “एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति स्पष्ट रूप से स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करता है”—पर चर्चा करते हुए, मैंने इफिसियों 5:31 का हवाला दिया: “इसी कारण से, शास्त्र कहता है: ‘एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिल जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे’” (मॉडर्न पीपल्स बाइबिल)। इसके अलावा, जब मैंने उस पाँचवें बिंदु को विस्तार से समझाने के लिए इस वचन का उल्लेख किया, तो मैंने सास और बहू के बीच के संघर्ष को एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया। विशेष रूप से, मैंने ऐसे मामलों का उल्लेख किया जहाँ, ऐसे संघर्ष के बीच, पति “अपने माता-पिता को छोड़ने”—जैसा कि इफिसियों 5:31 में

अनिवार्य किया गया है—में असफल रहता है। मेरा मानना है कि यदि कोई पति अपने माता-पिता (विशेषकर अपनी माँ) को “छोड़ने” में असफल रहता है, तो उसकी अपनी माँ और उसकी पत्नी के बीच का संघर्ष—सास-बहू का वह चिर-परिचित टकराव—निश्चित रूप से कभी न खत्म होने वाला होगा। दूसरे शब्दों में, एक आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ और अपरिपक्व पति अपनी माँ को—चाहे मानसिक रूप से हो या भावनात्मक रूप से—छोड़ने में असमर्थ होता है, और परिणामस्वरूप, वह अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते और अपनी माँ के साथ अपने रिश्ते के बीच स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करने में असफल रहता है। नतीजतन, जब उसकी पत्नी और उसकी माँ के बीच झगड़े होते हैं, तो वह अपनी पत्नी की रक्षा करने में नाकाम रहता है; इससे वह अपनी सास द्वारा लगातार पहुँचाए जा रहे दुख के प्रति कमज़ोर पड़ जाती है, जिससे वह दर्द और पीड़ा में आँसू बहाती है। इसके विपरीत, एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ एक हो जाता है, और उसके साथ "एक देह" बन जाता है। वह हर किसी को—अपनी माँ, बच्चों, भाई-बहनों और अन्य रिश्तेदारों सहित—"तीसरे पक्ष" के रूप में देखता है। वह समझदारी और प्रभावी ढंग से उन्हें अपने वैवाहिक रिश्ते में दखल देने या उस पर कोई भी नकारात्मक प्रभाव डालने से रोकता है।

आज का धर्मग्रंथ का अंश, उत्पत्ति 13:8, हमें अब्राम से परिचित कराता है—एक ऐसा व्यक्ति जो आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व है। अपने और अपने भतीजे, लूत के बीच पैदा हुए झगड़े को सुलझाने की कोशिश करते हुए, अब्राम ने उससे ये शब्द कहे: "हम करीबी रिश्तेदार हैं। तुम्हारे और मेरे बीच, और न ही तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न हो।" इस अंश के आधार पर, मेरा मानना है कि अब्राम ने, अपने और लूत के बीच मौजूद झगड़े को स्वीकार करते हुए, दो मुख्य सिद्धांतों को व्यक्त किया। ये दो सिद्धांत हैं: "हम करीबी रिश्तेदार हैं," और "चलो हम झगड़ा न करें" [या, जैसा कि *संशोधित कोरियाई संस्करण* में कहा गया है: "चलो हम झगड़े की अनुमति न दें"]। मेरा मानना है कि ये दो सिद्धांत न केवल हमारे दूर के रिश्तेदारों के साथ संबंधों पर लागू होते हैं, बल्कि हमारे अपने परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों पर भी—और, सबसे विशेष रूप से, पति और पत्नी के बीच के रिश्ते पर भी लागू होते हैं। उदाहरण के लिए, जब वैवाहिक रिश्ते पर विचार किया जाता है—यदि पति और पत्नी के बीच कोई झगड़ा होता है—तो पति को अपनी पत्नी से कहना चाहिए: "हम एक देह हैं" (इफिसियों 5:31) और "चलो हम झगड़ा न करें" (उत्पत्ति 13:8)। इसलिए, एक पति

को अपनी पत्नी के साथ झगड़ों को प्रभु की छत्रछाया में सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। धन्य हैं वे जो शांति स्थापित करते हैं (मत्ती 5:9)। अब्राम, जो आज के धर्मग्रंथ के अंश—उत्पत्ति 13:8—में दिखाई देते हैं, एक शांतिदूत थे। वह अपने प्यारे भतीजे, लूत के साथ झगड़े में शामिल नहीं होना चाहते थे। इस प्रकार, उन्होंने लूत से कहा, "हम भाई-बंधु हैं। तुम्हारे और मेरे बीच, और न ही तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न हो" (पद 8)। तो, पहला सवाल जो मैं पूछना चाहूँगा, वह यह है: अब्राम और लूत—और उनके अपने-अपने चरवाहे—आखिर एक-दूसरे से क्यों झगड़ने लगे? इस सवाल पर विचार करते हुए, मेरा मानना है कि सबसे पहले, असली झगड़ा सीधे अब्राम और लूत के बीच नहीं हुआ, बल्कि अब्राम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के बीच हुआ। दूसरी बात, इस झगड़े की वजह यह थी कि "अब्राम और लूत के पास इतने ज़्यादा जानवर थे कि उस ज़मीन में उन दोनों के एक साथ रहने के लिए काफ़ी चारागाह नहीं थे" (पद 6)। यहाँ "उस ज़मीन" से किस खास जगह का ज़िक्र हो रहा है? "वह ज़मीन" वह इलाका है जहाँ "अब्राम मिस्र से चलकर दक्षिणी कनान के नेगेव इलाके में आया, और अपने साथ अपनी पत्नी, अपने भतीजे लूत, और अपनी सारी संपत्ति ले आया" (पद 1)—खास तौर पर, वह जगह जहाँ "उसने उत्तर की ओर अपनी यात्रा जारी रखी, बेतेल और ऐ के बीच से गुज़रते हुए, ठीक उसी जगह पहुँचा जहाँ उसने पहले अपना तंबू गाड़ा था और एक वेदी बनाई थी" (पद 3)। यहाँ, "पहले" शब्द उन घटनाओं का ज़िक्र करता है जिनका वर्णन उत्पत्ति 12:5–8 में किया गया है: जहाँ "अब्राम अपनी पत्नी साराई, अपने भतीजे लूत, और उन सारी चीज़ों और नौकरों को साथ लेकर, जिन्हें उसने हारान में जमा किया था, कनान देश में दाखिल हुआ" (पद 5); जहाँ वह "उस देश से गुज़रते हुए शकेम में मोरे के बांज वृक्ष तक पहुँचा" (पद 6) और उसे परमेश्वर का वादा मिला; जहाँ "उसने वहाँ एक वेदी बनाई" (पद 7); और जहाँ वह "वहाँ से दक्षिण की ओर बढ़ा और बेतेल और ऐ के बीच अपना तंबू गाड़ा—बेतेल पश्चिम में और ऐ पूर्व में था। वहाँ उसने एक वेदी बनाई और प्रभु की आराधना की" (पद 8)। ध्यान देने लायक पहली बात यह है: अब्राम, अपनी पत्नी साराई और अपने भतीजे लूत के साथ, विश्वास के साथ हारान से निकला—ठीक वैसे ही जैसा परमेश्वर ने उसे निर्देश दिया था (पद 4)—कनान देश में दाखिल हुआ (पद 5), और बेतेल और ऐ के बीच अपना तंबू गाड़ा (पद 8)। इसके बाद, वह धीरे-धीरे कनान के दक्षिणी इलाके की ओर बढ़ा (पद 9); जब कनान देश में एक भयंकर अकाल पड़ा, तो वह वहाँ रहने के लिए मिस्र चला गया (पद 10); अपनी खूबसूरत पत्नी सराय और मिस्र के राजा, फ़िरौन से जुड़ी घटना के बाद, उन्हें उस देश को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा (पद 11–20); और अंततः, अपनी पत्नी, अपने भतीजे लूत, और अपनी सारी संपत्ति लेकर, वे मिस्र से निकल पड़े, कनान के दक्षिणी

नेगेव क्षेत्र तक यात्रा की (13:1), और एक बार फिर उसी जगह लौट आए जो बेतेल और ऐ के बीच थी, जहाँ उन्होंने पहले अपना तंबू गाड़ा था और एक वेदी बनाई थी (पद 3)। दूसरा बिंदु जिसने मुझे प्रभावित किया, वह यह है: जब अब्राम बेतेल और ऐ के बीच डेरा डाले हुए थे—जहाँ उन्होंने एक वेदी बनाई थी और परमेश्वर की आराधना की थी (पद 3; तुलना करें 12:8)—तब उनके और लूत के पास इतने विशाल पशु-झुंड थे कि उस ज़मीन के चारागाह उन दोनों को पालने के लिए अपर्याप्त साबित हुए; परिणामस्वरूप, अब्राम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के बीच विवाद खड़ा हो गया (पद 6–7)। इस तथ्य पर विचार करने से हमें यह याद आता है कि परमेश्वर की आराधना करने के बाद भी, पति-पत्नी आपस में झगड़ सकते हैं, और विवाद न केवल परिवार के करीबी सदस्यों के बीच, बल्कि रिश्तेदारों के बीच भी उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे विवाद—ठीक वैसे ही जैसे अब्राम और लूत के बीच हुआ था—भौतिक समृद्धि के कारण शुरू हो सकते हैं, जिससे पारिवारिक बंधनों से जुड़े लोगों के बीच भी दरार पड़ सकती है। यह नीतिवचन 17:1 की याद दिलाता है: "झगड़े-टंटे से भरे भोज वाले घर की अपेक्षा, शांति और सुकून के साथ सूखा टुकड़ा खाना बेहतर है।" किसी परिवार के लिए यह बेहतर है कि वे मेल-जोल से रहें—भले ही भौतिक संसाधन कुछ कम हों—बजाय इसके कि वे धन-दौलत से भरे घर में कलह के बीच रहें। वास्तव में जो बात मायने रखती है, वह घर के भीतर भौतिक संपत्तियों की बहुतायत नहीं, बल्कि वह मेल-जोल है जो उसके भीतर व्याप्त है। हालाँकि, परिवार का कोई ऐसा व्यक्ति जो लालच में डूबा हुआ हो, वह अनिवार्य रूप से कलह को भड़काता है (28:25)।

उत्पत्ति 13:8–10 पर मनन करते हुए, मैंने अब्राम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के बीच हुए झगड़े के कारण पर विचार किया: वह कारण यह था कि उनके पास इतने ज़्यादा पशु थे—जैसा कि पद 2, 6 और 7 में बताया गया है—कि बेतेल और ऐ के बीच की ज़मीन में मौजूद चारागाह उन दोनों के एक साथ रहने के लिए काफ़ी नहीं थे। इससे मेरे मन में यह सवाल उठा: उनके पास इतनी बड़ी संख्या में पशु कहाँ से आए? मेरे मन में कई तरह के सवाल उठे—उदाहरण के लिए, क्या उनके पास शुरू से ही इतने बड़े झुंड थे, या समय के साथ उनके पशुओं की दौलत बढ़ती गई? नतीजतन, मैंने उत्पत्ति अध्याय 12 की ओर रुख किया। पद 5 में (*मॉडर्न मैन बाइबल* अनुवाद के अनुसार), मैंने पढ़ा: "अब्राम अपनी पत्नी साराई, अपने भतीजे लूत, और उन सभी चीज़ों और नौकरों को साथ लेकर, जिन्हें उसने हारान में जमा किया था, कनान देश में प्रवेश किया।" इसे पढ़ने पर मुझे यह लगा

कि अब्राम शुरू से ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसके पास “उसकी सारी संपत्ति” थी—यानी, वह काफ़ी धन-संपत्ति वाला व्यक्ति था। हालाँकि, इससे मेरे मन में एक और सवाल उठा: क्या यह “पूरी संपत्ति” (12:5) उस शुरुआती दौर में ही “बहुत ज़्यादा” (13:6) थी? मेरी अपनी राय यह है कि ऐसा नहीं था। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि इसका कारण उत्पत्ति 12:10 में मिलता है; जब कनान देश में—जहाँ अब्राम, उसकी पत्नी साराई और उसका भतीजा लूत रह रहे थे—एक “भयंकर अकाल” पड़ा, तो अब्राम को कुछ समय के लिए मिस्र जाकर रहने पर मजबूर होना पड़ा। आज के ज़माने का एक उदाहरण लें: दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में—जहाँ मैं अभी रहता हूँ—रहने का खर्च बहुत ज़्यादा बढ़ गया है, और अपार्टमेंट का किराया, तथा अन्य खर्चों ने, कई मायनों में जीवन को आर्थिक रूप से काफ़ी मुश्किल बना दिया है। नतीजतन, मैंने सुना है कि बहुत से लोग पहले ही टेक्सास या दूसरे राज्यों में जाकर बस गए हैं। मैंने ऐसे लोगों के बारे में भी सुना है जो, दूसरे राज्यों से यहाँ लॉस एंजिल्स आकर बसना चाहते हैं, लेकिन ऐसा नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि यहाँ रहने का खर्च इतना ज़्यादा है कि वे इसे उठा नहीं सकते। फिर भी, चाहे रहने का खर्च कितना भी बढ़ जाए, मुझे लगता है कि जो लोग अमीर इलाकों—जैसे बेवर्ली हिल्स—में रहते हैं, वे शायद ही कभी दूसरे राज्य में जाने के बारे में सोचेंगे; ठीक इसलिए क्योंकि उनके पास बहुत ज़्यादा दौलत है। इसी तरह, अगर अब्राम की "पूरी दौलत" (पद 5, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*) कनान देश में रहते हुए उसके लिए काफी होती, तो जब वहाँ भयानक अकाल पड़ा, तो वह मिस्र जाने की न सोचता। अगर यह तर्क सही है, तो इससे एक और सवाल उठता है: "तो फिर, अब्राम की 'पूरी दौलत' इतनी 'ज़्यादा' कैसे हो गई?" (13:6, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर—उस वादे के प्रति सच्चा रहते हुए जो उसने अब्राम से किया था—पूरी वफ़ादारी से उसे "आशीष" दी (12:2–3, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। वादे के परमेश्वर ने अब्राम को ये आशीषें पूरी वफ़ादारी से कैसे दीं? उसने कनान देश में ही, जहाँ अब्राम रहता था, एक भयानक अकाल पड़ने दिया, जिससे अब्राम को मिस्र जाने पर मजबूर होना पड़ा (पद 10, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। वहाँ पहुँचने पर, ज़्यादातर अपनी पत्नी, साराई की खूबसूरती की वजह से, परमेश्वर ने मिस्र के राजा—फ़िरौन—को अब्राम के साथ बहुत दरियादिली से पेश आने के लिए प्रेरित किया; उसने अब्राम को भेड़ें, मवेशी, गधे, नौकर-नौकरानियाँ और ऊँट दिए (पद 16, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। फिर भी, इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, अब्राम खुद बेवफ़ा साबित हुआ। ऐसा लगता है कि वह वादे के परमेश्वर पर

पूरी तरह भरोसा करने में नाकाम रहा। नतीजतन—इस डर से कि मिस्र के लोग उसकी खूबसूरत पत्नी, साराई की वजह से उसे मार सकते हैं—उसने साराई से कहा, "उनसे कहना कि तुम मेरी बहन हो" (पद 12–13, *द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*)। इस तरह, जब अब्राम—अपनी जान के डर से—अपनी पत्नी को दूसरों को धोखा देने के लिए मजबूर कर रहा था, तब भी वादे का परमेश्वर उसे आशीष देने के अपने वादे के प्रति वफ़ादार रहा; उसने फ़िरौन को एक ज़रिया बनाया जिसके ज़रिए उसने अब्राम को बहुत सारे मवेशी दिए (पद 16)। यह अंदाज़ा लगाने के लिए कि यह दौलत कितनी ज़्यादा थी, हम उत्पत्ति 13:2 (*द मॉडर्न इंग्लिश बाइबल*) की ओर देखते हैं, जिसमें कहा गया है: "वह पशुओं के साथ-साथ चाँदी और सोने में भी धनी था।" जब मैं इस तरह से धर्मग्रंथों पर मनन कर रहा था, तो मुझे निर्गमन 12:36 और 38 की याद आई। *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* के अनुसार: "यहोवा ने मिस्रियों के मन में इस्राएलियों के प्रति कृपा उत्पन्न कर दी, जिससे उन्होंने उनकी माँगें पूरी कर दीं; इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों की संपत्ति को लगभग लूट ही लिया। ... इसके अलावा, उनके साथ अलग-अलग लोगों की एक मिली-जुली भीड़ भी निकली, साथ ही भेड़ें, मवेशी और बड़ी संख्या में पशुधन भी थे।" जब परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल के लोगों को मिस्र से छुड़ाया, तो उसने मिस्रियों के मन में इस्राएलियों के प्रति कृपा उत्पन्न कर दी और उनकी माँगें पूरी करवा दीं; परिणामस्वरूप, इस्राएली मिस्र से निकलते समय मिस्रियों की संपत्ति—विशेष रूप से उनकी भेड़ें, मवेशी और पशुओं के विशाल झुंड—अपने साथ ले गए। इस तरह, परमेश्वर ने अब्राम और उसके वंशजों—यानी इस्राएल के लोगों—को आशीष दी, और उन्हें प्रचुर मात्रा में पशुधन प्रदान किया। इससे यह सवाल उठता है: अब्राम के भतीजे, लूत के पास इतनी बड़ी मात्रा में पशुधन कैसे आया? हालाँकि उत्पत्ति 13:5 में कहा गया है, "लूत के पास भी भेड़-बकरियों के झुंड, मवेशी और तंबू थे," लेकिन पद 6 में यह बताया गया है कि "वह ज़मीन उन दोनों के एक साथ रहने के लिए काफी नहीं थी, क्योंकि उनकी संपत्ति इतनी ज़्यादा थी।" इससे मैं सोचने पर मजबूर हो गया: आखिर लूत को इतनी बड़ी मात्रा में पशुधन कैसे मिला? चूँकि बाइबल में इसका जवाब साफ-साफ नहीं दिया गया है, इसलिए हम पूरी निश्चितता के साथ यह नहीं जान सकते; हालाँकि, मेरा अपना मानना है कि अब्राम ने शायद अपने भतीजे, लूत के साथ उन भौतिक आशीषों को बाँटा होगा जो उसे खुद परमेश्वर से मिली थीं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि परमेश्वर ने अब्राम को आशीष दी थी—इस हद तक कि वह "पशुओं, चाँदी और सोने में धनी" था (पद 2)—मेरा मानना है कि अब्राम ने इस प्रचुर संपत्ति का एक हिस्सा अपने प्यारे भतीजे, लूत के साथ बाँटा होगा; परिणामस्वरूप, "लूत के पास भी भेड़-बकरियों के झुंड, मवेशी और सेवक थे" (पद 6)।

मैं वचन पर अपने इस मनन को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। जब अब्राम और उनके भतीजे लूत—या यूँ कहें कि उनके चरवाहे—अपनी विशाल संपत्ति के कारण आपस में झगड़ रहे थे, तो अब्राम ने लूत से कहा: "हम तो करीबी रिश्तेदार हैं। इसलिए, तुम्हारे और मेरे बीच, या तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा नहीं होना चाहिए" (उत्पत्ति 13:8)। हालाँकि अब्राम और लूत खुद सीधे तौर पर झगड़ते हुए नहीं दिख रहे थे, लेकिन उनके चरवाहों के बीच सचमुच टकराव था; ऐसा इसलिए था क्योंकि बेथेल और ऐ के बीच की ज़मीन में अब्राम और लूत, दोनों के विशाल झुंडों के लिए पर्याप्त चारागाह नहीं था। इसी संदर्भ में अब्राम ने लूत से आग्रह करते हुए कहा, "चलो, हम अपने चरवाहों को आपस में झगड़ने न दें" (पद 8)। यीशु में विश्वास रखने वाले मसीही होने के नाते, हम न तो खुद झगड़ा करने वाले लोग हैं, और न ही दूसरों के बीच झगड़ा भड़काने वाले। बल्कि, हम शांति बनाने वाले लोग हैं—वे लोग जो सक्रिय रूप से शांति को बढ़ावा देते हैं और उसे बनाए रखते हैं। फिर भी, ऐसा क्यों होता है कि हमारे बीच इतना अधिक कलह पैदा हो जाता है? कलीसिया के भीतर इतनी अधिक तकरार क्यों है? क्या इसका कारण यह है कि हमारे पास बहुत ज़्यादा संपत्ति है? या शायद, इसका कारण यह है कि हमारे पास किसी चीज़ की कमी है? परमेश्वर ने अपनी कृपा से हमें जो भौतिक आशीषें दी हैं, हमें उन्हें अपने आपसी झगड़ों का ही कारण नहीं बनने देना चाहिए। इसके बजाय, हमें इन भौतिक आशीषों का समझदारी से उपयोग करना चाहिए, ताकि परमेश्वर की महिमा हो।

आपको अपनी शादीशुदा ज़िंदगी को बचाना होगा!

जैसे एक कपल अपने बच्चों को लेकर आसानी से झगड़ सकता है, वैसे ही वे अपने माता-पिता को लेकर भी आसानी से झगड़ सकते हैं।
सबसे ज़रूरी बात यह है कि ऐसे झगड़ों के बीच भी, पति-पत्नी को एक कपल के तौर पर अपने रिश्ते को बचाने में मज़बूती से डटे रहना चाहिए।

‘भावनात्मक निकटता’

"अपनी शादी में भावनात्मक निकटता को फिर से बनाने के तरीके" शीर्षक वाला एक लेख पढ़ने पर, मैंने पाया कि इसमें वैवाहिक जीवन के भीतर "भावनात्मक निकटता" की अवधारणा पर चर्चा की गई थी। पहले, मैं वैवाहिक रिश्ते में आपसी भावनात्मक निकटता के महत्व को पूरी तरह से नहीं समझ पाया था। हालाँकि, अब मुझे बेहतर समझ है कि पति और पत्नी के लिए भावनात्मक रूप से करीब होना इतना महत्वपूर्ण क्यों है। यह एहसास इसलिए हुआ क्योंकि मेरे आस-पास की कई करीबी महिला मित्र अपने पतियों के साथ अपने रिश्तों में भावनात्मक निकटता की कमी के कारण संघर्ष कर रही थीं—और कुछ मामलों में, तो तलाक भी ले रही थीं। इसलिए, मेरा इरादा नीचे बताए गए विशिष्ट बिंदुओं पर विचार करने का है—जिसमें "शादी में भावनात्मक निकटता को फिर से बनाने के 10 तरीकों" में से केवल तीन पर ध्यान केंद्रित किया गया है: (1) "अपने शरीर का उपयोग करके संवाद करें," (2) "सहानुभूति व्यक्त करें," और (3) "अपनी कमज़ोरी दिखाने से न डरें"—और इन्हें अपने वैवाहिक रिश्ते में लागू करने का प्रयास करना है।

1. अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते में, मैंने "भावनात्मक निकटता" के बजाय "आस्था की निकटता" को प्राथमिकता दी है और उसका अनुसरण किया है। परिणामस्वरूप, मैं अक्सर अपनी पत्नी के साथ 'वचन'—यानी 'सत्य'—साझा करता हूँ, जो पूर्ण "तथ्य" है। उदाहरण के लिए, जब भी मैं ईश्वर के वचन पर मनन करता हूँ और कोई विशेष आशीर्वाद या अंतर्दृष्टि प्राप्त करता हूँ, तो मैं उसे अपनी पत्नी के साथ साझा करना सुनिश्चित करता हूँ। इसके अलावा, जब भी मुझे वह आध्यात्मिक दृष्टि—यानी "आस्था की आँखें"—प्रदान की जाती है जिससे मैं यह देख पाता हूँ कि प्रभु हमारे दैनिक जीवन में अपने वचन को किस प्रकार सक्रिय रूप से पूरा कर रहे हैं और उस पर कार्य कर रहे हैं, तो मैं उन अवलोकनों को अपनी पत्नी के साथ साझा करता हूँ। विशेष रूप से, जब भी मैं आस्था की आँखों से यह देखता हूँ कि प्रभु हमारे तीन बच्चों के व्यक्तिगत जीवन में किस प्रकार कार्य कर रहे हैं, तो मैं कृतज्ञता और आनंद से भरे हृदय के साथ उसे साझा करता हूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मेरी पत्नी

भी—अपनी आस्था के माध्यम से—इस बात को स्वीकार करती है और इसकी पुष्टि करती है कि प्रभु वास्तव में हमारे बच्चों के जीवन में कार्य कर रहे हैं; और ऐसा करते हुए, हम—एक जोड़े के रूप में—एक साथ... हम एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति रखते हैं, एक-दूसरे की पुष्टि करते हैं, और मिलकर ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।

2. मैं अपनी पत्नी के साथ "हृदय की निकटता" विकसित करने का प्रयास करता हूँ। इसका अर्थ है कि मैं अपने हृदय का द्वार खोलता हूँ और अपने आंतरिक विचारों तथा भावनाओं को उसके साथ पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ साझा करता हूँ। मैं अक्सर अपनी कमज़ोरियों को भी उसके साथ साझा करता हूँ। उदाहरण के लिए, जब मैं अपने प्यारे बच्चों के बारे में सोचता हूँ और उनके लिए प्रार्थना करता हूँ, तो मैं अक्सर अपनी पत्नी के साथ उन खास भावनाओं और विचारों को साझा करता हूँ जो प्रभु मेरे दिल में डालते हैं। जब मैं अपने बच्चों के बारे में अपनी भावनाएँ साझा करता हूँ—जिनसे वह भी उतनी ही शिद्दत से प्यार करती है—तो हम एक-दूसरे के लिए अपने दिलों के दरवाज़े खोल देते हैं; एक ही प्यार और एक ही सोच में एकजुट होकर, हम उनके बारे में बातचीत करते हैं। आज रात भी, मेरा इरादा अपनी पत्नी के सामने अपना दिल खोलने का है, और उसके साथ उन विचारों और भावनाओं को साझा करने का है जो प्रभु ने इस रविवार की सुबह मुझे हमारे बच्चों के बारे में दिए थे। साझा करने की यह आदत हमें, एक जोड़े के तौर पर, अपने तीनों बच्चों को प्रभु में एक एकजुट दिल से देखने में मदद करती है। इसके अलावा, यह एक-दूसरे के दिलों को समझने की हमारी आपसी समझ को और भी गहरा करती है।

3. अपनी पत्नी के साथ "यौन अंतरंगता" (sexual intimacy) की चाह रखते हुए—जिसमें शारीरिक हाव-भाव के ज़रिए उससे संवाद करना शामिल है—मैं साथ ही साथ "भावनात्मक अंतरंगता" (emotional intimacy) विकसित करने का भी प्रयास करता हूँ। मैं इन दोनों पहलुओं को एक साथ क्यों साधता हूँ, इसका कारण पुरुषों और महिलाओं के बीच के बुनियादी अंतरों में निहित है। आम तौर पर, पुरुष अपनी पत्नियों के साथ यौन अंतरंगता की इच्छा रखते हैं, जबकि महिलाएँ अपने पतियों के साथ भावनात्मक अंतरंगता की इच्छा रखती हैं। बेशक, इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि

किसी महिला को अपने पति के साथ यौन अंतरंगता की कोई इच्छा नहीं होती; और न ही इसका यह मतलब है कि किसी पुरुष को अपनी पत्नी के साथ भावनात्मक अंतरंगता की बिल्कुल भी इच्छा नहीं होती। हालाँकि पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर स्पष्ट हैं, फिर भी कई बार ऐसा होता है जब एक पुरुष भी अपने दिल का दरवाज़ा खोलना चाहता है और अपनी प्यारी पत्नी के साथ अपनी भावनाएँ साझा करना चाहता है (भले ही ऐसे पल बहुत बार न आते हों)। ऐसे समय में, यदि पत्नी अपने पति की भावनाओं को समझने में नाकाम रहती है और इसके बजाय उसे पूरी तरह से तार्किक (logical) तरीके से जवाब देती है, तो पति का दिल... उसे अकेलापन महसूस हो सकता है—हालाँकि शायद एक पत्नी को यह अकेलापन अपने पति की तुलना में कहीं ज़्यादा तीव्रता से और ज़्यादा बार महसूस होता होगा। मेरे अपने मामले में, हाल ही में एक दोस्त के अचानक गुज़र जाने के बाद, मैंने अपनी पत्नी के सामने पूरी ईमानदारी से अपना दिल खोलकर बताया कि जब भी मैं उसकी पत्नी और माँ के बारे में सोचता हूँ, तो मेरा दिल कितना दुखता है—इतना कि मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। हालाँकि, समय का चुनाव दुर्भाग्यपूर्ण रहा; ठीक उसी पल, मेरी पत्नी फ़ोन पर काम से जुड़े मामलों को निपटाने में व्यस्त थी। (हाहा।) शायद उसे लगा होगा कि, जिस तरह मैं पहले उसकी भावनाओं को ठीक से समझ नहीं पाया था जब उसने उन्हें मेरे साथ साझा किया था, उसी तरह वह भी उस पल में मेरे साथ सहानुभूति नहीं रख पा रही थी या मुझे यह महसूस नहीं करा पा रही थी कि मैं समझा जा रहा हूँ। हालाँकि मेरी पत्नी और मैं भावनात्मक निकटता पाने की अपनी कोशिश में अक्सर लड़खड़ा जाते हैं और पीछे रह जाते हैं, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता कि हमारा रिश्ता खतरे में है, सिर्फ इसलिए कि हमारे बीच वह खास जुड़ाव नहीं है। ऐसा इसलिए है—भले ही यह अधूरा क्यों न हो—कि हम अभी भी आध्यात्मिक और दिली निकटता पाने के व्यापक संदर्भ में भावनात्मक निकटता के लिए प्रयास कर रहे हैं। (बेशक, यह केवल मेरा अपना नज़रिया है।) फिर भी, मुझे अब यह ज़्यादा से ज़्यादा एहसास हो रहा है कि मुझे अपने रिश्ते में अपनी पत्नी के साथ भावनात्मक जुड़ाव और निकटता कैसे बढ़ाई जाए, यह सीखने के लिए और भी ज़्यादा लगन से कोशिश करने की ज़रूरत है।

भावनात्मक बेवफ़ाई?

मुझे पहले लगता था कि शादी के अंदर कोई भी गलत काम—कम से कम जितना मुझे पता था—को बस "व्यभिचार" या "बेवफ़ाई" कहा जाता है। लेकिन, हाल ही में मुझे पहली बार एक शब्द सुनने को मिला: "भावनात्मक बेवफ़ाई" (emotional cheating)। कोरियाई भाषा में, इसका अनुवाद "भावनात्मक छल" या "भावनात्मक धोखा" के रूप में किया जाता है। हालाँकि यह शब्द मेरे लिए कुछ हद तक नया था, लेकिन इसने मुझे कुछ साल पहले हमारी मंडली की एक बहन के साथ हुई बातचीत की याद दिला दी। जब मैंने उससे उसके तलाक़ का कारण पूछा, तो उसने बताया कि वह अपने पति से इसलिए अलग हो गई क्योंकि उनके बीच "भावनात्मक जुड़ाव" (emotional connection) की कमी थी। इससे मुझे यह एहसास हुआ कि शादी के रिश्ते में "भावनाओं" की भूमिका बहुत ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है—जितना मैंने पहले कभी सोचा भी नहीं था। दो अलग-अलग बहनों से "भावनात्मक जुड़ाव" और "भावनात्मक बेवफ़ाई" जैसे शब्द सुनने के बाद, मुझे इस बात की नई समझ मिली कि एक पत्नी के नज़रिए से "भावनाएँ" कितनी ज़रूरी होती हैं (क्योंकि मैंने कभी भाइयों को इस तरह की भावना-केंद्रित शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए नहीं सुना)। इसलिए, एक पुरुष होने के बावजूद, मैं एक महिला के नज़रिए से "भावनात्मक जुड़ाव" और "भावनात्मक बेवफ़ाई" की अवधारणाओं पर कुछ विचार साझा करना चाहूँगा। (इसे पढ़ने वाली बहनों के लिए: अगर आपको लगता है कि मैंने कुछ गलत समझा है या गलत कहा है, तो कृपया बेझिझक मुझे टिप्पणियों में बताएँ। धन्यवाद।)

1. पत्नियों के नज़रिए से, भावनाएँ सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होती हैं। हालाँकि, चूँकि पतियों के लिए भावनाओं का उतना महत्व नहीं होता जितना पत्नियों के लिए होता है, मेरा मानना है कि पत्नियों के लिए अक्सर अपनी शादी के दायरे में अपने पतियों से "भावनात्मक संतुष्टि" पाना मुश्किल होता है।

2. नतीजतन, मेरा मानना है कि पत्नियों को अपने पतियों के संबंध में "भावनात्मक असंतुष्टि" का अनुभव होना लगभग तय है—एक ऐसी असंतुष्टि जो समय के साथ बढ़ती जाती है और अंदर ही अंदर रिसती रहती है।

3. इसके परिणामस्वरूप, मेरा मानना है कि इस असंतुष्टि को तब तक सहने के बाद जब तक वे सह सकती हैं, पत्नियाँ आखिरकार एक ऐसे मोड़ पर पहुँच सकती हैं जहाँ, किसी खास घटना या वजह से, उनकी दबी हुई भावनात्मक असंतुष्टि आखिरकार फूट पड़ती है। या फिर—पत्नियों के नज़रिए से—मुझे लगता है कि इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि, अपने पतियों के साथ भावनात्मक जुड़ाव टूट जाने के कारण, वे आखिरकार एक ऐसी शादीशुदा ज़िंदगी जीने लगें जिसमें सुन्नता और उदासीनता ही हावी हो।

4. मेरा मानना है कि ठीक इसी तरह की भावनात्मक स्थिति में शैतान को मौका मिल जाता है कि वह बीच में घुस जाए और एक ज़बरदस्त प्रलोभन दे। इस ज़बरदस्त प्रलोभन में पति या पत्नी को अपने जीवनसाथी के अलावा किसी और के प्रति भावनात्मक रूप से आकर्षित करना और उनकी ओर खींचना शामिल है, जिससे वे कहीं और भावनात्मक संतुष्टि खोजने लगते हैं; अंततः, यह उस स्थिति तक पहुँच सकता है जिसे "भावनात्मक बेवफ़ाई" (emotional cheating) के नाम से जाना जाता है।

5. उदाहरण के लिए, आइए एक ऐसी पत्नी के बारे में सोचें जिसके मन में अपने पति को लेकर काफ़ी भावनात्मक असंतोष जमा हो गया है। उसे लग सकता है कि उसके पति के साथ उसका झगड़ा कभी खत्म नहीं होता। ऐसे मोड़ पर, मेरा मानना है कि शैतान एक ऐसी मुलाक़ात करवा सकता है—चाहे वह चर्च में हो या काम की जगह पर—जिसमें यह भावनात्मक रूप से असंतुष्ट पत्नी और उसका पति (जो लगातार झगड़ों और तर्कों से थक चुका है और शायद उसे अपनी पत्नी के भावनात्मक असंतोष का कारण भी समझ नहीं आ रहा है) किसी दूसरी महिला से मिलें। इस मुलाक़ात के ज़रिए, पति को वह आराम और सुकून मिल सकता है जो उसे अपनी पत्नी से नहीं मिला था। नतीजतन, मेरा मानना है कि इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि पति उस भावनात्मक आराम को पाने की

कोशिश में उस दूसरी महिला के साथ लगातार रिश्ता बनाए रखेगा, जिसकी कमी उसे अपनी शादी में महसूस हो रही है। जब ऐसा होता है, तो पत्नी को लग सकता है कि उसका पति उसे भावनात्मक रूप से धोखा दे रहा है—यानी "भावनात्मक बेवफ़ाई" कर रहा है। मेरा मानना है कि यह स्थिति अंततः एक पूरी तरह से विकसित "भावनात्मक संबंध" (emotional affair) में बदल सकती है।

6. इसके परिणामस्वरूप, पत्नी अब अपने पति पर भरोसा नहीं कर पाएगी; उसके पास अपने पति के प्रति लगातार शक और अविश्वास रखने के अलावा कोई और चारा नहीं बचेगा। इसके अलावा, मेरा मानना है कि उसे अपने पति के हाथों बहुत गहरे धोखे का एहसास भी हो सकता है।

7. अंततः, मेरा मानना है कि इन घटनाओं के परिणामस्वरूप, पत्नी उस मोड़ पर पहुँच सकती है जहाँ वह तलाक़ लेने के बारे में सोचने लगती है।

8. अगर ऐसा है, तो हम ऐसे एहतियाती कदम कैसे उठा सकते हैं ताकि हम इतनी गंभीर स्थिति तक न पहुँचें?

9. सबसे पहले, मेरा मानना है कि पतियों (और पत्नियों को भी, उसी तरह) को परमेश्वर के वचन पर मज़बूती से टिके रहना चाहिए—जो केवल *भावनाओं* पर नहीं, बल्कि *तथ्यों* पर आधारित है—और उस वचन को मज़बूती से थामे हुए, विश्वास के साथ परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाएँ करनी चाहिए।

10. विशेष रूप से, मेरा मानना है कि वैवाहिक रिश्ते में किसी संकट के समय, परमेश्वर अपना वचन (अपने वादे) या तो पति को या फिर पत्नी को देता है। दूसरे शब्दों में, वैवाहिक संकट परमेश्वर की आवाज़ सुनने का एक अवसर होता है। व्यक्ति को उस प्राप्त वचन को मज़बूती से थामे रखना चाहिए और, एक प्यासी आत्मा के साथ, पूरी लगन से परमेश्वर की खोज करनी चाहिए।

11. इस संदर्भ में, मेरा मानना है कि हम पतियों को, विशेष रूप से, अपनी पत्नियों की भावनाओं का सम्मान करने और उनके प्रति संवेदनशील होने की क्षमता विकसित करनी चाहिए—यह सीखना चाहिए कि वे जो महसूस कर रही हैं, उसे हम भी उनके साथ महसूस करें [जिससे *भावनात्मक

जुड़ाव* और *भावनात्मक संतुष्टि* को बढ़ावा मिले]। बेशक, यह आसान नहीं है; इसके लिए निस्संदेह बहुत अधिक अनुशासन और प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।

12. इसलिए, मेरा मानना है कि हम पतियों को अपनी पत्नियों के साथ *भावनात्मक स्तर* पर बातचीत करनी चाहिए—उनकी भावनाओं में सहभागी होना चाहिए—और अंततः उस बातचीत को सत्य पर आधारित *तथ्यात्मक स्तर* तक ले जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो, पतियों के रूप में हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम प्रेमपूर्ण हृदय से अपनी पत्नियों के प्रति सहानुभूति रखने का प्रयास करें, और अंततः परमेश्वर के वचन के माध्यम से उनका पालन-पोषण करें। इस प्रकार, मेरा मानना है कि हमें अपनी पत्नियों का मार्गदर्शन और नेतृत्व मुख्य रूप से *भावनाओं* द्वारा नहीं, बल्कि *तथ्यों* द्वारा करना चाहिए—अर्थात् परमेश्वर के वचन के सत्य द्वारा।

13. परिणामस्वरूप, जैसे-जैसे कोई जोड़ा परमेश्वर के वचन के तथ्यात्मक सत्य द्वारा निर्देशित होता है, और जैसे-जैसे वे उस सत्य की सीमाओं के भीतर समृद्ध भावनाओं और सहानुभूति का अनुभव करते हैं, प्रभु में उनका वैवाहिक संबंध दृढ़ और समृद्ध दोनों बन जाता है।

14. मेरे विचार से, जो भावनाएँ परमेश्वर के वचन के तथ्यात्मक सत्य पर आधारित नहीं होतीं—या जो भावनाएँ उस सत्य की सीमाओं से बाहर भटक जाती हैं—वे वैवाहिक संबंध के लिए लाभकारी नहीं होतीं; इसके विपरीत, उनमें हानि पहुँचाने का एक बड़ा जोखिम होता है। मेरा मानना है कि इस बात का काफी जोखिम है कि इससे वैवाहिक संबंध में दरार पड़ सकती है।

15. इसलिए, मेरा मानना है कि इन भावनाओं को परमेश्वर के सत्य के वचन पर आधारित स्वस्थ भावनाओं में परिष्कृत किया जाना चाहिए; ऐसा करने से, जोड़ा एक आपसी "वचन-जुड़ाव" स्थापित करता है—जो बदले में एक "स्वस्थ भावनात्मक जुड़ाव" को बढ़ावा देता है—और इस प्रकार, अपने विश्वास के संदर्भ में उनकी भावनात्मक संतुष्टि को निरंतर गहरा करता है।

आपकी पत्नी और परिवार की एकता से भी ज़्यादा ज़रूरी क्या है...

अपनी पत्नी को खुश रखने की कोशिश करना ज़रूरी है। परिवार के भीतर एकता बनाए रखना बेहद ज़रूरी है। लेकिन, ऐसा करने के लिए परमेश्वर के वचन की आज्ञा न मानना सही नहीं है। सबसे ज़रूरी बात है—परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानना।

जब मम्मी और पापा के बीच अनबन होती है, तो एक बच्चे के दिल पर कितना भारी बोझ पड़ता होगा?

कल—गुरुवार को—जब मैं अपनी प्यारी पत्नी और सबसे छोटी बेटी, यीउन के साथ रात का खाना खा रहा था, तो यीउन ने—शायद "टैटू वाली घटना" से अभी भी दुखी होकर—पूरी ईमानदारी के साथ मुझसे अपने मन की बात कहने का फैसला किया। मेरी पत्नी, जो पास ही बैठकर सुन रही थी, उसने मेरे "प्रवक्ता" की भूमिका निभाई और मेरा बचाव किया। चूंकि रेस्टोरेंट बंद होने का समय करीब आ रहा था, इसलिए मैंने सुझाव दिया कि हम अपनी बातचीत घर जाकर जारी रखें; घर पहुँचने पर, यीउन ने मुझसे अपने मन की बातें कहना जारी रखा। हालाँकि, इस बार, मेरा बचाव करने के बजाय, मेरी पत्नी—जो ठीक हमारे बगल में ही थी—ने भी मुझसे अपनी कुछ शिकायतें ज़ाहिर करने का फैसला कर लिया! (हाहा।) इसलिए, मैं बस अपनी कुर्सी पर हाथ जोड़कर (लगभग प्रार्थना की मुद्रा में!) बैठा रहा और अपनी प्यारी पत्नी और अपनी प्यारी बेटी, यीउन की बातें सुनता रहा। ऐसा लगा जैसे मेरी नाक से दोहरा खून बह रहा हो! (हाहा।) कल की बातचीत के आधार पर, मैं कुछ विचार साझा करना चाहूँगा जो मेरे मन में आ रहे हैं:

1. यीउन ने मुझसे कहा कि उसने मुझे—अपने पिता को—बहुत ऊँचे दर्जे पर रखा था, लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि शायद उसे उन उम्मीदों को थोड़ा कम करने की ज़रूरत है। मैंने बस इतना कहकर जवाब दिया, "धन्यवाद, यीउन।" फिर मैंने आगे कहा, "तुम्हारे पिता के तौर पर, मुझमें सचमुच कमियाँ हैं और मैं अपूर्ण हूँ; इसलिए, मेरी एकमात्र आशा यह है कि तुम मेरी कमियों को नज़रअंदाज़ करके, मेरे भीतर बसने वाले 'छोटे से मसीह' की झलक देख पाओ।" मुझे ऐसा लगता है कि यीउन ने मुझे बहुत—शायद *बहुत ज़्यादा*—ऊँचा दर्जा दिया हुआ था। ऐसा होने के लिए उसने मुझसे बहुत गहरा प्यार और सम्मान किया होगा। हालाँकि, ऐसा लगता है कि हाल की "टैटू वाली घटना" ने उसे बहुत ज़्यादा निराश किया है। अब आगे के लिए, मैं तो असल में यही उम्मीद

करता हूँ कि यीउन अपने पिता के लिए जो ऊँचे मापदंड रखती है, वे धीरे-धीरे और भी नीचे गिरते जाएँ! (हाहा।)

2. जब मैंने यीउन की बातों का ईमानदारी से जवाब दिया—खासकर आस्था के नज़रिए से—तो मेरी पत्नी, जो पास ही बैठकर सुन रही थी, उसने भी उसी मौके का फायदा उठाकर, ठीक यीउन के सामने ही मुझसे अपने मन की बातें कह डालीं। हालांकि आस्था के बारे में बातचीत निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन ऐसा लगता है कि मेरी पत्नी एक अलग बात पर ध्यान दिलाना चाह रही थी: कि एक पिता के तौर पर मुझे अपनी बेटी के साथ कैसा रिश्ता बनाना चाहिए और मुझे उससे किस तरह बात करनी चाहिए। फिर, मेरी पत्नी ने हमारे आपसी रिश्ते को लेकर कुछ दुख भरी भावनाएँ—या शायद निराश होने का एहसास—ज़ाहिर किया। यह सब सुनने के बाद, हमारी बेटी, यीउन, फूट-फूटकर रो पड़ी और हमसे कई बातें कीं। अब तक, जब भी उसकी माँ और मैं आपस में बहस या झगड़ा करते थे, तो यीउन आमतौर पर पीछे हट जाती थी और उस माहौल से दूर रहती थी; ऐसा लगता था कि ऐसी स्थिति का सीधे सामना करना—शायद पहली बार—उसके लिए बहुत ज़्यादा तकलीफ़देह था। न तो अपने पिता का और न ही अपनी माँ का पक्ष ले पाने के कारण, वह निष्पक्ष रहने की कोशिश करती हुई लग रही थी, जबकि वह अपने मन की सच्ची बातें भी कह रही थी। इसलिए, मैंने यीउन से कहा, "मुझे माफ़ कर दो।" मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मुझे सचमुच अपनी बेटी से माफ़ी माँगने का एहसास हो रहा था। फिर मैंने यीउन को एक टिश्यू दिया। और जब उन दोनों में से कोई भी मेरी तरफ़ नहीं देख रहा था, तो मैंने चुपके से अपनी आँखों में आए आँसू पोंछ लिए।

3. ऐसा लगता है कि यीउन ने अपनी माँ की बातों को मेरे प्रति नाराज़गी के इज़हार के तौर पर समझा। और, सच कहूँ तो, मेरी पत्नी *सचमुच* मेरे बारे में अपनी कुछ असंतुष्टि ज़ाहिर कर रही थी। हालाँकि, इसकी ज़िम्मेदारी मेरी ही है—क्योंकि मैं अतीत में एक पति के तौर पर नाकाम रहा हूँ, और अब भी मैं अपनी ज़िम्मेदारियों को ठीक से नहीं निभा पा रहा हूँ। इसलिए, मैंने अपनी पत्नी और यीउन दोनों से कहा, "तुम्हारी माँ के पति के तौर पर, और डिलन, येरी और यीउन के पिता के तौर पर, मैं

नाकाबिल हूँ; मुझमें कई कमियाँ हैं और मैंने कई गलतियाँ की हैं।" मैंने यह भी माना कि मुझे इस बात का भरोसा नहीं है कि भविष्य में मैं बेहतर कर पाऊँगा। जब तक भगवान मेरी मदद नहीं करते, मैं अपने परिवार का नेतृत्व करने की अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं कर सकता। यह सुनकर, मेरी पत्नी ने भी अपनी कमियों और कमज़ोरियों के बारे में खुलकर बात की। उस समय, यीउन हमारी तरफ़ मुड़ी और उसने हमसे पूछा, "माँ और पापा, आप दोनों खुद को इतना कमतर क्यों आँकते रहते हैं?" अपने ही अंदाज़ में, यीउन हमें प्यार भरी डाँट—या शायद एक कोमल सुधार—दे रही थी। जब मैंने उसकी बातें सुनीं, तो मैं पूरी तरह से निशब्द रह गया। मैं बस यीउन से इतना ही कह सका, "प्लीज़, अपने मम्मी-पापा के लिए प्रार्थना करना।" लेकिन, उस हालात को देखते हुए—जब यीउन का दिल दुख रहा था और वह बेकाबू होकर रो रही थी—उस पल में उससे हमारे लिए प्रार्थना करने की उम्मीद कैसे की जा सकती थी? वह बस मुड़ी और अपने कमरे में चली गई। चूंकि मुझे कल हुई हमारी लंबी बातचीत की हर छोटी-बड़ी बात याद नहीं है—और न ही मुझे ठीक से पता है कि उसे सबसे अच्छे तरीके से कैसे संक्षेप में बताऊं—इसलिए मैंने अपने विचारों को बस तीन मुख्य बिंदुओं में बांट दिया है, जैसे-जैसे वे मेरे मन में आए। फिर भी, मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं, क्योंकि मुझे सच में लगता है कि कल रात की बातचीत बहुत कीमती और काम की थी। खासकर, एक पिता के तौर पर, मुझे भरोसा है कि प्रभु यीउन की मदद करेंगे ताकि वह अपने विचारों और भावनाओं को एक सही तरीके से समझ सके—अपनी बात पूरी ईमानदारी से मेरी पत्नी और मुझसे कहकर, और फिर अपने कमरे में जाकर उन पर सोचे, अपने विचारों को व्यवस्थित करे, और अपनी डायरी में लिखे। इसके अलावा, जहां मैं अपने और अपने पूरे परिवार के लिए लगातार समझदारी की प्रार्थना करता हूं, वहीं यह देखकर मेरा दिल खुशी और शुक्रगुज़ारी से भर जाता है कि भगवान वही समझदारी यीउन को भी दे रहे हैं। कल मुझे यीउन के साथ पूरी ईमानदारी से अपने दिल की बात कहने का भी मौका मिला। जब मैं देखता हूं कि भगवान डाइलन, येरी और यीउन के दिलों और ज़िंदगी में कैसे काम कर रहे हैं, तो मुझे यह सच में बहुत खास लगता है कि—हमारे तीन बच्चों में से—यीउन की आध्यात्मिकता सबसे ज़्यादा मेरी आध्यात्मिकता जैसी है। मैंने डाइलन, येरी और यीउन द्वारा भेजे गए सेवा से जुड़े अपडेट, निजी अनुभव और मिशन के खत पढ़ने की आदत बना

ली है; फिर मैं उन्हें कोरियन भाषा में अनुवाद करता हूं ताकि अपने बड़े परिवार और रिश्तेदारों के साथ शेयर कर सकूं। इन लेखों के ज़रिए, मुझे यह देखने का मौका मिलता है कि भगवान मेरे हर बच्चे के दिल और ज़िंदगी में कैसे सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। फिर भी, मुझे यह एहसास हुआ है कि यीउन न सिर्फ खाने-पीने के मामले में मेरी पसंद से मिलती-जुलती है, बल्कि आध्यात्मिकता के मामले में भी उसमें मुझसे बहुत गहरी समानता है। और इसलिए, मैंने यह बात पूरी ईमानदारी से यीउन के साथ शेयर की।

आगे बढ़ते हुए, मेरी पत्नी और मैं यह समझते हैं कि हमारे वैवाहिक रिश्ते को हमारी ज़िंदगी के आखिरी पल तक लगातार कोशिश और समर्पण की ज़रूरत है; यह एक ऐसा सफर है जिसमें लगातार प्रार्थना और भगवान की कृपा पर पूरी तरह से भरोसा करने की ज़रूरत होती है। हमारी शादी के छब्बीस सालों के दौरान, मेरी पत्नी ने शायद सबसे ज़्यादा बार जो बात कही है, वह बस इतनी है: "अलग।" हम दोनों—मेरी पत्नी और मैं—सच में एक-दूसरे से इतने ही अलग हैं। इसके अलावा, कल हमारी बातचीत के दौरान—और येउन की मौजूदगी में—मेरी पत्नी ने मेरे बारे में एक खास बात कही: उसने कहा कि मेरे दिल के चारों ओर की दीवारें बहुत ऊंची हैं। मेरी पत्नी के नज़रिए से, इस टिप्पणी का शायद यही मतलब है कि—क्योंकि वह मुझसे बहुत प्यार करती है और मेरे करीब आना चाहती है—उसे ऐसा करना बेहद मुश्किल लगता है, क्योंकि मेरे दिल के चारों ओर की दीवारें इतनी मजबूत और विशाल हैं। मैं ईश्वर की कृपा पाने के लिए तरसता रहूंगा और अपने वैवाहिक रिश्ते को प्राथमिकता देने का प्रयास करूंगा। दरअसल, कल येउन के कमरे से जाने के बाद, मेरी पत्नी और मैं अक्टूबर की यात्रा की खुशी-खुशी(?) तैयारी कर रहे थे। हा हा। बेशक, येउन को हमारे रिश्ते में चल रही तमाम बातों का कोई अंदाज़ा नहीं है।

[एक बात अभी मेरे मन में आई। कल येउन ने कहा था कि क्योंकि मैं एक पिता के रूप में अपने बच्चों की आज़ादी पर भी ज़ोर देता हूं(?), इसलिए हमारे तीनों बच्चे अपने-अपने तरीके से काफी स्वतंत्र हो गए हैं, लेकिन उनके बीच भावनात्मक जुड़ाव उतना अच्छा नहीं है। मैं यह सुनकर अवाक रह गया। यह सच था।] येउन ने कल मुझसे ईमानदारी से कहा, "क्योंकि मैं उनकी स्वतंत्रता को इतना महत्व देता था(?) कि उनके

नजरिए से, एक पिता के रूप में मेरे साथ उनका पर्याप्त भावनात्मक जुड़ाव नहीं हो पाता था। तभी मुझे यह बात थोड़ी-थोड़ी समझ में आने लगी और मैं परेशान होने लगा।"

पूरी ईमानदारी से साझा किया गया एक पारिवारिक भोजन

आज, मेरी पत्नी के जन्मदिन के अवसर पर, हम दोनों ने साथ मिलकर शांति से नाश्ता किया—सिर्फ़ हम दोनों। बाद में दोपहर में, जब उसका काम खत्म हो गया, तो पूरा परिवार उसकी पसंद के एक रेस्टोरेंट में इकट्ठा हुआ ताकि सब मिलकर एक शानदार भोजन का आनंद ले सकें। यह सचमुच एक आशीर्वाद था। मुझे विशेष रूप से यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि मेरी पत्नी डाइलन और जेसिका के साथ अलग-अलग विषयों पर बातें कर रही थी—जिनमें शादी के प्रस्तावों का विषय भी शामिल था। डाइलन को अपनी माँ से बात करते हुए इतनी खुशी से मुस्कुराते देखना भी उतना ही सुखद था। और जेसिका—अपनी आदत के मुताबिक—अपना पसंदीदा *बोसम* (भाप में पके पोर्क रैप्स) बड़े चाव से खा रही थी! हमारी सबसे छोटी बेटी, यीउन—जिसने ज़ाहिर तौर पर पूरे दिन एक कटोरी रामेन के अलावा कुछ नहीं खाया था—उसने भी अपना पसंदीदा *यांगन्योम-गेजांग* (मसालेदार मैरिनेटेड कच्चा केकड़ा) बड़े उत्साह से खाया; उसे इस तरह अपने भोजन का आनंद लेते देखकर मेरा दिल भी कृतज्ञता से भर गया। रात के खाने के बाद, मेरी पत्नी ने चाय और डेज़र्ट लेने की इच्छा ज़ाहिर की, इसलिए हम उस कैफ़े में चले गए जहाँ हमारा परिवार अक्सर जाता है। वहाँ पहुँचकर—हालाँकि यह हमारी मूल योजना का हिस्सा नहीं था—मैंने बस अपना दिल खोलकर रख दिया और अपने कुछ सबसे गहरे और सच्चे विचार साझा किए। वे विचार कुछ इस प्रकार थे:

1. "तुम्हारे पापा ने कभी किसी को डेट नहीं किया—मुझे सिर्फ़ एकतरफ़ा प्यार का ही अनुभव हुआ—जब तक कि मैं तुम्हारी माँ से नहीं मिला और हमारी शादी नहीं हो गई। क्योंकि उस समय मुझे औरतों के बारे में बहुत कम जानकारी थी, इसलिए कई बार ऐसा हुआ जब मैं तुम्हारी माँ के साथ वैसा बर्ताव नहीं कर पाया जैसा मुझे करना चाहिए था।"

2. "इसके अलावा, हमारे पहले बच्चे, जूयंग के गुज़र जाने के बाद, मैं एक बच्चे के लिए बहुत ज़्यादा तरस गया था। जब भगवान ने हमें डाइलन का आशीर्वाद दिया तो मैं बहुत ज़्यादा शुक्रगुज़ार था, लेकिन मैं एक ऐसा पिता बन गया जिसे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि बच्चे की परवरिश कैसे की जाती है।"

3. "नतीजतन, तुम तीनों बच्चों की परवरिश करते समय मैंने बहुत सारी गलतियाँ कीं। मुझे सचमुच इसका बहुत अफ़सोस है।"

4. "जब तुम्हारी माँ और मैं तुम तीनों के बारे में बात करते हैं, तो हम उन खास चीज़ों पर ध्यान नहीं देते जो हमने तुम्हारे लिए कीं या नहीं कीं—यानी उन कामों पर। इसके बजाय, हमारा ध्यान इस बात पर होता है कि भगवान तुम तीनों में से हर एक के जीवन में किस तरह सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।"

5. "तुम्हारी माँ और मैं, हम दोनों ही भगवान का शुक्रिया अदा किए बिना नहीं रह पाते।" इसका कारण यह है कि, माँ और पिताजी के इतने अपूर्ण माता-पिता होने के बावजूद, ईश्वर—जो आपसे सबसे अधिक प्रेम करते हैं—आपको विश्वास की आँखों से उस वास्तविकता की झलक देखने का अवसर दे रहे हैं कि वे स्वयं व्यक्तिगत रूप से आपका पालन-पोषण कर रहे हैं।

जब मैं ये हार्दिक विचार साझा कर रहा था, तो मैंने अपने तीनों बच्चों से यह पूछने का अवसर लिया कि क्या जब वे छोटे थे, तो मैं उनके लिए एक अत्यधिक कठोर पिता था; आश्चर्यजनक रूप से, उन्होंने मुझे बताया कि मैं ऐसा नहीं था। मैंने उनसे उन समयों के बारे में भी पूछा जब मैंने उन तीनों को एक साथ छड़ी से अनुशासित किया था—ऐसा कई अवसरों पर हुआ था—और डिलन और यीउन को वास्तव में वे घटनाएँ याद थीं। हालाँकि, जिस बात ने मुझे वास्तव में विनम्र महसूस कराया, वह यह थी कि उन दोनों बच्चों ने मुझे बताया कि उन्हें लगा कि मैंने उन्हें क्रोध के बजाय प्रेमवश अनुशासित किया था। फिर भी, वास्तविकता में, मुझे संदेह है कि उन अधिकांश अवसरों पर, मैं वास्तव में क्रोध में ही उन्हें अनुशासित कर रहा था। मुझे सचमुच नहीं पता कि इसे कैसे समझाया जाए। मैंने अपने बच्चों से क्षमा मांगी थी, यह मानते हुए कि उनके पालन-पोषण में मैंने

कई गलतियाँ की थीं, लेकिन मुझे यह एहसास हुआ कि वे चीजों को काफी अलग ढंग से देखते थे। यह ईश्वर की कृपा के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

भले ही ज़िंदगी का एक बड़ा तूफ़ान आए, जिससे मेरे परिवार की नाव डूब जाए...

भले ही ज़िंदगी का एक बड़ा तूफ़ान आए, जिससे मेरे परिवार की नाव डूब जाए (cf. मैथ्यू 8:24), मैं चाहता हूँ—इमैनुएल, हमारे साथ परमेश्वर (मैथ्यू 1:23) में अपने विश्वास के ज़रिए—प्रभु में आराम पाऊँ (cf. 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; इब्रानियों 4:11) जब मैं गाता हूँ: "मेरी किस्मत जो भी हो, तूने मुझे यह कहना सिखाया है, 'सब ठीक है, मेरी आत्मा ठीक है।' सब ठीक है, मेरी आत्मा ठीक है" (न्यू हाइमनल 413, "इट इज़ वेल विद माई सोल," वर्स 1 और रिफ्रेन)।

मरने से पहले आपको मेल-मिलाप कर लेना चाहिए।

मैंने अंतिम संस्कारों के दौरान परिवार के सदस्यों के बीच मनमुटाव के दृश्य देखे हैं। अक्सर, मैंने बच्चों को अपने माता-पिता के अंतिम संस्कार के समय आपस में झगड़ते देखा है। मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा कि इसे कैसे बयां करूँ, लेकिन यह निश्चित रूप से आध्यात्मिक उत्थान का स्रोत नहीं था। यह सचमुच एक दुखद दृश्य था। इसके विपरीत, मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिन्होंने—इस दुनिया से विदा होने से पहले—हर उस व्यक्ति से संपर्क किया जिसके साथ उनके संबंध तनावपूर्ण थे; उन्होंने क्षमा मांगी और अपनी मृत्यु से पहले मेल-मिलाप कर लिया। वह सचमुच एक सुंदर दृश्य था। हालाँकि, जो बात इसे और भी अधिक मार्मिक बनाती है, वह यह है कि उसी व्यक्ति के अंतिम संस्कार के दौरान, उनके भाई-बहनों में से एक ने यह मांग की कि शोक मनाने वालों द्वारा भेजी गई फूलों की श्रद्धांजलि को अंतिम संस्कार कक्ष से हटा दिया जाए। मृत व्यक्ति ने तो सभी के साथ मेल-मिलाप कर लिया था, फिर भी ऐसा प्रतीत होता था कि उनके भाई-बहनों में से एक ऐसा करने में असमर्थ रहा। अच्छी मृत्यु पाने के लिए—और एक ऐसे अंतिम संस्कार को सुनिश्चित करने के लिए जो ईश्वर की महिमा करे, उपस्थित सभी लोगों को अनुग्रह प्रदान करे, और शोक मनाने वालों के दिलों पर एक अमिट छाप छोड़े—हमें एक बार फिर रोमियों 12:18 में पाए जाने वाले इस पाठ की याद दिलाई जाती है: "यदि संभव हो, जहाँ तक आप पर निर्भर है, सभी के साथ शांति से रहें।"

भाग 3:
मेल-मिलाप

मेल-मिलाप क्या है?

मेल-मिलाप एक वापसी है। यह अपने पापों के लिए पश्चाताप भरे हृदय के साथ परमेश्वर के पास लौटने का कार्य है। परमेश्वर घोषणा करता है कि वह हमें वापस ले आएगा (यहेजकेल 39:25, 27, 28)। परमेश्वर वादा करता है कि वह हमें बहाल करेगा।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमें हमारी असली हालत में वापस लाएँ।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे टूटे हुए परिवार और हमारे चर्च को एक बार फिर से खड़ा करें, उन्हें फिर से बनाएँ, और उन्हें उनकी असली हालत में वापस लाएँ (संदर्भ: आमोस 9:11, 14)।

“अब हमें बहाल कर!”

[भजन संहिता 60]

जब मैं “बहाली” (restoration) शब्द सुनता हूँ, तो मुझे लगभग एक या दो साल पुरानी एक घटना याद आती है, जब मैं चर्च के एक डीकन (सहायक पादरी) के साथ एक विवाहित जोड़े के घर गया था। उस समय, पत्नी—जो विश्वास में हमारी एक बहन थी—एक मुश्किल दौर से गुज़र रही थी, इसलिए हमने उसकी बहाली के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। मुझे अच्छी तरह याद है कि प्रार्थना के बाद, उसने अपनी हैरानी ज़ाहिर करते हुए पूछा, “ऐसा क्यों है कि पादरी हमेशा बहाली के लिए ही प्रार्थना करते हैं?” उस जोड़े से मिलने और चर्च लौटने के बाद, मैंने उस घटना पर विचार किया और खुद से यह सवाल पूछा: “मैंने उस जोड़े को पश्चाताप करने के लिए प्रोत्साहित क्यों नहीं किया?” मेरा पक्का विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति सच्ची बहाली की कृपा का अनुभव तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि प्रभु में पाप का मसला पहले हल न हो जाए। मुझे यह अब भी साफ-साफ याद है। लगभग दो साल पहले, हमारी ‘वॉचनाइट सर्विस’ (Watchnight Service) के दौरान, मैंने “5 R’s” पर आधारित एक संदेश दिया था: पश्चाताप (Repentance) à मेल-मिलाप (Reconciliation) à बहाली (Restoration) à सुधार (Reformation) à पुनरुद्धार (Revival)। सच्ची बहाली होने के लिए, हमें सबसे पहले पश्चाताप करना होगा और इस तरह परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करना होगा।

आज के शास्त्र-पाठ में—विशेष रूप से भजन संहिता 60:1 के दूसरे हिस्से में—हम देखते हैं कि दाऊद परमेश्वर से विनती कर रहा है: “...अब हमें बहाल कर!” इस वचन को केंद्र में रखते हुए और “अब हमें बहाल कर!” विषय के तहत, हम तीन बिंदुओं पर मनन करके उन सबकों को सीखने की कोशिश करेंगे जो परमेश्वर हमें देना चाहता है: पहला, दाऊद ने बहाली के लिए यह प्रार्थना क्यों की? दूसरा, उसने यह प्रार्थना कैसे की? और अंत में, यह प्रार्थना करने के बाद उसका रवैया कैसा था?

पहला, दाऊद ने बहाली के लिए यह प्रार्थना क्यों की?

इसका कारण यह है कि परमेश्वर के अनुशासन के परिणामस्वरूप उसे युद्ध में एक अस्थायी हार का सामना करना पड़ा था (भजन संहिता 60:1–3) (पार्क यून-सन)। भजनकार दाऊद युद्ध में मिली इस अस्थायी हार के कारण का वर्णन इन शब्दों में करता है: "हे परमेश्वर, तूने हमें त्याग दिया है; तूने हमें तोड़ डाला है; तू हमसे अप्रसन्न हुआ है..." (वचन 1); "तूने पृथ्वी को कंपा दिया है; तूने उसे तोड़ डाला है; उसकी दरारों को भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है" (वचन 2); "तूने अपनी प्रजा को कठिन बातें दिखाई हैं; तूने हमें भ्रम का दाखमधु पिलाया है" (वचन 3)। यहाँ पद 3 में जिस "दाखमधु" (wine) का ज़िक्र है, वह एक रूपक है जो परमेश्वर के क्रोध को दर्शाता है (पार्क यून-सन)। दूसरे शब्दों में, एदोम के आक्रमण के कारण दाऊद को अस्थायी हार का सामना करना पड़ा था। दाऊद ने यह पहचान लिया कि इस हार का कारण परमेश्वर का क्रोध था। अंततः, परमेश्वर के क्रोध के परिणामस्वरूप दाऊद (और यहूदा के लोगों) को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा (पद 3)। इसलिए, दाऊद ने परमेश्वर से विनती करते हुए कहा, "अब हमें बहाल कर" (पद 1) और "इसकी दरारों को भर दे, क्योंकि पृथ्वी काँप रही है" (पद 2)। चूँकि प्रभु ने ही पृथ्वी को कंपाया और फाड़ डाला था, इसलिए स्वाभाविक रूप से उसमें दरारें पड़ गईं। दाऊद परमेश्वर से उन दरारों को ठीक करने—उन्हें भरने—की विनती कर रहा था। यह बहाली के लिए की गई एक प्रार्थना है।

यदि परमेश्वर क्रोधित होकर हमें त्याग देता है, तो हम जिन आध्यात्मिक लड़ाइयों का सामना करते हैं, उनमें हमारी हार निश्चित है। यदि परमेश्वर हमें सहारा नहीं देता, तो जीवन में हमारा ठोकर खाना, गिरना और असफल होना तय है। हमारा अपना विश्वास चाहे कितना भी मज़बूत क्यों न लगे, और हमारे परिवार, व्यवसाय या कलीसियाएँ चाहे कितनी भी सुदृढ़ क्यों न दिखाई दें, प्रभु पृथ्वी को कंपा सकता है और उसे फाड़ डाल सकता है (पद 2)। यदि वही परमेश्वर, अपने क्रोध में आकर, हमारे जीवन की नींवों को—जिसमें हमारे परिवार, हमारे व्यवसाय और हमारी सेवा वाली कलीसियाएँ भी शामिल हैं—हिलाकर रख दे, तो भला हम कैसे अडिग रह सकते हैं? जब हम हिल जाते हैं और डगमगाने लगते हैं—और परमेश्वर के क्रोध के परिणामस्वरूप अपने जीवन में अनेक दरारें देखते हैं—तो हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे भीतर ऐसे

पाप मौजूद हैं जो परमेश्वर के क्रोध को भड़का सकते हैं; हमें परमेश्वर के सामने अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और उसकी दया की याचना करनी चाहिए। इसका कारण यह है कि सच्चे पश्चाताप के बिना सच्ची बहाली संभव नहीं है।

दूसरे, दाऊद ने बहाली के लिए अपनी प्रार्थना किस प्रकार की?

दाऊद ने बहाली के लिए अपनी प्रार्थना परमेश्वर के समक्ष दो विशिष्ट दृढ़ विश्वासों के साथ प्रस्तुत की:

(1) दाऊद ने बहाली के लिए अपनी प्रार्थना परमेश्वर के समक्ष उद्धार के विश्वास के साथ प्रस्तुत की।

आज के शास्त्र-पाठ, भजन संहिता 60:5 पर दृष्टि डालें: "अपने दाहिने हाथ से बचा ले, और हमें उत्तर दे, ताकि तेरे प्रिय जन उद्धार पा सकें।" यहाँ, हम देखते हैं कि दाऊद परमेश्वर के प्रेम (उसके अटल प्रेम) पर भरोसा रखते हुए, परमेश्वर से अपनी विनती कर रहा है। दाऊद को पूरा यकीन था कि परमेश्वर—जो अपने लोगों से किसी भी और से ज़्यादा प्यार करते हैं—हमारी प्रार्थनाओं की पुकार को अनसुना नहीं करेंगे, बल्कि हमें जवाब देंगे और अपने शक्तिशाली दाहिने हाथ से हमें बचाएँगे। इससे एक आज का ईसाई गीत याद आता है, "विज़न" (Vision): "हम सिंहासन के सामने इकट्ठा हुए हैं, मिलकर प्रभु की स्तुति कर रहे हैं / परमेश्वर का प्यार—उन्होंने अपना बेटा दे दिया; उनके लहू के ज़रिए, हम बचाए गए हैं / वह प्यार जो क्रूस पर बहा, पूरी धरती पर एक नदी की तरह बहता है / हर देश, हर कबीले, और हर जाति से—धरती के सभी कोनों से—हम बचाए गए हैं और प्रभु की आराधना करते हैं / उद्धार हमारे परमेश्वर का है जो सिंहासन पर विराजमान हैं, और मेम्ने का है! / उद्धार हमारे परमेश्वर का है जो सिंहासन पर विराजमान हैं, और मेम्ने का है!"

(2) दाऊद ने परमेश्वर से अपनी बहाली के लिए प्रार्थना जीत के पक्के यकीन के साथ की।

आज के शास्त्र के अंश, भजन संहिता 60:4 पर नज़र डालें: “तूने उन लोगों को जो तुझसे डरते हैं, एक झंडा दिया है, ताकि सच्चाई के कारण उसे फहराया जा सके। (सेला)” बाइबल कहती है कि परमेश्वर उन लोगों को एक “झंडा” देते हैं जो उनसे डरते हैं। परमेश्वर ने दाऊद को “झंडा” क्यों दिया? इसका कारण यह संकेत देना था कि परमेश्वर उसके साथ होंगे और उसे जीत दिलाएँगे। संक्षेप में, यहाँ जिस “झंडे” का ज़िक्र है, वह असल में जीत का झंडा है। इस जीत का स्रोत क्या है? यह इसलिए नहीं है कि सेना मज़बूत है, सैनिक बहुत ज़्यादा हैं, या हथियार शक्तिशाली हैं; बल्कि, यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर उनके साथ हैं। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ थे, दाऊद को पूरा भरोसा था कि वह “मोआब,” “एदोम,” और “फिलिस्तिया”—आज के पाठ की 8वीं आयत में बताए गए देशों—के खिलाफ लड़ाइयों में विजयी होगा। नतीजतन, उसने 6वीं आयत में निडर होकर घोषणा की: “मैं आनन्द मनाऊँगा!” दाऊद, जो लड़ाई में जीत की उम्मीद में खुश था—वह जीत पर इतना पक्का भरोसा कैसे रख पाया? ऐसा इसलिए था क्योंकि “परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में बात की है” (आयत 6)। क्योंकि पवित्र परमेश्वर ने उसके साथ रहने का वादा किया था, इसलिए दाऊद खुशी और जीत के भरोसे से भर गया था। भजन 400 के चौथे पद और उसके टेक (refrain) के बोलों पर विचार करें: "शत्रु यीशु के हाथों पूरी तरह पराजित हो चुका है; पूरी पृथ्वी पर केवल प्रभु का झंडा ही शानदार ढंग से चमक रहा है" (पद 4)। "चलो, हम आगे बढ़ें! चलो, हम आगे बढ़ें! केवल प्रभु यीशु के खातिर—यहाँ तक कि अपने प्राणों की भी आहुति देने को तैयार होकर—चलो, हम युद्ध के मैदान में उतरें!" (टेक)।

तीसरा और अंत में, अपनी बहाली के लिए प्रार्थना करने के बाद दाऊद का रवैया कैसा था?

एक शब्द में कहें तो, दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा रखा और साहस के साथ कार्य किया। आज के अंश, भजन 60 के पद 12 पर नज़र डालें: "परमेश्वर के साथ हम वीरतापूर्ण कार्य करेंगे, क्योंकि वही हमारे शत्रुओं को कुचल डालेगा।" इस संदर्भ में "परमेश्वर पर भरोसा रखा" वाक्यांश का क्या महत्व निहित है?

(1) परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ है यह विश्वास रखना कि परमेश्वर—और केवल परमेश्वर ही—वह है जो हमारा नेतृत्व और मार्गदर्शन करता है।

भजन 60:9 पर नज़र डालें: "मुझे गढ़वाले नगर में कौन ले जाएगा? मुझे एदोम तक कौन पहुँचाएगा?" यहाँ, "गढ़वाला नगर" का तात्पर्य "पेट्रा"—एदोम की राजधानी—से है, और यह एक ऐसे किले का वर्णन करता है जिसे जीतना लगभग असंभव है (पार्क यून-सन के अनुसार)। एदोम का किला, जो चट्टान की तरह ठोस था... दाऊद का विश्वास था कि केवल परमेश्वर ही उस किले को गिरा सकता है और स्वयं उसका तथा इस्राएल का नेतृत्व कर सकता है... उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसके सैनिकों को उस नगर में ले जाएगा।

(2) परमेश्वर पर निर्भर रहने का अर्थ है "इम्मानुएल" का विश्वास—अर्थात्, यह मान्यता कि परमेश्वर हमारे साथ है।

भजन 60:10 पर नज़र डालें: "हे परमेश्वर, क्या तूने हमें त्याग नहीं दिया है? और हे परमेश्वर, क्या तू हमारी सेनाओं के साथ युद्ध में नहीं जा रहा है?" जब दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और अपनी विनती प्रस्तुत की, तो उसे याद आया कि कैसे परमेश्वर ने अपने क्रोध में, पहले उसे और उसकी सेना को अस्थायी पराजय का सामना करने दिया था; अतः, उसने पूरी लगन से प्रार्थना की कि इस बार, परमेश्वर निश्चित रूप से उनके साथ रहेगा। इसका कारण यह था कि दाऊद जानता था कि जब तक परमेश्वर उनके साथ युद्ध में नहीं जाएगा, तब तक एक विशाल सेना का होना व्यर्थ होगा। दूसरे शब्दों में, यह समझते हुए कि युद्ध में जीत पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि परमेश्वर वहाँ मौजूद हैं या नहीं, उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति के लिए पूरी लगन से प्रार्थना की।

(3) परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ है यह स्वीकार करना कि मनुष्यों से मिलने वाली मुक्ति व्यर्थ है।

भजन संहिता 60:11 देखें: “संकट में हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है।” परमेश्वर पर भरोसा करने का तात्पर्य है कि कोई मनुष्य पर भरोसा नहीं करता। दाऊद का विश्वास ऐसा था जो मनुष्य पर बिल्कुल भी निर्भर नहीं था, बल्कि पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर था। दाऊद की तरह, हमें भी अपना पूरा भरोसा परमेश्वर पर रखना चाहिए और साहस के साथ कार्य करना चाहिए। हमें अपने विरोधियों से डरने की

कोई आवश्यकता नहीं है। हमें निडर होकर क्रूस का झंडा ऊँचा उठाना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए, और जीत हासिल करने के लिए पाप, संसार और शैतान के विरुद्ध लड़ना चाहिए।

एदोम के विरुद्ध युद्ध में परमेश्वर के क्रोध के कारण अस्थायी हार का अनुभव करने के बाद, दाऊद ने परमेश्वर से बहाली के लिए प्रार्थना की; यह प्रार्थना मुक्ति और जीत के प्रति उनके पक्के भरोसे पर आधारित थी। इसके अलावा, उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करने और साहस के साथ कार्य करने का दृढ़ निश्चय किया। हमें भी—बिल्कुल दाऊद की तरह—पूरी लगन से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, यह कहते हुए: "अब हमारी बहाली कर!" विश्वास के द्वारा, हमें मुक्ति [हासिल करनी चाहिए]... हमें पूरे आत्मविश्वास और जीत के भरोसे के साथ बहाली के लिए प्रार्थनाएँ करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर पर भरोसा करते हुए, हमें साहस के साथ कार्य करना चाहिए।

पुनर्स्थापना के लिए...

परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को—और दूसरों के साथ भी अपने रिश्तों को—फिर से ठीक करने के लिए, हमें ये करना होगा...

(1) ग्रहण करें।

हमें क्या ग्रहण करना चाहिए? हमें परमेश्वर का निर्देश (उसका वचन) ग्रहण करना चाहिए (अय्यूब 22:22)। इसके अलावा, हमें उस निर्देश—उस वचन—को लेना चाहिए और उसे अपने दिलों में बसा लेना चाहिए।

(2) वापस लौटें।

हमें किसके पास वापस लौटना चाहिए? हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास वापस लौटना चाहिए (अय्यूब 22:23a)। ठीक वैसे ही जैसे वह भटका हुआ बेटा अपने पिता के पास वापस लौटा था, हमें भी अपने पिता परमेश्वर के पास वापस लौटना चाहिए।

हटा दें।

हमें क्या हटा देना चाहिए? हमें सारी अधार्मिकता को दूर फेंक देना चाहिए (अय्यूब 22:23b)। अगर हम सचमुच उस परमेश्वर के पास वापस लौटना चाहते हैं जो पूरी तरह से धर्मी है, तो हमें हर तरह की अधार्मिकता को एक तरफ हटा देना चाहिए।

पुनर्स्थापना का अनुभव करने के लिए, हमें परमेश्वर का वचन ग्रहण करना चाहिए और उसके पास वापस लौटना चाहिए; खास तौर पर, हमें सारी अधार्मिकता को दूर फेंकते हुए परमेश्वर की ओर मुड़ना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो बाइबल वादा करती है कि हमारी "पुनर्स्थापना होगी" (अय्यूब 22:23)।

पुनर्स्थापना, ग्रहण करें, वापस लौटें, हटा दें

प्रभु निश्चित रूप से अपने पुनर्स्थापन के वचन को पूरा करेंगे।

प्रभु न सिर्फ़ हमें अपनी बहाली की बात देते हैं, बल्कि वे उस बात को ज़रूर पूरा भी करेंगे—परमेश्वर के अपने समय पर और अपने तरीके से (cf. यहेजकेल 37:14)।

क्या हम, कहीं, अपने ही पुनर्स्थापन में बाधा तो नहीं डाल रहे हैं?

इस समय, जब हमारे होंठ "पुनर्स्थापन" के लिए पुकार रहे हो सकते हैं, तो क्या ऐसा हो सकता है कि हमारे हृदय और हमारे कार्य वास्तव में "पुनर्स्थापन को असंभव बना रहे हों"? (2 इतिहास 36:16) यदि हमारे हृदयों में इस समय परमेश्वर के सामने नम्रता की कमी है—यदि हम हठी और कठोर हृदय वाले हैं, और परमेश्वर के विरुद्ध गंभीर पाप करते हुए भी उनके पास लौटने से इनकार करते हैं; या यदि हम संसार की सभी घृणित प्रथाओं में लिप्त होकर परमेश्वर के मंदिर को अपवित्र कर रहे हैं—और यदि, तब भी जब परमेश्वर लगन से अपने सेवकों को अपना वचन सुनाने के लिए भेजते हैं, हम उनका मज़ाक उड़ाते और उनका अपमान करते हैं, और इस प्रकार परमेश्वर के वचन का ही तिरस्कार करते हैं, तो वास्तव में हम अपने ही पुनर्स्थापन में बाधा डाल रहे हैं (पद 12–16)।

जब हम अपने परिवारों के बारे में सोचते हैं...

1. हम परमेश्वर के महान अनुग्रह और दया की अभिलाषा करते हैं।

2. हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें उद्धार का अनुग्रह प्रदान करे।

3. परमेश्वर हमारे दुखों, घावों और पीड़ा का भी उपयोग करे ताकि हमारे परिवार के हर सदस्य को नम्र बनाया जा सके, और हम केवल प्रभु की ओर देखें और केवल उसी पर अपना भरोसा रखें।

4. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें पूरी तरह से तोड़ दे और हमारे कठोर स्वभाव को चूर-चूर कर दे, जिससे हमारे हृदय कोमल हो जाएँ।

5. हमारी इच्छा है कि परमेश्वर हमारे पापों को उजागर करे, ताकि हम उन्हें पहचान सकें, स्वीकार कर सकें और मान सकें, और यीशु के क्रूस के बहुमूल्य लहू पर भरोसा रखते हुए क्षमा माँग सकें।

6. परमेश्वर हमें क्षमा का आश्वासन प्रदान करे; और उस असीम अनुग्रह और प्रेम के आधार पर, जिसके द्वारा हमें क्षमा किया गया है, हमें एक-दूसरे को क्षमा करने में समर्थ करे, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।

7. हमारी इच्छा है कि परमेश्वर हमारे बच्चों की रक्षा करे और उन पर अपनी नज़र रखे। विशेष रूप से, हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे बच्चों के घायल हृदयों को कोमलता से स्पर्श करे और उन्हें चंगा करे।

8. हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे पारिवारिक संकट को एक अवसर में बदल दे, और हमें उसका महान, उद्धार करने वाला प्रेम—उसकी पूरी गहराई, विस्तार और विशालता के साथ—अनुभव करने का अनुग्रह प्रदान करे।

9. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर—जो हमारे घर का प्रभु है—हमारे परिवार पर शासन करे और राज करे, तथा हमें सभी दुष्ट शक्तियों और शैतान की चालों से बचाए और हमारी रक्षा करे।

10. परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के दिव्य प्रेम के फल अधिकाधिक मात्रा में उत्पन्न करने में समर्थ करे; और वह हमें अपने प्रेम के माध्यम के रूप में उपयोग करे, ताकि हमारे परिवार का हर सदस्य प्रभु के प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम कर सके।

पारिवारिक मुद्दों और संकटों पर मेरे विचार

जब मैं आज कल की घटना पर पीछे मुड़कर देखता हूँ और अपने विचारों को लिखता हूँ, तो मैं कुछ ऐसे बिंदुओं को सामने रखना चाहूँगा जो मेरे मन में आए हैं:

1. चूँकि पारिवारिक मुद्दे बहुत ही निजी होते हैं, मेरा मानना है कि वे अनिवार्य रूप से गहरे भावनात्मक घाव देते हैं और बहुत अधिक तनाव पैदा करते हैं।

2. मेरा मानना है कि पारिवारिक मुद्दे हमें हमारे मानवीय स्वभाव की सीमाओं के प्रति पूरी तरह से जागरूक कर देते हैं।

3. मेरा मानना है कि, ईश्वर के हस्तक्षेप के बिना, पारिवारिक मुद्दे वास्तव में पूरी तरह से निराशाजनक लग सकते हैं।

4. मेरा मानना है कि हमें पारिवारिक संकटों को ईश्वर द्वारा दिए गए अवसरों के रूप में देखना चाहिए—उन्हें विश्वास और धैर्य के साथ सहते हुए—और पूरी तरह से केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए तथा उससे अपनी सच्ची प्रार्थनाएँ करनी चाहिए।

5. मेरा मानना है कि यह "अवसर" उस तरीके में निहित है जिस तरह ईश्वर पारिवारिक संकटों का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए करता है—युगल, माता-पिता और बच्चों, सभी में समान रूप से परिवर्तन लाता है।

6. मेरा मानना है कि इस परिवर्तन के मूल तत्वों में से एक है अहंकार का टूटना और बिखरना; इस प्रक्रिया के माध्यम से, ईश्वर हमें अपना पूर्ण विश्वास और भरोसा केवल उसी पर रखने की ओर ले जाता है, और अंततः हमें ईश्वर की भलाई का अनुभव करने का अवसर देता है—वह ईश्वर जो "सभी चीजों को भलाई के लिए एक साथ काम करने" का कारण बनता है (रोमियों 8:28) (भजन संहिता 34:8)।

7. जैसे-जैसे हम ईश्वर पर अपना विश्वास और अधिक बढ़ाते हैं, हमें यह सचमुच जानने का असीम अनुग्रह और आशीर्वाद प्राप्त होता है कि वह ही ईश्वर है—हम यह सीखना शुरू करते हैं कि "शांत रहो, और जान लो कि मैं ही ईश्वर हूँ" (भजन संहिता 46:10)।

परिवार के बारे में सबक (1)

जब मैं एक बार फिर—इसी पल—परिवार के बारे में उन विचारों, समझ और भावनाओं पर सोच रहा हूँ जो मैंने कल तक इंटरनेट मिनिस्ट्री में सेवा करते हुए इकट्ठा की थीं, तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या कोई खास सबक है जो प्रभु हममें से हर एक को देना चाहते हैं:

1. जब मैं परिवार के बारे में सोचता हूँ, तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

2. पति-पत्नी के बीच का प्यार मुश्किल समय में सबसे ज़्यादा चमकता है।

3. शारीरिक बीमारी की वजह से होने वाला दुख एक जोड़े को रोने वालों के साथ रोने और खुशी से भगवान की तारीफ़ और पूजा करने के लिए एक साथ आने पर मजबूर करता है।

4. मसीह का प्यार हमें बीमारी पर पूरी तरह से जीतने की ताकत देता है।

5. प्रभु का बेहिसाब प्यार मौत से भी कहीं ज़्यादा मज़बूत है।

6. पति (हमारा भाई) और पत्नी (हमारी बहन) कितने खूबसूरत हैं, जो प्रभु के उसी प्यार से ताकत पाकर एक-दूसरे से प्यार करते हैं। 7. जो जोड़ा प्रभु की नज़र में सुंदर है, वह यीशु मसीह के लिए गवाहों के एक समुदाय के तौर पर काम करता है; क्योंकि, इस दुनिया में भी, वे स्वर्ग के राज्य में "मेमने की शादी" को कुछ हद तक दोहराते हैं—यीशु, दूल्हे, और चर्च, उनकी दुल्हन के बीच का मिलन।

(पादरी किम जुन-हक और उनकी पत्नी, शिम सू-यून के बारे में सोचते हुए—जिन्हें मैं प्यार करता हूँ क्योंकि प्रभु उनसे प्यार करते हैं।)

पारिवारिक मुद्दों और संकटों पर मेरे विचार

आज जब मैं कल की बैठक को याद करता हूँ और अपने विचारों को लिखता हूँ, तो मैं कुछ ऐसे बिंदुओं का सारांश प्रस्तुत करना चाहूँगा जो मेरे मन में आए हैं:

1. चूँकि पारिवारिक मुद्दे अत्यंत व्यक्तिगत होते हैं, मेरा मानना है कि वे अनिवार्य रूप से गहरे घाव देते हैं और भारी मानसिक तनाव का कारण बनते हैं।

2. मेरा मानना है कि पारिवारिक मुद्दे हमें हमारी मानवीय प्रकृति की सीमाओं के प्रति पूरी तरह से सचेत कर देते हैं।

3. मेरा मानना है कि, ईश्वर की सहायता के बिना, पारिवारिक मुद्दे वास्तव में पूरी तरह से निराशाजनक प्रतीत हो सकते हैं।

4. मेरा मानना है कि हमें पारिवारिक संकटों को ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए अवसरों के रूप में देखना चाहिए—उन्हें विश्वास और धैर्य के साथ सहन करते हुए—और पूरी तरह से केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए तथा अपनी प्रार्थनाएँ उसके समक्ष प्रस्तुत करनी चाहिए।

5. मेरा मानना है कि यह "अवसर" उस तरीके में निहित है जिस तरह ईश्वर पारिवारिक संकटों का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए करता है—जिससे पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों—सभी में समान रूप से परिवर्तन आता है।

6. मेरा मानना है कि इस परिवर्तन के मूल तत्वों में से एक है 'अहं' (ego) का टूटना और बिखर जाना; इस प्रक्रिया के माध्यम से, ईश्वर हमें प्रेरित करता है कि हम अपना पूर्ण विश्वास और भरोसा केवल उसी पर रखें, और अंततः हमें उसकी भलाई का अनुभव करने का अवसर देता है—वह भलाई जिसके द्वारा वह सभी बातों को मिलकर हमारे भले के लिए काम करने देता है (रोमियों 8:28; भजन संहिता 34:8)।

7. जैसे-जैसे हम ईश्वर पर अपना विश्वास और अधिक बढ़ाते जाते हैं, हमें एक महान अनुग्रह और आशीष प्राप्त होती है—वह आशीष है "शांत हो जाना, और यह जान लेना कि वही ईश्वर है" (भजन संहिता 46:10)।

पारिवारिक संकट

मंगलवार की शाम के 7:13 बजे हैं। चूंकि रात 8:00 बजे मेरे परिवार की प्रार्थना सभा तय है, इसलिए मैंने उपदेश की तैयारी में कुछ समय बिताया; मैंने आज सुबह जिस धर्मग्रंथ के अंश पर विचार किया था, उस पर एक बार फिर मनन किया। अब, थोड़ा सा समय निकालकर, मैं उन बातचीत का संक्षिप्त सारांश लिखना चाहूंगा जो मैंने पिछले हफ्ते दो जोड़ों के साथ की थीं—जिनसे परमेश्वर ने मुझे मिलवाया था—ये ऐसी बातचीत थीं जिनमें हमने एक-दूसरे के सामने अपने दिल खोलकर रख दिए थे। (मैं एक दिन एक पति से मिला, और ठीक अगले दिन, मैं दूसरे पति और उसकी पत्नी से मिला, और उनके साथ लंबी चर्चा की।) मुझे पूरी उम्मीद है कि यह आपके लिए भी कम से कम कुछ हद तक फायदेमंद साबित होगा:

1. हर परिवार—विशेष रूप से, ये दोनों परिवार—संकटों का सामना करते हैं। एक जोड़ा पहले भी एक संकट से गुज़र चुका था, फिर भी अब वे लगातार आने वाली मुश्किलों की एक नई लहर का सामना कर रहे हैं; वहीं दूसरी ओर, दूसरा पति इस समय एक बड़े संकट के बीच फंसा हुआ प्रतीत होता है।

2. जब परिवार पर कोई बड़ा संकट आता है, तो हमें ठीक-ठीक क्या करना चाहिए, और उसे कैसे करना चाहिए? व्यक्तिगत रूप से, मैं इस स्थिति का सामना विश्वास के साथ करता हूं, यह मानते हुए कि "संकट एक अवसर होता है।" हालांकि, मैं यह भी मानता हूं कि जब कोई वास्तव में ऐसे संकट से गुज़र रहा होता है—और स्थिति की वास्तविकता को केवल मानवीय नज़रिए और तर्क की कसौटी पर देखता है—तो उस संकट को सहना और उससे निपटना मानवीय रूप से लगभग असंभव सा महसूस हो सकता है, और सचमुच ऐसा ही लगता भी है।

3. विभिन्न प्रकार के पारिवारिक संकटों में से, जिस संकट को लेकर मुझे सबसे ज़्यादा चिंता होती है—और जिस पर मैं सबसे ज़्यादा ध्यान केंद्रित करता हूं—वह है पति-पत्नी के आपसी रिश्ते में आया

संकट। मैं इसे एक अत्यंत गंभीर संकट मानता हूं, जब पति और पत्नी के बीच किसी भी कारण से मनमुटाव इतना बढ़ जाता है कि वे अब एक साथ रहना ही नहीं चाहते। यह तब और भी गहरा संकट बन जाता है, जब पति-पत्नी शारीरिक रूप से तो एक ही छत के नीचे रह रहे होते हैं, लेकिन उनके दिल और भावनाएं एक-दूसरे से पूरी तरह दूर हो चुकी होती हैं; ऐसा रिश्ता—जिसमें आपसी बेरुखी और स्नेह की पूरी तरह कमी हो—वास्तव में एक बहुत बड़ा संकट होता है।

4. एक और तरह का पारिवारिक संकट वह होता है जो सास के कारण पैदा होता है। पारिवारिक संकटों में, जिस संकट पर मेरा ध्यान सबसे ज़्यादा जाता है—वैवाहिक संकटों के बाद दूसरे नंबर पर—वह है घर में होने वाली वह बड़ी उथल-पुथल जो पति की माँ (या, पत्नी के नज़रिए से, उसकी सास) की वजह से पैदा होती है। ऐसी भारी मुश्किलों के बीच, जिस इंसान की मुझे सबसे ज़्यादा चिंता होती है, वह बहू (मसीह में बहन) नहीं, बल्कि बेटा (उसका पति) होता है। पत्नी के मुकाबले पति की चिंता मुझे ज़्यादा इसलिए होती है, क्योंकि मेरा मानना है कि—अगर वह ऐसा इंसान है जो सचमुच अपने विश्वास के दायरे में रहकर सोचता और काम करता है—तो उसके लिए यह देखना एक असहनीय पीड़ा होगी कि उसकी अपनी माँ की वजह से, उसकी अपनी प्यारी पत्नी गहरे ज़ख्मों, दर्द और आँसुओं से गुज़र रही है। फिर भी, भले ही उसके मन में अपनी माँ से पूरी तरह रिश्ते तोड़ लेने का विचार आए, वह ऐसा कर नहीं सकता; नतीजतन, वह एक बहुत बड़ी दुविधा से जूझ रहा होगा: कि वह कैसे समझदारी से प्रभु में अपनी माँ का आदर करे, और साथ ही अपनी प्यारी पत्नी से—जो उसके साथ "एक तन" है—वैसे ही प्यार करे, जैसे यीशु कलीसिया से प्यार करते हैं।

5. खास तौर पर, अगर शादी से पहले कुछ ऐसी घटनाएँ हुई हों जिनमें सास ने न सिर्फ़ पत्नी को, बल्कि उसके माता-पिता—उसके अपने पिता और माँ—को भी गहरे ज़ख्म दिए हों, तो मैं सोच सकता हूँ कि जब पति अपनी पत्नी के गहरे ज़ख्मों और आँसुओं को देखता होगा, तो उसका दिल कितनी भारी तकलीफ़ और पीड़ा से भर जाता होगा। यह देखते हुए कि वे इतने गहरे ज़ख्मों, दर्द और आँसुओं को सहने के बाद ही शादी कर पाए—जो अपने आप में एक बड़ी बात है—जब मैं देखता हूँ कि आज

भी यह जोड़ा सास की वजह से इतनी बुरी तरह जूझ रहा है, तो मैं इस नतीजे पर पहुँचे बिना नहीं रह पाता कि सास की वजह से पैदा हुआ यह घरेलू संकट सचमुच एक बहुत गंभीर मामला है।

6. मैं दिल से आभारी हूँ कि, जब यह जोड़ा आपस में सीधे तौर पर संवेदनशील बातचीत करने में असमर्थ महसूस कर रहा था (पति ने मुझे बताया था कि वह अपनी पत्नी से ऐसी बातों पर चर्चा करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहा था), तब प्रभु ने कृपा करके मुझे एक माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया, ताकि वे सचमुच अपने दिल की बात एक-दूसरे से कह सकें और आपस में संवाद कर सकें। (मेरा हमेशा से यह मानना रहा है कि काउंसलिंग के संदर्भ में, मेरी मुख्य भूमिका पति-पत्नी के बीच बातचीत को आसान बनाना है, ताकि वे मेरे माध्यम से एक-दूसरे से बात कर सकें।)

7. यदि पत्नी के नज़रिए से, उसकी सास का व्यवहार इतना ज़्यादा अजीब है कि वह उन्हें एक ऐसे "मरीज" के तौर पर देखती है जिसे डॉक्टरी इलाज की ज़रूरत है, तो फिर—एक बहू होने के नाते—उससे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वह ऐसी औरत से प्यार करे, उसका आदर करे और उसकी सेवा करे? जब हालात ऐसे थे कि न सिर्फ़ पत्नी—जो मसीह में बहन है—बल्कि पति भी—जो मसीह में भाई है—इस बात से सहमत थे कि सास एक "सामान्य" इंसान नहीं लगती (?), तो मुझे उस जोड़े को क्या सलाह देनी चाहिए थी? जब मैंने उनकी बातें सुनीं, तो मुझे सास न सिर्फ़ मानसिक या भावनात्मक रूप से अस्थिर लगीं, बल्कि—कोरियाई चर्च में उनकी *Gwon-sa* (डीकनेस) की हैसियत को देखते हुए—वह मुझे आध्यात्मिक रूप से भी कमज़ोर लगीं। ईश्वर तो दिल देखता है; फिर भी, यदि कोई विश्वासी एक पाखंडी ईसाई है—जैसे कि फरीसी—जो अपने अंदर को संवारने के बजाय बाहरी दिखावे को ज़्यादा अहमियत देता है (और वह जोड़ा अपनी माँ/सास को ठीक वैसा ही दोषपूर्ण मानता था), तो फिर एक बहू ऐसी सास से प्यार कैसे कर सकती है? और एक पति—जो उनका अपना बेटा है—ऐसी माँ का आदर और प्यार कैसे कर सकता है? मेरा मानना है कि यह सचमुच एक बहुत बड़ी चुनौती है।

8. इसलिए, मैंने पति को—जो मसीह में भाई है—यह चुनौती दी कि वह अपने घर के मुखिया के तौर पर प्रभु में अपने विश्वास पर मज़बूती से कायम रहे, और इसके अलावा, ईश्वर से यह बुद्धि माँगे कि वह अपनी माँ का आदर किस तरह से करे जो प्रभु को भी पसंद आए। जहाँ तक उसकी पत्नी—जो मसीह में बहन है—की बात है, तो मैंने उसे यह सलाह दी: हालाँकि उसे अपनी सास की वजह से बहुत ज़्यादा भावनात्मक तकलीफ़ और मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा होगा, फिर भी उसे अपनी मौजूदा भावनाओं से ऊपर उठकर "अगली पीढ़ी" (यानी भविष्य में उस जोड़े के होने वाले बच्चों और नाती-पोतों) के बारे में सोचना चाहिए। चूँकि—जैसा कि उनके पति ने बिल्कुल सही कहा था—"घर का माहौल" सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है, इसलिए मैंने उनसे आग्रह किया कि वे समझदारी से अपने पति का साथ दें और उन्हें मज़बूत बनाएँ, ताकि वे घर में ऐसा माहौल तैयार कर सकें जो प्रभु की नज़र में सुंदर और मनभावन हो।

पारिवारिक संकट के दौरान भी...

मेरा मानना है कि यदि कोई पारिवारिक संकट—चाहे वह कितना भी कष्टदायक क्यों न हो—एक ऐसा माध्यम बन जाए जिसके द्वारा कोई व्यक्ति प्रभु से व्यक्तिगत रूप से मिल पाए, तो उस परिवार द्वारा सहा गया कष्ट वास्तव में सार्थक है।

जब परिवार पर संकट आता है

जब किसी परिवार पर कोई संकट आता है, तो हर सदस्य को—प्रभु में एकचित्त और एकमत होकर, तथा बुद्धि और विश्वास दोनों के साथ—उस संकट को एक अनमोल अवसर में बदलने का प्रयास करना चाहिए: एक ऐसा अवसर, जिसके द्वारा ईश्वर की महिमा की जा सके और उसकी प्रकट महिमा का साक्षी बना जा सके।

परिवार के भीतर प्रेम और घाव

परिवार के भीतर, हमें प्रेम और घाव—दोनों ही मिलते हैं। तथापि, हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि हम धीरे-धीरे प्रेम को—उन घावों की तुलना में, जो हमें मिलते हैं, कहीं अधिक प्रचुरता और गहराई से—ग्रहण करें; ताकि उस निरंतर बढ़ते और गहरे प्रेम के माध्यम से, हम उन चोटों के लिए मरहम पा सकें, जो हमें उन्हीं परिवार के सदस्यों द्वारा दी गई हैं जिन्हें हम सबसे अधिक प्रिय मानते हैं।

क्या पारिवारिक संकट प्रभु के बचाने वाले प्रेम को और भी गहराई से अनुभव करने का एक अवसर है?

कल, जब मैं KakaoTalk के ज़रिए एक साथी विश्वासी के साथ संदेशों का आदान-प्रदान कर रहा था—जो इस समय अपने पारिवारिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना कर रहा है—तो मुझे अचानक एक अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई। कुछ ही देर पहले, जब मैं उस अनुभव पर फिर से विचार कर रहा था, तो मुझे लगा कि मुझे इसे लिख लेना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि यह अंतर्दृष्टि—जो परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि के रूप में है—न केवल उस विश्वासी के जीवन में, बल्कि हम सभी की पारिवारिक सेवकाई में भी प्रभावी ढंग से लागू हो; और इसके परिणामस्वरूप, हम अपने परिवारों में आने वाले संकटों के बीच ही, परमेश्वर के बचाने वाले प्रेम को और भी गहराई से, और भी प्रचुरता से, और भी गहनता से अनुभव करने का आशीष प्राप्त करें।

मेरा मानना है कि हमें प्रभु से इस प्रकार प्रार्थना करने का पूरा अधिकार है: "हे प्रभु, क्या आप हमें अपना प्रेम *इस* विशेष तरीके से नहीं दिखा सकते?" यह बात विशेष रूप से तब सच होती है, जब हम अत्यधिक कठिनाई और संकट के दौर से गुज़र रहे होते हैं; अक्सर हमें ऐसा लगता है कि यदि प्रभु हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर ठीक वैसे ही दें, जैसा हम अपेक्षा करते हैं, तो वे कठिन परीक्षाएँ बहुत आसानी से हल हो जाएँगी—या कम से कम, वे इतनी असहनीय नहीं लगेंगी।

लगभग बाईस वर्ष पहले, जब मेरा पहला बच्चा बीमार पड़ गया और जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहा था, तो मेरी हार्दिक अपेक्षा और प्रार्थना यह थी कि प्रभु चमत्कारिक रूप से मेरे बच्चे को चंगा कर देंगे और उसके प्राण बचा लेंगे। फिर भी, मेरी उन प्रार्थनाओं और अपेक्षाओं के विपरीत, मेरा बच्चा मृत्यु के और भी करीब पहुँचता गया। शायद मैंने मन ही मन सोचा होगा: "हे प्रभु, क्या आप हमारे बच्चे को बचाकर, मेरी पत्नी और मुझे अपना प्रेम प्रदर्शित नहीं कर सकते थे?" अंततः, मेरा बच्चा मेरी ही गोद में स्वर्ग सिधार गया। ऐसे में, मैं

प्रभु के प्रेम को कैसे अनुभव कर सकता था? अपने बच्चे का अंतिम संस्कार करने के बाद, मेरी पत्नी और मैं, उसके अस्थि-कलश को लेकर एक नाव में सवार हुए, ताकि उसकी अस्थियों को जल में प्रवाहित कर सकें। जब हम वापस लौट रहे थे, तब पवित्र आत्मा ने मेरे हृदय में प्रबलता से कार्य किया; और मुझे प्रभु के उस अद्‌भुत और विस्मयकारी बचाने वाले प्रेम की स्तुति करने के लिए सामर्थ्य प्रदान किया (भजन संहिता 63:3)। मई 1987 में प्रभु के उस उद्धार करने वाले प्रेम का अनुभव करने के बाद—जब मुझे अपने चर्च की कॉलेज मिनिस्ट्री के साथ एक रिट्रीट के दौरान उनका बुलावा मिला था (यूहन्ना 6:1–15)—तब से मैंने उस प्रेम को और भी अधिक विशालता और गहराई के साथ अनुभव किया है (इफिसियों 3:18–19)। इसलिए, मैं प्रभु से यह प्रार्थना करना चाहता हूँ: "हे प्रभु, मुझसे मेरी अपनी इच्छा के अनुसार प्रेम न कर, बल्कि कृपया अपनी इच्छा के अनुसार मुझसे प्रेम कर" (तुलना करें: मत्ती 26:39)। इस प्रार्थना को करने की मेरी इच्छा का कारण यह है कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि प्रभु की इच्छा के अनुसार—न कि मेरी अपनी इच्छा के अनुसार—प्रेम पाना ही सबसे बड़ा आशीर्वाद है; क्योंकि वही वह हैं जो मुझसे सबसे अधिक गहराई से प्रेम करते हैं (यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:32), मुझे सबसे अधिक निकटता से जानते हैं (भजन संहिता 139), और हमेशा मुझे वह प्रदान करना चाहते हैं जो वास्तव में मेरे लिए सबसे उत्तम है।

मैं असली बनना चाहता हूँ—भले ही इसका मतलब मुश्किल से गुज़रना हो।

यह मुश्किल...

...हमारे लिए असली ईसाई के तौर पर स्थापित होने, हमारे परिवारों के असली ईसाई परिवार बनने, और हमारे चर्च के लिए एक सच्चा प्रभु-केंद्रित चर्च बनने का मौका बने।

माता-पिता से मिले नकारात्मक प्रभाव

कुछ हफ़्ते पहले, मैं Koreatown के एक रेस्टोरेंट में अपने एक भाई से मिला, और खाने के दौरान, हमारी आपस में बहुत ही ईमानदारी भरी और लंबी बातचीत हुई। खाने के बाद, हम अपनी बातचीत जारी रखने के लिए एक कोरियन कॉफ़ी शॉप में चले गए; जब मैं उसे बोलते हुए सुन रहा था, तो मैंने सुझाव दिया कि हमारे लिए दोबारा मिलना फ़ायदेमंद रहेगा—इस बार, उसकी पत्नी भी हमारे साथ होगी। मैंने यह सुझाव इसलिए दिया क्योंकि मुझे लगा कि उसकी पत्नी के मन में शायद अतीत में उसके अपने माता-पिता द्वारा दिए गए भावनात्मक घाव अभी भी मौजूद हैं। नतीजतन, कल दोपहर—रविवार को—मैं उस भाई और उसकी पत्नी से मिला, और एक बार फिर, हमारी आपस में खुलकर और लंबी बातचीत हुई। फिर, आज सुबह, मेरी पत्नी और मैंने कल की मुलाक़ात के दौरान उठे विषयों पर चर्चा की, जिससे हमारी अपनी शादी के साथ-साथ हमारे प्यारे बेटे, Dylan, और उसकी पत्नी की शादी के बारे में भी एक सार्थक बातचीत हुई। इन सभी बातचीत के सार पर एक बार फिर से विचार करते हुए, मैं अपने विचारों को एक-एक करके यहाँ लिखना चाहूँगा:

1. जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमें निस्संदेह अपने माता-पिता से सकारात्मक प्रभाव मिलते हैं; फिर भी, साथ ही, हमें उतनी ही निश्चितता के साथ नकारात्मक प्रभाव भी मिलते हैं।

2. हालाँकि, हम अक्सर उन नकारात्मक प्रभावों से अनजान रहते हैं जिन्हें हमने अपने माता-पिता से ग्रहण किया है—या अगर हमें थोड़ा-बहुत पता भी होता है, तो भी हम उनके महत्व को पूरी तरह से नहीं समझ पाते। नतीजतन, कई बार ऐसा होता है जब हम अनजाने में ठीक वैसे ही बोलते और व्यवहार करते हैं जैसा हमारे माता-पिता करते थे।

3. आखिरकार, अपने जीवनसाथी के साथ होने वाले झगड़ों से पैदा होने वाले दर्द और तकलीफ़ के ज़रिए, और ईश्वर की कृपा से, हम उन नकारात्मक प्रभावों को पहचान पाते हैं—कम से कम कुछ हद तक—जो हमें अपने माता-पिता से विरासत में मिले थे।

4. यह बात उन पतियों या पत्नियों के लिए विशेष रूप से सच लगती है जो "दूसरों को खुश करने वाले" (people-pleasers) स्वभाव के होते हैं। वैवाहिक झगड़ों से पैदा होने वाले गहरे चिंतन और संघर्ष के बीच, वे शायद अपने भीतर झाँकने और आत्म-चिंतन करने के लिए समय निकाल पाते हैं—एक ऐसी प्रक्रिया जिसके ज़रिए वे अंततः उन नकारात्मक प्रभावों को पहचान पाते हैं जो उन्हें अपने माता-पिता से मिले थे। विशेष रूप से, यदि जीवनसाथी—चाहे पति हो या पत्नी—एक "टालने वाला" (avoider) व्यक्ति हो (यानी कोई ऐसा व्यक्ति जो अत्यधिक स्वतंत्र हो), तो उसकी बेबाकी से और बिना सोचे-समझे बोलने की प्रवृत्ति—बिना किसी गहरी सोच-विचार या परवाह के—उस जीवनसाथी पर गहरा असर डाल सकती है जो "दूसरों को खुश करने वाला" स्वभाव का है। इन सीधी-सादी बातों के असर से, दूसरों को खुश करने वाला जीवनसाथी अक्सर गहरी आत्म-निरीक्षण और आत्म-परीक्षा करने पर मजबूर हो जाता है; और ऐसा करके वह—कम से कम कुछ हद तक—उन नकारात्मक प्रभावों को पहचान और स्वीकार कर पाता है, जो उसे अपने ही माता-पिता से मिले थे।

5. लेकिन, यहाँ एक कुछ गंभीर समस्या खड़ी हो जाती है: दूसरों को खुश करने वाला जीवनसाथी, अब जब उन नकारात्मक पैतृक प्रभावों को पहचान चुका होता है, तो अपने साथी के प्रति अत्यधिक अपराध-बोध से दबकर, उस साथी को खुश करने की जी-तोड़ कोशिश करता है (शायद यह सोचकर कि ऐसा करना ही उसके लिए खुशी पाने का एकमात्र तरीका है)। नतीजतन, इस बात का एक स्पष्ट खतरा रहता है कि वह अपने जीवनसाथी को "अपने दिल के सिंहासन" पर कब्ज़ा करने दे—वह सिंहासन जो असल में राजा के लिए आरक्षित है। शादी से पहले, इस सिंहासन पर माता और/या पिता का कब्ज़ा था, जिन्होंने उस पर इतना गहरा नकारात्मक प्रभाव डाला था; लेकिन शादी के बाद, उसने बस उन माता-पिता की जगह अपने जीवनसाथी को बिठा दिया है। मेरी नज़र में, यह एक गंभीर समस्या है, क्योंकि उस सिंहासन—यानी दिल के सिंहासन—का एकमात्र असली हकदार

तो प्रभु है, जो राजाओं का भी राजा है। अगर प्रभु के बजाय, कोई साधारण इंसान—चाहे वह माता-पिता हों या जीवनसाथी—उस सिंहासन पर बैठ जाता है, तो ऐसा करना मूर्ति-पूजा के बराबर है।

6. इस हद तक, माता-पिता या जीवनसाथी बहुत आसानी से हमारे दिलों में मूर्ति का रूप ले सकते हैं। इसके अलावा, यह मूर्ति-पूजक मानसिकता सिर्फ़ माता-पिता की पूजा से जीवनसाथी की पूजा में बदलने पर ही खत्म नहीं हो जाती; इसमें आगे और बढ़ने का भी बड़ा खतरा रहता है—जिससे इंसान अपने ही बच्चों को मूर्ति की तरह पूजने लगता है, और उनसे अत्यधिक, यहाँ तक कि हद से ज़्यादा प्यार करने लगता है।

7. फिर, परमेश्वर के असीम प्रेम और कृपा से—और यहाँ तक कि किसी बड़े पारिवारिक संकट के बीच भी—हमें अपने अंदर झाँकने और आत्म-परीक्षा करने की प्रेरणा मिलती है। ऐसा करने पर, हमें उस पाप का एहसास होता है और हम उसका प्रायश्चित करते हैं, जिसमें हमने परिवार के किसी ऐसे सदस्य को मूर्ति की तरह पूजा था जिससे हम बहुत ज़्यादा या हद से ज़्यादा प्यार करते थे; इस तरह, हम अपने दिलों से सारी मूर्तियों को निकाल फेंकते हैं, अपने दिल का सिंहासन प्रभु को सौंप देते हैं, और उनका स्वागत करते हैं ताकि वे हमारे अंदर राज कर सकें।

8. उसके बाद, हम विनम्रतापूर्वक अपना नियंत्रण प्रभु को सौंप देते हैं, उन्हें अपने जीवन को चलाने देते हैं, और विश्वास के साथ, हम अपने वैवाहिक रिश्ते को भी उन्हें ही सौंप देते हैं, और उन्हें ही इसकी बागडोर संभालने के लिए आमंत्रित करते हैं।

9. ऐसा करते हुए, जब हम विश्वास की नज़रों से देखते हैं, तो हम यह अनुभव करते हैं कि प्रभु कितने अद्‌भुत तरीकों से हमारी सेवा करते हैं—हम दोनों, जिनका स्वभाव एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है (एक "दूसरों को खुश करने वाला" और दूसरा "टालने वाला")—हमें अपनी-अपनी कमज़ोरियों और अपर्याप्तताओं के क्षेत्रों में एक-दूसरे का पूरक बनने और एक-दूसरे को मज़बूत करने में सक्षम बनाते हैं।

10. इसके अलावा, जैसे-जैसे हम एक जोड़े के रूप में प्रभु के हमारे प्रति प्रेम की गहराई का अनुभव करते हैं, हम धीरे-धीरे अपने माता-पिता के नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति पाते हैं; इस तरह, धीरे-धीरे, हमारी शादी एक ऐसे रिश्ते के रूप में विकसित होती है जो पूरी तरह से प्रभु पर केंद्रित होता है।

एक सांसारिक माँ—जो यीशु जैसी नहीं है—अपने बच्चों को जो प्यार दिखाती है, वह किसी भी तरह से उन्हें प्रभु के प्यार से प्यार करने जैसा नहीं है!

यीशु के शिष्यों में दो भाई थे, जिनका नाम याकूब और यूहन्ना था। उनके पिता ज़ेबेदी थे, और उनकी माँ याकूब और यूहन्ना को यीशु के पास ले आई; वह उनके सामने घुटनों के बल बैठ गई और अपनी इच्छा के बारे में एक विनती की। उसने यीशु से पूछा, "कृपा करके ऐसा करें कि आपके राज्य में, मेरे इन दो बेटों में से एक आपके दाहिने हाथ बैठे और दूसरा आपके बाएं हाथ" (मत्ती 20:20–21, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)। याकूब और यूहन्ना की माँ ने यीशु से ऐसी विनती क्यों की? बेशक, उसने यह विनती इसलिए की क्योंकि वह सचमुच नहीं समझती थी कि वह यीशु से क्या मांग रही है (पद 22, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*); हालाँकि, मेरा मानना है कि उसका अंतिम इरादा बस अपने दो बेटों को महान बनते हुए और सर्वोच्च दर्जा प्राप्त करते हुए देखना था। परिणामस्वरूप, उसकी बातें सुनकर—और उन दस अन्य शिष्यों को संबोधित करते हुए जो नाराज़ थे (उसके बेटों, याकूब और यूहन्ना को छोड़कर)—यीशु ने कहा, "तुम में से जो कोई महान बनना चाहता है, उसे दूसरों का सेवक बनना होगा, और जो कोई पहला बनना चाहता है, उसे दूसरों का दास बनना होगा" (पद 26–27, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)। यीशु सेवा करवाने नहीं, बल्कि सेवा करने आए थे (पद 28); फिर भी, ऐसा लगता है कि याकूब और यूहन्ना की माँ चाहती थी कि उसके दो बेटे ही सेवा पाने वाले बनें। एक सांसारिक माँ—जो यीशु जैसी नहीं है—अपने बच्चों को जो प्यार दिखाती है, वह किसी भी तरह से उन्हें प्रभु के प्यार से प्यार करने जैसा नहीं है!

अभी कुछ ही देर पहले, मैं मुख्य रूप से मत्ती अध्याय 20 के अंश पर मनन कर रहा था; मैंने इन पदों के आधार पर एक संक्षिप्त भक्तिपूर्ण चिंतन लिखा और उसे विभिन्न जगहों पर साझा किया। उसके बाद, मुझे उन विशिष्ट चिंतन बिंदुओं में और भी गहराई से और विशेष रूप से उतरने की इच्छा हुई, जिन्हें मैंने ऊपर

उस छोटे से भक्तिपूर्ण लेख में रेखांकित किया था। शायद इसका कारण इस बात में छिपा है—जैसा कि ऊपर दिए गए भक्ति-लेख के शीर्षक से पता चलता है—कि मैं इस सच्चाई को बहुत ज़्यादा महत्व देता हूँ: "एक सांसारिक माँ का अपने बच्चे के लिए प्यार—ऐसा प्यार जो यीशु के प्यार जैसा नहीं है—किसी भी तरह से उस प्यार जैसा नहीं है जो प्रभु के प्यार से बच्चे को दिया जाता है!"

व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि—ईश्वर के प्यार के बाद—सबसे महान प्यार एक माँ का प्यार होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं एक ऐसा बेटा हूँ जिसे अपनी माँ का प्यार बहुत ज़्यादा, गहरा और भरपूर मात्रा में मिला है—ऐसा प्यार जो मुझे आज भी मिल रहा है। खासकर जब से वह अस्सी साल की हुई हैं, मेरी माँ अक्सर मुझे कहानियाँ सुनाती हैं: कि मेरे जन्म के समय उन्हें कितनी तकलीफ़ हुई थी—उन्हें घर पर ही एक दाई की मदद से मुझे जन्म देना पड़ा था क्योंकि मेरा सिर सामान्य से ज़्यादा बड़ा था—और मेरे बचपन में उन्होंने कितनी मुश्किलें सहीं, जैसे कि जब भी मैं बीमार पड़ता था, तो मुझे एक दूर के अस्पताल ले जाने के लिए मुझे अपनी पीठ पर लादकर दो बार बसें बदलनी पड़ती थीं। इसलिए, हर मई में—मदर्स संडे (यहाँ अमेरिका में, मदर्स डे और फादर्स डे अलग-अलग मनाए जाते हैं) पर—जब भी मैं ईश्वर की आराधना करता हूँ और *न्यू हिमनल* से भजन 579 गाता हूँ, जिसका शीर्षक है "एक माँ का असीम प्यार," तो मैं अक्सर बहुत भावुक हो जाता हूँ। मैं यहाँ पहले और दूसरे छंद के बोल साझा कर रहा हूँ: (छंद 1) "एक माँ का असीम प्यार—कितना अनमोल और दुर्लभ है! वह प्यार हमेशा मुझे अपनी गोद में समेटे रहता है। जब मैं रोता हूँ, तो मेरी माँ प्रभु से प्रार्थना करती हैं; और जब मैं खुशी से हँसता हूँ, तो वह ईश्वर की स्तुति में अपनी आवाज़ उठाती हैं। (छंद 2) बाइबल के हर उस छंद में जिसे वह सुबह-शाम पढ़ती थीं—जिन पर आज भी उनके स्पर्श के निशान हैं—मुझे उन्हीं की छवि दिखाई देती है। 'जो कोई भी विश्वास करेगा, उसे अनंत जीवन मिलेगा'—ये अनमोल शब्द जो उन्होंने मुझे ज़ुबानी याद करवाए थे, अब मेरी ताक़त बन गए हैं।" मेरी माँ की जो छवि मैं आज भी नहीं भूल पाता, वह यह है कि जब मैं उनके घर जाता था, तो वह डाइनिंग टेबल पर बैठी रहती थीं—बाइबल की नकल उतारती रहती थीं, और अंत में अपना सिर टेबल पर रखकर सो जाती थीं। एक और याद जो मेरे दिल के बहुत करीब है, वह उस समय की है जब उन्हें एम्बुलेंस से ले जाया गया था

और वे इमरजेंसी रूम में थीं; जब हम दोनों—सिर्फ़ हम दो—एक साथ ईश्वर की आराधना कर रहे थे, तो मैंने उनसे उनकी पसंदीदा बाइबल की आयत सुनाने को कहा: यशायाह 41:10। मुझे साफ़-साफ़ याद है कि तब उन्होंने ये शब्द कहे थे: "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ; घबराओ मत, क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें मज़बूत करूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा; मैं तुम्हें अपने नेक दाहिने हाथ से थामे रहूँगा।" हालाँकि मेरी माँ की अनगिनत और भी यादें मेरे दिल में बसी हैं, लेकिन अगर मुझे सिर्फ़ एक और याद साझा करनी हो, तो वह उनकी मेरे सामने रोने की तस्वीर होगी। मैंने उनके उन आँसुओं को अपने दिल के अंदर एक शीशी में सहेजकर रखा है [संदर्भ: "मेरे आँसुओं को अपनी शीशी में रख" (भजन संहिता 56:8)]। साथ ही, मैं यह बात कभी नहीं भूल सकता कि मैंने अपनी माँ के दिल को कितनी गहरी तकलीफ़ पहुँचाई थी—कि मैं ही वह इंसान था जिसकी वजह से उनके वे आँसू बहे थे।

मुझे लगता है कि जिन घटनाओं के बारे में मुझे असल में पता है—यानी वे समय जब मैंने अपनी माँ को रुलाया—वे शायद असलियत का सिर्फ़ एक प्रतिशत ही हैं। बाकी निन्यानवे प्रतिशत की बात करें तो—वे अनगिनत दूसरे मौके जब मैंने उनके दिल को दुख पहुँचाया और उन्हें रुलाया—उनके बारे में मुझे आज भी कुछ पता नहीं है; मैं बस अंदाज़ा ही लगा सकता हूँ। ऐसा ही एक अंदाज़ा यह है कि मेरी किशोरावस्था के दौरान, उनके बेपनाह प्यार से आज़ाद होने की अपनी ज़बरदस्त कोशिश में, मैंने अपने शब्दों और कामों से उन्हें गहरे ज़ख्म दिए—ऐसे ज़ख्म जिनकी वजह से शायद वे अकेले में, मेरी नज़रों से दूर, बहुत देर तक और फूट-फूटकर रोई होंगी। उस समय, मुझे अपनी माँ का प्यार—जो मेरी नज़र में हद से ज़्यादा गहरा लगता था—एक बहुत बड़ा बोझ लगता था। मुझे उनकी लगातार चिंता करना, उनकी कभी न खत्म होने वाली घबराहट और उनकी लगातार की जाने वाली रोक-टोक बिल्कुल पसंद नहीं थी। संक्षेप में कहूँ तो, मैं आज़ाद होना चाहता था—उनके हद से ज़्यादा प्यार और ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षा से छुटकारा पाना चाहता था। इसलिए, उनसे अलग होने की अपनी ही नासमझी भरी कोशिश में, मैंने उनके लिए बहुत सारे कड़वे और सीधे-सीधे शब्द इस्तेमाल किए। ज़रा मेरी माँ के नज़रिए से सोचिए, जब वे उन दुख देने वाले शब्दों को सुन रही थीं: मेरे जन्म के समय उन्होंने बहुत तकलीफ़ें सहीं; कोरिया में मुझे पालने-पोसने में उन्होंने बहुत मुश्किलें

झेलीं—जहाँ, क्योंकि मैं अक्सर बीमार रहता था, वे अपने तीन बच्चों में से सिर्फ़ मुझे ही अंडे (जो उस समय एक बहुत खास चीज़ मानी जाती थी) खाने को देती थीं; और जब हम अमेरिका आकर बस गए—जहाँ मैं अंग्रेज़ी का एक भी अक्षर जाने बिना पहुँचा था—तब भी उन्होंने मुझे देखा था, बस कुछ ही दिनों बाद, स्कूल के टेस्ट के लिए बीस शब्द याद करने की कोशिश करते हुए, मैं बेकाबू होकर रो रहा था—यह एक ऐसी याद है जो आज भी उनके दिल में ताज़ा है। उनके दिल पर क्या बीती होगी? फिर भी, मेरे अपने नज़रिए से, मेरी माँ का असीम और बिना शर्त वाला प्यार मेरे लिए इतना भारी बोझ बन गया था कि मेरी एकमात्र इच्छा उससे आज़ाद होना थी—ताकि मैं अपने फ़ैसले खुद ले सकूँ और अपनी शर्तों पर ज़िंदगी जी सकूँ। इसके अलावा, मेरी दिली तमन्ना थी कि मेरी माँ मेरे बारे में इतनी ज़्यादा चिंता करना और मेरे पीछे इतना ज़्यादा परेशान होना बंद कर दें। इसकी वजह बहुत सीधी-सादी थी: मुझे *उनकी* सेहत की चिंता थी। मुझे आज भी अपनी माँ का वह दृश्य साफ़-साफ़ याद है—जब मैं प्राइमरी स्कूल में था, तब मेरी माँ अपनी चालीस की उम्र के शुरुआती दौर में थीं—कि कैसे उन्हें स्ट्रोक आया और वे गिर पड़ीं, और फिर एक थेरेपिस्ट (चाहे वह पारंपरिक कोरियाई दवा के डॉक्टर हों या चर्च के कोई बड़े-बुज़ुर्ग, मुझे ठीक से याद नहीं) ने उनके पूरे शरीर पर एक्यूपंक्चर की सुइयाँ लगाईं। अपनी माँ के बारे में सोचते हुए—जो उस समय से लेकर आज तक लगातार ब्लड प्रेशर की दवा ले रही हैं—मैंने हमेशा यही चाहा है—और सच कहूँ तो, आज भी यही चाहता हूँ—कि वे अपनी सेहत को मेरी सेहत से ज़्यादा अहमियत दें।

मैं अपनी माँ और अपने बीच के रिश्ते पर यह सच्ची बात इसलिए साझा कर रहा हूँ: हालाँकि मेरा मानना है कि एक माँ का प्यार ही इंसानी रिश्तों में भगवान के प्यार के सबसे करीब होता है, लेकिन मेरा यह भी मानना है कि अगर यह विशाल और अनमोल मातृत्व-प्रेम भगवान के प्यार को नहीं दर्शाता, तो यह बच्चे के लिए फ़ायदे के बजाय नुकसान का सबब बन जाता है। ऐसे नुकसानदेह मातृत्व-प्रेम की गंभीरता को बहुत ही निजी तौर पर महसूस करने के बाद—और इस स्थिति को गहरे दुख के साथ देखते हुए—मैंने आज यह लेख लिखने का फ़ैसला किया है। इस शीर्षक के तहत, "एक सांसारिक माँ का अपने बच्चे के लिए प्यार—जो यीशु जैसा नहीं है—किसी भी तरह से बच्चे को प्रभु के प्यार से प्यार करने जैसा नहीं है!" मैं सबसे पहले

धर्मग्रंथों पर आधारित एक छोटा सा चिंतन पेश करूँगा, और उसके बाद अपने दिल पर भारी पड़ रहे गंभीर विचारों को व्यवस्थित करके शब्दों में पिरोने की कोशिश करूँगा:

1. सबसे पहले और सबसे ज़रूरी बात—जैसा कि मेरे इस छोटे से चिंतन के शीर्षक में कहा गया है—मैं "एक सांसारिक माँ जो यीशु जैसी नहीं है" को एक बहुत बड़ी समस्या मानता हूँ। बेशक, "एक सांसारिक बच्चा जो यीशु जैसा नहीं है" भी एक बड़ी समस्या है; हालाँकि, मेरी नज़र में, वह सांसारिक माँ जो यीशु जैसी नहीं है, वह उस बच्चे से भी कहीं ज़्यादा बड़ी समस्या खड़ी करती है।

2. भले ही कोई माँ यह दावा करे कि वह यीशु में विश्वास करती है—और चर्च के भीतर सेवा का कोई पद भी संभालती हो—लेकिन अगर उसके बच्चे उसे देखकर यह सोचें, "भले ही मेरी माँ चर्च की एक पदाधिकारी हैं जो यीशु में विश्वास करने का दावा करती हैं, लेकिन मुझे पक्का नहीं पता कि वह सचमुच उन पर विश्वास करती हैं और उन पर भरोसा करती हैं," तो मेरा मानना है कि उसके बच्चों का उसके विश्वास की सच्चाई पर सवाल उठाना पूरी तरह से सही होगा। भले ही चर्च समुदाय या साथी विश्वासियों की नज़र में उसका विश्वास कितना भी अनुकरणीय क्यों न लगे, लेकिन अगर वह घर पर हर दिन और हर पल अपने बच्चों को लेकर चिंता, फिक्र और आशंका में डूबी रहती है, तो उनके नज़रिए से यह पूरी तरह से समझ में आता है कि वे ऐसा क्यों कह सकते हैं, "मुझे हैरानी होती है कि क्या मेरी माँ सचमुच प्रभु में विश्वास करती है।"

3. यह बात तब और भी ज़्यादा सच हो जाती है, जब ऐसी माँ अपने बच्चों से हद से ज़्यादा प्यार करती है—ठीक वैसे ही जैसे याकूब और यूहन्ना की माँ करती थी—और सबसे बढ़कर यह चाहती है कि उसके बच्चे "महान बनें और सर्वोच्च पद प्राप्त करें।" अगर वह इतनी शिद्दत से चाहती है कि उसके बच्चे सांसारिक सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ें और सबसे ऊँचे पदों पर पहुँचें—इस हद तक कि वह परमेश्वर के पवित्र स्थान में प्रवेश करती है—ठीक वैसे ही जैसे शमूएल की माँ हन्ना ने किया था—और परमेश्वर पिता से यह कहते हुए विनती करती है, "हे परमेश्वर, कृपया मेरे बच्चों को सिर बना, पूँछ कभी नहीं" (तुलना करें: व्यवस्थाविवरण 28:13, *द कंटेम्पररी बाइबल*)—तो मेरा मानना है

कि उसके बच्चे कभी भी अपनी माँ की इस अतृप्त महत्वाकांक्षा को संतुष्ट नहीं कर पाएँगे। इसके अलावा, उसके बच्चों को शायद इस बात का गहरा अपराधबोध सताएगा कि वे कभी भी अपनी माँ को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर पाए; इस नकारात्मक मानसिकता में फँसकर कि "मैं कितनी भी कोशिश क्यों न कर लूँ, मैं अपनी माँ को कभी खुश नहीं कर सकता," वे शायद कम आत्म-सम्मान और हीनता की भावना से जूझते रहेंगे।

4. मेरा मानना है कि जो बच्चे अपनी खुद की अहमियत को इतना कम आँकते हैं—जो खुद को तुच्छ और बेकार समझते हैं—वे मानसिक और भावनात्मक रूप से अपनी माँ से बँधे होते हैं, जिससे उनके साथ हेरफेर होने और उन पर नियंत्रण किए जाने का खतरा काफी बढ़ जाता है। वह बच्चा अपनी माँ की स्वीकृति पाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा; फिर भी, वह जितनी ज़्यादा कोशिश करेगा, वह अतृप्त माँ उतनी ही ज़्यादा ज़िद करेगी, "तुम और भी बेहतर कर सकते हो," और यह चाहेगी कि बच्चा सांसारिक सफलता की सीढ़ियों पर और भी ऊँचा चढ़े। मेरा मानना है कि ऐसी अपेक्षाएँ—जो एक माँ के अत्यधिक प्यार और महत्वाकांक्षा से पैदा होती हैं—एक बच्चे की आत्मा, मन और भावनाओं को पूरी तरह से नष्ट करने की क्षमता रखती हैं।

5. जब मैं ऐसे बच्चों को देखता हूँ जो इतनी गंभीर स्थिति में फँसे होते हैं, तो मैं उनके और उनकी माँओं के बीच के बंधन को एक "ज़हरीला रिश्ता" मानता हूँ—एक ऐसा रिश्ता जो ज़हर से दूषित हो चुका है। एक माँ अपने बच्चों से जितना ज़्यादा प्यार करती है, इस बात का खतरा उतना ही ज़्यादा बढ़ जाता है कि वे बच्चे इस खतरनाक ज़हर से बुरी तरह संक्रमित हो जाएँगे। ये बच्चे धीरे-धीरे मर रहे हैं, अपनी माँओं के सांसारिक किस्म के प्यार के ज़हर से; फिर भी, माँएँ, अपनी तरफ से, पूरी ईमानदारी से मानती हैं—और सचमुच अपने बच्चों से कहती भी हैं—कि वे सबसे बेहतरीन, सबसे ज़्यादा त्याग भरा प्यार दे रही हैं। मैं इसे सचमुच एक दुखद सच्चाई मानता हूँ।

6. क्या माँ और बच्चे के बीच इस ज़हरीले रिश्ते का कोई इलाज है? अगर है, तो वह इलाज क्या हो सकता है? मेरी अपनी राय में, इसका मुख्य इलाज यह है: जो माँएँ अपने बच्चों से इस सांसारिक तरीके से प्यार करती हैं, उन्हें उनसे *कम* प्यार करना सीखना होगा। उन्हें अपनी पूरी ज़िंदगी इस

तीव्र, त्याग भरी भक्ति में झोंकना बंद करना होगा—एक ऐसी भक्ति जिसे वे गलती से पूरी तरह से बच्चे की भलाई के लिए मान बैठती हैं। ऐसा लगता है कि इस मातृ-प्रेम का "इंजन" अक्सर बहुत ज़्यादा बड़ा और बहुत ज़्यादा शक्तिशाली होता है; केवल बच्चे को फायदा पहुँचाने की चाहत से प्रेरित होकर, ये माँएँ इस इंजन को लगातार चालू रखती हैं—प्यार की इस मैराथन दौड़ में इतनी ज़्यादा तेज़ी से दौड़ती हैं कि आखिरकार वे ब्रेक लगाने की क्षमता ही खो बैठती हैं। नतीजतन, भले ही कोई उनसे कहे, "तुम्हें अपने बच्चों से अपने पूरे दिल से, त्याग भरी भक्ति के साथ प्यार करना चाहिए," ऐसा लगता है कि कुछ माँएँ एक ऐसे मोड़ पर पहुँच चुकी हैं जहाँ उन्हें *रुकने* की अनुमति देने वाला आंतरिक तंत्र पूरी तरह से टूट चुका है। इसलिए, मेरा मानना है कि ऐसी माँओं को अपने प्यार की तीव्रता को कम करने के लिए जान-बूझकर प्रयास करना चाहिए। क्योंकि अगर वे ऐसा नहीं करती हैं, तो उनके बच्चों के ज़हर से इतने ज़्यादा प्रभावित होने का खतरा रहता है कि वे निराशा में डूब जाते हैं—एक ऐसे मोड़ पर पहुँच जाते हैं जहाँ वे मौत की कामना करने लगते हैं—या, इसके विपरीत, कड़वाहट से इतने ज़्यादा भर जाते हैं कि वे अपनी ही माँओं से नफ़रत करने लगते हैं।

7. जो माँएँ, अपने बच्चों को अपने प्यार के बोझ तले दम घुटते हुए देखने के बावजूद, उन्हें जाने देने में असमर्थ रहती हैं, उन्हें, पहले कदम के तौर पर, कुछ दूरी बनानी चाहिए—शारीरिक रूप से भी और साथ बिताए गए समय के मामले में भी। उन्हें यह जान-बूझकर करना चाहिए, भले ही शुरू में यह अस्वाभाविक लगे। भले ही ऐसा लगे कि उनके दिल के टुकड़े हो रहे हैं, माँओं को स्वस्थ सीमाएँ तय करनी ही होंगी—भले ही यह केवल अपने बच्चों की भलाई के लिए ही क्यों न हो। विशेष रूप से, जिन माताओं के अपने पतियों के साथ संबंध तनावपूर्ण हैं—और जो परिणामस्वरूप अपना पूरा जीवन अपने बच्चों पर न्योछावर कर देती हैं—उन्हें परमेश्वर के सामने अकेले खड़े होना सीखना चाहिए और, विश्वास के द्वारा, अपने बच्चों को उसकी देखभाल में सौंप देना चाहिए। जिन माताओं के मन में अपने बच्चों के बारे में सोचते समय चिंता बनी रहती है—क्योंकि उनमें परमेश्वर पर विश्वास की कमी है—उन्हें पश्चाताप करना चाहिए। इसका कारण यह है कि अपने बच्चों का पालन-पोषण विश्वास में न करना एक पाप है (देखें रोमियों 14:23)।

8. जिन माताओं को यह एहसास है कि अपने बच्चों के साथ उनके संबंधों में समस्याओं की जड़ बच्चों में नहीं, बल्कि स्वयं उनमें है, उन्हें इन मुद्दों को सुलझाने के लिए परमेश्वर के सामने आना चाहिए। जैसे-जैसे वे ईमानदारी से पश्चाताप की कृपा की तलाश करती हैं, उन्हें अपनी नज़र—विश्वास के द्वारा—केवल यीशु मसीह पर स्थिर करनी चाहिए, जिसे उनके लिए क्रूस पर चढ़ाया गया और जिसने उनके लिए प्राण दिए। जैसे-जैसे वे क्षमा के आश्वासन के साथ पश्चाताप करती हैं, उन्हें धीरे-धीरे इस बात की अपनी समझ को गहरा करने का प्रयास करना चाहिए कि परमेश्वर का प्रेम *उनके* लिए वास्तव में कितना विशाल, अद्‌भुत और शानदार है—भले ही वे अपने बच्चों से प्रेम करना जारी रखती हैं। केवल इसी तरह माताएँ अपने बच्चों से परमेश्वर के अपने प्रेम के साथ प्रेम करने में सक्षम बन सकती हैं।

9. जो माताएँ अपने बच्चों से परमेश्वर के प्रेम के साथ प्रेम करने के प्रयास के लिए समर्पित हैं, वे अपनी स्वयं की शक्ति को एक तरफ रखना सीखती हैं और, इसके बजाय, पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा अपने बच्चों से प्रेम करती हैं। परिणामस्वरूप—पवित्र आत्मा की शिक्षा और उसके द्वारा दिए गए आश्वासन से निर्देशित होकर—वे विश्वास के द्वारा अपने बच्चों को परमेश्वर की देखभाल में सौंप देती हैं, इस सच्चाई पर भरोसा करते हुए कि परमेश्वर उनके बच्चों से उनसे भी कहीं अधिक प्रेम करता है। इस प्रकार, अपने बच्चों की अपनी अलग पहचान के प्रति सम्मान रखते हुए—और यह पहचानते हुए कि उनके बच्चे अब उस उम्र तक पहुँच गए हैं जहाँ वे अपनी पसंद खुद चुन सकते हैं, अपने निर्णय खुद ले सकते हैं, और अपने जीवन की ज़िम्मेदारी खुद उठा सकते हैं—ये माताएँ बुद्धिमानी से उन्हें माता-पिता का घर छोड़कर अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने में सहायता करती हैं।

10. एक बुद्धिमान माँ, जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण है, अपने बच्चों से यीशु के उसी प्रेम के साथ प्रेम करती है—एक ऐसा प्रेम जिसे उसने जाना और संजोया है, जैसे-जैसे परमेश्वर के प्रति उसका अपना प्रेम बढ़ता गया है। इसके अलावा, क्योंकि वह यीशु में अपने विश्वास पर दृढ़ता से टिकी हुई है, वह अपने बच्चों के लिए परमेश्वर से लगातार और बिना रुके प्रार्थना करती है। और जब परमेश्वर उसकी

प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, तो वह अपनी गवाही अपने बच्चों के साथ साझा करती है, ऐसा वह कृतज्ञता और विश्वास से भरे हृदय के साथ करती है। मेरी माँ भी इसी तरह की माँ है।

"माता-पिता द्वारा दिए गए घाव और दर्द... क्या वे ठीक हो सकते हैं?" शीर्षक वाला एक वीडियो सुनने के बाद...

पिछले हफ़्ते, हमारे KakaoTalk चैट ग्रुप—जो हमारी ऑनलाइन मिनिस्ट्री के ज़रिए बना एक समुदाय है—की एक बहन ने इस YouTube वीडियो का लिंक शेयर किया। हालाँकि, अभी कुछ ही देर पहले, इस रविवार दोपहर को, मैं आखिरकार आराम से बैठी और मैंने इसे पूरा सुना। जब मैं डॉ. ओह यून-यंग (मनोचिकित्सा की प्रोफ़ेसर और *Oh Eun-young's Reconciliation* किताब की लेखिका) की बातें सुन रही थी, तो मुझे एहसास हुआ कि—भले ही मैं हर बारीकी को पूरी तरह से न समझ पाई हूँ—फिर भी इसमें कई ऐसे मुद्दे उठाए गए थे जिन पर गंभीरता से सोचने की ज़रूरत थी।

1. सबसे पहले, बचपन में हमें जो घाव मिलते हैं—जो अक्सर हमारे माता-पिता, यानी हमारे सबसे करीबी लोगों द्वारा ही दिए जाते हैं—वे हमारे बड़े होने के बाद भी हमारे जीवन पर गहरा नकारात्मक असर डालते रह सकते हैं। इसके अलावा, इस बात का भी काफ़ी जोखिम रहता है कि हम अनजाने में यही नकारात्मक असर अपने बच्चों पर भी डाल सकते हैं। इसलिए, मेरा मानना है कि इस मुद्दे को सुलझाने के लिए न केवल ईश्वर से प्रार्थना करना ज़रूरी है, बल्कि उनकी दी हुई समझ (wisdom) को भी अपनाना ज़रूरी है—चाहे वह उनके मार्गदर्शन से मिले या डॉ. ओह जैसे विशेषज्ञों की किताबों और सेमिनारों जैसे संसाधनों से—और फिर उस समझ को सक्रिय रूप से अपने जीवन में उतारना चाहिए।

2. जब इसे अमल में लाने की बात आती है—खास तौर पर जब हम अपने माता-पिता (पिता और/या माँ) से उन घावों के बारे में समझदारी और नरमी से बात करने का फ़ैसला करते हैं जो उन्होंने हमारे बचपन में हमें दिए थे—तो हम अक्सर ऐसा एक गहरी चाहत के साथ करते हैं: हम उम्मीद करते हैं कि वे हमारे

दर्द को स्वीकार करेंगे, और इससे भी बढ़कर, वे इस बात को पहचानेंगे और मानेंगे कि असल में उन्हीं की वजह से हमें तकलीफ़ पहुँची थी। मेरी नज़र में, यहाँ सबसे अहम बात यह है: भले ही हमारे माता-पिता वैसी प्रतिक्रिया न दें जैसी हम उम्मीद या अपेक्षा करते हैं, फिर भी हमारे लिए यह कदम उठाना बेहद ज़रूरी है—अपने खुद के भले के लिए। हममें से ज़्यादातर लोग, जब आखिरकार अपना दिल खोलते हैं—और ईश्वर की मदद से अपने माता-पिता के साथ सुलह करने की हिम्मत जुटाते हैं—और बचपन के उन घावों को सामने लाते हैं जो उन्होंने हमें दिए थे ताकि उनके बारे में उनसे बात कर सकें, तो स्वाभाविक रूप से हम यही उम्मीद करते हैं कि वे हमारे दर्द को स्वीकार करेंगे और अपनी ग़लतियों को मानेंगे। हालाँकि, मेरा मानना है कि ऐसी उम्मीदें पालने के बजाय, उन ज़ख्मों को कुरेदने, उनका सीधे सामना करने, और अपने माता-पिता से उनके बारे में हिम्मत से बात करने का काम—चाहे उनकी प्रतिक्रिया कुछ भी हो—अपने आप में ठीक होने की प्रक्रिया में एक बहुत बड़ी मदद है।

3. इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, जब हम अपने दिलों में परमेश्वर से प्रार्थना करते रहते हैं, तो मेरा मानना है कि उस मुकाम तक पहुँचना कहीं ज़्यादा फायदेमंद है जहाँ हम अपने माता-पिता को इसलिए माफ़ न करें कि वे कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, बल्कि इसलिए माफ़ करें क्योंकि परमेश्वर ने यीशु मसीह के ज़रिए हमें जिस अपार प्रेम से माफ़ किया और बचाया है, उसके प्रति हम कृतज्ञ हैं। मैं इसे अपने अंदर के ज़ख्मों के ठीक होने की प्रक्रिया में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और ज़रूरी कदम मानता हूँ।

4. इसके अलावा, इस पूरी यात्रा के दौरान, मेरा मानना है कि—परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि के मार्गदर्शन में—हमें अपने माता-पिता के साथ स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ तय करनी चाहिए; इसकी शुरुआत हमारे अपने दिलों से होनी चाहिए, भले ही यह प्रक्रिया धीरे-धीरे ही क्यों न हो। इन स्वस्थ सीमाओं में हमारे माता-पिता के साथ भावनात्मक सीमाएँ भी शामिल हैं। अगर हम खुद को लगातार ऐसे सवालों से घिरा पाते हैं, जैसे: "अगर मैं उन्हें बताऊँ कि उन्होंने मुझे कैसे दुख पहुँचाया, तो कहीं वे नकारात्मक प्रतिक्रिया तो नहीं देंगे?" या "मैं फिर कभी उनका सामना कैसे कर पाऊँगा?"—तो ऐसे विचार और भावनाएँ अक्सर इस बात से पैदा होती हैं कि हमने अभी तक अपने माता-पिता के साथ सफलतापूर्वक स्वस्थ सीमाएँ तय नहीं की हैं। एक बार जब हम प्रार्थना कर लेते हैं और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन

करते हुए अपने माता-पिता से बात करने की हिम्मत जुटा लेते हैं, तो मेरा मानना है कि हमें उनकी प्रतिक्रियाओं को लेकर ज़्यादा संवेदनशील होने की ज़रूरत नहीं है। मेरा मानना है कि स्पष्ट सीमाएँ तय करके अपने माता-पिता से एक उचित—या कम से कम सही—दूरी बनाए रखना ज़रूरी है, चाहे वे सीमाएँ भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक या भौगोलिक ही क्यों न हों। हालाँकि, मैं देखता हूँ कि जिन बच्चों को गहरे ज़ख्म मिले होते हैं, वे अक्सर भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से अपने माता-पिता से जकड़े रहते हैं, मानो वे ज़ंजीरों से बँधे हों। मेरा मानना है कि इन अस्वस्थ मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक ज़ंजीरों को यीशु मसीह के सुसमाचार की शक्ति से तोड़ देना चाहिए। इस प्रकार, हमें प्रभु में सच्ची आज़ादी का अनुभव करने के लिए बुलाया गया है।

5. इन सबके बीच, मेरा मानना है कि हमें अपने माता-पिता से प्रेम करना चाहिए—लेकिन हमें ऐसा प्रभु के प्रेम के साथ करना चाहिए।

दर्दनाक भावनाएँ

हाल ही में, रात को सोने से पहले, मैं *How We Love: Discover Your Love Style, Enhance Your Marriage* (मिलान और के यर्कोविच द्वारा लिखित) नाम की एक किताब पढ़ रहा हूँ। कोरियाई भाषा में इसका अनुवाद कुछ इस तरह है: "How We Love: Discover Your Love Style and Enhance Your Marriage." जब से मुझे यह किताब तोहफ़े में मिली है, मैं हर रात सोने से पहले इसे थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ रहा हूँ; इसके पन्नों में मुझे ऐसे वाक्य मिले हैं जो मुझे गहराई से सोचने और आत्म-चिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं। मैं इस किताब का एक खास पैराग्राफ़ आपके साथ साझा करना चाहूँगा और उस पर अपने कुछ विचार रखना चाहूँगा:

"इस पूरी किताब में हम देखेंगे कि भावनाओं के पूरे दायरे को सही तरीके से व्यक्त करने की क्षमता इतनी महत्वपूर्ण क्यों है। सच तो यह है कि, जब सूज़ी शादी करेगी, तो उसे उन लोगों की तुलना में बहुत बड़ा फ़ायदा होगा जिन्होंने बड़े होते समय भावनाओं को महसूस करना और उनसे निपटना नहीं सीखा। सूज़ी दर्दनाक भावनाओं से बचने के बजाय उन्हें संभालना जानती होगी। सूज़ी जैसे घरों में पले-बढ़े बच्चे अपने अनुभवों से अच्छी तरह सुनने का कौशल सीखते हैं और दूसरों की राय और भावनाओं को बाहर निकालना सीखते हैं। बड़े होने पर, वे खुले विचारों वाले, संवेदनशील और अपनी बातें बताने में सहज होते हैं। उनमें आपसी व्यवहार का कौशल होता है और वे समस्याओं के ऐसे समाधान निकाल पाते हैं जो दोनों पक्षों के लिए संतोषजनक हों।"

कल रात जब मैंने यह पैराग्राफ़ पढ़ा, तो मेरे मन में इस पर और गहराई से विचार करने और आत्म-चिंतन करने की इच्छा जागी। इसलिए, मैंने अपने फ़ोन के कैमरे से इसकी एक फ़ोटो ली, उसे KakaoTalk के ज़रिए खुद को भेजा, और अब—आज सुबह चर्च के पादरी कार्यालय में अपनी मेज़ पर बैठकर—मैं ये शब्द लिख रहा हूँ। मैं बस उन विचारों को लिख रहा हूँ जो मेरे मन में एक-एक करके आ रहे हैं:

1. ऐसा लगता है कि मेरे पूरे बचपन और परवरिश के दौरान, अपनी निजी, दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त करने के बजाय, मैंने उन्हें दबाकर अपना जीवन जिया। कोरिया में अपने बचपन को पीछे मुड़कर देखने पर, अगर मैं उस कम उम्र में अनुभव की गई दर्दनाक भावनाओं पर विचार करूँ, तो तीन अलग-अलग भावनाएँ मेरे मन में आती हैं। पहली भावना वह है जो मैंने तब महसूस की थी जब मेरे माता-पिता के बीच ज़बरदस्त झगड़ा हुआ था—मुझे लगता है कि उस समय मैं प्राथमिक विद्यालय की चौथी कक्षा में था, फिर भी मेरे पिता और माँ के बीच हुई उस खास लड़ाई की एक स्पष्ट तस्वीर आज भी मेरी यादों में ताज़ा है। दूसरी भावना वह है जो मैंने अपने प्राइमरी स्कूल के दिनों में महसूस की थी, जब मेरा एक क्लासमेट—एक लड़का जो मुझसे काफ़ी लंबा और बड़ा था (मुझे आज भी याद है कि उसका निकनेम "वांग-नुनी," या "बड़ी आँखें" था)—मुझे मारता-पीटता और तंग करता था। तीसरी भावना वह है जो मैंने अपने पिता को एक ऐसे मौके पर देखकर महसूस की थी, जब किसी दूसरे बड़े आदमी ने उन्हें कॉलर से पकड़ लिया था, फिर भी मेरे पिता ने कोई विरोध या प्रतिक्रिया नहीं दी। अगर मैं उन तीन खास भावनाओं के बारे में सोचूँ जो मैंने उस समय महसूस की थीं, और अब उन्हें शब्दों में बयां करने की कोशिश करूँ, तो मैं उन्हें एक ही वाक्य में कहूँगा: वे बस "तकलीफ़ देने वाली भावनाएँ" थीं (हालाँकि, ज़ाहिर है, आज मेरे मन में ऐसी कोई भावना नहीं है)।

2. बाद में, बारह साल की उम्र में, मैं अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ अमेरिका चला गया। किशोरावस्था के मुश्किल दौर में एक अनजान देश में पहुँचकर—और अंग्रेज़ी के अक्षर भी न जानते हुए—मुझे बहुत ज़्यादा मानसिक तकलीफ़ से गुज़रना पड़ा, क्योंकि मुझे अमेरिकी संस्कृति में ढलने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। एक याद जो मुझे आज भी बहुत साफ़-साफ़ याद है, वह अमेरिका पहुँचने के कुछ ही समय बाद का एक अनुभव है। मुझे प्राइमरी स्कूल की छठी क्लास में डाल दिया गया—हालाँकि मैं कोरिया में छठी क्लास पास कर चुका था—और मेरे पहले ही दिन, टीचर ने मेरा परिचय एक कोरियाई स्टूडेंट से करवाया जो अंग्रेज़ी बहुत अच्छी बोलता था, ताकि वह मेरे लिए दुभाषिए का काम कर सके। मुझे साफ़-साफ़ याद है कि ठीक अगले ही दिन, टीचर ने घोषणा की कि हमारा बीस अंग्रेज़ी शब्दों की शब्दावली का टेस्ट होगा, और हमसे उम्मीद की गई थी कि हम उन्हें एक ही रात में याद कर लेंगे। उस रात, मैं घर गया—(जैसा कि मुझे याद है, मेरा परिवार कुछ समय के लिए

मेरे चौथे चाचा के अपार्टमेंट में रुका हुआ था, जहाँ वे अकेले रहते थे)—और रोते-रोते, मैंने वे सभी बीस शब्द याद कर लिए। (मेरी माँ को आज भी याद है कि उस रात मैं कितना रोया था।) तो, अगले दिन, मैं पूरी तैयारी के साथ स्कूल गया कि मैं टेस्ट दूँगा; लेकिन, अमेरिकी टीचर ने मुझसे कहा, "चूँकि तुम कल ही आए हो, इसलिए तुम्हें यह टेस्ट देने की ज़रूरत नहीं है।" यह याद मेरे मन में हमेशा के लिए बस गई है। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उस पल मुझे जो भावनात्मक झटका लगा था, वह इतना गहरा था कि मैं बेकाबू होकर रोने लगा था। अब पीछे मुड़कर देखने पर, अगर मैं उस समय की अपनी भावनाओं को एक ही वाक्य में बयां करूँ, तो मैं उन्हें "हैरान कर देने वाली भावनाएँ" कहूँगा।

3. इस तरह अमेरिका में अपनी ज़िंदगी शुरू करने के बाद, हाई स्कूल के अपने दूसरे और तीसरे साल (अमेरिका में 11वीं और 12वीं क्लास) तक, मैं उन दोस्तों के साथ घूमने-फिरने लगा जिन्हें मैं मिडिल स्कूल से जानता था—हम शराब पीते, सिगरेट पीते, और रात भर नाचते-गाते पार्टियाँ करते। जिज्ञासा के चलते, मैंने ड्रग्स के साथ भी प्रयोग किया। फिर भी, इन सबके बीच, मैं हर रविवार को पूरी श्रद्धा से चर्च जाकर प्रार्थना करता रहा। इस दौर में मुझे जो भावना महसूस हुई, वह थी "अपराध-बोध" की। कोरियन प्रेस्बिटेरियन चर्च (हपडोंग संप्रदाय) में एक पादरी के बेटे के रूप में पले-बढ़े होने के कारण—और यहाँ तक कि अपने शुरुआती स्कूली दिनों में कोरिया के सांगह्योन चर्च के कुछ सदस्यों द्वारा प्यार से "छोटा पादरी" कहे जाने के कारण—जब मैं अमेरिका में रहते हुए उन कामों में लिप्त था जिन्हें आम तौर पर "बुरे काम" माना जाता है, और अपनी धार्मिकता को सिर्फ़ रविवार तक ही सीमित रखता था, तो स्वाभाविक रूप से मेरा अंतर्मन मुझे कचोटता था। हालाँकि, जैसे-जैसे समय बीतता गया, अपराध-बोध की वह तीव्र भावना भी धीरे-धीरे कम होती गई। बाद में, जब मेरे दो जान-पहचान वालों को गोली मारकर मार डाला गया, तो मैं उनके अंतिम संस्कार में शामिल हुआ; मुझे याद है कि उस मौके पर मैं फूट-फूटकर रोया था, मेरा दिल गहरे दुख से भरा हुआ था। इस प्रक्रिया में, मैं एक "छोटा दार्शनिक" बन गया और मैंने खुद से अनगिनत बार दो सवाल पूछे: (1) "जीवन का उद्देश्य क्या है?" और (2) "जीने का आनंद किसमें है?" उस समय मेरे हाथ जो किताबें लगीं, वे दार्शनिक किम ह्युंग-सुक और प्रोफ़ेसर किम डोंग-गिल द्वारा लिखी गई थीं। उस समय मेरी मानसिक स्थिति को सबसे अच्छे शब्दों में "भ्रमित भावना" के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

4. इसी बीच, जब मैं घर पर अपने पिता को देखता था, तो मेरे मन में एक सच्चे पिता-पुत्र के रिश्ते की चाह उठती थी—एक ऐसा रिश्ता जिसमें खुलकर बातचीत हो और गहरा जुड़ाव हो—लेकिन क्योंकि यह इच्छा पूरी तरह से अधूरी ही रह गई, इसलिए मेरे मन में उनके प्रति गहरी कड़वाहट घर कर गई। उस समय, मेरी भावनात्मक स्थिति "क्षतिग्रस्त भावनाओं" (damaged emotions) वाली थी। मुझे भारत में काम कर चुके एक पूर्व मिशनरी, डेविड ए. सीमैंड्स के शब्द याद आते हैं; उन्होंने अपनी किताब *हीलिंग फॉर डैमेज्ड इमोशंस* (Healing for Damaged Emotions) में लिखा है कि "आहत भावनाओं" (wounded emotions) के सबसे आम लक्षणों में से एक यह है कि व्यक्ति अपनी खुद की अहमियत को पहचान नहीं पाता। नतीजतन, जैसा कि सीमैंड्स ने बताया था, मैं भी वैसा ही बन गया—एक ऐसा इंसान जो "लगातार चिंता का बोझ ढोता है, खुद को नाकाबिल समझता है, हीन भावना (inferiority complex) से ग्रस्त रहता है, और खुद से बार-बार कहता रहता है, 'मैं किसी काम का नहीं हूँ।'" इसके अलावा, मेरे अंदर वह भावना भी पनप गई जिसे उन्होंने "परफेक्शनिस्ट कॉम्प्लेक्स" (हर चीज़ को एकदम सही करने की ज़िद) का नाम दिया था; इस वजह से मैं ऐसी स्थिति में पहुँच गया जहाँ मैं "लगातार कुछ पाने की कोशिश और खोज में लगा रहता था, फिर भी हमेशा अपराधबोध से घिरा रहता था और इस सोच में फँसा रहता था कि मुझे *हर हाल में* कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।" इन सबके ऊपर, मैं एक और तरह के भावनात्मक नुकसान से भी जूझ रहा था: जिसे "अति-संवेदनशीलता" (super-sensitivity) के नाम से जाना जाता है। इसके परिणामस्वरूप—ठीक सीमैंड्स के वर्णन के अनुसार—मैंने पाया कि मैं "लगातार बहुत गहराई तक आहत होता रहता था।" उस दौर में, मेरी भावनात्मक स्थिति "आहत भावनाओं" वाली थी। विशेष रूप से, जब भी मेरे माता-पिता के बीच झगड़ा होता था, तो मुझे अपनी माँ का वह तरीका बिल्कुल पसंद नहीं आता था जिसमें वह बार-बार पुरानी शिकायतों को कुरेदकर मेरे पिता के सामने ले आती थीं। उन पलों में, मेरे मन में अपने पिता के प्रति गुस्से और नफ़रत की एक तेज़ लहर उठती थी।

5. बाद में, अपने कॉलेज के दिनों में—ईश्वर की कृपा से—मेरा विश्वास यीशु मसीह में जागा और, जब मुझे प्रभु की ओर से पादरी बनने का बुलावा मिला, तो मैंने अपने मुख्य विषय (major) को बदलकर मनोविज्ञान (Psychology) चुन लिया। तभी मुझे तीन ऐसे शब्द पता चले जो मेरी उस समय की भावनाओं को एकदम सटीक रूप से बयां करते थे: (1) अस्वीकृति (Rejection), (2) दमन

(Repression), और (3) अवरोध (Suppression)। यहाँ "दमन" (Repression) और "अवरोध" (Suppression) के बीच मुख्य अंतर यह है कि "दमन" को आम तौर पर एक अचेतन (unconscious) प्रक्रिया माना जाता है, जबकि "अवरोध" एक सचेतन (conscious) प्रक्रिया है ["दमन और अवरोध के बीच मुख्य अंतर यह है कि दमन को आम तौर पर एक अचेतन प्रक्रिया माना जाता है, जबकि अवरोध एक सचेतन प्रक्रिया है" (इंटरनेट)]। अपने कॉलेज के दिनों में, मुझे दो महिलाओं (प्रभु में बहनें) पर एकतरफ़ा क्रश था, लेकिन मुझे "अस्वीकृति" ही मिली। बाद में, मैंने लगभग एक साल तक एक और महिला (एक बहन) पर एकतरफ़ा क्रश पाला, एक ऐसी स्थिति जिसे मैंने आखिरकार खुद ही खत्म कर दिया। (हाहा।) मेरा मतलब यह है कि—जैसा मैंने उन दो अन्य महिलाओं के साथ किया था—मैं कभी भी उसके सामने अपनी रोमांटिक भावनाएँ व्यक्त नहीं कर पाया; इसके बजाय, मैं बस उसे दूर से ही पसंद करता रहा, और हालाँकि अब मुझे ठीक से याद नहीं कि यह सब कैसे हुआ, मैंने आखिरकार उन भावनाओं को पूरी तरह से खुद ही खत्म कर दिया। (हेह।) उस समय, मेरी भावनात्मक स्थिति "दबाव" वाली थी—क्योंकि मैं जान-बूझकर अपनी भावनाओं को रोक रहा था। नतीजतन, बचपन से ही अपनी भावनाओं पर एक खास तरीके से प्रतिक्रिया करने का आदी होने के कारण, मैंने अपने कॉलेज जीवन में अनजाने में ही अपनी भावनाओं को "दबाते" हुए बिताया, बिना यह महसूस किए कि मैं ऐसा कर रहा हूँ। विशेष रूप से, मैंने अपने पहले और दूसरे वर्ष (freshman and sophomore years) बहुत ज़्यादा अकेलापन महसूस करते हुए बिताए। मेरा अकेलापन इतना गहरा था कि मुझे आज भी अपना एक खास दृश्य साफ-साफ याद है: कैंपस के ठीक बीच में स्थित पार्क में एक बड़े पेड़ के नीचे बेंच पर अकेला बैठा हुआ, अक्सर "Someone Is Praying for You" (कोई तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहा है) भजन गाते हुए और फूट-फूटकर रोते हुए। उस समय, मैं इंसानी जुड़ाव के लिए तरस रहा था। उस समय, जो भावनाएँ मैं महसूस कर रहा था, वे अकेलेपन और उदासी की थीं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से, कॉलेज के तीसरे वर्ष (junior year) से शुरू करके, मैंने एक ईसाई कैंपस क्लब में एक पदाधिकारी के रूप में सेवा करना शुरू कर दिया। जिन कई लोगों को मैंने याद किया था, उनसे फिर से जुड़कर मुझे बहुत खुशी हुई, फिर भी मुझे अक्सर ऐसा लगता था कि मैंने उन्हें दुख पहुँचाया है; नतीजतन, मैं अपने छात्रावास (कैंपस के अंदर का अपार्टमेंट) में लौट आता था और ईश्वर से पश्चाताप की प्रार्थना करता

था, उनसे क्षमा माँगता था। उन समयों के दौरान मैंने जो भावना महसूस की, वह अपराधबोध की थी।

6. कॉलेज से स्नातक होने के तुरंत बाद, मैंने सेमिनरी में प्रवेश लिया। मेरी पढ़ाई मेरे लिए बहुत ज़्यादा कठिन साबित हुई। फिर भी, कुछ वरिष्ठ पादरियों ने मुझे कोरियाई छात्र क्लब के अध्यक्ष के रूप में सेवा करने के लिए चुना। हालाँकि मेरी इस पद के लिए कोई इच्छा नहीं थी, फिर भी मैंने खुद को अध्यक्ष के रूप में सेवा करने के लिए विवश पाया। इस प्रकार, हालाँकि अनिच्छा से, मैंने एक कर्तव्यबोध महसूस किया—यह तर्क देते हुए कि अध्यक्ष के रूप में, मुझे एक मिसाल कायम करने की आवश्यकता है—और यहाँ तक कि सुबह की प्रार्थना सभाओं में भी शामिल होना शुरू कर दिया। उस दौरान मैंने जो भावना महसूस की, वह एक बार फिर, अपराध-बोध थी।

7. सेमिनरी से स्नातक होने के बाद, और ईश्वर की कृपा से, मैं अपनी वर्तमान पत्नी से मिला और हमारी शादी हो गई। इसके बाद, ईश्वर ने हमें हमारी पहली संतान—एक बच्ची, जिसका नाम "जूयंग" (जिसका अर्थ है "प्रभु की महिमा") था—का आशीर्वाद दिया। हालाँकि, वह एक चिकित्सीय समस्या के साथ पैदा हुई थी और, अंततः, जन्म के ठीक 55 दिन बाद मेरी बाहों में ही चल बसी। उस त्रासदी के बाद एक साल से भी ज़्यादा समय तक, मैं अपराध-बोध की एक भारी भावना से पीड़ित रहा। इसका कारण मेरा यह पक्का विश्वास था कि जूयंग की मृत्यु मेरे अपने पापों के कारण हुई थी।

8. इन भावनाओं को अपने भीतर समेटे हुए, मैंने अपनी पत्नी से शादी की, और तब से हम अपना जीवन एक साथ बिता रहे हैं। अगले अप्रैल तक, हमारी शादी को अट्ठाईस साल पूरे हो जाएँगे। फिर भी, जब मैं अपनी शादी के सफ़र पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि शुरुआती बीस सालों या उससे कुछ ज़्यादा समय तक, हमने बहुत ज़्यादा आपसी टकराव का सामना किया। इसका कारण—जैसा कि मेरी पत्नी ने खुद कई मौकों पर साफ़-साफ़ कहा है—बस यही था कि "हम बहुत (इतने) अलग हैं"; दूसरे शब्दों में, हम मूल रूप से बहुत अलग तरह के इंसान हैं। क्या इस दुनिया में कोई ऐसा जोड़ा है—कोई भी पुरुष और स्त्री—जो एक-दूसरे से अलग न हो? हर कोई अलग होता है। हालाँकि, मुझे ऐसा लगता है कि हमारी शादी में टकराव इसलिए पैदा हुए क्योंकि हम एक-दूसरे

के फ़र्कों को स्वीकार नहीं कर पाए—और, इसके अलावा, इसलिए भी क्योंकि हम एक-दूसरे को ठीक वैसे ही—उनके फ़र्कों समेत—सच्चे दिल से स्वीकार करने और प्यार करने में नाकाम रहे।

9. जिस खास बात पर मैं यहाँ ज़ोर देना चाहता हूँ—जैसा कि उस किताब के लेखकों ने बताया है जिसे मैं अभी पढ़ रहा हूँ, *How We Love: Discover Your Love Style, Enhance Your Marriage*—वह यह है कि मैंने (और मेरी राय में, मेरी पत्नी ने भी) कभी यह नहीं सीखा कि "दर्दनाक भावनाओं से कैसे निपटा जाए, न कि उन्हें बस नज़रअंदाज़ किया जाए।" सच कहूँ तो, बड़े होते हुए, मैंने कभी यह नहीं सीखा कि मैं जो भावनाएँ महसूस करता हूँ, उन्हें कैसे समझूँ और उनसे कैसे निपटूँ। मुझे बस एक ही तरीका पता था—अपनी दर्दनाक भावनाओं को दबाना और रोकना। नतीजतन, अपनी ज़िंदगी इसी तरह बिताते हुए, यही तरीका मेरे लिए सबसे जाना-पहचाना बन गया।

10. खास तौर पर, मैं अपनी पत्नी के प्रति अपने गुस्से को दबाने और रोकने की कोशिश करता था। मुझे सच में लगता था—कम से कम मेरे अपने नज़रिए से—कि मैं उस पर गुस्सा होने के बजाय बस उसके साथ सब्र से पेश आ रहा हूँ (हालाँकि, बेशक, कई ऐसे मौके भी आए जब मैं इतना ज़्यादा गुस्सा हो गया कि मैंने अपना गुस्सा खुलकर ज़ाहिर कर दिया)। लेकिन, जब मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, "तुम अंदर से गुस्सा हो," तो मुझे एहसास हुआ कि मेरे अंदर "अंदरूनी गुस्सा" (inner anger) छिपा है (एक ऐसा एहसास जिसके लिए मैं अपनी प्यारी पत्नी का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ)। एक और बात जो मैंने अपनी पत्नी से सीखी, वह यह है कि मेरे अंदर "पैसिव-अग्रेसिव" (passive-aggressive) स्वभाव है। नतीजतन, शादी में किसी बहस के बाद भी, मैं मन में कड़वाहट पाले रखता था—जिसे "किसी अप्रिय घटना के बाद मन में बनी रहने वाली नकारात्मक भावनाएँ" (Naver Dictionary) के तौर पर परिभाषित किया गया है—जो बहुत ज़्यादा गहरी और गंभीर होती थी। इसके अलावा, मैं शादी से जुड़े ज़्यादातर झगड़ों या मुद्दों पर बात करने से बचता था; मुझे बस समझ ही नहीं आता था कि उन्हें कैसे सुलझाऊँ। अपनी पूरी ज़िंदगी अपनी भावनाओं को दबाने और रोकने में बिताने के बाद, जब शादीशुदा ज़िंदगी में वही भावनाएँ सामने आईं, तो मुझे समझ नहीं आया कि उनसे कैसे निपटूँ; इसलिए, मैंने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी को वैसे ही जीना जारी रखा, जैसा मैं हमेशा से करता आया

था—अपनी भावनाओं को दबाना और रोकना। संक्षेप में, क्योंकि मैंने अपनी दर्दनाक भावनाओं से निपटना कभी ठीक से—या सही तरीके से—नहीं सीखा था, इसलिए मैं बस उनसे बचता रहा। नतीजतन, मुझे यह बात थोड़ी अजीब लगती थी कि जब भी मेरी पत्नी और मेरे बीच कोई बहस होती थी, तो वह अपना गुस्सा ज़ाहिर कर देती थी और फिर उसे भूल जाती थी, और उसके बाद मन में कोई कड़वाहट नहीं रखती थी। (हाहा—एक पति के तौर पर, मैं निश्चित रूप से मानता हूँ कि मेरी पत्नी की भी अपनी "तकलीफ़देह भावनाएँ" हैं, लेकिन मैं यहाँ उनका ज़िक्र करने से बचूँगा। हालाँकि, अगर हम उन तकलीफ़देह भावनाओं को आपस में बाँटते—और यह ज़्यादा सही होता कि वह खुद उन्हें बाँटती, न कि मैं—तो शायद हम अपनी शादी के अंदर के झगड़ों को ज़्यादा गहराई से समझ पाते; खासकर यह कि वे उन भावनाओं से कैसे जुड़े हैं जिन्हें हमने शादी से पहले, बड़े होते समय महसूस किया था।) बहरहाल, उस समय, मेरे दिल में कुछ ज़ख्म थे—जिन्हें शायद "ज़ख्मी भावनाएँ" कहा जा सकता है। तो, एक बार मैंने अपनी पत्नी से पूरी ईमानदारी से बात की और कहा, "जो बातें तुमने मुझसे कहीं, उनसे मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे दिल में चाकू घोंप दिया हो।" क्या आप जानते हैं कि यह सुनकर मेरी पत्नी ने क्या जवाब दिया? उसने कहा, "मुझे यह बताने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।" उस पल, उसकी बातें सुनकर मेरे मन में दो विचार आए: (1) "वह भला यह जवाब कैसे दे सकती है कि, 'मुझे यह बताने के लिए तुम्हारा शुक्रिया'?" (मुझे पूरी उम्मीद थी कि वह कहेगी, "मुझे माफ़ कर दो"); और (2) "मैंने पहले कभी अपनी पत्नी से इस तरह खुलकर बात क्यों नहीं की—ठीक वैसे ही जैसे आज की—जब-जब उसकी बातों से मेरी भावनाओं को ठेस पहुँची?" मुझे इस बात का गहरा अफ़सोस हुआ कि मैंने ऐसा पहले क्यों नहीं किया।

11. चूँकि यह पोस्ट पहले ही काफ़ी लंबी हो चुकी है, इसलिए मैं अपनी तकलीफ़देह भावनाओं पर अपने निजी विचारों को यहीं समाप्त करूँगा। अब, मैं यह बताना चाहूँगा कि कैसे प्रभु ने इन सभी तकलीफ़देह भावनाओं को सतह पर ला दिया, और मुझे सांत्वना, कोमल देखभाल और अंततः, मरहम दिया। इसलिए, अब मैं अपना ध्यान इस बात पर केंद्रित करना चाहूँगा कि कैसे प्रभु ने हमारे वैवाहिक रिश्ते में विकास को बढ़ावा दिया है।

12. सबसे पहले, प्रभु ने मुझे बदल दिया—जो हमारे घर का पति और मुखिया है (बेशक, मेरा मानना है कि वह अभी भी मुझे बदल रहे हैं, और जब तक मैं मर नहीं जाता, तब तक ऐसा करते रहेंगे)। प्रभु ने धीरे-धीरे उन दर्दनाक भावनाओं को बाहर निकाला जिन्हें मैंने अपने दिल की गहराइयों में दबा रखा था। उदाहरण के लिए, उन्होंने मुझे अपनी प्यारी पत्नी के साथ अपनी घायल भावनाओं को ईमानदारी से साझा करने में सक्षम बनाया। इसका मतलब यह था कि जब भी मैं अपनी घायल भावनाओं के बारे में बात करता था, तो प्रभु मेरी पत्नी को ध्यान से सुनने के लिए प्रेरित करते थे, जिससे वह सचमुच समझ पाती थी कि मैं किस दौर से गुज़र रहा हूँ। मेरा मानना है कि प्रभु के इस काम ने मुझे धीरे-धीरे खुलकर सामने आने और अपनी दर्दनाक भावनाओं को अपनी पत्नी के साथ साझा करने का साहस दिया।

13. हालाँकि, प्रभु के परिवर्तनकारी काम का एक और भी महत्वपूर्ण पहलू यह था: मुझे यीशु मसीह—जो दुनिया की ज्योति हैं—और क्रूस पर बहाए गए उनके प्रायश्चित करने वाले लहू की शक्ति पर और भी अधिक विश्वास और भरोसा रखने के लिए प्रेरित करके, उन्होंने धीरे-धीरे मुझे मेरी सबसे कष्टदायक भावनाओं में से एक से मुक्त कर दिया: "अपराध-बोध" (guilt)। इसके अलावा, प्रभु ने परमेश्वर के शक्तिशाली वचन का उपयोग करके धीरे-धीरे मेरे दिल और भावनाओं को मजबूत, दृढ़ और साहसी बनाया—जो पहले मेरी पत्नी के गुस्से और शब्दों से (आसानी से?) घायल हो जाते थे (संदर्भ: 1 पतरस 5:10)। एक कदम और आगे बढ़ते हुए, मेरे भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा ने मुझे प्रेम का फल और भी अधिक मात्रा में उत्पन्न करने में सक्षम बनाया; उन्होंने मुझे अपनी पत्नी के गुस्से और शब्दों से परे देखने और उसके दिल की सच्ची स्थिति को समझने में मदद की, जिससे मेरे भीतर प्रभु के अपने प्रेम से उसे प्रेम करने की गहरी इच्छा जागृत हुई। विशेष रूप से, पवित्र आत्मा ने मुझे धीरे-धीरे अपनी पत्नी की दर्दनाक भावनाओं की गहरी समझ हासिल करने में सक्षम बनाया, जिससे मेरे भीतर उसके प्रति करुणा का भाव जागृत हुआ। अंततः, एक जोड़े के रूप में हमारे द्वारा अनुभव किए गए संघर्षों के माध्यम से, प्रभु ने हमारे व्यक्तिगत दिलों को ढाला और विस्तृत किया; इसने हमें न केवल अपने मतभेदों को स्वीकार करने और अपनाने में सक्षम बनाया, बल्कि—प्रभु के अपने दिल के साथ—धीरे-धीरे उन घावों को भी अपनाने में सक्षम बनाया जो हमने

अनजाने में (और अनिच्छा से) एक-दूसरे को दिए थे। इस प्रक्रिया के दौरान एक मुख्य एहसास यह था कि हमारे वैवाहिक संघर्षों ने हमारी संबंधित दर्दनाक भावनाओं को उजागर करने का काम किया, और उन भावनाओं ने, बदले में, हमें उन अलग-अलग पृष्ठभूमियों की गहरी समझ दी जिनमें हममें से प्रत्येक बड़ा हुआ था।

14. उदाहरण के लिए, लगभग 23 साल पहले, जब हम कोरिया में रह रहे थे, तब एक बार मेरी पत्नी और मेरे बीच बहस हो गई थी—और यह सब हमारे प्यारे बेटे, डिलन की वजह से (या शायद *उसकी बदौलत*) हुआ था, जो उस समय चर्च के किंडरगार्टन में पढ़ रहा था। हमारी असहमति की जड़ यह थी: मैं चाहता था कि डिलन किंडरगार्टन में दूसरे बच्चों के आगे झुकना (उनकी बात मानना) सीखे, जबकि मेरी पत्नी चाहती थी कि वह दूसरों के आगे लगातार झुकने के बजाय अपनी खुद की इच्छाओं को पूरा करे। उस पल प्रभु ने मुझे जो समझ दी, वह यह थी: अपने माता-पिता के त्याग के उदाहरण को देखकर और उससे सीखकर बड़ा होने के कारण, मैं स्वाभाविक रूप से चाहता था कि मेरा बेटा भी ऐसा ही इंसान बने जो दूसरों के आगे झुकता हो। दूसरी ओर, मेरी पत्नी—जो सबसे बड़ी बेटी के रूप में बड़ी हुई थी और अक्सर अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाती थी क्योंकि उसे अपने माता-पिता के आगे झुकना पड़ता था और उनके हर शब्द का सख्ती से पालन करना पड़ता था—नहीं चाहती थी कि उसका प्यारा डिलन भी उसी तरह ज़िंदगी जिए, जिस तरह उसने जी थी। (ठीक इसी मोड़ पर मैंने आखिरकार—भले ही थोड़ी देर से—कम से कम कुछ हद तक ही सही, उन गहरी और दर्दनाक भावनाओं को समझना शुरू किया, जिन्हें मेरी पत्नी इतने समय से अपने अंदर दबाए हुए थी।) आखिरकार, वह खास टकराव हमारे लिए एक उत्प्रेरक—एक अवसर—साबित हुआ, जिसके ज़रिए हम एक-दूसरे के बारे में और ज़्यादा जान पाए और हमारी आपसी समझ और भी गहरी हो गई।

15. अब मैं अपनी इस बात को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। जब मैं काफी लंबे समय से यह लेख लिख रहा था और बीच-बीच में अपना फ़ोन भी देखता जा रहा था, तो मैंने देखा कि मेरी भतीजी, ये-जिन (मेरे भाई की सबसे बड़ी बेटी), ने आज सुबह लगभग 5:00 बजे अपनी Instagram Stories पर

एक वीडियो पोस्ट किया था, जिसमें 100 मील (163 km) की अल्ट्रा-मैराथन दौड़ की शुरुआत को दिखाया गया था। इस समय, मेरी पत्नी—ये-जिन, ये-जिन की एक सहेली, और अपनी दो मैराथन-प्रेमी सहेलियों के साथ—घर से काफी दूर निकल चुकी है और अभी अपनी दूसरी 100 मील की अल्ट्रा-मैराथन दौड़ में हिस्सा ले रही है; यह दौड़ वह लगभग दो साल के अंतराल के बाद कर रही है। मैराथन दौड़ने के इस काम को—जिसे मेरी प्यारी पत्नी दिल से पसंद करती है—अपना पूरा समर्थन देने के पीछे मेरा एक खास मकसद है। इस उद्देश्य की जड़ें मेरी उस सच्ची प्रार्थना में हैं कि प्रभु, दौड़ने की इसी क्रिया के माध्यम से, मेरी पत्नी को सभी कष्टदायक भावनाओं, तनाव और ऐसी किसी भी चीज़ से मुक्त कर देंगे जिसे वह अपनी भलाई के लिए हानिकारक मानती है। इस प्रकार, हमारी शादी के लगभग 28 वर्षों के दौरान, मैंने अपनी प्रिय पत्नी को अपने विचारों और प्रार्थनाओं में रखते हुए, विश्वास के साथ इस धर्मवचन को थामे रखा है: "और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें मुक्त कर देगा।" मुझे विश्वास है कि प्रभु हम दोनों को—मेरी पत्नी और मुझे—एक ऐसे जोड़े के रूप में लगातार मज़बूत करते रहेंगे जो उन पर और भी अधिक गहराई से केंद्रित हो!

एक स्वार्थी हृदय

“हमारी मूल समस्या यह नहीं है कि हमें सही-गलत की जानकारी नहीं है। हमारी समस्या तो हृदय का वह स्वार्थ है, जिसके कारण हम इस बात की परवाह अधिक करते हैं कि *हम* क्या चाहते हैं, बजाय इसके कि *सही* क्या है।” [पॉल डेविड ट्रिप, *What Did You Expect?*]

इस पापमय संसार में, जब एक पापी पुरुष किसी पापी स्त्री से विवाह करता है, तो वे अपने वैवाहिक जीवन में परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने से भला कैसे बच सकते हैं? ऐसे दम्पति द्वारा किए गए पापों की कड़वी जड़, वास्तव में, ‘अहंकार’ है। कहने का तात्पर्य यह है कि, ये दो अहंकारी पापी परमेश्वर के विरुद्ध जो पाप करते हैं, वह ठीक-ठीक उसकी आज्ञाओं की अवहेलना ही है। अपने अहंकार के कारण, वे यीशु की दो महान आज्ञाओं का पालन करने में असफल रहते हैं; वे न तो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और न ही अपने पड़ोसी से। क्योंकि वे परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, इसलिए वे न केवल परमेश्वर के प्रेम के साथ अपने पड़ोसी से प्रेम करने में असफल रहते हैं, बल्कि वे ऐसा करने में असमर्थ भी होते हैं। अपने पड़ोसी के प्रति उनका प्रेम, केवल मानवीय पापमय स्वभाव का प्रेम होता है—एक ऐसा प्रेम जिसकी कड़वी जड़, स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

समस्या यह है कि हम मसीहियों के हृदयों में भी—जिन्हें यीशु मसीह में परमेश्वर के सार्वभौम अनुग्रह द्वारा पापों की क्षमा और उद्धार प्राप्त हुआ है—मानवीय पापमय प्रेम की वह कड़वी जड़, अर्थात् ‘स्वार्थ’, अब भी

विद्यमान रहती है। यद्यपि "परमेश्वर का प्रेम उस पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में उंडेला गया है, जो हमें प्रदान किया गया है" (रोमियों 5:5), और यद्यपि हम मसीह यीशु में "नई सृष्टि" बन गए हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)—जिसके फलस्वरूप हम परमेश्वर से और अपने पड़ोसी से प्रेम करने में समर्थ हुए हैं (लूका 10:27)—तथापि हमारा "पुराना स्वभाव" प्रायः पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में चलने से इनकार कर देता है। इसके विपरीत, वह शारीरिक अभिलाषाओं के पीछे भागता है, जिसके कारण हम एक स्वार्थी हृदय के साथ अपने पड़ोसियों से प्रेम करना जारी रखते हैं। यह स्वार्थी हृदय हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए विवश करता है कि *हम* क्या चाहते हैं, बजाय इसके कि *सही* क्या है; परिणामस्वरूप, परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है उसे करने के बजाय, हम अपनी ही इच्छाओं के अनुरूप अपने पड़ोसियों के साथ संबंध स्थापित करते हैं। मेरा मानना है कि, समस्त मानवीय संबंधों में से, वैवाहिक संबंध ही वह संबंध है जिसमें यह स्वार्थी हृदय सबसे स्पष्ट रूप से और प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होता है। मेरा यह विचार इसलिए है क्योंकि परमेश्वर—जो दिव्य कुम्हार हैं—अपनी संप्रभुता में, एक पुरुष और एक स्त्री को एक विशेष उद्देश्य के लिए एक साथ जोड़ते हैं: ताकि ये दो अलग-अलग व्यक्ति प्रभु में "एक देह" बन सकें। इस प्रकार, पवित्र आत्मा उनके भीतर कार्य करती है, और प्रेम का फल उत्पन्न करती है (गलातियों 5:22)। परिणामस्वरूप, पवित्र आत्मा धीरे-धीरे उस जोड़े को पवित्र करती है, और उन्हें परमेश्वर के अपने प्रेम के साथ एक-दूसरे से और भी अधिक गहराई से प्रेम करने की शक्ति प्रदान करती है। पवित्रता की इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, पवित्र आत्मा धीरे-धीरे हमें हमारे "पुराने स्व" की स्वार्थी प्रवृत्तियों को छोड़ने में मदद करती है—यानी प्रभु की इच्छाओं और हमारे जीवनसाथी की इच्छाओं की तुलना में अपनी इच्छाओं को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति को छोड़ने में। इन प्रवृत्तियों को त्यागने की ओर हमारा मार्गदर्शन करते हुए, पवित्र आत्मा सबसे पहले हमारे स्वार्थी हृदयों को सतह पर लाती है, और हमारे वैवाहिक संबंधों के संदर्भ में उन्हें उजागर करती है। पति और पत्नी दोनों ही प्रभु की इच्छा या अपने जीवनसाथी की इच्छा को खोजने के बजाय, अपनी-अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का पीछा करने की ओर प्रवृत्त होते हैं। परिणामस्वरूप, दो "स्वार्थी राज्य"—पति का राज्य और पत्नी का राज्य—आपस में टकराते हैं, जिससे संघर्ष, कलह, चोट और पीड़ा के कड़वे फल उत्पन्न होते हैं। फिर भी, जो बात वास्तव में आश्चर्यजनक है, वह यह है कि हमारे परमेश्वर—जो दिव्य कुम्हार हैं—इन पापपूर्ण और कड़वे फलों का भी उपयोग हमें, यानी मिट्टी के समान जोड़ों को गढ़ने के लिए करते हैं; वह हमें अपनी स्वार्थपरता को स्वीकार करने और उसका पश्चाताप करने की ओर ले जाते हैं, जिससे हम एक एकाग्र हृदय से परमेश्वर से

प्रेम करने में और एक निस्वार्थ भावना के साथ एक-दूसरे से प्रेम करने में सक्षम हो पाते हैं। परमेश्वर के इस अनुग्रह के अलावा यह और क्या हो सकता है?

परमेश्वर हमारे विवाहों में कार्य कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि "जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा" (रोमियों 5:20)। परमेश्वर ने दो स्वार्थी पापियों को एक जोड़े के रूप में इसलिए एक साथ जोड़ा है ताकि उनकी पवित्रता को सिद्ध किया जा सके; ऐसा करते हुए, वह हमारे संघर्षों, घावों और पीड़ा का भी उपयोग हमें—पति और पत्नी के रूप में—पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और परमेश्वर के प्रेम की शक्ति के द्वारा एक-दूसरे से प्रेम करने का मार्ग दिखाने के लिए करते हैं। विशेष रूप से, परमेश्वर हमें उस त्यागमय प्रेम की शिक्षा देते हैं जो यीशु मसीह के क्रूस के माध्यम से प्रदर्शित हुआ था, और हमें अपने स्वार्थी हृदयों को त्यागकर मसीह के निस्वार्थ हृदय के साथ एक-दूसरे से प्रेम करने में सक्षम बनाते हैं। परमेश्वर के ऐसा करने के पीछे का मूल उद्देश्य उनकी यह इच्छा है कि हमारे घरों के भीतर परमेश्वर के राज्य की स्थापना हो। जैसे-जैसे वह हमारे बीच अपना राज्य स्थापित करते हैं, परमेश्वर ने हमें एक आज्ञा दी है जो उस राज्य के नियम का काम करती है: “अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी शक्ति और अपने पूरे मन से प्रेम करो; और, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो” (लूका 10:27)। हमें इस आज्ञा का पालन करने के लिए बुलाया गया है। हम सभी—मसीही जोड़ों के रूप में—को इस आज्ञा का पालन करना चाहिए और ऐसा करते हुए, प्रभु पर केंद्रित घर बनाने चाहिए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे प्रभु-केंद्रित घरों के माध्यम से—जिन्हें वह स्वयं स्थापित करते हैं—प्रभु का कलीसिया और परमेश्वर का राज्य उस चट्टान पर मज़बूती से निर्मित हो।

वैवाहिक संबंधों में टकराव और संकट

जैसा कि मैं हाल ही में हुई "2024 इंटरनेट मिनिस्ट्री टू कोरिया" पहल के दौरान—ईश्वर के मार्गदर्शन में—हुई मुलाकातों से मिली सीख पर एक बार फिर विचार करता हूँ, मैं अपने विचारों को लिखकर व्यवस्थित करने का प्रयास करना चाहूँगा, विशेष रूप से उन भाइयों और बहनों के संबंध में जिनसे मैं मिला और जो वर्तमान में अपने वैवाहिक संबंधों में संकट का सामना कर रहे हैं:

1. ऐसा प्रतीत होता है कि वैवाहिक संबंध में टकराव और बहसें होना अनिवार्य है। इसलिए, मेरा मानना है कि वैवाहिक टकरावों और बहसों से बचने या उन्हें टालने के लिए संघर्ष करने के बजाय (यानी, दूसरों के सामने यह छवि बनाने की कोशिश करने के बजाय कि "हमारे विवाह में कोई टकराव या कलह नहीं है"), यह कहीं बेहतर है कि हम यह सीखने का प्रयास करें कि वैवाहिक टकरावों और बहसों को *कैसे* अच्छी तरह से संभाला जाए—ईश्वर द्वारा प्रदान की गई बुद्धि का उपयोग करते हुए।

    a. मेरी पत्नी और मेरे बीच पहली बहस हमारे हनीमून के दौरान हुई थी। उससे पहले, हमारी छह महीने की लंबी दूरी की प्रेम-अवधि (courtship) के दौरान—जो एक मध्यस्थ (matchmaker) के माध्यम से हमारा परिचय होने के बाद शुरू हुई थी—हमने कभी भी एक भी टकराव या असहमति का अनुभव नहीं किया था। तब से, हमारे विवाह के लगभग बीस वर्षों में, हमने अनगिनत टकरावों और बहसों का अनुभव किया है। मैं इन वैवाहिक टकरावों और बहसों को छिपाने की कोशिश करता था, क्योंकि मैं उन्हें अपने बच्चों या अन्य लोगों के सामने उजागर नहीं करना चाहता था; हालाँकि, मेरे प्रयास व्यर्थ रहे। अंततः, एक पादरी के मार्गदर्शन से, मैंने वैवाहिक टकराव के सकारात्मक पहलुओं को पहचानना सीखा; तब से, अपनी असहमतियों से

बचने या उन्हें छिपाने के लिए संघर्ष करने के बजाय, मैंने खुद को यह सीखने के लिए समर्पित कर दिया है कि हमारे विवाह के भीतर *कैसे* अच्छी तरह से बहस की जाए।

b. जैसा कि मैं "इंटरनेट मिनिस्ट्री टू कोरिया" पहल के दौरान मिले साथी विश्वासियों पर विचार करता हूँ—विशेष रूप से वे लोग जिन्होंने मेरे साथ अपने वैवाहिक संबंधों के बारे में थोड़ी-बहुत बातें भी साझा कीं—तो मुझे एहसास होता है कि, कम से कम, उन्होंने अपने विवाह में टकराव के अस्तित्व को स्वीकार किया। इसके अलावा, जिन लोगों ने अपना दिल पूरी तरह से खोलकर मेरे साथ अपनी बातें गहराई से साझा कीं, वे ऐसे व्यक्ति थे जो अपने वैवाहिक संबंधों में एक वास्तविक संकट का अनुभव कर रहे थे—और, परिणामस्वरूप, उन्हें मदद की सख्त आवश्यकता थी। हमारे समुदाय के वे सदस्य जो इस हद तक वैवाहिक संकट का अनुभव कर रहे हैं, वे "शीत युद्ध" (cold war) जैसी स्थिति में प्रतीत होते हैं—यह एक ऐसी गंभीर स्थिति है कि वे अब एक-दूसरे के साथ बहस करने की भी परवाह नहीं करते। मेरा मानना है कि जब वैवाहिक कलह इस स्तर तक पहुँच जाती है, तो यह उस चरण से आगे निकल चुकी होती है जहाँ पति-पत्नी को केवल यह सीखने का प्रयास करने की आवश्यकता होती है कि रचनात्मक रूप से *कैसे* झगड़ा किया जाए। इसके बजाय, यह एक ऐसा समय बन जाता है जब उन्हें विनम्रतापूर्वक और गंभीरता से अपना आत्म-निरीक्षण करना चाहिए—ईश्वर के समक्ष, और अपने जीवनसाथी के आचरण के बजाय अपने स्वयं के आचरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए—ताकि वे ठीक-ठीक यह समझ सकें कि उनका झगड़ा कहाँ और कैसे बढ़कर इतनी गंभीर स्थिति तक पहुँच गया।

2. मैं वैवाहिक कलह और तर्कों को पति और पत्नी के लिए एक-दूसरे को अधिक गहरे स्तर पर जानने के मूल्यवान अवसरों के रूप में देखता हूँ।

a. मेरे अपने विवाह के मामले में, लगभग 22 साल पहले जब हम कोरिया में रह रहे थे, तब मेरी पत्नी और मेरे बीच हमारे प्यारे पहले बेटे, डिलन को लेकर एक बहुत बड़ा झगड़ा हुआ था। उस

विशेष वैवाहिक विवाद के माध्यम से, ईश्वर ने मुझे अपनी पत्नी को कहीं अधिक गहराई से समझने में सक्षम बनाया। विशेष रूप से, यह झगड़ा इसलिए पैदा हुआ क्योंकि मेरी पत्नी नहीं चाहती थी कि डिलन अपना जीवन लगातार समझौते करते हुए बिताए—जैसा कि उसने स्वयं किया था—जबकि मैं *चाहता* था कि वह उसी तरह से अपना जीवन जिए (क्योंकि मेरे माता-पिता ने मुझे यह विश्वास दिलाते हुए पाला था कि जीने का यही सही तरीका है)। उसी तीखी बहस के दौरान मुझे यह समझ आने लगा—कम से कम कुछ हद तक—कि मेरी पत्नी नहीं चाहती थी कि डिलन उसके ही नक्शेकदम पर चले; सबसे बड़ी बेटी के रूप में जीवन बिताते हुए, जिसे लगातार अपने माता-पिता के सामने "झुकना" पड़ता था, वह नहीं चाहती थी कि उसके बेटे को भी उसी अनुभव से गुज़रना पड़े।

b. "इंटरनेट मिनिस्ट्री टू कोरिया" पहल के माध्यम से हाल ही में जिन सदस्यों से मैं मिला—विशेष रूप से वे जो वर्तमान में वैवाहिक कलह और संकट का सामना कर रहे हैं—उनमें से अधिकांश का ध्यान अपने झगड़ों के अंतर्निहित *कारणों* पर नहीं, बल्कि उन बातों पर केंद्रित प्रतीत हुआ जिन्हें वे अपने जीवनसाथी की गलतियाँ या अनुचित माँगें मान रहे थे। शायद इसका कारण यह तथ्य है कि उन्हें अपने जीवनसाथी के हाथों जो भावनात्मक घाव मिले हैं, वे बहुत ही गहरे हैं। मेरा मानना है कि जिस वैवाहिक रिश्ते में दोनों पक्ष अपने स्वयं के घावों और अपने जीवनसाथी की गलतियों पर ही अटके रहते हैं, उसमें ऐसे संकट को एक अवसर में बदलने की क्षमता का अभाव होता है—एक ऐसा अवसर जो ईश्वर द्वारा निर्धारित है—जिसके माध्यम से पति-पत्नी वास्तव में एक-दूसरे को जान सकें।

3. मेरा मानना है कि एक पति—जो घर का मुखिया होता है—का हार मान लेना वैवाहिक कलह को और बढ़ा सकता है और विवाह में एक संकट को जन्म दे सकता है।

a. "इंटरनेट मिनिस्ट्री: बैक टू कोरिया" पहल के ज़रिए हाल ही में जिन साथी विश्वासियों से मैं मिला, उनमें मैंने ऐसे मामले देखे जहाँ पति के अनिच्छित इस्तीफ़े के कारण उसे बहुत ज़्यादा निजी

कठिनाई और दिल पर भारी बोझ उठाना पड़ा। हालाँकि, उस निजी संघर्ष से परे, मैंने महसूस किया कि इसके बाद आने वाली वित्तीय कठिनाइयाँ और समस्याएँ रिश्ते में टकराव पैदा कर सकती हैं, जो संभावित रूप से एक पूर्ण वैवाहिक संकट में बदल सकता है।

b. मुझे लगा कि इस बात का काफ़ी जोखिम है कि जब कोई जोड़ा बहस करता है—विशेष रूप से वित्तीय मामलों पर—तो रिश्ते के इतिहास से अनसुलझे मुद्दे और पुराने ज़ख्म उभरकर सामने आ सकते हैं और खुलकर व्यक्त हो सकते हैं। इसलिए, भले ही किसी जोड़े का रिश्ता तब अपेक्षाकृत समस्या-मुक्त—या शायद काफ़ी अच्छा भी—दिखता हो, जब वित्तीय दबाव ज़्यादा नहीं थे, लेकिन पति के इस्तीफ़े के बाद वित्तीय कठिनाई शुरू होने पर रिश्ता बहुत ज़्यादा बिगड़ सकता है। ऐसे पलों में, मुझे यह भी लगा कि इस बात का गंभीर ख़तरा है कि शैतान के कई प्रलोभनों के प्रभाव में आकर, कोई न केवल परमेश्वर के विरुद्ध, बल्कि अपने जीवनसाथी के विरुद्ध भी पाप कर सकता है। परिणामस्वरूप, मेरा मानना है कि स्थिति आसानी से एक ऐसे बिंदु पर पहुँच सकती है जहाँ वैवाहिक रिश्ता पूरी तरह से बर्बादी की ओर बढ़ने के लिए ही बना लगता है।

4. मेरा मानना है कि पति, घर के मुखिया के तौर पर, किसी भी वैवाहिक संकट की ज़िम्मेदारी ले और परमेश्वर के सामने पश्चाताप करे।

a. मैं लेखक डगलस विल्सन द्वारा अपनी किताब *Reformed Marriage*—जिसे मैंने काफ़ी समय पहले पढ़ा था—में कही गई एक बात को कभी नहीं भूला हूँ; जिसमें उन्होंने कहा था कि वैवाहिक परामर्श में अपने व्यापक अनुभव के दौरान, उनकी लगातार यह धारणा रही है: "ज़िम्मेदारी पति की होती है।" मैं इस भावना से पूरी तरह सहमत हूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे अपने विवाह में—हर टकराव, असहमति और बहस के संबंध में—अंतिम ज़िम्मेदारी मेरी, यानी पति की है। हालाँकि, मेरे दृष्टिकोण से, निश्चित रूप से कई बार मेरी पत्नी की ग़लती थी, फिर भी मेरा मानना है कि अंततः, ज़िम्मेदारी मेरी है—एक पति के तौर पर—क्योंकि मैं परमेश्वर के वचन

(इफिसियों 5:29) की आज्ञा का पालन करते हुए उसे ठीक से "पोषित" करने में असफल रहा। इसलिए, मैं अपने वैवाहिक रिश्ते के भीतर हर मुद्दे को अपनी ही ज़िम्मेदारी मानता हूँ। फिर भी, क्योंकि मैं उस ज़िम्मेदारी को उठाने को तैयार नहीं था, इसलिए मैंने अक्सर अपनी पत्नी के प्रति मन में द्वेष पाला, और इस तरह परमेश्वर और उसके, दोनों के विरुद्ध पाप किया। नतीजतन, हालाँकि मैं बौद्धिक रूप से यह समझता हूँ कि मुझे अपनी शादी के दौरान किए गए सभी पापों के लिए पश्चाताप करना चाहिए—भले ही मुझे उनकी गंभीरता का पूरी तरह से एहसास न हो—फिर भी मेरा दिल ऐसा करने में असमर्थ रहता है, भले ही मेरी पश्चाताप करने की इच्छा हो। मुझे यह एहसास हो गया है कि, ईश्वर की कृपा के बिना, मैं अपने दम पर पश्चाताप करने में भी असमर्थ हूँ। इसलिए, मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि ईश्वर मुझे पश्चाताप करने की कृपा प्रदान करें।

b. हाल ही में "इंटरनेट मिनिस्ट्री टू कोरिया" पहल के ज़रिए जिन साथी विश्वासियों से मैं मिला, उनके बीच मैंने कुछ ऐसा किया—शायद अपनी ज़िंदगी में पहली बार—जिसने मुझे भी हैरान कर दिया: मैंने एक भाई से साफ़-साफ़ शब्दों में कहा, "जब तक तुम खुद को परमेश्वर के सामने टूटने और नम्र होने नहीं दोगे, और सचमुच पश्चाताप नहीं करोगे, तब तक इस परिवार के लिए कोई उम्मीद नहीं है।" मैं अपने ही शब्दों से इतना हैरान था कि मुझे मुश्किल से ही यकीन हो रहा था कि मैंने ऐसा कहा है। मुझे हमेशा से यही लगता था कि न तो मेरे पास किसी से इस तरह बात करने का अधिकार है, और न ही मेरा व्यक्तित्व ऐसा है। फिर भी, जब मैं सोचता हूँ कि मैंने उस भाई से उस तरह बात क्यों की, तो मुझे लगता है कि शायद यह परमेश्वर का प्रेम ही था—उस भाई और उसके परिवार के लिए मेरे दिल की गहराइयों में बसा प्रेम—जिसने मुझे वैसा बोलने के लिए प्रेरित किया। खास तौर पर, जब भी मैं उस भाई के परिवार के बारे में सोचता था, तो मेरे दिल में एक गहरी बेचैनी और निराशा महसूस होती थी। मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि उसके वैवाहिक जीवन में हालात कितने गंभीर थे; जब आखिरकार मुझे—भले ही थोड़ा-बहुत ही सही—उसी के ज़रिए उनके वैवाहिक कलह की गंभीरता के बारे में पता चला, तो मेरा दिल इतना दुखने लगा कि मैं रो पड़ा। इसके अलावा, उसकी पत्नी से तीन अलग-अलग मौकों पर मिलने के बाद (तीसरी मुलाकात असल में उनकी सबसे बड़ी बेटी के साथ अकेले होनी थी, लेकिन उसे अकेले

मिलने में झिझक महसूस हुई और वह अपनी माँ को साथ ले आई), जब मैंने उस बहन की बातें "अपने दिल के कानों से" सुनीं—यानी सिर्फ़ शब्दों पर ही नहीं, बल्कि उन शब्दों के पीछे छिपे दर्द और तड़प पर भी ध्यान दिया—तो मेरा दिल और भी ज़्यादा दुखने लगा। नतीजतन, मेरी बेचैनी और भी गहरी हो गई। इसी बेचैनी और ज़रूरत से प्रेरित होकर, मैंने उस भाई से बात की और उसी रात 10:40 बजे उसके घर गया। और इस तरह, उसकी पत्नी के सामने खड़े होकर, मैंने उससे वे साफ़-साफ़ बातें कह दीं। अब भी, जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ और उस भाई और बहन के बारे में सोच रहा हूँ, तो मैं बस अपनी नज़रें प्रभु पर टिका देता हूँ, और उनके असीम प्रेम, दया और बचाने वाले अनुग्रह के लिए पूरे दिल से प्रार्थना करता हूँ।

5. मेरा मानना है कि जब वैवाहिक कलह बहुत ज़्यादा बढ़ जाता है—और संकट की स्थिति तक पहुँच जाता है—तो पति-पत्नी को किसी तीसरे व्यक्ति की मदद लेनी चाहिए।

    a. मुझे याद है कि जब मैंने शादी से पहले की काउंसलिंग के लिए एक मसौदा तैयार किया था—जिसमें मैंने उन किताबों का सहारा लिया था जो मैंने बहुत पहले शादी के विषय पर पढ़ी थीं—तो वैवाहिक झगड़ों को सुलझाने का अंतिम सुझाया गया तरीका किसी "तीसरे पक्ष" की मदद लेना था। इस संदर्भ में, "तीसरा पक्ष" मुख्य रूप से एक ऐसे पेशेवर मैरिज काउंसलर को संदर्भित करता है जो जोड़ों की थेरेपी (couples therapy) में विशेषज्ञ हो।

    b. हालाँकि, हाल ही में मुझे एक साथी विश्वासी से पता चला—उन लोगों में से एक जिन्होंने "इंटरनेट मिनिस्ट्री टू कोरिया" पहल के माध्यम से KakaoTalk पर मुझसे संपर्क किया था—कि उन्होंने वास्तव में एक पेशेवर मैरिज काउंसलर से सलाह ली थी, फिर भी उन्हें उससे बहुत कम मदद मिली। यह सुनकर, मेरा दिल गहरी चिंता से भर गया; मैं सोचने लगा कि यह जोड़ा कितना हताश रहा होगा कि उन्होंने एक गैर-विशेषज्ञ—मुझ जैसे एक साधारण पादरी—से संपर्क करने का साहसी कदम उठाया, जबकि पेशेवर काउंसलिंग से भी कोई नतीजा नहीं निकला था। मैंने उनसे

मिलने की हर संभव कोशिश की, लेकिन उनकी तरफ से कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आ गईं जिन्हें टाला नहीं जा सकता था, जिसके कारण अमेरिका लौटने से पहले हम उनसे मिल नहीं पाए। अब भी, जब मैं ये शब्द लिख रहा हूँ, तो मेरे विचार उसी जोड़े के साथ हैं, और मैं ये शब्द उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए, एक आशा भरे दिल से लिख रहा हूँ। और इन लिखे हुए शब्दों के माध्यम से, मैं यह संदेश देना चाहता हूँ: "हार मत मानो। प्रभु तुम्हें नहीं छोड़ते। प्रभु ही हमारी आशा हैं। जिस तरह तुम अभी हिम्मत बनाए हुए हो, वैसे ही आगे भी डटे रहो; हार मत मानो, और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते रहो।"

6. किसी भी जोड़े की स्थिति कितनी भी निराशाजनक क्यों न लगे—भले ही वे घने अंधेरे में डूबे हुए प्रतीत हों, जैसे कि सबसे गहरी रात का अंधेरा—मेरा दृढ़ विश्वास है कि, ऐसे गंभीर वैवाहिक संकट के बीच भी, प्रभु एक ऐसे ईश्वर हैं जो निश्चित रूप से और भरपूर मात्रा में अपना अद्भुत, शानदार और उद्धार करने वाला प्रेम उन पर बरसाएँगे, और उस प्रेम को स्पष्ट रूप से प्रकट करेंगे।

    a. जब मैं उन बड़े संकटों के बारे में सोचता हूँ जिनका सामना मेरी पत्नी और मैंने अपनी शादी के दौरान किया है, तो सबसे बड़ा संकट हमारी शादी की शुरुआत में आया था, जब मैंने अपनी पत्नी से कहा था कि मैं "तलाक" चाहता हूँ। बेशक, अब मुझे इस बात का गहरा पछतावा है कि मैंने अपनी प्यारी पत्नी से कभी ऐसे शब्द कहे थे; फिर भी, उस समय, मैं उसके प्रति गुस्से में इतना डूबा हुआ था कि मैं सचमुच अपनी शादी खत्म कर देना चाहता था। हालाँकि अब मुझे ठीक से याद नहीं है कि उस समय मैं इतना गुस्सा क्यों था, लेकिन मुझे लगता है कि उस समय मेरी पत्नी ने मुझे बहुत गहरा दुख पहुँचाया था। बेशक, उस समय—आज के विपरीत—मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि उससे ठीक से बातचीत या संवाद कैसे किया जाए। इसके अलावा, अपनी जवानी में, मेरा स्वभाव इतना अपरिपक्व था कि मैं अपनी सबसे तीखी बातों को सीधे-सीधे अपनी पत्नी के सामने रखने के अलावा और कुछ नहीं कर पाता था। ज़ाहिर है, उसके बाद के सालों में भी, मैं अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते में अपनी गहरी कमियों और दोषों को उजागर करता रहा। इसी वजह से, मेरा मानना है कि ऐसा कोई रिश्ता नहीं है—और निश्चित

रूप से परिवार या शादी जैसा कोई संदर्भ तो बिल्कुल नहीं—जो किसी व्यक्ति की अपनी कमज़ोरी, अभाव, खामियों और मूर्खता को इतनी स्पष्टता से सामने ला सके। जैसे-जैसे मैं अपनी शादी की जटिलताओं से गुज़र रहा था, हमारी दसवीं सालगिरह के आस-पास पढ़ी गई एक किताब, कई मायनों में, हमारे रिश्ते में एक अहम मोड़ साबित हुई। उस किताब का नाम था *Love & Respect* (लेखक: Emerson Eggerichs)। मुझे वह आज भी बहुत अच्छी तरह याद है। हमारी दसवीं सालगिरह के एक खास दिन, अपनी पत्नी के साथ रात का खाना खाने के बाद, हमने आपस में बातचीत करने के लिए कुछ समय निकाला; हमने किताब के बारह अध्यायों को पढ़ा—छह पति के पढ़ने के लिए, और बाकी छह पत्नी के लिए—और हर अध्याय के अंत में दिए गए चर्चा के सवालों को बारी-बारी से एक-दूसरे से पूछा। वह समय जो हमने साथ बिताया—कम से कम मेरे लिए तो—एक पति के तौर पर मेरी भूमिका में बेहद मददगार और समृद्ध करने वाला अनुभव साबित हुआ। हमारी सत्ताईस साल की शादीशुदा ज़िंदगी की एक और घटना—जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा—हमारे पहले बच्चे, Jooyoung की मृत्यु है। मैं उस समय प्रभु के उस अद्भुत और शानदार बचाने वाले प्रेम को कभी नहीं भूल सकता जिसका अनुभव मैंने उस समय किया था—एक ऐसा प्रेम जिसे मैंने भजन संहिता 63:3 में लिखे शब्दों की पूर्ति के रूप में देखा। हालाँकि हमने उस समय जितनी गंभीर संकट का सामना किया था, वैसा कोई और संकट हमने उसके बाद नहीं झेला, फिर भी हमारे पहले बच्चे की मृत्यु अंततः हमारी शादी के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण सीढ़ी बन गई, क्योंकि इसने हमें प्रभु के बचाने वाले प्रेम का अनुभव करने का अवसर दिया।

b. जब मैं उन प्यारे भाई-बहनों के बारे में सोचता हूँ जो इस समय वैवाहिक संकट से गुज़र रहे हैं, तो मेरा मानना है कि केवल प्रभु ही उन्हें इस मुश्किल स्थिति से बाहर निकाल सकते हैं—और, इसके अलावा, वह एक ऐसे परमेश्वर हैं जो ऐसे गहरे संकटों के बीच भी अपने बचाने वाले प्रेम को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। वही प्रभु, जिन्होंने मरे हुए लाज़र को भी फिर से जीवित कर दिया था, वही परमेश्वर हैं जिन्होंने हममें से उन लोगों को भी पुनर्जीवित किया जो आध्यात्मिक

रूप से मृत थे—हमें आध्यात्मिक पुनर्जन्म और नया जीवन प्रदान किया। इसलिए, मेरा पक्का विश्वास है कि हमारे पुनर्जीवित प्रभु उन विवाहों को भी फिर से जीवित कर सकते हैं जो, कई मायनों में, मृत प्रतीत होते हैं। मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे प्रभु उन भाई-बहनों पर अपनी महान बचाने वाली कृपा बरसाएँ जिन्हें वह सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं—वे जो इस समय वैवाहिक संकटों के बीच हैं—और यह कि, सबसे पहले उनके हृदयों को बदलकर, वह उनके विवाहों को भी गहरे बदलाव का आशीर्वाद प्रदान करें।

शादी में आने वाले संकटों से निपटने के सिद्धांत और तरीके

मेरी पत्नी को मेरी दौड़ने की बातें सुनना अच्छा लगता है, इसलिए हमारी एक बातचीत के दौरान, मैंने उसके साथ कुछ ऐसे सबक साझा किए जो मैंने इस खेल से सीखे हैं। वह सबक कुछ इस तरह है: मैं आम तौर पर हफ़्ते में लगभग तीन बार अपने मोहल्ले का एक चक्कर लगाता हूँ—दौड़ते समय मैं मन ही मन अपने कदमों को गिनता रहता हूँ (यह लगभग 3 मील, या 2,600 कदमों के बराबर होता है)। (वैसे, मेरी पत्नी कहती है कि वह मेरी तरह मन ही मन गिनती गिनते हुए कभी नहीं दौड़ सकती—हाहा! इससे बस यही पता चलता है कि एक जोड़े की दौड़ने की शैलियाँ कितनी अलग हो सकती हैं!) मोहल्ले के उस चक्कर में, एक ऐसा हिस्सा आता है जहाँ एक पहाड़ी है। मैं अभी-अभी दौड़कर लौटा हूँ, और मैंने गौर किया कि उस चढ़ाई के बिल्कुल शिखर तक पहुँचने में लगभग 300 कदम लगते हैं। पहले 150 कदम तो आसान होते हैं, लेकिन आखिरी 150 कदम—150वें कदम से लेकर 300वें कदम तक—बिल्कुल भी आसान नहीं होते। जब मैंने अपनी पत्नी को यह बात बताई, तो मैंने उससे कहा कि एक बार जब आप *उस खास "मुश्किल पड़ाव" (hump)* को पार कर लेते हैं, तो मोहल्ले का बाकी चक्कर लगाना सचमुच उतना मुश्किल नहीं रहता। फिर मैंने एक तुलना की, और इस सिद्धांत को एक विवाहित जोड़े के रूप में हमारे रिश्ते पर लागू किया: शादी में भी हमारे सामने ऐसे ही "मुश्किल पड़ाव" आते हैं—कठिन बाधाएँ जिन्हें हमें बस सहन करना होता है, उनका सामना करना होता है, और अंततः उन पर विजय पानी होती है। बेशक, जब मैंने अपनी पत्नी के साथ यह बात साझा की, तो मेरे मन में मुख्य रूप से नए शादीशुदा जोड़े थे। मेरा मानना है कि शादी के पहले तीन या चार सालों के दौरान, जोड़ों के सामने अनिवार्य रूप से ऐसे पल आते हैं—शायद कई बार—जब उन्हें तलाक़ लेने की ज़बरदस्त इच्छा महसूस होती है। मेरा पक्का विश्वास है कि यदि वे उन नाज़ुक पलों में ईश्वर का सहारा लेते हैं—पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करते हैं और शक्ति के लिए उन पर निर्भर रहते हैं—तो वे उन संकटों को सफलतापूर्वक सहन कर सकते हैं, उनका सामना कर सकते हैं, और उन पर विजय पा सकते हैं। हालाँकि, मेरा यह मानना नहीं है कि यह सिद्धांत केवल नए शादीशुदा जोड़ों पर ही लागू होता है। आज के समाज में—

जहाँ "ट्वाइलाइट डिवोर्स" (जीवन के बाद के पड़ाव में तलाक़) जैसी घटनाएँ तेज़ी से आम होती जा रही हैं—मुझे एहसास होता है कि वैवाहिक रिश्ते में निहित संकट किसी भी तरह से केवल उन लोगों तक सीमित नहीं हैं जिन्होंने अभी-अभी शादी की है। अपनी दौड़ के ज़रिए, मैं सीख रहा हूँ कि उन मुश्किल बाधाओं को *कैसे* सहन किया जाए, उनका सामना किया जाए और उनसे आगे बढ़ा जाए—और ठीक यही बात मैंने अपनी पत्नी के साथ शेयर की। यहाँ "शादी में आने वाले संकटों पर काबू पाने" के लिए सिर्फ़ तीन सिद्धांत—या शायद तरीके?—दिए गए हैं, जो मेरे मन में अपने आप आ गए (हाहा):

(1) बुनियाद पर वापस लौटें—उस पक्की सच्चाई पर—कि प्रभु ने, अपनी दिव्य संप्रभुता में, हमें पति-पत्नी के रूप में एक साथ मिलाया है।

हमारे मामले में, यह प्रभु ही थे जिन्होंने हमारे अंदर यह पक्का विश्वास जगाया। फिर भी, जब मैं अपनी शादीशुदा ज़िंदगी पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि—पूरी तरह से इंसानी नज़रिए से—हमने यकीनन अपने हिस्से के संकटों का सामना किया। फिर भी, उन सभी समयों के दौरान, प्रभु ने मुझे जो एक कृपा दी, वह थी मानसिक रूप से "समय में पीछे जाने" की क्षमता। मैं इस बात पर गहराई से सोचता था कि प्रभु ने मेरी पत्नी और मुझे एक साथ कैसे मिलाया—दो ऐसे लोग जो, सभी इंसानी पैमानों के हिसाब से, कभी मिल ही नहीं पाते—और हमें एक करके "एक तन" बना दिया।

(2) इस वादे पर मज़बूती से टिके रहें कि प्रभु खुद अपना घर बनाते हैं।

मैं मत्ती 16:18 के शब्दों को अपने पारिवारिक जीवन में इस खास तरीके से लागू करता हूँ। मेरा मानना है कि इस वादे को सच में समझने और परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए, मेरी पत्नी और मुझे सबसे पहले एक गहरी समझ से गुज़रना होगा—जो अक्सर शादी के संकटों के ज़रिए आती है—कि हम अपनी शादी या अपने परिवार को अपनी खुद की ताकत पर बनाने में पूरी तरह से असमर्थ और

शक्तिहीन हैं। हमें अपने अहंकार को टूटने देना होगा। ऐसा लगता है कि तभी हम घुटनों के बल गिरते हैं और प्रभु को पुकारते हैं। और जब हम पुकारते हैं, मत्ती 16:18 के वादे को थामे हुए, तो हम यह विनती करते हैं: "हे प्रभु, मैं हमारे शादी के रिश्ते को नहीं बना सकता, न ही मैं हमारे परिवार को बना सकता हूँ; लेकिन क्योंकि तूने वादा किया है कि *तू* इसे बनाएगा, इसलिए कृपया इसे बना—अपने ही समय में और अपने ही तरीके से।"

(3) एक विनम्र दिल के साथ—न सिर्फ़ प्रभु के सामने, बल्कि अपने जीवनसाथी के सामने भी—धीरे से उन सभी गलतियों या कमियों को स्वीकार करें और मान लें जो प्रभु ने आपको दिखाई हैं; और अपने जीवनसाथी से प्रभु के ही प्रेम के साथ प्रेम करने और उसका सम्मान करने का अपना वादा फिर से दोहराएँ। मेरा मानना है कि यह तीसरा सिद्धांत—या विधि—दूसरे सिद्धांत की नींव के बिना अमल में लाना बिल्कुल असंभव है।

अंकित प्रेम शैलियाँ

हाल ही में मुझे उपहार के रूप में जो किताबें मिली हैं—और जिन्हें मैं अभी पढ़ रहा हूँ—उनमें से एक किताब वैवाहिक रिश्ते के भीतर प्रेम की प्रकृति की पड़ताल करती है। कल रात, शनिवार की शाम को, मैं इस किताब को तब तक पढ़ता रहा जब तक मुझे नींद नहीं आ गई; ऐसा करते हुए, मैं लेखक द्वारा प्रस्तुत दो अवधारणाओं से विशेष रूप से प्रभावित हुआ: "प्रेम शैली" (love style) और "अंकित कमी" (imprinted deficit) (जहाँ "कमी" या "deficit" को "किसी गायब या दोषपूर्ण घटक के कारण उत्पन्न अपूर्णता की स्थिति" के रूप में परिभाषित किया गया है—जैसा कि Naver Dictionary में बताया गया है)। परिणामस्वरूप, आज रविवार की सुबह—भोर होते ही चर्च के पादरी कार्यालय पहुँचकर, और इंस्टेंट नूडल्स, चावल और किमची का हल्का नाश्ता करने के बाद—मैं इन दोनों अवधारणाओं को "अंकित प्रेम शैली" शीर्षक के तहत मिलाकर अपने व्यक्तिगत विचारों को व्यवस्थित करने के लिए यहाँ उपस्थित हूँ।

1. मेरी पत्नी और मैं—एक विवाहित जोड़े के रूप में—स्वाभाविक रूप से अलग-अलग "प्रेम शैलियाँ" रखते हैं। इसका कारण यह है कि, जिस क्षण हमने इस दुनिया में जन्म लिया, हममें से प्रत्येक ने अपने-अपने माता-पिता से प्रेम की अलग-अलग शैलियों को देखा और सीखा—शायद बिना सचेत रूप से इसका एहसास किए भी।

2. उदाहरण के लिए, जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मेरे माता-पिता जिस तरह से मेरे प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते थे, उसमें काफी अंतर था। मेरी माँ मुझसे बिना शर्त प्रेम करती थीं; मेरे शुरुआती बचपन के दौरान, उनका प्रेम अत्यधिक आत्म-बलिदान से भरा था—उन्होंने मेरी खातिर बहुत कष्ट सहे (यह

तथ्य मुझे अपनी यादों से नहीं, बल्कि बाद में उनके द्वारा बताई गई बातों से पता चला)। बाद में, मेरे किशोरावस्था के दौरान, मेरी माँ से मुझे जो प्रेम महसूस हुआ, वह कुछ हद तक अत्यधिक लगा—लगभग स्नेह की अति। इसके विपरीत, मेरे पिता का मेरे प्रति प्रेम काफी हद तक मौन और स्पष्ट अभिव्यक्ति से रहित था।

3. इस प्रकार, माता-पिता के प्रेम की इन अलग-अलग शैलियों को देखते हुए बड़े होने के कारण, मैं अपनी स्मृति में उस प्रेम से संबंधित एक "अंकित कमी" (imprinted deficit) लिए हुए हूँ—अपूर्णता की एक ऐसी भावना जो कुछ ऐसे पहलुओं से उत्पन्न होती है जो या तो गायब थे या दोषपूर्ण थे। उन कमियों में से, जो बात मेरी स्मृति में सबसे गहराई से अंकित है, वह उन समयों से संबंधित है जब मेरे माता-पिता आपस में बहस करते थे—विशेष रूप से, उनके बीच होने वाले वैवाहिक झगड़े। जब भी वे आपस में झगड़ते थे, तो मेरी माँ लगातार उन शिकायतों को ज़ाहिर करती थीं कि उन्हें अतीत में मेरे पिता से वह प्रेम कभी नहीं मिला, जिसकी उन्हें अपेक्षा थी। जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मैं अपनी माँ की अपने पिता से बार-बार शिकायत करने की आवाज़ को कभी नहीं भूल पाया—और इसका कारण यह है कि मुझे उन शिकायतों को सुनना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। उस समय, मुझे कुछ भी समझ नहीं आता था। मुझे नहीं पता था कि मेरी माँ अपने पिता से इतनी ज़्यादा शिकायतें क्यों करती थीं। बहुत बाद में जाकर मुझे इसका असली कारण समझ आया: मेरी माँ के मन में अपने पति के साथ वैवाहिक रिश्ते को लेकर बहुत सारी अनसुलझी बातें दबी हुई थीं। नतीजतन, मुझे यह लगने लगा कि जब भी उन दोनों के बीच कोई झगड़ा होता, तो वह बस अतीत की उन पुरानी बातों को—अपनी यादों से सीधे निकालकर—अपने पति के सामने रख देती थीं। इसलिए, अपनी शादी से पहले, पादरी एच. नॉर्मन राइट की किताबें पढ़ते समय, मुझे एक बात ने बहुत प्रभावित किया: "खुद को अतीत से आज़ाद करने का पक्का इरादा करो।" इससे मुझे अपने दिल में एक पक्का संकल्प लेने की प्रेरणा मिली: "अगर मैं कभी शादी करूँगा, तो मैं अपनी प्यारी पत्नी के साथ इस तरह रहने की कोशिश करूँगा कि हमारे वैवाहिक झगड़े, जैसे-जैसे सामने आते जाएँ, हम उन्हें उसी दिन सुलझाते जाएँ। ऐसा करके, मैं यह पक्का करूँगा कि उसके दिल में कोई भी अनसुलझी बात जमा न हो, जिससे उसे कभी भी वैवाहिक मनमुटाव के समय शिकायत करने का कोई मौका ही न मिले।" और

इस तरह, भगवान की कृपा से, जब मैं अपनी पत्नी से मिला और हमारी शादी हुई, तो मैंने यह पक्का इरादा किया—और सचमुच पूरी कोशिश की—कि मैं वह सब कुछ करूँगा जिससे उसे कभी भी असंतोष और शिकायत की स्थिति का सामना न करना पड़े, जैसा कि मेरी माँ को अपने पति के प्यार में कमी महसूस होने के कारण करना पड़ा था। सबसे बढ़कर, मेरी दिली इच्छा थी कि मेरी पत्नी, पति-पत्नी के रूप में हमारे साथ बिताए जीवन में, अतीत से सच्ची आज़ादी का अनुभव करे।

4. हालाँकि, हमारी शादी के तुरंत बाद—जब हम अभी भी अपने हनीमून पर थे—मेरी पत्नी और मेरे बीच एक बहुत बड़ा झगड़ा हो गया। इसे झगड़ा कहना सही नहीं होगा, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि गलती मेरी थी और अंत में मुझे अपनी पत्नी से एकतरफ़ा डांट खानी पड़ी। इसका कारण यह था: मेरी पत्नी के नज़रिए से—चूँकि हम हनीमून पर थे और हमने एक कार भी किराए पर ली हुई थी—वह बाहर जाकर अलग-अलग जगहों पर घूमना चाहती थी। लेकिन, मैं तो बस होटल में ही रहना चाहता था; इसलिए, मैं लॉबी में बनी वीडियो रेंटल की दुकान पर गया, एक फ़िल्म किराए पर ली, और उसे अपने कमरे में बैठकर देखने लगा। ज़ाहिर है, मेरी पत्नी बहुत गुस्सा थी! उसकी शिकायतों की बौछार सुनने से बचने के लिए, मैं बस होटल के कमरे की बालकनी में चला गया और दरवाज़ा अपने पीछे बंद कर लिया। लेकिन वह मेरे पीछे-पीछे वहाँ भी आ गई और अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करती रही; जवाब में, मैंने अपने हाथ में पकड़ी किताब से अपना चेहरा ढक लिया—ताकि मुझे उसका चेहरा न दिखे और साथ ही यह भी पक्का हो जाए कि उसे मेरा चेहरा न दिखे। कोई कह सकता है कि यह हमारी शादी में पहला "गहरा घाटा" था। यह बात कि मुझे आज भी वह घटना इतनी साफ़ और स्पष्ट रूप से याद है—भले ही लगभग 28 साल बीत चुके हैं—यह दिखाती है कि वह मेरी यादों में कितनी गहराई से बस गई थी। प्यार जताने का मेरा तरीका मेरी पत्नी के तरीके से कितना अलग था, यह इसी बात से पता चलता है। दूसरे शब्दों में, मेरी पत्नी जिस तरह से प्यार पाना चाहती थी और जिस तरह से मैं प्यार दे सकता था, उन दोनों के बीच एक बड़ा फ़र्क था। मेरी नज़र में, हमारे प्यार करने के तरीके—या ढंग—इतने अलग इसलिए थे क्योंकि हम बुनियादी तौर पर अलग-अलग इंसान हैं: हम सिर्फ़ मर्द और औरत होने की वजह से ही अलग नहीं हैं, बल्कि हम बहुत

अलग-अलग माहौल में पले-बढ़े हैं और हमारे माता-पिता का हम पर बहुत अलग-अलग असर पड़ा है।

5. मेरी राय में—भले ही इस बारे में मेरी पत्नी का नज़रिया मुझसे अलग हो—मेरा मानना है कि मर्दों और औरतों के बीच के बुनियादी फ़र्कों के अलावा, हमारे रिश्ते पर दो और बातों का बहुत गहरा और साफ़ असर पड़ा है: "जेम्स" और "जेन" के तौर पर हमारे अपने-अपने फ़र्क, और प्यार पाने और जताने के हमारे तरीकों में मौजूद अलग-अलग "कमियाँ"—ऐसी कमियाँ जो हमारे अपने माता-पिता की वजह से हममें घर कर गई थीं। इसका एक ऐसा उदाहरण जो मैं कभी नहीं भूल सकता, वह एक घटना है जो तब हुई थी जब हमारा परिवार कुछ समय के लिए कोरिया में रह रहा था; एक दिन, मेरे और मेरी पत्नी के बीच हमारे प्यारे बेटे को लेकर एक झगड़ा हो गया। उस झगड़े की जड़ हमारी अलग-अलग उम्मीदें थीं: मैं चाहता था कि जब मेरा बेटा किंडरगार्टन जाए, तो वह दूसरे बच्चों के आगे झुकना सीखे, जबकि मेरी पत्नी चाहती थी कि वह अपनी इच्छाओं को आज़ादी से पूरा करे—बिना किसी रोक-टोक के—न कि हर बार दूसरों के आगे झुकता रहे। मुझे इस फ़र्क की असली वजह तब समझ आई, जब मेरी पत्नी के साथ वह झगड़ा हो चुका था। नतीजतन, उस पल से, मुझे यह विश्वास होने लगा कि वैवाहिक कलह में वास्तव में कुछ मूल्य छिपा होता है (यह एक ऐसा विचार था जिससे मैं पहले भी परिचित था—हालांकि पूरी तरह समझ नहीं पाया था—जब मैं रेडियो पर किसी पादरी का उपदेश या भाषण सुन रहा था)। वह मूल्य इस बात में निहित है कि, हमारी वैवाहिक कलहों के माध्यम से, मैं उन विशिष्ट और भिन्न प्रभावों को पहचान पाया जो हमारे माता-पिता ने हमारी परवरिश के दौरान हम पर डाले थे। दूसरे शब्दों में, जहाँ मेरी परवरिश मेरे पिता के प्रभाव में इस सोच के साथ हुई थी कि इंसान को दूसरों के आगे झुकना चाहिए, वहीं मेरी पत्नी—सबसे बड़ी बेटी होने के नाते—ने अपना पूरा जीवन अपने माता-पिता के आगे झुकते हुए बिताया था (और, परिणामस्वरूप, वह शायद ही कभी अपनी इच्छाओं को पूरा कर पाई थी); इसलिए, वह नहीं चाहती थी कि उसके प्यारे बेटे का भी वही हश्र हो—कि वह भी ऐसी ज़िंदगी जिए जहाँ वह अपनी मर्ज़ी का कुछ भी न कर पाए, क्योंकि वह हमेशा दूसरों के आगे झुकता रहे।

6. इस तरह, हमारी वैवाहिक कलहों के माध्यम से, मेरी पत्नी और मुझे एक गहरी समझ हासिल होने लगी—न केवल एक व्यक्ति के तौर पर हमारे बीच के मतभेदों की, बल्कि प्यार में उन विशिष्ट "कमियों" की भी, जो हम दोनों के मन पर बचपन से ही अंकित हो गई थीं। नतीजतन, मेरे जीवनसाथी और मैंने इस तथ्य को पहचानना, स्वीकार करना और अपनाना शुरू कर दिया कि—चूँकि हम एक-दूसरे से जिस तरह के प्यार की उम्मीद करते थे, उस शैली को लेकर हमारी अपेक्षाएँ इतनी ज़्यादा अलग थीं—इसलिए हमारे मामले में, वैवाहिक कलह होना अनिवार्य था। मेरा अंदाज़ा है कि इस मुकाम तक पहुँचने में हमें लगभग बीस साल लग गए! दूसरे शब्दों में कहूँ तो, मैं यह कहूँगा कि हमारे दिल कठोर—या शायद "अड़ियल"—हो गए थे; ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि हम दोनों के मन पर प्यार की अपनी-अपनी शैलियाँ अंकित थीं, और हमारे अतीत ने हम पर प्यार की कुछ गहरी कमियाँ भी अंकित कर दी थीं।

7. तभी प्रभु ने हमें—मेरे जीवनसाथी और मुझे—इस काबिल बनाया कि हम एक-दूसरे के प्यार की अंकित शैलियों और कमियों को ठीक वैसे ही स्वीकार कर सकें जैसी वे थीं; हम उन्हें अपना सकें, और एक-दूसरे से सच्चा प्रेम कर सकें। तभी हमने प्यार की एक ऐसी साझा शैली की खोज की जो केवल हम दोनों के लिए ही अनूठी थी; हमने मिलकर उस शैली को संवारना शुरू किया, और हमने उस साझा शैली का सम्मान करना सीखा। हालाँकि, प्यार का यह साझा अंदाज़ हम दोनों में से किसी एक को भी शायद 100% अपनी पसंद का न लगे, फिर भी अनगिनत झगड़ों से गुज़रते हुए—और एक-दूसरे के मन में बसे प्यार के तरीकों को समझना सीखते हुए—हमने उन व्यक्तिगत तरीकों का कुछ हद तक सम्मान करना सीख लिया है, और साथ ही प्यार का एक ऐसा अंदाज़ भी गढ़ लिया है जो पूरी तरह से हमारा अपना है। और पवित्र आत्मा लगातार प्यार के इस साझा अंदाज़ को हम दोनों में से हर एक के दिल पर अंकित करती जा रही है।

'बचने वाला' (Avoider) प्रेम-अंदाज़

हाल ही में, मैं एक किताब पढ़ रहा हूँ जो मुझे तोहफ़े में मिली थी। इस किताब का शीर्षक है *How We Love* (मिलान और के यर्कोविच द्वारा लिखित)। इस किताब का मुख्य विषय है: "अपने प्रेम-अंदाज़ को पहचानें, अपनी शादी को बेहतर बनाएँ।" जैसे-जैसे मैं किताब पढ़ता गया, खासकर पाँचवाँ अध्याय जिसका शीर्षक था "The Avoider Love Style" (बचने वाला प्रेम-अंदाज़), तो मुझे बार-बार यह ख्याल आता रहा, "यह तो मेरे ही बारे में है।" इसलिए, मैं इस मौके का फ़ायदा उठाते हुए—जब मैं "The Avoider Love Style" वाले हिस्से को दोबारा पढ़ रहा हूँ—अपने आप पर थोड़ा विचार करना चाहता हूँ।

1. मैं एक 'बचने वाला' (avoider) इंसान हूँ। मुझे इंसानी रिश्तों में अक्सर पैदा होने वाले झगड़े और आपसी तकलीफ़ें बिल्कुल पसंद नहीं हैं, इसलिए जब भी मुमकिन होता है, मैं उनसे बचने की कोशिश करता हूँ। नतीजतन, मैंने अपनी पूरी शादीशुदा ज़िंदगी में शादी से जुड़े झगड़ों का सामना करने से ज़्यादातर परहेज़ ही किया है—और मैं अब भी ऐसा ही कर रहा हूँ। ऐसा करते हुए, मैंने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी को अपनी भावनाओं को लगातार दबाकर और घोंटकर जिया है। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, असल में मेरी पत्नी की वजह से ही मुझे यह एहसास हुआ कि मेरे अंदर "अंदरूनी गुस्सा" पल रहा है। उस समय तक, मेरा मानना था कि मैं असल में गुस्सा नहीं हो रहा हूँ, बल्कि बस सब्र से काम ले रहा हूँ। नतीजा यह हुआ कि जब भी शादी से जुड़ा कोई झगड़ा होता, तो मैं खुद को यह कहकर धोखा देता कि मैं तो बस "बात को अपने अंदर दबा रहा हूँ," जबकि अंदर ही अंदर मैं गुस्से से उबल रहा होता था; फिर भी, मैं किसी न किसी तरह—चाहे वह कितना भी घुमावदार तरीका क्यों न हो—उस गुस्से को अपनी पत्नी पर निकालने का कोई न कोई रास्ता ढूँढ़ ही लेता था। इस तरह, अपनी ज़िंदगी में पहली बार—और एक बार फिर, इसका श्रेय मेरी पत्नी को ही जाता है—मुझे यह

एहसास हुआ कि मैं एक "पैसिव-अग्रेसिव" (अप्रत्यक्ष रूप से गुस्सा दिखाने वाला) इंसान हूँ। (हाहा।) संक्षेप में कहूँ तो, मुझे पता चला कि मेरा अंदाज़ अपनी पत्नी पर परोक्ष रूप से हमला करने का है। (हाहा।) मैं ऐसा सीधे तौर पर इसलिए नहीं कर पाता क्योंकि मेरी शख़्सियत "सामना करने वाली" (confrontational) नहीं है। जब शादी से जुड़े झगड़े होते हैं, तो मेरा तरीका यह होता है कि मैं चुप हो जाता हूँ, अपने गुस्से में अंदर ही अंदर सुलगता रहता हूँ, और अपनी पत्नी पर परोक्ष रूप से हमला करता हूँ—बजाय इसके कि मैं खुलकर और सीधे तौर पर उसका सामना करूँ। मैं उस तरह का इंसान हूँ जिसे अपनी पत्नी के सामने अपने गुस्से वाली भावनाओं को सीधे तौर पर ज़ाहिर करने में असहज महसूस होता है। नतीजतन, बाइबल की जिन आयतों के साथ मैं अक्सर जूझता रहता हूँ, उनमें से एक है नीतिवचन (Proverbs) 27:5: "छिपे हुए प्रेम से, खुली हुई डांट बेहतर है।"

2. मुझ जैसे किसी व्यक्ति के लिए, *How We Love* किताब में "The Avoider Love Style" (टालने वाला प्रेम-अंदाज़) शीर्षक वाला हिस्सा—खास तौर पर लेखक का इस अंदाज़ का वर्णन—मुझे किताब को दोबारा पढ़ने, अपने खुद के व्यवहार पर गहराई से सोचने और पूरी ईमानदारी से उसके बारे में लिखने के लिए प्रेरित करता है। यह किताब "Avoider Love Style" को "अत्यधिक-स्वतंत्र" (hyper-independent) बताती है, और मैं निश्चित रूप से इस बात से सहमत हूँ। एक "टालने वाले" (avoider) के तौर पर, मुझे अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने और अकेले ही फ़ैसले लेने की आदत है। मैं स्थितियों का आकलन करने, नतीजे निकालने और समस्याओं को सुलझाने के लिए किसी और से सलाह लेने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता। नतीजतन, मैं न केवल अपने लिए, बल्कि अपनी पत्नी और बच्चों के लिए भी यही चाहता हूँ कि वे स्वतंत्र व्यक्ति बनें। हालाँकि—मेरे मामले में—क्योंकि मैं "अत्यधिक-स्वतंत्र" हूँ (शायद *बहुत ज़्यादा* स्वतंत्र), मुझे लगता है कि मेरी पत्नी के नज़रिए से, उसे शायद अकेलापन और अलग-थलग होने का एहसास होता होगा। जैसा कि किताब में कहा गया है: "टालने वाले लोगों के जीवनसाथी कहते हैं कि उन्हें कभी-कभी ऐसा लगता है जैसे उन्हें जान-बूझकर नज़रअंदाज़ किया जा रहा है।"

3. जो लोग "Avoider Love Style" दिखाते हैं—मुझ जैसे लोग—वे आम तौर पर "कमज़ोरी, भावनाएँ, दूसरों पर निर्भरता और ईमानदारी से खुद का आकलन करने से, जिससे आत्म-जागरूकता आती

है," दूर रहते हैं। फिर भी, मैंने हमेशा खुद को ऐसा व्यक्ति माना है जो ईमानदारी और सच्चाई से खुद का आकलन करता है—और जो अपनी कमज़ोरियों को दूसरों के साथ बाँटने को तैयार रहता है। हालाँकि, कुछ समय बाद, मेरी पत्नी ने मुझसे कहना शुरू कर दिया कि मैं ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपनी कमज़ोरियों को पूरी तरह और ईमानदारी से दूसरों के साथ नहीं बाँटता। सच कहूँ तो, अपने मन की गहराई में, मैं अब भी उसकी इस बात से सहमत नहीं हो पाता हूँ। मुझे सच में ऐसा लगता है कि मैं *सचमुच* ऐसी ज़िंदगी जी रहा हूँ जिसमें मैं अपनी कमज़ोरियों को खुलकर दूसरों के साथ बाँटता हूँ। फिर भी, जब मैं बार-बार "टालने वाले प्रेम-अंदाज़" के बारे में लिखे लेख पढ़ता हूँ—खास तौर पर वह हिस्सा जिसमें बताया गया है कि ऐसे लोग अपनी कमज़ोरियों से कैसे बचते हैं—और जब मैं ईमानदारी से खुद का और ज़्यादा आकलन करता हूँ, तो मुझे यह सच मानना ही पड़ता है: मैं अपनी *असली* कमज़ोरियाँ किसी के साथ नहीं बाँटता, उन्हें केवल प्रार्थना के ज़रिए भगवान को ही बताता हूँ।

4. मुझ जैसे किसी व्यक्ति के लिए—जो "टालने वाले प्रेम-अंदाज़" में फिट बैठता है—यह मुमकिन है कि उसका "भावनात्मक जीवन पूरी तरह से विकसित न हुआ हो।" इसकी जड़ें शायद मेरी परवरिश में हैं, जिसके दौरान मुझे अपने पिता से बहुत कम शारीरिक स्नेह मिला और मेरे माता-पिता के साथ मेरा कोई सही भावनात्मक जुड़ाव नहीं बन पाया। नतीजतन, आज भी, अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते में, मैं अपनी भावनाओं को दबाकर रखता हूँ और दूसरों के सामने अपनी ज़रूरतों को ज़ाहिर करने से कतराता हूँ। इस तरह, ज़िंदगी की राह पर चलने के लिए मेरा अपना तरीका "आत्म-निर्भरता" ही जान पड़ता है।

5. जब "बचने वाले प्रेम-अंदाज़" (avoidant love style) वाले लोग—मेरी ही तरह—गुस्सा या परेशानी महसूस करते हैं, तो हम खुद को सबसे अलग कर लेते हैं। इसके अलावा, अपनी पूरी ज़िंदगी में "भावनाओं को महसूस न करने की कला" में माहिर हो जाने के कारण, मुझे कोई भी बड़ी बेचैनी महसूस होने में आमतौर पर बहुत ज़्यादा तनाव झेलना पड़ता है। यही नहीं, क्योंकि मेरी तरह बचने वाले लोग रिश्तों से हटकर दूसरे तरीकों—जैसे कसरत, काम या खेल-कूद—से सुकून पाना सीख

चुके होते हैं, इसलिए जब मेरी प्यारी पत्नी परेशान होती है, तो मैं यह मानकर चलता हूँ कि वह अपनी समस्या खुद ही पूरी तरह से सुलझा लेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं अपनी ज़िंदगी इसी तरह जीता हूँ। (मेरी तरह बचने वाला इंसान रिश्तों से हटकर दूसरे तरीकों—जैसे कसरत, काम और खेल-कूद—से खुद को सुकून देना सीख चुका होता है; इसलिए जब मेरी पत्नी भावनात्मक रूप से परेशान होती है, तो मैं उससे यह उम्मीद कर सकता हूँ कि वह अपनी समस्या खुद ही सुलझा लेगी, क्योंकि मैं खुद भी ऐसा ही करता हूँ।)

6. मेरा 'बचने वाला प्रेम-अंदाज़' बहुत ज़्यादा आत्म-निर्भर होता है; इसलिए मैं हर चीज़ की बागडोर अपने हाथ में रखना चाहता हूँ, ताकि दूसरों को खुद से एक सुरक्षित दूरी पर रख सकूँ और अपनी भावनाओं पर अपना पूरा नियंत्रण बनाए रख सकूँ। यही वजह है कि मेरा मानना है कि मुझे न सिर्फ दूसरों के साथ, बल्कि अपने बच्चों और अपनी पत्नी के साथ भी 'स्वस्थ सीमाएँ' (healthy boundaries) तय करनी चाहिए—और मैं ऐसा कर भी रहा हूँ। ये 'स्वस्थ सीमाएँ' ही शायद वह 'सुरक्षित दूरी' हैं, जिसकी मुझे चाहत है। शायद इसकी वजह यह है कि मेरी दबी हुई भावनाएँ अब और ज़्यादा चोट नहीं खाना चाहतीं। अगर मुझे अपनी कमज़ोरी या भावनाओं को ज़ाहिर करने के लिए मजबूर किया जाए, तो मैं शायद झुंझलाहट के साथ प्रतिक्रिया दूँगा और दूसरों को खुद से दूर धकेल दूँगा।

7. इस तरह, *HOW WE LOVE* (हाऊ वी लव) किताब में लेखक द्वारा लिखे गए लेख—जिसका शीर्षक "The Avoider Love Style" (बचने वाला प्रेम-अंदाज़) था—को दोबारा पढ़ते हुए मैंने खुद का गहराई से आत्म-निरीक्षण किया। तो फिर, अब आगे से मुझे अपनी पत्नी से किस तरह प्यार करना चाहिए?

8. मैं अपनी पत्नी के सामने अपने विचारों और भावनाओं को और भी ज़्यादा सीधे और सच्चे तरीके से ज़ाहिर करने की आदत डालने की कोशिश कर रहा हूँ। उदाहरण के लिए, जब मेरी पत्नी की किसी बात से मुझे ठेस पहुँचती है, तो मैं आम तौर पर चुप रहता हूँ और अपनी नाराज़गी—यह संकेत देते

हुए कि "मैं अभी नाराज़ हूँ"—बिना कुछ कहे-सुने (non-verbal cues) ज़ाहिर करता हूँ। मैं इस व्यवहार के प्रति ज़्यादा जागरूक होने और इसे धीरे-धीरे कम करने की कोशिश कर रहा हूँ; इसके बजाय, मेरा इरादा है कि मैं लगातार यह प्रयास करूँ कि अपनी पत्नी के साथ उसी पल में, समझदारी और ईमानदारी से अपने विचार और भावनाएँ साझा करूँ।

9. मैं अपनी पत्नी का सामना करने में बहुत अच्छा नहीं हूँ। मेरे नज़रिए से, जब हमारे विचारों में मतभेद होता है तो मैं झगड़े से इसलिए बचता हूँ क्योंकि कभी-कभी मुझे लगता है, "मैं चाहे अपने विचार कितनी भी ज़ोर से क्यों न रखूँ, मेरी पत्नी मुझे समझने के लिए सचमुच नहीं सुनेगी; इसके बजाय, वह बस अपनी ही मज़बूत राय पर अड़ी रहेगी।" खासकर, जब भी हमारे बच्चे आस-पास होते हैं, तो मैं अपनी पत्नी के साथ झगड़े से लगभग हमेशा ही बचता हूँ। इसका कारण यह है कि मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं है कि हमारे बच्चे अपने माता-पिता को झगड़ते हुए देखें। नतीजतन, मुझे लगता है कि हमारे बच्चों को शायद यह लगने लगा है कि जब भी मम्मी और पापा के बीच कोई असहमति होती है, तो पापा हमेशा पीछे हट जाते हैं। शायद मुझे अपनी सोच बदलने की ज़रूरत है; अपनी पत्नी के साथ मुद्दों से बचते रहने के बजाय, मुझे उनका सीधे सामना करना चाहिए और अपने बच्चों को यह दिखाना चाहिए कि रचनात्मक बातचीत (constructive dialogue) कैसी दिखती है। मुझे ईश्वर की कृपा और मदद की ज़रूरत है।

10. मैं चाहता हूँ कि न केवल मुझमें, बल्कि मेरी पत्नी और बच्चों में भी आज़ादी की एक मज़बूत भावना हो। हालाँकि, मैं खुद को "अत्यधिक आज़ाद" (hyper-independent) व्यक्ति नहीं मानता—यानी, ऐसा व्यक्ति जो हद से ज़्यादा आज़ाद हो। फिर भी, जब मैं देखता हूँ कि मेरी पत्नी कभी-कभी थोड़ा अकेला महसूस करती है, तो मुझे लगता है कि मुझे अपनी आज़ादी थोड़ी कम करने की कोशिश करनी चाहिए; इसके बजाय, मुझे ऐसा व्यक्ति बनने का लक्ष्य रखना चाहिए जो अपनी पत्नी से बातचीत करे, मिलकर फ़ैसले ले, और हमारी समस्याओं को सुलझाने में उसके साथ मिलकर काम करे।

लोगों को खुश करने वाले व्यक्ति की प्रेम शैली

कल रात सोने से पहले मैंने अपनी प्रिय पत्नी के साथ उस लेख के बारे में बातचीत की, जो मैंने "परहेज़ करने वाले व्यक्ति की प्रेम शैली" (The Avoider Love Style) पर लिखा था। मेरी पत्नी भी इस बात से सहमत थी कि मैं "hyper-independent" (अत्यधिक/ज़रूरत से ज़्यादा स्वतंत्र) हूँ और मैं अपने लिए बहुत स्पष्ट सीमाएँ खींचता हूँ। इस ईमानदार बातचीत के दौरान मैंने अपनी पत्नी से खुलकर कहा, "मुझे खुद भी नहीं पता कि मैं ऐसा क्यों हूँ।" तब मेरी पत्नी ने मुझे अपनाते हुए कहा, "It's okay. God knows" (कोई बात नहीं। परमेश्वर जानते हैं)। उसकी इस एक बात से मुझे बहुत सांत्वना मिली।

हालाँकि मैं "HOW WE LOVE" (हम कैसे प्रेम करते हैं) नामक पुस्तक पढ़ते हुए, विशेषकर अध्याय 5 में लेखक द्वारा बताए गए "The Avoider Love Style" (परहेज़ करने वाले व्यक्ति की प्रेम शैली) को पढ़कर ऐसा महसूस कर रहा था जैसे वह मेरे बारे में ही लिख रहे हों। इसलिए मैंने उसे दोबारा पढ़ा, स्वयं पर लागू करके आत्म-चिंतन किया, और अपने बारे में थोड़ा और जानने की कोशिश की। फिर भी, मैं अभी तक स्वयं को पूरी तरह नहीं समझ पाया हूँ। लेकिन मेरी प्रिय पत्नी की इस बात से कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता परमेश्वर, जिन्होंने मुझे बनाया है, मुझे सबसे अच्छी तरह जानते हैं — मुझे सांत्वना और शक्ति दोनों मिलीं।

कल पत्नी के साथ बातचीत के दौरान मैंने उससे कहा कि "HOW WE LOVE" पुस्तक का अध्याय 5 "The Avoider Love Style" है, और वह मुझे अपने बारे में लगता है। लेकिन अगला अध्याय, अध्याय 6, "The Pleaser Love Style" (लोगों को खुश करने वाले व्यक्ति की प्रेम शैली) है। तब उसने उत्तर दिया, "That's me" (वह तो मैं हूँ)। हाहा। वास्तव में, जब मैं अध्याय 6 पढ़ रहा था, तब मुझे अपनी पत्नी की याद आ रही थी। इसलिए जब उसने ऐसा कहा, तो मैंने उस अध्याय को फिर से पढ़ते हुए एक पति के रूप में अपनी पत्नी के बारे में और सोचने का प्रयास किया।

उसका कारण यह है कि मैं अपनी पत्नी को और बेहतर जानना चाहता हूँ, ताकि प्रभु के प्रेम से उसकी दृष्टि से उसे प्रेम करने में थोड़ा और प्रयास कर सकूँ। (मैं आशा करता हूँ कि मेरी प्रिय पत्नी भी इस लेख को पढ़े और हम इस पर साथ में बातचीत करें। वास्तव में, कल मैं यह लेख पूरा नहीं कर पाया था, लेकिन पत्नी के साथ रात का भोजन करते समय हमने "लोगों को खुश करने वाले व्यक्ति की प्रेम शैली" पर बहुत बातचीत की। आभारी होने की बात यह है कि लगभग 28 वर्षों के वैवाहिक जीवन में, पत्नी ने पहली बार मुझे अपने बारे में कुछ ऐसी बातें सच्चाई से बताईं जिन्हें मैं पहले नहीं जानता था।)

1. कुछ बच्चों को बड़े होते समय बहुत ज़्यादा चिंता का अनुभव होता है; ऐसा कहा जाता है कि इसका कारण यह है कि उनके माता-पिता बहुत ज़्यादा सुरक्षात्मक होते हैं और उनके बारे में हद से ज़्यादा चिंता करते हैं। इसके अलावा, जो माता-पिता जल्दी गुस्सा हो जाते हैं या बहुत ज़्यादा आलोचना करते हैं—अक्सर खुद को इसका एहसास भी नहीं होता—वे यह मानसिकता अपने बच्चों में भी डाल सकते हैं; नतीजतन, बच्चे आलोचना और गुस्से से बचकर ज़िंदगी जीना सीख जाते हैं। "इस तरीके में बच्चा एक 'अच्छा लड़का' या 'अच्छी लड़की' की भूमिका निभाता है—माता-पिता या परिवार की मंज़ूरी और पहचान पाने की कोशिश करता है—और ऐसा करने के लिए वह माता-पिता को खुश करने और परिवार का तनाव कम करने की कोशिश करता है, न कि कोई परेशानी खड़ी करता है।" जब मैंने यह अंश पढ़ा, तो मुझे लगा कि मेरी पत्नी को अपने बचपन के दौरान काफ़ी चिंता का अनुभव हुआ होगा, जिसका मुख्य कारण उसकी बहुत ज़्यादा सुरक्षात्मक माँ थी, जो हर समय चिंता में डूबी रहती थी। (मेरी पत्नी के अनुसार, वह अपनी माँ से तारीफ़ के बजाय ज़्यादातर आलोचना ही सुनकर बड़ी हुई। मेरी अपनी समझ यह है कि मेरी सास ऐसा इसलिए बोलती थीं क्योंकि वह मेरी पत्नी से बहुत ज़्यादा—शायद हद से ज़्यादा—प्यार करती थीं, और इसलिए उन्होंने अपनी बेटी के लिए बहुत ऊँचे मापदंड तय कर रखे थे। नतीजतन, मेरी पत्नी को कभी भी सचमुच ऐसा महसूस नहीं हुआ कि उसे अपनी माँ से पर्याप्त मंज़ूरी या पहचान मिली है।) साथ ही, मुझे ऐसा लगता है कि अपनी माँ की मंज़ूरी और पहचान पाने की चाह में, मेरी पत्नी ने जान-बूझकर कोई परेशानी खड़ी करने से परहेज़ किया; इसके बजाय, उसने एक "आज्ञाकारी बेटी" की भूमिका अपना ली—एक ऐसी भूमिका जिसे उसने अपनी खुद की इच्छाओं का बलिदान देकर भी निभाया। ऐसा लगता है कि उसने परिवार के ज़्यादातर तनाव को खुद पर लेकर और अपने माता-पिता को खुश रखने में खुद को पूरी तरह समर्पित करके अपनी खुद की चिंता को कम करने की कोशिश की। क्योंकि उसे लगातार अपने

माता-पिता की भावनात्मक स्थिति पर नज़र रखने और उसकी ज़िम्मेदारी लेने के लिए मजबूर महसूस होता था, इसलिए शायद उसे कभी भी उस गहरी चिंता पर सोचने या उसे समझने का मौका नहीं मिला, जो अब उसकी अपनी रिश्तों की शैली को प्रभावित करती है।

2. "बड़ों के आपसी रिश्तों में 'मददगार की भूमिका' निभाने और दूसरों की ज़रूरतों को प्राथमिकता देने के पीछे असल मकसद, आखिरकार, दूसरों को अपने करीब, खुश और संतुष्ट रखकर अपनी खुद की बेचैनी को कम करना ही होता है। जब 'दूसरों को खुश रखने वाले' (people-pleaser) के आस-पास के लोग खुश होते हैं, तो वह खुद भी खुश महसूस करता है; इसके उलट, जब दूसरे नाराज़ होते हैं, तो उसे तकलीफ़ होती है। अगर दूसरे दूरी बना लेते हैं, पीछे हट जाते हैं, या नाराज़ हो जाते हैं, तो रिश्ते में एक 'खाई' पैदा हो जाती है। यह खाई उस व्यक्ति में बेचैनी पैदा कर देती है, जिससे वह इस दूरी को पाटने की कोशिश में 'पीछा करने वाले अंदाज़' (pursuit mode) में चला जाता है..." ...और खुद को एक कोने में फंसा हुआ पाता है। "लगातार सालों तक चिंता करने और हद से ज़्यादा देने के बाद, दूसरों को खुश रखने वाले लोगों में अक्सर मनमुटाव पैदा हो जाता है।" जब मैं ये शब्द पढ़ता हूँ, तो मैं अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचने लगता हूँ—खास तौर पर, उसके नज़रिए से। उसके नज़रिए से, मुझे लगता है कि वह मेरी ज़रूरतों पर ध्यान देकर और मुझे खुश करने की कोशिश करके मेरे साथ एक संतोषजनक रिश्ता बनाना चाहती है; उसके लिए, मेरी खुशी ही उसकी अपनी खुशी है। हालाँकि, हमारे बीच के मौजूदा हालात को देखते हुए, मुझे एहसास होता है कि उसके नज़रिए से—जहाँ मैं "हद से ज़्यादा आत्मनिर्भर" (hyper-independent) दिखता हूँ—जिन कामों को वह मेरे साथ मिलकर करना चाहती है, उनमें शामिल होने से मेरा ज़िद भरा इनकार हमारे बीच एक दूरी पैदा कर देता है, जो उसके लिए काफी ज़्यादा बेचैनी का सबब बन सकता है।

3. जो माता-पिता डर और चिंता के अस्वस्थ स्तर से परेशान रहते हैं, उन्हें अपने बच्चों को—जिनसे वे अक्सर हद से ज़्यादा प्यार करते हैं—खुद से अलग होने देने में मुश्किल होती है, और उन्हें बच्चों पर से अपना नियंत्रण छोड़ना कठिन लगता है। जैसा कि एक लेख में कहा गया है: "डरे हुए माता-पिता को, अपने हिसाब से दिखने वाले खतरों को कम करने के लिए, नियंत्रण की ज़रूरत होती है। कई मायनों में, यह स्थिति बच्चे को उसके अपने डर पर काबू पाना सिखाने के बारे में कम, और माता-

पिता द्वारा अपनी खुद की चिंता को कम करने की कोशिश में आगे बढ़कर पहल करने के बारे में ज़्यादा है।" इसे पढ़ने के बाद, मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे डरे हुए और चिंतित माता-पिता—जो अपने बच्चों को नुकसान से बचाने की चाहत से प्रेरित होते हैं—अपनी खुद की अंदरूनी बेचैनी को शांत करने की कोशिश में, अपने बच्चों को नियंत्रित करने या यहाँ तक कि उनके साथ हेरफेर करने का सहारा ले सकते हैं। नतीजतन, ये माता-पिता अपने बच्चों को अपने करीब रखने की हर मुमकिन कोशिश करते हैं—चाहे शारीरिक रूप से अपने पास रखकर, या आस-पास ही रहने की व्यवस्था करके। वे अपने बच्चों की "मदद" करने के लिए हद से ज़्यादा समर्पित हो जाते हैं। हर संभव तरीके से मदद करके, वे अनजाने में एक नुकसानदायक संदेश देते हैं: "तुम यह खुद से नहीं कर सकते; तुम्हें मेरी मदद की ज़रूरत है।" इस प्रकार, जो माता-पिता अपने अत्यधिक डर और चिंताओं के कारण अपने बच्चों को भरोसे के साथ खुद से अलग नहीं होने दे पाते, वे अपने बच्चों द्वारा स्वतंत्र फैसले लेने और असफलता का अनुभव करने को भी बर्दाश्त नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप, बच्चे भी अनिवार्य रूप से ऐसे व्यक्ति के रूप में बड़े होते हैं, जो खुद भी अपने डर पर काबू पाने में असमर्थ रहते हैं। आखिरकार, माता-पिता और बच्चे के बीच का रिश्ता एक-दूसरे पर अत्यधिक निर्भर (codependent) हो सकता है। ["एक को-डिपेंडेंट (परस्पर-निर्भर) रिश्ता वह होता है जिसमें एक या दोनों व्यक्ति खराब मानसिक स्वास्थ्य, अपरिपक्वता, गैर-जिम्मेदारी, या उपलब्धि की कमी से जूझ रहे होते हैं, और रिश्ते की गतिशीलता (dynamics) केवल स्थिति को और भी बदतर बनाने का काम करती है। एक या दोनों पक्ष दूसरे व्यक्ति को खुश करने की कोशिश में अपने जीवन के अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा करना शुरू कर सकते हैं। इस व्यक्ति के प्रति उनकी अत्यधिक भक्ति अन्य महत्वपूर्ण रिश्तों—जैसे कि दोस्ती—या शैक्षिक या करियर के अवसरों, या यहाँ तक कि दैनिक जिम्मेदारियों को भी नुकसान पहुँचा सकती है। जो लोग को-डिपेंडेंट महसूस करते हैं, या जो ऐसे लक्षण दिखाने वाले किसी व्यक्ति पर निर्भर होते हैं, उन्हें एक समान और आपसी रिश्ता बनाए रखने में संघर्ष करना पड़ सकता है। दूसरे व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाय, वे अक्सर उस व्यक्ति के आत्म-बलिदान या उसकी ज़रूरतों पर निर्भर हो जाते हैं... यह व्यक्ति या जोड़े के विकास में बाधा डालता है, जिससे स्वतंत्र सोच या कार्य के लिए बहुत कम गुंजाइश बचती है" (इंटरनेट स्रोत)।]

4. मेरा मानना है कि जो बच्चे अपने माता-पिता द्वारा बनाए गए “सुरक्षित घोंसले” को छोड़ने में असमर्थ होते हैं, वे—चाहे मानसिक रूप से हों या भावनात्मक रूप से—ऐसे माता-पिता द्वारा बंदी बनाकर रखे जाते हैं जो स्वयं चिंता और भय से घिरे होते हैं; परिणामस्वरूप, इस अस्वस्थ माता-पिता-बच्चे के रिश्ते के कारण, ये बच्चे कभी भी सच्ची स्वतंत्रता का पूरी तरह से अनुभव किए बिना जीवन बिताने के लिए अभिशप्त हो जाते हैं। मैं ऐसे भय और चिंता से ग्रस्त माता-पिता का अपने बच्चों पर पड़ने वाले नकारात्मक (या हानिकारक) प्रभाव को अत्यंत गंभीर मानता हूँ। जो माता-पिता लगातार—हर दिन, हर पल—अपने बच्चों के बारे में चिंता करते रहते हैं, और जो अपने बच्चों के जीवन के हर पहलू में दखल देकर और उन्हें टोककर अपने स्वयं के भय और चिंताओं को कम करने का प्रयास करते हैं—और इस प्रकार अपनी चिंता से उन्हें घुटन महसूस कराते हैं—वे, मेरी राय में, प्रभावी रूप से अपने बच्चों को कई तरीकों से अक्षम बना रहे होते हैं। उदाहरण के लिए, मेरा मानना है कि ऐसे बच्चों का मानसिक रूप से कमज़ोर होना तय होता है। मेरा मानना है कि भले ही ऐसा बच्चा अपने माता-पिता के घोंसले को शारीरिक रूप से छोड़ने के लिए जी-जान से संघर्ष करे—आमतौर पर किसी दूर के विश्वविद्यालय के छात्रावास में जाकर—फिर भी वे अक्सर मानसिक रूप से खुद को अपने माता-पिता से अलग करने में असमर्थ रहते हैं। इसका कारण यह है कि बच्चे को पहले ही उन कई नकारात्मक प्रभावों द्वारा ढाला जा चुका होता है जो उसे ऐसे माता-पिता से मिले हैं जो स्वयं अत्यधिक चिंता और भय से पीड़ित हैं। परिणामस्वरूप, भले ही बच्चा शारीरिक रूप से अपने माता-पिता से बहुत दूर हो, फिर भी वह मानसिक रूप से उनसे जुड़ा रहता है। इसके अलावा, क्योंकि यह मानसिक जुड़ाव अस्वस्थ है, इसलिए यह बच्चे को काफी मनोवैज्ञानिक कष्ट, भ्रम और पीड़ा दे सकता है। इसके अलावा, अगर बच्चे और माता-पिता के बीच कोई भावनात्मक रूप से अस्वस्थ रिश्ता है, तो मेरा मानना है कि बच्चा अपने माता-पिता के प्रति प्यार और नफ़रत का एक मिला-जुला अनुभव कर सकता है—इस स्थिति को "एम्बीवैलेंस" (द्वंद्व) कहा जाता है। मुझे डर है कि माता-पिता और बच्चे के बीच का यह बेहद गंभीर और खराब रिश्ता एक बड़ा खतरा पैदा कर सकता है: हो सकता है कि बच्चा अपनी पूरी ज़िंदगी मानसिक या भावनात्मक आज़ादी का आनंद न ले पाए, और माता-पिता के उन नकारात्मक प्रभावों की छाया में ही जकड़ा रहे—एक ऐसी गुलामी जो माता-पिता के गुज़र जाने के बाद भी बनी रह सकती है।

5. जब कोई बच्चा, जिसे ऐसी आज़ादी से वंचित रखा गया हो—और जो डर और चिंता से भरे माता-पिता से कई तरह से जुड़ा हो—बड़ा होकर शादी करता है, तो उसे तब चिंता हो सकती है जब उसका पति अकेले या अपने दोस्तों के साथ समय बिताना चाहे। उदाहरण के लिए, हमारी अपनी शादी में, मैं एक बहुत ही—शायद ज़रूरत से ज़्यादा ही—आज़ाद खयाल इंसान हूँ; नतीजतन, मेरा मानना है कि जब मैं अपनी पत्नी के साथ साफ़ सीमाएँ तय करता हूँ और अपने अकेलेपन में सुकून ढूँढ़ता हुआ दिखता हूँ, तो मेरी पत्नी आसानी से चिंतित हो सकती है। जैसा कि कहावत है: "जहाँ एक 'बचने वाला' (avoidant) इंसान अकेला रहना पसंद कर सकता है, वहीं एक 'दूसरों को खुश करने वाला' (people-pleaser) इंसान अकेला होने पर असल में खोया हुआ और चिंतित महसूस करता है।" बेशक, मेरी पत्नी ने तब से काफ़ी सुधार किया है; अब उसे उतनी चिंता नहीं होती जितनी हमारी शादी के शुरुआती दिनों में होती थी। हालाँकि, मेरे नज़रिए से, मेरी पत्नी ने अभी तक उतनी आज़ादी हासिल नहीं की है जितनी मैंने की है; नतीजतन, मुझे लगता है कि जब मैं बार-बार अकेले रहने की इच्छा ज़ाहिर करता हूँ, तो वह अपनी चिंता कम करने के लिए मुझे खुश करने की कोशिश कर सकती है। ऐसा करके—भले ही इसमें कितनी भी मेहनत लगे—वह शायद बस मेरे साथ ज़्यादा अनुभव और गतिविधियाँ साझा करना चाहती है। आखिरकार, यही एकमात्र तरीका है जिससे उसे अपनी असुरक्षा की भावनाओं से थोड़ी-बहुत राहत मिल सकती है।

6. "फ़ैसले लेने के लिए एक निश्चित स्तर की आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की ज़रूरत होती है। जब कोई इंसान ठुकराए जाने या दूसरों को नाराज़ करने के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा सोचता है, तो फ़ैसले लेना मुश्किल हो जाता है।" इस खास बात ने मुझे इसलिए सोचने पर मजबूर कर दिया, क्योंकि मेरे अनुभव में, मेरी पत्नी को फ़ैसले लेना बेहद—शायद ज़रूरत से ज़्यादा ही—मुश्किल लगता है। हालाँकि हमारी शादी के शुरुआती दिनों के मुकाबले उसमें काफ़ी सुधार हुआ है, फिर भी मुझे लगता है कि जब उसे कोई फ़ैसला लेना होता है, तो उसे थोड़ी मुश्किल होती है। इससे मुझे लगता है कि वह अभी भी इस डर में बहुत ज़्यादा डूबी रहती है कि कहीं उसे कोई ठुकरा न दे या वह दूसरों को नाराज़ न कर दे। एक ऐसी इंसान जिसका स्वभाव ही दूसरों को खुश रखना है, उसके लिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि वह अपने आस-पास के लोगों की प्रतिक्रियाओं के प्रति बहुत ज़्यादा संवेदनशील हो—क्योंकि उसे लगता है कि वह खुद तभी खुश रह सकती है जब उसके आस-पास के लोग खुश हों। अगर ऐसा ही है—और अगर वह अभी भी अपनी खुशी इस बात से ढूंढने की

कोशिश कर रही है कि मैं, उसका प्यारा पति, खुश रहूँ—तो ज़रा सोचिए कि जब हम उन चीज़ों के बारे में मिलकर फ़ैसले लेने के लिए बातचीत करते हैं जो वह मेरे साथ शेयर करना चाहती है, तो उसे कितनी मानसिक ऊर्जा खर्च करनी पड़ती होगी! *हाहा।* हालाँकि यह कोई हँसने वाली बात नहीं है, फिर भी मुझे थोड़ी हँसी आ ही जाती है, क्योंकि कल ही रात खाने के दौरान उसने मुझसे एक बात कबूल की। उसने बताया कि उसका कोरियन रनिंग (मैराथन) क्लब दिसंबर के बीच में साल के आखिर की एक पार्टी रख रहा है; वह चाहती थी कि मैं भी उसके साथ वहाँ चलूँ, इसलिए उसने मुझे एक मैसेज भेजा जिसमें पूछा था, "क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगे?" फिर भी, उसने माना कि मैसेज भेजने के बाद भी वह काफी देर तक चिंता करती रही—यह सोचकर कि, "अगर उसने हाँ कह दिया और जाने को मान गया तो क्या होगा? क्या उसे वहाँ जाकर अजीब या असहज महसूस होगा?" और इसी तरह की और भी बातें। हाहा—चूँकि मैं उस तरह का इंसान हूँ जो सामाजिक मेल-जोल वाली जगहों से दूर ही रहता है, इसलिए अगर मैं वहाँ जाता और मुझे अजीब लगता क्योंकि मैं वहाँ किसी एक भी इंसान को नहीं जानता (अपनी पत्नी के अलावा), तो उसे लगता कि वह मुझे खुश करने में नाकाम रही है। इसलिए, उसके नज़रिए से, यह पूरी तरह से समझने लायक बात है कि वह इस पूरी चीज़ को लेकर चिंतित और परेशान महसूस करे। इसीलिए, कल KakaoTalk पर मुझे साल के आखिर की पार्टी का न्योता भेजने के बाद, उसने एक और मैसेज भेजा जिसमें पूछा था, "शायद हमें वहाँ जाना ही नहीं चाहिए?" हाहा। आखिर में, कल रात खाना खाते समय हम एक बात पर सहमत हुए: वह पहले अपने रनिंग क्लब के किसी दोस्त से पूछेगी कि उस पार्टी में असल में होता क्या है (क्योंकि मैं इसके बारे में पूरी जानकारी चाहता था), और फिर हम इस पर दोबारा बात करेंगे और मिलकर कोई आखिरी फ़ैसला लेंगे। हाहा।

7. ‘दूसरों को खुश करने वाले लोग—जो अक्सर डर से घिरे रहते हैं—आमतौर पर एक खास मकसद से दूसरों पर परोक्ष रूप से (passive manner) नियंत्रण रखना चाहते हैं: ताकि दूसरे उनके करीब रहें। जब उनके आस-पास के लोग भावनात्मक या शारीरिक रूप से उनसे दूर हो जाते हैं, तो इन लोगों को खुश करने वालों की बेचैनी और बढ़ जाती है।’ जब मैं इस बात पर सोच रहा था, तो मुझे अपनी पत्नी की याद आई; एक "लोगों को खुश करने वाली" होने के नाते, वह मुझे—अपने पति को—अपने करीब रखना चाहती है। लेकिन, मैं एक "दूर भागने वाला" (avoider) हूँ—कोई ऐसा जो

"बहुत ज़्यादा आत्मनिर्भर" है और एक निश्चित दूरी बनाए रखना पसंद करता है, जिसे अपने अकेलेपन में ही सुकून मिलता है। इस तरह, मेरी पत्नी और मैं काफी अलग हैं। (हँसते हुए।) फिर भी, आस्था की नज़र से देखने पर, मुझे हमारे बीच के इसी अंतर में भी ईश्वर की दिव्य योजना की झलक दिखाई देने लगी। तो, कल मैंने अपनी पत्नी के साथ अपने विचार साझा किए: 'मेरा मानना है कि ईश्वर ने तुम्हें और मुझे पति-पत्नी के रूप में इसलिए मिलाया है: क्योंकि वह मुझ जैसे "दूर भागने वाले"—जो बहुत ज़्यादा, शायद ज़रूरत से ज़्यादा ही आत्मनिर्भर है—को *उनमें* आस्था रखकर *तुम पर* भरोसा करना सिखाना चाहते थे। ऐसा करके, मैं तुम्हें—एक "लोगों को खुश करने वाली" को—पूरी तरह से सहारा दे सका, और वह भी इस तरह से कि तुम्हें खुद में ताकत महसूस हुई। अब, तुम अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने के लिए आज़ाद महसूस करती हो—यहाँ तक कि पुरुष साथियों के साथ रॉक क्लाइंबिंग भी—बिना इस ज़रूरत के कि मैं हर पल तुम्हारे साथ रहूँ। नतीजतन, ऐसा लगता है कि तुम्हें अपनी काबिलियत पर, यानी चीज़ों को खुद से करने की क्षमता पर, ज़बरदस्त आत्मविश्वास हासिल हो गया है।' सच में, मेरे नज़रिए से, मेरी पत्नी अब चीज़ों को खुद से संभालने में, यहाँ तक कि मेरी गैर-मौजूदगी में भी, और ज़्यादा माहिर होती जा रही है। यहाँ तक कि, अब जब मैं उससे शारीरिक रूप से दूर होता हूँ, तो उसे कोई बेचैनी या डर महसूस नहीं होता। मैंने इसे ईश्वर की दिव्य योजना के रूप में देखना शुरू कर दिया है—यही वह खास वजह है जिसके चलते उन्होंने मुझ जैसे "दूर भागने वाले" को मेरी पत्नी जैसी "लोगों को खुश करने वाली" के साथ मिलाने का फैसला किया। (हाहा।)

8. 'नतीजतन, हर किसी को खुश करने की कोशिश में, किसी का भी शेड्यूल बहुत ज़्यादा भर सकता है और उसे संभालना मुश्किल हो सकता है, जिससे समय का प्रबंधन (time management) एक बड़ी चुनौती बन जाता है।' इस बात को पढ़ते हुए मुझे अपनी पत्नी की याद इसलिए आई, क्योंकि एक "लोगों को खुश करने वाली" होने के नाते, वह अक्सर हमारे घर के हर एक सदस्य को खुश करने की कोशिश में समय के प्रबंधन को लेकर संघर्ष करती थी। उदाहरण के लिए, एक समय था जब हमारा परिवार मिलकर कुछ करने पर चर्चा कर रहा था; क्योंकि मेरी पत्नी न केवल मुझे—अपने

पति को—बल्कि हमारे बच्चों को भी खुश करना चाहती थी, इसलिए एक शेड्यूल बनाने और उसे अमल में लाने का काम शायद उसके लिए बोझ और तनाव, दोनों का कारण बन गया था। नतीजतन, मेरे नज़रिए से, मेरी पत्नी को एक सख्त समय-सारिणी के अनुसार काम करना बेहद मुश्किल लगता था—और उसे यह अब भी आसान नहीं लगता। इसकी मुख्य वजह यह है कि एक "लोगों को खुश करने वाली" (people-pleaser) इंसान होने के नाते, वह हर किसी को खुश रखने के लिए खुद को बाध्य महसूस करती है; ज़ाहिर है, इससे उसके मन में लगातार विचार और उलझनें चलती रहती हैं। मेरा मानना है कि उसके व्यक्तित्व की वजह से उसके लिए उन विचारों को छाँटना और कोई त्वरित व निर्णायक कदम उठाना मुश्किल हो जाता है। इसके विपरीत, मेरा स्वभाव कुछ "टालने वाला" (avoidant) है; अत्यधिक स्वतंत्र होने के कारण, मैं दूसरों को खुश करने या संतुष्ट करने की कोशिश में शायद ही कभी अपनी ऊर्जा खर्च करता हूँ। परिणामस्वरूप, मुझे निर्णय लेना और उन्हें अमल में लाना अपेक्षाकृत आसान लगता है। इसलिए, जब मेरी पत्नी मेरी ओर देखती है, तो शायद उसे मैं ऐसा व्यक्ति नज़र आता हूँ जो समय का प्रबंधन बड़ी सहजता से कर लेता है। साथ ही, मुझे लगता है कि वह शायद खुद को ही कोसती होगी—यह सोचकर कि वह अपने पति की तरह समय का प्रबंधन इतनी कुशलता से क्यों नहीं कर पाती, और उस जीवनसाथी को खुश न कर पाने का अपराधबोध महसूस करती होगी जो समय की पाबंदी को इतना अधिक महत्व देता है। फिर भी, एक जोड़े के रूप में हमारे बीच इन मतभेदों के बावजूद, मुझे ईश्वर की दिव्य कृपा के दर्शन होते हैं: हाल के दिनों में, जब भी मेरी पत्नी को कोई निर्णय लेना होता है, तो वह मुझसे सलाह लेती है, मेरी बात सुनती है, और फिर उस चर्चा के आधार पर अपना निर्णय लेती है। जब वह ऐसा करती है, तो न केवल उसका समय बचता है, बल्कि उसे तनाव भी काफी कम महसूस होता है। आस्था की नज़रों से देखने पर, मैं ईश्वर की कृपा को काम करते हुए और भी स्पष्ट रूप से देख पाता हूँ—वह हमारे जीवन को इस तरह से संचालित कर रहा है कि हमारी अपनी-अपनी ताकतें एक-दूसरे की कमज़ोरियों को पूरा करने और उनकी भरपाई करने का काम करती हैं।

9. "लोगों को खुश करने वाले लोग दूसरों को कुछ देना (भेंट करना) पसंद करते हैं, लेकिन उन्हें कुछ स्वीकार करने में कठिनाई होती है। जब उनसे पूछा जाता है कि वे क्या चाहते हैं या कैसा महसूस कर रहे हैं, तो अक्सर ऐसे लोगों के पास इसका कोई जवाब नहीं होता।" एक "टालने वाले"

(avoidant) स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में, मुझे दूसरों से कुछ स्वीकार करना पसंद है; इसके विपरीत, मेरी पत्नी—जो कि एक आदर्श "लोगों को खुश करने वाली" इंसान है—दूसरों को कुछ देने में तो माहिर है, लेकिन उसे दूसरों से कुछ स्वीकार करने में कठिनाई होती है। असल में, जब भी मैं उसे कुछ देता हूँ, तो वह शायद ही कभी उसे पूरी तरह से स्वीकार करती है। खैर, मेरी नज़र में, प्यार सिर्फ़ देने के बारे में नहीं है; इसमें विनम्रता से कुछ स्वीकार करना भी शामिल है। हालाँकि, मेरी पत्नी को देने में खुशी मिलती है—खास तौर पर, दूसरे व्यक्ति के बारे में ध्यान से सोचने और उसे ऐसे तोहफ़े देने में, जो उसे लगता है कि दूसरे व्यक्ति को पसंद आएँगे। वह ऐसी इंसान है जिसे मेरा प्यार स्वीकार करने में मुश्किल होती है, भले ही मैं, उसका पति होने के नाते, उसे अपने प्यार और सोच-समझकर कुछ देता हूँ (हालाँकि वह शायद इस बात से सहमत न हो)। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मेरा मानना है कि मेरी पत्नी को कुछ स्वीकार करना ठीक से नहीं आता। क्या आपको यह थोड़ा अजीब नहीं लगता? मेरी पत्नी जैसी कोई इंसान—जो दूसरों को खुश करने की इतनी कोशिश करती है और मानती है कि वह मेरे, अपने पति के प्रति बहुत ज़्यादा सोच-समझकर व्यवहार कर रही है—शायद असल में *मेरी* भावनाओं का सही मायने में सम्मान करने में नाकाम हो रही है, क्योंकि उसे वे तोहफ़े स्वीकार करना नहीं आता जो मैं उसे देना चाहता हूँ। हाहा।

10. "दूसरों को खुश करने की चाह रखने वाले लोग दूसरों की संभावित डरावनी प्रतिक्रियाओं के प्रति बहुत ज़्यादा संवेदनशील होते हैं, जिसकी वजह से वे सुरक्षा की ज़रूरत पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देने लगते हैं।" ज़ाहिर है, एक पति के तौर पर, मेरी यह ज़िम्मेदारी है कि मैं अपनी पत्नी की रक्षा करूँ; फिर भी, एक ऐसा इंसान होने के नाते जो चीज़ों से बचता है और "बहुत ज़्यादा आत्मनिर्भर" है, मैं—उसकी नज़र में—एक ऐसा पति हूँ जो उसे ज़रूरी सुरक्षा देने में नाकाम रहता है। खास तौर पर, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी पत्नी एक आत्मनिर्भर इंसान बने—एक ऐसी महिला जो अपने पैरों पर मज़बूती से खड़ी हो सके—इसलिए मैं इसे अपना प्यार भरा फ़र्ज़ मानता हूँ कि वह जो कुछ भी पसंद करती है और चाहती है, उसे पूरा करने में मैं उसका पूरा साथ दूँ। मैं इसी के हिसाब से काम करने की कोशिश करता हूँ। इसके उलट, *मेरी* प्रतिक्रियाओं के प्रति उसकी बहुत ज़्यादा संवेदनशीलता

को देखते हुए, मुझे लगता है कि जब मैं उसे उस खास तरह की सुरक्षा नहीं दे पाता जिसकी उसे चाहत और ज़रूरत है, तो उसे काफ़ी दुख या निराशा होती होगी। क्या यह दिलचस्प नहीं है? मैं "बहुत ज़्यादा आत्मनिर्भर" हूँ, जबकि मेरी पत्नी—मेरी और दूसरों, दोनों की प्रतिक्रियाओं के प्रति—"बहुत ज़्यादा चौकस"—यानी बहुत ज़्यादा संवेदनशील—है। हाहा! जब—आस्था की नज़रों से—मैं यह देखता हूँ कि कैसे ईश्वर एक ऐसे पुरुष और स्त्री को एक साथ लाता है जो एक-दूसरे से इतने अलग हैं, उन्हें पति-पत्नी के रूप में जोड़ता है, और उन्हें उनके आपसी भेदों को पहचानने में मदद करने की प्रक्रिया में ही, उन्हें अपनी-अपनी ताकतों से एक-दूसरे की कमज़ोरियों को पूरा करने में सक्षम बनाता है, तो मैं सचमुच इसे ईश्वर की सबसे अद्‌भुत और रहस्यमयी कृतियों में से एक मानता हूँ। हाहा!

टूटी हुई शादी में विश्वास को फिर से कायम करना

जब शादी में विश्वास पहले ही टूट चुका हो, तो उसे फिर से कायम करने की कुंजी किसी एक जीवनसाथी के पास अकेले नहीं होती। ठीक उस समय, जब ऐसा लगता है कि रिश्ते में विश्वास फिर से जुड़ने लगा है—लेकिन तभी एक-दूसरे को देखते ही मन में फिर से चिंता, डर और ठेस की भावनाएँ उभर आती हैं—तो ऐसा महसूस होता है मानो आप फिर से वहीं पहुँच गए हैं जहाँ से शुरुआत की थी। एक-दूसरे की ओर देखने के बजाय, आपको अपनी नज़रें केवल प्रभु पर ही टिकाए रखनी चाहिए। जैसे-जैसे आप प्रभु के और करीब आते हैं, आपको उनमें अपने विश्वास को बढ़ाने और उसे मज़बूत बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसी संदर्भ में—और केवल तभी—आपको अपने जीवनसाथी की ओर देखना चाहिए। क्योंकि प्रभु की कृपा से, टूटी हुई शादी में विश्वास को फिर से कायम करना वास्तव में संभव है।

काउंसलिंग से सीखे गए सबक

काउंसलिंग में बिताए अपने समय पर विचार करते हुए, मैं कुछ बातें शेयर करना चाहूँगा, इस उम्मीद के साथ कि वे आपके लिए फ़ायदेमंद साबित हो सकती हैं:

1. मेरा मानना है कि शादीशुदा रिश्ते में लगातार होने वाला झगड़ा इस बात का सबूत है कि पति-पत्नी एक-दूसरे को सचमुच अच्छी तरह से नहीं जानते। क्योंकि उनमें इस गहरी समझ की कमी होती है, इसलिए हर पार्टनर दूसरे की बातों और कामों को सिर्फ़ अपने नज़रिए से ही जज (या शायद *पहले से ही कोई राय बना लेता है*) करता है। इससे मन में पहले से बनी हुई धारणाएँ बन जाती हैं; लंबे समय तक अपनी भावनाओं को दबाए रखने और सहने के बाद, उनकी नाराज़गी आखिरकार फूट पड़ती है, जिसके चलते ऐसे झगड़े होते हैं जो कच्ची भावनाओं—खास तौर पर गुस्से—से भरे होते हैं।

सुझाव: पति-पत्नी को झगड़े को एक-दूसरे को और गहराई से समझने के एक मौके के तौर पर देखना सीखना चाहिए।

2. मेरा मानना है कि पति-पत्नी को अपने रिश्ते में भरोसे की एक मज़बूत नींव बनाने के लिए पूरी तरह से कमिटेड होना चाहिए। हालाँकि, शैतान लगातार इस भरोसे को तोड़ने की कोशिश करता रहता है; वह शक के बीज बोता है, शक को बढ़ावा देता है, और आखिरकार भरोसे के बंधन को तोड़ने में कामयाब हो जाता है, जिससे पति-पत्नी एक-दूसरे पर शक करने लगते हैं। इस कोशिश में शैतान का मुख्य हथियार झूठ—यानी फ़रेब—होता है। यह एक तरह का धोखा है। आज बहुत से पति-पत्नी एक-दूसरे पर भरोसा करने में इसलिए मुश्किल महसूस करते हैं क्योंकि उन्हें *लगता है*—या उन्हें यकीन हो जाता है—कि उनका

जीवनसाथी उनसे झूठ बोल रहा है। फिर भी, वे शायद ही कभी इस बात पर गौर करते हैं कि हो सकता है कि वे खुद ही धोखे का शिकार हो रहे हों।

सुझाव: अपने जीवनसाथी से यह वादा करें: "क्योंकि मुझे प्रभु पर भरोसा है, इसलिए मैंने तुम पर भी भरोसा करने का फ़ैसला किया है—भले ही तुम भविष्य में मेरे साथ धोखा क्यों न करो।"

3. किसी समस्या के सिर्फ़ बाहरी लक्षणों पर ध्यान देने के बजाय, हमें उन लक्षणों के पीछे छिपे अंदरूनी कारणों पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मेरा जीवनसाथी मुझ पर भरोसा करने में इतनी मुश्किल क्यों महसूस करता है? मेरा जीवनसाथी मुझ पर झूठ बोलने का इल्ज़ाम क्यों लगाता है? क्या इसका असली कारण—यानी इसकी जड़—उनके दिल की गहराइयों में छिपी हो सकती है? क्या यह मुमकिन है कि उनके मन में अतीत का कोई गहरा, न भरा हुआ ज़ख्म हो—शायद किसी ऐसे इंसान के झूठ से मिला धोखा (या विश्वासघात) जिस पर उन्होंने कभी भरोसा किया था?

सुझाव: प्रार्थना करें कि प्रभु आपको अपने चंगाई के काम के लिए एक ज़रिया बनाएँ, ताकि आप अपने जीवनसाथी की अंदरूनी दुनिया में झाँक सकें और उनकी घायल आत्मा को मरहम लगा सकें।

4. भरोसे की नींव के बिना, कोई भी जोड़ा सच्ची बातचीत नहीं कर सकता—ऐसी बातचीत जो दिलों और दिमागों को जोड़ती है। पुरुष और महिलाएँ स्वभाव से ही अलग होते हैं, और उनके बातचीत करने के तरीके भी बहुत अलग होते हैं (न केवल इस मामले में कि वे कैसे बोलते हैं, बल्कि इस मामले में भी कि वे एक-दूसरे की बात कैसे सुनते हैं); इस सच्चाई को देखते हुए, अगर आपसी भरोसा न हो—खास तौर पर अगर एक साथी को यह लगे कि दूसरा साथी अक्सर झूठ बोलता है—तो शादीशुदा ज़िंदगी में सच्ची बातचीत कैसे मुमकिन हो सकती है?

सुझाव: अपने जीवनसाथी के दिल में गहरे दबे हुए सबसे अंदरूनी विचारों और भावनाओं को बाहर निकालने के लिए, आपको "प्यार भरे दिल के कानों" का इस्तेमाल करना चाहिए।

5. जब किसी जोड़े के बीच ऐसी सच्ची बातचीत की कमी होती है जो दिलों और दिमागों को जोड़ती है, तो वे प्यार और इज़्ज़त का ऐसा रिश्ता नहीं बना पाते जैसा कि प्रभु उनके लिए चाहते हैं। पति अपनी पत्नी से प्रभु वाले प्यार से प्यार नहीं कर पाएगा, और पत्नी अपने पति की वैसी इज़्ज़त नहीं कर पाएगी जैसी वह प्रभु की करती। नतीजतन, जिस पत्नी को यह महसूस होगा कि उसे प्यार नहीं मिल रहा, वह अपने पति को इज़्ज़त (और समर्पण) देना बंद कर देगी; वहीं, जिस पति को यह महसूस होगा कि उसकी इज़्ज़त नहीं हो रही, वह अपनी पत्नी से प्यार करने से इनकार कर देगा। इसके परिणामस्वरूप, शादीशुदा ज़िंदगी के बेनतीजा झगड़े चलते रहेंगे और, सच कहूँ तो, वे और भी ज़्यादा बढ़ जाएँगे।

सुझाव: अपने जीवनसाथी पर नज़र डालने से पहले, आपको सबसे पहले अपनी नज़र प्रभु पर टिकानी चाहिए; आपको लगातार पूरे दिल से परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए, और यह माँगना चाहिए कि प्रभु के लिए आपके अपने दिल में जो प्यार और इज़्ज़त है, वह बिना किसी शर्त के आपके जीवनसाथी की ओर भी बहे।

“[डॉ. किम जिन-से का K-काउंसलिंग रूम]
मुझे पता चला कि मेरे पति गे हैं... क्या मुझे उन्हें तलाक़ दे देना चाहिए? या क्या हमें बस एक कपल होने का दिखावा करते रहना चाहिए?”

चूँकि शीर्षक कुछ हद तक चौंकाने वाला (?) था, इसलिए मैंने यह देखने के लिए लेख पढ़ना शुरू किया कि यह किस बारे में है। ऐसा करते हुए, मुझे लगा कि "डॉ. किम जिन-से" और "किम यून-जू" के बीच हुई काउंसलिंग बातचीत में कई ऐसे बिंदु हैं जिन पर विचार करना चाहिए—और जिनसे कुछ सबक सीखे जा सकते हैं। इसलिए, मैं इसे फिर से, एक-एक बिंदु करके पढ़ना चाहूँगा, और हर बिंदु पर अपने विचार प्रस्तुत करना चाहूँगा:

(1) "...मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं इस तरह टूट जाऊँगी।" (किम यून-जू)

मेरा मानना है कि "श्रीमती किम यून-जू"—इस लेख में शामिल महिला—द्वारा दिया गया यह बयान बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने खुद को "एक ऐसी इंसान के रूप में बताया जिसने हर तरह की मुश्किल परिस्थितियों का सामना पूरी तरह से अकेले दम पर किया था," फिर भी उन्होंने यह स्वीकार किया, "मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं इस तरह टूट जाऊँगी।" यह महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि हमें—अपने खुद के टूटने के अनुभव के माध्यम से—यह पहचानने और स्वीकार करने की ज़रूरत है कि हमारा मानवीय अस्तित्व वास्तव में कितना नाज़ुक और कमज़ोर है। ऐसा लगता है कि केवल उसी क्षण हम पूरी तरह से ईश्वर पर निर्भर होने में सक्षम हो पाते हैं। फिर भी, हैरानी की बात यह है कि आम परिस्थितियों में हम आसानी से "टूटते" नहीं हैं।

हम लगातार प्रयास करते हैं और टूटने से बचने के लिए अपनी पूरी जान लगा देते हैं; हालाँकि, जिस क्षेत्र में हम सबसे ज़्यादा बिखरते हैं, ढह जाते हैं और टूट जाते हैं, वह हमारे प्यारे परिवार के सदस्यों के साथ हमारे रिश्तों का क्षेत्र है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि हमारे प्रियजन ही हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी होते हैं, इसलिए हम—इस लेख में श्रीमती किम यून-जू की तरह ही—अपने पति (या जीवनसाथी) या अपने बच्चों से जुड़े मुद्दों पर पूरी तरह से टूट जाने में सक्षम होते हैं।

(2) "यह सोचना कि वही इंसान जिस पर सबसे ज़्यादा भरोसा होना चाहिए—यानी आपके पति—ने इस तरह का बर्ताव किया... आपको निश्चित रूप से गहरे विश्वासघात का एहसास हुआ होगा।" (डॉ. किम)

वैवाहिक रिश्ते में जब भरोसा टूटता है—या, उस मामले में, जब माता-पिता और बच्चे के बीच भरोसा टूटता है—तो जो विश्वासघात का एहसास होता है, वह एक बहुत ही वास्तविक और पूरी तरह से समझने योग्य अनुभव है। और इस तरह के विश्वास टूटने की जड़ में अक्सर झूठ और धोखे जैसे तत्व छिपे होते हैं। लोग अपने प्यारे जीवनसाथी, माता-पिता या बच्चों को धोखा क्यों देते हैं? वे झूठ क्यों बोलते हैं?

(3) "मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं ही कहीं कमज़ोर हूँ... अभी, मुझे बस यही महसूस हो रहा है कि *मैंने* ही कोई बहुत बड़ी गलती की है।" (किम यून-जू)

कोरियाई भाषा पर मेरी पकड़ सीमित है—और भी कई कारणों से—इसलिए मुझे पक्का नहीं पता कि मैं अपने विचारों को ठीक से व्यक्त कर पाऊँगी या नहीं; फिर भी, अगर मैं कोशिश करूँ, तो सुश्री किम यून-जू को यह कहते हुए सुनकर मेरे मन में जो सबसे पहला वाक्यांश आया, वह था "आत्म-प्रताड़ना।" असल गलती उनके पति की थी, जिन्होंने यह बात छिपाई कि वे गे (समलैंगिक) हैं और फिर भी सुश्री किम से शादी कर ली—जिससे उन्हें बहुत गहरा विश्वासघात महसूस हुआ। फिर भी, इस बात पर विचार करते हुए कि उन्होंने काउंसलिंग लेते समय भी यह विचार कैसे व्यक्त किया, "मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं ही कहीं कमज़ोर हूँ," मेरा मानना है कि हमें बड़ी घरेलू कठिनाइयों और संकट के समय खुद को कोसने या प्रताड़ित करने की प्रवृत्ति के प्रति बहुत सावधान रहना चाहिए। मेरे अपने मामले में, जब मेरा पहला बच्चा,

जू-यंग, गुज़र गया, तो मैंने एक साल से भी ज़्यादा समय तक खुद को बहुत ज़्यादा प्रताड़ित किया। वह आत्म-प्रताड़ना गहरे अपराधबोध से उपजी थी—यह विश्वास कि मेरे बच्चे की मृत्यु केवल *मेरे* पापों के कारण हुई थी।

(4) "अगर यह कोई ऐसा व्यक्ति है जिससे आप शादी करने का इरादा रखते हैं, तो आपको उन्हें पहले ही सब कुछ बता देना चाहिए था।" (डॉ. किम)

कुछ समय पहले ही, मैंने एक साथी विश्वासी को यह सलाह दी थी कि शादी से पहले, उन्हें अपने होने वाले जीवनसाथी के सामने अपने पिछले यौन पापों को स्वीकार करना चाहिए और माफ़ी माँगनी चाहिए। मैंने ऐसी सलाह इसलिए दी क्योंकि हम अक्सर यह दावा करते हैं कि हमने एक अदृश्य ईश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है और पश्चाताप कर लिया है, फिर भी हम उन्हीं पापों को उस दृश्य, हाड़-मांस के जीवनसाथी से छिपाकर शादी कर लेते हैं जिससे हम शादी करने वाले होते हैं। यह आज की दुनिया में विशेष रूप से प्रासंगिक है—एक ऐसी दुनिया जो नैतिक रूप से ढीली हो गई है—जहाँ शादी से पहले यौन संबंध, अनचाहे गर्भ और गर्भपात आम घटनाएँ बन गई हैं। ऐसे माहौल में, हम मसीहियों ने अक्सर पाप को उसके असली रूप में पहचानने की क्षमता खो दी है, और इसके बजाय इसे एक मामूली बात मान लेते हैं। नतीजतन, भले ही हमें "अपने होने वाले जीवनसाथी को पहले ही सब कुछ बता देना चाहिए था," हम अक्सर सच छिपाने का विकल्प चुनते हैं और फिर भी शादी कर लेते हैं। तो, ज़रा सोचिए कि अगर आप Ms. Kim Eun-ju की जगह होतीं—और आपको सच का पता बहुत बाद में चलता। आपको क्या लगता है कि *आप* कैसे रिएक्ट करतीं? (मेरा मानना है कि—शायद जितना हम सोचते हैं उससे कहीं ज़्यादा—हम अपने जीवनसाथी के बारे में बहुत कम जानते हैं, और अपने बच्चों के बारे में तो और भी कम। मैं ऐसा इसलिए कह रही हूँ क्योंकि ऐसा लगता है कि, अक्सर, जब हमें आखिरकार सच का पता चलता है, तो हम उस सदमे को झेल नहीं पाते।)

(5) "उसके लिए, यह एक जेल जैसा रहा होगा। इसलिए, अगर वह अपने परिवार से अलग होना चाहता था, तो शादी करना ही शायद उसके लिए एकमात्र रास्ता था।" — Kim Eun-ju

यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में, युवाओं के लिए जान-बूझकर घर से दूर स्थित विश्वविद्यालयों में पढ़ने का विकल्प चुनना काफी आम बात लगती है। मेरी नज़र में, इसका एक मुख्य कारण भागने की इच्छा है। कहने का मतलब यह है कि, वे जान-बूझकर अपने घर के माहौल से दूर एक कॉलेज चुनते हैं, खास तौर पर अपने और अपने माता-पिता के बीच शारीरिक दूरी बनाने के लिए—ताकि वे वहाँ से निकल सकें। इसके अलावा, शादी के बाद भी, वे अक्सर अपने माता-पिता से दूर किसी जगह पर बसना पसंद करते हैं। और इसी तरह। इन बातों को देखते हुए, मेरा मानना है कि इसकी असली वजह यह है कि इन लोगों के अपने माता-पिता के साथ रिश्तों में कुछ बड़ी समस्याएँ, गहरे ज़ख्म, या अनसुलझे झगड़े दबे होते हैं। हैरानी की बात यह है कि, कुछ मामलों में, शादी करने का फ़ैसला भी इसी तरह की भावना से प्रेरित होता है। इस लेख में, Kim Eun-ju अपने पति और उसकी माँ के रिश्ते को "मालिक-नौकर जैसा रिश्ता" या "आपसी निर्भरता वाला रिश्ता" बताती हैं। अगर कोई पत्नी अपने पति और उसकी माँ के रिश्ते को इस नज़र से देखती है, तो मेरा मानना है कि इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि वह रिश्ता असल में अस्वस्थ है। बाहर से देखने वालों को वह रिश्ता चाहे कितना भी "आदर्श" क्यों न लगे, लेकिन जब कोई उसकी अंदरूनी सच्चाई को जान लेता है, तो अक्सर उसे सतह के नीचे दबी हुई कई गंभीर मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याएँ नज़र आती हैं। इन गंभीर मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याओं में से एक ऐसी समस्या है जिसे मैं खास तौर पर बहुत गंभीरता से लेती हूँ—एक ऐसी समस्या जिसका ज़िक्र Kim Eun-ju इस लेख में तब करती हैं जब वह कहती हैं, "यह एक जेल जैसा रहा होगा।" मुझे यह बात बेहद गंभीर लगती है जब माता-पिता—अपने बच्चों से प्यार करने का दावा करने के बावजूद—उन्हें असल में कैद कर लेते हैं, चाहे वह मनोवैज्ञानिक तौर पर हो या भावनात्मक तौर पर। इसलिए, मैं लगातार खुद से संघर्ष करता हूँ—अपनी अंतरात्मा की जाँच करता हूँ और ईश्वर के सामने गहरे आत्म-चिंतन में लीन रहता हूँ—ताकि कहीं मैं भी, अपने बच्चों को हमारे आपसी रिश्ते के दायरे में, मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक रूप से कैद करने का पाप न कर बैठूँ। मेरी सच्ची प्रार्थना है कि मेरी पत्नी और बच्चे, प्रभु में रहते हुए, सचमुच स्वतंत्र व्यक्ति बन सकें। इसी उद्देश्य से, मेरी यह इच्छा है कि हम सबमें सबसे पहले मैं ही वह व्यक्ति बनूँ जो 'उनमें' (ईश्वर में) रहते हुए एक स्वतंत्र जीवन जिए। मैं इस मामले को इतनी गंभीरता से इसलिए लेता हूँ, क्योंकि मेरा यह मानना नहीं है कि यह परिघटना—जिसमें माता-पिता अनजाने में ही अपने बच्चों को एक मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक "जेल" में कैद कर लेते हैं, और उन्हें अदृश्य जंजीरों से बाँध देते हैं—केवल माता-पिता की मृत्यु हो जाने भर से ही समाप्त हो जाती है। इसका

तात्पर्य यह है कि हम माता-पिता के इस दुनिया से चले जाने के बाद भी, हमारे बच्चे हमारी वजह से, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक "कैद" वाले जीवन को भोगने के लिए अभिशप्त रह सकते हैं। अतः, धर्मग्रंथ का जिस वचन को मैं बहुत संजोकर रखता हूँ और जिसका मैं दृढ़ता से पालन करता हूँ, वह यह है: "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा" (यूहन्ना 8:32)। मेरा यह विश्वास है कि, ठीक इसी क्षण, हमारे बहुत से साथी विश्वासी अपना जीवन विभिन्न प्रकार की "जेलों" में कैद होकर बिता रहे हैं। ऊपरी तौर पर देखने पर, वे शायद पूरी तरह से स्वतंत्र प्रतीत होते हों; फिर भी, ऐसा लगता है कि उनमें से बहुत से लोग वास्तव में, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक "कैद" वाला जीवन जी रहे हैं—और यदि ऐसी कैद केवल मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों तक ही सीमित न रहकर, स्वयं 'आध्यात्मिक क्षेत्र' तक भी फैल जाए... तो, यह कितनी बड़ी त्रासदी होगी!

इस लेख में, सुश्री किम यून-जू कहती हैं कि भले ही ऐसा लगे कि केवल उनके पति ने ही "भागकर शादी" की थी, लेकिन वह खुद मानती हैं: "मेरे मन में भी अपने परिवार को लेकर गहरी चिंताएँ और उलझनें थीं। मैं इस बात से इनकार नहीं करूँगी कि मैंने अपनी शादी जल्दी की, खासकर इसलिए क्योंकि मैं घर छोड़ना चाहती थी।" उनका यह बयान—"हम दोनों [पति और पत्नी] अपने परिवारों को छोड़ना चाहते थे, और उस समय, हमें सच में लगता था कि हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं"—मुझे एक बहुत बड़ी स्वीकारोक्ति लगती है। और तो और, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि मेरा मानना है कि हमें अपने आप से पूरी तरह ईमानदार रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में, शादी से पहले, हमें अपने दिल की सच्ची वजहों और इच्छाओं का सीधे-सीधे सामना करना चाहिए कि हम उस खास समय पर किसी खास साथी से शादी क्यों करना चाहते हैं। अगर—सुश्री किम यून-जू की तरह ही—किसी साथी से शादी करने का मुख्य मकसद सिर्फ़ घर के ऐसे माहौल से भागना है जो गहरी चिंताओं और उलझनों से भरा हो, तो वह व्यक्ति बहुत ही खतरनाक रास्ते पर चल रहा होता है। उस समय, कोई व्यक्ति आखिरकार घर छोड़ने की रोमांचक उम्मीद से खुश हो सकता है, या ऐसे रोमांटिक ख्यालों में खोया हो सकता है कि अपने साथी के साथ अकेले रहने से उसे बेमिसाल खुशी मिलेगी; लेकिन, अगर कोई इन वजहों से शादी करता है (या जल्दबाजी में शादी कर लेता है), तो मेरा मानना है कि उसे बाद में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है—ठीक वैसे ही जैसे सुश्री किम यून-जू को करना पड़ा था। ये मुश्किलें ज़रूरी नहीं कि सीधे तौर पर उसके जीवनसाथी या बच्चों की वजह से ही हों; बल्कि, उसे अपने ही अनसुलझे मसलों के नकारात्मक असर से होने वाले गहरे

आत्म-ग्लानि, पछतावे और मानसिक पीड़ा से बहुत ज़्यादा तकलीफ़ हो सकती है, जिसका असर उसके जीवनसाथी और बच्चों पर पड़ता है। शादी भागने का कोई ज़रिया नहीं है। "अगर शादी का असली मकसद दो लोगों का मिलन न होकर, कुछ और ही है, तो ऐसे व्यक्ति के दुखी होने की संभावना बहुत ज़्यादा होती है। बेशक, लोगों के शादी करने के कुछ और भी छोटे-मोटे मकसद हो सकते हैं; लेकिन, ऐसे छोटे-मोटे लक्ष्यों को ज़रूरत से ज़्यादा अहमियत नहीं देनी चाहिए। अगर कोई सिर्फ़ किसी नीरस और असहनीय हकीकत से भागने के लिए शादी करता है, तो शुरू में उसे शायद अच्छा महसूस हो, क्योंकि उसका फौरी मकसद तो पूरा हो गया होता है। लेकिन, हर चुनाव की कोई न कोई कीमत चुकानी ही पड़ती है—जैसे कि वह मानसिक पीड़ा जो अक्सर पति या ससुराल वालों के साथ होने वाले झगड़ों से पैदा होती है।" (डॉ. किम)

(6) "व्यक्तिगत रूप से, आजकल मुझे ऐसा लगता है कि खुशी के लिए सबसे ज़रूरी शर्त एक ऐसा रिश्ता हो सकता है जिसमें आपसी सम्मान और भरोसा हो—एक ऐसा रिश्ता, जिसके परिणामस्वरूप, सबसे गहरी आत्मीयता बनी रह सके।" (डॉ. किम)

मैं इस बात से सहमत हूँ। मेरा भी यही मानना है कि एक वैवाहिक रिश्ता—जिसमें साथी "एक-दूसरे का सम्मान और भरोसा करते हैं" (और यह बात माता-पिता और बच्चों के रिश्तों तथा अन्य मानवीय संबंधों पर भी समान रूप से लागू होती है)—और इसके परिणामस्वरूप "सबसे गहरी आत्मीयता को बनाए रखने" की क्षमता, खुशी के लिए एक बहुत ज़रूरी शर्त है। विशेष रूप से, यह वाक्य मुझे यह सवाल पूछने पर मजबूर करता है: "सबसे गहरी आत्मीयता को बनाए रखने" की यह क्षमता असल में आती कहाँ से है? मेरे पूछने का कारण यह है कि मेरा मानना है कि ऐसी क्षमता हमारे अंदर स्वाभाविक रूप से मौजूद नहीं होती। हालाँकि, अगर कोई यह मान ले कि यह क्षमता *सचमुच* इंसानों के अंदर होती है—और शादी जैसे करीबी रिश्तों को सिर्फ़ अपनी खुद की स्व-केंद्रित क्षमताओं के भरोसे बनाए रखने की कोशिश करे—तो मेरा मानना है कि ऐसे रिश्ते आखिरकार टूट ही जाते हैं। इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि मैं इस बारे में कितनी मज़बूती से महसूस करता हूँ: हर रिश्ते में—अपनी पत्नी के साथ अपने बंधन से लेकर अपने तीनों बच्चों में से हर एक के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों तक—मैं उन रिश्तों को सबसे ज़्यादा महत्व देता हूँ जो हममें से हर एक का प्रभु के साथ है। मैं प्रभु के साथ अपने रिश्ते को, अपनी पत्नी के प्रभु के साथ रिश्ते को, और अपने हर बच्चे

के प्रभु के साथ रिश्ते को संवारने के लिए मेहनत करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ और खुद को समर्पित करता हूँ। इसका कारण मेरा यह पक्का विश्वास है कि अपने प्यारे परिवार के सदस्यों के साथ एक करीबी रिश्ता बनाए रखना *तभी* पूरी तरह से संभव है जब कोई साथ ही साथ प्रभु के साथ भी एक करीबी रिश्ता बनाए रखे। उदाहरण के लिए, मेरा मानना है कि चाहे घर का माहौल हो या चर्च का समुदाय, दूसरों के साथ करीबी (क्षैतिज) मेलजोल हासिल करना तब तक असंभव है जब तक पहले प्रभु के साथ एक करीबी (ऊर्ध्वाधर) मेलजोल—एक गहरा जुड़ाव—स्थापित न कर लिया जाए। विशेष रूप से, परिवार के दायरे में—जहाँ मैं घर के मुखिया, पति और पिता की भूमिका निभाता हूँ—मेरा मानना है कि अगर मैं प्रभु के साथ अपने करीबी मेलजोल की उपेक्षा करूँ, तो इसके परिणाम बहुत गंभीर होंगे। ऐसी उपेक्षा का बुरा असर न केवल मेरी पत्नी और मेरे तीनों बच्चों के साथ मेरे रिश्ते और मेलजोल पर पड़ेगा, बल्कि मेरे जीवन के हर दूसरे मानवीय रिश्ते पर भी पड़ेगा—जिसमें मेरे चर्च समुदाय के सदस्यों के साथ मेरे संबंध भी शामिल हैं। इसलिए, एक अहम सबक जो मैं अभी सीख रहा हूँ—और जिसे, भले ही पूरी तरह से नहीं, पर अमल में लाने की कोशिश कर रहा हूँ—वह यह है: जिस तरह प्रभु मुझसे प्यार करते हैं, उसी तरह मुझे भी उनके प्यार से खुद से प्यार करना चाहिए; और जिस तरह वह मुझे कीमती और इज्ज़तदार मानते हैं, उसी तरह मुझे भी खुद के साथ वैसा ही बर्ताव (और प्यार) करना चाहिए, ताकि मैं भी अपनी पत्नी, बच्चों और दूसरों के साथ उसी तरह प्यार और बर्ताव कर सकूँ।

(7) "सेक्स सिर्फ़ एक आम सहज-वृत्ति का नतीजा नहीं है। हालाँकि यह यकीनन बच्चे पैदा करने के जैविक मकसद को पूरा करता है, लेकिन यह भावनाओं को बाँटने और करीबी बनाए रखने के लिए बातचीत का एक बहुत ज़रूरी ज़रिया भी है।" (डॉ. किम)

मैं इस बात से सहमत हूँ। सेक्स के इन दो मकसद में से, मैं "बच्चे पैदा करने" को ज़्यादा अहमियत देता हूँ। इस नज़रिए का धार्मिक आधार मलाकी 2:15 में मिलता है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि यह बात भी उतनी ही ज़रूरी है कि शादीशुदा रिश्ते में सेक्स "करीबी बनाए रखने के लिए बातचीत का एक बहुत ज़रूरी ज़रिया" होता है। मेरा तर्क यह है कि शादी का एक बुनियादी मकसद यौन-अनैतिकता से बचाव करना है (1 कुरिन्थियों 7:2–3)। मेरा पक्का मानना है कि शादी के बंधन में सेक्स एक बहुत अहम भूमिका निभाता है।

खास तौर पर, मैं हाल ही में बढ़े "सेक्स-रहित शादियों" के चलन को—जिसमें जोड़े साल में दस बार से कम, या महीने में एक बार से भी कम सेक्स करते हैं—एक खतरनाक चेतावनी मानता हूँ। मेरा मानना है कि शादीशुदा जोड़ों को सेक्स का मज़ा लेना चाहिए और एक-दूसरे को यौन-संतुष्टि देने की कोशिश करनी चाहिए। एक कदम और आगे बढ़ते हुए, मेरा मानना है कि जोड़ों को अपने यौन-संबंधों में खुशी महसूस करनी चाहिए; मैं इसे भगवान का दिया हुआ एक कीमती तोहफ़ा मानता हूँ। इसके अलावा, मेरा मानना है कि जोड़ों को एक-दूसरे से सेक्स के बारे में बात करने में सहज और खुले विचारों वाला महसूस करना चाहिए—और, इसे और आगे बढ़ाते हुए, माता-पिता को भी अपने बच्चों के साथ सेक्स के बारे में बातचीत करनी चाहिए (जब बच्चे एक सही उम्र तक पहुँच जाएँ)। (8) "तो, क्या आप मुझसे तलाक़ लेने के लिए कह रहे हैं?" (किम यून-जू) "यह फ़ैसला तुम्हारा है, यून-जू।" (डॉ. किम)

मैंने अपनी ग्रेजुएशन की पढ़ाई के दौरान मनोविज्ञान (साइकोलॉजी) को अपना मुख्य विषय इसलिए चुना था, क्योंकि मैंने सुना था कि पादरी बनने के बाद यह मुझे कलीसिया के लोगों की काउंसलिंग करने में मददगार साबित होगा। कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद, मैंने सेमिनरी में दाखिला लिया; वहाँ बाइबिल-आधारित परामर्श (biblical counseling) का अध्ययन करते समय, मुझे यह एहसास हुआ कि कॉलेज में मैंने जो मनोविज्ञान पढ़ा था, वह असल में कितना अधिक मानव-केंद्रित—यानी ईश्वर के बजाय मनुष्यों पर केंद्रित—था। परिणामस्वरूप, जैसे-जैसे मैंने बाइबिल-आधारित परामर्श की गहराई में जाना शुरू किया, इस विषय में मेरी रुचि बढ़ती गई; मैंने अपने नियमित सेमिनरी पाठ्यक्रम की सीमाओं से परे जाकर, स्वतंत्र रूप से इस विषय पर किताबें खरीदना और पढ़ना शुरू कर दिया। आज भी जब मैं इस विषय का अध्ययन और इसके बारे में सीखना जारी रखता हूँ, तो

(8) में दिए गए अंश के संबंध में मेरे मन में यह बात आती है: मुझे यह सिखाया गया था कि जब कोई व्यक्ति परामर्श लेने आता है—चाहे वह कलीसिया का सदस्य हो, कोई साथी विश्वासी हो, या कोई औपचारिक ग्राहक हो—और वह परामर्शदाता से (इस मामले में, "डॉ. किम" से) पूछता है, "क्या आप मुझे तलाक लेने के लिए कह रहे हैं?" तो परामर्शदाता को केवल यह जवाब *नहीं* देना चाहिए, "हाँ, आगे बढ़ो और तलाक ले लो।" दूसरे शब्दों में, मेरा दृढ़ विश्वास है कि किसी को भी ठीक वैसा ही जवाब देना चाहिए जैसा डॉ. किम ने दिया

था: "चुनाव तुम्हारा है, यून-जू।" मैं यहाँ संक्षेप में इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि विशेष रूप से जब कोई साथी विश्वासी आप पर भरोसा करता है—और अपना दिल खोलकर अपनी बात कहता है क्योंकि वह अपने वैवाहिक जीवन में संघर्ष कर रहा होता है—तो आपको खुद से यह पूछना चाहिए: क्या सचमुच प्रभु की यही इच्छा है कि आप उनकी स्थिति में भावनात्मक रूप से उलझ जाएँ—शायद उनके जीवनसाथी के बारे में शिकायत करने में उनका साथ देकर—केवल इसलिए क्योंकि आप उस साथी विश्वासी से प्रेम करते हैं? यह तब और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, जब वह व्यक्ति आपसे ऐसे प्रश्न पूछता है, जैसे: "मैं अपने जीवनसाथी से तलाक लेने के बारे में सोच रहा हूँ; क्या मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं?" ऐसे क्षणों में, हमें यह कहने से बचना चाहिए कि, "हाँ, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं तलाक ले लेता।" संक्षेप में कहें तो, हमें संयम बरतना चाहिए और दूसरों को यह बताने से बचना चाहिए कि उन्हें अपने व्यक्तिगत चुनाव कैसे करने चाहिए—क्योंकि वे चुनाव अंततः उन्हीं के होते हैं, और केवल उन्हीं के द्वारा किए जाने चाहिए।

(9) "हो सकता है कि मैं सबसे बड़ी बेटी हूँ, लेकिन सच कहूँ तो, मैं बस सबसे पहले पैदा हो गई—बस इतनी सी बात है। यह कुछ ऐसा नहीं था जिसकी मैंने माँग की हो। इसके बावजूद, क्या मुझसे अब भी यह उम्मीद की जाती है कि मैं समझौता करूँ, ज़िम्मेदारी उठाऊँ, और त्याग करूँ? क्या 'अच्छी बेटी' कहलाने का यही एकमात्र तरीका है?" (किम यून-जू)

एक "सबसे बड़ी बेटी" के तौर पर, किम यून-जू ने "डॉ. किम" से पूछा, "क्या मुझसे यह उम्मीद की जाती है कि मैं समझौता करूँ, ज़िम्मेदारी उठाऊँ, और त्याग करूँ?"—और ये शब्द सचमुच मेरे दिल को छू गए। इसका कारण यह है कि मेरा मानना है कि मेरी अपनी पत्नी, जो खुद भी सबसे बड़ी बेटी है, इस समय "समझौता कर रही है, ज़िम्मेदारी उठा रही है, और त्याग कर रही है।" विशेष रूप से, वह शब्द—"समझौता"... *आह।* जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, कोरिया में रहने के दौरान, मेरी पत्नी और मेरे बीच एक बड़ा टकराव हुआ था, जिसने आखिरकार मुझे उसे और भी गहराई से समझने का मौका दिया। मैं एक माँ के दिल को समझ पाया—जिसने अपनी पूरी ज़िंदगी लगातार समझौता करते हुए बिताई थी—और जो यह नहीं चाहती थी कि उसके अपने सबसे बड़े बेटे को भी अपनी ज़िंदगी उन्हीं समझौतों (और त्यागों) के साथ बितानी

पड़े। यह एक ऐसी भावना है जिसे शब्दों में पूरी तरह बयाँ नहीं किया जा सकता। बेशक, आध्यात्मिक परिपक्वता के नज़रिए से, इंसान को *समझौता करना चाहिए* और त्याग के आनंद का अनुभव करने की कोशिश करनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था। लोग अक्सर कहते हैं कि उन्हें तथाकथित "अच्छा इंसान" (nice guy) पसंद नहीं होता; इसी तरह, मेरा मानना है कि एक "अच्छी बेटी" के तौर पर ज़िंदगी जीने का गहरा असर पड़ सकता है—न केवल किसी के वैवाहिक रिश्ते पर, बल्कि अपने बच्चों के साथ अपने रिश्ते पर भी।

(10) "मैं आपके फैसले को समझता हूँ, सुश्री यून-जू। हालाँकि, समस्या इस बात में है कि आपको—और सिर्फ़ आपको ही—उस शादी से पैदा होने वाले दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों का पूरा बोझ उठाना पड़ेगा।" (डॉ. किम)

हालाँकि डॉ. किम ने किम यून-जू की कहानी सुनी—विशेष रूप से इस बारे में कि उसने उस खास आदमी से शादी करने का फैसला क्यों किया—और कहा कि वह उसके फैसले को "समझते हैं," लेकिन इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात उनका अगला मुद्दा था: कि किम यून-जू को ही आखिरकार उस शादी से पैदा होने वाले "दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों" का बोझ उठाना पड़ेगा। इस बात पर विचार करते हुए, मुझे याद आता है कि—शादी करने के शुरुआती फ़ैसले से परे—हम शादी शुरू होने के बाद भी अनगिनत चुनाव करके ज़िंदगी में आगे बढ़ते रहते हैं। मेरा मानना है कि, भले ही देर से सही, हमें उन चुनावों के "परिणामों" को पहचानना चाहिए; फिर, "अगर अभी भी कोई मौक़ा बचा है," तो हमें "पश्चाताप" के ज़रिए "सुधार" पाने के उस मौक़े को लपक लेना चाहिए—ऐसा करते समय हमें पूरी तरह से ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए और प्रार्थना में उनसे गुहार लगानी चाहिए। बेशक, यह कहीं ज़्यादा बेहतर होगा कि हम अपने चुनावों के परिणामों का पहले से ही अंदाज़ा लगा लें—बजाय इसके कि हमें उनका एहसास बहुत देर से हो—और अपने फ़ैसले समझदारी से लें। हालाँकि मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि शादी के बंधन में बँधते समय कितने युवा पुरुषों और महिलाओं के पास वास्तव में उस स्तर की समझदारी होती है, मुझे भरोसा है कि जो लोग ईश्वर की नज़र में विनम्रता और विश्वास के साथ शादी की तैयारी कर रहे हैं, वे निश्चित रूप से समझदारी भरे चुनाव करेंगे। मेरी दिली प्रार्थना है कि मेरे अपने बच्चे भी ऐसे ही समझदारी भरे चुनाव करें। इसके अलावा, मैंने बार-बार अपने बच्चों

को सलाह दी है कि वे अपने होने वाले जीवनसाथी के असली चरित्र और ईमानदारी पर ध्यान दें। मेरी चिंता इस डर से पैदा होती है कि कहीं उन्हें ऐसा जीवनसाथी न मिल जाए जो—खुद को एक सच्चा ईसाई कहने के बावजूद—मसीह जैसा चरित्र विकसित करने में नाकाम रहे, जिसमें ईमानदारी की कमी हो, और जो धोखेबाज़ी, झूठ बोलने और इसी तरह के दूसरे व्यवहारों में लिप्त हो। शादी से पहले किए गए एक गलत चुनाव से होने वाली भारी तकलीफ़ का खुद अनुभव करने के बाद—और अपने करीबी, प्यारे साथी विश्वासियों को झेलनी पड़ी पीड़ा को देखने के बाद—मैंने अक्सर अपने बच्चों के साथ उनके चुनावों के परिणामों के बारे में बातचीत की है।

(11) "क्या हमारे माता-पिता और भाई-बहन—वे लोग जिनके साथ हमने अपनी ज़िंदगी का सबसे लंबा समय बिताया है—वे लोग नहीं होने चाहिए जिनके साथ हमारा रिश्ता सबसे ज़्यादा आरामदायक हो?" (किम यून-जू)

फिर भी, असलियत में, सचमुच "मेलजोल वाले परिवार" उतने आम नहीं हैं जितना कोई सोच सकता है। बेशक, ऊपरी तौर पर, कोई परिवार निश्चित रूप से मेलजोल वाला लग सकता है। हालाँकि, मेरा मानना है कि यह सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि "ऐसे काफ़ी घर हैं जहाँ परिवार के सदस्य एक-दूसरे के साथ शांति से नहीं रहते"; बल्कि, मैं तो यह कहूँगा कि ऐसे घरों की संख्या वास्तव में काफ़ी ज़्यादा है। आख़िरकार, कोई भी परिवार बिना किसी हद तक के आपसी टकराव के कैसे चल सकता है? विचारों में टकराव, बहस, ठेस, दर्द, आँसू—यह लिस्ट तो चलती ही रहती है... जब दो पापी लोग पति-पत्नी बनकर एक साथ आते हैं, तो कितनी ज़्यादा—दो गुना, या शायद चार गुना ज़्यादा—संभावना होती है कि वे एक-दूसरे के खिलाफ पाप करेंगे? *[हँसते हुए]* फिर भी, क्योंकि हम यीशु की क्रूस पर दी गई बलिदानी मृत्यु में अपना विश्वास रखते हैं—पापों की क्षमा में और यहूदी तथा गैर-यहूदी के बीच की विभाजनकारी दीवार को तोड़कर मेल-मिलाप कराने की उनकी शक्ति में विश्वास करते हैं—इसलिए हम एक ऐसा समुदाय हैं जो एक सामंजस्यपूर्ण परिवार बनाने के लिए समर्पित है। जब भी परिवार के दायरे में हमारी पापपूर्ण प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं, तो हम सुसमाचार के योग्य जीवन जीने का प्रयास करते हैं; और प्रभु के वचन का पालन करने के लिए हम पूरी लगन से अपने ही

भीतर एक आंतरिक संघर्ष करते हैं। इसलिए, हमारे लिए, "माता-पिता और भाई-बहन, जिनके साथ हमने सबसे लंबा समय बिताया है, वे ही ऐसे लोग होने चाहिए जिनके साथ हमारा रिश्ता सबसे ज़्यादा सहज और आरामदायक हो।" यदि रिश्ता इतना असहज हो जाए कि किसी को उनसे बचने या उन्हें दूर रखने की इच्छा होने लगे... तो फिर, बात कुछ और है। हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए, और अपना आत्म-परीक्षण करके यह पूछना चाहिए: प्रभु की नज़रों में, क्या हम सचमुच एक सामंजस्यपूर्ण, मसीह-विश्वासी परिवार हैं—गवाहों का एक ऐसा समुदाय जो यीशु के प्रकाश को चमकाता है और पृथ्वी के नमक के रूप में कार्य करता है?

(12) "हो सकता है कि दुनिया तेज़ी से बदल रही हो, लेकिन एक बात हमेशा स्थिर रहती है: परिवार हर किसी के लिए सबसे महत्वपूर्ण मूल्य बना रहता है। ... सचमुच एक सुखी परिवार बनने के लिए, हमें एक-दूसरे के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम एक-दूसरे को और भी गहराई से समझ सकें। 'आप जितना ज़्यादा जानेंगे, आपका परिवार उतना ही ज़्यादा सुखी होगा।' इसलिए, यदि आप सचमुच अपने परिवार की खुशी चाहते हैं, तो आपको समझने, संवाद करने और प्रेम करने के लिए और भी अधिक प्रयास करना होगा। परिवार की खुशी कोई ऐसा उपहार नहीं है जो महज़ संयोग से आपकी गोद में आकर गिर जाए; यदि आप सुखी होना चाहते हैं, तो आपको इसके लिए मेहनत करनी होगी।" (डॉ. किम)

अंत में, मैं बस एक और बिंदु पर विचार करना चाहूँगा। यह सच है कि "परिवार हर किसी के लिए सबसे महत्वपूर्ण मूल्य बना रहता है।" परिवार के इस अत्यंत महत्व को देखते हुए... मैं इस भावना से पूरी तरह सहमत हूँ कि हमें "एक-दूसरे के बारे में और अधिक जानना चाहिए, और इस प्रकार एक-दूसरे को और भी गहराई से समझना चाहिए।" बेशक, हम किसी दूसरे व्यक्ति को 100 प्रतिशत तक सचमुच कैसे जान सकते हैं? फिर भी, मेरा मानना है कि मुझे अपनी पत्नी—और अपने बच्चों—को अपनी ज़िंदगी के आखिरी पल तक जानने की कोशिश जारी रखनी चाहिए। ऐसा करने की प्रक्रिया में, मैं "दिल से दिल की बातचीत" को बहुत ज़्यादा अहमियत देता हूँ। इसके अलावा, जब मैं इसे अमल में लाने की कोशिश करता हूँ, तो मैं तीन मार्गदर्शक सिद्धांतों का पालन करता हूँ [ऐसे सिद्धांत जिन्हें मैं अपने सभी निजी रिश्तों में लागू करने और अपनाने की कोशिश करता हूँ]। ये तीन सिद्धांत हैं: (a) ईमानदारी (या सत्यनिष्ठा), (b) पारदर्शिता, और (c) संवेदनशीलता। नतीजतन, इन सिद्धांतों से प्रेरित होकर, मैं सबसे पहले अपने दिल के दरवाज़े खोलने की

पहल करता हूँ, और अपने अंदर के विचारों और भावनाओं को पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ साझा करने की कोशिश करता हूँ। मैं इन तीनों सिद्धांतों को न केवल अपनी पत्नी के साथ बातचीत में, बल्कि अपने तीनों बच्चों के साथ बातचीत में भी लागू करने की कोशिश करता हूँ। जब मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं अक्सर प्रभु के काम को होते हुए देखता हूँ। जब हम प्रभु की छत्रछाया में एक-दूसरे को जानते हैं, तो हमारे बीच आपसी समझ बढ़ती है; हम उनके काम का अनुभव करते हैं, जो हमें एक-दूसरे से वैसे ही प्यार करने में सक्षम बनाता है जैसे हम हैं—फिर भी उम्मीद के साथ—समझ, स्वीकृति, धैर्य और सच्चे प्यार के अन्य सभी पहलुओं को अपनाते हुए। और क्योंकि मैं प्रभु के प्रेम के साथ और भी गहराई से प्यार करना चाहता हूँ, इसलिए मैं और भी पूरी तरह से समझने और संवाद करने की कोशिश करता हूँ।

हमारे बच्चों की मुश्किलों में भी...

हम दिल से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु—हमारे बच्चों के सामने आने वाली मुश्किलों में भी—हम माता-पिता को हमारे परिवारों की सुरक्षा के लिए मज़बूत बाड़ के रूप में स्थापित करें।

मेरी पहली बेटी, जूयंग (चारिस) की प्यारी याद में

आज, 27 अप्रैल (2023), उस दिन की 25वीं बरसी है जब जूयंग—जिसे प्रभु ने मेरी पत्नी और मुझे एक कृपापूर्ण उपहार के रूप में दिया था (चारिस का ग्रीक में अर्थ "कृपा" होता है)—मेरी बाहों में सो गई (गुज़र गई)। मैं जूयंग को लिखा एक दिल को छू लेने वाला पत्र साझा करना चाहूँगा, जो मैंने 30 मार्च, 1998 को लिखा था:

जूयंग (चारिस) के नाम, जो यीशु से प्रेम करती है:

जब भी मैं तुम्हें देखता हूँ, जूयंग—जिसका जीवन आज भी ईश्वर की कृपा से ही चल रहा है—तो मैं उसे अपना गहरा धन्यवाद देता हूँ। जब मैं हर दिन तुमसे मिलने आता हूँ, और पल-पल यह देखता हूँ कि ईश्वर कैसे तुम्हारे जीवन को आगे बढ़ा रहा है, तो मुझे साफ़ दिखाई देता है कि वह इस समय का उपयोग तुम्हारी माँ और मेरे विश्वास को निखारने और प्रशिक्षित करने के लिए कर रहा है। जब मैं अपने कमज़ोर विश्वास की जाँच करता हूँ—जो तुम्हारी हालत सुधरने पर कृतज्ञता से भर उठता है, लेकिन हालत बिगड़ने पर स्वाभाविक रूप से चिंता में डूब जाता है—तो मुझे एहसास होता है कि मेरे विश्वास का आधार वास्तव में वह विश्वासयोग्य प्रभु स्वयं नहीं था, बल्कि तुम्हारी शारीरिक स्थिति के दिखाई देने वाले प्रमाण थे। जब मैंने इस बात पर विचार किया कि क्या ईश्वर हमसे सचमुच इसी तरह के विश्वास की अपेक्षा करता है, तो मुझे अपने आप पर गहरी शर्म महसूस हुई। ईश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करते हुए, मैंने उसी क्षण यह संकल्प लिया कि मैं तुम्हारी देखभाल, जूयंग, अपनी आँखें केवल और केवल प्रभु पर टिकाकर करूँगा।

एक बार, जब मैं तुमसे मिलने गया और तुम्हारा नाम पुकारने के लिए अपना मुँह खोला—यह आशा करते हुए कि मैं एक पिता के हृदय की भावनाओं को व्यक्त कर सकूँगा—तो मैं केवल ये शब्द ही कह पाया, "जूयंग के नाम, जो यीशु से प्रेम करती है," और उसके बाद मैं एक भी शब्द नहीं बोल पाया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि, जब मैंने उस अपार पीड़ा के बारे में सोचा जिसे तुम सहन कर रही थी, तो तुम्हारे सामने खड़े होकर "पिता" होने का दावा करने में मुझे गहरी शर्म महसूस हुई। जब मैंने तुम्हारे केवल तीन सप्ताह के छोटे से जीवन की तुलना अपने तीस वर्षों के जीवन से की, तो उस पीड़ा की विशालता, जिससे तुम गुज़र रही थी, ने मुझे पूरी तरह से अभिभूत कर दिया और मैं पूरी तरह से निशब्द रह गया। एक पिता के कोमल हृदय से अभिभूत होकर—जब मैंने तुम्हें देखा, जूयंग, जो अपनी नींद में इतनी शांति से लेटी हुई थी—तो मेरी आत्मा की गहराइयों में चुपचाप आँसू बह निकले। मैं एक ऐसा पिता हूँ जिसने अभी तक अपनी प्यारी जू-यंग के रोने की आवाज़ भी नहीं सुनी है। और इसलिए, आज भी, मैं इंतज़ार करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ—इस उम्मीद के साथ कि ईश्वर की कृपा से, तुम पूरी तरह ठीक हो जाओगी; कि तुम्हें एक स्वस्थ शरीर वापस मिलेगा, तुम अपनी माँ की गोद में होगी, और आखिरकार अपने सारे दर्द और तकलीफ़ को बिना किसी रोक-टोक के आँसुओं के ज़रिए ज़ाहिर कर पाओगी।

मेरी सबसे प्यारी जू-यंग, जब भी मैं तुम्हें अपनी आवाज़ पहचानते हुए देखता हूँ, तो मेरा दिल खुशी और प्यार से भर जाता है। इसके अलावा, जब मैं तुम्हें देखता हूँ—कि इतनी मुश्किलों के बावजूद—तुम सिर्फ़ अपने पिता का चेहरा देखने के लिए अपनी आँखें खोलने की हिम्मत जुटाती हो, तो मेरा दिल कृतज्ञता के आँसुओं से भर जाता है। कई बार तो ऐसा भी हुआ है, जब तुम्हें अपनी आँखें पूरी तरह खोले हुए और सीधे मेरी आँखों में देखते हुए देखकर, मैं भी तुम्हारी आँखों में झाँकने लगता हूँ—तुम्हारी आँखों में छिपे विचारों और भावनाओं को पढ़ने की कोशिश करता हूँ। तुम्हारे मुँह में लगी नलियों की वजह से रो न पाने या कोई आवाज़ न निकाल पाने के कारण, मैं अक्सर सोचता हूँ: मेरी जू-यंग मुझे क्या बताने की कोशिश कर रही है? मेरी अनमोल जू-यंग, क्या तुम जल्द से जल्द ठीक होकर, जी भर के रोने के लिए तरस नहीं रही हो? तुम्हें बहुत दर्द होता होगा; क्या तुम नहीं चाहती कि तुम बस अपना मुँह खोलो और ज़ोर से रो पड़ो? मुझे बिना किसी शक के पूरा विश्वास है कि वह दिन ज़रूर आएगा जब मैं तुम्हें देखूँगा—अपनी माँ की गोद में—अपना सारा दर्द रोकर निकाल देने के बाद, आखिरकार एक शांत और प्यारी नींद में सो जाते हुए। जब तक वह दिन नहीं आ जाता,

मेरी जू-यंग, तुम्हें *मज़बूत रहना होगा*। तुम्हारे मम्मी और पापा भी ईश्वर में अपने विश्वास पर मज़बूत बने रहेंगे, और उस दिन के आने का सब्र से इंतज़ार करेंगे।

ईश्वर की शरण में,

तुम्हारे पापा की ओर से, जो तुमसे बहुत प्यार करते हैं, जू-यंग
(30 मार्च, 1998)



अक्सर कहा जाता है कि ऐसा कोई परिवार नहीं है जिसकी अपनी कुछ समस्याएँ न हों। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए, और हमें आगे कैसे बढ़ना चाहिए?

अक्सर कहा जाता है कि कोई भी परिवार समस्याओं से मुक्त नहीं होता। दूसरे शब्दों में, हर परिवार को अपनी ही तरह की चिंताओं, कठिनाइयों और दुखद परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसे एक और तरह से कहें तो, हमारे हर परिवार की कुछ खास प्रार्थनाएँ होती हैं जिन्हें हम पूरी लगन से परमेश्वर के सामने रखते हैं। अगर इस समय हम ऐसी चुनौतियों का सामना नहीं कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से भविष्य में कभी न कभी हमें उनका सामना करना पड़ेगा।

तो फिर, हमें क्या करना चाहिए, और हमें कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए? मैं इस विषय पर अपने कुछ निजी विचार साझा करना चाहूँगा:

1. मैं इस सच्चाई पर विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर हमारे परिवार से प्रेम करता है।

2. मुझे पूरा यकीन है कि हमारा परिवार परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के सुरक्षित घेरे में है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि परमेश्वर की यह सर्वोपरि इच्छा अच्छी, मनभावन और उत्तम है (रोमियों 12:2)।

3. मेरा मानना है कि परमेश्वर सभी बातों को—जिनमें हमारे परिवार की समस्याएँ, कठिनाइयाँ, दुखद परिस्थितियाँ और यहाँ तक कि संकट भी शामिल हैं—हमारे भले के लिए एक साथ काम करने देगा (रोमियों 8:28)। इसलिए, मैं प्रार्थना करने, आशा रखने और विश्वास के साथ प्रतीक्षा करने का संकल्प

लेता हूँ; हमेशा यह याद रखते हुए कि ऐसे संकट परमेश्वर के बचाने वाले प्रेम और उसकी सदा रहने वाली उपस्थिति का अनुभव करने के अनमोल अवसर होते हैं (भजन संहिता 63:3)।

4. उस कृपा और प्रेम को याद करते हुए जो परमेश्वर ने अतीत से लेकर अब तक हमारे परिवार पर बरसाया है—और उस कृपा और प्रेम को सचमुच महसूस (अनुभव) करते हुए—मैं कृतज्ञता से भरे हृदय के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं (उसके वचन) का पालन करने के लिए स्वयं को समर्पित करता हूँ (व्यवस्थाविवरण 11:1–7)।

5. एक परिवार के रूप में, हम परमेश्वर के वचन और प्रार्थना की शक्ति के द्वारा आत्मिक युद्ध लड़ते हैं; इस विश्वास के साथ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने पहले ही विजय प्राप्त कर ली है, हम मिलकर एक ऐसे विश्वास के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं जो सक्रिय और विजयी दोनों हो (1 कुरिन्थियों 10:13)।

यह सही और गलत का मामला नहीं, बल्कि बचाने का मामला है!

आज सुबह, मेरी अपनी प्यारी पत्नी से बातचीत हुई, जिसके दौरान उसने मुझसे कहा, "यह सही और गलत का मामला नहीं, बल्कि बचाने का मामला है।" उसने मुझसे इस तरह इसलिए बात की, क्योंकि उसके किसी प्रियजन का परिवार—और मेरे किसी प्रियजन का परिवार—दोनों ही इस समय बड़ी मुश्किलों या संकटों का सामना कर रहे हैं। इसलिए, मैं अपनी पत्नी के शब्दों को ही अपना मुख्य विषय बनाना चाहूँगा और इस मामले पर अपने कुछ निजी विचार लिखना चाहूँगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा मेरा मार्गदर्शन करे:

1. जिन प्रियजनों के परिवारों को मेरी पत्नी और मैं जानते हैं, वे इस समय बड़ी मुश्किलों या संकटों का सामना कर रहे हैं—विशेष रूप से, वे उस प्रक्रिया से गुज़र रहे हैं जिसे आम तौर पर "तलाक" कहा जाता है।

2. आज के ज़माने में तलाक चाहे कितना भी आम क्यों न हो, इस प्रक्रिया से गुज़रने वाला हर एक पारिवारिक सदस्य निस्संदेह immense hardship (अत्यधिक कठिनाई), anguish (मानसिक पीड़ा) और pain (दर्द) का अनुभव कर रहा होता है। विशेष रूप से—और यह मेरी अपनी निजी राय है—जहाँ एक ओर तलाक पाने वाले व्यक्ति को निश्चित रूप से अत्यधिक कठिनाई, भावनात्मक तनाव और कष्ट का सामना करना पड़ता है, वहीं दूसरी ओर, तलाक की पहल करने वाला व्यक्ति वास्तव में उससे भी कहीं अधिक कठिनाई, तनाव और दर्द सहन कर रहा हो सकता है।

3. आज अपनी पत्नी से बातचीत के दौरान मुझे यह एहसास इसलिए हुआ, क्योंकि यह बात उसकी एक सहेली से जुड़ी स्थिति से सामने आई। पाँच साल तक कैंसर से जूझने के बाद, उस सहेली ने हाल ही

में अपने पति से कहा कि वह तलाक चाहती है (खबरों के मुताबिक, उनके बच्चों को अभी तक अपने माता-पिता की इन योजनाओं के बारे में कुछ भी पता नहीं है)। ऐसा लगता है कि पति को इस बात की लगभग कोई समझ ही नहीं है कि उसकी पत्नी ने *क्यों* तलाक माँगा है, या इसके पीछे उसके क्या गहरे कारण हो सकते हैं। जब मैं यह कहानी सुन रहा था—न केवल इसके मूल तथ्यों को, बल्कि मेरी पत्नी के माध्यम से सामने आए पत्नी के दृष्टिकोण को भी—तो मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि तलाक की पहल करने वाली वह महिला, वास्तव में अपने पति (जिसे तलाक दिया जा रहा है) की तुलना में कहीं अधिक कष्ट, मानसिक पीड़ा और कठिनाई सहन कर रही हो सकती है।

4. उदाहरण के लिए, तलाक का सामना कर रहे पति के दृष्टिकोण से देखें, तो यह अनुभव उसके लिए एक गहरा सदमा हो सकता है। इसका संभावित कारण यह है कि उसे इस बात की कोई स्पष्ट समझ नहीं होती कि उसकी पत्नी उससे तलाक *क्यों* माँग रही है। खास तौर पर, अगर वह मन ही मन सोचता है, "मुझे नहीं लगता कि मैंने कोई ऐसी बड़ी गलती की है जिसकी वजह से मेरी पत्नी मुझे तलाक़ दे—मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा कि उसने तलाक़ क्यों माँगा है," तो उसे बहुत ज़्यादा उलझन और तकलीफ़ होना लाज़मी है। हालाँकि, मैं खुद से यह सोचने लगती हूँ: जब पत्नी ऐसे पति को देखती है, तो उस समय उसकी मन की हालत कैसी होती होगी? जब उसने आखिरकार अपने पति से तलाक़ माँगा, तो शायद उसने बहुत लंबे समय तक निजी मुश्किलों, मानसिक पीड़ा और तकलीफ़ों को सहा होगा—सब कुछ अपने अंदर दबाकर वह तब तक सब्र करती रही, जब तक वह उस मोड़ पर नहीं पहुँच गई जहाँ उसे लगा कि अब वह और आगे नहीं बढ़ सकती (शायद उसने इंसान की सहनशक्ति की हद पार कर ली थी)। इस फ़ैसले पर बहुत ज़्यादा सोचने-विचारने के बाद, आखिरकार उसने अपने पति से बात की; फिर भी, जब उसे एहसास होता है कि उसका पति न केवल इस बात से पूरी तरह बेखबर है कि वह *क्यों* तलाक़ चाहती है (जिससे पता चलता है कि उसे इस बात का भी कोई अंदाज़ा नहीं है कि वह किस तरह उसके साथ बुरा बर्ताव कर रहा था), बल्कि वह उसकी भावनाओं को ज़रा भी नहीं समझ पा रहा है, तो मुझे लगता है कि वह पूरी तरह से निराशा में डूब जाती होगी। नतीजतन, वह अपने पति से तलाक़ लेने और अलग होने के अपने फ़ैसले पर और भी ज़्यादा पक्की हो जाती होगी।

5. जब मैं उस पत्नी की बातें सुन रही थी, तो एक खास "पारिवारिक मुद्दा" मेरा ध्यान खींच रहा था—खास तौर पर, परिवार को एक संगठनात्मक "प्रणाली" के तौर पर देखने का विचार। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मुझे यह एहसास हुआ कि अगर किसी "पारिवारिक प्रणाली" का "संतुलन" बिगड़ जाता है, तो यह तय है कि आखिरकार उसमें बड़ी मुश्किलें या संकट पैदा हो ही जाएँगे। मैं इस नतीजे पर इसलिए पहुँची, क्योंकि मेरी नज़र में, उस पत्नी की सहेली का पारिवारिक ढाँचा—जिसके बारे में उसने आज मुझे बताया था—पूरी तरह से असंतुलित लग रहा था। इसके अलावा, मेरी राय में, इस पारिवारिक प्रणाली का संतुलन धीरे-धीरे और लगातार उसकी शादी के पूरे दौर में बिगड़ता रहा—यह शादी लगभग बीस साल तक चली, और उनके बच्चों के जन्म के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। इस संदर्भ में "संतुलन बिगड़ने" से मेरा मतलब यह है कि उसका घर इसलिए असंतुलित हो गया, क्योंकि उसने अपनी पूरी ज़िंदगी दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगा दी—खास तौर पर, अपने "ज़रूरतमंद" पति (जिसे हर समय उसके ध्यान की ज़रूरत होती थी) और अपने बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने में—हालात यहाँ तक पहुँच गए कि उसका पति और बच्चे, दोनों ही उसकी मदद के आदी हो गए और पूरी तरह से उसी पर निर्भर हो गए। नतीजतन, मैंने अपनी पत्नी से अपने विचार साझा किए: हालाँकि तलाक़ का सामना कर रहा पति निश्चित रूप से दोषी है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि इस स्थिति के लिए उसकी पत्नी भी कुछ हद तक ज़िम्मेदार है।

6. व्यक्तिगत रूप से, हालाँकि मेरा आम तौर पर यह मानना है कि वैवाहिक संकट की मुख्य ज़िम्मेदारी पति की होती है—क्योंकि वह घर का मुखिया होता है—लेकिन जब मैं तलाक़ की प्रक्रिया से गुज़र रहे जोड़ों को देखता हूँ, तो मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि समस्याएँ केवल पति की वजह से ही पैदा नहीं होतीं; बल्कि, समस्या में पत्नी की भी अक्सर कोई न कोई भूमिका होती है। मेरी पत्नी की सहेली के मामले में, ऐसा लगता है—उसके नज़रिए से—कि उसने अपने पति (और बच्चों) की सेवा करने और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने की पूरी-पूरी कोशिश की, जो उसकी मदद पर निर्भर थे। फिर भी, बदले में उसे क्या मिला—यहाँ तक कि कैंसर से अपनी पाँच साल की लड़ाई के दौरान भी—अपने पति या बच्चों से किसी भी तरह का कोई आराम या सहारा नहीं मिला, जो *उसकी* अपनी

ज़रूरतों को पूरा करने में मददगार साबित होता। इसलिए, मैंने अपनी पत्नी से कहा कि उसके लिए यह सब कितना मुश्किल, तकलीफ़देह और अकेलापन भरा रहा होगा। हालाँकि, एक दूसरे नज़रिए से, मेरे मन में यह विचार भी आया कि शायद उसके पति और बच्चे कुछ हद तक ऐसे इसलिए बन गए, क्योंकि उसने खुद ही, एक तरह से, उन्हें ऐसा बनने के लिए "आदत डाल दी" थी। दूसरे शब्दों में, हालाँकि उसने शायद अपने पति (और बच्चों) पर सकारात्मक प्रभाव डालने की कोशिश की होगी, लेकिन मुझे लगता है कि उनकी मदद करने की अपनी कोशिशों में वह कुछ ज़्यादा ही आगे निकल गई—इतनी ज़्यादा और असंतुलित हद तक कि उसका पति (और बच्चे) आखिरकार ऐसे इंसान बन गए, जिन्हें उसकी अपनी ज़रूरतों का ज़रा भी एहसास नहीं था। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि अगर उसने समझदारी से और धीरे-धीरे अपने पति (या बच्चों) को अपनी ज़रूरतें खुद पूरी करना सिखाया होता, तो क्या होता। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि एक पारिवारिक व्यवस्था में, संतुलन की सच्ची भावना तभी हासिल होती है, जब पत्नी पति पर सकारात्मक प्रभाव डालती है, और बदले में, पति भी पत्नी पर सकारात्मक प्रभाव डालने में सक्षम होता है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि केवल पत्नी ही सहज रूप से पति की ज़रूरतों को पहले से भाँप ले और उन्हें पूरा करे; बल्कि, पति को भी सहज रूप से पत्नी की ज़रूरतों को पहले से भाँपना और उन्हें पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, जब कोई जोड़ा एक-दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने में खुद को असमर्थ पाता है, तो मेरा मानना है कि उन्हें अपने जीवनसाथी के लिए प्रार्थना में प्रभु की शरण लेनी चाहिए—इस भरोसे के साथ कि केवल वही उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरी तरह समझते हैं और उन्हें पूरी तरह से पूरा करने में सक्षम हैं।

7. बेशक, मैं जटिल पारिवारिक मुद्दों को केवल एक या दो खास बिंदुओं तक सीमित करके उन्हें परिभाषित करने और व्यक्त करने की कोशिश को उचित नहीं मानता। हालाँकि, अपनी पत्नी के ज़रिए उसकी सहेली की स्थिति के बारे में सुनने के बाद—और यह समझते हुए कि मेरी पत्नी ने शायद अपनी सहेली की बातों को मुझ तक पहुँचाने से पहले अपने ही नज़रिए से देखा होगा—मैं इस बारे में सोच रहा हूँ कि यह बातचीत हमें क्या सबक दे सकती है। नतीजतन, मैं उन विचारों को समझने के तरीके के तौर पर इन निजी विचारों को लिखकर साझा कर रहा हूँ। ऐसा ही एक विचार

यह है: जब कोई जोड़ा किसी संकट का सामना करता है, तो ध्यान दोष देने पर नहीं होना चाहिए—यह तय करने पर नहीं कि कौन सही है और कौन गलत—बल्कि इस पर होना चाहिए कि *क्यों* वह जोड़ा ऐसे नाज़ुक मोड़ पर पहुँच गया है। हमें इसके पीछे के मूल कारणों पर विचार और विश्लेषण करना चाहिए; मेरे अपने मामले में, मैं उन सबकों को समझने की कोशिश करता हूँ जो परमेश्वर मेरी पत्नी के साथ बातचीत के ज़रिए मुझे दिखा रहे हैं। इस अभ्यास का अंतिम उद्देश्य यह है कि मेरी पत्नी और मैं दोनों इन सबकों को अपने भीतर उतार लें, ताकि भविष्य में, हम अपने आस-पास के उन प्रियजनों को, जो वैवाहिक संकटों का सामना कर रहे हैं, अपनी तरफ से जो भी विनम्र सहायता कर सकें, वह प्रदान कर सकें। हमारा उद्देश्य किसी एक पक्ष को सही और दूसरे को गलत ठहराकर फैसला सुनाना नहीं है, बल्कि—यदि यह प्रभु की इच्छा के अनुरूप हो—तो उनके हाथों में एक साधन के रूप में इस्तेमाल होना है (चाहे कितनी भी अपूर्णता या विनम्रता से क्यों न हो), ताकि उन जोड़ों को बचाने और उनके रिश्ते को फिर से संवारने में मदद मिल सके।

मेरी पत्नी, मेरे और हमारे बच्चों के बीच के रिश्ते के बारे में...

नीचे दी गई फ़ोटो मेरी प्यारी बेटी, येरी ने खींची थी। उसने इसे सबसे पहले अपनी Instagram Story पर शेयर किया था, जिसके बाद मैंने इसे यहाँ दोबारा पोस्ट किया है। हम पिस्मो बीच घूमने गए थे—मैं, मेरी पत्नी और हमारी दो बेटियाँ (येरी और यीउन)। जब हम टहल रहे थे—यीउन हमसे आगे चल रही थी और येरी हमारे पीछे—तो येरी ने पीछे से हमारी यह फ़ोटो खींची, जिसमें हम हाथ पकड़े हुए टहल रहे थे। मैं इस मौके का फ़ायदा उठाते हुए—और इस फ़ोटो को एक शुरुआती बिंदु बनाकर—कुछ निजी विचार साझा करना चाहूँगा। मेरा मुख्य ध्यान कोरियन ड्रामा *One Spring Night* (जिसे कोरियन में *Bom-bam* कहा जाता है) पर रहेगा, जिसे मैं और मेरी पत्नी आजकल देख रहे हैं:

1. सबसे पहले, जब मैं येरी द्वारा खींची गई फ़ोटो—जो नीचे दिखाई गई है—को देखता हूँ, तो मेरे मन में एक निजी विचार आता है: बच्चों की नज़र से पीछे से देखने पर हमारी जो छवि बनती है, वह सुंदर और सुखद होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, मेरा मानना है कि मुझे और मेरी पत्नी को अपने बच्चों के लिए रोल मॉडल बनना चाहिए। इसका मतलब यह है कि, परिवार के भीतर, पति और पत्नी के बीच का रिश्ता सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण होता है। नतीजतन, इसका मतलब यह भी है कि एक माँ और उसके बच्चों के बीच का रिश्ता—हालांकि निश्चित रूप से ज़रूरी है—लेकिन घर में *सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण* रिश्ता नहीं है। मेरा पक्का मानना है कि शादी का यह बुनियादी रिश्ता प्रभु के प्रेम के संदर्भ में लगातार बढ़ना और परिपक्व होना चाहिए। इसी प्रक्रिया के ज़रिए हमारे बच्चे बड़े होते हैं, और अपने माता-पिता के बीच साझा किए गए प्रेमपूर्ण बंधन को देखते और अनुभव करते हैं। इसके

विपरीत, अगर ऐसा नहीं होता है—अगर बच्चे अपने माता-पिता को एक-दूसरे से प्यार करने में असफल होते देखते हैं, और इसके बजाय पापपूर्ण, पुरानी आदतों के चलते एक-दूसरे से नफ़रत करते, झगड़ते और लड़ते देखते हैं—तो मेरा मानना है कि इससे उन्हें अनिवार्य रूप से गहरे, गंभीर और संभावित रूप से विनाशकारी घाव लगेंगे।

2. कोरियन ड्रामा *One Spring Night*—जिसे मैं और मेरी पत्नी आजकल सोने से पहले साथ में देखते हैं—में मुख्य महिला किरदार, "ली जंग-इन" के माता-पिता (विशेष रूप से उसके पिता), उसकी शादी की योजनाओं में बहुत ज़्यादा दखल देते हैं और लगभग ज़बरदस्ती करते हैं; वे लगातार यह तय करते रहते हैं कि उसे आगे कैसे बढ़ना चाहिए। जब मैं यह दृश्य देख रहा था, तो मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा—जो मेरे बगल में बैठकर यह ड्रामा देख रही थी—और उससे दो बातें साझा कीं जिन्हें मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ: (1) "जब मैं अपनी शादी को देखता हूँ—एक ऐसा बंधन जिसे स्वयं ईश्वर ने जोड़ा है—या अपने प्यारे बेटे, डिलन, और उसकी पत्नी की शादी को देखता हूँ, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जब प्रभु किसी शादी की योजना बनाते हैं, तो सब कुछ सचमुच बहुत आसानी से और सही ढंग से हो जाता है।" (2) "हमारी दो प्यारी बेटियों, येरी और यीउन के संबंध में—जिनकी शादी अभी होनी बाकी है—आइए हम प्रार्थना के माध्यम से उनकी भविष्य की शादियों को ईश्वर को सौंप दें, और माता-पिता के तौर पर उनके चुनावों में बहुत ज़्यादा दखल न देने का संकल्प लें।"

3. ड्रामा *वन स्प्रिंग नाइट* देखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि मुख्य महिला पात्र, ली जंग-इन के पिता ने, अपनी सबसे बड़ी बेटी, ली सियो-इन की शादी को प्रभावी ढंग से बर्बाद कर दिया। मेरा कहने का मतलब यह है कि, हालाँकि पिता ने अपनी सबसे बड़ी बेटी, सियो-इन की शादी एक ऐसे डेंटिस्ट से तय की थी जिसका करियर बहुत प्रतिष्ठित था, लेकिन उसका पति आदतन उसके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार करता था। आखिरकार, गर्भवती होने के बावजूद, उसने फैसला किया कि वह अपने पति से तलाक लेना चाहती है। फिर भी, यह जानने के बाद भी कि उसकी बेटी के साथ शारीरिक दुर्व्यवहार हो रहा है, उसके पिता ने उसे तलाक *न* लेने के लिए मनाने हेतु तरह-तरह के तर्क दिए।

मेरी पत्नी और मैं कोरियाई संस्कृति और सामाजिक भावनाओं की बारीकियों से बहुत ज़्यादा परिचित नहीं हैं। परिणामस्वरूप, हमें यह समझने में कठिनाई होती है कि माता-पिता अपने बच्चों की शादी केवल ऐसे जीवनसाथियों से करने पर इतने ज़ोर क्यों देते हैं जिनके पास "अच्छा" पेशा या "अच्छा" पारिवारिक पृष्ठभूमि हो—जहाँ "अच्छा" की परिभाषा केवल माता-पिता के दृष्टिकोण से तय की जाती है (एक ऐसा दृष्टिकोण जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से सांसारिक और लौकिक मानता हूँ)। हमारा मानना है कि, ऐसी पृष्ठभूमि या पेशों को प्राथमिकता देने के बजाय, किसी को सबसे पहले उस व्यक्ति के चरित्र और आंतरिक स्वभाव को देखना चाहिए जिसे उनके प्यारे बच्चे ने अपने संभावित जीवनसाथी के रूप में चुना है। इसके अलावा—और इससे भी अधिक मौलिक रूप से—क्योंकि हम ईश्वर पर अपना भरोसा रखते हैं, इसलिए हम वही भरोसा अपने बच्चों पर भी करते हैं; अतः, हमारा मानना है कि हमें अपने बच्चों द्वारा अपने लिए चुने गए भविष्य के जीवनसाथियों पर भी वही भरोसा करना चाहिए। यदि, माता-पिता के तौर पर, हम अपने बच्चों पर भरोसा करने में विफल रहते हैं—और इसके बजाय उनके चुने हुए भविष्य के जीवनसाथियों को चिंता और आशंका की नज़र से देखते हैं—तो मेरा मानना है कि वे जिसे भी चुनेंगे, हम उसमें अनिवार्य रूप से कोई न कोई कमी निकाल ही लेंगे। नतीजतन, इससे माता-पिता और बच्चों के बीच का झगड़ा काफ़ी गहरा हो सकता है।

4. माता-पिता के तौर पर, हमारा मानना है कि क्योंकि हम अपने बच्चों की परवरिश करते समय भगवान पर भरोसा रखते हैं, इसलिए हमें बदले में वही भरोसा अपने बच्चों पर भी दिखाना चाहिए। इसके अलावा, हमारा मानना है कि हमारे और हमारे बच्चों के बीच के रिश्ते में कुछ सही सीमाएँ तय होनी चाहिए। हमें लगता है कि उनके साथ बातचीत करते समय हमारे बीच थोड़ी दूरी और निजी जगह (personal space) होनी चाहिए। इसलिए, हमारा मानना है कि उनके माता-पिता के तौर पर, हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम उन सीमाओं को पार न करें। अगर हम ऐसा करने में नाकाम रहते हैं, तो माता-पिता को अपने बच्चों की वजह से दुख उठाना पड़ेगा, और बच्चों को अपने माता-पिता की वजह से तकलीफ़ होगी।

5. एक जोड़े के तौर पर, हम अपने वैवाहिक रिश्ते को बनाए रखने के लिए अपने बीच कुछ सीमाएँ तय करते हैं और एक-दूसरे से सही—शायद "मध्यम"—दूरी बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, हम अपनी सेहत के लिए जो कसरत करना पसंद करते हैं, उस बारे में एक-दूसरे की पसंद का सम्मान करते हैं, और हम एक-दूसरे को यह नहीं बताते कि उन्हें वह कसरत कैसे करनी चाहिए। इसके अलावा, हम एक-दूसरे के काम या पेशेवर मामलों में दखल देने या बिना माँगे सलाह देने से बचने की पूरी कोशिश करते हैं। इसकी वजह यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने काम की बारीकियों को सबसे अच्छी तरह खुद ही समझता है—उसका जीवनसाथी नहीं। फिर भी, जब हम अपने-अपने काम के बारे में बातचीत करते हैं, तो हम दोनों एक-दूसरे के दिल की बात सुनने और उनके नज़रिए को समझने की कोशिश करते हैं। इन सबके बीच, हम इस बात के लिए बहुत शुक्रगुज़ार हैं कि पवित्र आत्मा हमारे अंदर काम कर रही है; जब भी हम अपने बच्चों के बारे में लंबी बातचीत करते हैं, तो वह हमें दिल, दिमाग और मकसद में एकता प्रदान करती है। नतीजतन, मेरे जीवनसाथी और मेरे बीच बच्चों को लेकर अलग-अलग राय होने पर झगड़ा नहीं होता; बल्कि, एक-दूसरे के दिल की भावनाओं को समझते हुए और एक-दूसरे के नज़रिए को अपनाते हुए, हम एक-दूसरे का साथ देते हैं—और ऐसा करते हुए, भगवान हमें अपने हर बच्चे से अलग-अलग प्यार करने और उनकी सेवा करने की शक्ति देते हैं, ठीक अपनी इच्छा के अनुसार (न कि हमारी अपनी इच्छा के अनुसार)।

सबसे पहले, हर चीज़ को बहाल (ठीक) किया जाना चाहिए!

पिछली बुधवार की सुबह, मत्ती 17 के अंश पर ध्यान करते हुए, मैंने "प्रभु का एक सेवक—यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह—जो प्रभु यीशु मसीह के लौटने (दूसरे आगमन) की तैयारी करता है, वह हर चीज़ को ठीक करता है" शीर्षक के तहत एक छोटा भक्ति-लेख लिखा। वह इस प्रकार था: "प्रभु का एक सेवक—यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह—जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के लौटने (दूसरे आगमन) की तैयारी करता है, वह हर चीज़ को ठीक करता है। हालाँकि, कपटी लोग—फरीसियों की तरह, जिनके दिल ज़िद्दी होते हैं और जो सुधारे जाने से इनकार करते हैं—प्रभु के उस सेवक को सताएँगे। इसलिए, प्रभु का जो सेवक यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी करता है, उसे अनिवार्य रूप से दुख उठाना पड़ेगा (संदर्भ: मत्ती 17:11-13, *द कंटेम्पररी बाइबल*)।" जब मैंने इस छोटे भक्ति-संदेश को अपने ऊपर लागू करके सोचा, तो मुझे यह एहसास हुआ कि—प्रभु के एक सेवक के तौर पर जो यीशु के दूसरे आगमन की तैयारी कर रहा है—मुझे "सबसे पहले हर चीज़ को बहाल (ठीक) करना होगा।" इससे मैं यह सोचने लगा: चूँकि प्रभु ने मुझे अपना सेवक (एक पादरी) बनने के लिए बुलाया और अभिषेक किया, तो आखिर वह मेरे द्वारा किस चीज़ को बहाल (ठीक) करना चाहते हैं? मैं उन विचारों को लिखना चाहूँगा जो मेरे मन में आए हैं, इस उम्मीद के साथ कि उन्हें लिखने से वे और स्पष्ट हो जाएँगे:

1. सबसे पहले और सबसे ज़रूरी बात, मेरा मानना है कि प्रभु *मुझे* व्यक्तिगत रूप से बहाल (ठीक) करना चाहते हैं। इसके अलावा, मुझे बहाल (ठीक) करने के प्रभु के काम में सबसे ज़रूरी प्राथमिकता पश्चाताप है। इसका कारण यह है कि पश्चाताप के बिना कोई बहाली (चीज़ों को ठीक करना) संभव

नहीं है। जिन चीज़ों के लिए मुझे पश्चाताप करने की ज़रूरत है, उनमें सबसे ज़रूरी मामले हैं—मेरे अपने ज़िद्दी दिल के कारण परमेश्वर के वचन की आज्ञा न मानने का पाप, और मेरा अपना कपट। "पवित्र आत्मा, मुझ पर उतर और मेरे दिल को छू; मुझे पछतावे और पश्चाताप की भावना से भर दे। यीशु, मैं प्रार्थना करता हूँ: मेरी विनती सुन, और मुझे पछतावे और पश्चाताप की भावना से भर दे" (न्यू हिमनल, सं. 190, "पवित्र आत्मा, उतर," पद 1 और टेक)।

2. इस प्रक्रिया के बीच, मेरा मानना है कि प्रभु मेरे द्वारा जिस चीज़ को बहाल—या ठीक—करना चाहते हैं, वह मेरा परिवार है। घर के मुखिया के तौर पर, मुझे—ईश्वर की कृपा से—पश्चाताप करना चाहिए, बहाल (या ठीक) होना चाहिए, और खुद में बदलाव लाना चाहिए; और यह सब करते हुए मुझे अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण भी करना चाहिए, जिन्हें ईश्वर ने मुझे अनमोल तोहफ़ों के रूप में दिया है (इफिसियों 5:29; 6:4)। मेरा मानना है कि मुझे उनका पालन-पोषण ईश्वर के वचन के अनुसार करना चाहिए; इसका मतलब सिर्फ़ उन्हें अपने होठों से सही रास्ता सिखाना ही नहीं है (मत्ती 21:32), बल्कि अपने नेक जीवन का उदाहरण पेश करके उन पर सकारात्मक प्रभाव डालना भी है—यानी, मसीह के सुसमाचार के योग्य जीवन जीना (फिलिप्पियों 1:27)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं और मेरे परिवार का हर सदस्य उस नेक रास्ते पर चलें जिस पर प्रभु चले थे, और ऐसे लोग बनें जो यीशु और सुसमाचार की खातिर अपनी जान भी देने को तैयार हों (मरकुस 8:35)।

3. मेरा और मेरे परिवार का यह बहाली—या सुधार—का अंतिम उद्देश्य प्रभु के कलीसिया (चर्च) की बहाली (या सुधार) है। चूँकि प्रभु, जो कलीसिया के सिर हैं (इफिसियों 1:22; 5:23; कुलुस्सियों 1:18), ने अपने कलीसिया को बनाने का वादा किया था (मत्ती 16:18), इसलिए मेरा मानना है कि मुझे—अपने परिवार और कलीसिया के सभी साथी सदस्यों के साथ मिलकर—प्रभु के इस वादे पर आधारित विश्वास के साथ, उन कलीसियाओं की बहाली (सुधार) के लिए प्रार्थना करनी चाहिए जिनकी हम सेवा करते हैं, और पवित्र आत्मा के पश्चाताप के कार्य के लिए सच्ची लगन रखनी चाहिए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा न केवल हमारे ज़िद्दी दिलों को—हम जो कलीसिया का हिस्सा हैं—

अपने वचन से तोड़कर पिघला दे (जो हथौड़े और आग जैसा है) (यिर्मयाह 23:29), बल्कि ईश्वर के वचन—जो आत्मा की तलवार है (इफिसियों 6:17)—से हमारी अंतरात्मा (दिलों) को भी भेद दे; जिससे हमारे पाप उजागर हो सकें (इफिसियों 5:11) और हम उन्हें स्वीकार कर सकें (1 यूहन्ना 1:9)। इसके अलावा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह हमें यह कृपा प्रदान करे कि हम अब इस संसार के तौर-तरीकों के अनुरूप न ढलें, बल्कि इसके बजाय हमारे मन का नवीनीकरण और रूपांतरण हो (रोमियों 12:2), ताकि हम इस संसार के प्रकाश और नमक के रूप में अपनी भूमिका को पूरा कर सकें (मत्ती 5:13–16)।

प्रभु के पक्के प्यार से हमें सुधार मिलता है।

जो ईसाई प्रभु की आज्ञाओं से प्यार करते हैं—वफ़ादार लोग जो उनकी बात मानते हैं—उन्हें प्रभु के पक्के प्यार से सुधार मिलता है (भजन 119:158–159)।

"हे प्रभु, हमारे दिलों को फिर से अपना बना ले!"

“क्योंकि इस्राएल के घराने ने अपनी मूर्तियों के कारण मुझे पूरी तरह छोड़ दिया है; इसलिए मैं उन्हें उनके अपने दिलों की मंशा के अनुसार पकड़ लूँगा” (यहेजकेल 14:5)।

मेरा दिल डगमगा रहा है। मेरे पति के साथ मेरा रिश्ता पहले से ही तनावपूर्ण है, फिर भी एक और आदमी मेरे पास आया है और मेरे साथ बहुत ही प्यार और दयालुता से पेश आ रहा है। नतीजतन, अब वह आदमी मेरे दिल में मेरे पति से कहीं ज़्यादा जगह घेरे हुए है। मुझे घर पर अपने पति के साथ रहने के बजाय उसके साथ बाहर रहना ज़्यादा पसंद आता है। मेरा दिल पहले ही मेरे पति से दूर होकर इस दूसरे आदमी की ओर खिंच गया है।

व्यभिचार के पाप का एक मुख्य कारण यह है कि हम अपनी पत्नियों से ही अनन्य प्रेम करने में असफल रहते हैं (नीतिवचन 5:15)। और स्पष्ट रूप से कहें तो, हम व्यभिचार में इसलिए पड़ते हैं क्योंकि हम अपनी पत्नियों को खुशी देने में या उनकी संगति में आनंद पाने में असफल रहते हैं (पद 18)। यदि हम सचमुच अपनी पत्नियों को प्यारी और सुंदर मानकर उनका आदर करते—यदि हम हमेशा उनके आलिंगन से संतुष्ट रहते और उनके प्रेम में निरंतर मग्न रहते (पद 19)—तो हम कभी भी अपना स्नेह किसी दूसरी स्त्री पर न लुटाते, न ही किसी दूसरे पुरुष की पत्नी की गोद में जगह बनाते (पद 16, 20)। व्यभिचार का एक और कारण है लालच (सभोपदेशक 7:7)। जब हमारे भीतर लालच घर कर लेता है, तो हम अपनी पत्नियों के आलिंगन में सच्चा संतोष नहीं पा पाते (नीतिवचन 5:19)। इसके अलावा, आँखों की वासना से प्रेरित होकर, हम दूसरी स्त्रियों को—उन स्त्रियों को जो हमारी सही सीमाओं से बाहर हैं—अतृप्त इच्छा से देखते हैं (सभोपदेशक

1:8); हम उनके बारे में ही सोचते रहते हैं और उनकी बातों पर कान देते हैं। और अंत में, शरीर की वासना से प्रेरित होकर, हम घर के भीतर तो अपनी पत्नियों के साथ सोते हैं, लेकिन घर के बाहर जाकर हम दूसरी स्त्रियों के साथ सोने तक की हद पार कर देते हैं (तुलना करें: 2 पतरस 2:18)। ऐसा अतृप्त लालच (यशायाह 56:11) न केवल हमें अपनी पत्नियों में संतोष पाने से रोकता है (नीतिवचन 5:19), बल्कि हमें अपने पड़ोसी की पत्नी पर बुरी नज़र डालने के लिए भी उकसाता है (निर्गमन 29:17), जिससे हम व्यभिचार का पाप कर बैठते हैं। जब हम व्यभिचार का यह पाप करते हैं, तो हमारी पत्नियों को कैसा महसूस होता होगा? क्या उन्हें गहरे विश्वासघात का एहसास नहीं होता होगा? उनके नज़रिए से—यह देखकर कि जिस पति पर उन्होंने सबसे ज़्यादा भरोसा किया था, वही किसी दूसरी औरत के जाल में फँस गया है और बेवफ़ाई कर रहा है—उन्हें विश्वासघात का एहसास कैसे नहीं होगा?

आज के धर्मग्रंथ के अंश, यहेजकेल 14:5 में, परमेश्वर इस्राएल के लोगों से कहते हैं: "इस्राएल का पूरा घराना अपनी मूर्तियों के कारण मुझसे दूर हो गया है।" परमेश्वर ने इस तरह क्यों कहा? इसका कारण यह है कि परमेश्वर को इस्राएल के लोगों से गहरे विश्वासघात का एहसास हुआ। परमेश्वर को विश्वासघात इसलिए महसूस हुआ क्योंकि उन्होंने देखा कि जिन लोगों को उन्होंने प्यार से चुना था और अपना माना था—यानी इस्राएल के लोग—वे उनके आदेशों का पालन नहीं कर रहे थे, उनके बजाय अपने दिलों में दूसरे देवताओं को बसाए हुए थे (पद 3), और उन मूर्तियों की पूजा कर रहे थे (निर्गमन 20:3)। परमेश्वर के नज़रिए से, यह स्वाभाविक ही था कि उन्हें विश्वासघात का एहसास होता (यहेजकेल 14:5)। विशेष रूप से, जब परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो इस्राएल के लोग मंदिर में आते थे—अपने मुँह से यह दावा करते हुए कि वे परमेश्वर के करीब आ रहे हैं और अपने होठों से उनका सम्मान कर रहे हैं—फिर भी उनके दिल उनसे बहुत दूर थे (यशायाह 29:13)। परमेश्वर की नज़रों में, वे हर तरह के घिनौने काम लगातार करते रहे: विदेशियों और अनाथों पर ज़ुल्म करना, बेकसूरों का खून बहाना, और दूसरे देवताओं की सेवा करना (यिर्मयाह 7:6); वे चोरी करते थे, हत्या करते थे, व्यभिचार करते थे, झूठी कसमें खाते थे, बाल देवता के लिए धूप जलाते थे, और उन दूसरे देवताओं के पीछे चलते थे जिन्हें वे जानते भी नहीं थे (पद 9)। फिर भी, वे परमेश्वर के मंदिर में प्रवेश करते थे—ठीक उनके सामने खड़े होकर—और दावा करते थे, "हम सुरक्षित हैं; हम बचा लिए गए हैं" (पद 10), और फिर भी उनकी नज़रों में बुराई करना जारी रखते थे। ऐसा करके, वे केवल अपने ऊपर ही विपत्ति

मोल ले रहे थे (पद 6)। फिर भी, अपनी अज्ञानता में, यहूदा के लोग परमेश्वर के मंदिर में पूजा करने के लिए प्रवेश करते थे, और खुद को सुरक्षित और बचा हुआ घोषित करते थे (पद 4); लेकिन, मंदिर से बाहर कदम रखते ही, वे तुरंत परमेश्वर की नज़रों में हर तरह के घिनौने काम फिर से शुरू कर देते थे। इन घिनौनी हरकतों में से, एक काम परमेश्वर की नज़रों में खास तौर पर बहुत बुरा था: इस्राएल के लोग मंदिर जाते थे—मुँह से तो वे परमेश्वर का आदर करने का दावा करते थे और सारे तय किए गए धार्मिक रीति-रिवाज़ भी निभाते थे—लेकिन बाहर जाकर वे बाल देवता के लिए धूप जलाते थे और मूर्तियों की पूजा करते थे। परमेश्वर की नज़र में, उन मूर्तियों की वजह से यह उनके साथ विश्वासघात करने जैसा था (यहेजकेल 14:5)।

जब मैं इन धर्मग्रंथों पर मनन कर रहा था, तो मैंने यीशु—जो दूल्हा हैं—और कलीसिया, जो उनकी दुल्हन है, के बीच के रिश्ते पर सोचा (इफिसियों 5:32)। इस समय, कलीसिया—यानी दुल्हन—अपने दूल्हे, यीशु से अपने पूरे दिल, जान और मन से प्यार करने में नाकाम हो रही है (मत्ती 22:37); इसके बजाय, उसने धन-दौलत को ही अपना देवता बना लिया है, और एक ही समय में यीशु और पैसे, दोनों की सेवा करने की कोशिश कर रही है (मत्ती 6:24)। यीशु ने साफ-साफ कहा था कि कोई भी इंसान दो मालिकों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता; फिर भी, आज की कलीसिया ठीक यही कर रही है—दो मालिकों की सेवा। यह जानते हुए कि पैसे का लालच ही हर तरह की बुराई की जड़ है (1 तीमुथियुस 6:10), हमें पैसे से नफ़रत करनी चाहिए और उसे नज़रअंदाज़ करना चाहिए, जबकि प्रभु से प्यार करना चाहिए और उनके प्रति अपनी पूरी वफ़ादारी निभानी चाहिए (मत्ती 6:24)। फिर भी, आज की कलीसिया—यानी मसीह की दुल्हन—पैसे से प्यार करती है और अपने दिल में उसी के प्रति वफ़ादारी का वादा करती है, भले ही वह अपने मुँह से प्रभु से प्यार करने और उनके प्रति वफ़ादार रहने का दावा करती हो। जब कलीसिया—यानी दुल्हन—पैसे से प्यार करती है, उसे ही अपना देवता मान लेती है, और इस तरह उसके प्रति अपनी वफ़ादारी का वादा करती है, तो प्रभु—यानी दूल्हे—के दिल पर कैसा गुज़रता होगा? यकीनन, प्रभु को हमारे प्रति गहरे विश्वासघात का एहसास होता होगा। जब वह कलीसिया—अपनी दुल्हन—को आध्यात्मिक व्यभिचार करते हुए देखते हैं, तो प्रभु, एक दूल्हे के तौर पर, खुद को ठगा हुआ महसूस करने में पूरी तरह से सही होंगे। फिर भी, प्रभु के प्यार और कृपा की सबसे हैरान करने वाली बात यह है: भले ही हम लगातार उनके साथ विश्वासघात करते रहते

हैं, फिर भी वह हमें लगातार पुकारते रहते हैं। इसके अलावा, वह हम पर अपना सच्चा प्यार बरसाते रहते हैं [नया भजन संग्रह 290: "भले ही हम लगातार प्रभु के साथ विश्वासघात करते हैं"]। मैंने पुराने नियम की किताब 'होशे' में बताए गए नबी होशे और उनकी पत्नी—एक व्यभिचारी स्त्री, गोमेर—के रिश्ते में प्रभु के इस सच्चे प्रेम को समझने की कोशिश की है। सबसे पहले, परमेश्वर ने नबी होशे को यह आज्ञा दी: "जाओ, अपने लिए एक व्यभिचारी स्त्री को पत्नी बनाओ और उससे व्यभिचार से उत्पन्न संतानें प्राप्त करो" (होशे 1:2)। मैं इसे परमेश्वर की ओर से एक सचमुच अकल्पनीय आज्ञा मानता हूँ। इसका कारण यह है कि लेवीय 21:14 (जैसा कि *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में दिया गया है) के अनुसार, पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि एक अभिषिक्त महायाजक को किसी कुंवारी कन्या से ही विवाह करना चाहिए; इसलिए, यह समझना कठिन बना रहता है कि प्रभु—जिन्होंने होशे को एक अभिषिक्त नबी बनाया था—उन्हें किसी कुंवारी कन्या के बजाय एक व्यभिचारी स्त्री से विवाह करने का निर्देश कैसे दे सकते थे। फिर भी, परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए, होशे ने गोमेर से विवाह कर लिया (पद 3, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इसके बावजूद, होशे से विवाह करने के बाद भी, गोमेर ने वेश्यावृत्ति करना जारी रखा (2:5)। उसने तो शर्मनाक हरकतें भी कीं—यह घोषणा करते हुए कि वह अपने प्रेमियों के पीछे जाएगी—ठीक उस समय जब वह व्यभिचार से गर्भधारण किए हुए बच्चे की माँ बनने वाली थी (पद 5)। फिर भी, परमेश्वर ने होशे से कहा, "फिर जाओ; अपनी पत्नी से प्रेम करो, जो एक व्यभिचारिणी है" (3:1)। नबी होशे ने परमेश्वर की इस आज्ञा का पालन बिना किसी शिकायत या मनमुटाव के किया। परिणामस्वरूप, होशे ने "अपनी पत्नी को लगभग 170 ग्राम चाँदी और 18 माप जौ देकर वापस खरीद लिया," और उससे कहा, "तुम्हें कुछ समय तक चुपचाप और अकेले रहना होगा। अब से, तुम्हें दूसरे पुरुषों के पीछे नहीं भागना है और न ही वेश्यावृत्ति में लिप्त होना है। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा" (पद 2–3)। यही ठीक वैसा ही प्रेम है जो प्रभु—अर्थात् दूल्हा—अपनी कलीसिया (चर्च) के लिए, जो उनकी दुल्हन है, रखते हैं। यीशु—वह दूल्हा जो सच्चा होशे है (जिसका अर्थ है: "परमेश्वर ही उद्धार है")—परमेश्वर पिता की इच्छा का पालन करते हुए इस पृथ्वी पर आए। यद्यपि यीशु मूल रूप से परमेश्वर का ही स्वरूप रखते थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर के साथ समानता को ऐसी वस्तु नहीं समझा जिसे ज़बरदस्ती हथियाया जाए; इसके बजाय, उन्होंने अपने सभी विशेषाधिकारों को त्याग दिया, एक सेवक का स्वरूप धारण कर लिया, मनुष्यों के समान बन गए, और मानवीय रूप में प्रकट हुए। उन्होंने खुद को दीन बनाया और मृत्यु तक आज्ञाकारी बने रहे—यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक (फिलिप्पियों 2:6–8)। इसका कारण यह है कि यीशु

हमसे—अपनी कलीसिया से—प्रेम करते हैं, भले ही हम व्यभिचारिणी गोमेर के समान हों; वास्तव में, वे हमसे इतना गहरा प्रेम करते हैं कि उन्होंने क्रूस पर हमारे लिए अपना जीवन तक दे दिया। इसलिए, भले ही हम लगातार उनके साथ विश्वासघात करते हैं, प्रभु हमें लगातार पुकारते रहते हैं, और हमें अपने पापों को स्वीकार करने, पश्चाताप करने और उनकी ओर लौटने के लिए प्रेरित करते हैं। ठीक इसी क्षण, प्रभु हमारे हृदयों को पुनः जीत रहे हैं, हमें विश्वासघात के मार्ग से हटाकर पुनः आज्ञाकारिता के मार्ग पर ला रहे हैं। दूल्हे के रूप में, प्रभु अपनी दुल्हन—कलीसिया—के हृदय को पुनः अपना रहे हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि अब हम धन के पीछे भागने और उसे अपने हृदयों में मूर्ति बनाकर पूजने वाला जीवन न जिएँ, बल्कि इसके बजाय उनसे प्रेम करने और उनका अनुसरण करने वाला जीवन जिएँ। यह, निस्संदेह, परमेश्वर का महान अनुग्रह है।

मैं धर्मग्रंथ पर आधारित इस चिंतन को अब समाप्त करना चाहूँगा। वैवाहिक संबंधों में, बेवफ़ाई या व्यभिचार के कृत्य पीड़ित जीवनसाथी को गहरे विश्वासघात का एहसास कराते हैं। विश्वासघात का यह एहसास तब और भी ज़्यादा तीखा हो जाता है, जब हमें पता चलता है कि हमारी पत्नी—जिस पर हमने इतना गहरा भरोसा किया था और विश्वास किया था—ने अपना दिल किसी दूसरे पुरुष के लिए खोल दिया है और उसके साथ एक नाजायज़ संबंध बना लिया है। फिर भी, क्या हम सचमुच उस जीवनसाथी से प्रेम करना जारी रख सकते हैं, जिसने हमें धोखा दिया है? क्या हम सचमुच उस जीवनसाथी से प्रभु के प्रेम के साथ प्रेम करना जारी रखेंगे, और उसके दिल को फिर से जीतने का प्रयास करेंगे? या हम बस अलग होने—तलाक लेने—का रास्ता चुन लेंगे? इस्राएल के लोगों ने अपने दिलों में मूर्तियों को बसाकर और उनकी पूजा करके परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया, ठीक वैसे ही जैसे एक व्यभिचारी स्त्री करती है। परमेश्वर ने उनसे कहा, "तुम सबने अपनी मूर्तियों के द्वारा मेरे साथ विश्वासघात किया है।" मेरा मानना है कि, आज भी, यीशु—जो कलीसिया के दूल्हा और सिर हैं—हम मसीहियों से, जो उनकी दुल्हन हैं, कह रहे हैं: "तुम सबने अपनी मूर्तियों के द्वारा मेरे साथ विश्वासघात किया है।" इसका एक मुख्य कारण यह है कि हम इस समय यीशु की आज्ञाओं का उल्लंघन कर रहे हैं; हमने पैसे को अपनी मूर्ति बना लिया है, अपने दिलों में उसके लिए प्रेम पाल रखा है, और हम एक ही समय में पैसे और प्रभु दोनों की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं। हम इस समय दो स्वामियों की सेवा कर रहे हैं। रविवार को, हम प्रभु की सेवा करते हैं; फिर भी सप्ताह के बाकी दिनों में, हम दुनिया में निकल जाते हैं और पैसे की सेवा करते हैं। इस तरह का दोहरा जीवन जीना—इस तरह से दो नावों की सवारी करना—परमेश्वर की दृष्टि में एक घृणित कार्य है और यह प्रभु के साथ विश्वासघात के समान है। फिर भी, इसके

बावजूद, यीशु—हमारे दूल्हा—हमें, अपनी दुल्हन (कलीसिया) को, लगातार पुकारते रहते हैं, भले ही हम बेवफ़ा गोमेर की तरह पैसे के पीछे भाग रहे हों; उनकी इच्छा है कि हम अपने पापों को स्वीकार करें और पश्चाताप करें। विशेष रूप से, प्रभु—जो हमारी कमज़ोरी को जानते हैं—हमारे दिलों को वापस पाने के लिए हमारी ओर हाथ बढ़ा रहे हैं, ताकि हम मूर्तियों से मुड़ सकें और सभी घृणित चीज़ों को त्याग सकें। यह पूरी तरह से परमेश्वर का अनुग्रह है। कलीसिया—वह दुल्हन जो इस अनुग्रह को समझने लगी है—को अपने दूल्हा, यीशु से पूरी गंभीरता से यह विनती करनी चाहिए: "हे प्रभु, हमारे दिलों को एक बार फिर से अपने अधिकार में ले लीजिए।" इसलिए, हम प्रार्थना करते हैं कि प्रभु वास्तव में हमारे हृदयों को तब तक नए सिरे से थामे रहें, जब तक कि वे इस संसार में वापस नहीं आ जाते; ताकि हम सभी मूर्तियों और घृणित बातों को त्यागकर उनसे मुँह मोड़ सकें, और पवित्र यीशु के स्वरूप में बढ़ते हुए, उनकी दुल्हन को एक महिमामयी कलीसिया के रूप में खड़े होने के लिए तैयार कर सकें।

जब प्रभु हमें बहाल करते हैं...

जब प्रभु हमें बहाल करते हैं, तो आनंद और खुशी की आवाज़ें—दूल्हे और दुल्हन की आवाज़ें—एक बार फिर सुनाई देंगी। हम उन लोगों की आवाज़ें सुनेंगे जो गा रहे होंगे, "सेनाओं के प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि प्रभु भला है; उसका अटल प्रेम सदा बना रहता है," और उन लोगों की आवाज़ें सुनेंगे जो परमेश्वर के मंदिर में धन्यवाद की भेंट ला रहे होंगे (संदर्भ: यिर्मयाह 33:10)।

परमेश्वर की बहाली की कृपा

जब परमेश्वर हमें हमारी पिछली स्थिति में बहाल करते हैं—हमारे घावों को भरते और बांधते हैं, हमें शांति और समृद्धि प्रदान करते हैं, हमें बिल्कुल पहले जैसा फिर से बनाते हैं, उन सभी पापों से हमें शुद्ध करते हैं जो हमने उनके विरुद्ध किए हैं, और हमारे अधर्मों तथा विद्रोह के कार्यों को क्षमा करते हैं—तो हम परमेश्वर के लिए आनंद, स्तुति और महिमा का स्रोत बन जाएँगे। तब, पूरी दुनिया उन सभी अच्छी बातों के बारे में सुनेगी जो परमेश्वर ने हमारे लिए की हैं—वे प्रचुर आशीषें और समृद्धि जो उन्होंने हम पर बरसाई हैं—और वे विस्मय में खड़े होकर कांप उठेंगे। उस समय, जब हम आनंद मनाते और उत्सव करते हुए, प्रभु के मंदिर में धन्यवाद की भेंट चढ़ाएँगे, तो हमारे गायन की आवाज़ एक बार फिर सुनाई देगी: "सर्वशक्तिमान प्रभु का धन्यवाद करो! क्योंकि प्रभु भला है, और उसका प्रेम सदा बना रहता है" (यिर्मयाह 33:6-11)।

भाग 4:

सुधार

एक मसीह-केंद्रित परिवार...

एक मसीह-केंद्रित परिवार...

पिता परमेश्वर की प्रभुता को स्वीकार करता है और विश्वास करता है कि परमेश्वर ही हमारे परिवार को नियंत्रित और संचालित करते हैं।

पुत्र परमेश्वर, यीशु के अधिकार के अधीन रहते हुए, यह उनके दोहरे आदेश का पालन करता है—परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना।

पवित्र आत्मा का फल—यानी प्रेम—धारण करके, यह परमेश्वर की साक्षात उपस्थिति का अनुभव करता है।

ऐसा मसीह-केंद्रित परिवार घर के भीतर ही "पृथ्वी पर स्वर्ग" की अनुभूति कराता है।

प्रभु-केंद्रित परिवार

[मत्ती 22:34–40]

मैं आपके साथ एक लेख साझा करना चाहूँगा जो मुझे ऑनलाइन मिला, जिसका शीर्षक है, "एक सुखी परिवार के लिए 10 ज़रूरी बातें।" मैं आपको इस बात पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता हूँ कि क्या ये दस तत्व आपके अपने घर में मौजूद हैं: (1) क्षमा होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने ही परिवार में क्षमा नहीं पा सकता, तो उसे पृथ्वी पर कहीं और यह प्राप्त नहीं हो सकती। (2) समझ होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने ही परिवार में समझ नहीं पा सकता, तो उसके पास जानवरों के बीच रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। (3) बात करने के लिए कोई होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर में बातचीत करने के लिए कोई साथी नहीं पा सकता, तो वह कहीं और—शायद किसी फ़ोन चैट रूम में—उसे खोजने के लिए विवश हो जाता है। (4) एक निजी एकांत स्थान होना चाहिए। किसी व्यक्ति के पास जितना अधिक निजी स्थान होता है—चाहे वह कोई अलमारी हो, कपड़ों की जगह हो, पढ़ने का कमरा हो, या यहाँ तक कि बाथरूम ही क्यों न हो—उसका चरित्र उतना ही अधिक सौम्य और परिष्कृत होता जाता है। (5) विश्राम होना चाहिए। यदि घर में ऐसा वातावरण नहीं है जहाँ कोई व्यक्ति थकान से थके हुए शरीर को आराम से विश्राम दे सके, तो वह व्यक्ति अनिवार्य रूप से घर के बाहर ही राहत की तलाश करेगा। (6) सराहना होनी चाहिए। जो व्यक्ति अपने ही परिवार में पहचान और स्वीकृति पाने में असफल रहता है, वह संभवतः बाहरी दुनिया में भी इसे पाने में असफल रहेगा। (7) हास्य होना चाहिए। हास्य एक ऐसे स्नेहक (lubricant) का काम करता है जो परिवार के सदस्यों के बीच स्नेह और अपनापन को भरपूर मात्रा में प्रवाहित होने देता है। (8) एक सच्चा "वयस्क" होना चाहिए। इससे मेरा तात्पर्य केवल उम्र में बड़े व्यक्ति से नहीं है, बल्कि एक ऐसे परिपक्व व्यक्ति से है जिसके शब्द और कार्य एक सच्चे आदर्श (role

model) के रूप में काम करते हों। (9) प्रेम होना चाहिए। यह एक बहुआयामी प्रेम होना चाहिए—ऐसा प्रेम जो गलती होने पर सुधार भी करे, और अच्छा काम होने पर सराहना भी करे। (10) आशा होनी चाहिए। जब यह स्पष्ट आशा दिखाई देती है कि भविष्य में परिस्थितियाँ बेहतर होंगी, तो परिवार-इकाई का मूल्य और महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। तो? क्या ये दस तत्व आपके घर में मौजूद हैं? क्या आप इस समय अपने पारिवारिक जीवन में खुशी का अनुभव कर रहे हैं?

मित्रों, हम अक्सर लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं कि कोई भी परिवार समस्याओं से पूरी तरह मुक्त नहीं होता। दूसरे शब्दों में, हम आम तौर पर यह मानकर चलते हैं कि हर परिवार को अपनी ही तरह की चिंताओं, मुश्किलों और तकलीफ़देह हालात का सामना करना पड़ता है। इसे एक और तरह से कहें तो, हममें से हर परिवार के पास अपनी कुछ खास प्रार्थनाएँ—दिल से की गई गुज़ारिशें—होती हैं, जिन्हें वे परमेश्वर के सामने रखते हैं। अगर अभी आपको ऐसी कोई समस्या नहीं है, तो इस बात की पूरी संभावना है कि भविष्य में आपको इनका सामना करना पड़ेगा। मैं पारिवारिक समस्याओं और संकटों के बारे में अपने कुछ विचार आपके साथ साझा करना चाहूँगा: (1) चूँकि पारिवारिक समस्याएँ स्वभाव से ही बहुत निजी होती हैं, इसलिए मेरा मानना है कि इनसे गहरे भावनात्मक घाव लगना और भारी मानसिक तनाव होना लाज़मी है। (2) पारिवारिक समस्याएँ हमारे मानवीय अस्तित्व के मूल को छूती हैं... ...और हमें हमारी सीमाओं का सबसे ज़्यादा एहसास कराती हैं। (3) मेरा मानना है कि परमेश्वर की मदद के बिना पारिवारिक समस्याएँ पूरी तरह से निराशाजनक हो सकती हैं। (4) मेरा मानना है कि हमें पारिवारिक संकटों को परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों के रूप में देखना चाहिए; हमें विश्वास के साथ डटे रहना चाहिए और धीरज रखना चाहिए, पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए और अपनी गुज़ारिशें केवल उसी के सामने रखनी चाहिए। (5) मेरा मानना है कि यह "अवसर" इस बात में छिपा है कि परमेश्वर पारिवारिक संकटों का इस्तेमाल पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों—सभी को बदलने के लिए करता है। (6) मेरा मानना है कि इस बदलाव का एक मुख्य पहलू है अहंकार का टूटना और चूर-चूर हो जाना; इसी प्रक्रिया के ज़रिए परमेश्वर हमें सिखाता है कि हम अपना पूरा विश्वास और भरोसा केवल उसी पर रखें—और अंततः हमें परमेश्वर की भलाई का अनुभव करने का मौका मिलता है, जो हर चीज़ को—यहाँ तक कि इन समस्याओं को भी—हमारे भले के लिए इस्तेमाल करता है (रोमियों 8:28; भजन संहिता 34:8)। (7) परमेश्वर पर लगातार बढ़ता हुआ भरोसा रखने से, हमें एक बहुत बड़ी कृपा और आशीष मिलती है—वह है "शांत रहना, और यह जानना

कि [वही] परमेश्वर है" (भजन संहिता 46:10)। इसके अलावा, मैं इस बारे में अपने कुछ निजी विचार साझा करना चाहूँगा कि हमें अपनी पारिवारिक समस्याओं के संबंध में क्या करना चाहिए—और कैसे करना चाहिए: (1) हमें इस बात पर पूरा विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर हमारे परिवार से प्रेम करता है। हमें इस बात का पूरा यकीन होना चाहिए कि हमारा परिवार परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के अधीन है। और हमें यह भी विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर की यह सर्वोपरि इच्छा भली, मनभावन और उत्तम है (रोमियों 12:2)। (2) हमें इस बात पर विश्वास होना चाहिए कि परमेश्वर हमारे परिवार की समस्याओं, मुश्किलों, तकलीफ़देह हालात और संकटों को भी हमारे भले के लिए इस्तेमाल करेगा (रोमियों 8:28); हमें प्रार्थना करनी चाहिए, आशा रखनी चाहिए, और विश्वास के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए; यह भरोसा रखते हुए कि यह संकट ही परमेश्वर के बचाने वाले प्रेम और उपस्थिति का अनुभव करने का एक अनमोल अवसर है (भजन संहिता 63:3)। (3) परमेश्वर ने हमारे परिवार पर अतीत से लेकर वर्तमान तक जो अनुग्रह और प्रेम बरसाया है, उसे याद करते हुए—और उस अनुग्रह तथा प्रेम को महसूस (और अनुभव) करते हुए—हमें कृतज्ञता की भावना से भरकर, परमेश्वर की आज्ञाओं, उपदेशों और वचन का पालन करने के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 11:1-7)। (4) हमारा... एक परिवार के रूप में, हमें वचन और प्रार्थना के द्वारा आत्मिक युद्ध में संलग्न होना चाहिए; फिर भी, यह विश्वास करते हुए कि हमारे प्रभु यीशु मसीह पहले ही विजयी हो चुके हैं, हमें मिलकर एक ऐसे जुझारू विश्वास का जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए, जो विजय के आश्वासन पर आधारित हो (1 कुरिन्थियों 10:13)।

जब मैं आज के संदेश की तैयारी कर रहा था, तो मैंने कुछ पल रुककर "परिवार" से संबंधित उन विभिन्न बाइबिल वचनों पर पीछे मुड़कर विचार किया, जिन पर मैंने अब तक मनन किया है। उनमें से कुछ विचारों को यहाँ साझा कर रहा हूँ: (1) मैंने "एक सामंजस्यपूर्ण परिवार" की अवधारणा पर मनन किया, जिसका केंद्र बिंदु नीतिवचन 17:1 था; (2) मैंने "एक ईश्वरीय परिवार" पर विचार किया, जिसका केंद्र बिंदु प्रेरितों के काम 10:2 था; (3) मैंने "एक ऐसे परिवार" पर चिंतन किया "जो परमेश्वर की दृष्टि में सफल है," जिसका केंद्र बिंदु 2 राजा 18:3 और 7 था; और (4) मैंने "आत्मिक युद्ध में संलग्न एक परिवार" पर मनन किया, जिसका केंद्र बिंदु 1 इतिहास 14:10 था। आज, मत्ती 22:34–40 पर ध्यान केंद्रित करते हुए, और "प्रभु-केंद्रित परिवार" विषय के अंतर्गत, मैं इस बात की तीन मुख्य विशेषताओं पर मनन करना चाहता हूँ कि वास्तव में "प्रभु-केंद्रित परिवार" होने का क्या अर्थ है; और इस मनन के द्वारा परमेश्वर हमें जो शिक्षाएँ देना चाहते हैं, उन्हें ग्रहण करने का प्रयास करना चाहता हूँ। मेरी यह हार्दिक आशा है कि हम सभी विनम्रतापूर्वक परमेश्वर के वचन को ग्रहण करें, बुद्धिमानी से उसका पालन

करें, और अपने परिवारों को ऐसे घरों के रूप में निर्मित करने के लिए स्वयं को समर्पित कर दें, जो वास्तव में प्रभु पर केंद्रित हों।

सबसे पहले, एक प्रभु-केंद्रित परिवार परमेश्वर पिता की संप्रभुता को स्वीकार करता है, और यह विश्वास करता है कि परमेश्वर सक्रिय रूप से हमारे परिवार का नियंत्रण और संचालन कर रहा है।

पास्टर पॉल ट्रिप के एक लेख, जिसका शीर्षक है "ईश्वर के शासन के अधीन बना एक परिवार" (A Family Built Under God's Rule), में वे यह बात कहते हैं: "मुझे अब पक्का यकीन होता जा रहा है कि जीने के केवल दो ही तरीके हैं। एक वह जीवन है जो ईश्वर पर भरोसा करते हुए, और उसकी इच्छा तथा उसके शासन का पालन करते हुए जिया जाता है; दूसरा वह जीवन है जो खुद ईश्वर बनने की कोशिश में बिताया जाता है। मुझे लगता है कि इन दो तरीकों के अलावा कोई तीसरा तरीका है ही नहीं। कभी-कभी, मैं अक्सर सोचता हूँ कि क्या हम ईश्वर के शासन के अधीन रहने के बजाय, ऐसे रहने के ज़्यादा आदी हो गए हैं जैसे कि हम खुद ही ईश्वर हों। और मेरा मानना है कि हमें इस बात की गहराई से जाँच करनी चाहिए कि यह आध्यात्मिक सोच हमारे बच्चों की परवरिश और हमारे वैवाहिक जीवन पर कितना गहरा असर डालती है" (ट्रिप)। इस बात पर आपके क्या विचार हैं? मैं जीवन जीने के इन दो अलग-अलग तरीकों के अस्तित्व को मानता हूँ, और मेरा मानना है कि हममें से हर कोई, असल में, अपने रोज़मर्रा के जीवन में इन दोनों में से किसी एक तरीके को ही चुन रहा है। खासकर जब हम अपने-अपने परिवारों के बारे में सोचते हैं, तो मेरा मानना है कि यह बेहद ज़रूरी है कि हम—यानी पति और पिता, जो अपने परिवारों के मुखिया होते हैं—ऐसा जीवन चुनें जिसकी पहचान ईश्वर पर भरोसा और उसकी इच्छा तथा उसके शासन का पालन करना हो। क्योंकि अगर हम ऐसा करने में नाकाम रहते हैं—अगर, इसके बजाय, हम ठीक उलटा रास्ता चुनते हैं और ऐसे जीने की कोशिश करते हैं जैसे कि *हम* ही ईश्वर हों—तो हमारा परिवार अनिवार्य रूप से 'मसीह-केंद्रित' घर नहीं रह जाता, बल्कि इसके बजाय वह 'स्व-केंद्रित' (खुद पर केंद्रित) घर बन जाता है। विशेष रूप से, पास्टर ट्रिप कहते हैं कि "सफल परवरिश में—ठीक उसी तरह जैसा ईश्वर ने चाहा है—सही समय पर नियंत्रण छोड़ देना शामिल है।" वे परवरिश के लक्ष्य को इस तरह परिभाषित करते हैं: "बच्चों की परवरिश करना—जो कभी पूरी तरह से हम पर निर्भर थे—ताकि वे स्वतंत्र, समझदार वयस्क बन सकें; ऐसे वयस्क जो ईश्वर पर भरोसा करते हों, ईसाई समुदाय से सही तरीके से जुड़े हों,

और अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम हों।" मैं इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ। अभी पिछले ही हफ़्ते, जब मैं अपनी प्यारी पत्नी और बेटे, डिलन के साथ रात के खाने की मेज़ पर बैठा था और हम आपस में दिल खोलकर बातें कर रहे थे, तब मैंने डिलन को यह सलाह दी: "आज सुबह तुमसे अकेले में बात करने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि अब तुम बड़े होकर एक नौजवान बन गए हो। अब से, मैं तुम्हें यह हिम्मत देता हूँ कि तुम अपने फ़ैसले खुद लो—प्रार्थना के ज़रिए ईश्वर का मार्गदर्शन लेते हुए—और उस रास्ते पर चलो जिसके लिए तुम बने हो, और अपनी गर्लफ्रेंड का मार्गदर्शन करते हुए खुद आगे बढ़कर अगुवाई करो।" इसके अलावा, पादरी ट्रिप सुझाव देते हैं कि बच्चों के पालन-पोषण के संबंध में तीन अतिरिक्त सच्चाइयों को ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है: (1) क्योंकि मसीह कलीसिया (चर्च) की भलाई के लिए सभी चीज़ों पर राज करते हैं, इसलिए ऐसी कोई भी स्थिति नहीं है जो उनके नियंत्रण से बाहर हो (इफिसियों 1:22)। (2) परमेश्वर न केवल हर स्थिति को नियंत्रित करते हैं, बल्कि वे उन अच्छे उद्देश्यों को भी सक्रिय रूप से पूरा कर रहे हैं जिनका उन्होंने वादा किया है (रोमियों 8:28)। परिणामस्वरूप, हमें अपने बढ़ते बच्चों की हर इच्छा, विचार और कार्य को नियंत्रित करने के लिए विवश महसूस करने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ तक कि उन क्षणों में भी जब हम पूरी तरह से शक्तिहीन महसूस करते हैं—जैसे कि हम कुछ भी नहीं कर सकते—हमारे बच्चे मसीह के संप्रभु शासन के अधीन ही रहते हैं। (3) पालन-पोषण का अंतिम लक्ष्य हमारे बच्चों को अपनी ही छवि में ढालना नहीं है, बल्कि उन्हें ऐसे व्यक्ति बनने में मदद करना है जो मसीह की छवि के प्रति समर्पित हों। यह हमारे बच्चों में हमारे अपने स्वाद, दृष्टिकोण या आदतों की नकल करने का प्रयास करने के बारे में नहीं है, न ही यह उनमें अपनी ही परछाई खोजने के बारे में है। बल्कि, यह उनमें मसीह की छवि को प्रकट होते देखने की सच्ची इच्छा रखने के बारे में है। जब मैं इन तीन सच्चाइयों पर विचार करता हूँ, तो मैं इस आश्वासन पर अपना सबसे दृढ़ विश्वास पाता हूँ कि—यहाँ तक कि उन क्षणों में भी जब हम, माता-पिता के रूप में, पूरी तरह से असहाय महसूस करते हैं—हमारे बच्चे मसीह के संप्रभु शासन के अधीन सुरक्षित रहते हैं। यदि हम वास्तव में विश्वास का एक मसीह-केंद्रित जीवन जी रहे हैं, तो हम परमेश्वर पिता की संप्रभुता को स्वीकार किए बिना और इस बात पर भरोसा किए बिना नहीं रह सकते कि वह सक्रिय रूप से हमारे घर को नियंत्रित और संचालित कर रहे हैं। विशेष रूप से, हम पतियों और पिताओं को—जो अपने घरों के मुखिया के रूप में सेवा करते हैं—इस अटूट विश्वास पर दृढ़ रहना चाहिए कि परमेश्वर पिता वास्तव में हमारे परिवारों के नियंत्रण में हैं और उन्हें अपने संप्रभु हाथ से संचालित कर रहे हैं। हममें से जो लोग इस विश्वास को

रखते हैं—चाहे वे पति हों या पिता—वे घर के भीतर अपनी सेवा को विश्वासयोग्यता और शांति के साथ पूरा करेंगे, क्योंकि उन्होंने सारा नियंत्रण और अधिकार पूरी तरह से परमेश्वर पिता को सौंप दिया है। हालाँकि, यदि हम अभी भी इस विश्वास से चिपके रहते हैं कि *हमारे* पास वह नियंत्रण और अधिकार है—और अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ हेरफेर करने तथा उन पर हावी होने का प्रयास करते हैं—तो घर के भीतर हमारी सेवा अनिवार्य रूप से अनगिनत टकरावों, संघर्षों, झगड़ों, घावों, पीड़ा और कष्टों से ग्रस्त हो जाएगी। अक्सर ऐसा तभी होता है जब हम ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं—चाहे वह हमारे वैवाहिक संबंधों में हो, बच्चों के पालन-पोषण में हो, या उनकी शादियों के संबंध में हो—जहाँ हम खुद को पूरी तरह से बेबस और कुछ भी करने में असमर्थ महसूस करते हैं; तभी हम अंततः अपना नियंत्रण परमेश्वर को सौंप देते हैं और उनसे पूरी लगन से विनती करते हैं कि वे हमारे घरों की बागडोर संभालें और उन पर शासन करें।

प्रिय मित्रों, हमारे घर एक मज़बूत नींव पर तभी बन सकते हैं जब परमेश्वर पिता उन पर अपना नियंत्रण और अधिकार स्थापित करें। बाइबल में, 2 इतिहास 17:5a में कहा गया है: "इसलिए यहोवा ने उसके हाथ में राज्य को दृढ़ किया..." जब हम इस वचन को अपने घरों पर लागू करते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि यह परमेश्वर पिता ही हैं—और केवल वही—जो हमारे घरों को अपने हाथों में मज़बूती से स्थापित करते हैं। इसके अलावा, लूका 1:33 में यह घोषणा की गई है: "वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा, और उसके राज्य का कोई अंत न होगा।" इस वचन को अपने परिवारों पर लागू करने का अर्थ यह है कि, क्योंकि परमेश्वर पिता हमारे घर पर राजा के रूप में शासन करते हैं, इसलिए हमारे परिवार की विरासत अनंत काल तक बनी रहेगी। नीचे समकालीन ईसाई गीत, "मेरे जीवन में प्रभु का राज है" (The Lord Reigns in My Life) के पहले छंद और कोरस के बोल दिए गए हैं: "मेरे जीवन में प्रभु का राज है / मेरे जीवन में प्रभु का राज है / प्रभु अभी भी काम कर रहे हैं / प्रभु मेरे जीवन में काम कर रहे हैं। हे प्रभु, मैं केवल आप पर ही भरोसा करता हूँ / मैं केवल आप पर ही निर्भर हूँ / मैं केवल आप पर ही निर्भर हूँ—हाँ, प्रभु। मैं केवल आपकी ही आराधना करता हूँ। मैं केवल आप ही से प्रेम करता हूँ।" प्रभु हमारे सभी जीवनों पर शासन करते हैं। प्रभु हमारे सभी परिवारों पर शासन करते हैं। यह विश्वास करते हुए कि प्रभु हमारे जीवन और हमारे परिवारों—दोनों पर नियंत्रण और शासन करते हैं, मैं प्रार्थना

करता हूँ कि हम—आप और मैं—अपना सारा नियंत्रण उन्हें सौंप दें; केवल उन पर ही भरोसा और निर्भर रहें, केवल उनकी ही आराधना करें, और सबसे बढ़कर उन्हीं से प्रेम करें।

दूसरे शब्दों में, एक मसीह-केंद्रित परिवार, पुत्र—यीशु—के अधिकार के अधीन रहता है; इसलिए, यीशु की "दोहरी आज्ञा" का पालन करते हुए, ऐसा परिवार परमेश्वर से प्रेम करता है और अपने पड़ोसी से भी प्रेम करता है। 25 जनवरी, 2021 को, मैंने "एक ऐसा परिवार जो प्रेम का फल देता है" शीर्षक के तहत यह संदेश लिखा और साझा किया: "मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे मसीह-केंद्रित परिवार प्रेम के वृक्षों की तरह बनें—जो प्रेम के बीज बोते हैं, और अपनी जड़ों को ज़मीन के नीचे गहरा, चौड़ा और भरपूर बढ़ने देते हैं, जहाँ वे दिखाई नहीं देतीं; जब तक कि प्रेम की पहली कोंपलें धीरे-धीरे ज़मीन के ऊपर नहीं आ जातीं, जिससे प्रेम का वृक्ष मज़बूत और हष्ट-पुष्ट होकर बढ़ता है, और अंततः प्रेम का फल देता है।" किसानों की तरह ही, हम भी वे लोग हैं जो अपने परिवारों के भीतर प्रेम के बीज बोते हैं। प्रेम के इन बीजों को ज़मीन के नीचे जड़ पकड़ने में, और उन जड़ों को गहरा, चौड़ा और भरपूर बढ़ने में काफी समय लगता है। इसलिए, हमें एक किसान जैसा धैर्य रखना सीखना चाहिए। बाइबल, जेम्स 5:7 (*मॉडर्न मैन'स बाइबल* अनुवाद से) में कहती है: "भाइयों और बहनों, इसलिए, धैर्य रखें और प्रभु के लौटने तक प्रतीक्षा करें। देखिए! किसान अपनी कीमती फसल के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता है, वह पतझड़ और वसंत की बारिश का इंतज़ार करता है।" हमें अपने परिवार के सदस्यों के साथ ठीक इसी तरह के धैर्य से पेश आना चाहिए—एक किसान जैसे धैर्य से। जिस तरह एक किसान बीज बोता है, उसी तरह हमें भी प्रेम के बीज बोने चाहिए; और जिस तरह एक किसान फसल के पकने का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करता है, उसी तरह हमें भी प्रेम का फल दिखाई देने का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करना चाहिए। जब हम इंतज़ार कर रहे हों, तो हमें यह समझना चाहिए कि प्रेम का फल देने की इस प्रक्रिया में, हमारे आपसी मतभेदों के कारण टकराव पैदा हो सकते हैं। टकराव की ऐसी स्थितियों में, हमें अपने परिवार के सदस्यों के प्रति—जो स्वयं परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं—मन में क्रोध नहीं पालना चाहिए। हमें धैर्य रखना चाहिए, और बार-बार अपने क्रोध पर काबू पाना चाहिए। नीतिवचन 19:11 पर विचार करें: "एक समझदार व्यक्ति धैर्य रखता है; किसी अपमान को नज़रअंदाज़ करना उसकी महिमा है।" विशेष रूप से, हमें परमेश्वर के उस धैर्य से सीखना चाहिए जो वह हमारे प्रति दिखाता है। यह देखने के लिए 1 तीमुथियुस 1:16 देखें कि पौलुस परमेश्वर के अपने प्रति धैर्य के बारे में क्या

कहता है: "परन्तु ठीक इसी कारण मुझ पर दया की गई, ताकि मुझमें—जो पापियों में सबसे बड़ा पापी था—मसीह यीशु अपना असीम धैर्य दिखा सके; और यह उन लोगों के लिए एक उदाहरण बने जो उस पर विश्वास करके अनंत जीवन प्राप्त करेंगे।" ठीक वैसे ही, जैसे परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस के प्रति असीम धैर्य दिखाया था, वैसे ही वह आज भी आपके और मेरे प्रति अनंत धैर्य दिखा रहा है—बार-बार हमारे साथ धीरज धरते हुए। परमेश्वर के इस असीम धैर्य का अनुकरण करते हुए, हमें भी अपने परिवार के सदस्यों के प्रति धैर्य रखना चाहिए। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारे परिवार—जो प्रभु पर केंद्रित हैं—आपसी सद्भाव में दृढ़ता से स्थापित होंगे।

प्रिय दोस्तों, एक मसीह-केंद्रित परिवार, परमेश्वर के पुत्र, यीशु के अधिकार के अधीन रहता है। इसका अर्थ है कि एक मसीह-केंद्रित परिवार को यीशु के अधिकारपूर्ण वचनों के अधीन रहना चाहिए। ये अधिकारपूर्ण वचन और कुछ नहीं, बल्कि यीशु की "दोहरी आज्ञा" (Double Commandment) ही हैं, जैसा कि उन्होंने मत्ती 22:37 और 39 में कहा है: "यीशु ने उससे कहा, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रख'... और दूसरी आज्ञा भी इसी के समान है: 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।'" परिवार के हर सदस्य का इस दोहरी आज्ञा के अधीन रहना—यानी परमेश्वर से अपने सारे मन, आत्मा और बुद्धि से प्रेम करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना—ठीक यही यीशु के अधिकार के अधीन रहने का अर्थ है। इसके अलावा, यह हमारी ज़िम्मेदारी भी है, उन लोगों के तौर पर जो एक मसीह-केंद्रित परिवार बनाना चाहते हैं। दोस्तों, प्रभु चाहते हैं कि हमारे परिवार स्वर्ग की एक झलक बनें। ठीक इसी उद्देश्य के लिए, उन्होंने हमें यह दोहरी आज्ञा दी है—स्वयं स्वर्ग की आज्ञा (मत्ती 22:37, 39)। इसके अतिरिक्त, हमें इस दोहरी आज्ञा का पालन करने में सक्षम बनाने के लिए, प्रभु ने पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम उंडेल दिया है (रोमियों 5:5); ऐसा करके, वह हमें धीरे-धीरे और लगातार प्रेम से भर रहे हैं—जो कि आत्मा का फल है (गलातियों 5:22)। इसलिए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इस आज्ञा का पालन करें और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन पर चलते हुए, पूरा परिवार—एक मन और एक चित्त होकर (फिलिप्पियों 1:27; 2:2)—एक साथ मिलकर, अपने पूरे जीवन से परमेश्वर से प्रेम करे और एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करे जैसे हम स्वयं से करते हैं। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारा परिवार धीरे-धीरे स्वर्ग का प्रतिबिंब बन जाएगा, जो स्वर्गीय

आनंद (यूहन्ना 15:11; 1 यूहन्ना 1:4), प्रेम (भजन संहिता 33:5), और शांति (रोमियों 15:13) से लबालब भरा होगा।

मैंने प्रेरित यूहन्ना के पहले पत्र के दृष्टिकोण से, यीशु की इस दोहरी आज्ञा की पुनर्व्याख्या करने का प्रयास किया है। दूसरे शब्दों में, यीशु ने आज्ञा दी थी, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रख" (मत्ती 22:37); जब प्रेरित यूहन्ना के पहले पत्र के नज़रिए से देखा जाता है, तो इस आज्ञा को पूरा करने का मतलब है 1 यूहन्ना 2:15–17 में दिए गए शब्दों का पालन करना: “न तो संसार से, और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन का घमण्ड—वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषाएँ दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।” यहाँ, परमेश्वर की इच्छा पर चलने का मतलब है “शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीवन के घमण्ड” के अनुसार जीने से बचना—ये इस संसार की वे चीज़ें हैं जो मिट जाने वाली हैं। इसके अलावा, यीशु ने आज्ञा दी, “अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख” (मत्ती 22:39); फिर से, जब प्रेरित यूहन्ना के पहले पत्र के नज़रिए से देखा जाता है, तो इस आज्ञा को पूरा करने का मतलब है 1 यूहन्ना 2:3–11 में दिए गए शब्दों का पालन करना। 1 यूहन्ना 2:3–11 के संदेश को एक ही वाक्य में सारांशित करें तो: इसका मतलब है अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करना और उनसे घृणा न करना। हालाँकि, शैतान हमारे घरों को नरक में बदलना चाहता है। नतीजतन, शैतान हमें यीशु की दोहरी आज्ञा—स्वर्ग की आज्ञा (इफिसियों 2:2; 5:6)—का उल्लंघन करने के लिए उकसाता है, और इसके बजाय हमें नरक की आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर करता है: एक-दूसरे से घृणा करना (उत्पत्ति 37:5; व्यवस्थाविवरण 22:13; मत्ती 24:10; 1 यूहन्ना 2:9)। इसके अलावा, झूठ की आत्मा के साथ मिलकर, शैतान लगातार हमारे भीतर घृणा के बीज बोता रहता है (व्यवस्थाविवरण 21:17; 2 शमूएल 13:15; नीतिवचन 10:12), और हमें अंधकार के कामों में शामिल होने के लिए मजबूर करता है (यशायाह 29:15; यहेजकेल 8:12; इफिसियों 5:11), जिससे हमारे परिवारों को कड़वे फल भोगने पड़ते हैं (रोमियों 7:5)। नतीजतन, शैतान हमें अपने नरक जैसे घरों में लौटने से डराता है; इसके बजाय, वह हमें घर के बाहर ही रोके रखता है या, इससे भी आगे बढ़कर, हमारे मन में घर से बहुत-बहुत दूर भाग जाने की इच्छा जगा देता है। इसके अलावा, शैतान हमारे मन से अपने परिवार के सदस्यों

को देखने की इच्छा भी मिटा देता है। और वह हमें अपने जीवनसाथी से और भी ज़्यादा नफ़रत करने के लिए उकसाता है। जीवनसाथी के प्रति बढ़ती इस नफ़रत के बीच, शैतान ताक में रहता है कि वह वैवाहिक बंधन में पड़ रही दरारों का फ़ायदा उठा सके (देखें नहेमायाह 4:3—"दरार" या "खाई" के लिए इब्रानी शब्द; नहेमायाह 6:1)। वह हमारा ध्यान किसी दूसरी स्त्री या पुरुष की ओर भटका देता है, और—आँखों की हवस और शरीर की हवस (1 यूहन्ना 2:16) से प्रेरित होकर—वह हमें उस दूसरे व्यक्ति की लालसा करने के लिए उकसाता है, जो अंततः हमें व्यभिचार के रास्ते पर ले जाता है। शैतान का अंतिम उद्देश्य हमारे परिवारों को तोड़ना और नष्ट करना है, ताकि वह हमें अपने घरों के भीतर "धरती पर स्वर्ग" बनाने से रोक सके और, इसके विपरीत, हमारे परिवारों को जीते-जागते नरक में बदल सके। यह एक आत्मिक युद्ध है! परिवार एक आत्मिक युद्ध का मैदान है! तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें इस आत्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए।

मेरे प्यारे दोस्तों, हम परमेश्वर के हैं। परमेश्वर की संतान के रूप में—उसके पुत्र, प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा नया जन्म पाए हुए—आप और मैं, दोनों उसी के हैं। हमें इस पूर्ण विश्वास पर दृढ़ रहना चाहिए कि हम परमेश्वर के हैं। हालाँकि हम अभी इस दुनिया में रहते हैं जिस पर शैतान (इब्लीस) का राज है, फिर भी परमेश्वर के अपने लोगों के रूप में—और आने वाली दुनिया, यानी स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के रूप में—हमें यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करते हुए जीवन जीना चाहिए। भले ही शैतान हमें धोखा देने की कोशिश करे और हमें अपने भाई-बहनों से नफ़रत करने के लिए उकसाए, फिर भी, उन लोगों के रूप में जिन्हें पहले ही अनंत जीवन मिल चुका है, हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जिसमें परमेश्वर के लिए साझा प्रेम और एक-दूसरे के लिए आपसी प्रेम झलकता हो। इस आत्मिक युद्ध में, हमें प्रभु और परमेश्वर पिता के ज्ञान में बढ़ना चाहिए, जो हमारे भीतर वास करते हैं; इसके अलावा, हमारे भीतर वास करने वाले परमेश्वर के शक्तिशाली वचन पर दृढ़ता से खड़े होकर, हमें विश्वास के द्वारा शैतान के प्रलोभनों से लड़ते हुए और उन पर विजय पाते हुए, एक विजयी जीवन जीना चाहिए। इसलिए, शैतान के कब्ज़े वाले इस दुष्ट संसार में रहते हुए भी, आइए हम—जैसा कि परमेश्वर के लोगों को शोभा देता है—अपने पड़ोसियों, भाइयों और बहनों से उसी प्रेम से प्रेम करें जैसा परमेश्वर हमसे करता है; और इस तरह, हम यीशु के दूसरे आगमन और स्वर्ग के राज्य में जीवन के लिए विश्वासपूर्वक खुद को तैयार करें।

मेरे प्यारे दोस्तों, हमें खुद को मसीह-केंद्रित परिवार बनाने के लिए समर्पित करना चाहिए। इसे हासिल करने के लिए, दूसरी बात यह है कि हमें परमेश्वर के पुत्र, यीशु के अधिकार के अधीन रहना चाहिए। हमें यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करना चाहिए। पवित्र आत्मा—जो अंत के समय को लाता है—हमारे भीतर वास करता है; वह इस समय आत्मा का फल, विशेष रूप से "प्रेम" (गलातियों 5:22) उत्पन्न कर रहा है, और हमें यीशु की दोहरी आज्ञा का पालन करने में सक्षम बना रहा है। इसलिए, हमें पवित्र आत्मा के साथ कदम मिलाकर जीना और प्रेम करना चाहिए (पद 16)। दूसरे शब्दों में, हमें खुद को पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होने देना चाहिए (पद 18), और हमें आत्मा के अनुसार जीना और आत्मा के अनुसार चलना चाहिए (पद 25)। जब हम ऐसा करेंगे, तो हमारे हृदय स्वर्ग के एक पूर्वाभास में बदल जाएँगे; हमारे परिवार स्वर्गीय घराने बन जाएँगे; और हमारा कलीसिया एक ऐसा समुदाय बन जाएगा जो वास्तव में स्वर्ग के राज्य का मूर्त रूप होगा।

अंत में—और तीसरी बात—एक मसीह-केंद्रित परिवार परमेश्वर पवित्र आत्मा की साक्षात उपस्थिति का अनुभव करता है। आप सभी से, मैं दो प्रश्न पूछना चाहूँगा: (1) पहला प्रश्न यह है: क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके साथ है? उदाहरण के लिए, यदि हम यशायाह 41:10 के पहले भाग को देखें—एक ऐसा पद जो मेरी माँ को बहुत प्रिय है—तो बाइबल घोषणा करती है, "मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ..." क्या आप परमेश्वर के इस वचन पर ठीक वैसे ही विश्वास करते हैं जैसा वह लिखा है? परमेश्वर के इस वचन पर ठीक वैसे ही विश्वास करने का अर्थ है, जब परमेश्वर कहता है, "मैं तेरे साथ हूँ," तो उस पर भरोसा करना; और, क्योंकि परमेश्वर वास्तव में आपके साथ है, इसलिए न डरने का चुनाव करना। एक और उदाहरण के तौर पर, मत्ती 28:20 के दूसरे भाग में, यीशु ने कहा, "और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।" क्या आप यीशु के इन शब्दों पर ठीक वैसे ही विश्वास करते हैं जैसा उसने कहा था? आप में से जो लोग सचमुच विश्वास करते हैं, वे भरोसा रखते हैं कि प्रभु—जो हमसे प्रेम करते हैं, और अंत तक प्रेम करते रहेंगे (यूहन्ना 13:1)—सचमुच हमेशा हमारे साथ हैं, युग के अंत तक (मत्ती 28:20)। (2) दूसरा प्रश्न यह है: क्या आपने कभी व्यक्तिगत रूप से अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया है? उदाहरण के लिए, कुछ हफ़्ते पहले, जब हमें सिस्टर ली जोंग-मी की पाँचवीं हार्ट सर्जरी और उसके बाद उनके ठीक होने की खबर मिली—जिनके लिए आप में से कई लोग यहाँ कोरिया में प्रार्थना कर रहे थे—तो KakaoTalk पर हमारे प्रार्थना समूह के सदस्यों ने सचमुच इस सच्चाई का अनुभव किया कि परमेश्वर जीवित हैं और वे हमारे साथ हैं। जब मैं अब आपके साथ परमेश्वर की उपस्थिति के इस

अनुभव को साझा कर रहा हूँ, तो मैं कल्पना करता हूँ कि आप में से कुछ लोग शायद खुद से यह पूछ रहे होंगे: “यदि सिस्टर ली जोंग-मी ने जीवित परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव इसलिए किया क्योंकि वे सर्जरी के बाद बच गईं और जल्दी ठीक हो गईं—तो क्या होता यदि वे सर्जरी के दौरान ही गुज़र जातीं? क्या उस स्थिति में भी परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना संभव होता?” जिस कारण से मैं इस प्रश्न का उत्तर पूरे आत्मविश्वास के साथ "हाँ" में दे सकता हूँ, वह यह है कि मैंने व्यक्तिगत रूप से जीवित परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव तब किया था, जब मेरा पहला बच्चा, जुयोंग, गुज़र गया था। वह अनुभव तब हुआ, जब मेरी पत्नी और मैं अपने बच्चे की अस्थियाँ जल में विसर्जित करने के लिए एक नाव में गए थे; जब हम किनारे पर लौट रहे थे, तब पवित्र आत्मा के उमड़ते हुए कार्य के बीच, मैंने खुद को प्रभु के उद्धारकारी प्रेम की स्तुति करते हुए पाया—और मैं इस बात पर चकित था कि वह प्रेम सचमुच कितना महान और अद्भुत है। यह इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि यह सचमुच पवित्र आत्मा का ही कार्य था। मैं—एक पिता जिसका प्यारा बच्चा अभी-अभी गुज़रा था—भला कैसे प्रभु के उद्धारकारी प्रेम की स्तुति कर सकता था? यह पवित्र आत्मा ही थे जिन्होंने यह कार्य पूरा किया। परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने का ठीक यही अर्थ है—सचेत रूप से इस सच्चाई को समझना और अनुभव करना कि परमेश्वर मेरे साथ हैं।

दोस्तों, हमने एक मसीह-केंद्रित घर की तीन मुख्य विशेषताओं में से दो पर पहले ही चर्चा कर ली है: (1) एक मसीह-केंद्रित घर परमेश्वर पिता की संप्रभुता को स्वीकार करता है और यह मानता है कि परमेश्वर सक्रिय रूप से हमारे परिवार को नियंत्रित और संचालित कर रहा है। (2) एक मसीह-केंद्रित घर परमेश्वर पुत्र—यीशु—के अधिकार के अधीन रहता है और, उसकी दोहरी आज्ञा का पालन करते हुए, परमेश्वर और पड़ोसी दोनों से प्रेम करता है। (3) आज, हमारे तीसरे और अंतिम बिंदु के रूप में, एक मसीह-केंद्रित घर में परमेश्वर पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अनुभव किया जाता है।

दोस्तों, क्या आप अपने घर में परमेश्वर पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अनुभव करते हैं? क्या आप सचेत रूप से अपने साथ पवित्र आत्मा की उपस्थिति को महसूस और अनुभव करते हैं—चाहे वह आपके जीवनसाथी के साथ आपके रिश्ते में हो, आपके बच्चों के साथ हो, या पारिवारिक जीवन के अन्य पहलुओं में हो? "सचेत रूप

से अपने साथ पवित्र आत्मा की उपस्थिति को महसूस और अनुभव करने" का वास्तव में क्या अर्थ है? मैं इसे दो भागों में समझाऊँगा:

(1) इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा न केवल हमें परमेश्वर पिता की संप्रभुता को स्वीकार करने—और यह मानने कि वह हमारे परिवार को नियंत्रित और संचालित कर रहा है—में सक्षम बनाता है, बल्कि हमें अपने दैनिक जीवन के बीच में, वास्तव में यह पहचानने और अनुभव करने की भी अनुमति देता है कि परमेश्वर पिता हमारे घर के भीतर संप्रभु रूप से कार्य कर रहा है, और हमारे परिवार के प्रत्येक सदस्य को सक्रिय रूप से नियंत्रित और संचालित कर रहा है।

मेरे अपने मामले में—जब मेरी पत्नी और मैं लगभग 26 साल पहले मिले थे और लगभग 25 साल पहले परमेश्वर के सामने हमारा विवाह समारोह संपन्न हुआ था—तो हमारा यह दृढ़ विश्वास, पक्का यकीन और स्वीकारोक्ति थी कि हमारा मिलना और हमारा विवाह स्वयं परमेश्वर द्वारा संपन्न कराया गया था, जो पूरी तरह से उसकी ईश्वरीय संप्रभुता के दायरे में था। पवित्र आत्मा ने मुझे इतना गहरा विश्वास और यकीन प्रदान किया कि मैं इसके अलावा कुछ और महसूस ही नहीं कर सकता था। मैं पवित्र आत्मा के इस कार्य को स्वीकार करने के लिए पूरी तरह से विवश था, क्योंकि, मानवीय दृष्टिकोण से, मेरी पत्नी और मैं दो ऐसे लोग थे जिनके रास्ते कभी आपस में नहीं मिलते; फिर भी, प्रभु के माध्यम से, हम एक देह के रूप में एक हो गए। इसके अलावा, जैसे-जैसे मैं और मेरी जीवनसाथी अपने तीन बच्चों का पालन-पोषण कर रहे हैं, हमें इस बात की झलक मिली है कि परमेश्वर पिता इन बच्चों से हम माता-पिता की तुलना में भी कहीं अधिक प्रेम करता है, और वह उनमें से प्रत्येक के जीवन में संप्रभु रूप से कार्य कर रहा है। वास्तव में, परमेश्वर पिता इन तीनों बच्चों के नियंत्रण में है और उनका संचालन कर रहा है। इसलिए, विश्वास के साथ, मैं और मेरे जीवनसाथी अपने तीन बच्चों की ओर से परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते हैं, और उनसे विनती करते हैं कि वे लगातार उनका नियंत्रण और मार्गदर्शन करते रहें।

(2) "हमारे साथ परमेश्वर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत होने और उसका अनुभव करने" का अर्थ है, इस बात से अवगत होना और अनुभव करना कि परमेश्वर पवित्र आत्मा हमें यीशु की अधिकारपूर्ण "दोहरी आज्ञा" का पालन करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे एक "स्वर्गीय घर" का निर्माण होता है।

यह जागरूकता और अनुभव उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा हमारा घर एक "स्वर्गीय घर" बन जाता है—यह एक ऐसा परिवर्तन है जो इसलिए आता है क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा, जो हमारे भीतर वास करते हैं, हमें आत्मा के फल—यानी प्रेम—से लबालब भर देते हैं। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, हम परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना सीखते हैं, और अपने परिवार के सदस्यों से भी वैसे ही प्रेम करते हैं जैसे हम स्वयं से करते हैं। एक घर का स्वर्गीय स्थान में रूपांतरण पूरी तरह से परमेश्वर पवित्र आत्मा का कार्य है; वास्तव में, केवल परमेश्वर पवित्र आत्मा के पास ही यह शक्ति है कि वह हमारे घर को पृथ्वी पर ही स्वर्ग बना दे। इसलिए—चाहे पति हो, पत्नी हो, या बच्चे—पूरे परिवार को पवित्र आत्मा से भरा हुआ और प्रेम से लबालब होना चाहिए। यीशु की दोहरी आज्ञा के अनुसार, हम सभी को एक हृदय और एक मन होकर परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना चाहिए, और एक-दूसरे से भी परमेश्वर के प्रेम के साथ वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे हम स्वयं से करते हैं। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम वास्तव में हमारे साथ परमेश्वर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत होंगे और उसका अनुभव करेंगे।

मैं धर्मग्रंथों पर आधारित इस चिंतन के समय को अब समाप्त करना चाहूँगा। प्रिय मित्रों, परमेश्वर की दृष्टि में, हममें से प्रत्येक का परिवार अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी कारण से, प्रभु हममें से प्रत्येक के परिवार का निर्माण करना चाहते हैं। इसलिए, हमें विनम्रतापूर्वक प्रभु के उस कार्य का पालन करना चाहिए और उसमें सहभागी बनना चाहिए जिसके द्वारा वे हमारे-हमारे परिवारों का निर्माण करते हैं। फिर भी, जब हम इस कार्य में सहभागी होते हैं, तो हमारी पहली प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना होनी चाहिए कि हम स्वयं ऐसा जीवन जी रहे हों जो पूरी तरह से प्रभु पर केंद्रित हो। प्रभु-केंद्रित जीवन जीने का अर्थ है, परमेश्वर पिता—जो प्रेम स्वरूप हैं (1 यूहन्ना 4:8, 16)—के सर्वोच्च प्रभुत्व, नियंत्रण और शासन के अधीन रहते हुए, पवित्र आत्मा परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करना; और परमेश्वर के पुत्र तथा 'सत्य' (यूहन्ना 14:6) कहे जाने वाले यीशु मसीह के अधिकारपूर्ण वचनों का पालन करना—विशेष रूप से, परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने की उनकी दोहरी आज्ञाओं का पालन करना (मत्ती 22:37, 39)। इसलिए, हमारे परिवारों को भी प्रभु-केंद्रित परिवारों के रूप में स्थापित होना चाहिए; हमें परमेश्वर पिता की संप्रभुता को स्वीकार करना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि वही हमारे परिवारों को नियंत्रित और संचालित करते हैं; और, परमेश्वर पुत्र—यीशु—के अधिकार के अधीन स्वयं को रखते हुए, हमें परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की उनकी दोहरी आज्ञाओं का पालन करना

चाहिए, जिससे हम अपने घरों के भीतर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत हो सकें और उसका अनुभव कर सकें। ऐसा प्रभु-केंद्रित परिवार, घर को पृथ्वी पर एक छोटे से स्वर्ग में बदल देता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह आशीष हमारे सभी परिवारों पर बनी रहे।

एक परिवार जो बदलाव के दौर से गुज़र रहा है

“इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा को अनुभव से जान सको” (रोमियों 12:2)।

अपनी किताब *Renovation of the Heart* में, पादरी डलास विलार्ड कहते हैं, “एकमात्र चीज़ जो बाहरी बुराई को सचमुच हरा सकती है, वह है एक गहरा आंतरिक बदलाव” (विलार्ड)। क्या आप और मैं सचमुच यह मानते हैं कि बाहरी बुराई को निर्णायक रूप से हराने का एकमात्र तरीका एक गहरा आंतरिक बदलाव ही है?

व्यक्तिगत रूप से, मैं इस आंतरिक बदलाव को पाने की कोशिश करता हूँ—न केवल अपने लिए, बल्कि अपने जैविक परिवार के सदस्यों के लिए भी, और साथ ही यहाँ विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च में अपने आध्यात्मिक परिवार के सदस्यों के लिए भी। दूसरे शब्दों में, मैं अपनी व्यक्तिगत आध्यात्मिक यात्रा, अपनी पारिवारिक सेवा, और अपनी पादरी सेवा को उस आंतरिक बदलाव पर ध्यान केंद्रित करके पूरा करना चाहता हूँ जिसे परमेश्वर देखता है, न कि उन बाहरी बदलावों पर जो इंसानी आँखों को दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि आंतरिक बदलाव के बिना, कोई भी सच्चा बाहरी बदलाव कभी नहीं हो सकता। मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूँ कि हम ईसाइयों के सामने जो मूल समस्या है, वह यह है कि हम बाहरी दिखावे पर बहुत ज़्यादा ध्यान देते हुए आंतरिक बदलाव की उपेक्षा करते हैं। क्योंकि हम दिल के मूल बदलाव से गुज़रे बिना सतही बदलावों का पीछा करते हैं, इसलिए हम ईसाई अक्सर दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने में असफल रहते हैं; इसके बजाय, इसका उल्टा होता है—हम दुनिया *से* प्रभावित होते हैं, उसके तरीकों के अनुरूप ढल जाते हैं, और इस तरह अपने सच्चे स्वरूप

से दूर हो जाते हैं और परमेश्वर और इंसान दोनों की नज़रों में गलतियाँ करते हैं। इंसानी देखने वालों को, हम गहरे विश्वास वाले लग सकते हैं; हम बहुत अच्छी प्रार्थना करते हुए, बाइबल का ठोस ज्ञान दिखाते हुए, और बड़े उत्साह के साथ चर्च की सेवा करते हुए लग सकते हैं। फिर भी, क्योंकि दिल के मूल बदलाव की कमी होती है, इसलिए सालों तक चर्च जाने के बाद भी, हम अनिवार्य रूप से अपने चरित्र या अपने आचरण में कोई भी स्पष्ट बदलाव दिखाने में असफल रहते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मैं अपनी पारिवारिक सेवा को इस नज़रिए से देखता हूँ कि मैं अपने घर को एक "जंगल" (wilderness) मानता हूँ—एक ऐसी जगह जहाँ मैं परमेश्वर की मदद और मार्गदर्शन चाहता हूँ। इस नज़रिए का उत्प्रेरक जॉन बेवेरे की किताब, *Growing Strong in Dry Times* (मूल रूप से *The Wilderness* शीर्षक वाली) को पढ़ना था। जैसे-जैसे मैंने वह किताब पढ़ी, मुझे यह एहसास हुआ कि मुझे न केवल चर्च को, बल्कि, विशेष रूप से, अपने खुद के घर को भी एक जंगल के रूप में देखने की ज़रूरत है। इसके दो मुख्य कारण हैं:

(1) जिस कारण से हमें अपने घर को एक 'जंगल' (wilderness) की तरह मानना *चाहिए*—या यूँ कहें कि जिस कारण से हमें ऐसा *अनिवार्य रूप से करना ही होगा*—वह यह है कि यह ठीक वही जगह है जहाँ हमारे परिवार के सदस्यों के सारे पाप सामने आने ही हैं।

विशेष रूप से जब हम वैवाहिक संबंधों के संदर्भ में सोचते हैं, तो मेरा मानना है कि पति-पत्नी के हर पाप को उजागर करने के लिए घर से बेहतर कोई दूसरी जगह नहीं है। बेशक, जब घर के भीतर हमारे सारे पाप उजागर होते हैं, तो यह निस्संदेह बहुत ही कष्टदायक और दुखद होता है। ऐसे क्षणों के साथ स्वाभाविक रूप से दर्द और दुख जुड़ा होता है; वास्तव में, इस बात की पूरी गुंजाइश होती है कि हम एक-दूसरे को गहरे घाव दे बैठें। हालाँकि, जो जोड़े अपने घर को एक 'जंगल' के रूप में स्वीकार करते हैं, वे अपने रिश्ते में उजागर हुए पापों को ईश्वर की कृपा की ही एक अभिव्यक्ति मानने लगते हैं—क्योंकि इसी प्रक्रिया के माध्यम से वे यह देख पाते हैं कि किस तरह पापियों को उसकी कृपा से ही सहारा मिलता है। जैसे-जैसे ईश्वर की इस कृपा के प्रति उनकी समझ गहरी होती जाती है, और जैसे-जैसे घर के भीतर एक पवित्र ईश्वर के सामने उनके आपसी पाप उजागर होते रहते हैं, वे एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर देख पाते हैं और एक-दूसरे को ठीक वैसे ही स्वीकार कर पाते हैं जैसे वे हैं—अपनी तमाम कमियों और कुरूपताओं के साथ। ऐसा करते हुए, वे इस बात को स्वीकार करते हैं और अंगीकार करते हैं कि न केवल उनका अपना अस्तित्व ईश्वर की कृपा का ही परिणाम है, बल्कि उनके

जीवनसाथी का अस्तित्व भी, ठीक उसी तरह, पूरी तरह से उसकी कृपा का ही कार्य है। परिणामस्वरूप, हम एक-दूसरे के साथ ठीक वैसी ही कृपा का व्यवहार करना शुरू कर देते हैं, जैसी कृपा ईश्वर ने हम पर—हम जैसे पापियों पर—की है। हम एक-दूसरे की गलतियों और पापों को क्षमा कर देते हैं, और अपने स्वर्गीय पिता के हृदय से, हम एक-दूसरे को प्रेमपूर्वक गले लगाते हैं और साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं। फिर भी, यह महसूस करते हुए कि हम अपनी स्वयं की शक्ति से यह सब करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं, हम विवश होकर अपने "जंगल-रूपी घर" के एकांत में लौट जाते हैं, और ईश्वर के सामने अकेले खड़े होकर अपनी प्रार्थनाएँ और विनतियाँ प्रस्तुत करते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो ईश्वर पति और पत्नी—दोनों के ही हृदयों में कार्य करता है, और हम पर अपनी कृपा बरसाता है, ताकि हम भी बदले में एक-दूसरे के साथ उसी कृपा और प्रेम का व्यवहार कर सकें जो उसी से प्रवाहित होता है। इसलिए, हमें अपने घर को एक 'जंगल' के रूप में स्वीकार करना चाहिए। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हमारे वैवाहिक जीवन के समस्त पापों को उजागर करने के लिए घर से बेहतर कोई दूसरी जगह नहीं है। (2) हमें अपने घर को एक "जंगल" (wilderness) के रूप में क्यों देखना चाहिए, इसका कारण यह है कि एक-दूसरे से अपनी *चाहतों* की मांग करने के बजाय, हमें एक-दूसरे की वास्तविक *ज़रूरतों* को पूरा करने पर ध्यान देना चाहिए।

घर कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ पति और पत्नी बस एक-दूसरे से वही मांगते रहें जो उस समय उन्हें चाहिए होता है। फिर भी, बार-बार हम खुद को अपने जीवनसाथी से अपनी निजी चाहतों को पूरा करने की उम्मीद करते हुए पाते हैं। समस्या तब पैदा होती है जब ये चाहतें पूरी नहीं होतीं; हम शिकायत करने, मन में कड़वाहट पालने और एक-दूसरे से झगड़ने के दुष्चक्र में फँस जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे इस्राएली लोग जंगल में अपने चालीस वर्षों के दौरान करते थे—जो लगातार मूसा और परमेश्वर के खिलाफ बड़बड़ाते और शिकायत करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उनकी चाहतें पूरी नहीं हो रही हैं—हम अक्सर अपने ही घरों में भी ठीक ऐसी ही "जंगल वाली घटनाएँ" घटते हुए देखते हैं। यह विशेष रूप से हमारे वैवाहिक संबंधों की गतिशीलता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। तो फिर, इस समस्या की जड़ क्या है? इसकी जड़ इस गलत धारणा में है कि घर एक ऐसी जगह है जहाँ हम अपनी *चाहतों* की मांग करते हैं, न कि एक ऐसा पवित्र स्थान जहाँ हम एक-दूसरे की *ज़रूरतों* को पूरा करते हैं। यदि घर केवल एक ऐसी जगह बनकर रह जाए जहाँ पत्नी लगातार अपने पति से मांगें करती रहे—और पति भी बदले में अपनी पत्नी से अंतहीन मांगें करता रहे—तो यह अनिवार्य रूप से अधूरी चाहतों से पैदा

होने वाले निरंतर कलह और संघर्ष से ग्रस्त हो जाएगा। हालाँकि, यदि कोई जोड़ा अपने विवाह में "जंगल" वाले दृष्टिकोण को अपनाने का चुनाव करता है, तो वे अपनी चाहतों की मांग करने के बजाय, एक-दूसरे की वास्तविक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए खुद को समर्पित करने पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। जैसे-जैसे एक पति अपनी पत्नी की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करेगा—और मसीह के प्रेम के माध्यम से उन्हें पूरा करने की कोशिश करेगा—वैसे-वैसे पत्नी उसके द्वारा परमेश्वर के प्रेम का अनुभव करेगी। इसी तरह, जैसे-जैसे एक पत्नी अपने पति की ज़रूरतों की समझ में बढ़ती जाएगी—और, उसके अधिकार को स्वीकार करते हुए (ठीक वैसे ही जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है), उसकी बातें सुनेगी और उसका आज्ञापालन करेगी—वैसे-वैसे पति उसके द्वारा परमेश्वर से शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त करेगा। इस प्रकार, जैसे-जैसे यह जोड़ा एक-दूसरे के माध्यम से अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों को पूरा होते हुए अनुभव करेगा, वे संतुष्टि और तृप्ति की एक गहरी भावना का आनंद लेंगे। और साथ मिलकर, यह जोड़ा परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करेगा। इसलिए, हमें अपने घर को एक "जंगल" बनाना चाहिए। क्योंकि पति और पत्नी के लिए प्रभु के प्रेम के माध्यम से एक-दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए घर से बेहतर कोई जगह नहीं है।

आज, “एक बदला हुआ परिवार” शीर्षक के तहत, मैं रोमियों 12:2 पर आधारित एक ही सीख पर मनन करना चाहता हूँ—विशेष रूप से, एक बदले हुए परिवार के निर्माण में हमारी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं—और साथ ही यह प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु वास्तव में हमारे हर एक परिवार को बदल देंगे, जैसा कि वह उन्हें स्थापित करते हैं।

हमें इस युग (संसार) के अनुरूप नहीं ढलना चाहिए, बल्कि अपने मन के नए हो जाने से बदल जाना चाहिए।

मत्ती 12:39 में, यीशु ने इस युग (संसार) को “दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी” कहा। प्रेरित पौलुस ने भी, गलातियों 1:4 में, इस युग को “यह वर्तमान दुष्ट युग” बताया। इसके अलावा, इफिसियों 2:2 और गलातियों 5:16 में, पौलुस ने कहा कि यीशु पर विश्वास करने और नई सृष्टि बनने से पहले, हम “इस संसार की रीति” (इफिसियों 2:2) या “शरीर की अभिलाषाओं” (गलातियों 5:16) के अनुसार जीते थे। तो फिर, ये “इस संसार की रीति” या “शरीर की अभिलाषाएँ” वास्तव में क्या हैं, जिनका हमने यीशु पर विश्वास करने और नए लोग बनने से पहले अनुसरण

किया था? इसका उत्तर गलातियों 5:19–21 के पहले भाग में मिलता है: "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, लुचपन; मूर्तिपूजा, टोना; बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म; डाह, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा और इनके जैसे और काम।" रोमियों 1:29–31 में भी इसी तरह की एक सूची मिलती है: "वे हर प्रकार की अधार्मिकता, दुष्टता, लोभ और बैर से भरे हुए हैं। वे डाह, हत्या, झगड़ा, छल और द्वेष से भरे हैं। वे चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के बैरी, अपमान करने वाले, घमंडी और डींग मारने वाले हैं; वे बुराई करने के नए-नए तरीके निकालते हैं; वे अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं मानते; वे नासमझ, विश्वासहीन, निर्दय और बेरहम हैं।" समस्या यह है कि हम—जिन्होंने पहले ही यीशु मसीह पर विश्वास कर लिया है और नए लोग बन गए हैं—कभी-कभी परमेश्वर के पवित्र लोगों के रूप में जीने में असफल हो जाते हैं, जो हमारी नई पहचान के अनुरूप हो; इसके बजाय, हम अभी भी "पुराने स्वभाव" की आदतों के अनुसार जीते हैं, और इन शारीरिक अभिलाषाओं का अनुसरण करते हैं। समस्या क्या है? ऐसा क्यों है कि यीशु पर विश्वास करने और नए इंसान बनने के बाद भी, हम अपने पुराने स्वभाव के कामों को छोड़ नहीं पाते, जबकि हमें ऐसे तरीके से जीना चाहिए जो हमारे नए स्वभाव को दिखाता हो? असल में, समस्या क्या है? समस्या ठीक हमारे दिलों में है। हम पाप इसलिए करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में सँजोकर रखने में नाकाम रहते हैं। जैसा कि भजन संहिता 119:11 में कहा गया है: "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" अगर हम परमेश्वर के वचन को अपने दिलों में नहीं रखते, तो हमारे दिल नए नहीं बन सकते। नतीजतन, हमारे पास इस पापी और अनैतिक पीढ़ी के अनुसार जीने के अलावा कोई चारा नहीं बचता—अपने अंधेरे, मूर्ख दिलों (1:21) या अपने दिलों की पापी इच्छाओं (1:24) का पीछा करते हुए। तो फिर, आपको और मुझे क्या करना चाहिए? हमें अपने मन को नया बनाकर एक बदलाव से गुज़रना होगा। संक्षेप में, हमारे दिलों को बदलाव की सख्त ज़रूरत है।

हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिए खुद को और भी ज़्यादा लगन से समर्पित करना चाहिए। इसका कारण यह है कि हम जितना ज़्यादा परमेश्वर के वचन पर मनन करेंगे—दिन-रात—उतना ही ज़्यादा हमारे दिल उसी वचन की शक्ति से बदल सकेंगे। यह कैसे संभव है? सबसे पहले, हम जितना ज़्यादा परमेश्वर के वचन पर मनन करेंगे, पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की आवाज़ सुनने में उतना ही ज़्यादा समर्थ बनाएगा। आज के शास्त्र-

वचन—रोमियों 12:2—के नज़रिए से इसे फिर से कहें तो, हम जितना ज़्यादा परमेश्वर के वचन पर मनन करेंगे, हम परमेश्वर की इच्छा को समझने में उतने ही ज़्यादा समर्थ होंगे। जब ऐसा होता है—और यह हमें दूसरे बिंदु पर लाता है—तो हमारे दिलों में सच्चा बदलाव आता है, क्योंकि हम परमेश्वर की उस इच्छा का पालन करते हैं जिसे हमने समझा है। इस प्रकार, 1 पतरस 1:22 में, प्रेरित पतरस कहते हैं, "सत्य का पालन करके अपने प्राणों को पवित्र करने के कारण।" इसके अलावा, इफिसियों 5:26 में, प्रेरित पौलुस घोषणा करते हैं कि परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमें "शुद्ध और पवित्र" करता है। मेरी यह दिली प्रार्थना है कि, जैसे-जैसे हमारा पूरा कलीसियाई परिवार परमेश्वर के वचन के और भी करीब आता जाए—उसे सुनते हुए, पढ़ते हुए, उस पर मनन करते हुए, उसका अध्ययन करते हुए और उसका पालन करते हुए—हममें से हर एक के दिल में एक बुनियादी बदलाव आए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे दिल पूरी तरह से एक हो जाएँ (एकचित्तता)। परिणामस्वरूप, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम—आप, मैं और हमारे परिवार—अब इस दुनिया के ढर्रे पर न चलें, बल्कि इसके बजाय ज़्यादा से ज़्यादा यीशु मसीह का अनुकरण करें, और इस तरह इस दुनिया में बदलाव लाने का माध्यम बनें।

मैं इस चिंतन को परमेश्वर के वचन पर मनन करते हुए समाप्त करना चाहूँगा। पादरी कांग जून-मिन ने एक बार यह बात कही थी: "हम सभी बदलाव चाहते हैं। हालाँकि, बदलाव लाना किसी भी तरह से कोई आसान काम नहीं है। लियो टॉल्स्टॉय ने एक बार कहा था, 'हर कोई सोचता है कि मानवता को बदलना चाहिए, लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि उसे खुद बदलना चाहिए।'" हम अक्सर यह मान लेते हैं कि हमारे आस-पास के लोगों को ही बदलने की ज़रूरत है। हम उन लोगों को बदलने के लिए भी जी-जान से कोशिश करते हैं जिनके साथ हम अपना जीवन बिताते हैं। फिर भी, हम शायद ही कभी रुककर यह सोचते हैं कि *हमें खुद* बदलने की ज़रूरत है। इसका कारण यह है कि हम ईमानदारी से खुद का सामना नहीं कर पाते। यदि आप दूसरों को बदलना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले अपने भीतर बदलाव का अनुभव करना होगा। यदि हम अपने परिवारों के बदलाव के लिए परमेश्वर से पूरी लगन से प्रार्थना कर रहे हैं, तो हमें सबसे पहले खुद को बदलने देना होगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी—इस पीढ़ी (या दुनिया) के ढर्रे पर न चलकर, बल्कि अपने मन को नया करके—ऐसे परिवार बनें जो सचमुच प्रभु द्वारा बदले हुए हों।

एक ईश्वरीय परिवार

“वह एक भक्त और परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था, और उसके पूरे परिवार के लोग भी परमेश्वर का भय मानते थे। वह लोगों को उदारता से दान देता था, और हमेशा परमेश्वर से प्रार्थना करता था” (प्रेरितों के काम 10:2)।

यहाँ एक सुखी घर के दस रहस्य दिए गए हैं (डॉ. एच. एल. मेंकेन): (1) अपने वैवाहिक जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित करें। चाहे आप शादी की तैयारी कर रहे हों या शादी के बंधन में बंध चुके हों, आपको यह स्पष्ट करना होगा कि आप किस तरह का परिवार बनाना चाहते हैं, और उस लक्ष्य की ओर लगातार प्रयास करना होगा। बिना किसी लक्ष्य के, आप कहीं नहीं पहुँच सकते। (2) शादी से पहले अपनी दोनों आँखें खुली रखें, लेकिन शादी के बाद एक आँख बंद कर लें। शादी हो जाने के बाद, आपको अपने परिवार के सदस्यों की कमियों को नज़रअंदाज़ करना सीखना चाहिए। आखिर, हममें से कौन ऐसा है जिसमें कोई कमी न हो? “किसी का न्याय न करो, वरना तुम्हारा भी न्याय किया जाएगा” (मत्ती 7:1)। (3) दूसरों से तुलना करने से दुख मिलता है, और राज़ रखने से त्रासदी जन्म लेती है। हम अक्सर बिना सोचे-समझे अपने प्रियजनों की तुलना दूसरों से करने लगते हैं। ऐसा करने से एक व्यक्ति में अहंकार पैदा हो सकता है, और दूसरे व्यक्ति को गहरी ठेस पहुँच सकती है। राज़ रखने से लोगों के बीच दीवारें खड़ी हो जाती हैं। (4) गुस्सा मन में लिए हुए कभी न सोएँ। इसका वही अर्थ है जो पौलुस की इस सलाह का है: “सूरज डूबने तक अपने गुस्से को अपने मन में न रहने दें।” (5) सिर्फ़ एक-दूसरे को ही न देखें; बल्कि, एक ही दिशा में एक साथ देखें। आपको परमेश्वर और उसकी इच्छा को जानने का प्रयास करते हुए, और उसके अनुसार कार्य करते हुए अपना जीवन जीना चाहिए। यदि एक व्यक्ति हमेशा दूसरे की माँगों के अनुसार ही चलता रहे, तो जिस व्यक्ति को खींचा जा रहा है, उसके मन में अंततः गहरी नाराज़गी पैदा हो जाएगी। (6) पैसे के मामले में एकमत रहें। अपने पैसों को कैसे खर्च करना है—छोटे-मोटे आकस्मिक खर्चों

को छोड़कर—इस पर आपसी सहमति बनाना बुद्धिमानी है। (7) होठों से निकले तीस सेकंड के शब्द, दिल में तीस साल का दर्द बन सकते हैं। कठोर शब्द गहरे घाव देते हैं। इसलिए, आपके शब्द हमेशा रचनात्मक और दयालु होने चाहिए। (8) अपने शयनकक्ष में आनंद और अपनापन बनाए रखें। “वह पुरुष और उसकी पत्नी, दोनों नंगे थे, और उन्हें कोई शर्म महसूस नहीं होती थी” (उत्पत्ति 2:25)। यह अदन के बगीचे में रहने वाले सबसे पहले जोड़े की स्थिति को दर्शाता है। (9) एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें और एक-दूसरे में उत्साह भरें। यह प्रेम का सच्चा अमृत है। प्रोत्साहन देने की सेवा से ज़्यादा महत्वपूर्ण कोई और सेवा शायद ही हो। (10) अपने दिन की शुरुआत प्रार्थना से करें और दिन का अंत भी प्रार्थना से ही करें। यह उस व्यक्ति की सलाह है जो जीवन की प्रकृति को सचमुच समझता है। “यदि आप इन रहस्यों को समझ लें और पूरी निष्ठा से इन्हें अपने जीवन में उतारें, तो—भले ही इस धरती पर पूर्ण सुख का अस्तित्व न हो—आप निश्चित रूप से एक ऐसा जीवन जी सकते हैं जो सुख के बहुत करीब हो” (स्रोत: इंटरनेट)। जब मैं उन दस तरीकों पर विचार करता हूँ जिनका पालन करके हम एक सुखी घर बना सकते हैं, तो उनमें से लगभग तीन तरीके मेरे मन को विशेष रूप से गहराई से छूते हैं। ये सिद्धांत हैं: विवाह के बंधन में रहते हुए लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता; प्रत्येक दिन की शुरुआत और अंत प्रार्थना के साथ करने का अभ्यास; और यह सत्य कि "होठों से निकले तीस सेकंड, दिल में तीस साल तक बस जाते हैं।"

आज के धर्मग्रंथ के अंश—प्रेरितों के काम 10:2—के आधार पर, मैं एक ईश्वरीय घर बनाने के विषय में तीन सीखें आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। चूँकि एक सचमुच सुखी परिवार सबसे पहले एक "ईश्वरीय परिवार" होना चाहिए, इसलिए हम यह सीखने के लिए कुरनेलियुस और उसके परिवार की ओर देखेंगे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। मेरी यह हार्दिक आशा है कि, इन तीनों सीखों को अपनाकर और उन्हें अपने जीवन में उतारकर, हमारे परिवार—आपके और मेरे—ऐसे परिवारों के रूप में स्थापित हों जो परमेश्वर की दृष्टि में ईश्वरीय हों और हमारे पड़ोसियों की दृष्टि में सुखी हों।

सबसे पहले, एक ईश्वरीय परिवार परमेश्वर का भय मानता है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश, प्रेरितों के काम 10:2 का पहला भाग देखें: "वह एक भक्त पुरुष था और अपने पूरे परिवार के साथ परमेश्वर का भय मानता था..." यह तथ्य कि कुरनेलियुस—अपने परिवार का मुखिया—एक भक्त पुरुष था जो "अपने पूरे परिवार के साथ परमेश्वर का भय मानता था," हमें एक मूल्यवान सीख देता है। वह सीख बस इतनी सी है: हमारे बीच जो पुरुष हैं—हमारे परिवारों में जो पति और पिता हैं—उन्हें परमेश्वर का भय मानने के मामले में आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए। लेकिन "परमेश्वर का भय मानने" का क्या अर्थ है? इसका सीधा सा अर्थ है—बुराई से घृणा करना। नीतिवचन 8:13 देखें: "यहोवा का भय मानने का अर्थ है बुराई से घृणा करना; घमंड, अहंकार, बुरा मार्ग और कुटिल बातें—इन सब से मैं घृणा करता हूँ।" बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर घमंड, अहंकार, बुरे आचरण और कुटिल बातों से घृणा करता है। इसलिए, जो कोई भी परमेश्वर का भय मानता है, उसे भी ठीक उन्हीं बातों से घृणा करनी चाहिए जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। इसके अलावा, अगर परमेश्वर का भय मानने का मतलब बुराई से नफ़रत करना है, तो इसके विपरीत, हम यह भी कह सकते हैं कि परमेश्वर का भय मानने का मतलब अच्छाई से प्यार करना भी है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का भय मानने का मतलब अच्छाई से प्यार करना है। हम वे लोग हैं जो बुराई से नफ़रत करते हैं और अच्छाई से जुड़े हैं (रोमियों 12:9)। हम परमेश्वर की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं—मसीह यीशु में परमेश्वर द्वारा बनाई गई नई रचनाएँ (इफिसियों 2:10)। परमेश्वर ने हमें इस तरह से नया इसलिए बनाया है ताकि हम "मसीह यीशु में अच्छे काम करें" (पद 10)। इसलिए, हमें अच्छे काम करते रहना चाहिए और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए (गलातियों 6:9)। इसका कारण यह है कि अगर हम थकेंगे नहीं, तो सही समय आने पर हमें इसका फल ज़रूर मिलेगा (पद 9)।

एक ईश्वरीय परिवार वह है जो मसीह-केंद्रित हो—एक ऐसा परिवार जो परमेश्वर का भय मानता हो। जो परिवार परमेश्वर का भय मानता है, वह बुराई से नफ़रत करता है, अच्छाई से प्यार करता है, और सक्रिय रूप से भलाई के काम करता है। हमें अच्छे काम करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

दूसरी बात, एक ईश्वरीय परिवार ज़रूरतमंदों को देने के मामले में बहुत उदार होता है।

आज के पाठ के बीच के हिस्से पर ध्यान दें, प्रेरितों के काम 10:2: "...लोगों को उदारता से दान देता था..." कुरनेलियुस और उसका परिवार सच्ची ईश्वरीयता के दो पहलुओं को दर्शाते हैं: परमेश्वर का भय मानना

(ऊर्ध्वमुखी), और लोगों से प्यार करना (क्षैतिज)। सच्ची ईश्वरीयता—ठीक एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह—के लिए परमेश्वर से प्यार और अपने पड़ोसी से प्यार, दोनों ही ज़रूरी हैं। सिक्के का एक पहलू है परमेश्वर का भय मानना; और दूसरा पहलू है अपने पड़ोसी की परवाह करना। तो फिर, सच्ची ईश्वरीयता का असली मतलब क्या है? याकूब 1:27 पर ध्यान दें: "परमेश्वर, जो हमारा पिता है, उसके सामने शुद्ध और निर्दोष धर्म यह है: अनाथों और विधवाओं की मुसीबत में उनकी देखभाल करना, और खुद को दुनिया की बुराइयों से बचाकर रखना।" सच्ची ईश्वरीयता—जो परमेश्वर पिता की नज़रों में शुद्ध और निर्दोष है—में अनाथों और विधवाओं की मुसीबत में उनकी देखभाल करना शामिल है। फिर भी, दूसरों की परवाह करते हुए भी, एक सच्चा ईश्वरीय व्यक्ति—परमेश्वर के प्रति आदर भाव के कारण—खुद को भी दुनिया की बुराइयों से बचाकर रखता है। कुरनेलियुस सचमुच एक बहुत ही धर्मपरायण व्यक्ति था। परमेश्वर का भय मानने और अपने पड़ोसियों को उदारता से मदद देने के कारण उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई, और उसे "पूरे यहूदी राष्ट्र" से प्रशंसा मिली (प्रेरितों के काम 10:22)। हमें भी खुद को दान-पुण्य के कार्यों में समर्पित करना चाहिए। न केवल हमारे अपने घर-परिवार, बल्कि ईश्वर का घर—यानी चर्च—को भी ईश्वर के भय में रहते हुए अपने पड़ोसियों की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए; और समाज में हाशिए पर पड़े लोगों की देखभाल करने तथा उन्हें सहायता पहुँचाने के लिए मिलकर प्रयास करना चाहिए। ईश्वर की दृष्टि में यही सच्ची ईश्वरीयता है।

तीसरी और आखिरी बात, एक ईश्वरीय परिवार हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

कृपया आज के शास्त्र-वचन के पिछले हिस्से पर ध्यान दें, प्रेरितों के काम 10:2: “...जो लगातार परमेश्वर से प्रार्थना करता था।” कुरनेलियुस यहूदी प्रार्थना-रीतियों के अनुसार लगातार प्रार्थना करता था। यहूदी रीति यह थी कि दिन में दो बार (सुबह 9:00 बजे और दोपहर 3:00 बजे) या दिन में तीन बार (सुबह 9:00 बजे, दोपहर 12:00 बजे [मध्याह्न], और दोपहर 3:00 बजे) प्रार्थना की जाए। दूसरे शब्दों में, कुरनेलियुस ने एक अनुशासित और नियमित प्रार्थना-जीवन बनाए रखा। इसके अलावा, जो बात सचमुच असाधारण है, वह यह तथ्य है कि कुरनेलियुस की प्रार्थनाएँ और दान-पुण्य के काम परमेश्वर तक पहुँचे और उन्हें परमेश्वर ने याद रखा। वचन 4 पर ध्यान दें: “...स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, ‘तुम्हारी प्रार्थनाएँ और गरीबों को दिए गए तुम्हारे दान परमेश्वर के सामने एक यादगार भेंट के रूप में पहुँचे हैं।’” यहाँ, हम देख सकते हैं कि प्रार्थना का जीवन और दान-पुण्य के काम

एक-दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। प्रार्थना और दान के बीच यह जुड़ाव यह दर्शाता है कि प्रार्थना तभी सचमुच धर्मी बनती है, जब वह अच्छे कामों पर आधारित हो।

जो लोग परमेश्वर का आदर करते हैं, वे ही प्रार्थना करते हैं। हमें एक नियमित और अनुशासित प्रार्थना-जीवन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, हमें परमेश्वर को जीवंत प्रार्थनाएँ अर्पित करनी चाहिए—ऐसी प्रार्थनाएँ जो जोशपूर्ण और सजीव हों। आदर-भाव से भरे हृदय के साथ परमेश्वर की ओर बढ़ते हुए, हमें साथ ही साथ अपने पड़ोसियों की ओर भी बढ़ना चाहिए, उनसे प्रेम करने और दान-पुण्य के कामों में शामिल होने का प्रयास करना चाहिए। हमारे प्रार्थना-जीवन के साथ-साथ अच्छे काम भी होने चाहिए।

जैसे-जैसे हम मई—यानी 'परिवार के महीने'—को मना रहे हैं, हमने कुरनेलियुस के परिवार पर विचार किया है, जिसे शास्त्र एक ईश्वरीय परिवार के आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु आपके और मेरे परिवारों को भी कुरनेलियुस के परिवार की तरह ही ईश्वरीय परिवार के रूप में स्थापित करें। प्रभु हमें ऐसे परिवारों के रूप में बनाएँ जो परमेश्वर का आदर करते हैं, जो दान-पुण्य के कामों के द्वारा अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं, और जो बिना रुके प्रार्थना करते हैं। हमारे परिवार प्रभु पर केंद्रित हों, और इस पूरे संसार में यीशु मसीह की सुगंध फैलाते रहें।

हमें उस आत्म-संतुष्टि से बेहद सावधान रहना चाहिए, जो हमें यह मानने पर मजबूर कर देती है कि हमारे परिवार और कलीसियाएँ पूरी तरह से सुरक्षित और अभेद्य हैं।

यरूशलेम में रहने वाले यबूसी लोग इस बात को लेकर इतने आश्वस्त थे कि उनका किला दाऊद और उसकी सेना के आक्रमण से पूरी तरह सुरक्षित है, कि जब दाऊद अपनी सेना लेकर उन पर हमला करने पहुँचा, तो उन्होंने बड़े साहस के साथ उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा: “तुम यहाँ कभी प्रवेश नहीं कर पाओगे! यहाँ तक कि अंधे और लंगड़े लोग भी तुम्हें बाहर ही रोक लेंगे!” (2 शमूएल 5:6)। फिर भी, दाऊद और उसकी सेना ने यबूसियों पर हमला किया और सिय्योन के किले पर कब्ज़ा कर लिया (पद 7)। इस अंश से हमें यह सीख मिलती है कि हमें उस घमंड के प्रति अत्यधिक सतर्क रहना चाहिए, जिसके चलते हम यह मान बैठते हैं कि हमारे परिवार और कलीसियाएँ शैतान और उसकी शक्तियों के आक्रमण का सामना करने के लिए बहुत अधिक मज़बूत हैं; इसके विपरीत, हमें हमेशा सतर्क और आत्म-संयमित रहना चाहिए (1 पतरस 5:8), और परमेश्वर के वचन—जो कि आत्मा की तलवार है (इफिसियों 6:17)—को हमेशा तेज़ और धारदार रखना चाहिए, ताकि हम शैतान और उसकी कुटिल योजनाओं के विरुद्ध प्रभावी ढंग से डटे रह सकें (इफिसियों 6:11; याकूब 4:7)।

जब हम लौटते हैं, तो वह मान जाते हैं!

“शायद वे सुनेंगे और हर कोई अपने बुरे रास्ते से मुड़ जाएगा। तब मैं मान जाऊँगा और उन पर वह विपत्ति नहीं लाऊँगा जो मैंने उनके बुरे कामों के कारण उनके लिए सोची है... इसलिए अब, अपने तरीकों और अपने कामों को सुधारो और अपने परमेश्वर यहोवा की आवाज़ का पालन करो। तब यहोवा मान जाएगा और तुम पर वह विपत्ति नहीं लाएगा जिसकी घोषणा उसने तुम्हारे विरुद्ध की है” (यिर्मयाह 26:3, 13)।

माता-पिता का दिल हमेशा उस दिन का इंतज़ार करता है जब घर छोड़कर गया बच्चा आखिरकार लौट आए। इसलिए, माता-पिता हर दिन उस बच्चे के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, इस उम्मीद में इंतज़ार करते रहते हैं कि वे वापस आ जाएँगे। इसका एक अद्‌भुत बाइबिल संबंधी उदाहरण लूका 15 (पद 11–32) में “उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत” में मिलता है। इस दृष्टांत में, पिता ने अपने उड़ाऊ छोटे बेटे के लौटने का धैर्यपूर्वक इंतज़ार किया—भले ही बेटे ने विरासत में मिले अपने हिस्से की सारी संपत्ति जमा कर ली थी और एक दूर देश की यात्रा पर चला गया था (पद 12–13; पद 20 में इंतज़ार किया)। फिर, जब छोटा बेटा—गरीबी में फँसने के बाद (पद 13–17)—अपने पापों का पश्चाताप करते हुए अपने पिता के पास लौटा, तो पिता ने उसे दूर से ही घर लौटते हुए देख लिया। करुणा से भरकर, वह दौड़कर बाहर आया, अपने बेटे के गले लग गया, और उसे चूमा (पद 20)। इसके अलावा, पिता ने अपने सेवकों को निर्देश दिया कि वे सबसे बढ़िया वस्त्र लाएँ और उसे अपने बेटे को पहनाएँ, उसकी उंगली में अंगूठी और पैरों में चप्पल पहनाएँ; उसने उनसे यह भी कहा कि वे पाला-पोसा हुआ बछड़ा लाएँ, उसे काटें, और वे सब मिलकर खाएँ और जश्न मनाएँ (पद 22–23)। इसका कारण यह था कि पिता ने अपने बेटे को खो दिया था लेकिन उसे वापस पा लिया था (उसे फिर से ढूँढ़ लिया था)—क्योंकि वह मर गया था और अब फिर से जीवित हो गया है (पद 24)। अब तक, जब भी मैंने उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत पर विचार किया, तो मैंने हमेशा—

पिता के दृष्टिकोण से—यह मान लिया कि जिस बेटे को लौटने की ज़रूरत थी, वह केवल छोटा बेटा था जिसने घर छोड़ा था। हालाँकि, आज परमेश्वर के वचन पर मनन करते हुए—खासकर यिर्मयाह 26:3 और 13 पर—मेरे मन में यह विचार आया कि शायद, उस दृष्टांत में जिस बेटे को सचमुच लौटने की ज़रूरत थी, वह असल में बड़ा बेटा था। मैं इस नतीजे पर इसलिए पहुँचा क्योंकि जहाँ छोटे बेटे ने अपने पाप को स्वीकार किया, पश्चाताप किया, और अपने घर तथा अपने पिता के पास लौट आया, वहीं बड़े बेटे ने—अपने भाई के लौटने पर—अपने पिता की खुशी में शामिल होने के बजाय, अपना गुस्सा अपने पिता पर निकालने का पाप किया (पद 28–30)। विशेष रूप से, छोटा बेटा पश्चाताप भरे दिल के साथ अपने पिता के पास लौटा; उसने एक विनम्र रवैया और अनुग्रह की भावना अपनाई, और असल में यह कहा, "मैंने पाप के सिवा कुछ नहीं किया है" (पद 18–21)। इसके विपरीत, बड़ा बेटा अपने पिता से दूर ही रहा, और उसने "स्वयं को धर्मी मानने" का एक घमंडी रवैया दिखाया—यानी अपनी ही खूबियों के आधार पर किसी चीज़ पर अपना हक समझने की भावना—मानो वह कह रहा हो, "मैंने धर्म के सिवा कुछ नहीं किया है" (पद 29)। इसी कारण से, मेरा मानना है कि जिस व्यक्ति को सचमुच पिता के पास लौटने की ज़रूरत थी, वह बड़ा बेटा था।

आज के अंश—यिर्मयाह 26:3—को देखते हुए, हम पाते हैं कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यिर्मयाह को यह निर्देश दिया: "यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा हो, और यहूदा के नगरों के उन सब लोगों से जो यहोवा के भवन में उपासना करने आते हैं, वे सब बातें कह जो मैं तुझे कहने की आज्ञा देता हूँ; एक भी बात मत छोड़ना" (पद 2)। फिर परमेश्वर ने इस आज्ञा के पीछे के उद्देश्य को इस प्रकार स्पष्ट किया: "यहोवा के भवन के आँगन में खड़ा हो, और यहूदा के नगरों के उन सब लोगों से जो यहोवा के भवन में उपासना करने आते हैं, वे सब बातें कह जो मैं तुझे कहने की आज्ञा देता हूँ; एक भी बात मत छोड़ना" (पद 3)। यहाँ, मैंने परमेश्वर के उद्देश्य के दो अलग-अलग पहलुओं को पहचाना है। पहला उद्देश्य यह है कि परमेश्वर—भविष्यवक्ता यिर्मयाह के माध्यम से उन लोगों से बात करते हुए जो उसके मंदिर में उपासना करने आते हैं—यह सुनिश्चित करे कि वे उसके वचन को सुनें और अपने बुरे मार्गों से फिर जाएँ। दूसरा उद्देश्य यह है कि परमेश्वर उन पर विपत्ति लाने के अपने इरादे को टाल दे (पद 3)। संक्षेप में एक ही वाक्य में कहें तो: परमेश्वर का उद्देश्य यहूदा के लोगों पर आने वाली उस विपत्ति को टालना है, जिसे वे उन पर लाने वाले थे; और ऐसा वे तब करेंगे जब लोग अपने बुरे रास्तों से मुड़ जाएँगे।

जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे यह विचार आया कि शायद, ठीक इसी क्षण, परमेश्वर कलीसिया के बाहर वालों के लौटने की उतनी इच्छा नहीं कर रहे हैं, बल्कि *हमसे*—यानी कलीसिया के भीतर वालों से—लौटने को कह रहे हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर शायद इस समय *हमें*—जो प्रभु के दिन आराधना करने के लिए उनके मंदिर में जाते हैं—उनके पास लौटने के लिए बुला रहे हैं (यिर्मयाह 7:2; 26:2)। वे हमसे कहाँ से लौटने को कह रहे हैं? ठीक उसी "बुरे रास्ते" से (पद 2)। जब मैं "उस बुरे रास्ते" की इस अवधारणा को कलीसिया के भीतर रहने वाले हम मसीहियों पर लागू करता हूँ, तो मेरा मानना है कि इसमें कम से कम दो विशिष्ट बातें शामिल हैं। ये दो "बुरे रास्ते" हैं—हमारी मूर्तिपूजा और हमारा दुचित्ता जीवन। पहली बात, जब मैं अपनी मूर्तिपूजा पर विचार करता हूँ, तो तीन बातें मेरे मन में आती हैं—ऐसी बातें जिन्हें हम परमेश्वर से भी ज़्यादा प्यार करते हैं। वे हैं—पैसा, विपरीत लिंग के लोग, और अपना निजी सम्मान। फरीसियों की तरह, हम भी इस समय पैसे से बहुत ज़्यादा लगाव रखते हैं (लूका 16:14)। इसके अलावा, हम प्रभु से ज़्यादा विपरीत लिंग के लोगों से प्यार करते हैं; सच तो यह है कि हममें से जो लोग पहले से ही विवाहित हैं, वे भी अपना प्यार विपरीत लिंग के दूसरे लोगों की ओर मोड़ रहे हैं। अंत में, हम इस समय परमेश्वर के पवित्र नाम से कहीं ज़्यादा अपने निजी सम्मान को महत्व देते हैं। परिणामस्वरूप, भले ही इस समय परमेश्वर के पवित्र नाम का अपमान हो रहा है (यहेजकेल 20:39; 34:16; 36:21–23; 43:7–8), फिर भी हम उनके नाम की तुलना में अपने नाम को ही ज़्यादा संजोकर रखते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारा दुष्ट मार्ग—यानी हमारा दुचित्ता जीवन—दो स्वामियों की सेवा करने की कोशिश करने में निहित है। ठीक इसी क्षण, हम परमेश्वर और धन—दोनों की सेवा करने का प्रयास कर रहे हैं (मत्ती 6:24; लूका 16:13)। यदि हम सचमुच परमेश्वर से प्यार करते, तो हमें धन से घृणा करनी चाहिए थी; फिर भी, जब हमारे होंठ कहते हैं, "हम परमेश्वर का आदर करते हैं" (यशायाह 29:13; मत्ती 15:8; मरकुस 7:6) और "हम प्रभु से प्रेम करते हैं," तब भी हमारे दिल पैसे के मोह में डूबे रहते हैं (1 तीमुथियुस 6:10)। इसके अलावा, जब हम सब्त के दिन परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रभु के भवन में जाते हैं, तो हमारे होंठ ऐसी स्तुति गाते हैं, "प्रभु यीशु से बढ़कर कोई भी चीज़ कीमती नहीं है; इस दुनिया के मान-सम्मान के बदले उनका सौदा नहीं किया जा सकता" (New Hymnal 94, "Nothing Is More Precious Than The Lord Jesus," पद 2); फिर भी, हमारे दिलों में, हम यीशु के नाम से कहीं ज़्यादा अपने नाम को महत्व देते हैं। यहाँ तक कि जब हम रविवार की आराधना के दौरान गाते हैं, प्रार्थना करते हैं, और ज़ुबान से प्रभु के प्रति अपने प्रेम का इज़हार करते

हैं, तब भी हमारे दिल उनसे भटककर किसी वेश्या के पीछे भागने और उससे प्रेम करने लगते हैं (भजन संहिता 73:27; नीतिवचन 5:20; 7:8)। हम जैसे लोगों से—जो हर हफ़्ते परमेश्वर के भवन में केवल ज़ुबान से आराधना करने आते हैं, लेकिन जिनके दिल उनसे दूर भटक जाते हैं; जो पवित्र स्थान से बाहर निकलते ही, परमेश्वर से ज़्यादा मूर्तियों से प्रेम करते हैं और उन्हें पाने की चाह रखते हैं, और उनके साथ घनिष्ठता से रहते हैं—परमेश्वर अब पवित्रशास्त्र के माध्यम से सीधे बात करते हैं। परमेश्वर का वह वचन यह है: "इसलिए अब अपने चाल-चलन और कामों को सुधारो, और अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानो; तब यहोवा उस विपत्ति से जो उसने तुम पर डालने की ठानी है, पछताएगा" (यिर्मयाह 26:13)। परमेश्वर हमें अपने चाल-चलन और कामों को सुधारने के लिए बुला रहे हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमसे कह रहे हैं कि हम अपने बुरे चाल-चलन और कामों में सुधार करें (पद 13, NIV)। परमेश्वर ने यिर्मयाह 7:3 में ही हमें निर्देश दिया था कि हम अपने चाल-चलन और कामों को सही करें—यानी, उनमें सुधार करें—और अब, यिर्मयाह 26:13 के आज के पाठ में, परमेश्वर एक बार फिर हमें अपने चाल-चलन और कामों में सुधार करने के लिए बुला रहे हैं। दोस्तों, "सुधार" असल में क्या है? सुधार *हमेशा* "पश्चाताप" पर आधारित होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, पश्चाताप के बिना कोई सुधार नहीं हो सकता। यदि हम परमेश्वर के वचन के अनुसार अपने बुरे, मूर्तिपूजक चाल-चलन और अपने कपटपूर्ण कामों में सचमुच सुधार करना चाहते हैं, तो हमें पश्चाताप करना ही होगा। हमें अपनी मूर्तिपूजा और अपने दोहरे मन वाले जीवन के पापों को पहचानना होगा; हमें इन पापों को स्वीकार करना होगा, उनका इकरार करना होगा और हमें पश्चाताप करना होगा। हमें वापस लौटना होगा। हमें अपनी मूर्तिपूजा और अपने कपटपूर्ण जीवन को त्यागकर परमेश्वर की ओर लौटना होगा। उस 'उड़ाऊ पुत्र' (Prodigal Son) की तरह, हमें भी अपने स्वर्गीय पिता के पास लौटना होगा। जब हमारे बीच इस प्रकार का सच्चा पश्चाताप होगा, तब सच्ची "बहाली" (restoration) होगी। इसके अलावा, सच्ची "मेल-मिलाप" (reconciliation) भी होगी—न केवल परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में, बल्कि हमारे पड़ोसियों के साथ हमारे रिश्तों में भी। जब यह पश्चाताप, बहाली और मेल-मिलाप मौजूद होंगे, तब सच्चा "सुधार" (reformation) होगा; और जब सच्चा सुधार हमारे बीच जड़ पकड़ लेगा, तब कलीसिया एक वास्तविक "पुनरुद्धार" (revival) का अनुभव करेगी—एक ऐसा पुनरुद्धार जिसे स्वयं परमेश्वर लेकर आएँगे।

मैं इस धर्मग्रंथ-मनन के समय को समाप्त करना चाहूँगा। जब मैं आज के पाठ—यिर्मयाह 26:3 और 13—पर मनन कर रहा था, तो मुझे योना की पुस्तक की याद आई। यदि हम योना 3:10 को देखें, तो हम पाते हैं

कि परमेश्वर ने नीनवे के राजा और लोगों को देखा—विशेष रूप से, उन्होंने देखा कि वे अपने बुरे मार्गों से फिर गए थे—और उनका मन पिघल गया; परिणामस्वरूप, उन्होंने उन पर वह विपत्ति नहीं डाली जिसकी घोषणा उन्होंने की थी कि वे उन पर डालेंगे। दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ता योना के माध्यम से दिए गए संदेश को सुनकर—"चालीस दिनों में नीनवे उलट दिया जाएगा" (पद 4)—नीनवे के लोगों ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उपवास की घोषणा की, और, सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, सबने टाट ओढ़ लिया (पद 5)। नीनवे के राजा ने भी वैसा ही किया, और एक आदेश जारी किया जिसमें नीनवे के सभी लोगों को परमेश्वर की दुहाई देने और अपने बुरे मार्गों तथा अपने हाथों से किए गए अत्याचारों से फिर जाने का निर्देश दिया गया था (पद 8)। नीनवे के राजा के इस प्रकार कार्य करने का कारण यह आशा थी कि शायद परमेश्वर का मन पिघल जाए, उनका प्रचंड क्रोध शांत हो जाए, और वे नीनवे के लोगों को विनाश से बचा लें (पद 9)। परिणामस्वरूप, यह देखकर कि वे अपने बुरे मार्गों से फिर गए थे, परमेश्वर का मन पिघल गया और उन्होंने उन पर वह विपत्ति नहीं डाली जिसकी घोषणा उन्होंने की थी कि वे उन पर डालेंगे। संक्षेप में, क्योंकि नीनवे के लोग अपने बुरे मार्गों से फिर गए थे, इसलिए परमेश्वर ने उस विपत्ति के विषय में अपना विचार बदल दिया जिसकी घोषणा उन्होंने उन पर लाने की की थी (पद 10)। हालाँकि, परमेश्वर का सेवक, भविष्यवक्ता योना, इससे बहुत अप्रसन्न हुआ और क्रोधित हो गया (4:1)। परिणामस्वरूप, उसने परमेश्वर से यह प्रार्थना भी की, "हे यहोवा, अब कृपया मेरा प्राण ले ले; क्योंकि मेरे लिए जीने से मर जाना ही बेहतर है" (पद 3)। तब भविष्यवक्ता योना नीनवे नगर को छोड़कर उसके पूर्व की ओर जा बैठा, वहाँ अपने लिए एक झोपड़ी बनाई, और यह देखने के लिए प्रतीक्षा करने लगा कि नगर का क्या होगा (पद 5)। दूसरे शब्दों में, योना यह देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था कि क्या परमेश्वर वास्तव में नीनवे पर विपत्ति लाएँगे। साफ़ तौर पर—जैसा कि योना बौद्धिक रूप से जानता था—परमेश्वर एक कृपालु और दयालु परमेश्वर है, जो जल्दी क्रोधित नहीं होता और जिसकी स्थिर प्रेम में कोई कमी नहीं है, जो विपत्ति भेजने से पीछे हट जाता है (पद 2); इस प्रकार, जब उसने देखा कि नीनवे के लोग अपने बुरे रास्तों से मुड़ गए हैं, तो वह नरम पड़ गया और उसने शहर पर वह विपत्ति नहीं लाई (3:10)। फिर भी, भविष्यवक्ता योना—अपनी मर्ज़ी और हठ के अनुसार काम करते हुए—अभी भी नीनवे के विनाश को देखने की इच्छा रखता था। लूका 15 में पाए जाने वाले 'उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत' में बड़े भाई की तरह ही, भविष्यवक्ता योना को इस बात से बहुत नाराज़गी थी कि नीनवे के लोग अपने बुरे रास्तों से मुड़ गए थे और परमेश्वर के पास लौट आए थे। परिणामस्वरूप, वह इतना क्रोधित हो गया कि उसने

परमेश्वर से यहाँ तक कह दिया कि वह उसकी जान ले ले (योना 4:3–4)। जहाँ नीनवे के लोग—अश्शूर के गैर-यहूदी राष्ट्र की राजधानी के लोग—भविष्यवक्ता योना के माध्यम से परमेश्वर का वचन सुना, उसका पालन किया, और अपने बुरे रास्तों से मुड़कर परमेश्वर के पास लौट आए, वहीं योना स्वयं—परमेश्वर का सेवक और एक यहूदी—जिसने पहले ही एक बार परमेश्वर के वचन की अवज्ञा की थी (1:2–3), उसने एक बार फिर अवज्ञा की, जब उसने अपनी मर्ज़ी को परमेश्वर की मर्ज़ी के अधीन करने से इनकार कर दिया। हम पादरियों के लिए, जो इस मामले में योना की तरह हैं, परमेश्वर पुकार रहा है, और हमसे कह रहा है कि हम पश्चाताप करें और उसके पास लौट आएँ। इसके अलावा, हम मसीहियों के लिए, जो 'उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत' में बड़े भाई जैसे हैं, परमेश्वर उसी तरह पुकार रहा है, और हमसे कह रहा है कि हम पश्चाताप करें और उसके पास लौट आएँ। जब हम अपने बुरे रास्तों और कामों से मुड़ते हैं और परमेश्वर पिता के पास लौट आते हैं, तो परमेश्वर पिता उन विपत्तियों को टाल देगा जिन्हें वह हम पर लाने वाला था। जब हमारे सभी चर्च अपने बुरे रास्तों और कामों में सुधार करेंगे और परमेश्वर के पास लौट आएँगे, तो वह उन विपत्तियों को टाल देगा जिन्हें वह हम पर लाने वाला था। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने अपना सारा क्रोध और वे सभी विपत्तियाँ, जिनके हम सही तौर पर हकदार थे, पहले ही अपने एकमात्र पुत्र, यीशु पर उंडेल दी हैं, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था।

(पद 1) लौट आओ, लौट आओ, तुम जिनका हृदय थका हुआ है; रास्ता सचमुच अँधेरा और बहुत ही खतरनाक है।
(पद 2) लौट आओ, लौट आओ हमारे पिता के पास, जो सूर्यास्त तक प्रतीक्षा करता है। (पद 3) लौट आओ, लौट आओ संकट की जगह से, पाप की जगह से, और धोखे की जगह से।
(पद 4) लौट आओ, घर लौट आओ, पिता के घर जहाँ सब कुछ भरपूर है।
[कोरस] तुम जिसने घर छोड़ दिया है, जल्दी आओ, लौट आओ; जल्दी आओ, लौट आओ।

[नया भजन 525, “लौट आओ, लौट आओ”]

परिवार के बारे में सबक (2)

1. परिवार एक स्पिरिचुअल लड़ाई का मैदान है।

2. शैतान लगातार हमारे परिवारों पर हमला कर रहा है।

3. शादी के रिश्ते में अनबन देखकर, शैतान पति-पत्नी के बीच छोटी-मोटी लड़ाइयों को भी बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बता सकता है, और कपल को पूरी तरह से मुश्किल में डाल सकता है।

4. पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग होने ही वाले हैं; जबकि भगवान चाहते हैं कि ये अंतर कपल को एक-दूसरे को *पूरा* करने दें, शैतान उन्हें खुद की *तुलना* करने के लिए उकसाता है—या तो एक-दूसरे से या दूसरे "परफेक्ट" दिखने वाले कपल्स से—जिससे हम नाखुश महसूस करते हैं और शिकायत करते हैं।

5. शैतान कपल्स को एक-दूसरे की कमियों को बढ़ाने और एक-दूसरे की खूबियों को कम आंकने के लिए उकसाता है, जिससे वे अपने पार्टनर की खूबियों को मामूली समझने लगते हैं।

6. पति का एक काम अपनी पत्नी (और बच्चों) को दोनों तरह के माता-पिता से बचाना है। खास तौर पर, उसे अपने परिवार को मूर्तिपूजा, अविश्वास और उनके माता-पिता के गैर-बाइबिल या दुनियावी असर से बचाना चाहिए।

7. पत्नी का एक फ़र्ज़ है कि वह अपने माता-पिता के सामने अपने पति का समझदारी से साथ दे और उसका आदर करे; लेकिन, उसे अपने माता-पिता (खासकर अपनी माँ) को खुद को मैनिपुलेट नहीं करने देना चाहिए।

8. माता-पिता का एक बड़ा फ़र्ज़ है कि वे अपने शादीशुदा बच्चों को जाने दें। जो माता-पिता अपने बच्चों से खराब रिश्तों से जुड़े रहते हैं—अलग-अलग तरीकों से, खासकर साइकोलॉजिकल और इमोशनली—उन्हें अपने बच्चों के शादीशुदा रिश्ते की खातिर जानबूझकर उन रिश्तों को तोड़ देना चाहिए।

9. जो माता-पिता अलग-अलग तरीकों से "बीमार" हैं, वे अनजाने में अपने प्यारे बच्चों के मन, आत्मा और भावनाओं को इन्फेक्ट कर सकते हैं; यह न केवल बच्चों के शादीशुदा रिश्तों पर बहुत बुरा असर डालता है, बल्कि, इसके बुरे असर उनके पोते-पोतियों तक भी पहुँचते हैं।

10. प्रभु पर विश्वास के ज़रिए—जिन्होंने पहले ही शैतान पर जीत हासिल कर ली है—हमें पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में ईमानदारी से अपनी फ़ैमिली मिनिस्ट्री करनी चाहिए; इसके अलावा, जीत के भरोसे के साथ, हमें एक जुझारू फ़ैमिली लाइफ़ जीनी चाहिए—अपने घर पर हमला करने वाले दुश्मन से लड़ते रहना चाहिए।

(उन साथी विश्वासियों के बारे में सोचते हुए जिनसे मैं पहले ही मिल चुका हूँ, जो अभी 2022 "टू कोरिया" इंटरनेट मिनिस्ट्री के ज़रिए आध्यात्मिक लड़ाई में लगे हुए हैं)

पारिवारिक सेवा, निस्संदेह, एक आध्यात्मिक युद्ध है!

प्रभु चाहते हैं कि हमारा परिवार इस धरती पर ही स्वर्ग बन जाए, लेकिन शैतान इसे एक जीता-जागता नरक बनाने की फिराक में रहता है।

प्रभु ने हमें स्वर्गीय आज्ञाएँ दी हैं—कि हम परमेश्वर से प्रेम करें और अपने पड़ोसियों से भी; इसके विपरीत, शैतान ने एक नारकीय आज्ञा जारी की है—कि हम एक-दूसरे से घृणा करें।

हमारा दायित्व है कि हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें—कि हमारा पूरा परिवार एक मन और एक चित्त होकर परमेश्वर से प्रेम करे, और परमेश्वर के उसी प्रेम के माध्यम से, एक-दूसरे से भी प्रेम करे।

तथापि, आज भी शैतान लगातार हम पर आक्रमण करता है और अनगिनत बार हमें प्रलोभन देता है; वह हमें प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन करने के लिए उकसाता है और घृणा के बीज बोकर हमें एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने का प्रयास करता है।

यह, निस्संदेह, एक आध्यात्मिक युद्ध है!

आध्यात्मिक युद्ध में संलग्न एक परिवार

“दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, ‘क्या मैं पलिश्तियों के विरुद्ध चढ़ाई करूँ? क्या तू उन्हें मेरे हाथ में सौंप देगा?’ और प्रभु ने उससे कहा, ‘जा, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में सौंप दूँगा।’” (1 इतिहास 14:10)।

जब हम "परिवार" शब्द के बारे में सोचते हैं, तो हम अक्सर एक खुशहाल घर का सपना देखते हैं। एक सचमुच खुशहाल परिवार—जो परमेश्वर के वचन का आज्ञाकारी हो—वह परिवार है जहाँ पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है; पत्नी अपने पति का आदर करती है और उसके अधीन रहती है; बच्चे प्रभु में अपने माता-पिता का सम्मान और आज्ञापालन करते हैं; और माता-पिता अपने बच्चों को क्रोध नहीं दिलाते, बल्कि इसके विपरीत, उन्हें प्रभु के अनुशासन और शिक्षा के साथ पालते हैं। हालाँकि, आज हमारे परिवार कैसे दिखते हैं? परमेश्वर के वचन का पालन करने के बजाय, आज हमारे परिवार अवज्ञा में जी रहे हैं। पति अपनी पत्नियों से प्रेम नहीं करते; पत्नियाँ अपने पतियों की उपेक्षा करती हैं और उनके अधीन रहने से इनकार करती हैं; बच्चे अपने माता-पिता के प्रति कोई कृतज्ञता नहीं दिखाते—इसके बजाय उनके विरुद्ध विद्रोह करते हैं—और माता-पिता अपने बच्चों को क्रोध दिला रहे हैं। अपने घरों के मुखिया के रूप में—पतियों और पिताओं के रूप में—हम परमेश्वर के वचन का पालन करने में असफल होकर, उसकी अवज्ञा कर रहे हैं, क्योंकि हम अपनी पत्नियों और बच्चों को उसके वचन के अनुसार नहीं पाल रहे हैं। परिणामस्वरूप, हम वर्तमान में उस खुशी का आनंद लेने में असमर्थ हैं जो परमेश्वर हमारे घरों के भीतर हमारे लिए चाहता है। एक-दूसरे को क्षमा करने से इनकार करके, हम प्रभावी रूप से पापों की क्षमा के आशीर्वाद को अस्वीकार कर रहे हैं—एक ऐसा अनुग्रहकारी उपहार जो परमेश्वर ने यीशु

मसीह के माध्यम से हमें प्रदान किया है। हमारे परिवार वर्तमान में आध्यात्मिक लड़ाई हार रहे हैं। परिणामस्वरूप, दुनिया के लोग हमारे मसीही परिवारों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें आध्यात्मिक युद्ध में संलग्न होना चाहिए। इसलिए, 1 इतिहास 14:8–17 में पाए जाने वाले अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं आज—"आध्यात्मिक युद्ध में संलग्न एक परिवार" शीर्षक के तहत—यह पता लगाना चाहूँगा कि हमारे मसीही परिवारों को इस आध्यात्मिक लड़ाई का सामना कैसे करना चाहिए। मेरी यह प्रार्थना है कि हमारे परिवार आध्यात्मिक युद्ध में विजयी हों, और इस प्रकार मसीह-केंद्रित घरों के रूप में स्थापित हों, जिन्हें दुनिया विस्मय और आदर की दृष्टि से देखे।

सबसे पहले, हमारे परिवारों को अपने विरोधियों के "विरुद्ध खड़ा होना" चाहिए। कृपया 1 इतिहास 14:8 देखें: "जब पलिश्तियों ने सुना कि दाऊद का अभिषेक सारे इस्राएल पर राजा होने के लिये किया गया है, तब सब पलिश्ती दाऊद को ढूँढ़ने के लिये चढ़ आए; परन्तु दाऊद ने यह सुनकर उनका सामना करने के लिये कूच किया।" यह खबर कि दाऊद का अभिषेक सारे इस्राएल पर राजा होने के लिये किया गया था, निस्संदेह यहूदा के उन सभी लोगों के लिये आनन्द का समाचार था जो उसके पीछे चलते थे; परन्तु, पलिश्तियों के लिये यह किसी भी तरह से स्वागत योग्य समाचार नहीं था। परिणामस्वरूप, पलिश्ती दाऊद को ढूँढ़ने के लिये चढ़ आए (पद 8) और उन्होंने पहले ही रपाईम की तराई पर आक्रमण कर दिया था (पद 9)। यह समाचार सुनकर, दाऊद उनका सामना करने के लिये निकल पड़ा (पद 8)।

हमें भी शैतान और उसके चेले-चपाटों के विरुद्ध खड़े होने के लिये आगे बढ़ना चाहिए। परमेश्वर हमारे परिवारों पर जो आशीषें बरसाता है, उस समाचार से उन्हें ज़रा भी प्रसन्नता नहीं होती। इसलिये, जब कभी परमेश्वर हमारे घरों पर अपनी कृपा बरसाता है, तो वे हम पर आक्रमण कर देते हैं। परिणामस्वरूप, हमें उनके आक्रमणों के प्रति सतर्क और तैयार रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जब वे आक्रमण करते हैं, तो हमें उनके विरुद्ध खड़े होना चाहिए। विशेष रूप से, शैतान हमारे परिवार के सदस्यों को निशाना बनाता है, उन्हें आत्मिक रूप से शक्तिहीन बनाने और उन्हें परमेश्वर के वचन की अवज्ञा करने की ओर ले जाने का प्रयास करता है। वह पतियों को अपनी पत्नियों से घृणा करने के लिये, पत्नियों को अपने पतियों की उपेक्षा करने के लिये, और बच्चों को अपने माता-पिता के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये उकसाता है; इसी प्रकार, वह माता-पिता को अपने बच्चों को क्रोध दिलाने के लिये भड़काता है। परिणामस्वरूप, शैतान हमारे मसीही परिवारों को परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने

की ओर धकेलता है। फिर भी, ठीक इसी क्षण, हम एक रक्षाहीन अवस्था में रहते हैं, और शैतान के इन आक्रमणों के सामने बार-बार पराजय का सामना करते हैं। हमें शैतान के आक्रमणों से अपनी रक्षा करनी चाहिए और उनका प्रतिरोध करना चाहिए। ऐसा करने के लिये, हमें उनका सामना करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन—जो कि आत्मा की तलवार है—से स्वयं को भली-भाँति पोषित करना चाहिए और उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए, जिससे हमारी आत्मिक प्रतिरक्षा मज़बूत हो सके। इसके अतिरिक्त, हमें आत्मा की तलवार को तेज़ रखना चाहिए। केवल तभी, जब शैतान हम पर आक्रमण करेगा, हम परमेश्वर के वचन के द्वारा उसका प्रतिरोध करने में समर्थ हो पाएँगे, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था।

दूसरा, हमें—एक परिवार के रूप में—अपने परमेश्वर से परामर्श लेना चाहिए। कृपया 1 इतिहास 14:10 और 14:14 के पहले हिस्सों को देखें: "दाऊद ने परमेश्वर से पूछा: 'क्या मैं पलिश्तियों के विरुद्ध चढ़ाई करूँ? क्या तू उन्हें मेरे हाथ में सौंप देगा?' ... एक बार फिर दाऊद ने परमेश्वर से पूछा ..." दोनों ही मौकों पर, जब पलिश्तियों ने हमला किया, तो दाऊद ने परमेश्वर से पूछा कि क्या उसे उन पर हमला करने के लिए जाना चाहिए और क्या परमेश्वर उन्हें उसके हाथों में सौंप देगा। क्या यह दिलचस्प नहीं है? जहाँ शाऊल को प्रभु ने मृत्युदंड दिया "क्योंकि उसने प्रभु से नहीं पूछा था" (10:14), वहीं दाऊद—शाऊल के बिल्कुल विपरीत—बार-बार परमेश्वर की सलाह लेते हुए दिखाया गया है। परमेश्वर ने दाऊद को, जिसने उसका मार्गदर्शन चाहा था, इस तरह जवाब दिया: "जाओ, क्योंकि मैं उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दूँगा" (पद 10); और, "सीधे मत जाओ; उनके चारों ओर घूमकर बलसाम पेड़ों के सामने उन पर हमला करो। जैसे ही तुम्हें बलसाम पेड़ों की चोटियों में चलने की आवाज़ सुनाई दे, युद्ध के लिए निकल पड़ो, क्योंकि परमेश्वर पलिश्ती सेना को मारने के लिए तुम्हारे आगे-आगे गया है" (पद 14–15)। इन दोनों जवाबों में एक बात जो समान है, वह है दाऊद को जीत दिलाने का परमेश्वर का वादा। अंतर उन विशिष्ट युद्ध रणनीतियों में है जो परमेश्वर ने दाऊद को दीं। पहले युद्ध के दौरान, परमेश्वर ने दाऊद से बस इतना कहा, "जाओ" (पद 10); हालाँकि, दूसरे युद्ध के दौरान, उसे "सीधे जाने" का निर्देश देने के बजाय—जैसा उसने पहले युद्ध में किया था—उसने उसे "उनके पीछे से घूमकर जाने" और अचानक हमला करने का आदेश दिया (पद 14)। क्या यह दिलचस्प नहीं है—यह तथ्य कि परमेश्वर ने दाऊद को उसके लड़े गए दोनों युद्धों में से प्रत्येक के लिए एक अलग रणनीति दी? विशेष रूप से, दूसरे युद्ध के दौरान, परमेश्वर ने दाऊद से

कहा, “जैसे ही तुम्हें बलसाम पेड़ों की चोटियों में चलने की आवाज़ सुनाई दे, तुरंत निकल पड़ो” (पद 15)। क्या यह स्वर्गदूतों के चलने की आवाज़ थी? मुख्य बात यह है कि परमेश्वर ने घोषणा की, “मैं तुम्हारे आगे-आगे चलूँगा और पलिश्तियों की सेना को मार गिराऊँगा” (पद 15)। संक्षेप में, फिलिस्तियों के विरुद्ध युद्ध डेविड का युद्ध उतना नहीं था, जितना कि परमेश्वर का युद्ध था। और चूँकि परमेश्वर स्वयं अपनी लड़ाई लड़ रहे थे, इसलिए विजय निश्चित थी। परिणामस्वरूप, जिन मूर्तियों को फिलिस्तियों ने बाल-पेराज़ीम (पद 11) में छोड़ दिया था, उन्हें अंततः इकट्ठा करके पूरी तरह से आग में जला दिया गया (पद 12)। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि डेविड के परमेश्वर—अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर—ने फिलिस्तियों के झूठे देवताओं के विरुद्ध लड़कर और उन पर विजय प्राप्त करके, स्वयं को एकमात्र सच्चा परमेश्वर सिद्ध किया।

हमें भी परमेश्वर से पूछना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे दाऊद ने किया था। खासकर जब हम शैतान के खिलाफ आध्यात्मिक युद्ध लड़ रहे हों, तो हमें परमेश्वर की सलाह लेने की आदत डालनी चाहिए—न केवल बड़े संकटों के समय, बल्कि छोटी-से-छोटी बातों में भी। जब हम ऐसा करते हैं, तो पवित्र आत्मा—जो हमारे भीतर वास करता है—सत्य के वचन के द्वारा हमें जीत का भरोसा दिलाएगा। वास्तव में, पवित्र आत्मा ने हमारी जीत के संबंध में हमें यह भरोसे का वचन पहले ही दे दिया है। 1 कुरिन्थियों 10:13 पर नज़र डालें: “तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े जो मनुष्यों के लिए साधारण न हो; और परमेश्वर सच्चा है, वह तुम्हें तुम्हारी सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ-साथ निकलने का मार्ग भी निकालेगा, जिससे तुम उसे सह सको।” हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए जीत के इस भरोसे के वचन से लैस होकर आध्यात्मिक युद्ध में उतरना चाहिए।

तीसरी बात, हमारे परिवारों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

1 इतिहास 14:11 और 16 पर नज़र डालें: “तब वे बाल-परासीम को चढ़ गए, और दाऊद ने उन्हें वहाँ हरा दिया। तब दाऊद ने कहा, ‘परमेश्वर ने मेरे हाथ से मेरे शत्रुओं को ऐसे तोड़ डाला है जैसे पानी का बाँध टूट जाता है’; इसलिए उन्होंने उस स्थान का नाम बाल-परासीम रखा... सो दाऊद ने वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी, और उन्होंने गिबोन से लेकर गेज़र तक पलिश्तियों की सेना पर आक्रमण किया।” परमेश्वर से पूछने

और उसका उत्तर पाने के बाद, दाऊद ने आज्ञा मानी। वह अपनी सेना को बाल-परासीम तक ले गया (पद 11), और उसने "वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी थी"—अर्थात् "पलिश्तियों की सेना" पर प्रहार किया (पद 16)। क्योंकि दाऊद ने इस प्रकार परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया, इसलिए "परमेश्वर ने [उसके] हाथ से [उसके] शत्रुओं को ऐसे तोड़ डाला जैसे पानी का बाँध टूट जाता है" (पद 11), और इसके अलावा, "परमेश्वर [उसके] आगे-आगे चलकर पलिश्तियों की सेना पर प्रहार करने के लिए निकला" (पद 15)। वास्तव में, परमेश्वर ने पलिश्ती सेना पर "गिबोन से लेकर गेज़र तक" प्रहार किया (पद 16)। ठीक जैसा उसने दाऊद से वादा किया था, परमेश्वर ने उसे जीत दिलाई।

हमारे अपने परिवारों के सामने आने वाले आध्यात्मिक युद्धों में भी, केवल परमेश्वर ही हमें जीत दिला सकता है। जब परमेश्वर हमारे विरोधियों के विरुद्ध खड़ा होता है—और इस प्रकार यह सिद्ध करता है कि केवल वही सच्चा परमेश्वर है—तभी वह हमारे घरों को समस्त मूर्तियों और पापों से शुद्ध कर सकता है। हमारी भूमिका केवल इतनी है कि हम इस आत्मिक युद्ध के लिए लगन से तैयारी करें, सच्ची प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की खोज करें, और विश्वास के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करें। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से हमारे परिवारों को इस आत्मिक युद्ध में विजय प्रदान करेगा। विजय!

शैतान के हमारे परिवारों पर चालाक हमले

[2 शमूएल 13:1-3]

परिवार एक आध्यात्मिक युद्ध का मैदान है! शैतान लगातार हमारे घरों पर हमला कर रहा है। अपनी किताब *Strategy for Spiritual Warfare* में, पादरी वॉरेन वियर्सबी ने ये बातें कही हैं: “शैतान ने आदम और हव्वा के बीच फूट डालकर परिवार पर हमला किया—ठीक उसी समय जब हव्वा को आदम के आध्यात्मिक अधिकार पर भरोसा करने की ज़रूरत थी। हव्वा ने अपनी मर्ज़ी से काम किया—अपने पति की परवाह किए बिना—और ऐसा करके, उसने असल में अपने पति को भी पाप में फंसा दिया।” उन्होंने आगे कहा: “अगर ईसाई लोग परमेश्वर की मर्ज़ी की परवाह किए बिना शादी करते हैं, तो शैतान को उस घर में बिना किसी रोक-टोक के काम करने की पूरी आज़ादी मिल जाती है। अगर शादी के समय पति या पत्नी, या दोनों ही आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व होते हैं, तो शैतान को निश्चित रूप से हमले करने के लिए कोई न कोई रास्ता मिल ही जाता है। इसके अलावा, अगर शादीशुदा जोड़ा पवित्र शास्त्र की आज्ञा मानने में नाकाम रहता है—खास तौर पर अपने माता-पिता को ‘छोड़कर’ एक नया घर बसाने में नाकाम रहता है—और इसके बजाय अपने माता-पिता को अपने मामलों में दखल देने देता है, तो शैतान के लिए उस शादी पर हमला करना बहुत ही आसान हो जाता है” (वियर्सबी)। इन बातों के बारे में आपके क्या विचार हैं? मुझे लगता है कि ये ऐसी बातें हैं जिनसे कोई भी असहमत नहीं हो सकता। जैसा कि पादरी वियर्सबी ने कहा, हममें से कोई भी उत्पत्ति की किताब में दिए गए बाइबल के उस वृत्तांत से इनकार नहीं कर सकता, जहाँ शैतान ने सबसे पहले इंसान जोड़े पर अपना पहला हमला किया था (उत्पत्ति 3)। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि शैतान ने आदम और हव्वा के बीच ठीक उसी पल फूट डाली, जब हव्वा को अपने पति के आध्यात्मिक अधिकार पर निर्भर रहने की ज़रूरत थी; नतीजतन, हव्वा ने आदम से अलग होकर काम किया—उसने वर्जित फल तोड़ा और खाया—और बाद में अपने पति को भी पाप

में फंसा दिया। हालाँकि, मैं यह भी कहूँगा कि आदम भी शैतान के हमले का शिकार हुआ; अपने खुद के आध्यात्मिक अधिकार का इस्तेमाल करने में नाकाम रहने के कारण, वह प्रलोभन के आगे झुक गया और उसने अपनी पत्नी, हव्वा को उसे गुमराह करने दिया। इसके अलावा, जैसा कि पादरी वियर्सबी ने कहा है, आज कितने ही पति-पत्नी शैतान के हमले का शिकार हो रहे हैं, क्योंकि वे अपने माता-पिता को "छोड़ने" में नाकाम रहते हैं—जैसा कि पवित्र शास्त्र में आज्ञा दी गई है—और इसके बजाय अपने माता-पिता को अपने वैवाहिक जीवन में दखल देने देते हैं? खास तौर पर, कितने ही जोड़ों को ऐसे हमलों का सामना इसलिए करना पड़ता है, क्योंकि पति अपनी खुद की माँ को अपनी शादीशुदा ज़िंदगी में दखल देने की इजाज़त दे देता है? जब पति-पत्नी के बीच मनमुटाव पैदा होता है, तो शैतान छोटी-छोटी बातों को भी पकड़ लेता है और उनके झगड़ों को इतना बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है कि वे एक गंभीर वैवाहिक संकट का रूप ले लेते हैं। हालाँकि, यह स्वाभाविक है कि पति-पत्नी के विचार अलग-अलग होंगे, लेकिन प्रभु की इच्छा है कि ये अंतर *एक-दूसरे के पूरक* बनें—ताकि पति और पत्नी एक-दूसरे को पूरा कर सकें। इसके विपरीत, शैतान उन्हें एक-दूसरे से—या अन्य ऐसे जोड़ों से जो देखने में "बिल्कुल सही" लगते हैं—अपनी *तुलना* करने के लिए उकसाता है, जिससे उनके मन में असंतोष और शिकायत की भावना पैदा होती है। शैतान जोड़ों को एक-दूसरे की कमियों को बढ़ा-चढ़ाकर देखने और उनकी खूबियों को कम करके आंकने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे अपने जीवनसाथी की ताकतों को तुच्छ या महत्वहीन समझने लगते हैं।

प्रभु की इच्छा है कि हमारा घर स्वर्ग का एक छोटा सा नमूना बन जाए। इसी उद्देश्य से, उन्होंने हमें स्वर्ग की आज्ञाएँ दी हैं: यीशु की "दोहरी आज्ञा" (मत्ती 22:37, 39)। इसके अलावा, हमें इस दोहरी आज्ञा का पालन करने में सक्षम बनाने के लिए, प्रभु ने—पवित्र आत्मा के माध्यम से कार्य करते हुए—हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम उंडेल दिया है (रोमियों 5:5), जिससे हम धीरे-धीरे और निरंतर पवित्र आत्मा के फल से भरते जाते हैं: यानी प्रेम से (गलतियों 5:22)। इसलिए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इन आज्ञाओं का पालन करें और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, एक परिवार के रूप में—एक मन और एक चित्त होकर (फिलिप्पियों 1:27; 2:2)—एकजुट रहें; परमेश्वर से अपने पूरे जीवन से प्रेम करें और एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करें जैसे हम स्वयं से करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारा घर एक छोटे से स्वर्ग में बदल जाता है, और स्वर्ग के राज्य के आनंद (यूहन्ना 15:11; 1 यूहन्ना 1:4), प्रेम (भजन संहिता 33:5), और शांति (रोमियों 15:13) से भर जाता है। हालाँकि, शैतान हमारे घरों

को एक जीता-जागता नरक बनाने की इच्छा रखता है। इस उद्देश्य से, वह हमें यीशु की "दोहरी आज्ञा"—जो स्वर्ग की आज्ञा है—का उल्लंघन करने के लिए लुभाता है, और इसके बजाय हमें नरक की आज्ञा का पालन करने के लिए उकसाता है: यानी एक-दूसरे से घृणा करने के लिए (उत्पत्ति 37:5; व्यवस्थाविवरण 22:13; मत्ती 24:10; 1 यूहन्ना 2:9)। इसके अलावा, झूठ की भावना के साथ मिलकर, शैतान लगातार हमारे अंदर नफ़रत के बीज बोता रहता है (व्यवस्थाविवरण 21:17; 2 शमूएल 13:15; नीतिवचन 10:12), जो हमें अंधेरे वाले कामों में शामिल होने के लिए उकसाता है (यशायाह 29:15; यहेजकेल 8:12; इफिसियों 5:11) और हमारे परिवारों को कड़वे फल भुगतने पर मजबूर करता है (रोमियों 7:5)। नतीजतन, शैतान हमारे अंदर अपने 'नरक जैसे' घरों में लौटने के प्रति अनिच्छा पैदा कर देता है; इसके बजाय, वह हमें बाहर ही रुके रहने के लिए मजबूर करता है—या इससे भी बुरा—घर से बहुत, बहुत दूर भाग जाने की इच्छा पैदा कर देता है। वह हमें अपने परिवार के सदस्यों की तरफ देखने तक के लिए भी अनिच्छुक बना देता है। इसके अलावा, शैतान हमारे जीवनसाथी के प्रति हमारी नफ़रत को और भी ज़्यादा बढ़ा देता है। वैवाहिक बंधन में बढ़ती दरारों का फ़ायदा उठाते हुए—जो जीवनसाथी के प्रति बढ़ती इस नफ़रत से और भी गहरी हो जाती हैं (देखें नहेमायाह 4:3, जहाँ इब्रानी शब्द का अर्थ "दरार" या "खाई" है; 6:1)—शैतान हमारा ध्यान किसी दूसरे पुरुष या स्त्री की तरफ़ मोड़ देता है। आँखों की वासना और शरीर की वासना को जगाकर (1 यूहन्ना 2:16), वह हमें उस दूसरे व्यक्ति की चाहत करने के लिए उकसाता है, और अंततः हमें व्यभिचार के रास्ते पर ले जाता है। शैतान का मकसद हमारे घरों को तोड़ना और तबाह करना है, ताकि वह हमें एक "स्वर्गीय घर" बनाने से रोक सके और इसके विपरीत, हमारे घरों को नरक जैसा बना दे। यह एक आध्यात्मिक युद्ध है! घर एक आध्यात्मिक युद्ध का मैदान है! तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें इस आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए।

आज का धर्मग्रंथ का अंश—2 शमूएल 13:1–3—राजा दाऊद के परिवार की कहानी बताता है कि कैसे वह शैतान की चालाक चालों का शिकार हो गया। इस कहानी के आधार पर—विशेष रूप से 2 शमूएल के अध्याय 13 और 14 के पाठ पर—मैं परमेश्वर के वचन पर विचार करने और उससे मिलने वाले सबकों को ग्रहण करने में कुछ समय बिताना चाहूँगा, और उन तीन मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करूँगा जिन्हें हम अपने परिवारों पर भी लागू कर सकते हैं। मेरी आशा है कि, जैसे-जैसे हम इन सीखों को अपने घरों में लागू करेंगे, यह समय हमारे

लिए गंभीरता से विचार करने और प्रार्थना करने का एक अवसर बनेगा: पहला, पूरी तरह से जागरूक होकर और यह स्वीकार करके कि शैतान इस समय हमारे परिवारों पर कितनी चालाकी से हमला कर रहा है; और दूसरा, यह समझकर कि *कैसे* हम इस आत्मिक लड़ाई को प्रभावी ढंग से लड़ सकते हैं, ताकि हमारे घर सचमुच विजयी परिवारों के रूप में स्थापित हो सकें।

सबसे पहले, हमें रिश्तों के क्षेत्र में शैतान के चालाक हमलों के खिलाफ दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए—चाहे वे विपरीत लिंग के बीच हों या विवाह के भीतर।

2 शमूएल 13:1–3 का अंश इस प्रकार है: "इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबशालोम की एक सुंदर बहन थी, जिसका नाम तामार था; और दाऊद का बेटा अम्नोन उससे प्रेम करता था। अम्नोन अपनी बहन तामार के कारण इतना व्याकुल था कि वह बीमार पड़ गया; क्योंकि वह एक कुंवारी लड़की थी, और उसे लगता था कि उसके साथ कुछ भी करना असंभव है। अब अम्नोन का एक मित्र था जिसका नाम योनादाब था, जो दाऊद के भाई शिमा का बेटा था। और योनादाब एक बहुत ही बुद्धिमान [चालाक] व्यक्ति था।" सितंबर 2018 के अंतिम रविवार को अंग्रेजी-भाषा की आराधना सेवा के दौरान, मैंने उपस्थित भाइयों और बहनों से—जिनमें हाई स्कूल के छात्रों से लेकर युवा वयस्क तक शामिल थे—यह प्रश्न पूछा: "आप रिश्तों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व किसे मानते हैं, चाहे वह विपरीत लिंग के साथ हो या विवाह के भीतर?" उस समय, मुझे निम्नलिखित उत्तर मिले: (1) "विश्वास," (2) "संचार" (बातचीत), (3) "सहयोग" (सहयोगी होना), (4) "बलिदान," (5) "सम्मान," और (6) "निष्ठा।" हालाँकि, वास्तविकता में—जैसा कि परमेश्वर ने मुझे साथी विश्वासियों से मिलने और बातचीत करने का अवसर दिया है, जो अपने प्रेम संबंधों या वैवाहिक रिश्तों में संघर्ष कर रहे हैं—मैं अक्सर एक परेशान करने वाली बात देखता हूँ: ऐसे रिश्तों में "विश्वास" के अत्यधिक महत्व के बावजूद, वह विश्वास टूट चुका होता है, जिसके कारण साथी एक-दूसरे पर प्रश्न उठाते हैं, संदेह करते हैं, और यहाँ तक कि पूरी तरह से अविश्वास करने लगते हैं। इसके अलावा, यद्यपि हम सभी आम तौर पर प्रेम संबंधों और वैवाहिक रिश्तों में "संचार" की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हैं, मैं अक्सर ऐसे संघर्षों को उत्पन्न होते देखता हूँ क्योंकि पुरुष और महिलाएं अक्सर एक-दूसरे की विशिष्ट संचार शैलियों को समझने में असफल रहते हैं; इसके बजाय, वे अपने साथियों के साथ केवल अपनी

पसंदीदा विधियों के माध्यम से ही बातचीत करने पर अड़े रहते हैं। इन बातों के अलावा—और जबकि आपसी सहयोग, त्याग, सम्मान, वफ़ादारी और निष्ठा, ये सभी रिश्तों के लिए बहुत ज़रूरी तत्व हैं—असल समस्या यह है कि चालाक शैतान ऐसे हमले करता है जो इन सभी गुणों को "तोड़-मरोड़" देते हैं और उनका रूप बिगाड़ देते हैं। ऐसा करते हुए, शैतान खास तौर पर इन रिश्तों में शामिल पुरुषों और महिलाओं, दोनों की भावनाओं को निशाना बनाता है और उन्हें बिगाड़ देता है, जिससे वे एक-दूसरे के प्रति बेवफ़ाई करने लगते हैं। पिछले साल की शुरुआत तक, मैं यही मानता था कि शादी के अंदर किसी भी गलत व्यवहार को बस "व्यभिचार" या "बेवफ़ाई" की श्रेणी में रखा जाता है; लेकिन, तभी मुझे पहली बार एक शब्द सुनने को मिला: "इमोशनल चीटिंग" (भावनात्मक बेवफ़ाई)। मैंने यह शब्द सबसे पहले पिछले साल फ़रवरी के आखिर में मसीह में अपनी एक बहन से सुना था, जो अपनी शादीशुदा ज़िंदगी में मुश्किलों का सामना कर रही थी—यह एक ऐसा विचार था जो उस समय मुझे कुछ-कुछ अनजान सा लगा। असल में, मुझे कुछ साल पहले हुई एक बातचीत याद आ गई, जो मैंने एक और बहन के साथ की थी; जब मैंने उससे पूछा कि उसने अपने पति को तलाक़ क्यों दिया, तो उसने मुझे बताया कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उनके बीच "भावनात्मक जुड़ाव" (emotional connection) की कमी थी। उस अनुभव से मुझे यह एहसास हुआ कि शादीशुदा रिश्ते में "भावनाओं" का कितना गहरा महत्व होता है। "भावनात्मक जुड़ाव" और "इमोशनल चीटिंग" जैसे शब्द सुनने के बाद—जो मैंने अलग-अलग बहनों से सुने थे—मुझे एक बार फिर यह एहसास हुआ कि, पत्नियों के नज़रिए से, "भावनाओं" का महत्व इस हद तक होता है (यह एहसास मेरे लिए इसलिए खास था क्योंकि मैंने कभी भी भाइयों को भावनाओं से जुड़े ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए नहीं सुना था)।

आज के धर्मग्रंथ का अंश, 2 शमूएल 13:1, "इसके बाद" वाक्यांश से शुरू होता है। यह वाक्यांश उन घटनाओं को संदर्भित करता है जो राजा दाऊद की बतशेबा—उरिय्याह की पत्नी—के साथ हुई मुलाक़ात के बाद घटीं; दाऊद ने उसे नहाते हुए देखा था और वह उसे "बहुत सुंदर" लगी थी। उसे अपने पास बुलवाने और उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने के बाद (11:2–4), दाऊद को खबर मिली कि वह गर्भवती हो गई है (पद 5)। व्यभिचार के अपने पाप को छिपाने की कोशिश में, उसने जान-बूझकर युद्ध के मैदान में उरिय्याह की मृत्यु की साज़िश रची (पद 6–26)। क्योंकि यह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था (पद 27; 12:9), इसलिए परमेश्वर ने दाऊद और बतशेबा से जन्मे पुत्र को दंडित किया (11:27); वह बच्चा गंभीर रूप से बीमार पड़ गया (12:15) और बाद में

उसकी मृत्यु हो गई (पद 18)। *इसके बाद ही* (13:1) हम देखते हैं कि अम्नोन—दाऊद का एक और पुत्र—तामार के गहरे प्रेम में पड़ जाता है; तामार उसके सौतेले भाई अबशालोम की सुंदर बहन थी। उसके लिए उसकी तीव्र लालसा इतनी हावी हो गई कि अंततः वह अपनी इस चाहत के कारण बीमार पड़ गया। विशेष रूप से, क्योंकि तामार एक "पवित्र कुंवारी" थी, इसलिए अम्नोन आसानी से उसके करीब नहीं जा सकता था; इस प्रकार, उसके लिए अपने असीम प्रेम के बावजूद, वह पूरी तरह से असहाय महसूस कर रहा था (पद 1–2)। ठीक इसी क्षण, योनादाब नामक एक व्यक्ति—"शिमई का पुत्र, जो दाऊद का भाई था"—अम्नोन के पास आया; वह एक "बहुत ही चतुर मित्र" था (पद 3)। जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे उस "साँप" की याद आई जो उत्पत्ति अध्याय 3 में "स्त्री" (हव्वा) के पास गया था। इस जुड़ाव का कारण यह है कि बाइबल उस साँप का वर्णन इस प्रकार करती है कि वह "उन सभी जंगली जानवरों से अधिक चालाक था जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने बनाया था" (उत्पत्ति 3:1)। मेरी नज़र में, शैतान की सबसे चालाक चाल यह है: जब हम किसी रोमांटिक रिश्ते में होते हैं—किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करते हैं, उसकी पूजा करते हैं, और उसके लिए इतनी शिद्दत से तड़पते हैं जिससे हमें प्यार नहीं करना चाहिए, कि हम सचमुच बीमार पड़ जाते हैं—फिर भी हम इसके बारे में कुछ भी करने में पूरी तरह से बेबस होते हैं, तो वह आसानी से हमारे पास आता है और हमारे कान में फुसफुसाता है कि उसके पास हमारे लिए एक "बढ़िया तरकीब" है। वह हमसे यह कहकर हमें ललचाता है, "ठीक वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे कहता हूँ।" हम इस बात को "बहुत ही चालाक" योनादाब के कामों से समझ सकते हैं, जिसका ज़िक्र आज के धर्मग्रंथ के अंश में आया है। योनादाब आसानी से अम्नोन के पास गया—जो बीमार पड़ गया था और अपनी सौतेली बहन तामार के प्रति अपने लगाव के कारण दिन-ब-दिन उदासी में डूबता जा रहा था—और उसे यह सलाह दी: "अपने बिस्तर पर लेट जाओ और बीमार होने का नाटक करो। जब तुम्हारे पिता (राजा दाऊद) तुमसे मिलने आएँ, तो उनसे कहना कि वे तुम्हारी बहन तामार को भेजें ताकि वह तुम्हारी आँखों के ठीक सामने तुम्हारे लिए खाना बना सके। उनसे कहना कि तुम्हें लगता है कि अगर तामार अपने हाथों से बनाया हुआ खाना तुम्हें खिलाएगी, तो तुम ठीक हो जाओगे" (2 शमूएल 13:5, *द मॉडर्न इंग्लिश वर्ज़न*)। योनादाब की यह बेहद चालाक चाल दाऊद—जो तामार और अम्नोन दोनों का पिता था—को इस मामले में शामिल करने की थी (ठीक वैसे ही जैसे किसी शादीशुदा रिश्ते में ससुराल वालों या बच्चों को शामिल करने से पति-पत्नी के बीच का झगड़ा और भी बढ़ सकता है)। आखिरकार, यह चाल तामार को—जिसके पास अम्नोन पहले पहुँच नहीं पा रहा

था—सीधे अम्नोन के घर तक लाने में कामयाब रही। इसके अलावा, इस चाल की वजह से तामार को आटा लेना पड़ा, उसे गूँथना पड़ा, और अपने सौतेले भाई अम्नोन की आँखों के ठीक सामने रोटियाँ बनानी पड़ीं; उसे तो उस बेडरूम में भी जाना पड़ा जहाँ अम्नोन बीमार होने का नाटक करते हुए लेटा था, ताकि वह उसे अपने हाथों से खाना खिला सके। आखिर में, जब तामार उसे खाना खिलाने के लिए उसके पास पहुँची, तो अम्नोन ने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "आओ, मेरी बहन, और मेरे साथ लेटो।" हालाँकि तामार ने मना कर दिया, लेकिन अम्नोन ने—उसकी मिन्नतों को नज़रअंदाज़ करते हुए और अपनी ज़्यादा ताकत का इस्तेमाल करके उसे काबू में करते हुए—ज़बरदस्ती उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और उसका बलात्कार किया (पद 5–14, *द मॉडर्न इंग्लिश वर्ज़न*)। शैतान—जो सबसे बड़ा धोखेबाज़ है—ने बहुत ही चालाक योनादाब के ज़रिए अम्नोन से संपर्क किया। यह ठीक उस समय हुआ जब अम्नोन, तामार के गहरे प्यार और उसके प्रति तीव्र आसक्ति में डूबा हुआ था, लेकिन उससे मिल पाने में असमर्थ था; उसकी चाहत इतनी बढ़ गई थी कि वह सचमुच बीमार पड़ गया था। और इसी मध्यस्थ के ज़रिए, शैतान ने अम्नोन को अपने जाल में फंसा लिया... आखिरकार, इस "मूर्खतापूर्ण काम" (पद 12) के कारण उसने "तामार पर ज़ोर-ज़बरदस्ती की और उसका बलात्कार किया" (पद 14)। इसके अलावा, शैतान ने अम्नोन के तामार के प्रति प्रेम को नफ़रत में बदल दिया—एक ऐसी नफ़रत जो उस प्रेम से भी कहीं ज़्यादा तीव्र थी जो उसने कुछ ही पल पहले उसके लिए महसूस किया था (पद 15)। फिर भी, मूर्ख अम्नोन, तामार के प्रति अपने गहरे प्रेम के बावजूद, यह समझने में नाकाम रहा कि उसे इतनी नफ़रत के साथ दूर भगाना, उसके साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती करने के पाप से कहीं ज़्यादा बड़ा पाप था (पद 15–16)। इस प्रकार, एक मूर्ख की अज्ञानता उसकी मूर्खता को सबके सामने उजागर कर देती है (सभोपदेशक 10:3)। और फिर भी, वह मूर्ख अपनी ही बदनामी से बेखबर रहता है (तुलना करें: सपन्याह 3:5)। इसी तरह, चालाक शैतान—पुरुषों और स्त्रियों के बीच के रिश्तों में "चालाकी और छल" (2 कुरिन्थियों 12:16) का इस्तेमाल करके—लोगों को व्यभिचार और बलात्कार जैसे पाप करने के लिए उकसाता है, और प्रेम को नफ़रत में बदल देता है।

लेकिन, यीशु—जो शैतान की चालाकी से पूरी तरह अवगत थे (तुलना करें: लूका 20:23)—ने उस समय शैतान का सामना परमेश्वर के उस वचन से किया जो पुराने नियम में लिखा है, जब उस चालाक शैतान ने उन्हें लुभाने

की कोशिश की—और यीशु विजयी हुए (मत्ती 4:1–11; याकूब 4:7)। हमें भी—यीशु के उदाहरण का पालन करते हुए—"परमेश्वर का पूरा कवच पहन लेना चाहिए, ताकि [हम] शैतान की योजनाओं के विरुद्ध डटे रह सकें" (इफिसियों 6:11)। और यीशु की तरह ही, हमें भी परमेश्वर के वचन के द्वारा चालाक शैतान के प्रलोभनों का विरोध करना चाहिए और विजय प्राप्त करनी चाहिए। विशेष रूप से, हमें उन प्रलोभनों के प्रति अत्यंत सतर्क रहना चाहिए जो चालाक शैतान विपरीत लिंग के लोगों के साथ हमारे रिश्तों में हमारे सामने रखता है। अगर कोई ऐसा पुरुष और स्त्री है जिन्हें किसी रोमांटिक रिश्ते में नहीं होना चाहिए, और उनमें से कोई एक... अगर कोई पुरुष और स्त्री एक-दूसरे से बहुत गहरा प्यार करते हैं और उनके मन में एक-दूसरे के लिए बहुत ज़्यादा स्नेह है, तो एक ही कमरे में अकेले रहने से ही ऐसी स्थिति बन जाती है, जहाँ उनके लिए चालाक शैतान के प्रलोभनों के आगे झुकना लगभग तय हो जाता है। ऐसी मुश्किल स्थिति से बचने के लिए, पुरुष और स्त्री को अपने बीच कुछ स्वस्थ सीमाएँ तय करनी चाहिए और एक-दूसरे से कुछ दूरी बनाए रखनी चाहिए। हालाँकि, यह और भी ज़्यादा ज़रूरी है कि वे न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि—इससे भी ज़्यादा ज़रूरी—मानसिक और भावनात्मक रूप से भी एक-दूसरे से स्पष्ट दूरी बनाए रखें। इसका कारण यह है कि अगर कोई विपरीत लिंग के किसी व्यक्ति से इतना ज़्यादा प्यार और उसकी इतनी ज़्यादा तारीफ़ करता है कि वह एक जुनून बन जाता है, तो इस बात का बहुत ज़्यादा खतरा होता है कि वह कोई बहुत बड़ी बेवकूफ़ी कर बैठेगा। अम्नोन की बेवकूफ़ी इसी बात में थी कि, तामार के लिए अपने गहरे प्यार और तारीफ़ के बावजूद, उसने तामार के सुझाए गए समझदारी भरे रास्ते को ठुकरा दिया—यानी अपने पिता, दाऊद से बात करके एक सही शादी का इंतज़ाम करना—और इसके बजाय, अपनी ज़्यादा शारीरिक ताकत पर भरोसा करते हुए, उसने तामार पर ज़ोर-ज़बरदस्ती की और उसका बलात्कार किया। इसके परिणामस्वरूप, अम्नोन "इस्राएल का सबसे बेवकूफ़ इंसान" कहलाया (2 शमूएल 13:1–2, 12–14)। एक बेवकूफ़ इंसान, जो केवल अपनी आँखों के सामने दिखने वाले तात्कालिक सुखों के बारे में सोच पाता है (सभोपदेशक 7:4), अपने दिल को बुराई करने की ओर झुकने देता है (10:2) और बिना सोचे-समझे और बिना किसी सावधानी के काम करता है (नीतिवचन 14:16)। नतीजतन, वह बेवकूफ़ इंसान अपनी ही बेवकूफ़ी के कड़वे परिणाम भुगतेगा (14:18) और अंततः नष्ट हो जाएगा, क्योंकि उसने ज़िद करके अपना ही रास्ता चुनने पर ज़ोर दिया था (1:31)।

दूसरी बात, जब चालाक शैतान हमारे परिवारों पर हमला करता है, तो पिता की भूमिका—जो घर का मुखिया होता है—बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है।

"माता-पिता का नेतृत्व ही बच्चे का भविष्य तय करता है," शीर्षक वाले एक लेख में, जिन जे-ह्योक नामक एक व्यक्ति ने यह टिप्पणी की: "भले ही एक सत्तावादी प्रभाव लोगों से तत्काल परिणाम दिला सकता है, लेकिन अगर वह वास्तव में उनके दिलों को छूने या अपने अनुयायियों का विश्वास जीतने में विफल रहता है, तो उसे सच्चा नेतृत्व नहीं माना जा सकता" (इंटरनेट)। वास्तव में, एक पिता के लिए अपने बच्चों के प्रति सच्चा नेतृत्व क्या है? ईश्वर ने पिताओं को अधिकार प्रदान किया है—वे अपने परिवारों के मुखिया (और पति) होते हैं। परिणामस्वरूप, इन परिवारों के मुखियाओं पर यह ज़िम्मेदारी होती है कि वे ईश्वर द्वारा दिए गए इस दिव्य अधिकार का उपयोग अपने परिवारों का प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने के लिए करें। हालाँकि, समस्या यह है कि कई पिताओं को अक्सर उनके बच्चों द्वारा "सत्तावादी" (अधिकार जताने वाला) कहा जाता है। इसका क्या कारण है? शायद इसका कारण हमारे धैर्य की कमी है। दूसरे शब्दों में, ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि हम अपने बच्चों से तत्काल परिणामों की मांग करते हैं। हालाँकि ऐसा सत्तावादी प्रभाव अल्पकालिक रूप से बच्चों से अपेक्षित व्यवहार या परिणाम प्राप्त करने में सफल हो सकता है, लेकिन अंततः यह उनके दिलों को जीतने में विफल रहता है। तो फिर, हम पिताओं को क्या करना चाहिए? हम—अपने परिवारों के मुखिया होने के नाते—अपने परिवारों का अच्छी तरह से नेतृत्व कैसे कर सकते हैं? मैंने इस पर विचार किया है और तीन मुख्य बिंदु पहचाने हैं:

(1) अपने परिवारों के मुखिया होने के नाते, पिताओं को ईश्वर द्वारा हमें सौंपे गए अधिकार का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

इसका कारण यह है कि जब भी हम ईश्वर द्वारा दिए गए अधिकार का दुरुपयोग करते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से अपने बच्चों के दिलों को जीतने में विफल रहते हैं। इसके बजाय, हमें घर के भीतर शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए ईश्वर-प्रदत्त इस अधिकार का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए। आज कई परिवारों में, ऐसा प्रतीत होता है कि पिता का अधिकार अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है। जब एक पत्नी अपने पति के अधिकार की अवहेलना करती है, तो बच्चे—अपनी माँ का अनुसरण करते हुए—अपने पिता की भी अवहेलना

करते हुए प्रतीत होते हैं। यह एक गंभीर मुद्दा है। जहाँ अधिकार का दुरुपयोग वास्तव में एक गंभीर समस्या है, वहीं अधिकार की अवहेलना भी उतनी ही गंभीर समस्या है।

(2) पिताओं को, अपने परिवारों के मुखिया होने के नाते, अपने बच्चों पर विश्वास रखना चाहिए।

बेशक, यह आसान नहीं होगा। अपने बच्चों पर विश्वास करना तब विशेष रूप से कठिन हो जाता है, जब किसी को यह संदेह हो कि वे अपने माता-पिता से झूठ बोल रहे हैं। हालाँकि, यदि हम ईश्वर पर अपना पूर्ण विश्वास रखते हैं और अपने बच्चों को उनकी देखरेख में सौंप देते हैं, तो हम अपने बच्चों पर भी विश्वास कर पाएँगे। इसके अलावा, क्योंकि हम ईश्वर पर भरोसा करते हैं, इसलिए हमें अपने बच्चों पर भरोसा करने के काम के प्रति खुद को समर्पित करना चाहिए। ऐसा करके, हम उनका दिल जीत पाएँगे। भले ही हमें जो तत्काल परिणाम चाहिए और जिनकी हम उम्मीद करते हैं, वे बाहरी तौर पर दिखाई न दें, लेकिन जैसे-जैसे हम अपने बच्चों पर भरोसा करने के प्रति समर्पित रहेंगे, उनके दिल धीरे-धीरे अपने पिताओं पर भरोसा करने और उनका अनुसरण करने लगेंगे।

(3) पिताओं को, अपने घरों के मुखिया के तौर पर, अपने बच्चों के साथ दिल से दिल की बातचीत करनी चाहिए।

विशेष रूप से, एक पिता को अपना दिल खोलकर अपने बेटे के साथ आमने-सामने बातचीत करनी चाहिए। स्वाभाविक रूप से, यह भी आसान नहीं होगा। उन पिताओं के लिए जो स्वभाव से कम बोलने वाले होते हैं, अपने बच्चों के साथ बातचीत करना अपरिचित या अजीब लग सकता है। फिर भी, यह कुछ ऐसा है जो किया ही जाना चाहिए। हमें अपने बच्चों के साथ बातचीत शुरू करने के लिए जान-बूझकर प्रयास करना चाहिए—भले ही शुरू में यह ज़बरदस्ती जैसा लगे। केवल ऊपरी-ऊपरी बातचीत करने के बजाय, हमें एक-दूसरे के लिए अपने दिल खोलने चाहिए और ईमानदार, सच्ची बातचीत करनी चाहिए। जब इस तरह की दिल से दिल की बातचीत होती है, तो हम पिता अपने बच्चों का प्रभावी ढंग से मार्गदर्शन कर पाएँगे।

मेरी राय में, राजा दाऊद—जो आज के शास्त्र अंश, 2 शमूएल 13:1–3 के संदर्भ में एक पिता के रूप में दिखाई देते हैं—ने शायद अपने राष्ट्र पर अच्छी तरह शासन किया हो, लेकिन मुझे नहीं लगता कि वे अपने ही परिवार

का प्रभावी ढंग से नेतृत्व करने में सफल रहे। इस राय का कारण यह है कि दाऊद इस बात से पूरी तरह अनजान रहे कि उनके बेटे, अम्नोन के साथ क्या चल रहा था। उदाहरण के लिए, ऐसा लगता है कि दाऊद इस तथ्य से पूरी तरह बेखबर थे कि उनका बेटा अम्नोन अपनी सौतेली बहन, तामार के गहरे प्यार में था—और उसके लिए उसकी इच्छा से पूरी तरह घिरा हुआ था। इसके अलावा, दाऊद इस तथ्य से भी अनजान थे कि अम्नोन "बिस्तर पर लेटा हुआ, बीमारी का नाटक कर रहा था।" यदि दाऊद को स्थिति की जानकारी होती—विशेष रूप से, जब अम्नोन ने उनसे कहा, "कृपया मेरी बहन तामार को भेजिए ताकि वह मेरी आँखों के ठीक सामने भोजन तैयार कर सके और मुझे खिला सके"—तो दाऊद को "तामार को संदेश भेजकर उसे अम्नोन के घर जाकर उसके लिए भोजन तैयार करने का निर्देश नहीं देना चाहिए था" (पद 6–7, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। इसका कारण यह है कि ऐसा निर्देश देना बिल्ली के भरोसे मछली छोड़ने जैसा था। डेविड ने तामार को अम्नोन के घर जाकर उसके लिए खाना बनाने का निर्देश कैसे दिया होगा, जबकि अम्नोन उसके प्यार, चाहत और वासना में इतना डूबा हुआ था कि वह बीमार भी पड़ गया था? इसका नतीजा यह हुआ कि अम्नोन ने तामार का बलात्कार किया (पद 14, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। क्या सचमुच यह कहा जा सकता है कि उनके पिता, डेविड की इसमें बिल्कुल भी कोई ज़िम्मेदारी नहीं थी?

मेरा मानना है कि तामार की अम्नोन के घर की यात्रा "एक बैल की तरह थी जो कसाईखाने जा रहा हो, या एक हिरण की तरह जो जाल में कूद रहा हो" (नीतिवचन 7:22, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। बेशक, इस पूरी चालाक योजना को अंजाम देने का विचार बेहद धूर्त योनादाब के दिमाग में आया था; फिर भी, मैं यह सवाल उठाता हूँ कि क्या यह दावा किया जा सकता है कि डेविड—जो अम्नोन और तामार दोनों के पिता थे—पूरी तरह से ज़िम्मेदारी से मुक्त थे। इस घटना के बाद, तामार, जिसका उसके सौतेले भाई अम्नोन ने बलात्कार किया था, अपने सगे भाई अबशालोम के घर में एक वीरान ज़िंदगी जीने लगी। उस दौरान, अबशालोम, जो अपनी बहन तामार को अपमानित करने के लिए अम्नोन से गहरी नफ़रत करता था, उसने उससे एक भी शब्द बोलने से इनकार कर दिया (2 शमूएल 13:20, 22, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। दो साल बाद, अबशालोम ने एक दावत का आयोजन किया, जिसमें उसने न केवल सभी शाही राजकुमारों को, बल्कि अपने पिता, राजा डेविड को भी आमंत्रित किया (पद 23–24, *मॉडर्न पीपल्स बाइबिल*)। उस समय, राजा डेविड को लगा कि उनकी उपस्थिति अबशालोम के लिए "बहुत बड़ा बोझ" होगी, इसलिए उन्होंने दावत में शामिल न होने का फ़ैसला किया; इसके बजाय, उन्होंने बस अबशालोम को अपना आशीर्वाद दिया (पद 25, *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन*)। तब अबशालोम

ने अपने पिता, डेविड से विनती की: "यदि आप स्वयं नहीं आ सकते, तो कृपया कम से कम मेरे भाई अम्नोन को हमारे साथ आने दें।" राजा डेविड ने जवाब में पूछा, "अम्नोन तुम्हारे साथ क्यों जाए?" (पद 26, *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन*)। हालाँकि, क्योंकि अबशालोम अपनी मिन्नतों पर अड़ा रहा—और यह न समझने के बावजूद कि अबशालोम के वहाँ अम्नोन को बुलाने के पीछे असली मकसद क्या था—राजा दाऊद ने आखिरकार अम्नोन को, बाकी सभी राजकुमारों के साथ, अबशालोम के साथ जाने की इजाज़त दे दी (पद 27, *Modern English Version*)। अपने बेटे पर कोई बेवजह का बोझ न डालना चाहते हुए, और उस नौजवान की लगातार मिन्नतों के पीछे की असली वजह से अनजान रहते हुए, राजा दाऊद ने आखिरकार अबशालोम की गुज़ारिश मान ली। इसका दुखद नतीजा यह हुआ कि अबशालोम ने अम्नोन का कत्ल कर दिया (पद 29, *Modern English Version*)। उन दो सालों के दौरान, अबशालोम ने अम्नोन के लिए अपनी नफ़रत से प्रेरित होकर—उस भाई के लिए जिसने उसकी बहन को बेइज़्ज़त किया था—अपनी बदले की तलवार को कितनी बेदर्दी से पैना किया होगा? इस बीच, अम्नोन ने तामार के साथ जो कुछ भी किया था, उसके बारे में सुनकर, राजा दाऊद बस "बहुत गुस्सा" हुए (पद 21)। पवित्र शास्त्रों में इस बात का कोई ज़िक्र नहीं मिलता कि राजा दाऊद ने अपने बेवकूफ़ बेटे अम्नोन को डांट का एक शब्द भी कहा हो—प्यार से उसे अनुशासन में लाने की बात तो दूर की है। इसके अलावा, बाइबल में इस बात का भी कोई ज़िक्र नहीं है कि राजा दाऊद अपनी बेटी तामार से मिलने गए हों—जो अबशालोम के घर में एक अकेली और उदास ज़िंदगी जी रही थी—ताकि उसे दिलासा दे सकें। शायद राजा दाऊद, इज़राइल के राजा होने के नाते, राज-काज के मामलों में इतने ज़्यादा उलझे हुए थे कि उन्हें अपने ही परिवार की आध्यात्मिक ज़रूरतों पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिला।

आखिर में—और तीसरी बात—हमारा चालाक दुश्मन, शैतान, लगातार हमारे परिवारों पर हमला करता रहता है, ताकि हमें एक-दूसरे को माफ़ करने से रोक सके। फिर भी, यीशु में विश्वास रखने वालों के तौर पर, हमें एक-दूसरे को माफ़ करने के लिए बुलाया गया है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता ने—यीशु मसीह के ज़रिए—हमें माफ़ किया है।

अपनी किताब *Resolving Conflict* में, लू प्रियोलो बताते हैं कि हम अक्सर अपने माता-पिता या जीवनसाथी को माफ़ करने में असफल क्यों हो जाते हैं। वे कहते हैं: "शायद इसका कारण यह है कि आप उन चोटों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो आपको उनके हाथों मिली हैं, और उन लोगों पर ही ध्यान दे रहे हैं जिन्होंने आपको वे घाव दिए हैं। जब उन्होंने आपको वे (गहरे, गंभीर) घाव दिए, तो उन्होंने आपके दिल की ज़मीन में कड़वाहट के बीज बो दिए। फिर भी, जैसे ही कड़वाहट के वे बीज अंकुरित होने लगे—उन्हें माफ़ करके—उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने के बजाय, आपने उन चोटों के बारे में बार-बार सोचकर उन्हें और ज़्यादा पनपाया है। इस तरह, इतने लंबे समय तक केवल उन घावों पर ही अपनी नज़रें टिकाए रखने के कारण, कड़वाहट ने आपके दिल में गहरी जड़ें जमा ली हैं। कड़वाहट, माफ़ी न देने का ही नतीजा है। माफ़ी का मतलब उस इंसान पर ध्यान देना नहीं है जिसने आपको चोट पहुँचाई या घाव दिए; बल्कि, इसका मतलब है अपनी नज़रें परमेश्वर पर टिकाना—वह परमेश्वर जो उसी इंसान और उन्हीं घावों के ज़रिए काम करके अपनी महिमा प्रकट करता है (यूसुफ़ इसका एक बेहतरीन उदाहरण है)" (प्रियोलो)। यूसुफ़, जिसकी कहानी *उत्पत्ति की किताब* में बताई गई है, ने न केवल अपने भाइयों को सच्चे दिल से माफ़ कर दिया—जिन्होंने उससे नफ़रत की थी और उसे मारने की साज़िश भी रची थी—बल्कि अपने डरे हुए भाइयों को प्यार भरे शब्दों से दिलासा भी दिया, उनकी और उनके बच्चों की देखभाल की, और 110 साल की उम्र तक जीवित रहा (उत्पत्ति 50:21, 26)। ऐसा कैसे संभव हुआ? क्योंकि यूसुफ़ ने "प्रभु की भलाई का स्वाद चखा था" (भजन 34:8), इसलिए वह उन्हीं भाइयों के साथ भलाई कर पाया जिन्होंने उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश की थी (इफिसियों 2:10)। दूसरे शब्दों में, यूसुफ़ को यह एहसास हो गया था कि—भले ही उसके भाइयों का इरादा उसे नुकसान पहुँचाने का था—लेकिन परमेश्वर ने उस बुराई को भलाई में बदल दिया, और उसका इस्तेमाल करके बहुत से लोगों की जान बचाई (उत्पत्ति 50:20; तुलना करें रोमियों 12:2)। क्योंकि उसने परमेश्वर की इस भलाई को समझ लिया था, इसलिए वह अपने भाइयों को सच्चे दिल से माफ़ कर पाया, उन्हें प्यार भरे शब्दों से दिलासा दे पाया, और अपनी ज़िंदगी के आखिरी पल तक उनकी और उनके बच्चों की देखभाल कर पाया। हमें अच्छा काम करने की शक्ति कहाँ से मिलती है—न केवल उन लोगों के प्रति जिन्होंने सचमुच हमें नुकसान पहुँचाया है, बल्कि उन दुष्ट लोगों के प्रति भी जिन्होंने केवल हमें नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था—यहाँ तक कि हम उन्हें अपने दिल से माफ़ कर देते हैं, उन्हें सांत्वना देते हैं और उनकी देखभाल करते हैं? यह तभी संभव है जब परमेश्वर हमें विश्वास के द्वारा यह समझने की शक्ति

देता है कि वह हमारे विरुद्ध किए गए बुरे इरादों को अच्छाई में बदल रहा है, और इस प्रकार वह अपने अच्छे उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। मैं परमेश्वर की इस असीम कृपा का अभिलाषी हूँ।

आज के अंश—2 शमूएल 13:1–3—के संदर्भ को देखते हुए, हम पाते हैं कि अबशालोम, अम्नोन से नफ़रत करता था क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहन, तामार को अपमानित किया था; परिणामस्वरूप, अबशालोम ने शायद दो साल तक उससे एक भी शब्द नहीं कहा (पद 22–23)। उन दो वर्षों के बीत जाने के बाद, अबशालोम ने अम्नोन को मार डाला; फिर वह भाग गया और तीन साल तक गेशूर में रहा (पद 38)। अंततः, ऐसा प्रतीत होता है कि अबशालोम अपने पिता, दाऊद से कुल पाँच वर्षों तक बिना किसी बातचीत के रहा। फिर भी, अपने बेटे अबशालोम की याद आने के बावजूद (पद 39), राजा दाऊद ने उन तीन वर्षों के दौरान अपने भागे हुए बेटे को खोजने का कोई प्रयास नहीं किया। इस पर विचार करने पर, पिता दाऊद और बेटे अबशालोम के बीच का रिश्ता स्वस्थ प्रतीत नहीं होता। अंततः, सेनापति योआब ने यह महसूस करते हुए कि राजा दाऊद अबशालोम के लिए तरस रहे हैं, टेकोआ में दूतों को भेजकर एक बुद्धिमान स्त्री को बुलवाया (14:2)। उसे यह निर्देश देने के बाद कि उसे क्या कहना है, उसने उसे राजा दाऊद के पास भेज दिया (पद 19)। उस बुद्धिमान स्त्री ने राजा दाऊद से कहा, "इस प्रकार बात करके, महाराज, आप एक दोषी व्यक्ति के समान हो गए हैं" (पद 13)। इसका कारण यह था कि राजा दाऊद ने न केवल यह घोषणा की थी कि वह उस स्त्री के पारिवारिक मामले की ज़िम्मेदारी स्वयं लेंगे—यह आदेश देते हुए कि कोई भी उसके शेष बेटे [वह बेटा जिसने लड़ाई के दौरान अपने भाई को मार डाला था (पद 6)] पर हाथ नहीं उठाएगा (पद 8)—बल्कि उन्होंने यह शपथ भी खाई थी, "यहोवा के जीवन की शपथ, तुम्हारे बेटे के सिर का एक भी बाल ज़मीन पर नहीं गिरेगा" (पद 11)। फिर भी, क्योंकि डेविड अपने निर्वासित बेटे अबशालोम को शाही महल में वापस लाने में नाकाम रहा था, इसलिए उस बुद्धिमान औरत को वह एक "दोषी आदमी" (पद 13) जैसा लगा।

जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मेरा मानना है कि राजा डेविड सिर्फ़ एक "दोषी आदमी" *जैसा लगा* नहीं था; असल में, वह *दोषी था*। उसका यह दोष अबशालोम को माफ़ न कर पाने में छिपा था। मेरा मानना है कि डेविड ने अबशालोम को कभी सचमुच माफ़ नहीं किया—वह बेटा जिसने उसके दूसरे बेटे, अम्नोन को मार डाला था। हालाँकि डेविड ने आखिरकार अबशालोम को गेशूर से यरूशलेम वापस बुलवा लिया (पद 21), लेकिन उसने उसे अपने ही घर में रहने का हुक्म दिया और पूरे दो साल तक उसे अपने सामने आने से मना कर

दिया। इसका सीधा सा कारण यह था कि डेविड अबशालोम को देखना ही नहीं चाहता था (पद 24, 28)। क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि, जिस तरह अबशालोम ने दो साल तक अम्नोन के लिए अपने मन में नफ़रत पाल रखी थी (जब तक उसने उसे मार नहीं डाला), उसी तरह राजा डेविड ने भी दो साल तक अबशालोम के लिए अपने मन में नफ़रत पाल रखी थी? अबशालोम, जो दो साल तक यरूशलेम में रहा और एक बार भी अपने पिता, राजा डेविड से नहीं मिला, उसने उनसे मिलने का इंतज़ाम करने की कोशिश की; उसने सेनापति योआब से अपनी तरफ़ से मध्यस्थ बनने को कहा, लेकिन योआब ने उससे मिलने से मना कर दिया (पद 29, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। नतीजतन, जब उसके पास कोई और चारा नहीं बचा, तो अबशालोम ने अपने नौकरों को योआब के जौ के खेत में आग लगाने का हुक्म दिया—यह एक ऐसा कड़ा कदम था जिसने आखिरकार योआब को उससे मिलने पर मजबूर कर दिया (पद 30–31, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। उस मुलाक़ात में, अबशालोम ने योआब से कहा: "मैंने तुम्हें इसलिए बुलाया था ताकि तुमसे कह सकूँ कि तुम राजा के पास जाओ और उनसे पूछो: अगर राजा का मुझसे मिलने का कोई इरादा ही नहीं था, तो उन्होंने मुझे गेशूर से वापस क्यों बुलवाया? मेरे लिए तो वहीं रहना ज़्यादा अच्छा होता। अब, प्लीज़ मेरे लिए राजा से मिलने का इंतज़ाम करवा दो। अगर मैं किसी भी जुर्म का दोषी हूँ, तो उन्हें मुझे मौत की सज़ा देने दो" (पद 32, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। जब मैं यहाँ अबशालोम के कामों और बातों पर सोचता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह सचमुच अपने पिता, डेविड से मिलने के लिए तरस रहा था। वह अपने पिता को देखने के लिए बेचैन था; वह बस उससे फिर से मिलना चाहता था। फिर भी, क्योंकि उसके पिता ने—उसे गेशूर से यरूशलेम तक इतनी दूर लाने के बावजूद—दो साल के दौरान एक बार भी उससे मिलने से इनकार कर दिया, तो अबशालोम ने योआब से कहा कि उसके लिए बेहतर होता अगर वह गेशूर में ही रहता।

जब मैं इस प्रसंग पर मनन करता हूँ, तो मुझे यह एहसास होता है कि—भले ही पिता और पुत्र एक ही छत के नीचे साथ रहते हों—एक क्षमा न करने वाला हृदय अनिवार्य रूप से उनके बीच एक विशाल दूरी पैदा कर देता है। नफ़रत से भरा हृदय लोगों को एक-दूसरे से दूर कर देता है, जबकि क्षमा करने को तत्पर हृदय उनके बीच की दूरी को पाट देता है। किसी की चाहत कितनी भी गहरी क्यों न हो, यदि क्षमा की भावना न हो, तो यह अनिवार्य रूप से लोगों के बीच दूरी पैदा कर देती है। यदि दाऊद ने अपने पुत्र अबशालोम को सचमुच और सच्चे दिल से क्षमा कर दिया होता, तो वह उसे यरूशलेम वापस न लाता—तीन साल तक उससे अलग रहने के बाद, जब

अबशालोम गेशूर में था—सिर्फ़ इसलिए कि वह उसे अगले दो साल तक अपने सामने आने से रोक दे। ऐसा कौन सा पिता हो सकता है जो उस बच्चे को पाँच साल तक न देखे जिसे उसने कथित तौर पर क्षमा कर दिया हो? मेरी नज़र में, दाऊद एक दोषपूर्ण इंसान था; वह एक ऐसा पिता था जो अपने ही पुत्र को क्षमा करने में असफल रहा। अपनी किताब *David: A Man of Passion and Destiny* में, यूजीन पीटरसन यह तर्क देते हैं कि दाऊद ने अपने पूरे जीवन में जितने भी गंभीर पाप किए, उनमें से जिस पाप की उसे सबसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, वह ठीक यही था—अपने पुत्र अबशालोम को सच्चे दिल से क्षमा न कर पाना। दाऊद ने अपने पुत्र अबशालोम को जितनी ज़्यादा सच्ची क्षमा देने से खुद को रोका—उसे दूर रखा और खुद से परे धकेला—उतना ही वह स्वयं परमेश्वर से भी दूर होता गया (पीटरसन)।

एक क्षमा न करने वाला हृदय न केवल हमारे और उस व्यक्ति के बीच दूरी पैदा करता है जिसने हमें चोट पहुँचाई है; बल्कि यह इस बात का भी संकेत है कि हम पहले ही परमेश्वर से दूर हो चुके हैं। दूसरे शब्दों में, जो हृदय क्षमा करने से इनकार करता है, वह प्रभु के साथ घनिष्ठ संगति का आनंद नहीं ले सकता। इसलिए, जिस प्रकार प्रभु ने हमें क्षमा किया है, उसी प्रकार हमें भी अपने परिवार के सदस्यों को क्षमा करना चाहिए। जिस प्रकार परमेश्वर ने मसीह में हमें क्षमा किया है, उसी प्रकार हमें भी एक-दूसरे को क्षमा करना चाहिए (इफिसियों 4:32)। जहाँ *इस युग*—एक ऐसी दुनिया जिस पर शैतान का राज है—के लोग यह ऐलान करते हैं, "मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूँगा, भले ही मेरी जान चली जाए!", वहीं परमेश्वर के लोग—उसके राज्य के नागरिक जो *आने वाले युग* (और इस तरह स्वर्ग) से ताल्लुक रखते हैं—मरते दम तक माफ़ करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने क्रूस पर अपनी जान देते समय माफ़ किया था (लूका 23:34; 1 कुरिन्थियों 15:40, 48, 49; फिलिप्पियों 3:20; 1 यूहन्ना 5:19)। जब कोई अपना हमारे साथ कुछ गलत करता है, तो उसकी मौजूदगी में उसके गुनाह की गंभीरता और हद पर ध्यान देने के बजाय, हमें सबसे पहले परमेश्वर की मौजूदगी में अपने खुद के पापों की गंभीरता और हद को पहचानना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने मसीह यीशु में हमें माफ़ किया है, हम न केवल उस अपने को अपने दिल से माफ़ कर देंगे, बल्कि उसे पूरी तरह से अपनाने का साहस भी पा लेंगे, और उससे पहले से भी कहीं ज़्यादा गहराई से प्यार करेंगे।

मैं धर्मग्रंथों पर आधारित इस ध्यान-सत्र को अब समाप्त करना चाहूँगा। अत्यंत धूर्त शैतान, आज भी, जोनादाब जैसे चालाक लोगों का इस्तेमाल करके हम ईसाइयों—जो दाऊद के आध्यात्मिक वंशज हैं और यीशु मसीह में अपना विश्वास रखते हैं—के घरों पर हमले करवाता रहता है, और उन्हें बर्बादी की ओर धकेल देता है। इसलिए, हमें विपरीत लिंग के साथ अपने संबंधों और अपने वैवाहिक जीवन से जुड़े मामलों में, उस धूर्त शैतान के हमलों का पूरी सक्रियता से विरोध करना चाहिए। प्रभु हमारे घरों को स्वर्ग का एक छोटा-सा नमूना बनाना चाहते हैं, जबकि शैतान उन्हें एक जीता-जागता नरक बनाने की कोशिश करता है। प्रभु ने हमें परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने की स्वर्गीय आज्ञाएँ दी हैं; इसके विपरीत, शैतान ने हम पर एक-दूसरे से घृणा करने की नरकीय आज्ञा थोप दी है। हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें, और यह सुनिश्चित करें कि हमारा पूरा परिवार—एक मन और एक हृदय होकर—परमेश्वर से प्रेम करे, और उस ईश्वरीय प्रेम के माध्यम से, एक-दूसरे से भी प्रेम करे। फिर भी, शैतान लगातार और अनगिनत तरीकों से हम पर हमले करता है और हमें प्रलोभन देता है; वह हमें प्रभु की आज्ञाओं का उल्लंघन करने के लिए उकसाता है और घृणा के कारण हमें एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने की कोशिश करता है। निस्संदेह, यह एक आध्यात्मिक युद्ध है! हमें इस बात को अपने मन में दृढ़ता से बिठा लेना चाहिए। जब वह धूर्त शैतान हमारे घरों पर हमला करता है, तो पिता की भूमिका—जो घर का मुखिया होता है—अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। वास्तव में, परिवार के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में, पति और पिता—यानी घर के मुखिया—का आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होना सर्वोपरि महत्व रखता है। जहाँ एक पति स्वाभाविक रूप से अपनी पत्नी की आध्यात्मिक भलाई की देखभाल करने, उसे सही राह दिखाने और उसका पोषण करने का प्रयास करेगा, वहीं मेरा मानना है कि एक समझदार पत्नी को भी अपनी ओर से, अपने पति के विश्वास में वृद्धि करने में उसका सहयोग करने की आवश्यकता को समझना चाहिए—भले ही इसके लिए उसे कुछ व्यक्तिगत त्याग ही क्यों न करने पड़ें। हम सभी पिताओं को ऐसे पुरुष बनना चाहिए जिन्हें अपने उद्धार के प्रति पूर्ण और दृढ़ आश्वासन प्राप्त हो। हम पिताओं को यीशु मसीह के सुसमाचार की शक्ति से परिपूर्ण होना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए, हमें यीशु मसीह के सुसमाचार को ध्यान से सुनना चाहिए, परमेश्वर के अनुग्रह की विशालता को वास्तव में समझना चाहिए, और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो आध्यात्मिक फल उत्पन्न करे। अपने घरों के भीतर, हमें एक-दूसरे को क्षमा करने का अभ्यास करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पिता ने हमें क्षमा किया है। जिन लोगों को यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर पिता से क्षमा प्राप्त हुई है, उन लोगों के रूप में, हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपने परिवार के किसी भी सदस्य को—जिसने हमारे विरुद्ध कोई पाप किया हो—सच्चे हृदय से क्षमा कर दें; ठीक वैसे ही, जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।

हमें अतीत से आज़ादी पाने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए!

हाल ही में, मेरी पत्नी और मैं कोरियन ड्रामा *Forecasting Love and Weather* देख रहे हैं। हालाँकि, कल अपनी प्यारी पत्नी के साथ यह शो देखते हुए, मुझे एक किताब याद आई जो मैंने हमारी शादी से पहले पढ़ी थी: *Making Peace with Your Past* (एच. नॉर्मन राइट द्वारा)। (संयोग से, शादी से पहले, मैं व्यक्तिगत रूप से एच. नॉर्मन राइट द्वारा शादी के विषय पर लिखी गई किताबों की बहुत सराहना करने लगा था।) इस किताब के मेरे मन में आने का कारण शायद यह था कि, जैसे-जैसे मैं ड्रामा देख रहा था, मुझे लगा कि इसकी मुख्य महिला पात्र—जो उस आदमी को भूल नहीं पा रही थी जिसके साथ उसने दस साल तक डेटिंग की थी और जिससे उसकी सगाई भी हो चुकी थी, लेकिन बाद में सगाई टूट गई थी—वह अपने उस पिछले प्रेम-संबंध के बचे हुए प्रभाव को अपने वर्तमान प्रेम-संबंध पर एक गहरा नकारात्मक साया डालने दे रही थी। (साथ ही, मैंने यह भी देखा कि जिस आदमी के साथ उसने अतीत में डेटिंग की थी—वह उससे पूरी तरह से रिश्ते तोड़ पाने में असफल रहा था—और वह लगातार उसके मामलों में दखल दे रहा था, जिससे उसकी अपनी वर्तमान शादी को बहुत नुकसान पहुँच रहा था।) परिणामस्वरूप, मैंने इस बात पर और गहराई से विचार करने का निश्चय किया है कि हम वास्तव में अतीत से आज़ादी कैसे पा सकते हैं; मैं इस विषय पर अपने व्यक्तिगत विचारों को यहाँ लिखकर व्यवस्थित और स्पष्ट करना चाहूँगा।

1. परमेश्वर का वह वचन जिसे मैं प्रार्थना में दृढ़ता से थामे रहता हूँ, वह यूहन्ना 8:32 में मिलता है: "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

2. यीशु के वचन—जो स्वयं सत्य हैं (यूहन्ना 14:6)—यह हैं कि हमें "अपने भाई को अपने हृदय से क्षमा करना चाहिए" (मत्ती 18:35)।

3. हालाँकि, हम यीशु के इन वचनों को जानने के बावजूद उनका पालन करने में असफल (या असमर्थ?) क्यों रहते हैं, इसका कारण यह है कि अतीत में जिन लोगों से हमने प्रेम किया था, उनके द्वारा हमारे हृदयों पर दिए गए घाव बहुत ही गहरे और बड़े होते हैं। (उदाहरण के लिए: एक प्यारे पिता या माता द्वारा दिए गए घाव; एक प्यारे जीवनसाथी द्वारा दिए गए घाव; एक प्यारे प्रेमी या प्रेमिका द्वारा दिए गए घाव; और इसी तरह अन्य।)

4. अपने माता-पिता, अपने जीवनसाथी, अपने बच्चों, अपने भाई-बहनों, या अपने रिश्तेदारों द्वारा दिए गए घावों के बारे में हमें क्या करना चाहिए? तो फिर, हमारे जीवन में आने वाली कठिनाइयों, कष्टों, दर्द और ज़ख्मों का हमें कैसे सामना करना चाहिए? अपनी किताब *The Dancing God* में, हेनरी नौवेन ने जवाब देने के चार खास तरीके सुझाए हैं। वह इन चार बातों को "भगवान के साथ नाचने के चार कदम" कहते हैं:

a. भगवान के साथ नाचने का पहला कदम है, उस दर्द और कष्ट पर शोक मनाना जिसे हम सहते हैं। जब रोने का समय हो, तो हमें ज़रूर रोना चाहिए। फिर भी, जब हम रोते हैं, तो हमें ऐसा क्रॉस के सामने करना चाहिए। इसके अलावा, जब हम दर्द और कष्ट में हों, तो हमें परमपिता परमेश्वर के सामने जाकर उन्हें ठीक-ठीक बताना चाहिए कि हमें कितना दर्द हो रहा है। हालाँकि, किसी वजह से, अपने दर्द, कष्ट और दुख को स्वीकार करने के बजाय, हम अक्सर उन्हें नकारने, नज़रअंदाज़ करने, या अपने दिल की गहराइयों में दबाने की कोशिश करते हैं। अगर हम ऐसा करते हैं, तो जिन कठिनाइयों से हम गुज़र रहे हैं, उनसे हमें कोई फ़ायदा नहीं हो सकता। इसके विपरीत—ठीक पुराने नियम के इस्राएलियों की तरह—जब भी हम किसी मुश्किल का सामना करते हैं, तो हर बार बड़बड़ाकर और शिकायत करके भगवान के खिलाफ़ पाप करने का हमारा बहुत ज़्यादा जोखिम होता है।

b. भगवान के साथ नाचने का दूसरा कदम है, हमारे दर्द और कष्ट के मूल कारणों का सीधे-सीधे सामना करना। हमें उन छिपे हुए नुकसानों को सीधे देखना चाहिए जिन्होंने हमें पंगु बना दिया है, और हमें नकारने, शर्म और अपराधबोध की कालकोठरी में कैद कर दिया है। हमारे दर्द और कष्ट के असल कारण क्या हैं? हम इन कारणों

का सामना करें या नहीं, यह हम तब तक नहीं चुन सकते, जब तक हम पहले यह पहचान न लें कि वे क्या हैं; फिर भी, अक्सर ऐसा लगता है कि हम जिस दर्द और कष्ट को सह रहे हैं, उसके असली कारणों से हम पूरी तरह अनजान रहते हैं। नतीजतन, हम न केवल अपने दर्द और दुख के कारणों का सीधे सामना करने में असमर्थ होते हैं, बल्कि अगर हमें *पता भी* हो कि वे कारण क्या हैं, तो भी हमारी मानवीय प्रवृत्ति हमें उनका सीधे सामना करने के बजाय उनसे बचने की ओर ले जाती है। इसका कारण बस यह है कि हमें टालने की आदत पड़ गई है। जब तक हम अपने दर्द और कष्ट के मूल कारणों का सीधे सामना नहीं करते, तब तक हम उस कृपा में हिस्सा नहीं ले सकते जो भगवान हमें उन परीक्षाओं के ज़रिए देते हैं जो हमें दी गई हैं।

c. नाच का तीसरा कदम है, दर्द, कष्ट, नुकसान और ज़ख्मों के *बीच में* कदम रखना, और उनसे *गुज़रना*। हमें नकारने में कभी भी बहुत ज़्यादा ऊर्जा बर्बाद नहीं करनी चाहिए। इसके बजाय, अपनी स्थिति की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए, हमें सीधे उस दर्द, पीड़ा, हानि और ज़ख्मों का सामना करना चाहिए जिन्हें हम अनुभव कर रहे हैं। अब हमें उनसे बचना नहीं चाहिए। हमें दर्द और पीड़ा की उस सुरंग में प्रवेश करना होगा। हालाँकि वह सुरंग अँधेरी और डरावनी हो सकती है, फिर भी हमें उसमें प्रवेश करना ही होगा। जब तक हम उस सुरंग में प्रवेश नहीं करेंगे, तब तक हमें मिली हुई परीक्षाओं से हमें कोई भी लाभ नहीं मिलेगा।

d. इस नृत्य का चौथा और अंतिम चरण यह है कि हम दर्द, पीड़ा, हानि और ज़ख्मों के बीच परमपिता परमेश्वर से मिलें। हमें दर्द, पीड़ा, हानि और ज़ख्मों की उस सुरंग में प्रवेश करना होगा, और वहाँ, हमें उस दर्द, पीड़ा, हानि और ज़ख्मों को महसूस करना होगा जिन्हें यीशु ने सहा था। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे अपने दर्द और ज़ख्मों का उपचार होता है। इसके अलावा, तब हमें प्रभु के एक साधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है—और हमें "ज़ख्मी उपचारक" (wounded healers) के रूप में उभारा जा सकता है।

5. *Healing for Damaged Emotions* (क्षतिग्रस्त भावनाओं का उपचार) नामक पुस्तक में, लेखक—डेविड ए. सीमैंड्स, जो भारत में एक पूर्व मिशनरी थे—कहते हैं कि "आहत भावनाओं" का सबसे आम रूप अपनी खुद की कीमत को पहचानने में विफलता है। वह इसे "एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति" के रूप में वर्णित करते हैं, "जो लगातार चिंता में रहता है, खुद को अपर्याप्त समझता है, हीन भावना (inferiority complex) से ग्रस्त रहता है, और लगातार खुद से कहता है, 'मैं किसी काम का नहीं हूँ।'" वह आगे कहते हैं कि "एक और

प्रकार का व्यक्ति 'पूर्णतावादी मानसिकता' (perfectionist complex) से ग्रस्त होता है; ये लोग लगातार प्रयास करते रहते हैं और कुछ न कुछ खोजते रहते हैं, फिर भी वे हमेशा अपराधबोध से घिरे रहते हैं और एक ऐसी सोच में फँसे रहते हैं जो यह ज़ोर देती है कि उन्हें *हमेशा* कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।" वह आगे जोड़ते हैं कि "आहत भावनाओं का एक और रूप भी है, जिसे यहाँ 'अत्यधिक संवेदनशीलता' (super-sensitivity) कहा गया है।" जो लोग अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, "वे लगातार गहरे भावनात्मक घावों के प्रति अतिसंवेदनशील बने रहते हैं।" इसके अलावा, कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका जीवन "डर" से भरा होता है। शायद इन सभी डरों में सबसे बड़ा डर असफलता का डर है। सीमैंड्स कहते हैं कि "ज़्यादातर ईसाई अपने भीतर मौजूद गंभीर भावनात्मक समस्याओं के अस्तित्व से इनकार करते हैं।" वह समझाते हैं कि, "क्योंकि वे यह मान लेते हैं कि एक 'पवित्र आत्मा से भरा ईसाई' होने से उनकी सभी समस्याएँ अपने आप हल हो जाएँगी, इसलिए वे अपने दर्दनाक भावनात्मक घावों को दबाते रहते हैं या छिपाते रहते हैं। या फिर, सच्ची आज़ादी की कमी वाली मानसिकता के कारण, वे अत्यधिक अपराधबोध से पीड़ित हो सकते हैं और यहाँ तक कि खुद को नुकसान भी पहुँचा सकते हैं।" हालाँकि, वह चेतावनी देते हैं कि "अनसुलझी समस्याएँ बस किसी व्यक्ति के जीवन की सतह के नीचे दबी रहती हैं, और बाद में विभिन्न रूपों में सामने आती हैं"—उदाहरण के लिए, शारीरिक बीमारियाँ, अवसाद, अनियमित व्यवहार, या एक दुखी घरेलू जीवन। यदि हम "अपने दिलों की गहराइयों में ऐसे घाव पाले हुए हैं जिन्होंने हमें अतीत से ही जकड़ रखा है," तो हमें यह याद रखना चाहिए: "ईश्वर चाहते हैं कि हम उस दमन की ज़ंजीरों को तोड़ दें जिन्होंने हमें अतीत से बाँध रखा है, और एक आज़ाद जीवन जिएँ; इसके अलावा, ईश्वर उन ज़ंजीरों को तोड़ने में और उस आज़ाद जीवन का आनंद लेने में हमारी मदद करते हैं।" डेविड ए. सीमैंड्स—भारत में एक पूर्व मिशनरी—इस बात की पुष्टि करते हैं कि ईश्वर हमारे घावों (हमारी "आहत भावनाओं") को भरते हैं, और वह इस प्रक्रिया में हमारी भूमिका के संबंध में छह कदम बताते हैं: (1) समस्या का सीधे-सीधे सामना करें; (2) यह स्वीकार करें कि समस्या, चाहे वह जो भी हो, उसके लिए आपकी भी कुछ ज़िम्मेदारी है; (3) खुद से पूछें कि क्या आप सचमुच ठीक होना चाहते हैं; (4) समस्या में शामिल सभी लोगों को माफ़ कर दें; (5) खुद को माफ़ कर दें; और (6) पवित्र आत्मा से कहें कि वह समस्या की जड़ को उजागर करे और आपको मार्गदर्शन दे कि इसके बारे में प्रार्थना कैसे करें (सीमैंड्स)।

6. रोमांटिक रिश्तों में मिले ज़ख्म हमारे लिए सचमुच बहुत ज़्यादा तकलीफ़देह हो सकते हैं। वे हमें इस हद तक भी पहुँचा सकते हैं कि हम अपनी ही आत्मा को छोड़ दें—या उससे मुँह मोड़ लें। क्योंकि रोमांटिक

रिश्तों में ऐसे ज़ख्मों के नतीजे इतने डरावने हो सकते हैं, इसलिए मैं इस मामले पर बहुत गंभीरता से सोचना चाहता हूँ, और इसे परमेश्वर के वचन की रोशनी में परखना चाहता हूँ। हालाँकि ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मैं नहीं जानता, फिर भी मैं उन विचारों को लिखकर रखना चाहूँगा जो मेरे मन में आए हैं।

a. पहला विचार जो मेरे मन में आता है, वह स्वाभाविक रूप से यीशु के ज़ख्मों के बारे में है। बेशक, जब हम किसी रोमांटिक रिश्ते में मिले ज़ख्मों से दुखी होते हैं, तो हो सकता है कि यीशु के ज़ख्मों का ख्याल हमारे मन में बिल्कुल भी न आए। हालाँकि, अगर परमेश्वर हमें यह कृपा दे कि हम जान-बूझकर यीशु के ज़ख्मों को याद करें, तो हमें इस बात पर सोचना चाहिए कि यीशु ने वे ज़ख्म *क्यों* सहे थे। इसका कारण यह है कि यीशु ने वे ज़ख्म *हमारी खातिर* सहे थे। यीशु के ये ज़ख्म उन ज़ख्मों से बिल्कुल अलग हैं जिन्हें हम आम तौर पर "रोमांटिक रिश्तों में मिले ज़ख्म" कहते हैं। रोमांटिक रिश्तों में, हम दूसरे व्यक्ति *की वजह से* ज़ख्म सहते हैं—न कि दूसरे व्यक्ति *के लिए*... कोई भी व्यक्ति बिना किसी मकसद के किसी दूसरे व्यक्ति *के लिए* या *उसकी खातिर* ज़ख्म नहीं सहता। अगर हम किसी रोमांटिक रिश्ते में ऐसे ज़ख्म सहने की हिम्मत रखते हैं, तो मेरा मानना है कि हम रिश्ते के एक ऊँचे आयाम की ओर बढ़ रहे हैं—एक ऐसा आयाम जो यीशु के प्रेम की नकल करने की कोशिश करता है।

b. मेरा दूसरा विचार "ज़ख्मों को स्वीकार करने की क्षमता" की अवधारणा से जुड़ा है। यीशु ने हमारी खातिर ज़ख्म सहे। क्या हमें भी, ईसाई होने के नाते, उन लोगों की खातिर ज़ख्म सहने की क्षमता नहीं होनी चाहिए जिनसे हम प्यार करते हैं? अगर हम सचमुच ऐसा कर सकते हैं, तो मेरा मानना है कि हम प्रभु के प्रेम की एक सचमुच असाधारण—और परिपक्व—अभिव्यक्ति की ओर बढ़ रहे हैं। हालाँकि, ऐसा लगता है कि बहुत से रोमांटिक रिश्तों में अपने साथी *के लिए* या *उसकी खातिर* ज़ख्म स्वीकार करने की क्षमता की बहुत ज़्यादा कमी होती है। बेशक, कुछ लोग यह दावा कर सकते हैं कि वे अपने प्रिय की खातिर या उसके लिए ज़ख्म *सहते हैं*। फिर भी, मैं यह सवाल करता हूँ कि वे सचमुच इस तरह के दुख को कितना सह सकते हैं। इसके अलावा, मुझे शक है कि कुछ लोग शायद किसी भ्रम में जी रहे हों—वे यह पहचान नहीं पा रहे कि घावों को सहने की उनकी क्षमता सचमुच प्रभु की नज़रों में स्वीकार्य है, या सिर्फ़ उनकी अपनी नज़रों में।

c. मेरा तीसरा विचार "चंगाई" शब्द पर केंद्रित है। जो घाव लगे हैं, उन्हें बाँधा और ठीक किया जाना चाहिए; मैं सोचता हूँ कि यह ठीक-ठीक कैसे संभव है। ज़ाहिर है, बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ही चंगा करता है। विशेष रूप से, भजन संहिता 147:2 यह संकेत देता है कि हमारे घावों को भरने की प्रक्रिया में, प्रभु सबसे पहले हमारे अंदर से टूटे हुए दिलों को ठीक करता है, और उसके बाद ही हमारी बाहरी चोटों को ठीक करने की ओर बढ़ता है। फिर भी, जब हम विचार करते हैं कि प्रभु असल में *कैसे* चंगा करता है—विशेष रूप से, वह उन "टूटे हुए दिलों" को कैसे जोड़ता है—तो हमें एहसास होता है कि वह ऐसा परमेश्वर पिता के प्रेम के माध्यम से करता है: एक ऐसा प्रेम जो मानवीय रिश्तों में पाए जाने वाले रोमांटिक प्रेम से कहीं ज़्यादा महान, व्यापक और गहरा है। यह केवल परमेश्वर पिता के इसी प्रेम के माध्यम से है कि हमारे रोमांटिक रिश्तों में हमें जो घाव मिले हैं... वे घाव ठीक हो सकते हैं। ठीक वैसे ही जैसे एक विशाल महासागर एक छोटी सी धारा को अपने में समा लेता है, चंगाई का काम तब होता है जब परमेश्वर का असीम प्रेम इंसान के सबसे गहरे घावों को भी ढक लेता है। रोमांटिक रिश्तों के दौरान, हमें अलगाव के कारण गहरे और व्यापक घाव लग सकते हैं; निराशा के उस माहौल में जहाँ हम हर चीज़ से—लोगों से भी—और अंततः स्वयं परमेश्वर से भी नफ़रत करने लगते हैं, और जहाँ हमें खुद को ही छोड़ देने का प्रलोभन भी हो सकता है, परमेश्वर निश्चित रूप से हमें—अपने घायल बच्चों को—नहीं छोड़ता, और न ही वह कभी हमें जाने देगा। इसके विपरीत, हमारे स्वर्गीय पिता सक्रिय रूप से हमें खोजते हैं और हमारे करीब आते हैं, और हमें अपने प्रेम की शरण में और भी मज़बूती से गले लगाना चाहते हैं—क्योंकि हम उनके सुंदर बेटे और बेटियाँ हैं, जिन्हें वह हमारी टूटी हुई हालत के बावजूद संजोकर रखते हैं और बहुत सम्मान देते हैं। जब हम खुद को परमेश्वर की गोद में सौंप देते हैं—ठीक वैसे ही जैसे योना ने किया था—जब हम खुद को क्रूस पर यीशु की फैली हुई बाहों में थामे जाने देते हैं, और जब हम विश्वास की आँखों से उसके कीलों से छिदे हाथों, उसके घायल पहलू और उसके ज़ख्मों को छूते हैं, तो हमारे अपने घाव पूरी तरह से मिट जाएँगे, और उनका कोई निशान बाकी नहीं रहेगा।

7. अंत में, मैं जोसेफ़ के बारे में संक्षेप में बात करके अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा—एक ऐसा "ज़ख्मी मरहम लगाने वाला" जिसे अपने अतीत से सच्ची आज़ादी मिली। जैसा कि 'जेनेसिस' (Genesis) की किताब में बताया गया है, जोसेफ़ को उसके पिता, जैकब, बहुत प्यार करते थे; लेकिन, उसके दस बड़े भाइयों ने उसे प्यार

नहीं, बल्कि नफ़रत दी—यहाँ तक कि उनके हाथों उसकी जान भी जाते-जाते बची। फिर भी, परमेश्वर ने जोसेफ़ को मौत के उस मुँह से बचा लिया; आखिरकार, सत्रह साल की उम्र में, उसे मिस्र में गुलामी के लिए बेच दिया गया। मिस्र के एक जनरल, पोटिफ़र के घर में गुलाम के तौर पर सेवा करने के बाद—उसे बेकसूर होते हुए भी फँसाया गया और जेल में डाल दिया गया। अगर जोसेफ़ अतीत में ही फँसा रहता, तो वह यकीनन अपने भाइयों को कभी माफ़ नहीं कर पाता (सच तो यह है कि शायद उसके लिए ऐसा करना नामुमकिन होता); इसके बजाय, वह शायद मन में कड़वाहट पालता और उनसे बदला लेने की सोचता (जेनेसिस 50:15)। लेकिन, बदला लेने के बजाय, उसने अपने डरे हुए भाइयों को दिलासा देना चुना—और वादा किया कि वह न सिर्फ़ उनका, बल्कि उनके बच्चों का भी ख्याल रखेगा... उसने अपनी मौत तक (110 साल की उम्र तक) उनका ख्याल रखा (पद 20–22, *द मॉडर्न मैन बाइबल*)। जोसेफ़ ऐसा कैसे कर पाया? वह अपने भाइयों को माफ़ करके—और तो और, उनसे सच्चे दिल से प्यार करके—अतीत से आज़ादी का मज़ा कैसे ले पाया? मुझे इसका जवाब जेनेसिस 50:19 में मिलता है: "तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने की सोची थी, लेकिन परमेश्वर ने उसे भलाई में बदल दिया, जिससे मैं आज बहुत से लोगों की जान बचा पाया" (*द मॉडर्न मैन बाइबल*)।

8. मुझे अब यह विश्वास हो गया है कि यूसुफ की अपने भाइयों को सच्चे दिल से माफ़ करने की क्षमता के पीछे का राज़ दो खास बातों पर टिका है। पहली बात तो बिल्कुल साफ़ है: यूसुफ के भाइयों ने सचमुच उसके साथ बुरा किया था। नफ़रत से भरे होकर, उन्होंने उसे मारने की साज़िश रची, और आखिर में उसे मिस्र में गुलामी के लिए बेच दिया। ज़ाहिर है, उन्होंने न सिर्फ़ परमेश्वर के खिलाफ़ पाप किया, बल्कि खुद यूसुफ के खिलाफ़ भी पाप किया। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे हम नकार नहीं सकते। यूसुफ भी, बिना किसी शक के, इस सच्चाई से वाकिफ़ था और इसे नकार नहीं सकता था। फिर भी, हैरानी की बात यह है कि यूसुफ ने पहली बात के बजाय एक *दूसरी* बात पर अपना विश्वास रखा। ठीक इसी वजह से यूसुफ अपने भाइयों को इतनी सच्ची माफ़ी दे पाया। वह दूसरी बात यह है: “तुमने मेरे खिलाफ़ बुरा सोचा था, लेकिन परमेश्वर ने उसे भलाई में बदल दिया” (पद 20)। हालाँकि यह सच है कि उसके भाइयों का इरादा उसे नुकसान पहुँचाने का था, लेकिन यूसुफ ने खुद को सिर्फ़ उसी सच्चाई पर ध्यान देने तक सीमित नहीं रखा, और न ही उसने खुद को उस सच्चाई में पूरी तरह डूबने दिया। इसके बजाय, अपने भाइयों के किए गए कामों पर अटके रहने के बजाय, उसने अपनी ज़िंदगी को उस काम पर केंद्रित करने का फ़ैसला किया जो परमेश्वर ने पूरा किया था। दूसरे शब्दों में, यूसुफ ने—विश्वास

के ज़रिए—इस सच्चाई को स्वीकार किया कि हालाँकि उसके भाइयों के कामों का मकसद उसे नुकसान पहुँचाना था, लेकिन परमेश्वर ने उन्हीं कामों को किसी अच्छी चीज़ में बदल दिया, और यूसुफ को मिस्र भेजकर वहाँ का प्रधानमंत्री बना दिया। इसके अलावा, यूसुफ अपने भाइयों को इतनी दिल से माफ़ी इसलिए दे पाया क्योंकि वह परमेश्वर के उसके साथ किए गए व्यवहार के पीछे के असली मकसद को समझ गया था। वह ईश्वरीय मकसद—यानी, परमेश्वर की इच्छा—यह थी कि "बहुत से लोगों की जान बचाई जाए, जैसा कि आज हो रहा है" (पद 20)। यूसुफ ने परमेश्वर की इस इच्छा को समझ लिया था, ठीक इसी वजह से वह उन भाइयों को सच्चे दिल से माफ़ कर पाया जिन्होंने कभी उसे खत्म करने की कोशिश की थी।

9. तो, यही है माफ़ी का असली राज़। दूसरों द्वारा हमारे खिलाफ़ किए गए बुरे कामों पर ध्यान देने के बजाय, जब हम विश्वास के साथ परमेश्वर के काम को स्वीकार करते हैं—जो ऐसी मुश्किल परिस्थितियों में भी सभी चीज़ों को भलाई के लिए एक साथ काम करने का कारण बनता है—तो हमें उन लोगों को माफ़ करने की क्षमता मिल जाती है जिन्होंने हमारे खिलाफ़ पाप किया है। अगर हम सिर्फ़ दूसरों द्वारा हमारे खिलाफ़ किए गए गलत कामों या पापों पर ही अटके रहेंगे, तो हम उन्हें कभी माफ़ नहीं कर पाएँगे। लेकिन, जब हम परमेश्वर की कृपा को पहचान लेते हैं—यह समझते हुए कि कैसे उन्होंने उन्हीं गलतियों और पापों के ज़रिए काम करके एक बड़ी भलाई की है—तो हमें माफ़ करने की शक्ति मिल जाती है। जब माफ़ी देने की यह क्षमता हमारे अंदर आ जाती है, तो हमारी माफ़ी सिर्फ़ दूसरे व्यक्ति को उसकी गलतियों और पापों से बरी करने तक ही सीमित नहीं रहती; बल्कि, यह वहाँ खत्म हो ही नहीं सकती। दूसरे शब्दों में, यूसुफ़ सिर्फ़ अपने भाइयों को माफ़ करके ही नहीं रुक गए; बल्कि, उनके और उनके बच्चों की देखभाल के लिए पूरी तरह समर्पित दिल से, उन्होंने उन्हें सांत्वना भरे सच्चे शब्द कहे। अपनी भावनाओं को पूरी तरह से एक तरफ़ रखकर, और इसके बजाय परमेश्वर पिता के दयालु दिल से काम करते हुए, यूसुफ़ ने पूरी लगन से अपने भाइयों को दिलासा देने की कोशिश की। यूसुफ़ की माफ़ी सिर्फ़ निष्क्रिय नहीं थी; यह निश्चित रूप से उनके भाइयों की गलतियों और पापों को सिर्फ़ माफ़ करने तक ही खत्म नहीं हुई। उनकी माफ़ी सक्रिय थी। वह इससे भी आगे बढ़े, और खुद को अपने भाइयों की जगह पर रखकर उनके प्रति अपना प्यार ज़ाहिर किया। उन्होंने न सिर्फ़ अपने भाइयों को गहरी सांत्वना दी, जो डर के मारे काँप रहे थे, बल्कि अपने भाइयों और उनके पूरे परिवारों की ज़रूरतों को पूरा करने का वादा भी किया। यूसुफ़ ने उनकी देखभाल की पूरी ज़िम्मेदारी लेने का वचन दिया। ऐसी माफ़ी से भरा जीवन जीने के लिए, हमें

एक दूसरी सच्चाई पर ध्यान देना होगा: वह काम जो परमेश्वर ने खुद किया है। हमें उस ईश्वरीय कृपा को पहचानना होगा जिसके ज़रिए परमेश्वर सभी चीज़ों को इस तरह से व्यवस्थित करते हैं कि वे मिलकर भलाई के लिए काम करें। यहाँ तक कि जब हम दूसरों के हाथों दुख उठाते हैं, तब भी हमें अपनी आस्था की नज़रें परमेश्वर पर टिकाए रखनी चाहिए—जो दुख के उन पलों में भी सभी चीज़ों को भलाई के लिए काम में लाते रहते हैं—और, धैर्यपूर्वक सहन करते हुए, हमें यह चखकर देखना चाहिए कि प्रभु कितने भले हैं (भजन संहिता 34:8)। और जब हम परमेश्वर की उस भलाई को चखते हैं, तो हम दूसरों को सचमुच माफ़ कर पाएँगे।

10. जब हमारे दिल दुखी और भारी होते हैं, जब हम निराश और उदास महसूस करते हैं, या जब हम चिंताओं और परेशानियों के बीच संघर्ष कर रहे होते हैं, तो हमें आस्था के साथ आशा के प्रभु की ओर देखना चाहिए। प्रभु निश्चित रूप से हमारी मदद के लिए आएँगे। वह निस्संदेह हमें चंगाई देंगे। अपने ही समय में और अपने ही तरीके से, प्रभु हमारे टूटे हुए दिलों की कोमलता से देखभाल करेंगे और हमारी घायल आत्माओं को चंगा करेंगे। प्रभु हमारे दिलों को आज़ाद करेंगे। (जेम्स किम, "द ब्रोकनहार्टेड")

बुद्धिमानों के रिश्ते: विवाह के संदर्भ में

[नीतिवचन 3:27-35]

मेरा मानना है कि, सभी मानवीय रिश्तों में, वह रिश्ता जो सबसे ज़्यादा खुशी, आनंद और संतोष लाता है, वह पति और पत्नी के बीच का रिश्ता है। साथ ही, मेरा यह भी मानना है कि यही रिश्ता—विवाह—गहरे दुख, पीड़ा और असंतोष का कारण भी बन सकता है। नतीजतन, जहाँ पति-पत्नी एक-दूसरे के सबसे बड़े सांत्वना देने वाले होते हैं—जो एक-दूसरे को सबसे ज़्यादा दिलासा और प्रोत्साहन देते हैं—वहीं दूसरी ओर, वे एक-दूसरे के लिए सबसे बड़े हतोत्साहन और निराशा का कारण भी बन सकते हैं। तो फिर, हमें पति और पत्नी के रिश्ते को कैसे निभाना चाहिए? एक ऐसा वैवाहिक रिश्ता बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए जो परमेश्वर की महिमा करे? "बुद्धिमानों के रिश्ते: विवाह के संदर्भ में" शीर्षक के तहत, मेरा इरादा आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 3:27–31—पर मनन करना है, और विवाह के संदर्भ में तीन विशिष्ट सिद्धांतों को लागू करके उससे सीख लेने का प्रयास करना है। मेरी यह दिली उम्मीद है कि हम सभी—पति और पत्नी दोनों—मसीह-केंद्रित विवाह बनाने का प्रयास करेंगे, जिनकी पहचान प्रभु के वचन के प्रति आज्ञाकारिता हो, और इस प्रकार हम परमेश्वर की महिमा करेंगे।

सबसे पहले, हमें उन लोगों से अपनी उदारता नहीं रोकनी चाहिए जो इसके हकदार हैं।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश, नीतिवचन 3:27–28 पर फिर से नज़र डालें: "जिनका भला करना तुम्हें उचित है, उनका भला करने से मत रुकना, जब ऐसा करना तुम्हारे हाथ में हो। अपने पड़ोसी से यह मत कहना, 'जाओ, और कल वापस आना, और कल मैं तुम्हें दूँगा,' जबकि वह चीज़ तुम्हारे पास मौजूद हो।" मैंने पहले इस सीख को मालिक और कर्मचारी के रिश्ते पर लागू किया था। लेकिन आज, मैं इसी सीख को पति और पत्नी के रिश्ते

पर लागू करना चाहता हूँ। पतियों के तौर पर, हमें अपनी पत्नियों को प्यार देने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए—क्योंकि वे ही वे लोग हैं जो हमारे प्यार की सबसे ज़्यादा हकदार हैं। विशेष रूप से, हम पतियों को यह गलत धारणा छोड़ देनी चाहिए कि, सिर्फ इसलिए कि हमारी पत्नियाँ हमारी सबसे करीबी साथी हैं—हमारा "दूसरा आधा हिस्सा"—तो हमें किसी तरह यह अधिकार मिल जाता है कि हम दूसरों को उनसे ज़्यादा प्यार और स्नेह दें। हम यह दावा कैसे कर सकते हैं कि हम अपने पड़ोसियों से प्यार करते हैं, जब हम अपनी पत्नियों से भी ठीक से प्यार नहीं कर पाते? मुझे लगता है कि हमारे कई बहानों में से एक यह भी है कि हमारी पत्नियों को पहले प्यार के लायक व्यवहार दिखाना चाहिए—यानी हमारा सम्मान करना चाहिए—तभी हम उनसे प्यार करने के लिए खुद को तैयार कर पाएंगे। हालाँकि, इफिसियों 5:25 हमें पतियों को स्पष्ट रूप से निर्देश देता है कि हम अपनी पत्नियों से वैसे ही प्यार करें, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्यार किया और उसके लिए खुद को बलिदान कर दिया। ऐसा नहीं है कि हम अपनी पत्नियों से इसलिए प्यार करते हैं *क्योंकि* उन्होंने कोई ऐसा काम किया है या कोई ऐसी बात कही है जो उन्हें हमारे स्नेह के लायक बनाती हो; बल्कि, हमें अपनी पत्नियों से इसलिए प्यार करना चाहिए क्योंकि हमें उनसे प्यार करने के लिए बुलाया गया है, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने कलीसिया से प्यार किया। हमारी पत्नियाँ स्वाभाविक रूप से हमारा प्यार पाने की हकदार हैं। इसलिए, हम पतियों को अपनी पत्नियों को उन लोगों के रूप में पहचानना चाहिए जो सही मायने में हमारे प्यार की हकदार हैं, और हमें कभी भी उनसे अपना प्यार नहीं रोकना चाहिए। और फिर, पत्नियों को अपने पतियों के लिए क्या करना चाहिए? उन्हें सम्मान दिखाना चाहिए। पत्नियों को अपने पतियों को वह सम्मान देना चाहिए जो सही मायने में उनका हक है। बेशक, पत्नियाँ अपने पतियों का सम्मान न करने के लिए यह कारण दे सकती हैं: "मैं अपने पति का सम्मान कैसे करूँ, जब उनके शब्दों और कामों से मुझे ऐसा करने का कोई कारण ही नहीं मिलता?" इफिसियों 5:24 कहता है कि जिस तरह कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, उसी तरह पत्नियों को भी हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए—यानी उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान दिखाना चाहिए। इसलिए, मसीही पत्नियों को अपने पतियों का सम्मान और आज्ञापालन वैसे ही करना चाहिए, जैसे वे प्रभु का करती हैं।

दूसरा, हमें बिना किसी कारण के दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।

कृपया आज के वचन पर फिर से नज़र डालें, नीतिवचन 3:29–30: "अपने पड़ोसी के खिलाफ नुकसान पहुँचाने की योजना मत बनाओ, जो तुम्हारे पास भरोसे के साथ रहता है। बिना किसी कारण के किसी व्यक्ति पर आरोप

मत लगाओ—जब उसने तुम्हें कोई नुकसान न पहुँचाया हो।" हमारे बगल में "सुरक्षित" रूप से रहने वाला सबसे करीबी पड़ोसी—यानी वह व्यक्ति जो हमारे अंदर सबसे ज़्यादा भरोसे की भावना जगाता है—विवाह के संदर्भ में, हमारा पति या हमारी पत्नी ही होता है। हालाँकि, समस्या यह है कि वैवाहिक संबंधों में, शैतान आपसी भरोसे को बढ़ावा देने की कोशिश नहीं करता, बल्कि हममें से हर एक के दिल में शक और संदेह के बीज बोकर उस भरोसे को तोड़ना चाहता है। नतीजतन, हम पति-पत्नी अक्सर छोटी-छोटी बातों पर भी आपस में बुरी तरह लड़ने-झगड़ने लगते हैं। इन सब की जड़ उन गलतफहमियों में है जो हमारे बीच बहुत छोटी-छोटी बातों पर पैदा हो जाती हैं। इसके अलावा, मुझे लगता है कि जब हम इन गलतफहमियों में फँसे होते हैं, तो अक्सर हमें यह पता ही नहीं होता—या सही तरीका नहीं आता—कि बातचीत कैसे की जाए ताकि ये गलतफहमियाँ सुलझ सकें। नतीजतन, जो भरोसा कभी हमारे बीच था, वह इन गलतफहमियों की वजह से टूट जाता है; हम अपने दिल के दरवाज़े खोलना या अपने जीवनसाथी के साथ अपने मन की बातें शेयर करना बंद कर देते हैं। परिणामस्वरूप, हम सचमुच एक गहरा और करीबी रिश्ता बनाने में असमर्थ हो जाते हैं। लेकिन, समस्या यहीं खत्म नहीं होती; जैसे-जैसे हमारे दिलों में गलतफहमियाँ जमा होती जाती हैं, वे अंदर ही अंदर बढ़ती और पकती रहती हैं, और आखिरकार असंतोष, शिकायतें और गहरा अविश्वास पैदा करती हैं। इस तरह, जो गुस्सा चुपचाप अंदर ही अंदर पनप रहा होता है—अक्सर बहुत ही छोटी-छोटी बातों पर—वह अचानक फूट पड़ता है, जिससे ज़ोरदार बहसें और कड़वे झगड़े होते हैं। अंततः, पति और पत्नी का रिश्ता एक प्यार भरी साझेदारी से बदलकर आपसी दुश्मनी—यानी दुश्मनों जैसा रिश्ता—बन जाता है। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? पतियों को अपनी पत्नियों के प्रति और पत्नियों को अपने पतियों के प्रति कौन से खास कदम उठाने चाहिए? हमें बेबुनियाद आरोप लगाने और झगड़े करने से बचना चाहिए (पद 30)। इसके अलावा, हमें ऐसा जोड़ा नहीं बनना चाहिए जो एक-दूसरे को बेवजह नुकसान पहुँचाए, या एक-दूसरे की बुराई करे या बुरी साज़िशें रचे। इसके बजाय, हम जोड़ों को एक-दूसरे के लिए—सबसे करीबी पड़ोसी—बनने की कोशिश करनी चाहिए, ऐसे पड़ोसी जो एक-दूसरे में सबसे गहरा भरोसा जगाते हों। इसे हासिल करने के लिए, हमें प्रभु की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए—जो हमारी शादी के असली मालिक हैं—और पूरी ईमानदारी के साथ अपना जीवन बिताना चाहिए। तभी एक पत्नी अपने पति पर और एक पति अपनी पत्नी पर भरोसा कर पाएगा। भले ही ऐसा न भी हो, फिर भी क्योंकि हम प्रभु पर भरोसा करते हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे पर भरोसा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

तीसरी बात, हमें हिंसक लोगों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

आज के वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 3:31: "किसी हिंसक व्यक्ति से ईर्ष्या मत करो, और न ही उसके किसी भी तरीके को अपनाओ।" जब हम इस बुरी दुनिया में रहते हैं, तो कई बार ऐसा होता है कि हम हिंसक लोगों, पापियों या दुष्टों की समृद्धि देखकर ईर्ष्या करने लगते हैं (नीतिवचन 23:17; 24:1, 19)। नतीजतन, जब हम दुष्टों की सफलता से ईर्ष्या करते हैं, तो हम ठोकर खा सकते हैं (भजन 73:1)। खुद से यह पूछते हुए कि, "ऐसा क्यों है कि हम—जो यीशु में विश्वास करते हैं—दुख उठाते हैं, जबकि हिंसक, पापी और दुष्ट लोग फलते-फूलते हैं?" हम आसानी से ठोकर खा सकते हैं और उन दुष्ट लोगों के तरीकों पर चलकर, परमेश्वर के विरुद्ध पाप कर सकते हैं। हालाँकि, आज के पाठ—नीतिवचन 3:31—में बुद्धिमान राजा सुलैमान हमें निर्देश देते हैं कि हम हिंसक लोगों से ईर्ष्या न करें, और न ही उनके किसी भी तरीके को अपनाएँ। हमें हिंसक लोगों से ईर्ष्या क्यों नहीं करनी चाहिए या उनके किसी भी तरीके को क्यों नहीं अपनाना चाहिए? इसका क्या कारण है?

आज के अंश—नीतिवचन 3:32–35—में बाइबल चार खास कारण बताती है (वाल्वोर्ड)। जब हम इन चार कारणों पर विचार करते हैं, तो मैं यह देखना चाहूँगा कि ये एक पति और पत्नी के रिश्ते पर कैसे लागू होते हैं।

(1) पहला कारण यह है कि परमेश्वर कुटिल लोगों से घृणा करता है।

आज के वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 3:32: "क्योंकि यहोवा कुटिल लोगों से घृणा करता है, परन्तु सीधे लोगों को अपना भेद बताता है।" मुख्य कारण यह है कि हमें हिंसक या दुष्ट लोगों की समृद्धि से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए—और न ही उनके तरीकों की नकल करनी चाहिए—क्योंकि परमेश्वर उनसे घृणा करता है। इस स्पष्ट कारण के सामने, क्या हमारे पास कोई बहाना बनाने या अपनी बात को सही ठहराने की कोई गुंजाइश बचती है? यह एक सरल, सीधा और स्वतः-स्पष्ट कारण है। क्योंकि परमेश्वर उनसे घृणा करता है, इसलिए हमें हिंसक या दुष्ट लोगों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, और न ही उनके नक्शेकदम पर चलना चाहिए। इसके बजाय, आपको और मुझे सीधे और ईमानदार लोग बनने का प्रयास करना चाहिए। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है

कि परमेश्वर सीधे लोगों से प्रेम करता है। इसके अलावा, इसका कारण यह भी है कि केवल सीधे लोग ही परमेश्वर के साथ गहरी संगति का आनंद ले सकते हैं।

हम वर्तमान में ईमानदारी के संकट का सामना कर रहे हैं। दूसरों के साथ अपने संबंधों को एक तरफ रख दें, तो भी हम अपने वैवाहिक संबंधों के भीतर भी ईमानदारी के संकट का सामना कर रहे हैं—ऐसे संबंध जिनमें हम प्रभु में "एक देह" बन गए हैं, और अत्यंत घनिष्ठता से एक-दूसरे से बंधे हुए हैं। इसका मूल कारण यह है कि हम, एक जोड़े के रूप में, कुटिल लोगों से ईर्ष्या करने लगे हैं; परिणामस्वरूप, एक-दूसरे के साथ सीधे और ईमानदार हृदय से व्यवहार करने के बजाय, हम एक-दूसरे के साथ कुटिल हृदय से व्यवहार करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, हम जोड़ों में न केवल प्रभु के साथ गहरी संगति की कमी होती है, बल्कि हम एक-दूसरे के साथ भी गहरी संगति साझा करने में असफल रहते हैं। यह किसी भी तरह से उस प्रकार का वैवाहिक संबंध नहीं है जिसकी प्रभु हमसे अपेक्षा करता है। जिस संबंध की प्रभु हमसे अपेक्षा करता है, उसकी विशेषता गहरी संगति है—न केवल उसके साथ, बल्कि एक-दूसरे के साथ भी—और यह सब प्रभु में हमारे जीवन के संदर्भ में होना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए, हमें कुटिलता को त्याग देना चाहिए और ईमानदारी को अपनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार पति प्रभु के प्रति ईमानदार होते हैं, उसी प्रकार उन्हें अपनी पत्नियों के प्रति भी ईमानदार होना चाहिए। यही बात पत्नियों पर भी लागू होती है: जिस प्रकार वे प्रभु के प्रति ईमानदार होती हैं, उसी प्रकार उन्हें अपने पतियों के प्रति भी ईमानदार होना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम प्रभु में एक-दूसरे के साथ गहरी संगति साझा करने में सक्षम हो पाते हैं।

(2) दूसरा कारण यह है कि परमेश्वर दुष्ट लोगों पर श्राप देता है।

आज के शास्त्र-वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 3:33: "दुष्ट के घर पर यहोवा का श्राप रहता है, परन्तु धर्मियों के घर पर वह आशीष देता है।" नीतिवचन की पूरी किताब में, बुद्धिमान राजा सुलैमान बार-बार हमें सलाह देते हैं कि हम दुष्टों की समृद्धि से ईर्ष्या न करें (नीतिवचन 23:17; 24:1, 19)। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने दुष्टों के घर को श्राप दिया है (नीतिवचन 3:33)। हालाँकि, हमारी इंसानी नज़रों से देखने पर ऐसा लग सकता है कि दुष्ट लोग अच्छा खा-पी रहे हैं, अच्छी ज़िंदगी जी रहे हैं, और इस धरती पर तरक्की कर रहे हैं, लेकिन बाइबल हमें बताती है कि उनका अंतिम परिणाम बर्बादी और पूरी तरह से विनाश है (भजन

संहिता 73:18-19)। फिर भी, आज का वचन हमें भरोसा दिलाता है कि परमेश्वर धर्मियों पर आशीष बरसाते हैं (नीतिवचन 3:33)। इसलिए, यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए लोगों के तौर पर, दुष्टों की समृद्धि से ईर्ष्या करने के बजाय, हमें धर्मियों के दुख में आनंद मनाना चाहिए। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि हमारे प्रभु यीशु ने भी दुख सहे थे। इसके अलावा, यीशु के साथ दुख में सहभागी होना परमेश्वर के अनुग्रह का एक उपहार है (फिलिप्पियों 1:29)।

हमें दुख पसंद नहीं है। कौन सा जोड़ा दुख सहने में कभी आनंद महसूस करेगा? नतीजतन, कई बार ऐसा होता है जब हम खुद को दुष्टों की समृद्धि से ईर्ष्या करते हुए पाते हैं। फिर भी, आज का वचन साफ-साफ कहता है: परमेश्वर न केवल दुष्टों से घृणा करते हैं, बल्कि उन पर श्राप भी देते हैं। इसके विपरीत, बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर न केवल सीधे लोगों से प्रेम करते हैं, बल्कि धर्मियों पर आशीष भी बरसाते हैं। इसलिए, एक जोड़े के तौर पर, हज़ारों दुष्ट लोगों की समृद्धि से ईर्ष्या करने और उसका पीछा करने के बजाय, हमें किसी एक धर्मी व्यक्ति के दुख में सहभागी होना चुनना चाहिए। इसका क्या कारण है? इसका कारण यह है कि हमारे लिए—एक शरीर के रूप में एक हुए विवाहित जोड़े के तौर पर—प्रभु के दुखों में सहभागी होना एक अनुग्रह है (फिलिप्पियों 1:29)। यदि हम, एक जोड़े के तौर पर एक होकर, धार्मिकता का जीवन जी सकते हैं और प्रभु की खातिर दुख सह सकते हैं, तो परमेश्वर निश्चित रूप से हमें आशीष देंगे।

(3) तीसरा कारण यह है कि परमेश्वर घमंडियों का मज़ाक उड़ाते हैं।

आज के वचन के अंश, नीतिवचन 3:34 पर नज़र डालें: "निश्चित रूप से वह ठट्ठा करने वालों का मज़ाक उड़ाते हैं, लेकिन नम्र लोगों को अनुग्रह प्रदान करते हैं।" जैसा कि हमने पहले नीतिवचन 1:26 में मनन किया था, हमने यह सच्चाई पहले ही सीख ली है: जब हम परमेश्वर की डांट पर ध्यान देने से इनकार करते हैं (पद 24)—और इसके बजाय उसकी सारी सलाह का तिरस्कार करते हैं और उसके सुधार को ठुकरा देते हैं (पद 25)—तो हम पर विपत्ति आएगी (पद 26); और जब हम पर आतंक छा जाएगा, तो परमेश्वर हमारा मज़ाक उड़ाएगा (पद 26)। इस प्रकार, जब हम अहंकारी बन जाते हैं—उसकी डांट सुनने से इनकार करते हैं और इसके बजाय उसका तिरस्कार करते हैं—तो परमेश्वर हमारा मज़ाक उड़ाता है। आज के अंश, नीतिवचन 3:34 में, राजा सुलैमान भी

ऐसा ही संदेश देते हैं। परमेश्वर अहंकारी लोगों का मज़ाक उड़ाता है। बाइबल घोषणा करती है कि परमेश्वर अहंकारी लोगों का मज़ाक उड़ाता है—उन लोगों का जो अपने घमंड में, परमेश्वर के सुधार को स्वीकार करने से इनकार करते हैं और इसके बजाय उसका तिरस्कार करते हैं; जो परमेश्वर की महिमा के बजाय अपनी ही महिमा की खोज में रहते हैं। इसलिए, हमें कभी भी अहंकारी नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत, हमें विनम्र होना चाहिए। क्यों? इसका कारण यह है कि परमेश्वर विनम्र लोगों पर कृपा करता है।

विवाहित जोड़ों के रूप में, हमें अहंकार से सावधान रहना चाहिए। शैतान हमारे दिलों में अहंकार बोने की कोशिश करता है, और हमें ऐसे स्वार्थी व्यक्तियों में बदल देता है जो—एक-दूसरे की विनम्रता से सेवा करने के बजाय—अपने जीवनसाथी से श्रेष्ठता की स्थिति से प्रेम या सम्मान की मांग करते हैं। हमें शैतान के इस प्रलोभन के विरुद्ध लड़ना चाहिए। इस आत्मिक लड़ाई में विजयी होने के लिए, हमें—जोड़ों के रूप में—अपनी नज़रें यीशु पर टिकाए रखनी चाहिए: वह जिसने विनम्र हृदय धारण किया और परमेश्वर पिता की इच्छा का पालन किया, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक भी (फिलिप्पियों 2:5–8)। इसलिए, हमें एक-दूसरे को स्वयं से अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए (पद 3)। इसके अलावा, हममें से प्रत्येक को न केवल अपने हितों पर, बल्कि अपने-अपने जीवनसाथी के हितों पर भी ध्यान देना चाहिए (पद 4)। जब हम ऐसा करेंगे, तो प्रभु—जो हमारा परम आनंद है—हमारे आनंद को पूर्ण कर देगा (पद 4)।

(4) चौथा और आखिरी कारण यह है कि परमेश्वर मूर्खों को लज्जित करता है।

आज के वचन, नीतिवचन 3:35 पर ध्यान दें: "बुद्धिमान लोग तो महिमा के अधिकारी होंगे, परन्तु मूर्खों को केवल लज्जा ही मिलेगी।" हिंसक लोग—यानी दुष्ट लोग—अक्सर बहुत कम या बिल्कुल भी शर्म महसूस नहीं करते, तब भी जब वे सक्रिय रूप से पाप कर रहे होते हैं। इसका कारण यह है कि उनकी अंतरात्मा सुन्न हो गई है, और उनके चेहरे पूरी तरह से ढीठ हो गए हैं। हालाँकि, चिंताजनक बात यह है कि हम मसीही—जो बार-बार वही पाप दोहराते हैं—भी शर्म की भावना के प्रति increasingly oblivious (तेजी से बेखबर) होते जा रहे हैं। कुछ समय पहले, एक मसीही ऑनलाइन समाचार लेख पढ़ते समय, मुझे एक पोस्ट मिली जिसके साथ तस्वीरें भी

थीं; इसमें एक पादरी दिखाया गया था, जिसने पहले एक बड़े मसीही संगठन के भीतर अपने एक वरिष्ठ सहकर्मी के साथ सेवा की थी, और अब वह अपने वरिष्ठ के "वोट के बदले पैसा" वाले चुनावी घोटाले में शामिल होने का पर्दाफाश कर रहा था और सबूत के तौर पर ऑडियो रिकॉर्डिंग पेश कर रहा था। यह देखकर मैं पूरी तरह से अवाक रह गया। फिर भी, जिस बात ने मुझे और भी अधिक निशब्द कर दिया, वह थी उस पादरी की छवि जो यह पर्दाफाश कर रहा था—एक स्टाफ पादरी, जैसा कि वह था—जो एक कुर्सी पर बैठा था और अपने सबूत के तौर पर इस्तेमाल की जा रही रिकॉर्डिंग डिवाइस को ऊपर उठाए हुए था। यह किसी भी तरह से उस व्यक्ति का विनम्र व्यवहार नहीं था जिसे शर्म की कोई भी भावना महसूस हो रही हो। एक मूर्ख और मंदबुद्धि व्यक्ति न केवल पाप को पाप के रूप में पहचानने में असफल रहता है—तब भी जब वह सक्रिय रूप से परमेश्वर का अपमान कर रहा होता है—बल्कि कोई शर्मनाक काम करने के बाद भी उसे कोई शर्म महसूस नहीं होती। हमें ऐसा नहीं होना चाहिए। मसीही होने के नाते, हमें यह पता होना चाहिए कि शर्म कैसे महसूस की जाती है। हमें उस तरह के मूर्ख मसीही नहीं बनना चाहिए जो पाप करने के बाद भी शर्म से रहित रहते हैं। इसके विपरीत, हम सभी को बुद्धिमान मसीही बनने का प्रयास करना चाहिए। जब परमेश्वर हमें डांटता है, तो हमें उन बुद्धिमान लोगों में शामिल होना चाहिए जो विनम्रतापूर्वक उसकी सुधार को स्वीकार करते हैं। और जब परमेश्वर हमारे पापों को उजागर करता है, तो हमें उन लोगों में शामिल होना चाहिए जो वास्तव में शर्म महसूस करते हैं। इसलिए, हम सभी को अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए, परमेश्वर के पास लौटना चाहिए, और ऐसे लोग बनना चाहिए जो महिमा के अधिकारी होते हैं।

पति और पत्नी के रूप में, हमें ऐसे लोग होना चाहिए जो परमेश्वर और अपने बच्चों के सामने शर्म की भावना महसूस करने में सक्षम हों। यह सचमुच एक शर्मनाक बात है—इससे कम कुछ नहीं—कि हम परमेश्वर और अपने बच्चों के सामने खड़े होते हैं, फिर भी एक-दूसरे से प्रेम न करने, बल्कि नफ़रत पालने में; और एक-दूसरे का आदर न करने, बल्कि अवज्ञा दिखाने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। हमें शर्म आनी चाहिए। विशेष रूप से, यह तथ्य कि हम अपने बच्चों के सामने अपने झगड़े और लड़ाइयाँ दिखाते हुए भी कोई शर्म महसूस नहीं करते, यह दर्शाता है कि हमारी अंतरात्मा सचमुच सुन्न हो गई है और हमारे चेहरे पूरी तरह से बेशर्म हो गए हैं। हमें इस सच्चाई को समझना चाहिए, विनम्रतापूर्वक परमेश्वर पिता के पास जाना चाहिए, अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए। एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो, जब परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारी

अंतरात्मा को जगाते हैं और परमेश्वर के वचन के माध्यम से हमारे हृदयों को सुधारते हैं, तो उस सुधार पर ध्यान देता है, पवित्र आत्मा की आवाज़ का पालन करता है, परमेश्वर पिता के पास जाता है, और अपने पापों का पश्चाताप करता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें परमेश्वर से अपनी विरासत के रूप में महिमा प्राप्त होगी।

मैं वचन पर इस मनन को समाप्त करना चाहूँगा। "बुद्धिमान व्यक्ति के संबंध" (भाग 1–3) शीर्षक के अंतर्गत, हमने नीतिवचन 3:27–35 से लिए गए मानवीय संबंधों के बारे में तीन सिद्धांत सीखे हैं। पहला, हमें उन लोगों से भलाई नहीं रोकनी चाहिए जिनके वे हकदार हैं; दूसरा, हमें बिना किसी कारण के दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए; और तीसरा, हमें हिंसक लोगों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। हमें हिंसक लोगों से ईर्ष्या इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर हिंसक लोगों से घृणा करते हैं और उन्हें श्राप दिया है; इसके अलावा, परमेश्वर अहंकारी लोगों का मज़ाक उड़ाएँगे और मूर्खों को शर्मिंदा करेंगे। इसके बजाय, हमें उन सीधे लोगों जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए जिनसे परमेश्वर प्रेम करते हैं, और उन धर्मी लोगों जैसा बनना चाहिए जिन्हें परमेश्वर आशीष देते हैं। इसके अलावा, हमें ऐसे विनम्र व्यक्ति बनना चाहिए जिन पर परमेश्वर अपनी कृपा बरसाते हैं, और ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति बनना चाहिए जिन्हें परमेश्वर से अपनी विरासत के रूप में महिमा प्राप्त होती है। विशेष रूप से, आज मैंने इन तीन सिद्धांतों को हमारे वैवाहिक संबंधों पर लागू किया है। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि हमारे आस-पास कई जोड़े वैवाहिक कलह के कारण पीड़ित हैं। जोड़े अक्सर झगड़ते और लड़ते हैं, और क्रोध के क्षणों में, वे एक-दूसरे पर शब्दों के बाण चलाने में संकोच नहीं करते—ऐसे शब्द जो कटार की तरह तीखे होते हैं—और जो हृदय पर गहरे घाव कर देते हैं। जोड़े एक-दूसरे के प्रति ईमानदार रहने में असफल रहते हैं; वे इस दुनिया में दुष्टों की समृद्धि से भी ईर्ष्या करते हैं, और एक-दूसरे की विनम्रतापूर्वक सेवा करने के बजाय, वे अहंकारपूर्वक एक-दूसरे को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, जोड़े अक्सर नासमझी भरा व्यवहार करते हैं; वे न केवल प्रभु की डांट पर ध्यान नहीं देते, बल्कि अपने जीवनसाथी की प्रेम भरी सलाह को सुनने से भी इनकार कर देते हैं। तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें एक-दूसरे को वह प्रेम और सम्मान बिना किसी संकोच के देना चाहिए, जिसके वे हकदार हैं। एक पति अपनी पत्नी से सम्मान पाने का हकदार है, और एक पत्नी अपने पति से प्रेम पाने की हकदार है। इसके अतिरिक्त, हमें एक-दूसरे के लिए भरोसेमंद साथी बनना चाहिए। हमें एक-दूसरे के प्रति ईमानदार भी रहना चाहिए। साथ ही, दुष्टों की समृद्धि से ईर्ष्या करने के बजाय, हमें धर्मियों के दुख-दर्द में उनका साथ देना चाहिए। हमें विनम्रतापूर्वक एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए, और एक-दूसरे को स्वयं से अधिक योग्य समझना चाहिए। और हमें समझदार जोड़े बनने का प्रयास करना चाहिए।

इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सभी अपने विवाह को 'मसीह-केंद्रित' बनाने के लिए स्वयं को समर्पित कर दें—ताकि, तलाक की बढ़ती दरों के इस दौर में, हम ऐसे जोड़े बन सकें जो यीशु के प्रेम की सुगंध बिखेरते हैं, और यह दर्शाते हैं कि यीशु में विश्वास रखने वाला जोड़ा वास्तव में कितना अद्वितीय होता है।

आपको अपनी पत्नी को संजोकर रखना चाहिए।

“जिन अंगों को हम कम सम्मानजनक समझते हैं, उनके साथ हम विशेष सम्मान का व्यवहार करते हैं...” (1 कुरिन्थियों 12:23a)।

पिछले महीने, सितंबर में—भारत में एक मिशनरी सम्मेलन में भाग लेने के लिए रवाना होने से पहले—हमारे सीनियर पादरी संयोग से कोरिया में थे, इसलिए मुझे हमारी बुधवार की सेवा में उपदेश देने के लिए बुलाया गया। उस उपदेश के दौरान—जो 1 कुरिन्थियों 12:25 के अंश पर केंद्रित था और जिसका शीर्षक था, “क्या हमारा चर्च एक दर्पण के रूप में कार्य कर रहा है?”—मैंने तीन बातें साझा कीं कि कैसे हमारा 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' अपनी विविधता के बीच चर्च की एकता को प्रभावी ढंग से बनाए रख सकता है: (1) हमें यह पहचानना चाहिए कि हम एक-दूसरे के लिए अनिवार्य हैं; (2) हमें एक-दूसरे को संजोकर रखना चाहिए; और (3) हमें एक-दूसरे में सुंदरता देखनी चाहिए। यह संदेश देने और बुधवार की सेवा समाप्त करने के बाद, मैं घर लौट आया। मेरी पत्नी ने, उपदेश सुनने के बाद, मुझसे कुछ बातें कहीं—और उन्हें सुनकर, मुझे अपने अंतर्मन में एक गहरी कसक महसूस हुई। इसका कारण यह था कि, जैसा कि मेरी पत्नी ने संकेत दिया था, मैं वास्तव में उसे उस तरह से संजोकर नहीं रख रहा था जैसा मुझे रखना चाहिए था। मेरी पत्नी के दृष्टिकोण से, उसके पास यह महसूस करने का हर कारण था कि मैं उसे संजोकर नहीं रख रहा हूँ; उसने मुझसे बार-बार एक साथ कैंपिंग पर जाने के लिए कहा था, लेकिन मैंने शुरू में यह कहते हुए मना कर दिया था, “मैं नहीं जा रहा हूँ।” बाद में, मैंने उसे सुझाव दिया, “चलो अगले अप्रैल तक इंतज़ार करते हैं—जब टेक्सास से हमारा परिचित वह पादरी जोड़ा यहाँ दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में हमसे मिलने आएगा—और उनके साथ कैंपिंग पर चलेंगे। फिर, उसके कुछ समय बाद, हम चलेंगे—सिर्फ़ हम दोनों।” यदि मैं वास्तव में अपनी पत्नी को संजोकर रख रहा होता, तो मेरे दिल की इच्छा यह

होनी चाहिए थी कि मैं उसके साथ कैंपिंग पर जाऊँ—सिर्फ़ हम दोनों—सबसे पहले। मेरी पत्नी की उस दिन की प्रेमपूर्ण डांट (या शायद, सुधार?) के माध्यम से ही मुझे यह एहसास हुआ कि मैं ठीक यही करने में असफल रहा था। इसलिए, भारत मिशन सम्मेलन से लौटने के बाद, पश्चाताप से भरे हृदय के साथ, मैंने अपनी पत्नी को सुझाव दिया कि हम कैंपिंग पर चलें—सिर्फ़ हम दोनों। परिणामस्वरूप, हम पिछले रविवार दोपहर को अपनी कैंपिंग यात्रा के लिए रवाना हुए—सिर्फ़ हम दोनों—और मंगलवार को घर लौट आए। शुरू में, मेरी पत्नी ने पूछा कि क्या हमें अपने तीनों बच्चों को भी साथ नहीं ले जाना चाहिए, लेकिन मैंने पक्के तौर पर जवाब दिया, "नहीं!" (हाहा।) इसका सीधा सा कारण यह था कि मैं अपनी पत्नी के साथ ही कैंपिंग पर जाना चाहता था। हालाँकि हमारी शादी को 25 साल से ज़्यादा हो गए हैं, लेकिन यह पहली बार था जब हम एक जोड़े के तौर पर, सिर्फ़ हम दोनों, कैंपिंग पर गए थे। यह बहुत ही शानदार अनुभव था। मुझे खास तौर पर हमारे आखिरी दिन—सोमवार—की शाम बहुत पसंद आई, जब हमने अलाव जलाया, आग की लपटों पर मैरिनेट किया हुआ मांस ग्रिल किया, और उसे *सामजांग* (सोयाबीन पेस्ट डिप) के साथ सलाद के पत्तों में लपेटकर खाया। हम वहाँ बैठे, साथ में खाना खाया और एक-दूसरे की संगति का आनंद लिया, और जी भर के खाया। अपनी पत्नी को खाने का इतना आनंद लेते देखकर मेरा दिल कृतज्ञता और खुशी से भर गया।

आज के धर्मग्रंथ के अंश में—1 कुरिन्थियों 12:23 के पहले भाग में—प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं: "शरीर के जिन अंगों को हम कम सम्मानजनक मानते हैं, उन्हें हम ज़्यादा सम्मान देते हैं..." अभी पिछले ही महीने, हमारी बुधवार शाम की आराधना के दौरान, मुझे पहले ही इस वचन पर आधारित एक सीख मिली थी: कि हमारी 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन कलीसिया' को विविधता के बीच अपनी एकता को सफलतापूर्वक बनाए रखने के लिए, हमें एक-दूसरे का बहुत सम्मान करना चाहिए। हालाँकि, मैंने इस सीख को अपने पारिवारिक जीवन में भी लागू करने का फ़ैसला किया। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि पति और पत्नी को एक-दूसरे को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए। और खास तौर पर—एक पति के तौर पर अपनी पत्नी के लिए—मुझे एक बार फिर यह गहरी सीख मिल रही है: "एक पति को अपनी पत्नी को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए।" इसके अलावा, इस सीख को अपने रोज़मर्रा के जीवन में—खास तौर पर

अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते में—व्यवहार में लाने के लिए, मैंने दो मुख्य बातों पर विचार किया है कि मुझे क्या करने की ज़रूरत है और मुझे यह कैसे करना चाहिए:

सबसे पहले, मुझे यह एहसास हुआ कि मेरे लिए—एक पति के तौर पर—अपनी पत्नी को सचमुच प्यार और सम्मान देने के लिए, मुझे सबसे पहले यह समझना होगा कि त्रिएक परमेश्वर *मुझसे* कितना गहरा प्यार करते हैं।

पहले, जब मेरे बच्चे छोटे थे, तो मैं उनके जन्मदिन पर उन्हें ईमेल के ज़रिए चिट्ठियाँ लिखकर भेजता था। ये संदेश भेजते समय, मैं अपने तीनों बच्चों में से हर एक को अलग-अलग संबोधित करता था, और लिखता था: "मेरे अनमोल, प्यारे बेटे, डिलन के लिए," या "मेरी अनमोल, प्यारी बेटी, येरी (या यीउन) के लिए।" मैंने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि यह पहचानते हुए कि वे परमपिता परमेश्वर की नज़रों में अनमोल बच्चे हैं, मैं—उनके सांसारिक पिता के रूप में—भी उन्हें उसी तरह संजोना चाहता था। फिर भी, मैं खुद को—विनम्रता और विश्वास के साथ—उसी तरह संजोने में असफल हो रहा था। हालाँकि परमपिता परमेश्वर मुझे इतनी गहराई से संजोते हैं कि उन्होंने अपने इकलौते पुत्र, यीशु को इस धरती पर भेजा—यहाँ तक कि उन्हें मेरे सभी पापों का बोझ उठाने दिया और मेरी खातिर क्रूस पर मरने दिया—फिर भी मैं उस ईश्वरीय प्रेम की दृष्टि से खुद को नहीं संजो रहा था। जब मैं बार-बार इस बात पर विचार करता हूँ कि परमपिता परमेश्वर मुझे कितना महत्व देते हैं, और खुद से पूछता हूँ, "उन्होंने 'अपने ही पुत्र को क्यों नहीं बख्शा', बल्कि मेरी खातिर उसे क्रूस पर सौंप दिया?" (रोमियों 8:32), तो मैं परमपिता परमेश्वर के उस महान प्रेम की विशालता, गहराई, असीमता और प्रचुरता को और भी गहराई से समझने की इच्छा महसूस करता हूँ। इसके अलावा, मैं इस बात की और भी गहरी अनुभूति प्राप्त करने के लिए तरसता हूँ कि यीशु—परमेश्वर का पुत्र—मुझे कितना अनमोल मानता है। मैं इस बात की और भी गहरी अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा रखता हूँ कि यीशु—जिसके पास अपनी जान देने का अधिकार है (यूहन्ना 10:18)—मुझ जैसे पापी से, जो कभी परमेश्वर का शत्रु था (रोमियों 5:8, 10), इतना प्रेम और स्नेह क्यों करता है कि उसने स्वेच्छा से मेरी खातिर क्रूस पर अपनी जान कुर्बान कर दी (यूहन्ना 10:15, 17; 1 यूहन्ना 3:16)। इसके अतिरिक्त, मैं पवित्र आत्मा के प्रेम की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए तरसता हूँ—विशेष रूप से, वह मुझे कितना अधिक

महत्व देता है, और कैसे वह, जो धर्मी है, मेरे भीतर वास करता है ताकि आत्मा का फल (गलतियों 5:22–23) उत्पन्न कर सके और चरित्र-परिवर्तन का वह रूपांतरकारी कार्य कर सके जो मुझे मसीह जैसा बनने में सक्षम बनाता है (2 पतरस 1:4)। संक्षेप में, मैं पूरी तरह से यह महसूस करना चाहता हूँ कि त्रिएक परमेश्वर की नज़रों में मैं कितना अनमोल हूँ। इसलिए, त्रिएक परमेश्वर के प्रेम के माध्यम से खुद से प्रेम करते हुए, मैं यीशु की उस आज्ञा का पालन करने का संकल्प लेता हूँ कि मैं अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करूँ जैसे मैं खुद से करता हूँ (मत्ती 22:39); विशेष रूप से, मैं अपनी पत्नी से—जो मेरी सबसे करीबी साथी है, और जिसके साथ मैं प्रभु में एक शरीर बनता हूँ—त्रिएक परमेश्वर के प्रेम से प्रेम करना चाहता हूँ, और इस प्रकार उसे और भी गहराई से संजोना चाहता हूँ।

दूसरी बात—और अंत में—एक पति के तौर पर, मैं अपनी पत्नी को एक कीमती पात्र के रूप में संजोना चाहता हूँ; उसे "कमज़ोर पात्र" और अपनी ऐसी साथी के रूप में पहचानते हुए, जिसके साथ मैं अनुग्रह द्वारा दिए गए अनंत जीवन के उपहार को साझा करता हूँ। यह अंश 1 पतरस 3:7 से लिया गया है: "हे पतियों, तुम भी अपनी पत्नियों के साथ रहते हुए समझदारी से पेश आओ; उन्हें कमज़ोर साथी के रूप में और जीवन के अनुग्रहपूर्ण उपहार के सह-वारिसों के रूप में सम्मान दो, ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में कोई बाधा न आए" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "पतियों के तौर पर, तुम्हें अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से रहना चाहिए। यह पहचानो कि पत्नी एक अधिक नाज़ुक पात्र है और एक ऐसी साथी है जिसके साथ तुम अनुग्रह द्वारा दिए गए अनंत जीवन को साझा करते हो; इसलिए, उसे संजोओ। ऐसा इसलिए है ताकि तुम्हारे प्रार्थना-जीवन में कोई बाधा न आए"]। इस अंश को देखते हुए, हम पाते हैं कि बाइबल पतियों को—मुझ जैसे पुरुषों को—यह निर्देश देती है कि वे "अपनी पत्नियों के साथ सम्मान से पेश आएँ।" *समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण* इसे इस तरह कहता है: "उसे संजोओ।" मैं इस बात पर विचार करता रहा हूँ कि, ठीक-ठीक, मैं अपनी पत्नी को कैसे संजो सकता हूँ, जब मैं इस आज्ञा का पालन करने का प्रयास करता हूँ। मैं लगभग तीन मुख्य बिंदुओं पर पहुँचा हूँ:

(1) एक पति के तौर पर, मुझे अपनी पत्नी के साथ रहते हुए उसे सचमुच समझने का प्रयास करना चाहिए।

1 पतरस 3:7 का पहला भाग (*समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण* में दिए गए रूप में) इस प्रकार है: "पतियों के तौर पर, तुम्हें अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से रहना चाहिए..." अपनी पत्नी के साथ पच्चीस से अधिक वर्षों तक

रहने के बाद—और उसे समझने की बार-बार कोशिश करने के बाद—कई बार ऐसा हुआ जब मुझे लगा कि मैं उसे अब और बिल्कुल नहीं समझ सकता। उन क्षणों में, जिस निष्कर्ष पर मैं पहुँचा—कम से कम अपने मन में—वह यह था: "ऐसा लगता है कि पत्नी प्रेम करने की वस्तु है, समझने की वस्तु नहीं।" *[हँसते हुए]* हालाँकि, जब मैं 1 पतरस 3:7 के इस विशिष्ट भाग को पढ़ता हूँ, तो मुझे एक स्पष्ट सबक मिलता है: एक पति के तौर पर, मुझे वास्तव में अपनी पत्नी को "सचमुच समझने" के लिए बुलाया गया है। फिर भी, इस सीख को असल ज़िंदगी में उतारते समय, मुझे एक आध्यात्मिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है: शैतान लगातार हमारे बीच "गलतफहमी" के बीज बोने की कोशिश करता रहता है। मुझे पूरा विश्वास है कि पवित्र आत्मा मेरी पत्नी को समझने में मेरी मदद कर रही है; फिर भी, मुझे शक है कि शैतान मुझे सही समझ की बजाय गलतफहमी की ओर ले जाकर, मेरा मूड—और मेरी भावनाओं—को खराब करने की कोशिश कर रहा है। नतीजतन, पहले शैतान मुझे उकसाता था कि मैं अपनी पत्नी के प्रति नकारात्मक भावनाओं में आकर कुछ बोलूँ, जिससे मेरे मुँह से ऐसी बातें निकलती थीं जो उसे चोट पहुँचाती थीं और अंततः हमारे बीच झगड़े की वजह बनती थीं। हालाँकि, अब पवित्र आत्मा मुझे अपनी पत्नी को और भी गहराई से समझने में सक्षम बना रही है। इसके अलावा, पवित्र आत्मा मेरी पत्नी को भी मुझे बेहतर ढंग से समझने में मदद कर रही है। और यहाँ तक कि उन पलों में भी जब हम एक-दूसरे को पूरी तरह से समझने में मुश्किल महसूस करते हैं, पवित्र आत्मा एक जोड़े के तौर पर हमारा मार्गदर्शन करती है—कि हम गलतफहमी में पड़ने के बजाय, एक-दूसरे को वैसे ही स्वीकार करें और प्यार करें जैसे हम असल में हैं।

(2) एक पति के तौर पर, मुझे यह समझना चाहिए कि मेरी पत्नी "कमज़ोर पात्र" है और मुझे उससे ठीक वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसी वह है।

मैं 1 पतरस 3:7 में बताए गए "कमज़ोर पात्र" के बारे में एक दिलचस्प व्याख्या साझा करना चाहूँगा: "'पात्र' शब्द—जिसे *skeuos* के रूप में दर्शाया गया है—किसी खास आकार के पात्र को नहीं दर्शाता, बल्कि यह किसी भी ऐसे बर्तन या चीज़ के लिए एक सामूहिक शब्द के तौर पर इस्तेमाल होता है जिसमें कुछ रखा जाता है। बाइबल में, इस 'पात्र' शब्द का इस्तेमाल अक्सर लाक्षणिक रूप से किसी ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसे कोई खास काम या बुलावा सौंपा गया हो" (इंटरनेट स्रोत)। जब मैं इस व्याख्या को अपनाता हूँ, तो मेरा

पक्का विश्वास है कि प्रभु ने मेरी पत्नी को भी अपना एक खास काम सौंपा है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि—उसके पति के तौर पर—मुझे उन आत्मिक वरदानों और प्रतिभाओं को विकसित करने में अपना पूरा सहयोग देने के लिए बुलाया गया है जो प्रभु ने उसे दिए हैं; मैं हर दिन इस विश्वास को अमल में लाने की कोशिश करता हूँ। नतीजतन, मैं हर उस चीज़ को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता हूँ और उसमें सहयोग करता हूँ जिससे मेरी पत्नी को खुशी मिलती है, जिसमें उसकी दिलचस्पी होती है, और जिससे वह आगे बढ़ पाती है। इसके अलावा, मैं विश्वास की नज़रों से देखता हूँ कि प्रभु उसके दिल और जीवन में कैसे काम कर रहा है, और मैं गहरी कृतज्ञता और खुशी के साथ इसका जवाब देता हूँ। मुझे भरोसा है कि प्रभु मेरी पत्नी के ज़रिए अपना काम जारी रखेगा और सारी महिमा उसी को मिलेगी। मेरी दिली प्रार्थना है कि मेरी पत्नी और मैं, हम दोनों ही उन अलग-अलग कामों को पूरा करें जो प्रभु ने हममें से हर एक को अलग-अलग सौंपे हैं, और इस तरह परमेश्वर की महिमा करें। बेशक, यह कहते हुए, मैं यह मानकर चलता हूँ कि ऐसे किसी काम को पूरा करने का मतलब है कि हम—पति और पत्नी के तौर पर—"एक तन" होकर काम करें, और उस परिवार की भलाई के लिए मिलकर सेवा करें जो प्रभु ने हमें सौंपा है, साथ ही उसकी कलीसिया और परमेश्वर के राज्य के लिए भी।

इस प्रकार, एक पति के तौर पर, मैं अपनी पत्नी को और भी ज़्यादा गहराई से प्यार करना चाहता हूँ, उसे उस साथी के रूप में पहचानते हुए जिसके साथ मैं उस अनंत जीवन के वरदान को साझा करता हूँ जो परमेश्वर ने कृपापूर्वक हमें दिया है। उसे प्यार करते हुए—और विशेष रूप से एक ऐसे जोड़े के तौर पर जो—ईश्वर की कृपा से—यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं और जिनके पास पहले से ही अनंत जीवन का आश्वासन है—हम बार-बार खुद को इस आकांक्षा के प्रति समर्पित करते हैं कि हम एक ऐसा जोड़ा बनें जो प्रभु के प्रेम के साथ, और उनके आदेशों का पालन करते हुए, एक-दूसरे से और भी अधिक गहराई से प्रेम करे (1 यूहन्ना 3:14, *द कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन*)।

इससे हमें परिवार से जुड़ी कई बातों पर सोचने का मौका मिलता है।

जब रानी वशती ने राजा अहशवेरस की बात मानने और उनके सामने आने से मना कर दिया, तो वह बहुत गुस्से में आ गए। इसलिए, उन्होंने अपने सलाहकारों—जो कानूनी मामलों के एक्सपर्ट थे—से पूछा, "इस स्थिति में क्या करना सही रहेगा? कानून क्या कहते हैं?" इनमें से एक सलाहकार, जिसका नाम मेमूकन था, ने यह जवाब दिया: "रानी वशती ने न सिर्फ़ सम्राट के साथ, बल्कि आपके राज में आने वाले हर प्रांत के सभी अमीरों और लोगों के साथ भी गलत किया है। अगर रानी की हरकतें साम्राज्य की औरतों को पता चल गईं, तो वे अपने ही पतियों को नीचा दिखाने लगेंगी, और जवाब देंगी, 'यहां तक कि सम्राट ज़ेरक्सेस (राजा अहशवेरस) ने भी रानी वशती को बुलाया था, फिर भी उन्होंने जाने से मना कर दिया!' अगर पर्शिया और मीडिया की अमीर औरतें रानी के इस बर्ताव के बारे में सुन लें—आज भी—तो वे अपने पतियों से इस बदतमीज़ी से बात करेंगी, जिससे वे उनके साथ बुरा बर्ताव करेंगी और उनके पतियों का गुस्सा भड़केगा। इसलिए, अगर महाराज को अच्छा लगे, तो एक शाही हुक्म जारी किया जाए कि वशती को दोबारा बादशाह के सामने आने से मना किया जाए; इसे पर्शिया और मीडिया के राज का एक ऐसा कानून बनाया जाए जिसे बदला न जा सके, और उसका शाही पद उससे ज़्यादा काबिल औरत को दिया जाए। एक बार जब महाराज का हुक्म इस बड़े साम्राज्य में फैल जाएगा, तो हर दर्जे की औरतें—चाहे अमीर हों या गरीब, अमीर हों या आम—अपने पतियों को वह इज़्ज़त देंगी जिसका वे हक़दार हैं।" राजा अहशवेरस और उसके सभी सलाहकारों को यह सलाह सही लगी; मेमूकान की सलाह पर, राजा ने हर प्रांत को—हर अपने लोगों की भाषा में—यह हुक्म जारी किया कि हर पति अपने घर के मुखिया के तौर पर अपने अधिकार का इस्तेमाल करे (एस्तेर 1:12–21)। जब मैं इस हिस्से पर सोचता हूँ, तो मुझे परिवार के बारे में कई बातें सीखने को मिलती हैं: (1) पत्नियों को प्रभु में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए। (2) पत्नियों को अपने पतियों को

नज़रअंदाज़ या उनसे नफ़रत नहीं करनी चाहिए। (3) बल्कि, पत्नियों को अपने पतियों का आदर करना चाहिए। (4) हर पति को परिवार के मुखिया के अधिकार से अपने घर को चलाना चाहिए।

हमें भी अय्यूब के उदाहरण का पालन करना चाहिए और पारिवारिक सेवा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

अय्यूब—एक ऐसा व्यक्ति जो निर्दोष, सीधा, परमेश्वर का भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला था—जब भी उसके बेटे अपने-अपने घरों में अपने जन्मदिन पर दावत देते थे (और अपनी तीनों बहनों को भी खाने-पीने के लिए बुलाते थे), तो दावत खत्म होने के बाद वह अपने बच्चों को एक साथ बुलाता था। वह उन्हें पवित्र करता था और अगली सुबह जल्दी उठकर होमबलि चढ़ाता था—अपने हर बच्चे के लिए एक। वह ऐसा इस चिंता से करता था कि कहीं उसके बेटों ने पाप न किया हो और अपने मन ही मन परमेश्वर को कोसा न हो। यह अय्यूब की लगातार की जाने वाली प्रथा थी (अय्यूब 1:1–5)। जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मुझे यह विश्वास होता है कि अय्यूब ने एक पिता के रूप में, सबसे पहले अपने बच्चों के सामने एक व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत किया—निर्दोष और सीधा बनकर, परमेश्वर की सेवा आदर (भय) के साथ करके, और बुराई से दूर रहकर। इसके अलावा, मेरा मानना है कि अय्यूब ने पारिवारिक सेवा को बहुत अधिक महत्व दिया। इसका मेरा तर्क यह है कि अय्यूब 1:1–5 सबसे पहले यह बताता है कि अय्यूब कौन था (पद 1), उसके बच्चों की संख्या कितनी थी (पद 2), और उसकी संपत्ति कितनी थी (पद 3); फिर, पद 4 और 5 विशेष रूप से उसके बच्चों पर केंद्रित हैं। यह देखते हुए कि अय्यूब ने अपने बच्चों की ठीक-ठीक संख्या के अनुसार होमबलि चढ़ाई—इस डर से कि कहीं उन्होंने पाप न किया हो और अपने मन ही मन परमेश्वर को कोसा न हो—मेरा मानना है कि उसकी यह गहरी इच्छा थी कि न केवल वह स्वयं, बल्कि उसके बच्चे भी परमेश्वर का अनादर "अपने मन ही मन" करने से बचें। मैं उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता हूँ जिसका विश्वास का जीवन बाहरी कार्यों की तुलना में हृदय की दशा पर अधिक केंद्रित था। हमें भी अय्यूब का अनुकरण करना चाहिए, और निर्दोष तथा सीधे लोग बनने का प्रयास करना चाहिए, जो परमेश्वर की सेवा आदर के साथ करते हैं और बुराई से दूर रहते हैं। और, अय्यूब के उदाहरण का पालन करते हुए, हमें पारिवारिक सेवा को प्राथमिकता देनी चाहिए। जैसे-जैसे हम अपने विश्वास के जीवन में आगे बढ़ते हैं—केवल बाहरी कार्यों के बजाय हृदय पर ध्यान केंद्रित करते हुए—हमें बार-

बार अपने अंतर्मन की जाँच करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम अपने मन ही मन परमेश्वर का अनादर तो नहीं कर रहे हैं।

परिवार का निर्माण

चूँकि प्रभु हमारे परिवारों का निर्माण करना चाहते हैं, इसलिए हमें परिवार के निर्माण के कार्य के प्रति स्वयं को समर्पित कर देना चाहिए। इसके अलावा, हमारे परिवारों के निर्माण के प्रभु के कार्य में सहभागी होने के लिए, हमें विनम्रतापूर्वक उनके वचन का पालन करना चाहिए। विशेष रूप से, हम—जो पति और पिता के रूप में अपने घरों के मुखिया हैं—हमें प्रभु के वचन के प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए। हमें अपनी प्रिय पत्नियों और बच्चों का पालन-पोषण प्रभु के वचन के माध्यम से करना चाहिए। हमें अपनी पत्नियों और बच्चों को परमेश्वर का वचन केवल अपने होठों से ही नहीं, बल्कि जिस तरह से हम अपना जीवन एक साथ जीते हैं, उस जीवन-शैली के द्वारा सिखाना चाहिए। फिर भी, ठीक इसी क्षण, हम—जो पति और पिता हैं—प्रभु के वचन की अवज्ञा कर रहे हैं। यह न केवल एक अत्यंत गंभीर विषय है, बल्कि एक घोर पाप भी है; और हमारे इस पाप के कारण, हमारी पत्नियाँ और बच्चे—जिन्हें प्रभु अत्यंत प्रेम करते हैं—न केवल आध्यात्मिक रूप से, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी प्रेम के लिए तरसते हुए प्रतीत होते हैं।

“हे प्रभु, हमारे परिवार को सुदृढ़ कर!”

“हे प्रभु, हमारे परिवार को सुदृढ़ कर!” (1 इतिहास 17:16–27):

(1) “हे प्रभु, हमारा परिवार ऐसा हो जो तेरी कृपा से संचालित हो!” (पद 16),

(2) “हे प्रभु, हमारे परिवार में तेरा वचन ही सर्वोच्च अधिकार हो!” (पद 23),

(3) “हे प्रभु, हमारा परिवार ऐसा हो जो प्रार्थना के द्वारा तेरी उपस्थिति का अनुभव करे!” (पद 25).

मेरे परिवार का उद्देश्य-कथन:

एक-दूसरे से प्रभु के प्रेम के साथ प्रेम करना;

यीशु मसीह के स्वरूप में विकसित होना;

एक मसीह-केंद्रित परिवार के रूप में स्थापित होना—एक साक्षी समुदाय—

और यीशु मसीह के सुसमाचार के प्रचार के लिए एक साधन के रूप में उपयोग किया जाना।

हमें अपने परिवारों का निर्माण कैसे करना चाहिए?

"साराई ने अब्राम से कहा, 'यहोवा ने मुझे संतानहीन रखा है। जाओ, मेरी दासी के साथ सोओ; शायद उसके द्वारा मैं एक परिवार बना सकूँ।' अब्राम ने साराई की बात मान ली" (उत्पत्ति 16:2)।

हमें अपने परिवारों का निर्माण यीशु की चट्टान पर मज़बूती से करना चाहिए। कलीसिया—जो प्रभु का शरीर है—को यीशु की चट्टान पर मज़बूती से बनाने के लिए, हमें सबसे पहले अपने स्वयं के परिवारों को उस चट्टान पर मज़बूती से बनाना होगा। ऐसा करने के लिए, हमें परिवार के निर्माण के लिए बाइबल के सिद्धांतों को खोजना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। निस्संदेह, बाइबल में परिवार के निर्माण से संबंधित अनेक सिद्धांत दिए गए हैं। विशेष रूप से, हम इफिसियों अध्याय 5–6, कुलुस्सियों 3:13–4:1, और 1 पतरस 3:1–7 का उल्लेख कर सकते हैं। हालाँकि, आज मैं एक बार फिर अपने परिवारों के निर्माण के लिए बाइबल के सिद्धांतों पर विचार करना चाहूँगा—विशेष रूप से पुराने नियम की पुस्तक उत्पत्ति 16:2 पर ध्यान केंद्रित करते हुए—और इन विचारों को यहाँ प्रस्तुत करूँगा। ऐसा करते हुए, मुझे आशा है कि मैं ऐसा मार्गदर्शन प्रदान कर सकूँगा जो न केवल मेरे अपने परिवार के निर्माण के लिए, बल्कि आपके परिवार के निर्माण के लिए भी सहायक सिद्ध होगा।

आज का अंश, उत्पत्ति 16:2, एक ऐसे दृश्य को चित्रित करता है जिसमें साराई—जो संतानहीन थी क्योंकि वह गर्भधारण करने में असमर्थ थी (11:30)—अपने पति, अब्राम से अपनी दासी, हागार के साथ सोने के लिए कहकर एक परिवार बनाने का प्रयास करती है (16:1)। साराई का उद्देश्य अपने पति, अब्राम को अपनी दासी, हागार के साथ सुलाकर, संतान प्राप्त करने के माध्यम से एक परिवार का निर्माण करना था। अब्राम ने साराई

की बात मान ली; तत्पश्चात् वह हागार के साथ सोया, और वह गर्भवती हो गई (पद 4)। जब हागार को यह एहसास हुआ कि वह गर्भवती है, तो उसने अपनी स्वामिनी, साराई को तुच्छ समझना शुरू कर दिया (पद 4)। उस समय, साराई ने अब्राम से कहा: “मेरे साथ जो अन्याय हुआ है, उसके लिए तुम ही ज़िम्मेदार हो! मैंने अपनी दासी को तुम्हारी गोद में सौंपा था, लेकिन अब जब उसे एहसास हो गया है कि वह गर्भवती है, तो वह मुझे तुच्छ समझती है। यहोवा हमारे बीच न्याय करे” (पद 5)। मुझे ऐसा लगता है कि यह स्थिति ठीक वैसी ही है जिसे "पासा पलटना" (turning the tables) कहा जाता है—यानी खुद असली कसूरवार होते हुए भी पीड़ित पर ही इल्ज़ाम लगाना। आखिर, इस पूरे मामले की शुरुआत तो सराई ने ही की थी, फिर भी उसने पलटकर अपने पति, अब्राम पर ही इल्ज़ाम लगा दिया (यह तो साफ़ लगता है कि सराई अपने पति, अब्राम को लगातार ताने मार रही थी)। इसके जवाब में, अब्राम ने अपनी पत्नी, सराई से कहा: "तुम्हारी दासी तुम्हारे ही हाथों में है; तुम्हें जो भी सही लगे, उसके साथ वैसा ही करो" (पद 6)। नतीजतन, हागार अपनी मालकिन, सराई से बचने के लिए भाग गई (पद 8)।

मैं इस कहानी पर जितना ज़्यादा सोचता हूँ, उतना ही मुझे यह बात खटकती है कि अब्राम और सराई ने पति-पत्नी के रिश्ते से जुड़े बाइबल के सिद्धांतों का पालन करने के बजाय, उनकी अवहेलना की। दूसरे शब्दों में कहें तो, एक पत्नी के तौर पर, सराई अपने पति, अब्राम का आदर (सम्मान) करने में नाकाम रही; और एक पति के तौर पर, अब्राम अपनी पत्नी, सराई से सच्चा प्यार करने में नाकाम रहा।

सबसे पहले, सराई ने शादी से जुड़े बाइबल के सिद्धांत (इफिसियों 5:33) की अवहेलना की, जो एक पत्नी को अपने पति, अब्राम का आदर (सम्मान) करने का निर्देश देता है।

हम इस बात को लेकर इतने निश्चित कैसे हो सकते हैं? अगर सराई ने सचमुच अपने पति, अब्राम का आदर किया होता, तो वह उस पर भरोसा करती और उसकी बात मानती। कहने का मतलब यह है कि अगर उसने सचमुच अपने पति का आदर (सम्मान) किया होता, तो वह अब्राम की बातों के आगे खुद को समर्पित कर देती (इफिसियों 5:22–24)। दूसरे शब्दों में, साराह को भी—ठीक अपने पति अब्राम की तरह (15:6)—उन आशीषों के वादों पर विश्वास करना चाहिए था और सब्र से उनका इंतज़ार करना चाहिए था जो परमेश्वर ने अब्राम से किए थे (उत्पत्ति 12:1-3, 7; 15:4-5); इसके बजाय, उसने विश्वास की कमी के कारण आज्ञा न मानने का पाप किया। इसे एक और तरीके से कहें तो, साराह उन खास वादों पर विश्वास करने में नाकाम रही जो परमेश्वर ने अब्राम से

किए थे—यानी, "मैं यह ज़मीन [कनान देश] तुम्हारे वंशजों को दूँगा" (12:7), "जो तुम्हारी अपनी देह से पैदा होगा, वही तुम्हारा वारिस होगा" (15:4), और "तुम्हारे वंशज भी उतने ही होंगे" (जैसे आसमान में अनगिनत तारे होते हैं) (पद 5)। नतीजतन, अपने शरीर पर भरोसा करने के बजाय, उसने अपनी नौकरानी हागार के शरीर का इस्तेमाल करके और उसे अपने पति के साथ सोने का इंतज़ाम करके अपना परिवार बनाने और बच्चा पाने की कोशिश की। परमेश्वर ने साफ़-साफ़ कहा था, "जो तेरे अपने शरीर से निकलेगा, वही तेरा वारिस होगा" (15:4); फिर भी, सारा इस ईश्वरीय वादे पर भरोसा नहीं कर पाई और परमेश्वर की मर्ज़ी के बजाय अपनी मर्ज़ी और योजनाओं के अनुसार काम करना चुना। परमेश्वर का इरादा अब्राम को तब वादा देना था जब वह 75 साल का था (12:4) और 25 साल बाद—जब अब्राम 100 साल का था—उसे एक बेटा, इसहाक देना था। हालाँकि, शुरुआती वादे के दस साल बाद (16:3)—जब अब्राम 85 साल का था—सारा आखिरकार सब्र वाला विश्वास नहीं रख पाई; इसके बजाय, उसने अपना परिवार बनाने के लिए बनावटी तरीकों का सहारा लिया, अपनी नौकरानी हागार को अपने पति अब्राम के साथ सोने के लिए कहा, जिससे इश्माएल का जन्म हुआ। इस तरह, सारा ने अपना परिवार बनाने और बच्चा पाने के लिए परमेश्वर के बताए तरीके (जो अब्राम और सारा के मिलन से उन्हें इसहाक देना था) के बजाय अपने तरीके—अपनी नौकरानी हागार को अब्राम के साथ सुलाना—का इस्तेमाल किया। संक्षेप में, सारा विश्वास के ज़रिए अपना घर बनाने में नाकाम रही।

दूसरी बात, अब्राम ने शादी के बाइबिल के सिद्धांत (इफिसियों 5:25–28) की अवहेलना की, जो पति को अपनी पत्नी, सारा से प्यार करने का आदेश देता है।

हम यह कैसे जान सकते हैं? अगर अब्राम सचमुच अपनी पत्नी, सारा से प्यार करता, तो वह उसे सही दिशा दिखाता। दूसरे शब्दों में, अगर अब्राम सारा से प्यार करता, तो वह उसे सच्चाई के अनुसार राह दिखाता। हालाँकि, जब सारा ने उससे अपनी नौकरानी हागार के साथ सोने के लिए कहा, तो अब्राम ने उसकी बात मान ली (उत्पत्ति 16:2)। जहाँ पत्नी को अपने पति की बात सुनने और मानने के लिए कहा गया है, वहीं इसके विपरीत, यहाँ पति—अब्राम—अपनी पत्नी, सारा की बात सुन रहा है और मान रहा है। यह गलत क्यों था? अब्राम को परमेश्वर का वादा साफ़-साफ़ मिला था: "जो तेरे अपने शरीर से निकलेगा, वही तेरा वारिस होगा" (15:4)। अगर उसने सचमुच परमेश्वर के इस वादे पर विश्वास किया होता, तो जब उसकी पत्नी, सराय ने अपनी दासी, हागार

का गर्भ लेकर अपना घर बसाने की कोशिश की, तो क्या अब्राम को विश्वास के साथ उसके इस सुझाव को ठुकरा नहीं देना चाहिए था—बजाय इसके कि वह उसके इस हुक्म को मानता कि "मेरी दासी के साथ सोओ" (16:2)? क्या अब्राम को इसके बजाय, अपनी पत्नी को प्यार से डांटते हुए यह नहीं पूछना चाहिए था, "नासमझ औरत! तुम परमेश्वर के इस वादे पर विश्वास क्यों नहीं करती कि वह हमें हमारे अपने शरीर से ही एक वारिस देगा?" जब मैं अब्राम को अपनी पत्नी के विश्वास की कमी से निकले शब्दों का पालन करते हुए देखता हूँ, तो मुझे आदम की याद आती है। जब हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान का फल तोड़ा और उसे आदम को दिया, तो आदम को उसके शब्दों को ठुकरा देना चाहिए था और इसके बजाय, उसे प्यार से डांटना चाहिए था; फिर भी, क्या उसने वह फल नहीं खाया जो उसकी पत्नी, हव्वा ने उसे दिया था? आदम ने असल में अपनी पत्नी, हव्वा का नेतृत्व करने से मना कर दिया। एक पति के तौर पर, वह नेतृत्व करने में नाकाम रहा। मेरा मानना है कि यही बात अब्राम पर भी लागू होती है। आज के पाठ—उत्पत्ति 16:2—में हम एक ऐसे पति को देखते हैं जो अपनी पत्नी, सराय का नेतृत्व करने के अपने कर्तव्य को पूरा करने के बजाय, ऐसा करने से मना कर देता है और इसके बजाय उसके गुमराह करने वाले शब्दों के आगे झुक जाता है। अगर अब्राम अपनी पत्नी से सचमुच प्यार करता, तो वह उसके विश्वास की कमी से निकले शब्दों को ठुकरा देता और उसे डांटता, जिससे वह उसे वापस सच्चाई की राह पर ले आता; फिर भी, अब्राम ऐसा करने में नाकाम रहा। उसकी पत्नी के लिए उसका प्यार सच्चाई से खाली था। ऐसा प्यार पूरी तरह से बेमतलब है। अगर उसे लगा कि वह अपनी पत्नी के अविश्वास से निकले शब्दों को सुनकर और मानकर घर में शांति बनाए रख सकता है, तो वह एक बहुत बड़े भ्रम में जी रहा था। जो प्यार सच्चाई पर आधारित नहीं होता, वह घर की शांति की रक्षा नहीं कर सकता। संक्षेप में, अब्राम अपने परिवार को सच्चे प्यार की नींव पर बनाने में नाकाम रहा।

अपने परिवारों को बनाने के लिए, हमें परमेश्वर द्वारा तय किए गए बाइबिल के सिद्धांतों के प्रति वफादार रहना चाहिए, चाहे हम किसी भी परिस्थिति में क्यों न हों। एक पत्नी को अपने पति का आदर करना चाहिए। एक पत्नी को अपने पति का सम्मान करना चाहिए। जो पत्नी अपने पति का सम्मान करती है, वह उसके शब्दों के आगे वैसे ही झुकती है, जैसे वह प्रभु के आगे झुकती। एक समझदार पत्नी—जो विश्वास के द्वारा अपने परिवार का निर्माण करती है—अपने पति के अधिकार के अधीन रहती है (तानाशाही के नहीं, बल्कि उस ईश्वरीय अधिकार के, जो परमेश्वर ने उसे सौंपा है) और उसके नेतृत्व का अनुसरण करती है। ऐसा करके, वह अपने पति को

मज़बूत बनाती है और उसकी सराहना करती है। और पति का क्या? एक आत्मा से भरा हुआ पति—जो विश्वास के द्वारा अपने परिवार का निर्माण करता है—अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करता है, जैसे यीशु ने कलीसिया से प्रेम किया। अपनी पत्नी से प्रेम करते हुए भी, वह सत्य में उसका नेतृत्व करता है। वह कभी भी उसकी अविश्वास से उपजी बातों को नहीं सुनता, न ही उनसे सहमत होता है या उनके अधीन होता है। इसके विपरीत, वह अपनी पत्नी को प्रेमपूर्वक समझाना जानता है। इस प्रकार, ठीक इसलिए क्योंकि वह उससे प्रेम करता है, वह उसे सत्य पर दृढ़ता से स्थापित करता है। इस तरह—जब एक जोड़ा घर बनाने के लिए परमेश्वर के सिद्धांतों के प्रति वफ़ादार रहता है, जिसमें पति अपनी पत्नी को मज़बूत बनाता है और पत्नी अपने पति को—तो हमारे परिवार उस 'चट्टान' पर सुरक्षित रूप से निर्मित होंगे।

प्रेम सब कुछ सहता है, सब कुछ पर विश्वास करता है, सब कुछ की आशा करता है, और सब कुछ धीरज से सह लेता है।

“प्रेम सब कुछ सहता है, सब कुछ पर विश्वास करता है, सब कुछ की आशा करता है, और सब कुछ धीरज से सह लेता है” (1 कुरिन्थियों 13:7)।

कल, शुक्रवार को, जब मैं अपनी प्यारी सबसे छोटी बेटी, यीउन को उसके यूनिवर्सिटी हॉस्टल से घर ला रहा था, तो कार में हमारी कई विषयों पर बातचीत हुई। लगभग चालीस मिनट तक, यीउन ने अपने मन की सारी बातें मुझसे साझा कीं; उन बातों के बीच, उसने मुझे एक ऐसी बात बताई जो उसके चर्च के कॉलेज मिनिस्ट्री पादरी ने कही थी। जब मैं उसकी बातें सुन रहा था, तो पादरी के शब्दों का मुख्य संदेश यह प्रतीत हुआ कि प्रभु के साथ प्रेमपूर्ण संबंध रखना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस मुख्य संदेश के पीछे का संदर्भ यह था कि जब कोई व्यक्ति अपनी अपर्याप्तता की भावनाओं से जूझता है—जैसे कि पूरी बाइबल न पढ़ पाना—तो उसे अपनी चिंता ऐसे विशिष्ट कार्यों पर केंद्रित नहीं करनी चाहिए, बल्कि उस ध्यान को प्रभु के साथ अपने संबंध पर केंद्रित करना चाहिए—एक ऐसा संबंध जो मूल रूप से प्रेम का संबंध है। अपनी प्यारी बेटी से पादरी की यह शिक्षा सुनने के बाद, मैंने उससे कहा, “तुम्हारे पिताजी (मैं) उस पादरी के शब्दों से पूरी तरह सहमत हैं।” यद्यपि इस बात को लेकर चिंताएँ और संघर्ष होना स्वाभाविक है कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं—जैसे कि हम बाइबल पढ़ें या नहीं, या हम सुसमाचार प्रचार में भाग लें या नहीं—लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है: प्रभु के साथ हमारा प्रेमपूर्ण संबंध जितना अधिक गहरा और स्थिर होगा, उतना ही अधिक हम उसके प्रेम द्वारा सशक्त होंगे ताकि हम उसके वचन के प्रति निरंतर बढ़ती आज्ञाकारिता का जीवन जी सकें।

व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं प्रभु के प्रेम पर मनन करता हूँ—और जब भी मैं ऐसे हृदय से प्रार्थना करता हूँ जो उस प्रेम के लिए तरसता है—तो परमेश्वर के वचन का एक विशिष्ट अंश है जिसे मैं दृढ़ता से थामे रहता हूँ। वह अंश इफिसियों 3:17–18 है। मैं *मॉडर्न कोरियन बाइबल* अनुवाद से उद्धृत करता हूँ: "...और मैं प्रार्थना करता हूँ कि, जब आपकी जड़ें प्रेम में जमी हुई हों और आपकी नींव दृढ़ता से रखी गई हो, तो आप—सभी संतों के साथ मिलकर—मसीह के प्रेम की असीम चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को पूरी तरह से समझ सकें, और यह कि परमेश्वर का सारा प्रचुर अनुग्रह आपके भीतर उमड़ पड़े।" इस अंश से प्रेरित होकर, मैं अक्सर परमेश्वर पिता से वैसे ही प्रार्थना करता हूँ, जैसा कि प्रेरित पौलुस ने किया था। इसका कारण यह है कि मैं मसीह के प्रेम की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को समझते हुए, उसकी और भी गहरी समझ पाना चाहता हूँ। इसके अलावा, मैं प्रभु के प्रेम के उस सागर में पूरी तरह डूब जाना चाहता हूँ। परिणामस्वरूप, मैं पूरी लगन से यह इच्छा रखता हूँ कि मैं उसके प्रेम का एक साधन—एक माध्यम—बनूँ, ताकि मैं अपने पड़ोसियों से उसी प्रेम के साथ प्रेम कर सकूँ जो प्रभु का है। मैंने इस प्रार्थना का उत्तर सबसे गहरे रूप में अपने पहले बच्चे, जूयंग की मृत्यु के माध्यम से अनुभव किया। जब हम जूयंग की राख को पानी में विसर्जित करने के बाद लौट रहे थे, तो मेरी पत्नी—जो हमारी छोटी नाव के अगले हिस्से में बैठी थी—पीछे मुड़कर मेरी ओर देखा (क्योंकि मैं नाव को पिछले हिस्से से चला रहा था) और धीरे से कहा, "टाइटैनिक।" उसके चेहरे से बहते आँसू देखकर—एक ऐसा दृश्य जिसने मुझे शब्दों से परे भावुक कर दिया—मैंने विशाल आकाश की ओर देखा और पूरे जोश के साथ, अंग्रेज़ी सुसमाचार भजन "माई सेवियर्स लव" (My Savior's Love) गाना शुरू कर दिया। भीतर वास करने वाली पवित्र आत्मा ने मुझे इस बात की स्तुति गाने के लिए प्रेरित किया कि मेरे उद्धारकर्ता का प्रेम वास्तव में कितना शानदार और अद्भुत है। बाद में ही मुझे एहसास हुआ कि, इस अनुभव के माध्यम से, प्रभु ने भजन संहिता 63:3 के उन शब्दों को पूरा किया था—वह वचन जिसने जूयंग को शांतिपूर्वक विदा होने देने के हमारे कठिन निर्णय में हमारा मार्गदर्शन किया था। इस प्रकार, नवविवाहितों के रूप में हमारे सामने आए एक गहरे संकट के माध्यम से, प्रभु ने हमें—भले ही थोड़ा और गहराई से ही सही—अपने प्रेम की चौड़ाई, लंबाई, ऊँचाई और गहराई को समझने में सक्षम बनाया। और ऐसा करते हुए, प्रभु ने उस ईश्वरीय प्रेम की जड़ों को हमारे हृदयों में मज़बूती से जमा दिया।

आज का धर्मग्रंथ अंश—1 कुरिन्थियों 13:7—प्रेरित पौलुस द्वारा कुरिन्थ की कलीसिया के विश्वासियों को लिखे पत्र से लिया गया एक वचन है; जैसा कि हम सभी भली-भांति जानते हैं, यह प्रसिद्ध "प्रेम के अध्याय" (Love Chapter) से लिया गया एक वचन है: "प्रेम सब बातें सह लेता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा करता है, सब बातों में धीरज धरता है।" आज इस वचन को केंद्र में रखते हुए, मैं प्रेम के स्वभाव से संबंधित चार सबकों पर विचार करना चाहूँगा।

पहला, प्रेम सब बातें सह लेता है।

आज के लिए हमारा धर्मग्रंथ अंश 1 कुरिन्थियों 13:7 है: "प्रेम सब बातें सह लेता है..." मुझे यह अब भी स्पष्ट रूप से याद है। मेरी पत्नी और मेरी शादी के कुछ ही समय बाद, हम मेरे माता-पिता के घर उनसे आशीर्वाद लेने गए। उस मौके पर मेरी माँ ने मेरी पत्नी से जो एक बात कही, उसे मैं कभी नहीं भूल सकता: "सहन करो, और फिर सहन करो।" बेशक, एक सास के तौर पर अपनी बहू से बात करते हुए, उनके शब्दों का मतलब यह निकाला जा सकता था कि वे शादीशुदा रिश्ते में सब्र और सहनशीलता रखने की नसीहत दे रही थीं; लेकिन, जब मैंने उस समय उनकी बातें सुनीं, तो मुझे उनके शब्द एक सलाह लगे—एक सीनियर पादरी की पत्नी की तरफ से एक जूनियर पादरी की पत्नी, यानी मेरी अपनी पत्नी को दी गई सलाह।

प्यार सब कुछ सह लेता है (पद 7)। प्यार सहन करता है, और फिर सहन करता है। प्यार सब्र रखता है (याकूब 5:8)। प्यार बहुत धीरज रखने वाला होता है (1 कुरिन्थियों 13:4); ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह ने हमारे प्रति पूरी तरह से सब्र और सहनशीलता दिखाई (1 तीमुथियुस 1:16), वैसे ही, मसीह के प्यार के ज़रिए, हम भी एक-दूसरे के प्रति पूरी तरह से सब्र और सहनशीलता दिखाते हैं। प्यार तब भी सहन करता है जब उस पर ज़ुल्म होता है (1 कुरिन्थियों 4:12)। प्यार इंतज़ार करता है (1 पतरस 3:20)। प्यार परमेश्वर के सामने सब्र से इंतज़ार करता है (भजन संहिता 37:7)। प्यार सहन करता है और सेवा करता है (प्रेरितों के काम 20:19)। प्यार परमेश्वर की महिमा के लिए सहन करता है (यशायाह 48:9)।

दूसरी बात, प्यार सब बातों पर विश्वास करता है।

आज का हमारा पाठ 1 कुरिन्थियों 13:7 से लिया गया है: "प्यार... सब बातों पर विश्वास करता है..." हालाँकि इंसानी रिश्तों में भरोसा सबसे ज़्यादा ज़रूरी होता है, लेकिन हम आजकल ऐसे कई रिश्तों में भरोसे के टूटने के बढ़ते मामलों को देख रहे हैं। मिसाल के तौर पर, शादीशुदा रिश्ते में—जहाँ पति को अपनी पत्नी पर और पत्नी को अपने पति पर भरोसा करना चाहिए—हम अक्सर ऐसे मामले देखते और सुनते हैं जहाँ वह भरोसा टूटने लगता है, और आखिर में पूरी तरह से बिखर जाता है। अगर पति-पत्नी भी एक-दूसरे पर इस तरह भरोसा नहीं कर सकते, तो वे दूसरों पर कैसे भरोसा कर पाएँगे? यह शैतान का काम है। शैतान हर इंसानी रिश्ते में भरोसे को खत्म करने में लगा हुआ है। लेकिन, शैतान का एक और भी ज़्यादा खतरनाक काम यह है कि वह हमें अपनी जानकारी और समझ पर निर्भर रहने के लिए मजबूर करके, हमें प्रभु पर भरोसा करने से रोकना चाहता है (तुलना करें: नीतिवचन 3:5)। शैतान हमें प्रभु—और उनके वचन—पर सवाल उठाने के लिए उकसाता है, फिर हमारे मन में शंकाएँ पैदा करता है, और अंततः, हमें अविश्वास के गर्त में धकेल देता है। परिणामस्वरूप, शैतान प्रभु और हमारे बीच के प्रेमपूर्ण रिश्ते को शिकायतों, मनमुटाव और यहाँ तक कि नफ़रत से भरे रिश्ते में बदल देता है। इसके विपरीत, पवित्र आत्मा प्रभु और हमारे बीच के प्रेम के बंधन को मज़बूत और सुदृढ़ बनाती है, जिससे हम प्रभु और उनके वचन पर अपना पूर्ण विश्वास रख पाते हैं। पवित्र आत्मा हमारे विश्वास को और भी अधिक मज़बूत नींव पर स्थापित करती है (कुलुस्सियों 2:7)।

प्रेम सब बातों पर विश्वास करता है (1 कुरिन्थियों 13:7)। प्रेम परमेश्वर पर विश्वास करता है (प्रेरितों के काम 27:25)। प्रेम प्रभु पर विश्वास करता है (प्रेरितों के काम 18:8)। प्रेम विश्वास करता है कि प्रभु ही मसीह है, जिसे संसार में आना था, परमेश्वर का पुत्र (यूहन्ना 11:27)। प्रेम विश्वास करता है कि यीशु मर गया और फिर जीवित हो उठा (1 थिस्सलोनिकियों 4:14)। प्रेम विश्वास करता है कि परमेश्वर उन लोगों को अपने साथ ले आएगा जो यीशु में सो गए हैं (पद 14)। प्रेम विश्वास करता है कि हम प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाते हैं (प्रेरितों के काम 15:11)। प्रेम बाइबल में लिखे परमेश्वर के सभी वचनों पर विश्वास करता है (प्रेरितों के काम 24:14)। प्रेम विश्वास करता है कि जो कुछ परमेश्वर ने मुझसे कहा है, वह निश्चित रूप से पूरा होगा (प्रेरितों के काम 27:25)। प्रेम विश्वास करता है कि क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसे जानलेवा खतरे से बचाया है, इसलिए वह हमें फिर बचाएगा, और वास्तव में हमें बचाता रहेगा (2 कुरिन्थियों 1:10)।

तीसरी बात, प्रेम सब बातों की आशा करता है।

आज का शास्त्र-वचन 1 कुरिन्थियों 13:7 है: "प्रेम... सब बातों की आशा करता है...।" कई बार ऐसा लगता है कि अब और आशा करना असंभव है। कुछ पल इतने निराशाजनक होते हैं कि व्यक्ति को लगता है कि वह किसी भी प्रकार की आशा रखने में असमर्थ है। उदाहरण के लिए, जब मेरा पहला बच्चा इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में जीवन के लिए संघर्ष कर रहा था, तो एक दिन मैं उस यूनिट में गया; जब मैं अपने हाथ धो रहा था और एक रोगाणु-रहित गाउन पहन रहा था, तभी वहां मौजूद डॉक्टर मेरे पास आए। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने मानवीय रूप से जो कुछ भी संभव था, वह सब कर दिया है, और अब मुझे एक चुनाव करना है: या तो बच्चे को धीरे-धीरे मरने दूं, या उसे जल्दी से इस संसार से विदा होने दूं। उस क्षण, मैंने डॉक्टर से कहा कि बच्चे को धीरे-धीरे मरने दें। मैंने यह अनुरोध इसलिए किया, क्योंकि उस समय तक, मैंने प्रभु को अपने बच्चे का जीवन बचाते हुए देखा था—बड़ी-बड़ी सर्जरी के दौरान भी उसे अपने पास नहीं बुलाया था—और कृपापूर्वक उसके जीवन के दिन बढ़ाए थे। इसलिए, प्रभु पर अपनी आशा रखते हुए—हालांकि मैं एक ऐसी निराशाजनक स्थिति का सामना कर रहा था, जहां चिकित्सकीय दृष्टि से आशा का कोई आधार नहीं बचा था—मैंने डॉक्टर से कहा कि मेरे बच्चे को शांतिपूर्वक विदा होने दें; यह आशा उस पवित्र आत्मा ने मेरे हृदय में जगाई थी, जो मेरे भीतर वास करता है। इस जीवन में, कभी-कभी हम अनचाहे ही ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं, जहाँ मानवीय दृष्टिकोण से, आगे कोई भी आशा रखना असंभव सा प्रतीत होता है। इसी कारण से, मैं व्यक्तिगत रूप से भजन 539 के तीसरे पद के बोलों को बहुत पसंद करता हूँ, जिसका शीर्षक है: "इस शरीर की आशा क्या है?" — "उस दिन भी, जब इस संसार में जिन चीज़ों पर मैंने भरोसा किया था, वे सब मुझसे छिन जाएँगी, तब भी मैं उद्धारकर्ता की वाचा पर भरोसा करूँगा, और मेरी आशा और भी अधिक बढ़ जाएगी।" यद्यपि हमारी मानवीय बुद्धि यह पूरी तरह से समझने में संघर्ष कर सकती है कि प्रभु उन चीज़ों को हमसे क्यों छीन लेते हैं जिन पर हम इस संसार में भरोसा करते हैं—चाहे एक-एक करके या एक साथ—मेरा मानना है कि उनका एक विशेष उद्देश्य है: हमें केवल उन्हीं पर भरोसा करते हुए, केवल उन्हीं में अपनी आशा रखते हुए, और पूरी तरह से उन्हीं पर निर्भर रहते हुए जीवन जीने की ओर ले जाना। मेरा मानना है कि प्रभु, अपनी भली, सिद्ध और मनभावन इच्छा के अनुसार, हमें ऐसी परिस्थितियों का सामना करने देते हैं जो मानवीय रूप से अत्यंत निराशाजनक होती हैं—जितनी अधिक निराशाजनक, उतना ही

बेहतर—ठीक इसलिए ताकि हम अपनी आशा उन्हीं में रखें और हर चीज़ से बढ़कर उन्हीं की अभिलाषा करें।

प्रेम सब बातों की आशा रखता है (1 कुरिन्थियों 13:7)। प्रेम विश्वास के द्वारा आशा बनाए रखता है, यहाँ तक कि ऐसी परिस्थितियों के बीच भी जहाँ, मानवीय दृष्टिकोण से, आशा की कोई संभावना ही प्रतीत नहीं होती। इसका एक प्रमुख बाइबल-संबंधी उदाहरण अब्राहम हैं। रोमियों 4:18 में, बाइबल हमें बताती है कि अब्राहम ने "निराशा में भी आशा रखी, और विश्वास किया।" अब्राहम वास्तव में एक ऐसी स्थिति में थे जहाँ आशा रखना असंभव सा प्रतीत होता था। उनकी आयु लगभग सौ वर्ष थी, उनका शरीर लगभग मृत-तुल्य हो चुका था, और उनकी पत्नी, सारा भी अधिक आयु की थीं और संतान उत्पन्न करने में पूरी तरह से असमर्थ थीं (पद 19)। वह एक ऐसी असंभव स्थिति का सामना कर रहे थे जिसमें यह सोचना भी बिल्कुल अकल्पनीय था कि उन्हें कभी कोई पुत्र प्राप्त हो सकेगा (पद 18)। फिर भी, अब्राहम अविश्वास के कारण अपने विश्वास में नहीं डगमगाए; बल्कि, उनका विश्वास और भी दृढ़ हुआ और उन्हें पूरा विश्वास था कि परमेश्वर में वह सामर्थ्य है कि वह जो वादा करते हैं, उसे पूरा कर सकें (पद 19–21)। अब्राहम की ही तरह, हमें भी आशा रखनी चाहिए और विश्वास करना चाहिए, तब भी जब आशा का कोई आधार ही प्रतीत न हो (पद 18)। प्रेम सब बातों की आशा रखता है (1 कुरिन्थियों 13:7)। प्रेम आशा से परिपूर्ण होता है। प्रेम अपनी आशा परमेश्वर में रखता है (भजन संहिता 42:5, 11; 43:5)। प्रेम प्रभु के उद्धार की प्रतीक्षा करता है (भजन संहिता 119:166)। प्रेम सुसमाचार की आशा से भटकता नहीं है (कुलुस्सियों 1:23)। प्रेम उस धन्य आशा—हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के महिमामय आगमन—की बेसब्री से प्रतीक्षा करता है (तीतुस 2:13)। जब हमारे उद्धारकर्ता, यीशु मसीह, इस संसार में लौटेंगे, तो हम उन्हें आमने-सामने देखेंगे (1 कुरिन्थियों 13:12)।

अंत में, चौथी बात: प्रेम सब कुछ सह लेता है।

आज के लिए हमारा मूल पाठ है 1 कुरिन्थियों 13:7: "प्रेम... सब कुछ सह लेता है।" जब हमारा सामना अप्रत्याशित और कठिन परिस्थितियों से होता है, तो हम अक्सर स्वयं से पूछते हैं, "क्यों?" इसके परिणामस्वरूप, हम अक्सर शिकायतों, मनमुटाव और 'पीड़ित मानसिकता' (victim mentality) के भंवर

में फँस जाते हैं, जिससे हमारी भावनाएँ निराशा, हताशा, कुंठा और बेबसी की ओर तेज़ी से गिरने लगती हैं। इसके अलावा, हम यह भी पूछ सकते हैं, "कैसे?"—और क्योंकि हम अपने आस-पास घटित हो रही घटनाओं को अपनी बुद्धि से पूरी तरह समझ नहीं पाते, इसलिए हम उनके व्यावहारिक समाधान खोजने में असफल रहते हैं; हम बिना किसी दिशा के भटकते रहते हैं और अंततः परमेश्वर का कीमती समय बर्बाद कर देते हैं। परिणामस्वरूप, हम अनगिनत बार यह पूछ सकते हैं कि "क्या?"—अर्थात् प्रभु की इच्छा को समझने का प्रयास करते हैं; फिर भी, क्योंकि परमेश्वर के विचार हमारे विचारों से उतने ही ऊँचे हैं जितने कि आकाश पृथ्वी से ऊँचा है (यशायाह 55:9), इसलिए ऐसे अवसर कहीं अधिक होते हैं जब हम परमेश्वर की इच्छा को *नहीं* समझ पाते, बजाय इसके कि हम उसे समझ पाएँ। इसलिए, हमें यह प्रश्न अवश्य पूछना चाहिए: "परमेश्वर कौन है?" ठीक वैसे ही जैसे अय्यूब ने—यह जानते हुए कि परमेश्वर कौन है और विश्वास के द्वारा उसकी प्रभुता को स्वीकार करते हुए—अपनी हृदय-विदारक वास्तविकता को बिना अपने होठों से कोई पाप किए स्वीकार कर लिया, और इसके विपरीत परमेश्वर की आराधना की; वैसे ही हमें भी परमेश्वर को 'जैसा वह वास्तव में है' वैसा ही स्वीकार करते हुए अपनी वास्तविकता को अपनाना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो निराशा, कुंठा या हताशा की भावनाओं के आगे घुटने टेकने के बजाय, हमारे हृदय में एक सच्ची और अटल शांति का अनुभव होता है—ऐसी शांति जो परमेश्वर और हमारे पड़ोसियों के प्रति प्रेम में निहित होती है—और यही शांति हमें सब कुछ सहने की शक्ति प्रदान करती है।

प्रेम सब कुछ सह लेता है (1 कुरिन्थियों 13:7)। प्रेम परीक्षाओं को सह लेता है (याकूब 1:12)। प्रेम यहाँ तक कि परमेश्वर के अनुशासन को भी सह लेता है (इब्रानियों 12:7)। प्रेम दुख सहता है (2 कुरिन्थियों 1:6; 2 तीमुथियुस 4:5)। प्रेम ऐसे गंभीर दुखों को भी सह लेता है, जिन्हें सहना हमारी शक्ति से बाहर लगता है (2 कुरिन्थियों 1:8)। प्रेम धैर्यपूर्वक तब भी सहता है, जब दूसरे हमें गुलाम बनाते हैं, हमारा शोषण करते हैं, हमारा फ़ायदा उठाते हैं, हमारे साथ घमंड से पेश आते हैं, या हमारे मुँह पर थप्पड़ मारते हैं (2 कुरिन्थियों 11:20)। प्रेम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय की गहराई में संजोकर रखता है, और जब उस वचन के कारण दुख या सताव आता है, तो उसे सह लेता है (तुलना करें: मत्ती 13:21)। प्रेम, जो परमेश्वर की महिमामयी सामर्थ्य से बहने वाली सारी शक्ति से मज़बूत होता है, हर बात को आनन्द के साथ सह लेता है (कुलुस्सियों 1:11)।

प्रेम हर कठिनाई को सहता है, ताकि परमेश्वर के चुने हुए लोग मसीह यीशु में मिलने वाला उद्धार, और उसके साथ-साथ अनन्त महिमा भी पा सकें (2 तीमुथियुस 2:10)।

मैं वचन पर इस मनन को इन शब्दों के साथ समाप्त करना चाहूँगा। प्रेम सब बातें सह लेता है। प्रेम सब बातों पर विश्वास करता है। प्रेम सब बातों की आशा रखता है। प्रेम सब बातों में धीरज धरता है (1 कुरिन्थियों 13:7)। प्रेम कभी असफल नहीं होता (पद 8)। प्रेम अनन्त है। परमेश्वर का प्रेम अनन्त है (भजन संहिता 136)। अनन्त परमेश्वर हमसे एक सदा-स्थायी प्रेम करता है (यिर्मयाह 31:3)।

"ओह, परमेश्वर के प्रेम की महानता—इसका शब्दों में पूरी तरह वर्णन नहीं किया जा सकता! सबसे ऊँचे तारों से भी ऊपर पहुँचकर, और नीचे इस दीन-हीन पृथ्वी तक उतरकर, उसने पापमय आत्माओं को बचाने के लिए अपने पुत्र को भेजा; उसे प्रायश्चित-बलि बनाकर, उसने पापों की क्षमा प्रदान की। परमेश्वर का महान प्रेम असीम है; यह ऐसा प्रेम है जो कभी नहीं बदलता—हे संतो, आओ हम उसकी स्तुति गाएँ!" (न्यू हिमनल 304, "परमेश्वर का महान प्रेम," पद 1 और कोरस)।

कठिन प्रेम

आज तीन बहनों से बातचीत करते हुए—जिनसे मैं पहली बार मिल रहा था—मुझे एक वाक्यांश याद आया: "कठिन प्रेम" (Tough Love)। मुझे याद है कि बहुत पहले पादरी जेम्स डॉब्सन ने रेडियो कार्यक्रम *Focus on the Family* में इस वाक्यांश का इस्तेमाल किया था। यह बात मेरे मन में इसलिए आई, क्योंकि जब हम पारिवारिक मामलों पर चर्चा कर रहे थे, तो हम इस बारे में अपने विचार और संघर्ष साझा कर रहे थे कि माता-पिता के तौर पर हमें अपने बच्चों से किस तरह प्रेम करना चाहिए। जब मैंने उन बहनों से कहा कि माता-पिता के तौर पर, अपने बच्चों से प्रेम करते समय कभी-कभी हमें "कठिन प्रेम" का भी इस्तेमाल करना पड़ता है, तो उनमें से एक ने कहा कि हालाँकि उसने अपने बच्चों से बिना किसी शर्त के प्रेम करने के विचार पर ज़रूर गौर किया था—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर हमसे बिना किसी शर्त के प्रेम करते हैं—लेकिन "कठिन प्रेम" को अपनाने के विचार पर वह पहली बार ही सोच-विचार कर रही थी। इसके जवाब में, मैंने समझाया कि हालाँकि यह सच है कि परमेश्वर हमसे बिना किसी शर्त के प्रेम करते हैं, लेकिन उनका प्रेम कभी-कभी *कठिन प्रेम* भी होता है। उदाहरण के लिए—ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को मिस्र से निकलने के बाद जंगल में ले जाकर उनकी अगुवाई की थी—वैसे ही कई बार वह *हमें* भी जंगल जैसी कठिन परिस्थितियों में ले जाते हैं, ताकि हमें विनम्र बना सकें और हमें यह सिखा सकें कि मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहता, बल्कि परमेश्वर के मुख से निकले हर एक वचन से जीवित रहता है (व्यवस्थाविवरण 8:2)। इसलिए, मेरा मानना है कि जब हम अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो *संतुलन* की भावना बहुत ज़रूरी है। परमेश्वर के संतुलित प्रेम में न केवल बिना शर्त प्रेम का पहलू शामिल है, बल्कि उसमें कठोरता का तत्व भी मौजूद है। नतीजतन, हमें भी अपने बच्चों से ठीक इसी तरह प्रेम करने का प्रयास करना चाहिए।

एक मसीह-केंद्रित जोड़ा

कल, रविवार को, मेरी पत्नी मेरे स्टडी रूम में आई और—अपने "नए" फ़ोन का इस्तेमाल करते हुए (क्योंकि उसका पुराना फ़ोन ठीक से काम नहीं कर रहा था, इसलिए उसने आखिरकार हमारे भतीजे का एक पुराना मॉडल इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था)—उसने फ़ोन को ठीक हमारे चेहरों के सामने लाकर हम दोनों की एक साथ लगभग तीन तस्वीरें खींच लीं। हाहा! जब मैं ये तस्वीरें यहाँ पोस्ट कर रहा हूँ, तो मैं शादी के बारे में कुछ विचार लिखने के लिए थोड़ा समय निकालना चाहूँगा:

1. शादी एक पुरुष और एक स्त्री का मिलन है, जिसे परमपिता परमेश्वर ने अपनी ईश्वरीय संप्रभुता के दायरे में निर्धारित किया है। इसलिए, मेरा मानना है कि जब कोई जोड़ा अपना जीवन एक साथ जीता है, तो उन्हें इस विश्वास और दृढ़ निश्चय पर कायम रहना चाहिए कि स्वयं परमेश्वर ने ही—अपनी संप्रभु इच्छा के अनुसार कार्य करते हुए—उन्हें एक साथ मिलाया है। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे अपनी शादी में आने वाले किसी भी संकट पर काबू पा सकेंगे।

2. एक विवाहित जोड़े को परमेश्वर के पुत्र—यीशु मसीह—के अधिकार के अधीन रहना चाहिए। विशेष रूप से, उन्हें यीशु की "दोहरी आज्ञा" का पालन करना चाहिए: उन्हें मिलकर परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से प्रेम करना चाहिए, और—परमेश्वर के उसी प्रेम से सशक्त होकर—उन्हें एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे वे स्वयं से करते हैं (मत्ती 22:37, 39)।

3. परिणामस्वरूप, एक विवाहित जोड़े को परमेश्वर के पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए। चूंकि पवित्र आत्मा ही "प्रेम का फल" उत्पन्न करता है, इसलिए जब पति और पत्नी उस ईश्वरीय प्रेम

के साथ एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तो वे स्वर्ग के आनंद और शांति का स्वाद चखेंगे; ऐसा करने पर, वे अपने इसी सांसारिक घर में रहते हुए ही स्वर्गीय जीवन का एक पूर्वाभास प्राप्त करेंगे।

4. मेरा मानना है कि, वैवाहिक संबंध के संदर्भ में, पति की जिम्मेदारियाँ और भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सबसे पहले और सबसे बढ़कर, मेरा मानना है कि हम पतियों को प्रभु के और भी करीब आना चाहिए—उनके साथ एक घनिष्ठ संगति विकसित करनी चाहिए—और, उनके द्वारा हम पर बरसाए गए अनुग्रह और प्रेम से सशक्त होकर, हमें अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए। इसे अधिक बाइबिल-संबंधी शब्दों में कहें तो: हम पतियों को मसीह के हमारे प्रति—यानी उनकी कलीसिया के प्रति—प्रेम की गहराई, चौड़ाई, ऊँचाई और विशालता को समझने और महसूस करने का प्रयास करना चाहिए (इफिसियों 3:18-19)। इसलिए, जिस तरह मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया, उसी तरह हमें भी अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए (इफिसियों 5:25)।

5. एक पत्नी जो इस तरह अपने पति के माध्यम से मसीह के प्रेम को महसूस (या अनुभव) करती है, उसे हर बात में अपने पति के अधीन रहना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है (इफिसियों 5:24)। इसके अलावा, पत्नियों को केवल अपने पतियों से प्रेम करने के बजाय उनका आदर करने के लिए भी बुलाया गया है (पद 33)। उन्हें ऐसे शब्दों का प्रयोग करने या ऐसे हाव-भाव दिखाने से पूरी तरह बचना चाहिए जो उनके पतियों के प्रति अनादर दर्शाते हों।

6. वैवाहिक रिश्ते का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि पति, प्रभु पर अपना भरोसा रखते हुए, उस भरोसे को विश्वास के साथ अपनी पत्नी तक भी पहुँचाए; उसी तरह, पत्नी भी प्रभु पर अपना भरोसा रखते हुए, अपने पति पर भरोसा करे। पति और पत्नी के बीच भरोसे का बंधन प्रभु पर केंद्रित होना चाहिए। इसका तात्पर्य यह है कि न तो पति और न ही पत्नी एक-दूसरे पर तब तक सचमुच भरोसा कर सकते हैं, जब तक वे सबसे पहले प्रभु पर भरोसा न कर लें। इसका अर्थ है कि प्रभु पर भरोसा करना, अपने जीवनसाथी पर भरोसा करने से अधिक महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि युगल के विश्वास की वृद्धि—यानी प्रभु पर उनका भरोसा—उनके आपसी भरोसे की वृद्धि से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है।

7. प्रभु के साथ घनिष्ठ संगति और व्यक्ति के विश्वास की वृद्धि, वैवाहिक रिश्ते की घनिष्ठता और वृद्धि से सीधे तौर पर जुड़ी हुई है। इसका मतलब है कि यदि कोई पति सबसे पहले प्रभु के साथ घनिष्ठ संगति के माध्यम से अपने स्वयं के विश्वास को विकसित करता है, और फिर अपनी पत्नी का भी इस तरह पोषण करता है कि वह भी प्रभु के साथ अपने रिश्ते को गहरा कर सके और विश्वास में बढ़ सके, तो एक युगल के रूप में उनका रिश्ता प्रभु में रहते हुए निश्चित रूप से और अधिक घनिष्ठ और परिपक्व होता जाएगा।

8. इसके विपरीत, यदि कोई युगल अपने विवाह में प्रभु को प्राथमिकता देने में असफल रहता है—और इसके बजाय रिश्ते को ही प्राथमिकता देता है तथा भावनात्मक घनिष्ठता को ही सबसे ऊपर मानता है—तो मेरा मानना है कि अंततः वे एक-दूसरे से हमेशा असंतुष्ट ही रहेंगे, जिसका परिणाम संघर्ष और कलह के एक अंतहीन चक्र के रूप में सामने आएगा। दूसरे शब्दों में—संक्षेप में कहें तो—यदि कोई युगल प्रभु को प्रथम स्थान (अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता) देने में असफल रहता है और इसके बजाय अपने प्रेम-संबंध को ही सबसे ऊपर रखता है, तो इसका अपरिहार्य परिणाम असंतोष, संघर्ष, कलह और भावनात्मक घावों के अलावा और कुछ नहीं होगा।

9. मेरा मानना है कि जैसे-जैसे वैवाहिक झगड़े और विवाद बढ़ते और बिगड़ते जाते हैं, जमा हुए गहरे ज़ख्म रिश्ते को इतनी बुरी तरह—और इतनी धीरे-धीरे—खराब कर सकते हैं कि अंततः जोड़े को लग सकता है कि उनके पास तलाक़ के बारे में सोचने के अलावा कोई और चारा नहीं बचा है। इसके विपरीत, मेरा मानना है कि ऐसा वैवाहिक संकट एक बेहतर बदलाव का मोड़ बन सकता है; इसके ज़रिए, जोड़ा इस बात का एहसास कर सकता है कि उन्होंने प्रभु को प्राथमिकता न देकर क्या पाप किया है, और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में पश्चाताप करके, वे अपने संकट को एक आशीष में बदल सकते हैं। मेरा मानना है कि जोड़ों को उस कृपा की सच्ची इच्छा करनी चाहिए और उसके प्रति खुद को समर्पित करना चाहिए, जो उन्हें एक 'मसीह-केंद्रित' रिश्ता बनाने में सक्षम बनाती है—एक ऐसा रिश्ता जो एक बार फिर से प्रभु को अपनी सच्ची नींव और जड़ के रूप में स्थापित करता है। ईश्वर की कृपा से, यह पूरी तरह से संभव है।

10. एक जोड़े के रूप में हमारा लक्ष्य एक-दूसरे से यीशु मसीह के प्रेम से प्रेम करना है, और एक-दूसरे को यह दिखाना है कि 'उनकी समानता में बढ़ना' (उनके जैसा बनना) कैसा होता है; इस प्रकार, हम एक ऐसा

जोड़ा बनना चाहते हैं जो यीशु के लिए एक गवाह के रूप में कार्य करे। हम एक ऐसा जोड़ा बनने की आकांक्षा रखते हैं जो ईश्वर की महिमा करे—एक ऐसा जोड़ा जो सचमुच यह दर्शाए कि यीशु में विश्वास करने, उनके प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम करने, और उनकी समानता में बढ़ने का क्या अर्थ है—भले ही अनेक झगड़े और विवाद क्यों न हों, फिर भी ईश्वर की कृपा से एक 'मसीह-केंद्रित' जोड़े के रूप में लगातार परिपक्व होते हुए।

वैवाहिक रिश्ता जिसे हमारे प्रभु बना रहे हैं

शनिवार सुबह, 10 फरवरी, 2024

कल दोपहर—शुक्रवार को—जब मैं अपनी प्यारी पत्नी के साथ रात का खाना खाने के लिए गाड़ी चलाकर बाहर जा रहा था, तो हम बातें कर रहे थे। तभी उसने बताया कि वह आज, शनिवार को, लोगों के एक ग्रुप के साथ थोड़ी दूर किसी जगह पर रॉक क्लाइंबिंग के लिए जा रही है। इस पर मैंने अपनी पत्नी से पूछा, "तुम किसके साथ जा रही हो?" और खास तौर पर यह भी पूछा, "क्या तुम पुरुषों के साथ जा रही हो?" [मैंने उससे यह इसलिए पूछा क्योंकि, पहले एक मौके पर, वह दो "भाइयों" (पुरुषों) के साथ लंबी हाइकिंग पर जाने के लिए काफी दूर तक गई थी; ये दोनों भाई हमारे साथ यीशु में विश्वास रखते हैं।] हालाँकि, मेरी पत्नी का जवाब कुछ अस्पष्ट सा लगा—या शायद, पूरी तरह से साफ नहीं था। उस समय मैंने इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और उस विषय को वहीं छोड़ दिया। फिर भी, कल रात सोने से पहले, मेरी प्यारी पत्नी—शायद मेरे पहले के सवाल, "क्या तुम पुरुषों के साथ जा रही हो?" से थोड़ी असहज महसूस कर रही थी—ने मुझसे पूछा कि मैंने उससे ऐसा क्यों पूछा था। फिर उसने समझाया कि दो पुरुष रॉक क्लाइंबिंग पर जाने की योजना बना रहे थे, और उसने उनसे पूछा था कि क्या वह भी उनके साथ चल सकती है (ठीक वैसे ही जैसे उसने पिछली हाइकिंग यात्रा के दौरान किया था, जब उसने उन्हीं दो पुरुषों से उसे अपने साथ ले जाने के लिए कहा था)। मुझे अब यह महसूस होने लगा है कि, चाहे हाइकिंग हो या रॉक क्लाइंबिंग, ऐसी गतिविधियाँ केवल दूसरी महिलाओं के साथ करने में कुछ स्वाभाविक सीमाएँ होती हैं; इसके बजाय, ऐसा लगता है कि पुरुषों के साथ मिलकर इन गतिविधियों में हिस्सा लेना मेरी पत्नी की साहसी भावना और जुनून के लिए ज़्यादा उपयुक्त है। इसी वजह से, मैं पूरी तरह से समझता हूँ और स्वीकार करता हूँ कि इस बार भी वह उन्हीं दो पुरुषों के साथ रॉक क्लाइंबिंग पर जा रही है। और फिर

भी—इस समझ के बावजूद—कल मैंने खुद को उससे यह पूछते हुए पाया कि क्या वह पुरुषों के साथ रॉक क्लाइंबिंग पर जा रही है। मुझे लगता है कि इसका कारण यह है कि मैं ईमानदारी से यह नहीं कह सकता कि इस स्थिति से मुझे बिल्कुल भी *कोई* चिंता नहीं है—कि यह बात मेरे मन में बिल्कुल भी नहीं खटकती। मेरा मानना है कि—एक पति के तौर पर—थोड़ी चिंता महसूस करना बिल्कुल सामान्य बात है (मैं बस कल्पना ही कर सकता हूँ कि जब मेरी पत्नी को पता चला होगा कि कोरिया में इंटरनेट मिनिस्ट्री का काम करते समय मैं अलग-अलग "बहनों" से अकेले में मिला था, तो वह कितनी चिंतित हुई होगी। फिर भी, इसके बावजूद, उसने मुझ पर भरोसा किया)। कल रात हम ठीक इसी तरह की बातचीत करने के बाद सो गए। आज, मैं फिर से सुबह लगभग 3:00 बजे उठ गया और चर्च के पादरी के दफ़्तर में आ गया। जैसे ही सुबह के 5:00 बजने वाले थे—यह जानते हुए कि मेरी पत्नी आम तौर पर सुबह 5:00 बजे रॉक क्लाइंबिंग के लिए उठती है—मैंने उसे एक टेक्स्ट मैसेज भेजा: "सुप्रभात, जेन। तुम्हारी यात्रा सुरक्षित और आनंददायक हो। मुझे हमारे परमेश्वर पर भरोसा है, और मुझे तुम पर भी भरोसा है।" बाद में, सुबह की प्रार्थना सेवा समाप्त करने और अपने मैसेज देखने के लिए दफ़्तर लौटने पर, मैंने देखा कि मेरी पत्नी ने मेरे टेक्स्ट का जवाब दिया था; उसने उसे "Loved" (पसंद किया) के तौर पर मार्क किया था, साथ में "धन्यवाद" लिखा था, और मुझे एक दिल वाला इमोजी भेजा था। हाहा। फिर, कुछ ही देर पहले, मैंने अपनी पत्नी की Instagram Stories देखीं और पाया कि उसने नीचे दी गई तस्वीर में लिखा हुआ टेक्स्ट पोस्ट किया था:

"आज़ादी और घर के बीच संतुलन।
ऐसा जीवनसाथी चुनें जो आपको वह 'स्पेस' (जगह) दे जिसकी आपको अपना व्यक्तित्व बनाए रखने के लिए ज़रूरत है। अलग-अलग रुचियाँ, पसंद और नापसंद होना एक स्वस्थ बात है। एक-दूसरे के प्रति अपना प्यार साबित करने के लिए आपको एक जैसा इंसान बनने की ज़रूरत नहीं है। आप जानते हैं कि आप दोनों एक-दूसरे की खुशी में साथ दे रहे हैं, जब आप दोनों को यह महसूस होता है कि आप अपना असली रूप जी सकते हैं। याद रखें, भरोसा नियंत्रण की अनुपस्थिति में पनपता है, और जीवंत रिश्तों में आज़ादी और घर के बीच एक संतुलन महसूस होना चाहिए। ~ YP"

जब मैंने यह पोस्ट पढ़ी जो मेरी पत्नी ने Instagram पर शेयर की थी, तो मुझे इसकी एक झलक मिली कि परमेश्वर हमारे वैवाहिक जीवन को किस तरह संवार रहा है। दूसरे शब्दों में, मुझे एहसास हुआ कि मेरी पत्नी अब बिल्कुल मेरी ही तरह सोच रही है—बल्कि पहले से भी ज़्यादा। मेरा पक्का मानना है कि वैवाहिक रिश्ते में कुछ स्वस्थ सीमाएँ (boundaries) होनी चाहिए। इसके अलावा, मेरा मानना है कि पति-पत्नी को एक-दूसरे को अपनी-अपनी व्यक्तिगत ज़िंदगी जीने के लिए ज़रूरी "स्पेस" देना चाहिए। मेरी पत्नी और मेरी कई रुचियाँ एक जैसी हैं, लेकिन मेरा मानना है कि यह भी उतना ही ज़रूरी है कि जिन क्षेत्रों में हमारी रुचियाँ अलग हैं, वहाँ हम एक-दूसरे का सम्मान करें और एक-दूसरे का साथ दें। मैं इस दृष्टिकोण को एक स्वस्थ वैवाहिक रिश्ते के लिए ज़रूरी मानता हूँ, और नीचे दिए गए टेक्स्ट के ज़रिए, मैं इस बात की पुष्टि कर पाया कि मेरी पत्नी अब इस दृष्टिकोण को पहले से भी ज़्यादा गहराई से अपनाती है। एक पति के तौर पर, मैं अपनी प्यारी पत्नी का सक्रिय रूप से साथ देने की कोशिश करता हूँ, और ऐसा मैं उन उपहारों, प्रतिभाओं, रुचियों और जुनून का सम्मान करके करता हूँ जो परमेश्वर ने उसे दिए हैं। मैं इसे एक पति होने के नाते मिली एक सुखद ज़िम्मेदारी मानता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि मेरी पत्नी लगातार आगे बढ़ती रहे और प्रभु उसे मज़बूती से स्थापित करें। जैसा कि नीचे दिए गए अंश में बताया गया है, मेरा भी यही मानना है कि "जहाँ नियंत्रण नहीं होता, वहाँ विश्वास फलता-फूलता है।" क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि प्रभु ही सब कुछ नियंत्रित करते हैं—मेरी पत्नी को भी और मुझे भी—इसलिए मैं उससे वही बात कहता हूँ, जो मैंने आज सुबह-सुबह एक टेक्स्ट मैसेज में कही थी: "मुझे हमारे परमेश्वर पर भरोसा है, और मुझे तुम पर भी भरोसा है" (मेरी अनमोल और प्यारी पत्नी, जेन)।

एक जोड़ा जो मसीह की नकल करता है

"जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को भी हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए। हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आप को दे दिया" (इफिसियों 5:24-25)।

दोस्तों, आपकी शादी का क्या उद्देश्य है? मैं देखता हूँ कि बहुत से मसीही पुरुषों और स्त्रियों—दोनों में, चाहे वे शादी की तैयारी कर रहे हों या शादी के बंधन में बंध चुके हों—अपने वैवाहिक रिश्ते के लिए कोई स्पष्ट उद्देश्य नहीं होता। परिणामस्वरूप, वे बाहरी परिस्थितियों और बदलते हुए मनोभावों से प्रभावित हो जाते हैं, और अपनी शादी के द्वारा परमेश्वर की महिमा करने में असफल रहते हैं। यदि हम यह स्वीकार करते हैं कि शादी का उद्देश्य वास्तव में परमेश्वर की महिमा करना ही है, तो हमें ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि हम एक ऐसा रिश्ता कैसे बनाएँ जो इस उद्देश्य को पूरा करे। हमें पाखंड के जाल में फँसने से बचना चाहिए—जहाँ हमारे शब्द और हमारा जीवन एक-दूसरे से अलग होते हैं—और किसी अत्यधिक आदर्शवादी उद्देश्य से आँख मूँदकर चिपके नहीं रहना चाहिए। साथ ही, हमें उस ईश्वरीय बुलाहट के दर्शन को बहुत जल्दी नहीं छोड़ देना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दी है, और न ही कोई ऐसा उद्देश्य अपनाना चाहिए जो अत्यधिक व्यावहारिक या यथार्थवादी हो। इसकी कुंजी संतुलन में निहित है। मेरी पत्नी और मैंने अपनी शादी के लिए दो मुख्य उद्देश्य निर्धारित किए हैं: (1) एक-दूसरे के जीवन में यीशु की समानता को दर्शाना, और (2) एक-दूसरे से यीशु के प्रेम के साथ प्रेम करना। "खराब वैवाहिक रिश्ते और विकृत माता-पिता-संतान रिश्ते" नामक एक लेख में, निम्नलिखित अंश मिलता है: "बहुत से माता-पिता कहते हैं, 'हम केवल बच्चों की खातिर एक साथ रह रहे हैं।' हालाँकि, बच्चे अंततः भावनात्मक रूप से पीड़ित होते हैं क्योंकि उनके माता-पिता अपना जीवन केवल उन्हीं पर केंद्रित करके जीते हैं। जब कोई

वैवाहिक रिश्ता न तो सामंजस्यपूर्ण होता है और न ही अंतरंग, तो एक माता-पिता अनजाने में अपने बच्चे के साथ वह भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करने की कोशिश करते हैं जो उनके जीवनसाथी के साथ होना चाहिए। वे अनजाने में अपने बच्चे से वह प्रेम और स्वीकृति पाने का प्रयास करते हैं जो उन्हें अपने जीवनसाथी से नहीं मिल पाई। ऐसा करते हुए, माता-पिता अनजाने में—बच्चे के माध्यम से—उन भावनात्मक, सामाजिक या यौन आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं जो वैवाहिक रिश्ते के भीतर अधूरी रह गई हैं। इसके अलावा, वे अपने जीवनसाथी के प्रति अपने मन में पल रहे रोष और शत्रुता की भरपाई करने का प्रयास करते हैं—उन सभी बातों के लिए जो उन्हें नहीं मिलीं—और ऐसा वे बच्चे का पक्ष लेकर और प्रभावी रूप से अपने जीवनसाथी को दूर धकेलकर करते हैं।" इस अंश के बारे में आपके क्या विचार हैं? मेरा मानना है कि यह उस सच्चाई के बिल्कुल केंद्र पर चोट करता है जिसका सामना कई ऐसे जोड़े कर रहे हैं जो असंतोषजनक वैवाहिक संबंधों में फँसे हुए हैं। ऐसा लगता है कि कई जोड़े, यह दावा करते हुए कि वे "बच्चों की खातिर साथ रह रहे हैं," असल में अपने बच्चों के बड़े हो जाने के बाद तलाक़ लेने का इरादा रखते हैं। वास्तव में, 2019 में मेरे पढ़े एक लेख के अनुसार, कोरिया में उस वर्ष कुल 108,684 तलाक़ के मामले दर्ज किए गए थे; इनमें से, "सिल्वर तलाक़"—जिनमें ऐसे जोड़े शामिल थे जिनकी शादी को 20 वर्ष से अधिक हो चुके थे—का हिस्सा सबसे अधिक 33.3% (36,327 मामले) था, जिसके बाद नवविवाहित जोड़े थे जिनकी शादी को 0 से 4 वर्ष हुए थे (21.4%)। मेरा मानना है कि जब किसी वैवाहिक संबंध में तालमेल और अपनापन (intimacy) नहीं होता, तो पत्नी—विशेष रूप से—अनजाने में उस प्यार की भरपाई करने की कोशिश कर सकती है जो उसे अपने पति से नहीं मिल पाता, और इसके लिए वह अपना अत्यधिक स्नेह अपने बच्चों पर उड़ेल देती है। इसका मूल कारण यह है कि, अवचेतन स्तर पर, पत्नी शायद अपने बच्चों *से* प्यार पाने की चाह रख रही होती है। हमें अपने वैवाहिक संबंधों की वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए समय निकालना चाहिए। इसका कारण यह है कि बच्चे शायद भावनात्मक कष्ट से गुज़र रहे हों क्योंकि उनके माता-पिता अपना जीवन केवल अपने आप पर केंद्रित करके जीते हैं।

आज के धर्मग्रंथ के अंश—इफिसियों 5:24–25—पर केंद्रित होकर, और "वे जोड़े जो मसीह का अनुकरण करते हैं" शीर्षक के अंतर्गत, मैं वैवाहिक संबंधों से जुड़े दो बाइबिल सिद्धांतों पर विचार करना चाहता हूँ और उनसे मिलने वाले सबक सीखना चाहता हूँ। मेरी यह दिली आशा है कि, पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान की गई अंतर्दृष्टि

और बुद्धि के माध्यम से, हममें से प्रत्येक व्यक्ति इन सिद्धांतों को अपने विवाह में प्रभावी ढंग से लागू कर सके, और इस प्रकार ऐसे जोड़े बन सकें जो वास्तव में मसीह का अनुकरण करने के लिए तैयार किए गए हों।

सबसे पहले, पत्नियों को हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है।

कृपया आज के अंश, इफिसियों 5:24 पर दृष्टि डालें: "इसलिए, जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है, वैसे ही पत्नियों को भी हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए।" प्यारे दोस्तों, घर एक आध्यात्मिक युद्धक्षेत्र है! प्रभु हमारे घरों को स्वर्ग की एक झलक (foretaste) के रूप में स्थापित करना चाहते हैं। इसी उद्देश्य के लिए, उन्होंने हमें स्वर्ग की आज्ञाएँ दी हैं—यीशु की "दोहरी आज्ञा" (मत्ती 22:37, 39)। इसके अलावा, ताकि हम इस दोहरे आदेश का पालन कर सकें, प्रभु ने पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में परमेश्वर का प्रेम उंडेल दिया है (रोमियों 5:5), जिससे वह हमें धीरे-धीरे प्रेम से—जो आत्मा का फल है (गलातियों 5:22)—और अधिक भरता जाता है। इसलिए, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इन आदेशों का पालन करें और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन पर चलते हुए, पूरे परिवार के साथ एक मन और एक चित्त होकर रहें (फिलिप्पियों 1:27; 2:2)—अर्थात् अपने पूरे जीवन से परमेश्वर से प्रेम करें और एक-दूसरे से वैसे ही प्रेम करें जैसे हम स्वयं से करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे घर धीरे-धीरे स्वर्ग के समान बन जाते हैं, जो स्वर्गीय आनंद (यूहन्ना 15:11; 1 यूहन्ना 1:4), प्रेम (भजन संहिता 33:5), और शांति (रोमियों 15:13) से लबालब भरे होते हैं। हालाँकि, शैतान हमारे घरों को एक जीते-जागते नरक में बदलने की इच्छा रखता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, वह हमें यीशु के "दोहरे आदेश"—अर्थात् स्वर्ग के आदेश (इफिसियों 2:2; 5:6)—का उल्लंघन करने के लिए उकसाता है, और इसके विपरीत हमें नरक के आदेश का पालन करने के लिए विवश करता है: अर्थात् एक-दूसरे से घृणा करने के लिए (उत्पत्ति 37:5; व्यवस्थाविवरण 22:13; मत्ती 24:10; 1 यूहन्ना 2:9)। इसके अतिरिक्त, झूठ की आत्मा के साथ मिलकर काम करते हुए, शैतान लगातार हमारे भीतर अपनी घृणा के बीज बोता रहता है (व्यवस्थाविवरण 21:17; 2 शमूएल 13:15; नीतिवचन 10:12), जो हमें अंधकार के कार्यों में लिप्त होने के लिए प्रेरित करता है (यशायाह 29:15; यहेजकेल 8:12; इफिसियों 5:11) और जिसके परिणामस्वरूप हमारे परिवारों को कड़वे फल भोगने पड़ते हैं (रोमियों 7:5)। फलस्वरूप, शैतान हमारे मन में अपने नरक-समान घरों में वापस लौटने के प्रति भय उत्पन्न कर देता है; इसके बजाय, वह हमें घर के बाहर ही रुके रहने के लिए—या इससे भी बदतर—घर से बहुत-बहुत दूर

भाग जाने की तीव्र इच्छा रखने के लिए विवश करता है। वह हमारे भीतर अपने परिवार के सदस्यों को देखने के प्रति भी अनिच्छा उत्पन्न कर देता है। यही नहीं, शैतान हमारे जीवन-साथियों के प्रति हमारी घृणा को और भी अधिक तीव्र कर देता है। वैवाहिक बंधन में बढ़ती दरारों का फ़ायदा उठाकर—जो अपने जीवनसाथी के प्रति बढ़ती नफ़रत से पैदा होती हैं (देखें Neh 4:3, जहाँ हिब्रू शब्द का मतलब "दरार" या "खाई" है; 6:1)—शैतान हमारा ध्यान दूसरे पुरुषों या स्त्रियों की ओर भटका देता है। आँखों की हवस और शरीर की हवस को उकसाकर (1 John 2:16), वह हमें इन दूसरे लोगों के प्रति लालच करने के लिए भड़काता है, और अंततः हमें व्यभिचार के रास्ते पर ले जाता है। शैतान का असली मकसद हमारे परिवारों को तोड़ना और तबाह करना है—ताकि वह हमें एक "स्वर्गीय घर" बनाने से रोक सके—और हमारे घरों को नरक जैसी यातना की जगह बना दे। यह एक आध्यात्मिक युद्ध है! इस आध्यात्मिक युद्ध में परिवार ही युद्ध का मैदान है! तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें इस आध्यात्मिक युद्ध में शामिल होना चाहिए।

आज के पाठ, इफिसियों 5:24 में, बाइबल कहती है: "...पत्नियों को हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए।" यहाँ, जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "अधीन रहना" के रूप में किया गया है, वह एक मिश्रित शब्द है जो निचले दर्जे या अधीनस्थ स्थिति को दर्शाता है (एगरिच्स)। बाइबल घोषणा करती है कि पति पत्नी का सिर है। कृपया इफिसियों 5:23 देखें: "क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसा कि मसीह कलीसिया का सिर है—उसका शरीर—जिसका वह उद्धारकर्ता है।" इस अंश का यह अर्थ नहीं है कि पति पत्नी से श्रेष्ठ है। इस वचन को गलत नहीं समझना चाहिए—यह गलती से नहीं मान लेना चाहिए कि किसी का दर्जा अपनी पत्नी से ऊँचा है—और परिणामस्वरूप उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए मानो वह कोई नौकरानी हो। ऐसा करना उस ईश्वरीय अधिकार का दुरुपयोग है जो परमेश्वर ने घर के मुखिया के रूप में पुरुष को सौंपा है। ऐसा पुरुष निस्संदेह एक निरंकुश पति होगा। परमेश्वर ने हम पुरुषों को ईश्वरीय अधिकार इसलिए नहीं दिया कि हम ऐसे व्यक्ति बन जाएँ। बल्कि, परमेश्वर ने पतियों को उनके घरों का मुखिया बनाया और उन्हें ईश्वरीय अधिकार इसलिए प्रदान किया ताकि यह दर्शाया जा सके कि हमारे कंधों पर तदनुरूप एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। हम पतियों के लिए यह कितनी भारी ज़िम्मेदारी है! इस ज़िम्मेदारी में पति द्वारा अपनी पत्नी और परिवार के सदस्यों से प्रेम करना (वचन 25), साथ ही उनकी रक्षा करना और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना शामिल है। इसके अलावा—रक्षा

करने और भरण-पोषण करने के कार्य में—पति को अपनी पत्नी और परिवार की खातिर व्यक्तिगत बलिदान देने की हद तक भी ऐसा करने के लिए बुलाया गया है। एक पत्नी को ऐसे पति के अधीन रहना चाहिए और उसकी सुरक्षा में रहना चाहिए जो इस ज़िम्मेदारी को ईमानदारी से निभाता है। इसके अतिरिक्त, उसे उस पति का सम्मान करना चाहिए जो इतनी ईमानदारी और कुशलता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है [वचन 33b: "...और पत्नी को अपने पति का सम्मान करना चाहिए"]। उसे उसके प्रति वह सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए। ऐसा करने का एक तरीका यह है कि वह उस पति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करे जो इतनी लगन से उसकी और उनके परिवार की रक्षा करता है और उनकी ज़रूरतों को पूरा करता है। उसे शिकायत नहीं करनी चाहिए। न ही उसे अपने पति की कम आय के लिए उसकी आलोचना करनी चाहिए। इसके विपरीत, उसे अपनी और अपने परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उसके समर्पित प्रयासों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए। इन सबके बीच, उसे अपने पति पर भरोसा रखना चाहिए। जब वह ऐसा करती है, तो पति—घर के मुखिया के तौर पर—अपनी पत्नी और बच्चों की रक्षा करने और उनकी ज़रूरतें पूरी करने के लिए और भी ज़्यादा समर्पित हो जाता है।

हाल ही में मैंने एक लेख पढ़ा जिसका शीर्षक था, "वह पत्नी जो अपने पति को समझने में नाकाम रहती है; वह पति जो शब्दों से चोट पहुँचाता है।" यह लेख बताता है कि जब पति को लगता है कि उसकी पत्नी उसकी कद्र नहीं करती, तो वह बहुत ज़्यादा निराश हो जाता है। इसमें आगे समझाया गया है कि जब पति को अपनी पत्नी से वह ताक़त नहीं मिलती जिसकी उसे दुनिया में जाकर उसकी चुनौतियों का सामना करने के लिए ज़रूरत होती है, तो वह निराशा का शिकार हो जाता है और अपनी सारी ऊर्जा खो देता है। इस संदर्भ में, लेख यह बात कहता है: "पत्नियाँ अक्सर उस ज़बरदस्त असर को नज़रअंदाज़ कर देती हैं या उससे अनजान रहती हैं जो वे अपने पतियों पर डालती हैं" (इंटरनेट स्रोत)। देवियों—पत्नियों—आपको यह पहचानना होगा कि आप अपने पतियों पर कितना गहरा असर डालती हैं। अपने पति पर सकारात्मक असर डालने का सबसे असरदार तरीका है परमेश्वर के वचन का पालन करना। परमेश्वर का वह खास वचन इफिसियों 5:33 में मिलता है, जो एक नेक पत्नी को यह निर्देश देता है कि वह "अपने पति का आदर करे।" इस तरह, एक नेक पत्नी अपने पति को एक ऐसे इंसान के तौर पर स्थापित करने में मदद करती है जिसका दूसरे लोग भी आदर करते हैं।

प्रिय दोस्तों, कलीसिया—दुल्हन के तौर पर—को अपने दूल्हे, यीशु का आदर करना चाहिए। इसलिए, हमें अपना चाल-चलन इस तरह रखना चाहिए कि हम दूसरों को भी यीशु का आदर करने के लिए प्रेरित करें। इसे हासिल करने के लिए, हमें प्रभु के वचन का पालन करना होगा। फिर भी, हमारे आज्ञापालन के साथ-साथ हमें इस दुनिया में अपना जीवन ऐसे तरीके से जीना चाहिए जो कलीसिया—हमारे दूल्हे यीशु की दुल्हन—के लिए उचित हो। जब हम ऐसा करते हैं, तो प्रभु—हमारा दूल्हा—इस दुनिया के लोगों द्वारा सम्मानित और आदरणीय होगा। दूसरी बात—और आखिर में—पतियों को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्यार करना चाहिए जैसे मसीह ने कलीसिया से प्यार किया और उसके लिए खुद को कुर्बान कर दिया।

कृपया आज के वचन, इफिसियों 5:25 पर ध्यान दें: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्यार करो, ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसिया से प्यार किया और उसके लिए खुद को कुर्बान कर दिया।" प्रिय दोस्तों, जहाँ एक पति जिसकी पत्नी उसका आदर नहीं करती या उसे नज़रअंदाज़ करती है, वह निश्चित रूप से दिल में बहुत ज़्यादा पीड़ा महसूस करता है, वहीं एक पत्नी जिससे उसका पति प्यार नहीं करता, उसे भी उतनी ही गहरी पीड़ा सहनी पड़ती है। यह बात खासकर परमेश्वर की उन नेक और अनमोल बेटियों के लिए सच है—जो परमेश्वर का प्यार पाने के लिए पैदा हुई हैं—अगर उन्हें अपने पतियों से न सिर्फ प्यार न मिले, बल्कि इससे भी बुरा यह हो कि उन्हें नफ़रत का सामना करना पड़े और वे अपने दिन चोट, दर्द और आँसुओं में बिताएँ। वह ज़िंदगी कितनी तकलीफ़देह होगी! 11 जनवरी, 2018 को, “वह औरत जिसे उसके पति ने प्यार नहीं किया” शीर्षक के तहत, मैंने Genesis 29:31 पर आधारित एक विचार साझा किया, जिसमें मैंने Leah के बारे में सोचा—एक ऐसी औरत जिसे उसके पति Jacob ने प्यार नहीं किया था। Leah को उसके पति Jacob ने इसलिए प्यार नहीं किया, क्योंकि Jacob, Leah की छोटी बहन Rachel—जो बहुत सुंदर और प्यारी थी—से Leah के मुकाबले कहीं ज़्यादा प्यार करता था; जबकि Leah की नज़र कमज़ोर थी (Gen. 29:17–18)। जब मैंने वह विचार खत्म किया, तो मैंने यह बात कही कि हालाँकि Leah को उसके पति Jacob ने पूरी ज़िंदगी प्यार नहीं किया, फिर भी मरने के बाद उसे उसी जगह दफ़नाया गया जिसे Jacob ने अपने दादा Abraham और उनकी पत्नी Sarah के लिए दफ़नाने की जगह चुना था—यानी Canaan देश में Mamre के पास के खेत में Machpelah की गुफ़ा में (Gen. 49:30–31)। आखिर में, Jacob को भी वहीं दफ़नाया गया; इस तरह, अंत में, Leah और Jacob दोनों को एक

ही जगह दफ़नाया गया (Gen. 50:12–13)। Rachel, जिसे Jacob ने पूरी ज़िंदगी बहुत प्यार किया, उसने Canaan की यात्रा के दौरान Ephrath के पास Benjamin को जन्म दिया; लेकिन, मुश्किल प्रसव के बाद उसकी मौत हो गई और उसे उसी जगह दफ़ना दिया गया (35:16–20)। इससे भी ज़्यादा अहम बात यह है कि परमेश्वर ने Leah पर—जिसे उसके पति ने प्यार नहीं किया था—कृपा की और उसकी कोख खोल दी (29:31)। उसने Leah को तोहफ़े के तौर पर जो छह बेटे दिए (Reuben, Simeon, Levi, Judah, Issachar, और Zebulun)—उन छह बेटों और एक बेटी Dinah में से—Israel के बारह कबीलों में से छह कबीले निकले। इसके अलावा, खास तौर पर Leah के बेटे Judah के वंश से, परमेश्वर ने मसीहा—यानी Christ—का जन्म करवाया (Multilingual Bible)। परमेश्वर का यह तोहफ़ा कितना सचमुच हैरान करने वाला और उदार है! मैं प्रार्थना करता हूँ कि यही परमेश्वर इस वर्तमान युग में अपनी उन सभी बेटियों को उदारतापूर्वक वरदान दे, जिन्हें उनके पतियों का प्रेम नहीं मिला है; और वह उनके हृदय की अभिलाषाओं को पूरा करे।

आज के धर्मग्रंथ के अंश—इफिसियों 5:25—को देखते हुए, बाइबल हमें यह निर्देश देती है: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए स्वयं को बलिदान कर दिया।" वास्तव में, हम पतियों को अपनी पत्नियों से ठीक किस प्रकार प्रेम करना चाहिए? हम उनसे उसी तरह प्रेम कैसे कर सकते हैं, जिस तरह मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए स्वयं को समर्पित कर दिया?

(1) नीतिवचन 18:22 के आधार पर, हम पतियों को अपनी पत्नियों को एक ऐसे वरदान के रूप में देखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

कृपया नीतिवचन 18:22 देखें: "जिसको पत्नी मिल गई, उसको अच्छी वस्तु मिल गई, और उस पर यहोवा का अनुग्रह हुआ।" यहाँ, बाइबल किसी भी पत्नी की बात नहीं कर रही है। जिस "पत्नी" की बात बाइबल यहाँ कर रही है, वह एक "उत्तम पत्नी" (12:4), एक "समझदार पत्नी" (19:14), या "भले चाल-चलन वाली पत्नी" (31:10) है। नीतिवचन 18:22 कहता है कि जिस पुरुष को ऐसी गुणवान, समझदार और भले चाल-चलन वाली पत्नी मिलती है, उसे एक वरदान मिला है और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है। जिस पति के पास ऐसी पत्नी होती है, वह एक धन्य पुरुष होता है। इसका कारण यह है कि ऐसी गुणवान, समझदार और भले चाल-चलन वाली

पत्नी उसके लिए एक सच्चा वरदान—एक सचमुच कीमती खज़ाना—बन जाती है। फिर भी, ऐसा क्यों है कि इतने सारे पति अपनी पत्नियों को परमेश्वर द्वारा दिया गया वरदान नहीं मानते? इसका क्या कारण है? एक कारण यह है कि जिस स्त्री की बात हो रही है, वह कोई भले चाल-चलन वाली, समझदार और गुणवान स्त्री नहीं है, बल्कि एक "लज्जा का कारण बनने वाली स्त्री" (12:4) है। दोस्तों, यह "लज्जा का कारण बनने वाली स्त्री" कौन है? सीधे शब्दों में कहें तो, वह एक ऐसी स्त्री है जिसकी अपने पति से झगड़ा करने की आदत होती है (पार्क यून-सन)। इस झगड़ालू स्त्री के बारे में बाइबल कहती है: "झगड़ालू स्त्री के साथ बड़े घर में रहने से, अकेले किसी झोपड़ी में रहना बेहतर है" (21:9); और फिर: "झगड़ालू और चिड़चिड़ी स्त्री के साथ रहने से, अकेले जंगल में रहना बेहतर है" (25:24)। शायद हम पुरुषों में से कुछ ऐसे भी हों जिन्हें यह बहाना बनाने का मन करे: "परमेश्वर ने मुझे कोई गुणवान स्त्री नहीं दी; इसके बजाय, उसने मुझे एक झगड़ालू और चिड़चिड़ी स्त्री दी। तो फिर, मैं ऐसी पत्नी को वरदान कैसे मान सकता हूँ?" क्या यह बहाना काफी हद तक सही नहीं लगता? अगर मुझे ऐसे शब्द सुनने को मिलते, तो मैं उस भाई से यह कहना चाहता: "भगवान ने तुम्हें कोई झगड़ालू और गुस्सैल औरत नहीं दी; बल्कि, *तुमने* खुद ऐसी औरत चुनी है। इसलिए, इसकी ज़िम्मेदारी लो और उसे एक नेक औरत के रूप में ढालो।" अक्सर ऐसा लगता है कि हम पुरुष उन कोमल, समझदार और नेक औरतों को ठुकरा देते हैं जो भगवान हमें देते हैं, और इसके बजाय उन औरतों से शादी करना चुनते हैं जो हमें शारीरिक रूप से आकर्षक और लुभावनी लगती हैं—और बाद में पता चलता है कि वे झगड़ालू और गुस्सैल हैं। अगर हमने सचमुच ऐसा चुनाव किया है, तो हमें इसकी पूरी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए और अपनी पत्नियों को नेक औरतें बनाने में खुद को समर्पित कर देना चाहिए। आजकल, हममें से बहुत से पुरुष अपनी ही पत्नियों के प्रति बेहद गैर-ज़िम्मेदाराना रवैया अपना रहे हैं और गैर-ज़िम्मेदाराना बातें कह रहे हैं—उन्हीं पत्नियों के प्रति जिन्हें हमने खुद शादी के लिए चुना था। वे अपनी पत्नियों को कोसने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते, और अपने कामों से वे अपनी पत्नियों को ऐसा महसूस कराते हैं जैसे वे बोझ के सिवा कुछ नहीं हैं—मानो वे "कोसों का ढेर" हों। संक्षेप में, आज बहुत सी पत्नियां अपने पतियों से प्यार पाए बिना ही अपनी ज़िंदगी गुज़ार रही हैं। एक औरत के लिए यह कितनी दुखद ज़िंदगी है! भाइयों—हम पतियों को अपनी पत्नियों को भगवान का दिया हुआ आशीर्वाद समझना चाहिए। पत्नी एक ऐसा आशीर्वाद है जो भगवान ने हम पतियों को दिया है। हमें अपनी पत्नियों से खुश रहना चाहिए और हर समय उनकी बाहों में पूरी संतुष्टि महसूस करनी चाहिए।

(2) हम पतियों को अपनी पत्नियों को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए। कृपया 1 पतरस 3:7 का पहला हिस्सा देखें: "पतियों, उसी तरह तुम भी अपनी पत्नियों के साथ रहते हुए समझदारी से पेश आओ, और उनके साथ सम्मान से व्यवहार करो, क्योंकि वे तुमसे कमज़ोर हैं और जीवन के इस अनमोल तोहफ़े में तुम्हारी बराबर की हकदार हैं..." आधुनिक समाजशास्त्र के शोध से पता चला है कि शादीशुदा ज़िंदगी में एक पत्नी की तीन बुनियादी ज़रूरतें होती हैं। इनमें सबसे पहली ज़रूरत है—प्यार और सम्मान पाना (बाकी दो हैं—समझा जाना और इज़्ज़त पाना)। हम पतियों को अपनी पत्नियों को बहुत प्यार और सम्मान देना चाहिए। जब खुद प्रभु हमारी पत्नियों को इतना प्यार और सम्मान देते हैं, तो हम कौन होते हैं—महज़ पति—कि भगवान की उस बेटी के साथ तिरस्कार या अपमान का व्यवहार करें, जिसे प्रभु इतना ऊँचा दर्जा देते हैं? मुझे 1 यूहन्ना 4:20 के शब्द याद आते हैं: "जो कोई यह दावा करता है कि वह भगवान से प्यार करता है, लेकिन अपने भाई या बहन से नफ़रत करता है, तो वह झूठा है। क्योंकि जो कोई अपने भाई या बहन से प्यार नहीं करता—जिन्हें उसने देखा है—वह भगवान से प्यार नहीं कर सकता—जिन्हें उसने नहीं देखा है।" अगर हम पति यह दावा करते हैं कि हम प्रभु को बहुत मानते हैं—उस अदृश्य आत्मा, परमेश्वर की स्तुति गाते हुए, इन शब्दों के साथ: "प्रभु यीशु से ज़्यादा कीमती कोई नहीं है" (भजन 102)—फिर भी हम अपनी पत्नियों को, जिन्हें हम देख सकते हैं, प्यार नहीं करते, तो यह पाखंड के सिवा कुछ नहीं है।

(3) हम पतियों को अपनी पत्नियों में आनंद पाना चाहिए।

कृपया नीतिवचन 5:18 देखें: "तेरा सोता धन्य रहे, और तू अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनंद करे।" सच में, हम पतियों को अपनी पत्नियों में ठीक किस तरह आनंद पाना चाहिए? हम पतियों को हमेशा अपनी पत्नियों के आलिंगन में पूरी संतुष्टि मिलनी चाहिए। कृपया नीतिवचन 5:19 देखें: "एक प्यारी हिरनी, एक सुंदर मृगी—उसके स्तन तुझे हमेशा तृप्त करें, तू हमेशा उसके प्रेम में मोहित रहे।" अपनी पत्नी के आलिंगन में हमेशा संतुष्टि पाने की यह सीख इस बात का संकेत है कि हम पतियों को अपने दिलों को अपनी पत्नियों के प्रेम में मोहित होने देना चाहिए—सच कहूँ तो, उनके प्रेम का बंदी बन जाना चाहिए। विशेष रूप से, हम पतियों को अपने दिलों को अपनी पत्नियों की शारीरिक सुंदरता के बजाय उनके गुणों में मोहित होने देना चाहिए। बाइबल में पत्नी को "प्यारी हिरनी" और "सुंदर मृगी" बताने वाले रूपक का ठीक यही अर्थ है (पार्क यून-सन)। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम

केवल अपनी पत्नियों के प्रेम में आनंद पाएँगे—जो हमारे लिए "कुएँ" और "सोते" का काम करती हैं (पद 15)—और हम उन्हें छोड़कर कभी किसी व्यभिचारी स्त्री के घर की तलाश में नहीं जाएँगे। दूसरे शब्दों में, जब हमें अपनी पत्नियों के द्वारा—यौन और भावनात्मक, दोनों तरह से—संतुष्टि देने वाली ताज़गी मिलेगी, तो हम कभी किसी व्यभिचारी स्त्री के आलिंगन की लालसा नहीं करेंगे या उसके प्रेम की चाहत नहीं रखेंगे (पद 20)। बाइबल, नीतिवचन 5:16–17 में कहती है: "क्या तेरे सोते सड़कों पर बहने चाहिए, तेरे पानी की धाराएँ चौकों में बहनी चाहिए? वे केवल तेरे ही हों, अजनबियों के साथ कभी साझा न किए जाएँ।" फिर भी, आज कितने पति अपने सोतों को अपने घरों के बाहर बहने दे रहे हैं, उन्हें अजनबियों के साथ साझा कर रहे हैं? कितने पुरुष दूसरी स्त्रियों के पीछे भागने के लिए अपनी पत्नियों को छोड़ रहे हैं? आज कई पति अपनी पत्नियों के आलिंगन में लगातार संतुष्टि पाने में असफल रहते हैं; क्योंकि वे अपनी पत्नियों में आनंद नहीं पाते, इसलिए वे अपनी पत्नियों के प्रेम को महत्व नहीं देते (पद 19)। इसके बजाय, वे चरित्रहीन स्त्रियों के स्नेह की लालसा करते हैं और दूसरी स्त्रियों की बाहों में लिपटते हैं (पद 20)। जब हम पुरुष अपनी पत्नियों को छोड़कर दूसरी स्त्रियों के पीछे भागते हैं और बेवफ़ाई करते हैं, तो हमें अपने पापपूर्ण चुनावों के परिणामों का सामना करना ही पड़ता है (पद 7–14)। अनुशासन के इन रूपों में "सम्मान की हानि" (पद 9), "समय की हानि" (पद 9), "धन की हानि" (पद 10), "स्वास्थ्य की हानि" (पद 11), और "अंतरात्मा की पीड़ा" (पद 12–14) शामिल हैं। इसलिए, व्यभिचार के परिणामों को जानते हुए, हमें व्यभिचारिणी स्त्री के प्रति स्नेह नहीं रखना चाहिए। बल्कि, हमें हमेशा अपनी पत्नियों की बाहों में ही पूर्ण संतुष्टि पानी चाहिए और उनमें ही आनंदित होना चाहिए।

(4) हम पतियों को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम और उनकी देखभाल करनी चाहिए, जैसे हम अपने शरीर की करते हैं।

कृपया इफिसियों 5:28 और पद 33 के पहले भाग को देखें: "इसी प्रकार पतियों को भी अपनी पत्नियों से अपने शरीर के समान प्रेम करना चाहिए। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह स्वयं से प्रेम करता है... तथापि, तुम में से प्रत्येक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए, जैसे वह स्वयं से करता है।" जिस प्रकार हम पति अपने शरीर की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हैं, उसी प्रकार हमारी पत्नियों के प्रति हमारा प्रेम उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला होना चाहिए, जिससे उनके विकास और उन्नति को बढ़ावा मिले। इसके अतिरिक्त, हम पतियों को अपनी पत्नियों से दो विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रेम करना चाहिए। ये दो उद्देश्य हैं: उसे

पवित्र बनाना (इफिसियों 5:26a) और उसे प्रभु के सामने एक दीप्तिमान पत्नी के रूप में प्रस्तुत करना (पद 27)। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की विधि इफिसियों 5:26 के पहले भाग में वर्णित है: "उसे पवित्र बनाने के लिए, वचन के द्वारा जल के स्नान से उसे शुद्ध करके..." और 1 पतरस 1:22 में: "अब जब तुम ने सत्य का पालन करके अपने आप को शुद्ध कर लिया है..." हम पतियों को परमेश्वर के सत्य वचन का उपयोग करके अपनी पत्नियों को शिक्षा देनी चाहिए और उन्हें उसका पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे हम उन्हें संसार से अलग जीवन जीने की ओर—अर्थात्, परमेश्वर में पवित्रता के जीवन की ओर—मार्गदर्शन दे सकें। इसलिए, हम पतियों को अपनी पत्नियों का इस प्रकार पालन-पोषण करना चाहिए कि वे प्रभु की दृष्टि में "महिमामयी पत्नियां" बन सकें—ऐसी पत्नियां, जिनमें उसकी दीप्ति प्रकट हो।

(5) हम पतियों को अपनी पत्नियों के लिए त्याग करने को तैयार रहना चाहिए।

आज के धर्मग्रंथ के अंश, इफिसियों 5:25 पर नज़र डालें: “हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आप को दे दिया।” हम पतियों को इस त्यागमय प्रेम का अभ्यास करना चाहिए; हालाँकि, इसका एकमात्र उद्देश्य हमारी पत्नियों की भलाई होना चाहिए। इसके अलावा, हमें उनसे किसी इनाम की उम्मीद में काम नहीं करना चाहिए, बल्कि उनकी देखभाल करने की सच्ची इच्छा से ऐसा करना चाहिए। हम पतियों को त्याग करना सीखना चाहिए, जिसकी शुरुआत छोटी-छोटी बातों से होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि हम अपनी पत्नियों के प्रति देखभाल के छोटे-छोटे इशारे भी दिखाते हैं—जैसे कि वे जो कहती हैं उसे ध्यान से सुनना, उनके साथ समय बिताना, कभी-कभी कूड़ा बाहर ले जाना, या यहाँ तक कि रसोई में बर्तन धोने का दिखावा करना—तो ये छोटे-छोटे काम भी बड़े प्रेम की अभिव्यक्ति माने जाएँगे।

(6) हम पतियों को अपने बच्चों के पालन-पोषण की सक्रिय ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।

इफिसियों 6:4 पर नज़र डालें: “हे पिताओं, अपने बच्चों को मत चिढ़ाओ; इसके बजाय, उन्हें प्रभु की शिक्षा और अनुशासन में पालो-पोसो।” अपने घरों के मुखिया होने के नाते, हम पतियों को अपनी आध्यात्मिक परवरिश को केवल अपनी पत्नियों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए; हमें अपने बच्चों का पालन-पोषण भी प्रभु की शिक्षा

और अनुशासन में करना चाहिए। जब बच्चों के पालन-पोषण की बात आती है, तो हमें पूरा काम केवल अपनी पत्नियों पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए और न ही मूक दर्शक बनकर बैठे रहना चाहिए। हमें अपने बच्चों के पालन-पोषण में अपनी ज़िम्मेदारियों को सक्रिय रूप से और आगे बढ़कर निभाना चाहिए।

तो फिर, हम पतियों को अपनी पत्नियों से इस तरह प्रेम क्यों करना चाहिए? इसका कारण यह है कि पति और पत्नी मिलकर "एक देह" बन जाते हैं। इफिसियों 5:31 पर नज़र डालें: “इसी कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिल जाएगा, और वे दोनों एक देह हो जाएँगे।” चूँकि हमने अपनी पत्नियों के साथ एक होने के लिए अपने माता-पिता को छोड़ा है—और इस प्रकार एक देह बन गए हैं—इसलिए हमें अपनी पत्नियों से ठीक वैसे ही प्रेम करना चाहिए, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आप को दे दिया।

मैं वचन पर इस मनन को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। मेरी पत्नी और मेरे दो मुख्य उद्देश्य हैं। पहला, एक-दूसरे के जीवन में यीशु की छवि को दर्शाना; और दूसरा, एक-दूसरे से यीशु के प्रेम के साथ प्रेम करना। अब तक की हमारी इस साझा यात्रा में, हमने इन बातों को अपनी प्रार्थना का मुख्य विषय बनाया है, और हम तब तक इनका अनुसरण करते रहेंगे जब तक कि प्रभु हमें अपने पास नहीं बुला लेते। अपने दूसरे उद्देश्य—यानी यीशु के प्रेम से एक-दूसरे से प्रेम करना—को पूरा करने के लिए, सबसे पहला सबक जो मेरी पत्नी और मैं सीख रहे हैं, वह यह पहचानना और स्वीकार करना है कि पापी होने के नाते, हम केवल अपने मानवीय प्रेम के बल पर एक-दूसरे से प्रेम करने में असमर्थ हैं। अक्सर, वैवाहिक कलह के बाद, मुझे यह स्वीकार करने पर विवश होना पड़ता है कि मैं अपनी स्वयं की शक्ति या अपनी प्रेम करने की क्षमता के आधार पर अपनी पत्नी से प्रेम नहीं कर सकता। वास्तव में, मैंने अपनी पत्नी के सामने इस सच्चाई को खुलकर स्वीकार किया है। मुझे वे क्षण याद हैं—जब दर्द, चोट और आँसुओं के बीच—मैं परमेश्वर और अपनी पत्नी, दोनों के सामने मानवीय हृदय की अंतर्निहित भ्रष्टता और अपर्याप्तता को स्वीकार किए बिना नहीं रह सका: प्रेम करने की तीव्र इच्छा तो है, परंतु ऐसा कर पाने में पूर्ण असमर्थता है। आज भी स्थिति वैसी ही बनी हुई है। मैं कभी यह भूलना नहीं चाहता कि मैं अपनी स्वयं की शक्ति से अपनी पत्नी से प्रेम करने में पूरी तरह से असमर्थ हूँ। परिणामस्वरूप, मैं ईश्वरीय प्रेम—जो पवित्र आत्मा का फल है—की खोज करने के लिए विवश हो जाता हूँ; यह प्रेम किसी भी मानवीय प्रेम की तुलना में कहीं

अधिक श्रेष्ठ, शक्तिशाली और परिपूर्ण है: यह स्वयं प्रभु का प्रेम है। मैं रोमियों 5:5 में पाए जाने वाले उस सत्य को दृढ़ता से थामे रहता हूँ, जो हमें यह आश्वासन देता है कि जिस क्षण हमने यीशु पर अपना विश्वास रखा, उसी क्षण परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया गया था। इसी विश्वास में दृढ़ रहते हुए—और अपने मानवीय प्रेम की कमज़ोरी, अपर्याप्तता और अपूर्णता से पूरी तरह अवगत रहते हुए—मैं प्रार्थना करता हूँ और यह प्रयास करता हूँ कि प्रभु का प्रेम धीरे-धीरे और पूरी तरह से मेरे हृदय को भर दे, और मेरे अपने सीमित स्नेह का स्थान सदा के लिए ले ले। मैं 1 पतरस 1:22 के वचनों पर भी अपना भरोसा रखता हूँ: "अब जब कि तुम ने सत्य की आज्ञा मानने के द्वारा अपने प्राणों को पवित्र कर लिया है, जिससे तुम में सच्चा आपसी प्रेम उत्पन्न हो गया है, तो एक-दूसरे से शुद्ध हृदय से और पूरे मन से प्रेम करो।" मेरी सबसे गहरी अभिलाषा यह है कि सबसे पहले मैं प्रभु के सत्य की आज्ञा मानकर अपनी आत्मा को पवित्र करूँ, ताकि उसके बाद मैं अपनी पत्नी से पूरी लगन और पूरे हृदय से प्रेम कर सकूँ। वह सत्य ही मुझे अपने मानवीय प्रेम की कमज़ोरी, अपर्याप्तता और कमी का एहसास कराता है; यह मुझे अपनी इन कमियों को—ईश्वर के सामने और अपनी पत्नी के सामने—विनम्रतापूर्वक स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है; और इसके अलावा, यह उस प्रेरक शक्ति का काम करता है जो मुझे ईश्वर के दिव्य प्रेम की ओर ले जाती है। ईश्वर के वचन को सुनने और उसका पालन करने वाला जीवन जीते हुए—और पवित्र आत्मा के उस कार्य के बीच जो मेरे भीतर आंतरिक परिवर्तन ला रहा है—अब मैं एक ज़बरदस्त अनुभव करता हूँ: अब मैं अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता, बल्कि वह प्रभु जो मेरे भीतर वास करता है, वही मुझे उससे प्रेम करने में समर्थ बनाता है। जब हम इस तरह से जीवन जीते हैं, तो हमारा वैवाहिक संबंध अधिकाधिक प्रभु के प्रेम पर केंद्रित होता जाएगा। एक युगल के रूप में हमारा मुख्य उद्देश्य—एक-दूसरे के जीवन में यीशु की छवि को दर्शाना—कभी-कभी मेरे हृदय में इतनी तीव्र इच्छा बनकर उभरता है कि प्रार्थना करते समय मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। मैंने एक बार अपनी पत्नी से कहा था: "मैं तुम्हें जो सबसे बड़ा उपहार देना चाहता हूँ, वह यह है कि मेरी मृत्यु के क्षण, तुम मुझे यीशु की छवि धारण किए हुए देखो।" सच कहूँ तो, मेरे पास अपनी पत्नी को देने के लिए अपना कुछ भी नहीं है। फिर भी, अगर मेरे पास देने के लिए कुछ होता भी, तो मेरा मानना है कि यीशु की छवि में रूपांतरित हुए मेरे अपने अस्तित्व से अधिक कीमती कोई उपहार नहीं हो सकता। और मेरी पत्नी के लिए—जो उस उपहार के असीम महत्व को समझती है—उससे अधिक कीमती कोई भेंट हो ही नहीं सकती।

शादी में भरोसा बनाना

वैवाहिक रिश्ते में, अगर आप अपनी खुद की समझ पर निर्भर रहते हैं (नीतिवचन 3:5), तो आखिरकार आप एक-दूसरे पर शक करने लगेंगे। और जैसे-जैसे यह शक बढ़ता है, यह अंततः आपसी अविश्वास में बदल जाता है।

लेकिन, जो जोड़ा अपनी खुद की समझ पर निर्भर रहने से इनकार करता है—और इसके बजाय पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करना चुनता है (नीतिवचन 3:5)—वही भरोसा वे एक-दूसरे पर भी करते हैं; ठीक इसी वजह से कि वे अपना भरोसा परमेश्वर पर रखते हैं।

हम अपने प्रियजनों के साथ गहरा विश्वास कैसे बना सकते हैं?

“विश्वास को न केवल बनाने की ज़रूरत होती है, बल्कि उसे बचाने की भी ज़रूरत होती है।” [पॉल डेविड ट्रिप, *What Did You Expect?*]

अक्सर ऐसा लगता है जैसे हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ सचमुच अब कोई ऐसा नहीं बचा जिस पर भरोसा किया जा सके। दूसरों पर भरोसा करने के बाद बहुत से लोग बहुत ज़्यादा दुखी और निराश हुए हैं। नतीजतन, बहुत से लोग किसी पर भी बहुत जल्दी भरोसा करने से हिचकिचाते हैं। यहाँ तक कि शादीशुदा जोड़ों के बीच भी, अक्सर एक-दूसरे पर पूरा भरोसा करने में नाकामी देखने को मिलती है। असल में, ऐसा लगता है कि बहुत से जोड़ों के मन में एक-दूसरे के लिए शक-शुबहा रहता है। ऐसा लगता है कि काफी बड़ी संख्या में पति-पत्नी इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं—और यहाँ तक कि शक भी करते हैं—कि उनका पति या पत्नी किसी दूसरे पुरुष या महिला के साथ प्रेम-संबंध में हो सकता है। खासकर, उस जीवनसाथी पर फिर से भरोसा करना, जिसने एक बार बेवफ़ाई करके शादी के बंधन को तोड़ दिया हो, किसी बहुत बड़ी चुनौती से कम नहीं है। इस तरह, हम अभी एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ हमें उन लोगों पर भी भरोसा करने में मुश्किल होती है जिनसे हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। अविश्वास की ऐसी दुनिया में, ईसाई होने के नाते हमें कैसा रवैया अपनाना चाहिए? हमें अपने प्रियजनों के साथ गहरा और टिकाऊ विश्वास बनाने की कोशिश करनी चाहिए। सबसे बढ़कर, हमें अपने जीवनसाथी के साथ—उन साथियों के साथ जिन्हें परमेश्वर ने हमारे जीवन में भेजा है—गहरा विश्वास पैदा करना चाहिए। तो फिर, हमें यह काम कैसे करना चाहिए? मैं चार मुख्य बातों के ज़रिए इस पर चर्चा करना चाहूँगा:

पहला, अगर हम अपने प्रियजनों के साथ गहरा विश्वास बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहला कदम जो हमें उठाना चाहिए, वह है परमेश्वर पर भरोसा करना।

प्रियजनों के एक-दूसरे पर भरोसा न कर पाने का सबसे बड़ा कारण ठीक यही है कि उनमें परमेश्वर पर भरोसे की कमी होती है। उदाहरण के लिए, एक ऐसा जोड़ा जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं करता, वह सचमुच एक-दूसरे पर भी भरोसा नहीं कर सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे आपसी रिश्तों में—खासकर हमारे प्यारे जीवनसाथी के साथ—विश्वास तभी कायम हो सकता है, जब सबसे पहले परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में विश्वास की नींव मज़बूत हो। इसलिए, अपने प्रियजनों के साथ गहरा विश्वास बनाने के लिए जो सबसे ज़रूरी काम है, वह बस इतना है कि हम परमेश्वर पर भरोसा करें। बाइबल, नीतिवचन 3:5 में हमसे कहती है: "अपने पूरे मन से यहोवा पर भरोसा रख, और अपनी समझ का सहारा न ले।" जैसा कि यह वचन बताता है, हमें अपने पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। हालाँकि, एक ऐसी बात है जो हमें पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करने से रोकती है। वह कारण ठीक हमारी अपनी समझ पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति है। यह हमारी सहज प्रवृत्ति है। हमारी सहज प्रवृत्ति यह नहीं है कि हम पूरे दिल से परमेश्वर पर भरोसा करें, बल्कि इसके विपरीत, हम अपनी ही समझ—अपने ही ज्ञान—पर निर्भर रहते हैं। यदि हम इस सहज प्रवृत्ति का पालन करते हैं और केवल अपनी ही समझ पर निर्भर रहते हुए किसी प्रियजन पर भरोसा करने का प्रयास करते हैं, तो इसका परिणाम निश्चित रूप से अत्यधिक अस्थिर होगा। इसका कारण यह है कि ऐसे भरोसे का स्रोत परमेश्वर में नहीं, बल्कि स्वयं अपने आप में निहित होता है। यदि हम परमेश्वर के बजाय स्वयं अपने आप पर भरोसा करते हैं, तो हम न केवल स्वयं के अलावा किसी अन्य व्यक्ति पर पूर्ण भरोसा करने में असफल रहते हैं, बल्कि हम ऐसा करने में असमर्थ भी होते हैं। क्योंकि हम किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में स्वयं पर अधिक भरोसा करते हैं, इसलिए भले ही हमें यह विश्वास हो कि हम किसी प्रियजन पर भरोसा कर रहे हैं, फिर भी वह भरोसा अनिवार्य रूप से डांवाडोल ही रहता है। यह कोई नहीं कह सकता कि वह भरोसा कब और कैसे टूट जाएगा। ठीक इसी कारण से, यीशु ने स्वयं को लोगों के भरोसे नहीं सौंपा (यूहन्ना 2:24)। इसका कारण यह था कि यीशु "स्वयं जानते थे कि मनुष्य के भीतर क्या है" (पद 25)। इसलिए, यदि हम अपने प्रियजनों के साथ एक गहरा और स्थायी भरोसा कायम करना चाहते हैं, तो हमें—सबसे पहले और सबसे

महत्वपूर्ण रूप से—लोगों के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए। केवल परमेश्वर पर भरोसा करने से ही हम अपने प्रियजनों पर भरोसा करने में वास्तव में सक्षम बन पाते हैं।

दूसरे, अपने प्रियजनों के साथ एक गहरा और स्थायी भरोसा कायम करने के लिए, हमें—परमेश्वर पर अपने भरोसे के आधार पर—उस भरोसे को उन तक भी पहुँचाना चाहिए।

जो लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, उन्हें एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। वे जितना अधिक परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उतना ही अधिक वे एक-दूसरे पर गहराई से भरोसा करने में सक्षम बन पाते हैं। जो लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं—और आपस में आपसी भरोसा साझा करना चाहते हैं—उन्हें बदले में भरोसे की अपेक्षा करने से पहले, अपने साथी पर भरोसा जताना चाहिए। भरोसा जताते समय, हमें इसे केवल उन क्षणों तक सीमित नहीं रखना चाहिए जब हमारा प्रियजन स्वाभाविक रूप से भरोसेमंद प्रतीत होता हो; बल्कि, भले ही वे भरोसे के योग्य न भी लगें, फिर भी हमें परमेश्वर पर अपने स्वयं के भरोसे के आधार पर उन पर भरोसा करना चाहिए। जिस प्रकार परमेश्वर का प्रेम बिना किसी शर्त के होता है, उसी प्रकार हमें भी अपने साथियों से बिना किसी शर्त के प्रेम करना चाहिए। और यदि हम वास्तव में बिना किसी शर्त के प्रेम कर रहे हैं, तो हमें उस व्यक्ति पर भी बिना किसी शर्त के भरोसा करना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं। भले ही भविष्य में, वह प्रियजन हमारे भरोसे को तोड़ दे और हमारे खिलाफ हो जाए, फिर भी हमें उन पर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि हमारा परम भरोसा ईश्वर पर है। लेकिन फिर, हमें क्या करना चाहिए यदि हमारा प्रियजन सचमुच हमारे भरोसे को तोड़ दे और हमारे खिलाफ हो जाए? ऐसा प्रश्न पूछना पूरी तरह से स्वाभाविक है। हालाँकि, हम ऐसा प्रश्न इसलिए पूछते हैं, क्योंकि संभवतः हमें ईश्वर पर पूरा भरोसा नहीं है; इसके बजाय, हम अपनी मानवीय समझ पर अधिक निर्भर रहते हैं। जब हम इस तरह से खुद पर अधिक निर्भर रहते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से संदेह से घिर जाते हैं, और सोचते हैं, "क्या होगा यदि मैं अपने प्रियजन पर भरोसा करूँ, और बदले में मुझे धोखा मिले?" जब हम इस तरह से अपनी बुद्धि पर निर्भर रहते हैं, तो हम किसी पर भी—यहाँ तक कि अपने प्रिय जीवनसाथी पर भी—पूरी तरह से भरोसा करने में असमर्थ हो जाते हैं। इसलिए, ईश्वर पर भरोसा करके ही हम अपने जीवनसाथी पर भरोसा करने में सक्षम हो पाते हैं। फिर भी, अक्सर ऐसा होता है कि, क्योंकि हम ईश्वर के बजाय खुद पर अधिक

निर्भर रहते हैं, इसलिए हम अपने जीवनसाथी को भरोसा देने के बजाय उनसे भरोसा *पाने* की अपेक्षा करने लगते हैं। और जब हमें उनसे वह भरोसा नहीं मिलता, तो हमें ठेस पहुँचती है—और हम क्रोधित भी हो सकते हैं। यही मानवीय-केंद्रित वैवाहिक संबंध का मूल सार है। यदि हम एक मानवीय-केंद्रित विवाह में हैं, तो हम अनिवार्य रूप से एक-दूसरे से *पाने* की अपेक्षा करेंगे, न कि *देने* की (यह एक ऐसी मानसिकता है जो अपने स्वभाव से ही स्वार्थी है)। हालाँकि, यदि हमारा वैवाहिक संबंध ईश्वर-केंद्रित है, तो हम अपने प्रिय जीवनसाथी से पाने की अपेक्षा करने के बजाय उन्हें देने में अधिक आनंद पाएँगे (क्योंकि हम परोपकारी हुए बिना नहीं रह सकते)। जो जोड़े इस तरह का ईश्वर-केंद्रित संबंध विकसित करते हैं, वे सबसे पहले एक-दूसरे को बिना शर्त प्रेम और भरोसा प्रदान करते हैं। इसके अलावा, भले ही अंततः उन्हें अपने प्रिय जीवनसाथी से धोखा मिले, एक ईश्वर-केंद्रित जोड़ा यीशु की ओर देखता है और उन पर भरोसा करता है—जिन्हें स्वयं उनके अपने लोगों ने धोखा दिया था—और इस प्रकार वे अपने आंतरिक संघर्ष में विजयी होते हैं। और ऐसी परिस्थितियों के बीच भी, वे ईश्वर के प्रेम के माध्यम से उसी जीवनसाथी को क्षमा कर देते हैं जिसने उन्हें धोखा दिया था। हालाँकि हमारी अपनी मानवीय समझ के दृष्टिकोण से देखने पर यह असंभव लग सकता है, लेकिन यदि हम ईश्वर पर भरोसा करें तो यह पूरी तरह से संभव हो जाता है। ईश्वर इसे संभव बनाने में पूरी तरह से सक्षम हैं। इसलिए, उस ईश्वर पर अपना भरोसा रखते हुए, हमें अपने भरोसे को उस व्यक्ति तक भी बढ़ाना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं।

तीसरी बात, जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं, उस पर विश्वास करने के लिए हमें उसके सामने भी उतना ही सच्चा होना चाहिए जितना हम परमेश्वर के सामने होते हैं।

जो लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, उन्हें सच्चे मसीही होना चाहिए। इसके अलावा, जो लोग प्रेम करते हैं, उन्हें ईमानदार भी होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे से झूठ नहीं बोलना चाहिए, और न ही उन्हें एक-दूसरे के साथ किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी करनी चाहिए। उन्हें न केवल परमेश्वर की दृष्टि में, बल्कि एक-दूसरे की दृष्टि में भी सच्चा होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के साथ किस हद तक सच्चा होना चाहिए? उन्हें इतना सच्चा होना चाहिए कि वे एक-दूसरे से कह सकें, "परमेश्वर मेरा गवाह है" (फिलिप्पियों 1:8)। परमेश्वर हमारे हर काम को देखता है। इसके अलावा, परमेश्वर हमारे सभी विचारों को जानता है। इसलिए, जिस तरह हम परमेश्वर के सामने सच्चे होते हैं, उसी तरह हमें उस व्यक्ति के सामने भी सच्चा होना चाहिए जिससे हम प्रेम

करते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए, हमें अपने प्रियजन के साथ ईमानदार, स्पष्ट और पारदर्शी बातचीत करनी चाहिए। जब हम बातचीत करते हैं, तो "स्व-केंद्रित" (अपने बारे में सोचने वाली) बातचीत करने के बजाय, हमें "दूसरों पर केंद्रित" बातचीत करनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अपने प्रियजन से इसलिए बात करने के बजाय कि हम उनसे कुछ पाना चाहते हैं, हमें इसलिए बात करनी चाहिए क्योंकि हम उनके लिए कुछ करना चाहते हैं। ऐसे ही शब्द वास्तव में प्रियजन को संवारने और उसका भला करने का काम करते हैं। इसके विपरीत, वे शब्द जो प्रियजन को ठेस पहुँचाते हैं, वे होते हैं जो दूसरे व्यक्ति से कुछ हासिल करने के लिए, उसे अपने वश में करने के इरादे से बोले जाते हैं। हमें ऐसे शब्द बोलने से बचना चाहिए। इसके अलावा, हमें ऐसे शब्द नहीं बोलने चाहिए जो हमारे प्रियजन को धोखा दें। जिस तरह हम ऐसे शब्द नहीं बोलते जो परमेश्वर को अपने वश में करने या धोखा देने का प्रयास करते हों—क्योंकि हम उसके सामने सच्चे रहना चाहते हैं—उसी तरह हमें उस व्यक्ति के साथ भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं। इसी प्रकार, जिस तरह हम परमेश्वर से ईमानदार, स्पष्ट और पारदर्शी प्रार्थनाएँ करते हैं, उसी तरह हमें अपने प्रियजन के साथ भी ईमानदार, स्पष्ट और पारदर्शी बातचीत करनी चाहिए। हमें अपने हृदय से सच बोलना चाहिए (भजन संहिता 15:2)। सच बोलने वाले होंठ सदा बने रहते हैं (नीतिवचन 12:19)। इसके अलावा, जिस तरह परमेश्वर का हर काम सच्चा होता है (भजन संहिता 33:4), उसी तरह हमें भी पूरी सच्चाई के साथ अपना आचरण करना चाहिए। हमें उन वादों को ईमानदारी से निभाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए जो हम उन लोगों से करते हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं। चाहे कोई वादा बड़ा हो या छोटा, हमें उनके साथ किए गए अपने वादों को पूरी ईमानदारी से निभाना चाहिए। ऐसा करके, हम अपने प्रियजनों के साथ अपने रिश्तों में विश्वास पैदा कर सकते हैं। इस तरह, हमें एक-दूसरे से सच्चाई के साथ प्रेम करना चाहिए (1 यूहन्ना 3:18)। हमें ईमानदारी वाले लोग बनना चाहिए और एक-दूसरे पर भरोसा रखना चाहिए (नीतिवचन 25:19)।

चौथी बात, जिन लोगों से हम प्रेम करते हैं, उन पर भरोसा करने के लिए हमें अपनी गलतियों को स्वीकार करना चाहिए और जब भी हमने उनके साथ कुछ गलत किया हो, तो उनसे क्षमा माँगनी चाहिए। इसके अलावा, हमें अपने व्यवहार को बदलने का पक्का इरादा करना चाहिए।

प्रियजन निश्चित रूप से गलतियाँ कर सकते हैं और एक-दूसरे को ठेस पहुँचा सकते हैं। क्योंकि वे परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा नहीं करते—बल्कि अपनी ही समझ पर निर्भर रहते हैं—इसलिए हो सकता है कि वे

एक-दूसरे पर पूरी तरह भरोसा न कर पाएँ और उनके मन में गहरे संदेह पैदा हो जाएँ। यदि इन संदेहों को समय रहते न रोका जाए, तो ये बढ़कर गहरे अविश्वास का रूप ले सकते हैं। ऐसा अविश्वास उनके दिलों में असंतोष पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप वे अंततः एक-दूसरे की शिकायतें करने लगते हैं और एक-दूसरे की बात मानने से इनकार करने लगते हैं। इसके अलावा, यह आंतरिक असंतोष उन्हें एक-दूसरे के प्रति बेईमान बना सकता है और उन्हें झूठ बोलने पर भी मजबूर कर सकता है। जब वे झूठ बोलते हैं, तो अक्सर अपने धोखे को सही ठहराने के लिए बहाने बनाते हैं—यह दावा करते हुए कि यह एक "सफेद झूठ" (छोटा-मोटा झूठ) था या यह "अपने प्रियजन की भलाई के लिए" बोला गया था। हालाँकि, झूठ तो बस झूठ ही होता है। और झूठ बोलना एक व्यर्थ कार्य है (यिर्मयाह 7:8)। हमें एक-दूसरे को धोखा नहीं देना चाहिए और न ही झूठ बोलना चाहिए (लैव्यव्यवस्था 19:11; कुलुस्सियों 3:9)। इसके अलावा, हमें एक-दूसरे के साथ कपटपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए; हमें कभी भी उस व्यक्ति को धोखा नहीं देना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं। फिर भी, यदि हमने सचमुच किसी प्रियजन को धोखा दिया है या उनसे झूठ बोला है, तो हमें उनसे क्षमा माँगनी चाहिए। हमें पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ उनके सामने उस गलती को स्वीकार करना चाहिए जो हमने की है। इसके अलावा, हमें अपने प्रियजन से न केवल यह वादा करना चाहिए कि हम दोबारा कभी वैसी गलती नहीं करेंगे, बल्कि हमें अपने कार्यों के द्वारा उस वादे को निभाकर भी दिखाना चाहिए। साथ ही, जब कोई प्रियजन, जिसने हमारे साथ कोई गलती की हो, हमसे क्षमा माँगता है, तो हमें उसे क्षमा कर देना चाहिए। हालाँकि हमें क्षमा तो करना चाहिए, लेकिन हमें उनके द्वारा की गई गलतियों का हिसाब-किताब अपने दिल में लंबे समय तक सँजोकर नहीं रखना चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:5)। ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर, "अपनी दया की बहुतायत के अनुसार," हमारे पापों को मिटा देता है (भजन संहिता 51:1), हमें भी उनके अपराधों को अपने दिलों से पूरी तरह मिटा देना चाहिए। हमें खुद को परमेश्वर के कभी न बदलने वाले प्रेम के साथ उनसे प्रेम करने के लिए भी समर्पित करना चाहिए। इसके अलावा, हमें उस व्यक्ति पर भरोसा रखने के लिए खुद को फिर से समर्पित करना चाहिए जिससे हम प्रेम करते हैं। अपने रिश्ते को—जो कि बदलने की संभावना रखता है—कमज़ोर पड़ने देने के बजाय, हमें इसे प्रभु के भीतर रूपांतरण के एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। इसलिए, हमें अपने प्रियजन के साथ मिलकर प्रभु में बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हमें परिपक्व व्यक्तियों के रूप में निर्मित होना चाहिए।

एक बढ़ता हुआ वैवाहिक रिश्ता?

यहाँ मंगोलिया में, शुक्रवार की सुबह के 4:31 बजे हैं। मैं अपनी नींद से जागा—अभी भी थोड़ी खाँसी हो रही थी—और मैंने फिर से कुछ दवा ली। दोबारा सो न पाने के कारण, मैंने तय किया—शायद कुछ हद तक अचानक ही—कि मैं इस हालिया मिशन यात्रा पर विचार करूँ। जैसे-जैसे मैंने रास्ते में मिले कई साथी विश्वासियों द्वारा साझा की गई दिल को छू लेने वाली कहानियों को फिर से याद किया, मुझे अपने विचारों को व्यवस्थित करने और विशेष रूप से "परिवार" के विषय पर लिखने की प्रेरणा मिली। मैं प्रार्थना करता हूँ कि ऐसा करते समय ईश्वर मुझे बुद्धि और मार्गदर्शन प्रदान करें:

(1) पति-पत्नी अकेलापन महसूस कर सकते हैं।

मेरी पत्नी ने, अतीत में, मुझसे कहा है कि वह अकेलापन महसूस करती है। हालाँकि, इस हालिया मिशन यात्रा के दौरान हुए अनुभवों से मुझे इसका कारण समझ में आया: मैं खुद को उसकी जगह रखकर सोचने और उन गतिविधियों में शामिल होने में असफल रहा था जिन्हें वह मेरे साथ साझा करना चाहती थी। परिणामस्वरूप—अंतरात्मा की कसक और एक व्यक्तिगत चुनौती दोनों महसूस करते हुए—मैंने अपनी पत्नी से वादा किया कि हम साथ में कैंपिंग पर जाएँगे, सिर्फ़ हम दोनों, और साथ ही इनडोर रॉक क्लाइंबिंग भी करेंगे। मैंने ऐसा करने का पक्का इरादा कर लिया, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए—क्योंकि मैं पछतावे के साथ जीना नहीं चाहता। मुझे यह जल्दबाज़ी इसलिए महसूस हुई क्योंकि मुझे पहले से कहीं ज़्यादा गहराई से यह एहसास हुआ कि शायद मुझे हमेशा अपनी पत्नी से उतना प्यार करने का अवसर न मिले जितना मैं अभी करता हूँ।

(2) पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ अपने भावनात्मक दर्द को पूरी तरह से साझा करने में असफल हो सकते हैं।

मेरा मानना है कि इसका मुख्य कारण यह है कि, जब पति-पत्नी अपने भावनात्मक बोझ को साझा करने की कोशिश भी करते हैं, तो वे कही गई बातों को मुख्य रूप से अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से ही सुनते और समझते हैं। परिणामस्वरूप—और यह दूसरा बिंदु है—भले ही वे अपना दर्द साझा करते हैं, फिर भी उनमें अक्सर एक-दूसरे को वास्तव में संतोषजनक रूप से मान्यता और समझ प्रदान करने के लिए आवश्यक पर्याप्त सहानुभूति की कमी होती है। नतीजतन—और यह तीसरा बिंदु है—पति-पत्नी अनिवार्य रूप से खुद को पूरी तरह से खुलकर सामने आने और अपने साथी के साथ अपने आंतरिक संघर्षों को साझा करने में हिचकिचाते हुए पाते हैं। जब कोई जोड़ा इस तरह से अपने भावनात्मक बोझ को पूरी तरह से साझा करने में असमर्थ होता है, तो वे अकेलेपन के शिकार हो जाते हैं; और यदि वह अकेलापन असहनीय हो जाता है, तो वे किसी तीसरे व्यक्ति की सहायता ले सकते हैं—कोई ऐसा जिसके साथ वे अपने भावनात्मक दर्द को अपने जीवनसाथी की तुलना में कहीं ज़्यादा गहराई और पूरी तरह से साझा कर सकते हैं।

(3) यदि इससे वैवाहिक बंधन मज़बूत होता है, तो किसी तीसरे पक्ष की सहायता लेना एक फ़ायदेमंद कदम है। इस संदर्भ में, "तीसरा पक्ष" सुनते ही स्वाभाविक रूप से किसी पेशेवर ईसाई परामर्शदाता (counselor) का ख्याल आता है; हालाँकि—विशेष रूप से इसलिए क्योंकि पति ऐसी पेशेवर मदद लेने में हिचकिचा सकते हैं—यह भूमिका मेरे जैसा कोई व्यक्ति भी निभा सकता है: यानी एक पादरी। आम तौर पर, या तो पत्नी या पति किसी पादरी से संपर्क करते हैं (और इसके लिए आमने-सामने की मुलाक़ात ज़रूरी नहीं है, क्योंकि KakaoTalk जैसे संचार के साधन उपलब्ध हैं) ताकि वे अपनी मुश्किलों को साझा कर सकें और किसी तीसरे पक्ष से सहायता का अनुरोध कर सकें। उस क्षण, मेरा मानना है कि तीसरे पक्ष को उस व्यक्ति के दिल की बात पूरी तरह से सुननी चाहिए, बिना किसी पूर्वधारणा के या आलोचनात्मक रवैया अपनाए। इसके बजाय, उन्हें प्रभु के ही हृदय से सुनना चाहिए—इतनी सहानुभूति के साथ सुनना चाहिए कि वे उस व्यक्ति के दर्द में सहभागी बन सकें; मैं इसे पवित्र आत्मा का कार्य मानता हूँ। जब पवित्र आत्मा कार्य कर रही होती है, तो तीसरे पक्ष की भूमिका उस व्यक्ति को अपने दिल की बात खुलकर कहने में मदद करती है, जिससे उन्हें सांत्वना मिल पाती है।

(4) दुखद पारिवारिक इतिहास के संबंध में, न केवल ईश्वर के सामने, बल्कि कम से कम किसी एक भरोसेमंद और प्रिय व्यक्ति के सामने भी अपने दिल की बात खुलकर कहने की आवश्यकता होती है।

व्यक्ति को अपने प्रिय जीवनसाथी के साथ उस दुखद पारिवारिक इतिहास को साझा करने में सक्षम होना चाहिए, जिसे पहले किसी और के साथ साझा नहीं किया जा सका था—एक ऐसा इतिहास जो केवल ईश्वर के सामने ही व्यक्त किया गया था। हालाँकि, चुनौती यह है कि जीवनसाथी के साथ साझा करने से हमेशा पर्याप्त सांत्वना नहीं मिल पाती। इसके अलावा, क्योंकि हो सकता है कि व्यक्ति को उस दुखद पारिवारिक इतिहास के संबंध में केवल जीवनसाथी के माध्यम से आवश्यक भावनात्मक उपचार (emotional healing) न मिल पाए, इसलिए किसी तीसरे पक्ष—यानी जीवनसाथी के अलावा किसी अन्य व्यक्ति—की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। बेशक, मेरा यह मानना नहीं है कि यह तीसरा पक्ष अनिवार्य रूप से कोई पादरी या पेशेवर परामर्शदाता ही होना चाहिए। कई बार, सबसे उपयुक्त व्यक्ति कोई करीबी मित्र हो सकता है—जीवनसाथी के अलावा कोई अन्य व्यक्ति—जो पादरी या परामर्शदाता से भी अधिक सहयोग प्रदान कर सकता है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी तीसरे पक्ष के साथ दुखद पारिवारिक इतिहास साझा करने के लिए अपने हृदय के द्वार खोलना, भावनात्मक उपचार की प्रक्रिया में एक अत्यंत महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध होता है। मेरा मानना है कि इस उपचार प्रक्रिया के भीतर, अपने दुखद पारिवारिक इतिहास को *अस्वीकार* करने के बजाय उसे *स्वीकार* करना अधिक महत्वपूर्ण है। मैं इसे भावनात्मक रूप से ठीक होने की यात्रा का पहला कदम मानता हूँ। मेरी नज़र में, दूसरा कदम उस दर्दनाक पारिवारिक इतिहास का सीधे-सीधे सामना करना और उससे *भिड़ना* है। अपने पारिवारिक इतिहास से बचने के बजाय—इस हद तक कि आप उसके बारे में सोचना या बात करना भी न चाहें—आपको इसके बजाय उस साहस का सहारा लेना चाहिए जो ईश्वर आपको देता है, ताकि आप इसे अपने दिल की सबसे गहरी गहराइयों से बाहर निकाल सकें। आपको इसका सीधे-सीधे सामना करना होगा और इससे जूझना होगा; ईश्वर से सच्ची प्रार्थना करके इससे मुक्ति पानी होगी, ताकि यह इतिहास आपकी प्रगति में अब और बाधा न डाल सके। आपको ईश्वर के सत्य के माध्यम से आज़ादी पानी होगी। भले ही ठीक होने की इस प्रक्रिया में लंबा समय लगे, मेरा मानना है कि अंततः, आपको वह पहला कदम उठाना ही होगा—और ऐसा करने के लिए आपको प्रभु की कृपा से शक्ति मिलेगी।

(5) आपको अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपने रिश्तों में स्पष्ट रूप से स्वस्थ सीमाएँ तय करनी चाहिए।

हाल ही में जब मैं कई साथी विश्वासियों से मिला, तो एक विचार जो मेरे मन से निकल ही नहीं रहा था, वह यह था: अगर उनमें से हर किसी ने स्वस्थ सीमाएँ और भी ज़्यादा स्पष्ट रूप से तय की होतीं, तो चीज़ें कितनी बेहतर होतीं। कई विश्वासी इस समय अपने माता-पिता के साथ टकराव का सामना कर रहे हैं; मेरा मानना है कि ये टकराव न केवल पति-पत्नी पर (बहुत ज़्यादा) दबाव डालते हैं, बल्कि उनके वैवाहिक रिश्ते में कोई भी सकारात्मक योगदान देने में भी असफल रहते हैं। इसके विपरीत, मेरा मानना है कि माता-पिता के साथ होने वाले टकराव असल में शादी के अंदर ही टकराव पैदा कर सकते हैं। इसलिए, पति और पत्नी को अपने वैवाहिक रिश्ते को बाकी सब चीज़ों से ऊपर प्राथमिकता देनी चाहिए—इसे परमेश्वर की नज़र में सबसे पहले रखना चाहिए—और अपने माता-पिता को इस रिश्ते पर कोई भी नकारात्मक प्रभाव डालने से सक्रिय रूप से रोकना चाहिए। विशेष रूप से, एक पति को अपनी माँ के साथ अपने रिश्ते में स्पष्ट रूप से स्वस्थ सीमाएँ तय करनी चाहिए, ताकि वह अपनी पत्नी के साथ उसके रिश्ते पर कोई भी ऐसा प्रभाव न डाल सके जो मददगार न हो। इसके लिए बुद्धि और साहस की ज़रूरत होगी—ये ऐसे उपहार हैं जो परमेश्वर से मिलते हैं। इसके अलावा, भले ही वह अपनी पत्नी के साथ मिलकर दोनों पक्षों के माता-पिता का आदर-सत्कार करता हो, फिर भी एक पति को हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी पत्नी ही उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। दोनों पक्षों के माता-पिता, असल में, तीसरे पक्ष हैं। यहाँ तक कि अपने खुद के बच्चे भी तीसरे पक्ष ही हैं। आपको स्पष्ट सीमाएँ तय करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ये तीसरे पक्ष आपके वैवाहिक जीवन में कोई टकराव या अन्य अशांति पैदा न कर सकें।

(6) एक पति को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया।

हालाँकि यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे हम धर्मग्रंथों के माध्यम से पहले से ही जानते हैं, मेरा मानना है कि व्यवहार में, हम अक्सर अपने वैवाहिक रिश्तों में इस आज्ञा का सचमुच पालन करने में असफल रहते हैं। अपनी बात करूँ तो, विश्वास में एक साथी भाई के साथ एक खुली बातचीत के दौरान मुझे यह एहसास हुआ कि मैं अपनी पत्नी से वैसा प्रेम नहीं कर रहा था जैसा मुझे करना चाहिए था। नतीजतन, उस भाई से विदा लेने

के बाद, मैंने अपनी पत्नी से संपर्क किया और उन गतिविधियों को करने की योजना बनाई, जिन्हें वह लंबे समय से मेरे साथ करना चाहती थी: कैंपिंग और इनडोर रॉक क्लाइंबिंग। भले ही यह एक छोटा सा कदम लगे, लेकिन मेरा इरादा इसे अपनी शुरुआत का बिंदु बनाने का है। हाल ही में एक और भाई के साथ हुई मुलाकात के दौरान मुझे एक और बात का एहसास हुआ: हम पतियों को अपनी पत्नियों को केवल अपने ही नज़रिए से नहीं देखना चाहिए। खास तौर पर, मुझे यह बात समझ में आई कि हम अपने नज़रिए में जितने ज़्यादा पक्के होते जाते हैं, हम स्वाभाविक रूप से अपनी पत्नियों के नज़रिए पर गौर करने में उतने ही कम काबिल होते जाते हैं। नतीजतन, हम अपनी पत्नियों के दिलों की खामोश आहों को समझने में नाकाम रहते हैं; और भले ही हम उन्हें सुनने के लिए काफी संवेदनशील *हों* भी, फिर भी अक्सर हममें वह सहानुभूति और गहरी समझ दिखाने की क्षमता की कमी होती है जो हमारी पत्नियों को सचमुच संतुष्ट कर सके। इसी वजह से, मेरा मानना है कि एक पत्नी—जिसे अपने ही प्यारे पति से न तो सहानुभूति मिलती है और न ही समझ—के पास गहरी निराशा महसूस करने के अलावा कोई चारा नहीं बचता, और आखिरकार, वह बस हार मानकर ऐसी ज़िंदगी के आगे घुटने टेक देती है।

(7) एक समझदार पत्नी अपने पति का सम्मान करके और उसके अधीन रहकर उसे मज़बूत बनाती है।

शादी के संदर्भ में, "क्रेज़ी साइकिल" (पागलपन का चक्र) एक ऐसा दुष्चक्र है जिसमें पति—ईश्वर के वचन की अवज्ञा करके और अपनी पत्नी से वैसा प्यार न करके जैसा मसीह ने कलीसिया से किया था—अपनी पत्नी को भी वैसा ही जवाब देने के लिए उकसाता है; बदले में, वह भी अपने पति की अवज्ञा और अनादर करती है, और उसके साथ वैसा व्यवहार करने में नाकाम रहती है जैसा कलीसिया मसीह के साथ करती है। क्योंकि पति को अपनी पत्नी से न तो सम्मान मिलता है और न ही अधीनता, इसलिए वह भी अपनी पत्नी से अपना प्यार रोक लेता है। जिस शादी में यह चक्र लगातार दोहराता रहता है, वह निश्चित रूप से एक जीता-जागता नरक बन जाती है। इसके विपरीत, एक ऐसी शादी जो स्वर्ग जैसी होती है, वह ऐसी शादी है जिसमें पति अपनी पत्नी से ठीक वैसा ही प्यार करता है जैसा मसीह ने कलीसिया से किया था, और पत्नी भी ठीक उसी तरह अपने पति के अधीन रहती है और उसका सम्मान करती है जैसा कलीसिया मसीह के अधीन रहती है। जब हम इस तरह के एक स्वस्थ वैवाहिक रिश्ते को बनाने की कोशिश करते हैं, तो जहाँ पति की भूमिका निस्संदेह बहुत महत्वपूर्ण होती है, वहीं मेरा मानना है कि पत्नी की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।

इस संदर्भ में पत्नी की अहम भूमिका यह है कि वह समझदारी से अपने पति को मज़बूत बनाए। उदाहरण के लिए, एक समझदार पत्नी अपने पति का सम्मान करके और उसके नेतृत्व के अधीन रहकर उसे मज़बूत बनाती है—खास तौर पर अपने बच्चों की नज़रों में। वह प्रभावी ढंग से अपने पति को अपने घर का असली मुखिया स्थापित करती है। मुझे लगता है कि यह बहुत ज़रूरी है।

नए शादीशुदा जोड़ों के लिए चर्च का चुनाव?

नए शादीशुदा जोड़ों को—ईश्वर की मर्ज़ी जानने की कोशिश करते हुए—यह तय करने के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें किस चर्च में जाना है? खास तौर पर, छोटे बच्चों वाले युवा जोड़ों को देखने पर ऐसा लगता है कि चर्च में शामिल होने का फ़ैसला अक्सर बच्चों के सबसे अच्छे फ़ायदे को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण के लिए, ज़्यादातर युवा जोड़े ऐसे चर्च को चुनना पसंद करते हैं जो खास तौर पर बच्चों के लिए मज़बूत कार्यक्रम पेश करता हो। हालाँकि, मेरा मानना है कि चर्च का चुनाव बच्चों के लिए नहीं, बल्कि खुद उस जोड़े के लिए किया जाना चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे हवाई जहाज़ में सुरक्षा निर्देश दिए जाते हैं—जहाँ, किसी आपात स्थिति में, आपको अपने बगल में बैठे बच्चे की मदद करने से पहले अपना ऑक्सीजन मास्क खुद लगाना होता है—मेरा मानना है कि चर्च के चुनाव में बच्चों की ज़रूरतों को पहले रखने के बजाय, जोड़े की आध्यात्मिक भलाई को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बेशक, एक पति स्वाभाविक रूप से ऐसा चर्च चुनना चाहेगा जो उसकी प्यारी पत्नी को पसंद आए। नतीजतन, अगर वह किसी खास चर्च में जाने का सुझाव देती है क्योंकि उसे लगता है कि यह उनके बच्चों के लिए फ़ायदेमंद है, तो यह पूरी तरह से मुमकिन है—और सच कहूँ तो, काफ़ी आम भी है—कि पति उसकी इच्छाओं का मान रखे और उसी चर्च में शामिल हो जाए जो वह चाहती है। हालाँकि, इस सिद्धांत के अलावा कि चर्च का चुनाव बच्चों के लिए नहीं, बल्कि जोड़े के लिए किया जाना चाहिए, मेरा यह भी मानना है कि पत्नी को ऐसा चर्च चुनना चाहिए जो उसके पति का साथ दे, जो घर का आध्यात्मिक मुखिया होता है (हालाँकि, जैसा कि बताया गया है, पति निस्संदेह ऐसा चर्च चुनने की कोशिश करेगा जो उसकी प्यारी पत्नी के लिए फ़ायदेमंद हो)। इसका कारण यह है कि यह सुनिश्चित करना बहुत ज़रूरी है कि परिवार के आध्यात्मिक नेता के तौर पर पति अपने विश्वास में मज़बूती से जमा रहे। तभी वह अपनी पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार कर पाएगा। इसके विपरीत, एक ऐसे हालात के बारे में सोचिए जहाँ एक पति सिर्फ़ इसलिए किसी चर्च में शामिल हो जाता है क्योंकि उसकी पत्नी ने बच्चों के फ़ायदे के लिए ऐसा सुझाव दिया था। हालाँकि पत्नी शायद इसलिए खुश हो

सकती है क्योंकि उसे अपनी उम्र की दूसरी महिलाओं (माताओं) के बीच एक मददगार समुदाय मिल जाता है, और बच्चे भी संडे स्कूल द्वारा पेश किए जाने वाले अलग-अलग "बेहतरीन" कार्यक्रमों से संतुष्ट हो सकते हैं, लेकिन पति को शायद ऐसा लगे कि पादरी के उपदेशों से उसका कोई जुड़ाव नहीं बन पा रहा है। इसके अलावा, उसे शायद ऐसा लगे कि वह दूसरे पतियों के साथ मुख्य रूप से अपनी पत्नी के सामाजिक दायरे के ज़रिए ही बातचीत कर रहा है—एक ऐसा माहौल जिसकी उसने खुद कभी तलाश नहीं की थी। मेरी राय में, ऐसी स्थिति—लंबे समय में—परिवार का आध्यात्मिक संतुलन बिगाड़ सकती है, और अंततः परिवार के समग्र विश्वास और आध्यात्मिक जीवन के लिए फायदेमंद होने के बजाय नुकसानदेह साबित हो सकती है। मेरी नज़र में, एक समझदार पत्नी वह है जो समझदारी और कुशलता से अपने पति को घर के मुखिया के रूप में स्थापित करती है। हालाँकि इसके लिए बहुत ज़्यादा प्रार्थना, धैर्य और सेवा की ज़रूरत पड़ सकती है, मेरा मानना है कि—लंबे समय के नज़रिए से—पति को परिवार के आध्यात्मिक अगुवा के रूप में स्थापित करना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। हमारी शादी से भी पहले से ही, मेरी पत्नी और मैंने यह पक्का विश्वास बनाए रखा है कि एक-दूसरे के साथ हमारा रिश्ता, जो प्रभु पर आधारित है, हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है—और इस संदर्भ में हम अपने बच्चों और अपने-अपने माता-पिता को "तीसरे पक्ष" के रूप में देखते हैं। घर के मुखिया के तौर पर, मेरा मानना है कि यह मेरा फ़र्ज़ है कि मैं अपनी पत्नी के लिए एक सीढ़ी का काम करूँ, और उसे प्रभु के और करीब आने में मदद करूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैं खुद उनके और करीब आने की कोशिश करता हूँ; हालाँकि इस भूमिका में मैं खुद को बहुत कमज़ोर पाता हूँ, फिर भी मैंने अब तक इसी तरह जीने की कोशिश की है, और यह सब केवल उनकी कृपा से ही संभव हो पाया है। डिलन, येरी और यीउन के लिए, चर्च का माहौल शायद हमेशा आदर्श न रहा हो; फिर भी, क्योंकि हमने एक जोड़े के तौर पर अपनी आध्यात्मिक यात्रा को प्राथमिकता दी, इसलिए परमेश्वर ने खुद ही इन सालों में हमारे तीनों बच्चों का अलग-अलग तरीकों से पालन-पोषण किया है। यह एक मुश्किल—शायद संवेदनशील भी—विषय हो सकता है, लेकिन मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हम सभी को इतनी समझ दे कि हम अपने चर्चों को समझदारी से चुनें, ताकि पुरुषों (मसीह में भाइयों) के तौर पर अपने विश्वास में बढ़ते हुए, हम परमेश्वर के वचन और प्रेम से अपनी पत्नियों (बहनों) और बच्चों का सही ढंग से पालन-पोषण कर सकें।

“पवित्र साहस”

“जागते रहो; विश्वास में स्थिर रहो; साहसी बनो; बलवन्त बनो” (1 कुरिन्थियों 16:13)।

हाल ही में, जब हम जंगल की आग के कारण अपना घर छोड़कर सुरक्षित जगह जा रहे थे, तो मेरी पत्नी और मैं कार से खाना लेने के लिए निकले। हमारे घर के ठीक बाहर सड़क पर, हमने बिजली का एक तार देखा जो खंभे से टूटकर नीचे गिर गया था। मेरी पत्नी कार से बाहर निकली, तेज़ हवा के कारण टूटी हुई पेड़ की एक डाल उठाई, और उस बिजली के तार को रास्ते से हटाने लगी। उसे ऐसा करते देखकर, मैंने मन ही मन सोचा, “मेरी पत्नी सचमुच एक साहसी महिला है!” (हाहा)। अपनी पत्नी के साथ लगभग 28 साल बिताने के बाद, मेरे मन में अक्सर एक विचार आता है: “अगर मेरी पत्नी एक पुरुष के रूप में पैदा हुई होती, तो वह एक बेहतरीन पादरी बनती और सेवा-कार्य में बहुत ही शानदार काम करती...” (हाहा)। मैं ऐसा इसलिए सोचता हूँ क्योंकि, मेरी नज़र में, मेरी पत्नी की “आत्मा बहुत बड़ी है”—वह बड़े विचारों वाली और उदार है (जबकि मेरी आत्मा छोटी है और मेरी सोच सीमित है)। इसके अलावा, वह साहसी और रोमांच-प्रेमी है; वह पहाड़ों में अकेले कैंपिंग करने जाती है, हाइकिंग करती है, और यहाँ तक कि रॉक क्लाइंबिंग भी करती है! (हाहा)। (दूसरी ओर, मैं डरपोक हूँ और मुझमें रोमांच की कोई भावना नहीं है)। साथ ही, मेरी पत्नी शायद ही कभी बड़बड़ाती है, जबकि मैं खुद काफी बड़बड़ाता रहता हूँ। (हाहा)। अभी के लिए मैं इतनी ही बातें बताऊँगा! (हाहा)। फिर भी, प्रभु ने *मुझे*—उसे नहीं—एक पुरुष के रूप में जन्म लेने के लिए चुना। मुझ जैसा कोई: डरपोक, जिसमें साहस और रोमांच की कमी हो, और जो बड़बड़ाने का आदी हो। (हाहा)। मुझे लगता है कि इसके पीछे कोई ईश्वरीय इच्छा और विधान ज़रूर होगा, हालाँकि, सच कहूँ तो, मुझे अब भी पूरी तरह समझ नहीं आया है कि वह क्या है।

लेकिन, कल दोपहर—जंगल की आग के कारण घर छोड़ने के बाद और फिर काफी समय बाद अपनी पत्नी के साथ घर लौटने पर—हमारी आपस में कुछ बातचीत हुई जिससे मुझे एक बात का एहसास हुआ (या एक नया विचार आया): मेरी पत्नी, आखिर, एक “महिला” ही है। (हाहा)। हम्म... ऐसा कहना शायद मुझे थोड़ी मुश्किल स्थिति में डाल दे (हो सकता है कि कलीसिया की बहनें मुझ पर शब्दों से हमला कर दें!)। हालाँकि, यह सिर्फ़ मेरा अपना निजी अनुभव है। कल जिस खास वजह से मैंने अपनी पत्नी को एक "औरत" के तौर पर देखा, वह यह थी कि वह थोड़ी घबराई हुई और असमंजस में लग रही थी कि क्या करे या इस हालात को कैसे संभाले। इसलिए, उसके पति होने के नाते, मैंने आगे बढ़कर इस मामले को सुलझाने की कोशिश की... मैंने अपना सुझाव दिया, और आखिर में, मेरी पत्नी ने मेरी सलाह मान ली, जिससे यह मामला सफलतापूर्वक सुलझ गया। इस संदर्भ में मैंने अपनी पत्नी को "औरत" इसलिए कहा, क्योंकि उसे मेरे नेतृत्व की ज़रूरत है—यानी, अपने पति के नेतृत्व की। ऐसे नेतृत्व के लिए सही समझ और सूझ-बूझ की ज़रूरत होती है। इसके अलावा, इस नेतृत्व के साथ-साथ मेरी प्यारी पत्नी को सही राह दिखाने की ज़िम्मेदारी भी जुड़ी होती है। और सबसे बढ़कर, इस नेतृत्व के लिए ईश्वर के प्रेम की नितांत आवश्यकता होती है। कल, जब हम आपस में बात कर रहे थे, तो मैंने अपनी पत्नी की आँखों में देखा; उस पल मैं इतना भावुक हो गया कि मेरा गला रुँध गया और मेरी आँखों से लगभग आँसू ही छलक पड़े। मुझे इस हाल में देखकर, मेरी पत्नी भी रोने लगी। तब मैं अपनी जगह से उठा, उसके पास गया और उसे गले लगा लिया; मैंने अपना दाहिना हाथ धीरे से उसकी पीठ पर रखा। वह बिस्तर पर बैठी हुई थी, उसने अपने दोनों हाथों से मेरे पैरों को कसकर पकड़ लिया और लगातार रोती रही। जब मैं अपनी पत्नी को उस तरह रोते हुए याद करता हूँ, तो मुझे यह एहसास होता है कि मैं उसे उस संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ प्यार नहीं दे पा रहा था, जिसकी ज़रूरत उसकी भावनाओं और नज़रिए को सचमुच समझने के लिए होती है। अपनी पत्नी से प्यार करने के मामले में मुझे अब भी अपनी कोशिशें अधूरी और अपनी संवेदनशीलता में कमी महसूस होती है; मुझे इस बात का भी एहसास है कि इस दिशा में मुझे अभी और भी बहुत कुछ सीखने और खुद को बेहतर बनाने की ज़रूरत है। इसलिए, मैं बस लगातार ईश्वर से मदद की गुहार लगाता रहता हूँ।

मैं एक "सीढ़ी" जैसा पति बनना चाहता हूँ।

शादी से पहले ही, प्रभु ने मेरे मन में एक खास सोच डाल दी थी: "अगर मुझे शादी करनी है, तो एक पति के तौर पर, मुझे अपनी पत्नी को मसीह के और करीब लाने में मदद करने के लिए एक 'सीढ़ी' का काम करना चाहिए।" इसलिए, शादी से पहले ही, मैंने परमेश्वर से यह प्रार्थना करना शुरू कर दिया था: (1) "हे प्रभु, मुझे अपनी (होने वाली) पत्नी से अपने प्रेम से प्रेम करने की शक्ति दे—और यह भी दे कि वह भी मुझसे तेरे प्रेम से प्रेम करे"; और (2) "मेरी पत्नी को मुझमें एक 'छोटा यीशु' देखने दे (मेरे गुज़र जाने से पहले)—और यह भी दे कि मैं भी उसमें एक 'छोटा यीशु' देख सकूँ।" हालाँकि, आज शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान—जब मैं परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहा था—तो मुझे एक कड़वी सच्चाई का एहसास हुआ: अपनी पत्नी के लिए एक सीढ़ी का काम करने के बजाय, मैं असल में उसके रास्ते में एक "रुकावट" बन गया हूँ। मुझे एहसास हुआ कि इसकी जड़ मेरी अपनी "आत्मिक कमज़ोरी" में है। दूसरे शब्दों में, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि ठीक इसी वजह से कि मैं आत्मिक रूप से कमज़ोर हूँ, मैं मसीह और मेरी पत्नी के बीच खड़ी एक रुकावट बन गया हूँ। हालाँकि मेरे दिल की सबसे गहरी इच्छा मसीह और मेरी पत्नी के रिश्ते में एक सीढ़ी का काम करना है, लेकिन मेरा कमज़ोर शरीर अभी उसी रिश्ते में एक रुकावट का काम कर रहा है। आज शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान दिए गए संदेश के ज़रिए ही अब मुझे इस बड़ी रुकावट को दूर करने का मार्गदर्शन मिल रहा है।

मैंने अपनी पत्नी के रास्ते में अनगिनत रुकावटें डालीं।

अपनी प्यारी पत्नी के साथ शादीशुदा ज़िंदगी के लगभग 27 सालों के दौरान, मैंने उसके रास्ते में अनगिनत रुकावटें डालीं। हमारी शादी से पहले, मैंने खुद को अपनी पत्नी और प्रभु के बीच एक सीढ़ी (stepping stone) बनने के लिए समर्पित कर दिया था—कोशिश करता था कि यीशु के और करीब आ सकूँ, उनके जैसा बन सकूँ, और अपनी पत्नी से उनके प्रेम से प्रेम कर सकूँ। फिर भी, असल में, मैंने बार-बार उसके सामने रुकावटें डालीं, जिससे वह ठोकर खा गई। इसके अलावा, तीन बच्चों के पिता के तौर पर, मैंने उनके रास्ते में भी अनगिनत रुकावटें डालीं, जिससे वे निराश हो गए। खास तौर पर, अपनी पत्नी से परमेश्वर के प्रेम से प्रेम न करके—और इसके बजाय उसके प्रति मन में बैर रखकर और उससे झगड़ा करके—मैंने अपने तीनों बच्चों के सामने ठोकर के पत्थर रख दिए। फिर भी, परमेश्वर की अद्‌भुत कृपा से, मेरे प्यारे बच्चों ने मुझसे कहा कि उनके मन में मेरे प्रति कोई कड़वाहट नहीं है। यह सचमुच हैरान करने वाली बात है, क्योंकि अगर मैं उनकी जगह होता, तो मुझे लगता कि अपने माता-पिता के प्रति मन में कड़वाहट रखना लाज़मी है। माता-पिता का मकसद सीढ़ी का काम करना होता है, जो अपने बच्चों को प्रभु के और करीब लाने में मदद करते हैं; फिर भी, ऐसा करने में मेरी नाकामी के बावजूद—इसके बजाय रुकावट बनने के बावजूद—प्रभु फिर भी मेरे तीनों बच्चों को अपने भीतर बढ़ने और परिपक्व होने में मदद कर रहे हैं। यह सारी मानवीय तर्क-बुद्धि और समझ से परे है। विश्वास में जिस एक बात पर मैं मज़बूती से कायम हूँ, वह यह है कि प्रभु मेरे तीनों बच्चों से मुझसे और मेरी पत्नी से भी कहीं ज़्यादा गहरा प्रेम करते हैं। इस तरह, प्रभु हम जैसे दोषपूर्ण, मूर्ख और पापी माता-पिता का भी इस्तेमाल कर रहे हैं ताकि वे उन बच्चों का व्यक्तिगत रूप से पालन-पोषण कर सकें जिनसे वे प्रेम करते हैं—डिलन, येरी और यीउन—और उन्हें अपने भीतर बढ़ने में मदद कर सकें। मुझे इस बात का कोई भरोसा नहीं है कि मैं भविष्य में अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों के लिए एक सच्ची सीढ़ी बन पाऊँगा; सच कहूँ तो, मुझे पता है कि मैं निस्संदेह—और बार-बार—उनके रास्ते में रुकावटें डालने का पाप फिर से करूँगा। फिर भी, प्रभु—जो करुणा, दया, कृपा और प्रेम से भरपूर हैं—हमारे परिवार को एक ऐसे

घर के रूप में बनाना जारी रखेंगे जो पूरी तरह से उन्हीं पर केंद्रित हो। यीशु मसीह—जो सच्ची सीढ़ी हैं—निश्चित रूप से मुझे, मेरी पत्नी और हमारे तीनों बच्चों को प्रभु के और करीब आने के लिए मार्गदर्शन देंगे और राह दिखाएँगे। इसी विश्वास के सहारे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु ने मुझे जो अनमोल उपहार सौंपे हैं—मेरी प्रिय पत्नी और तीन बच्चे—मैं उनकी सेवा पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए, प्रेम, विनम्रता और विवेक के साथ कर सकूँ।

धीरे-धीरे, अपनी पत्नी के साथ कदम मिलाते हुए...

आज सुबह जब मैं उत्पत्ति (Genesis) अध्याय 33 पर मनन कर रहा था, तो मेरा ध्यान विशेष रूप से *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में दिए गए 14वें वचन पर गया: "तो भाई, कृपया तुम आगे बढ़ो। मैं धीरे-धीरे चलूँगा, उन मवेशियों और बच्चों के साथ कदम मिलाते हुए जो आगे चल रहे हैं, और मैं तुमसे सेईर (Seir) में मिलूँगा।" जब मैं इस वचन पर विचार कर रहा था, तो मैंने यह छोटा सा भक्तिपूर्ण विचार लिखा: "माता-पिता को अपने बच्चों के साथ कदम मिलाकर चलना चाहिए और उन्हें कोमलता तथा धीरे-धीरे मार्गदर्शन देना चाहिए (संदर्भ: उत्पत्ति 33:14, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।" इस विचार ने मेरे मन में उन पलों की यादें ताज़ा कर दीं जब मेरी पत्नी और मैंने एक साथ मैराथन दौड़ लगाई थी। इसका कारण यह है कि, हालाँकि मैं उससे तेज़ दौड़ने में सक्षम था, फिर भी मैंने धीरे दौड़ना चुना—जान-बूझकर उसके साथ "कदम मिलाकर" चला। मेरी पत्नी इस बात से अच्छी तरह वाकिफ है। नतीजतन, जब भी हम उन दिनों को याद करते थे जब हम एक साथ दौड़ते थे, तो वह अक्सर कुछ ऐसा कहती थी, "तुम मुझसे कहीं ज़्यादा तेज़ दौड़ सकते थे और मुझसे आगे निकल सकते थे, इसलिए तुम्हारे लिए खुद को रोकना और मेरे साथ-साथ दौड़ना ज़रूर मुश्किल रहा होगा।" *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में उत्पत्ति 33:14 पर मनन करते समय यह विशेष याद फिर से ताज़ा हो गई।

एक याद जो आज भी ताज़ा और अविस्मरणीय है, वह उस समय की है जब मेरी पत्नी और मैंने अपनी पहली हाफ-मैराथन एक साथ पूरी की थी। हम लगभग नौ मील (14 किमी) तक कंधे से कंधा मिलाकर दौड़े; हालाँकि—मेरे जीवन में पहली बार—मेरे दोनों पैरों की लगभग हर मांसपेशी ऐंठन (cramps) के कारण अकड़ गई (हालाँकि अमेरिका जाने के बाद बास्केटबॉल खेलना शुरू करने पर मुझे पहले भी पैरों में ऐंठन का अनुभव हुआ था, लेकिन यह अनुभव बिल्कुल ही अलग स्तर का था)। मेरे लिए अपनी पत्नी के साथ-साथ दौड़ना बिल्कुल असंभव हो गया था। इसलिए, उसने मुझसे कहा, "मैं थोड़ी देर पैदल चलूँगी; तुम आगे बढ़ो..." मैंने उससे कुछ इस तरह कहा, "मैं तुम्हारे ठीक पीछे रहूँगा।" मेरी पत्नी ने मेरी बातों को सच मान लिया—

और शायद इस चिंता में कि मैं सचमुच *ही* उसके बराबर पहुँच जाऊँगा—बाद में मुझे बताया कि वह मुझसे दूर निकलने के लिए अपनी पूरी ताकत (और तेज़ी) से दौड़ी! हाहा। बेशक, उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं अपने दोनों पैरों में इतनी गंभीर ऐंठन से जूझ रहा था। तो, मैंने बाकी के तीन मील (लगभग 5 km) बहुत ही धीमी गति से चलते हुए बिताए, और बड़ी मुश्किल से फ़िनिश लाइन तक पहुँच पाया। मेरी पत्नी, जो वहाँ मेरा इंतज़ार कर रही थी (शायद एक घंटे से भी ज़्यादा समय से), पूरे उत्साह के साथ मेरा हौसला बढ़ाने लगी—उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मैं किस भयानक तकलीफ़ से गुज़र रहा था। आख़िर में, दो पुरुष पैरामेडिक्स को मुझे दोनों तरफ़ से सहारा देकर फ़िनिश लाइन पार करवाने में मदद करनी पड़ी; जैसे ही हमने लाइन पार की, मैं घास पर ही ढह गया। मैं इस अनुभव को कभी नहीं भूल सकता, क्योंकि यह मेरे लिए एक तरह का सदमा (trauma) बन गया है। हाहा। जब मैं Genesis 33:14 (खास तौर पर *Modern People's Bible* अनुवाद) पर मनन कर रहा था, तो यह याद मेरे ज़हन में ताज़ा हो गई। मुझे यह बात सूझी कि जहाँ माता-पिता को निश्चित रूप से अपनी गति धीमी करके उसे अपने बच्चों की गति के अनुसार ढालना चाहिए, वहीं मैं असल में अपनी पत्नी के साथ भी ठीक वैसा ही कर रहा था—अपनी दौड़ने की गति को धीमा करके उसकी गति से मिला रहा था। उस समय मुझे इस बात का पूरी तरह एहसास नहीं हुआ था, लेकिन अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि *ऐसा करना* शायद और भी ज़्यादा मुश्किल रहा होगा। मेरे विचार से इसकी वजह यह है कि, भले ही दौड़ने की मेरी "क्षमता" (जैसी भी है) मुझे अपनी पत्नी से तेज़ दौड़ने की इजाज़त देती है, फिर भी मुझे *आत्म-संयम* (self-control) बरतना पड़ा—खुद को रोकना पड़ा—ताकि उसकी धीमी गति के साथ दौड़ते हुए मैं अपनी पूरी क्षमता का इस्तेमाल न कर बैठूँ। सच कहूँ तो, अपनी शादीशुदा ज़िंदगी के पच्चीस से भी ज़्यादा सालों पर नज़र डालें—और यह बात सिर्फ़ दौड़ने के मामले में ही नहीं है—तो मुझे एक लगातार पैटर्न दिखाई देता है: मेरा स्वभाव बहुत जल्दी गुस्सा करने वाला और अधीर है, जबकि मेरी पत्नी का स्वभाव बहुत ही शांत और सहज है। मुझे पूरा यकीन है कि मुझ जैसा अधीर व्यक्ति कभी भी अपनी गति को अपनी पत्नी के शांत स्वभाव के अनुसार उस हद तक नहीं ढाल पाता, जितना मैंने आज किया है; अगर ऐसा हो पाया है, तो वह सिर्फ़ ईश्वर की असीम कृपा और पवित्र आत्मा के उस फल की वजह से है, जिसे "आत्म-संयम" कहा जाता है। हाहा। और मुझे लगता है कि यह बात सिर्फ़ हमारे स्वभाव तक ही सीमित नहीं है। आप यकीन नहीं करेंगे कि मेरी पत्नी और मेरे बीच कितनी ही ऐसी बातें थीं, जिनमें हमारी सोच बिल्कुल भी मेल नहीं खाती थी... (हँसते हुए)। यह बात बस यही दिखाती है कि

मेरी पत्नी और मैं एक-दूसरे से कितने ज़्यादा अलग हैं। बेशक, स्वाभाविक रूप से, मेरी पत्नी ने भी मेरे साथ तालमेल बिठाने की कोशिश में बहुत ज़्यादा मेहनत की होगी। उदाहरण के लिए, मुझे इस बात से हमेशा परेशानी होती थी कि वह शायद ही कभी लाइट बंद करती थी या बेडरूम का दरवाज़ा बंद करती थी; मैं गिन भी नहीं सकता कि लगभग 25 सालों में मैंने कितनी बार उससे इस बारे में बात की होगी! (हँसते हुए)। हालाँकि, आजकल, मास्टर बेडरूम से बाहर निकलते समय उसके दरवाज़ा बंद करने की संभावना पहले के मुकाबले काफ़ी बढ़ गई है (हँसते हुए)। वह तो यहाँ तक पूछ लेती है, "क्या मैं दरवाज़ा बंद कर दूँ?" जब वह बाहर निकल रही होती है! (हँसते हुए)। बेशक, वह कभी-कभी अब भी भूल जाती है और दरवाज़ा खुला छोड़ देती है, लेकिन अगर मैं इस बारे में कुछ कहता हूँ—भले ही वह सीढ़ियों से आधी नीचे उतर चुकी हो—तो भी वह वापस ऊपर आती है, दरवाज़ा बंद करती है, और फिर नीचे जाती है (हँसते हुए)। वह इतनी "प्रशिक्षित" (एक तरह से) हो गई है कि अब वह दरवाज़ा बंद करने के मामले में अपनी गति को मेरी गति से मिलाने के लिए समायोजित कर लेती है! (हँसते हुए)।

उत्पत्ति 33:14 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल* अनुवाद के अनुसार) में, कुलपिता याकूब कहते हैं, "मैं धीरे-धीरे चलूँगा, बच्चों के साथ तालमेल बिठाते हुए।" इस वचन पर विचार करते हुए मुझे अपनी पत्नी के साथ अपने रिश्ते (हमारे वैवाहिक रिश्ते) में तालमेल बिठाने की ज़रूरत याद आई, और इसीलिए मैंने यह कहानी साझा करने का फ़ैसला किया। हालाँकि, यह बाइबिल का सिद्धांत असल में न केवल पति-पत्नी के बीच या माता-पिता और बच्चों के बीच के रिश्ते पर लागू होता है, बल्कि—मेरे अपने मामले में—एक पादरी और कलीसिया के सदस्यों के बीच के रिश्ते पर भी लागू होता है, और भी कई संदर्भों में। मेरा मानना है कि यह परमेश्वर के वचन का एक ऐसा अंश है जो हमें इस बात पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि हम, चाहे घर के मुखिया हों या चर्च के पादरी, दूसरों का ख़्याल रखने और उन्हें कोमलता से आगे बढ़ाने के लिए अपनी गति को कैसे समायोजित करें।

वैवाहिक रिश्ते में 'स्पेस'

मेरा मानना है कि शादीशुदा रिश्ते में, पति-पत्नी को एक-दूसरे के लिए एक सही और ज़रूरी मात्रा में 'स्पेस' देना चाहिए। मैं इस स्पेस को एक ऐसे दायरे के तौर पर देखता हूँ, जहाँ ईश्वर पति और पत्नी, दोनों की निजी ज़िंदगी में काम करते हैं; यह एक ऐसा स्पेस है जहाँ ईश्वर पर भरोसा करके, पति-पत्नी एक-दूसरे पर भरोसा करना सीखते हैं; यह एक ऐसा स्पेस है जहाँ पति और पत्नी—दोनों ही—अपने अंदर बदलाव महसूस करते हैं; और इसके अलावा, यह एक ऐसा स्पेस भी है जहाँ दोनों अपनी खास आध्यात्मिक क्षमताओं, हुनर और संभावनाओं को और निखार सकते हैं।

क्या "स्पेस" ज़रूरी है?

शादी के रिश्ते में, एक कपल को एक-दूसरे को "स्पेस" देने की ज़रूरत होती है—अपने दिल और ज़िंदगी में जगह—ताकि भगवान उनके अंदर काम कर सकें (आज रात अपनी पत्नी के साथ बातचीत के दौरान मुझे यह बात ज़रूरी लगी)।

"हमें सभी लोगों की इज़्ज़त करनी चाहिए। हो सकता है कि हम उनकी अभी की हालत के आधार पर उनकी इज़्ज़त न कर पाएं, लेकिन हमें मेमने के खून और पवित्र आत्मा की नई शक्ति के ज़रिए मौजूद बदलाव की क्षमता को देखकर उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए" (ए. डब्ल्यू. टोज़र)।

जब तक कोई खुद बदलाव से नहीं गुज़र रहा होता, तब तक वह दूसरों में "बदलाव की संभावना" को सही मायने में नहीं देख सकता। हम अक्सर सोचते हैं, "वह इंसान क्यों नहीं बदलेगा?"—भले ही हम उनके बदलाव की उम्मीद कर रहे हों—क्योंकि *हम* खुद एक्टिव रूप से बदलाव से नहीं गुज़र रहे होते।

पति-पत्नी को एक-दूसरे को देखना चाहिए और विश्वास के ज़रिए, उस "बदलाव की संभावना" को समझना चाहिए। ऐसा करने के लिए, मुझे पहले भगवान के साथ अपने रिश्ते के ज़रिए खुद को लगातार बदलने देना होगा। उस संदर्भ में—अपने प्यारे जीवनसाथी को भगवान पर विश्वास और भरोसे के नज़रिए से देखते हुए—मुझे चुपचाप, सब्र से, और विश्वास की आँखों से देखना होगा कि भगवान उस "जगह" में मेरे जीवनसाथी को बदलने के लिए कैसे काम करते हैं।

इसीलिए, अपनी पत्नी के साथ बातचीत के दौरान, मैंने सुझाव दिया कि हमें ऐसी बातें कहने से बचना चाहिए, जैसे, "तुम *हमेशा* ऐसे ही हो," या "तुम ऐसा *कभी* नहीं करोगे।" इसका कारण यह है कि "हमेशा" या

"कभी नहीं" जैसे शब्द दूसरे व्यक्ति की "बदलाव की क्षमता" को पहचानने में नाकाम रहते हैं; इसके बजाय, वे उस व्यक्ति को सिर्फ़ हमारी अपनी पहले से बनी सोच के दायरे में फँसा देते हैं।

अगर कोई कपल एक साथ क्राइस्ट-सेंटर्ड ज़िंदगी जी रहा है, तो भगवान पर उनका भरोसा उन्हें एक-दूसरे को विश्वास के साथ देखने के लिए प्रेरित करेगा—यह मानते हुए कि जैसे भगवान *मुझे* बदल रहे हैं, वैसे ही वह मेरे जीवनसाथी को भी बदल रहे हैं, और वह भविष्य में भी ऐसा करते रहेंगे। इस यकीन के साथ, वे एक-दूसरे को देखेंगे, एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करेंगे, और उम्मीद भरी उम्मीद के साथ इंतज़ार करेंगे।

वह बुद्धिमान स्त्री जो अपना घर बनाती है

[नीतिवचन 14:1-9]

प्रिय भाइयों और बहनों, आप और मैं अपने-अपने परिवारों को कैसे मज़बूत बनाएँ? व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं मत्ती 16:18 पर विचार करता हूँ—वह वादा जो प्रभु ने विशेष रूप से हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' को दिया था—तो मैं उनके इस आश्वासन पर दृढ़ रहता हूँ कि वह अपने चर्च को बनाएँगे, और मैं तीन विशेष प्रार्थनाएँ करता हूँ। ये तीन प्रार्थनाएँ इस प्रकार हैं: पहली, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे बीच से ऐसे सेवक खड़े करें—ऐसे लोग जिनकी सोच मसीह-केंद्रित हो। दूसरी, इस प्रक्रिया के दौरान, मैं यह भी प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हममें से हर एक के परिवार को मज़बूत बनाएँ। और तीसरी, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' को—जो स्वयं मसीह का शरीर है—मज़बूत बनाएँ, और इस प्रकार अपने राज्य की स्थापना करें। परिणामस्वरूप, जब भी मुझे आपके साथ प्रार्थना करने का सौभाग्य मिलता है, तो मैं अक्सर इन तीन विषयों को—व्यक्ति, परिवार और चर्च—हमारे सामूहिक प्रार्थना विषयों के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। आज, इन तीन प्रार्थनाओं में से, मैं विशेष रूप से दूसरी प्रार्थना पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ: हमें प्रभु से अपने परिवारों को मज़बूत बनाने के लिए ठीक किस तरह प्रार्थना करनी चाहिए? एक समीक्षा के तौर पर—और 18 मई, 2008 को दिए गए संदेश, जिसका शीर्षक था "प्रभु, हमारे परिवार को मज़बूत बना!" (जो 1 इतिहास 17:16-27 पर आधारित था) को याद करते हुए—उस समय हमारे सामने प्रार्थना के तीन विशेष बिंदु रखे गए थे: (1) "प्रभु, मेरा परिवार ऐसा हो जो तेरी कृपा से संचालित हो!" (पद 16); (2) "प्रभु, तेरे वचन को ही मेरे परिवार में सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हो!" (पद 23); और (3) "प्रभु, मेरा परिवार ऐसा हो जो प्रार्थना के द्वारा तेरी ईश्वरीय उपस्थिति का

अनुभव करे!" (पद 25)। जैसे ही हम आज एक बार फिर परमेश्वर का वचन ग्रहण करते हैं और अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं, आइए हम एक पल रुककर ईमानदारी से विचार करें: क्या हमारे परिवार सचमुच परमेश्वर की कृपा से संचालित हो रहे हैं? क्या परमेश्वर का वचन सचमुच हमारे घरों में सर्वोच्च अधिकार के रूप में कार्य करता है? और क्या हम वास्तव में एक ऐसा परिवार हैं जो प्रार्थना के अनुशासन के माध्यम से परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति का अनुभव करता है? आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 14:1–9—के आधार पर, मैं इस बात पर मनन करना चाहूँगा कि प्रभु हमारे और आपके घरों को बनाने के लिए एक बुद्धिमान स्त्री का उपयोग करते हैं। कृपया आज के पाठ, नीतिवचन 14:1 को देखें: "बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है, परन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।" इस वचन को केंद्र में रखते हुए, और "वह बुद्धिमान स्त्री जो अपना घर बनाती है" शीर्षक के अंतर्गत, मैं एक या दो बिंदुओं पर विचार करना चाहूँगा। मेरी आशा है कि, जैसे-जैसे हम इन दो बिंदुओं पर मनन करेंगे, हम उन सबकों को ग्रहण कर पाएँगे जो परमेश्वर हमें देते हैं और उनका पालन कर पाएँगे; इस प्रकार, हम विनम्रतापूर्वक प्रभु के उस कार्य में सहभागी बन पाएँगे जिसमें हमारे अपने घरों और उस कलीसिया (चर्च) दोनों का निर्माण शामिल है जिसकी हम सेवा करते हैं।

पहला बिंदु जिस पर मैं विचार करना चाहता हूँ, वह उस मूर्ख स्त्री से संबंधित है जो अपने ही हाथों से अपने घर को ढा देती है। कृपया आज के पाठ, नीतिवचन 14:1 के अंतिम भाग को देखें: "...परन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।" आखिर, वह मूर्ख स्त्री कौन है जो अपने ही हाथों से अपने घर को ढा देती है?

सबसे पहले, वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपने घर को ढा देती है, वह परमेश्वर का तिरस्कार करती है।

कृपया नीतिवचन 14:2 के अंतिम भाग को देखें: "...परन्तु कुटिल चाल चलने वाला उसका तिरस्कार करता है।" मूर्ख स्त्री वह है जो "कुटिल चाल" चलती है। कुटिल चाल चलने का अर्थ है, केवल अपनी ही मनमर्ज़ी और इच्छाओं के अनुसार कार्य करना (पार्क यून-सन)। और वह मूर्ख स्त्री जो केवल अपनी ही इच्छाओं के अनुसार कार्य करती है, वह परमेश्वर का तिरस्कार करती है। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर के प्रति अवमानना दर्शाती है। आखिर, वह परमेश्वर के प्रति अवमानना कैसे दर्शाती है? डॉ. पार्क यून-सन ने इस विषय के संबंध में लगभग सात बिंदुओं की रूपरेखा प्रस्तुत की है: (1) वह मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह परमेश्वर से

अधिक सुख-विलास से प्रेम करती है (2 तीमुथियुस 3:4); (2) वह मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह अपने भ्रष्ट मानवीय स्वभाव के अनुसार कार्य करती है—न तो वह पश्चाताप करती है और न ही परमेश्वर पर अपना विश्वास रखती है (यहूदा 1:10); (3) वह मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है—यह देखते हुए कि परमेश्वर मानवीय पाप के प्रति अत्यधिक धीरज रखते हैं, और न तो तुरंत और न ही हर बार दंड देते हैं—इसके विपरीत, वह परमेश्वर के प्रति अवमानना दर्शाती है और उनके अस्तित्व से ही इनकार कर देती है (रोमियों 2:4); (4) एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह शास्त्रों में लिखे परमेश्वर के वचन से बिल्कुल नहीं डरती (नीतिवचन 13:13); (5) एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह उसकी महिमा नहीं करती, बल्कि अपनी ही महिमा करने की कोशिश करती है। दूसरे शब्दों में, वह परमेश्वर की महिमा को हड़पने की कोशिश में ढिठाई से काम करती है; (6) एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह उससे प्रार्थना नहीं करती। यह परमेश्वर के उस वादे को ठुकराना है कि वह मांगने वालों को देगा (मत्ती 7:7–11); और (7) एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है, वह सच्चे दिल से उसकी आराधना नहीं करती। इस प्रकार, एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर का तिरस्कार करती है—क्योंकि वह उसका आदर नहीं करती, बल्कि उसे घृणा की दृष्टि से देखती है—वह सीधे मार्ग पर चलने में असमर्थ होती है और इसके बजाय टेढ़े मार्ग पर चलती है। विशेष रूप से, एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर को तुच्छ समझती है, वह ऐसे मार्ग पर चलती है जो कपट (बेईमानी) और दोहरे व्यवहार से भरा होता है (KJV बाइबिल टीका)। बेईमान होने के कारण—और परमेश्वर के प्रति उस आदर की कमी के कारण जो उसे अन्यथा करने के लिए प्रेरित करता—वह ईमानदारी से काम नहीं करती (और न ही वह ऐसा करने में सक्षम होती है); इसके बजाय, वह दुष्टता में लिप्त रहती है। परिणामस्वरूप, एक मूर्ख स्त्री जो परमेश्वर को तुच्छ समझती है, वह अपने ही हाथों से अपने घर को गिरा देती है। दूसरी बात, वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपने घर को गिरा देती है, वह अहंकारी होती है।

आज के पाठ के पहले भाग को देखें, नीतिवचन 14:3: "मूर्खों का मुंह उनकी पीठ के लिए छड़ी है..." बाइबिल कहती है कि एक मूर्ख स्त्री—वह जो परमेश्वर से नहीं डरती—अहंकारी होती है (पद 3)। अपने अहंकार के कारण, वह दूसरों को खुद से नीचा समझती है। परिणामस्वरूप, वह दूसरों को नीची नज़र से देखती है और मन ही मन उनकी उपेक्षा करती है। उदाहरण के लिए, जिस घर में पत्नी मूर्ख और अहंकारी होती है, वह अपने पति

को खुद से नीचा समझती है, जिससे वह उसे तुच्छ समझती है और उसके साथ घृणापूर्ण व्यवहार करती है। इस प्रकार, वह अपने पति से अपमानजनक बातें कहकर उसके दिल को चोट पहुँचाती है। फिर भी, गंभीर समस्या यह है कि वह इस बात को समझने में असफल रहती है कि उसने अपने शब्दों से अपने पति को दुख पहुँचाया है। ऐसी अहंकारी और मूर्ख पत्नी के साथ रहने वाले पति की मनःस्थिति कैसी होगी? और उनके घर का क्या होगा? क्या घर ठीक से बनेगा, या उसे गिरा दिया जाएगा? नीतिवचन 11:2 के पहले हिस्से को देखें, तो बाइबल कहती है: "जब घमंड आता है, तब अपमान भी आता है..." इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि एक मूर्ख और घमंडी औरत अपने ही शब्दों के कारण अपने ऊपर अपमान मोल लेती है। उसे किस तरह का अपमान सहना पड़ता है? नीतिवचन 10:13 के दूसरे हिस्से को देखें, तो बाइबल कहती है: "...जिसमें समझ की कमी होती है, उसकी पीठ के लिए कोड़ा होता है।" दूसरे शब्दों में, बाइबल सिखाती है कि एक मूर्ख और घमंडी औरत अपनी बोली के कारण अपमान सहती है, और उसे कोड़े या छड़ी से अनुशासित किया जाता है (26:3)। इसलिए, परमेश्वर घमंडी औरत को नीचा दिखाता है (29:23)। परमेश्वर कभी भी किसी घमंडी औरत को वह ज़रिया नहीं बनने देता जिसके द्वारा कोई परिवार बनता है। ऐसी मूर्ख और घमंडी औरत अपने ही घर को गिरा देती है।

तीसरी बात, वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपना घर उजाड़ देती है, वह अहंकारी होती है।

कृपया आज के पाठ के पहले भाग पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:6: "...ठट्ठा करने वाला बुद्धि को ढूँढ़ता है, पर उसे नहीं पाता..." मूर्ख स्त्री अहंकारी होती है और दूसरों की बातें सुनने से इनकार कर देती है। परिणामस्वरूप, वह सुनने की क्षमता खो देती है (मैकडॉनल्ड)। मित्रों, जब कोई व्यक्ति सुनने की क्षमता खो देता है तो क्या होता है? किसी के पास कितने भी कान क्यों न हों, यदि कोई व्यक्ति लगातार अपने प्रियजनों की सलाह, उपदेश या डांट पर ध्यान देने से इनकार करता है, तो वह न केवल अपनी ही 'आत्म-धार्मिकता' (खुद को सही मानने) का कैदी बन जाएगा, बल्कि अनिवार्य रूप से एक अत्यंत स्वार्थी व्यक्ति में बदल जाएगा—ऐसा व्यक्ति जिसे केवल अपनी ही परवाह होती है। यदि ऐसा होता है, तो वह व्यक्ति अपने आस-पास के सभी मित्रों को खोने के लिए बाध्य है। आखिर, ऐसा कौन होगा जो किसी स्वार्थी व्यक्ति से मित्रता करना चाहेगा, जो केवल अपने बारे में सोचता हो? इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि वह बाकी सबसे श्रेष्ठ है—और यदि उसके मुँह से निकलने वाले शब्द पूरी तरह से अहंकार भरे लगते हैं—तो कौन उसकी संगति में रहना पसंद करेगा? यदि किसी घर में

पत्नी मूर्ख और अहंकारी है, तो वह अपने पति की बात सुनने से इनकार कर देगी। जैसे-जैसे वह सुनने की क्षमता खोती जाएगी, वह धीरे-धीरे एक ऐसे व्यक्ति में बदल जाएगी जिसकी पहचान घमंड, अहंकार और आत्म-केंद्रित स्वार्थ होगी। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ऐसी स्त्री का अपने पति पर, और विशेष रूप से अपने बच्चों पर कितना हानिकारक प्रभाव पड़ेगा? आज के पाठ के पद 6 में कहा गया है कि ऐसा अहंकारी व्यक्ति बुद्धि को ढूँढ़ता है, पर उसे नहीं पाता। क्या यह कुछ अजीब नहीं लगता? क्या यह अपने आप में विचित्र नहीं है कि एक अहंकारी व्यक्ति—जो दूसरों की बात सुनने से इसलिए इनकार करता है क्योंकि उसे अपनी ही सही होने पर पूरा यकीन है—फिर भी बुद्धि को खोजने का प्रयास करे? समस्या बुद्धि को खोजने के कार्य में नहीं है, बल्कि इस तथ्य में है कि खोजने वाला व्यक्ति अहंकारी है और इसलिए, वह परमेश्वर का आदर करने में असफल रहता है—जो समस्त बुद्धि का मूल स्रोत है (1:7; 9:10) (वाल्वोर्ड)। एक घमंडी और अहंकारी व्यक्ति—जो परमेश्वर का भय नहीं मानता—कैसे बुद्धि को खोज और प्राप्त कर सकता है? नीतिवचन 16:18 में बाइबल कहती है: "...पतन से पहले घमंडी आत्मा।" एक मूर्ख, अहंकारी स्त्री जिसमें बुद्धि की कमी होती है, वह अपने पति और बच्चों के ठोकर खाने का कारण बनती है। क्योंकि वह अपने पति और बच्चों पर बुरा असर डालती है, इसलिए वह आखिरकार अपने ही हाथों से अपना घर बर्बाद कर लेती है।

चौथी बात, वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपना घर बर्बाद करती है, उसमें ज्ञान की कमी होती है।

आज के वचन, नीतिवचन 14:7 पर ध्यान दें: "मूर्ख मनुष्य से दूर रहो, क्योंकि उसके होठों पर तुम्हें ज्ञान नहीं मिलेगा।" वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपना घर बर्बाद करती है, वह परमेश्वर का तिरस्कार करती है; घमंडी और अहंकारी होने के कारण, वह परमेश्वर के वचन को सुनने से इनकार कर देती है। दूसरे शब्दों में, वह आदतन ऐसे शब्दों और कामों में लगी रहती है जो परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं (भजन संहिता 14:1) (पार्क यून-सन)। इसके अलावा, क्योंकि उसे इतना घमंड होता है कि वह कुछ नहीं जानती, इसलिए उसे उन झगड़ों और बहसों में मज़ा आता है जिनसे ईर्ष्या, कलह, निंदा और बुरे संदेह पैदा होते हैं (1 तीमुथियुस 6:4)। दोस्तों, अगर किसी घर में पत्नी इतनी घमंडी हो कि वह कुछ न जानती हो, तो उसे निस्संदेह झगड़ों और बहसों में मज़ा आएगा। इसका नतीजा यह होगा कि ईर्ष्या, कलह, निंदा और बुरे संदेह पैदा होंगे; परिणामस्वरूप, ऐसे घर में शांति का एक भी दिन नहीं होगा। लेकिन समस्या यह है कि ज्ञान की कमी के बावजूद, वह मूर्ख स्त्री इतनी घमंडी

होती है कि उसे लगता है कि उसके पास *सचमुच* ज्ञान है। और अगर वह इतनी अहंकारी हो कि किसी की सलाह या बात मानने से इनकार कर दे, तो उस घर का क्या होगा? कलीसिया—हमारा आत्मिक परिवार—भी इससे अलग नहीं है। अगर कलीसिया में कोई ऐसा व्यक्ति है जो घमंडी और अहंकारी है—जिसके पास परमेश्वर का बहुत कम ज्ञान है, फिर भी उसे झगड़ों और बहसों में मज़ा आता है—तो वह कलीसिया निश्चित रूप से कलह से भर जाएगी। ऐसे व्यक्ति को सिखाना कोई आसान काम नहीं होगा। इसका कारण घमंड है—उसके पास सीखने के लिए तैयार हृदय का सही रवैया नहीं होता। इसलिए, बाइबल हमें सलाह देती है कि हम "मूर्ख मनुष्य की संगति से दूर रहें" (नीतिवचन 14:7)। अगर हम ऐसे मूर्ख लोगों से दूरी नहीं बनाते, तो हम भी—अगर हम सावधान नहीं रहे—तो ऐसे मूर्ख लोग बनने का जोखिम उठाते हैं जो परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं और अपने ही घरों को बर्बाद कर लेते हैं।

पांचवीं बात, वह मूर्ख स्त्री जो अपने ही हाथों से अपना घर बर्बाद करती है, वह खुद को धोखा देती है। आज के पाठ के पिछले हिस्से पर नज़र डालें, नीतिवचन 14:8: "...मूर्खों की मूर्खता छल है।" मूर्ख स्त्री की मूर्खता परमेश्वर की उपेक्षा करने में निहित है। दूसरे शब्दों में, मूर्ख स्त्री की मूर्खता यह विश्वास है कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है (भजन संहिता 53:1)। परिणामस्वरूप, क्योंकि मूर्ख स्त्री न तो परमेश्वर से डरती है और न ही ऐसा करने में सक्षम है, इसलिए वह भ्रष्ट हो जाती है और दुष्टता के घिनौने कार्य करती है (पद 1)। वह न केवल अच्छा करने में असफल रहती है, बल्कि वह ऐसा करने में असमर्थ भी होती है (पद 1, 3)। फिर भी, मूर्ख स्त्री मानती है कि उसके अपने तरीके सही हैं (नीतिवचन 12:15)। यह हमें याकूब 1:22 की याद दिलाता है: "केवल वचन सुनने वाले ही न बनो, और इस प्रकार स्वयं को धोखा न दो। जो वचन कहता है, उसे करो।" बाइबल कहती है कि परमेश्वर के वचन को बिना माने (उसे व्यवहार में लाए बिना) केवल सुनना ही स्वयं को धोखा देना है; फिर भी, मूर्ख और अहंकारी स्त्री—क्योंकि वह मानती है कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है—शुरू से ही परमेश्वर का वचन सुनती ही नहीं है। तो फिर, परमेश्वर की उपेक्षा करने वाली ऐसी मूर्ख स्त्री उसके वचन का पालन कैसे कर सकती है? यह वास्तव में स्वयं को धोखा देना ही है। जो मूर्ख स्त्री इस तरह से स्वयं को धोखा देती है, वह अपने घर (अपने परिवार) का निर्माण कैसे कर सकती है?

छठी बात, जो मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से अपना घर गिरा देती है, वह पाप को हल्के में लेती है। कृपया आज के पाठ के पहले हिस्से पर नज़र डालें, नीतिवचन 14:9: "मूर्ख पाप का मज़ाक उड़ाते हैं..." मूर्ख स्त्री, यह मानते हुए कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है, न तो परमेश्वर का वचन सुनती है और न ही सत्य को जानती है—ठीक इसी कारण से कि वह उसका वचन नहीं सुनती। उस व्यक्ति का क्या होता है जो सत्य को नहीं जानता? क्योंकि वह सत्य से अनभिज्ञ है, इसलिए मूर्ख स्त्री बुरे काम करती है। फिर भी, वह अपने द्वारा की गई दुष्टता को वास्तविक पाप नहीं मानती। उसने ऐसा करने की क्षमता खो दी है। इसके विपरीत—सत्य से अनभिज्ञ होने और पाप को उसके वास्तविक रूप में पहचानने की क्षमता खो देने के कारण—मूर्ख स्त्री, जैसा कि नीतिवचन 10:23 में कहा गया है, "बुराई करने में ही अपना सुख पाती है।" नतीजतन, पाप के कारण उसका दिल कठोर हो जाता है, और उसे परमेश्वर को नाराज़ करने में कोई डर नहीं लगता। संक्षेप में, मूर्ख स्त्री पाप को एक मामूली बात मानती है। जहाँ परमेश्वर पाप को स्पष्ट रूप से एक गंभीर मामला मानते हैं, वहीं मूर्ख स्त्री इसे हल्के में लेती है। पादरी पार्क यून-सन ने एक बार कहा था: “जो व्यक्ति धर्मग्रंथों से अनजान होता है, वह पाप को पाप के रूप में पहचान नहीं पाता; इसके बजाय, ऐसा व्यक्ति उसमें आनंद खोजने लगता है।” इसलिए, वह न केवल अपने पापों का पश्चाताप करने में असफल रहती है, बल्कि वास्तव में, वह पश्चाताप करने में असमर्थ होती है। इसका कारण यह है कि, चूंकि वह अपने कार्यों को पापपूर्ण नहीं मानती, इसलिए उसे पश्चाताप करने की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती। इस प्रकार, वह परमेश्वर के विरुद्ध पापपूर्ण जीवन जीना जारी रखेगी। क्योंकि वह पाप को इतनी लापरवाही से लेती है, इसलिए वह परमेश्वर की कृपा से वंचित होकर एक दुष्ट जीवन जिएगी। इसके अलावा, वह इतने कठोर दिल के साथ जिएगी कि, अनगिनत पाप करने के बावजूद, उसे अपनी अंतरात्मा में बिल्कुल भी कोई टीस महसूस नहीं होगी। यदि ऐसी स्त्री किसी घर में रहती है, तो उस घर का क्या होगा?

अंत में, आइए हम अपना ध्यान उस बुद्धिमान स्त्री की ओर मोड़ें जो अपना घर बनाती है। कृपया आज के पाठ के पहले भाग को देखें, नीतिवचन 14:1: “बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है...” वास्तव में, यह बुद्धिमान स्त्री कौन है जो अपना घर बनाती है?

सबसे पहले, जो बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है, वह ईमानदारी से चलती है क्योंकि वह परमेश्वर से डरती है।

आज के पाठ के पहले भाग को देखें, नीतिवचन 14:2: “जो अपनी सीधाई में चलता है, वह यहोवा का भय मानता है...” जो बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है, वह परमेश्वर से डरती है। इसका कारण यह है कि यहोवा का भय ही बुद्धि का आरंभ—उसकी मूल नींव—है (1:7)। और जो बुद्धिमान स्त्री परमेश्वर से डरती है, वह ईमानदारी से चलती है। तो फिर, यह बुद्धिमान स्त्री—जो परमेश्वर के प्रति श्रद्धा के कारण ईमानदारी से चलती है—अपने विश्वास के जीवन को कैसे जीती है? डॉ. पार्क यून-सन ने लगभग पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया: (1) साधारण काम करते समय भी, वह परमेश्वर से डरती है ताकि पाप करने से बच सके; (2) वह एकांत में भी पवित्रता से जीती है और प्रार्थना में चौकस रहती है; (3) वह अपने मन में भी पाप करने से बचती है; (4) शांति और समृद्धि के समय में, वह और भी अधिक भयभीत और सतर्क रहती है, कहीं ऐसा न हो कि वह प्रभु से दूर भटक जाए; और (5) मुश्किल हालात में, वह अपनी मुसीबत से बचने के लिए कोई भी गलत कदम नहीं उठाती, बल्कि अपनी ईमानदारी बनाए रखती है। इस तरह, वह समझदार औरत जो परमेश्वर के आदर में ईमानदारी से चलती है, पाप को कभी भी हल्के में या लापरवाही से नहीं लेती (पद 9)। इसके विपरीत, ठीक इसलिए क्योंकि वह परमेश्वर से डरती है, वह पाप को बहुत ही गंभीरता से लेती है (पद 9)। नतीजतन, जब भी वह परमेश्वर के खिलाफ पाप करती है, तो उसे तुरंत अपने पाप का एहसास हो जाता है और वह परमेश्वर के सामने उसे मान लेती है, और पश्चाताप करती है। इसलिए, परमेश्वर उस औरत पर अपनी कृपा बरसाता है जो उसके आदर में ईमानदारी से चलती है (पद 9)। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि परमेश्वर उस औरत को खुशी-खुशी अपना लेता है जो उसके आदर में ईमानदारी से चलती है, जब भी वह अपने पापों का पश्चाताप करती है और उसके पास लौट आती है (वाल्वोर्ड)। यह परमेश्वर की कृपा के अलावा और क्या हो सकता है? (8:35) दोस्तों, अगर हम नीतिवचन 31:30 पर नज़र डालें—एक ऐसा अंश जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं—तो बाइबल उस औरत के बारे में जो परमेश्वर से डरती है, इस तरह कहती है: “सुंदरता धोखा देने वाली है, और खूबसूरती पल भर की है; लेकिन जो औरत यहोवा से डरती है, उसकी तारीफ़ होनी चाहिए।” एक समझदार औरत जो परमेश्वर से डरती है, उसे परमेश्वर और लोगों, दोनों से तारीफ़ मिलती है क्योंकि वह ईमानदारी से अपना जीवन जीती है। परमेश्वर से डरने वाली ऐसी औरत के ज़रिए ही, वह हमारे घरों और हमारे चर्चों को मज़बूत बनाता है।

दूसरी बात, वह समझदार स्त्री जो अपना घर बनाती है, उसके होठों पर ज्ञान होता है।

कृपया आज का वचन देखें, नीतिवचन 14:7: “मूर्ख मनुष्य से दूर रहो, क्योंकि उसके होठों पर तुम्हें ज्ञान नहीं मिलेगा।” क्योंकि समझदार स्त्री परमेश्वर का भय मानती है, इसलिए वह परमेश्वर और लोगों, दोनों के सामने विनम्र रहती है। इसके अलावा, ठीक इसी कारण से कि वह विनम्र है, वह न केवल परमेश्वर की आवाज़ को ध्यान से सुनती है, बल्कि समझदार लोगों की सलाह और शिक्षा को भी विनम्रता से ग्रहण करती है, जिससे उसके लिए ज्ञान प्राप्त करना आसान हो जाता है (पद 6)। वह तो धर्मी लोगों की डांट को भी विनम्रता से स्वीकार करती है। सच तो यह है कि वह किसी समझदार व्यक्ति की डांट को एक अनुग्रह मानती है (भजन संहिता 141:5)। इसलिए, वह समझदार लोगों की डांट का स्वागत करती है। इसका कारण यह है कि वह जानती है कि ऐसी डांट को अपने ही फायदे में कैसे बदला जाए। वह समझदार लोगों की डांट को अपने लिए फायदेमंद कैसे बनाती है? वह ऐसा उन डांटों को अपनी सीख में जोड़ने की अनुमति देकर करती है (नीतिवचन 1:5; 9:9)। नीतिवचन 9:9 देखें: “समझदार मनुष्य को शिक्षा दे, तो वह और भी समझदार हो जाएगा; धर्मी मनुष्य को सिखा, तो उसकी सीख बढ़ेगी।” इस प्रकार, वह समझदार स्त्री—जो अपनी सीख बढ़ाने के लिए पर्याप्त रूप से विनम्र है—अपनी बातों से अपने ऊपर दण्ड नहीं बुलाती, जैसा कि एक घमंडी स्त्री करती है (14:3)। इसके विपरीत, वह अपने होठों के द्वारा अपनी रक्षा करती है (पद 3)। दूसरे शब्दों में, समझदार स्त्री अपने होठों की रखवाली करती है ताकि वह दूसरों के लिए आशीष बन सके—जब बोलना उचित हो तब बोलती है, और जब चुप रहना उचित हो तब चुप रहती है। परिणामस्वरूप, उसे स्वयं भी इसका लाभ मिलता है (पार्क यून-सन)। डॉ. पार्क यून-सन ने कहा: “एक समझदार व्यक्ति, क्योंकि वह दूसरों से प्रेम करता है, इसलिए वह उनकी निंदा नहीं करता, बल्कि उनके दोषों को ढांप लेता है (1 पतरस 4:8)। परिणामस्वरूप, दूसरे लोग भी बदले में अपने शब्दों से उसकी रक्षा करते हैं” (पार्क यून-सन)। इसके अलावा, एक विश्वासयोग्य गवाह के रूप में (नीतिवचन 14:5), वह ज्ञान से भरे होठों के साथ परमेश्वर के वचन की गवाही देती है। ऐसी ही एक समझदार स्त्री के द्वारा—जिसके होठों पर ज्ञान होता है—परमेश्वर परिवार और कलीसिया (प्रभु के शरीर) दोनों का निर्माण करता है। तीसरी बात, वह समझदार स्त्री जो अपना घर बनाती है, वह मेहनती होती है।

आज के वचन, नीतिवचन 14:4 पर ध्यान दें: “जहाँ बैल नहीं होते, वहाँ नांद साफ रहती है, परन्तु बैल के बल से बहुत लाभ होता है।” ज़ाहिर है, अगर बैल न हों, तो नांद साफ ही रहेगी। लेकिन, बैलों के बिना खेतों की जुताई करने की ताकत नहीं होती। इसलिए, बैलों के बिना खेती-बाड़ी में भरपूर फसल नहीं मिल सकती। नतीजतन,

वह समझदार स्त्री बैल खरीदने के लिए अपना पैसा लगाती है, और उसे खिलाने-पिलाने, नहलाने-धुलाने और उसकी देखभाल करने में अपना समय लगाती है; उस जानवर के साथ मिलकर जी-तोड़ मेहनत करके, वह भरपूर फसल हासिल करती है। जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने लोगों को मेहनत की ज़रूरत सिखाने के लिए, सभी जानवरों में से खास तौर पर बैल का ज़िक्र किया है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 25:4 में, पवित्रशास्त्र कहता है: "जब बैल अनाज रौंद रहा हो, तब तुम उसके मुँह पर जाली न बाँधना।" इस तरह, डॉ. पार्क यून-सन ने कहा, "बैल वफ़ादारी और मेहनत का प्रतीक है।" दूसरे शब्दों में, वह समझदार स्त्री वफ़ादार और मेहनती होती है। वह मेहनत करती है—और जी-तोड़ मेहनत करती है—ताकि उसके "घर में किसी चीज़ की कमी न हो" (नीतिवचन 31:11)। नीतिवचन 31:13–18 के अनुसार, बाइबल एक नेक स्त्री का वर्णन इस तरह करती है कि वह "ऊन और सन ढूँढ़ती है, और अपने हाथों से खुशी-खुशी काम करती है" (पद 13); वह भोर होने से पहले उठकर अपने घर वालों के लिए खाना बनाती है और अपनी नौकरानियों को काम सौंपती है (पद 15); वह अपनी कमर में ताकत का पट्टा बाँधती है और अपनी बाहों को मज़बूत करती है (पद 17); और, यह समझकर कि उसका व्यापार फायदेमंद है, वह रात को अपना दीपक बुझने नहीं देती (पद 18)। इसके अलावा, बाइबल कहती है कि वह "अपने घर-बार की देख-रेख करती है, और आलस की रोटी नहीं खाती" (पद 27)। नतीजतन, उसके बच्चे उठकर उसे धन्य कहते हैं, और उसका पति उसकी तारीफ़ करता है (पद 28)। ऐसी ही एक समझदार और मेहनती स्त्री के ज़रिए, परमेश्वर परिवार और कलीसिया—दोनों को बनाता है।

चौथी और आखिरी बात, वह समझदार स्त्री जो अपना घर बनाती है, वह अपना रास्ता जानती है। कृपया आज के वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 14:8: "समझदार की बुद्धि यह है कि वह अपने मार्गों पर विचार करे, परन्तु मूर्खों की मूर्खता छल है।" एक मूर्ख स्त्री परमेश्वर से नहीं डरती; बल्कि, वह उसकी उपेक्षा करती है। इसलिए, वह परमेश्वर की इच्छा को नहीं खोजती, न ही वह उस मार्ग पर चलती है जिसकी परमेश्वर कामना करता है। इसके बजाय, वह अपनी ही मनमानी और अपनी ही इच्छा का अनुसरण करती है, और जिस भी मार्ग पर वह स्वयं चलना चाहती है, उसी पर चलती है। अंततः, इसका परिणाम केवल उसकी अपनी मूर्खता का उजागर होना ही होता है। इसका कारण यह है कि वह ऐसे जीवन जीती है मानो परमेश्वर का कोई अस्तित्व ही न हो (भजन संहिता 53:1)। इसके अलावा, यह और कुछ नहीं, बल्कि स्वयं को धोखा देना ही है। ऐसा इसलिए है

क्योंकि परमेश्वर से अलग जिया गया जीवन, सत्य से अलग जिया गया जीवन है—एक झूठा जीवन। इस प्रकार, एक मूर्ख स्त्री जो स्वयं को धोखा देती है और अपनी ही मूर्खता को उजागर करती है, वह अपने ही घर को उजाड़ने के लिए बाध्य है। इसके विपरीत, एक बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह उस मार्ग को जानती है जिस पर उसे चलना है। वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को पहचानती है और उसी ईश्वरीय इच्छा के अनुसार जीवन जीती है। दूसरे शब्दों में, एक बुद्धिमान स्त्री उस कार्य को स्पष्ट रूप से समझती है जिसके लिए उसे बुलाया गया है—ऐसा कार्य जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप हो—और वह पूरी निष्ठा के साथ उसे पूरा करती है (1 कुरिन्थियों 7:17) (पार्क यून-सन)। उस ईश्वरीय इच्छा का एक पहलू ठीक यही है: अपने स्वयं के घर को बनाना, और उसी प्रकार, परमेश्वर के घर—यानी कलीसिया—को बनाना। प्रभु की इस इच्छा को पहचानते हुए, बुद्धिमान स्त्री उसके प्रति वफ़ादार रहती है और उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लगन से प्रयास करती है, और यह सब वह... श्रद्धा और नम्रता के साथ करती है, और हम प्रभु की इच्छा के अनुसार जीवन जीते हैं। ऐसी ही एक बुद्धिमान स्त्री के माध्यम से, प्रभु अपना घर बनाता है।

मैं वचन पर आधारित इस मनन को अब यहीं समाप्त करना चाहूँगा। जब आप किसी ऐसी बुद्धिमान स्त्री के बारे में सोचते हैं जो अपने घर को बनाती है, तो बाइबल में से किसका नाम आपके मन में आता है? मेरे लिए, जो पात्र मेरे मन में आता है, वह है रूथ—वह मोआबी स्त्री जिसका ज़िक्र 'रूथ की पुस्तक' में मिलता है। बाइबल इस मोआबी स्त्री, रूथ का वर्णन एक "उत्तम स्त्री" (रूथ 3:11) के रूप में करती है। एक तरह से, रूथ के परिवार को बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ा था: उसके ससुर एलीमेलेक की मृत्यु हो गई थी, उसके पति महलोन की मृत्यु हो गई थी, उसके देवर चिलियोन की मृत्यु हो गई थी, और उसकी ननद ओरपा परिवार छोड़कर चली गई थी; अब केवल रूथ और उसकी विधवा सास, नाओमी ही बचे थे। फिर भी, एक गैर-यहूदी महिला होने के बावजूद, रूथ अपनी सास नाओमी के साथ यहूदा देश—विशेष रूप से बेथलहम—चली गई, जहाँ उसने बोअज़ के खेतों में लगन से काम किया और अंततः उससे विवाह कर लिया। विवाह के बाद, उनका एक बेटा हुआ जिसका नाम ओबेद था, जो आगे चलकर राजा दाऊद का दादा बना। इस प्रकार, अंत में, रूथ—बोअज़ के साथ—का नाम यीशु की वंशावली में दर्ज हो गया। यह कितनी अद्भुत और महान कृपा है! इस कृपा पर विचार

करते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि रूथ वास्तव में एक उत्कृष्ट महिला और सच्ची बुद्धि वाली महिला थी। इसके अलावा, वह एक ऐसी महिला थी जिसने पूरी लगन से कृपा की खोज की (2:10), आज्ञाकारी महिला थी (3:5–6), और एक ऐसी महिला थी जिसने अटूट प्रेम का प्रदर्शन किया (3:10)। रूथ के माध्यम से, प्रभु ने बोअज़ के परिवार को स्थापित किया; उस परिवार के माध्यम से, उन्होंने अंततः इस संसार में मसीहा—यीशु—का जन्म करवाया; और यीशु के माध्यम से, उन्होंने कलीसिया (चर्च) की स्थापना की। और अब, प्रभु आपके और मेरे माध्यम से अपने शरीर—विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च—का निर्माण करना चाहते हैं। इसलिए, हमें बुद्धिमान लोग बनने का प्रयास करना चाहिए। बुद्धिमान... क्योंकि मसीही लोग परमेश्वर का आदर करते हैं, इसलिए वे ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के साथ अपना आचरण करते हैं। इसके अलावा, बुद्धिमान मसीहियों के होठों पर ज्ञान होता है। बुद्धिमान मसीही परिश्रमी होते हैं। साथ ही, बुद्धिमान मसीही अपने मार्ग को पहचानते हैं और उन्हें सौंपे गए कार्य को पूरी निष्ठा से पूरा करते हैं—ऐसा कार्य जो प्रभु की इच्छा के अनुरूप हो। काश हम सभी ऐसे बुद्धिमान मसीही बन सकें जो इस प्रकार प्रभु के घर का निर्माण करें।

एक नेक औरत

[नीतिवचन 31:10–31]

मुझे अब भी वह कुछ-कुछ याद है। यह बहुत पहले की बात है; मैं दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया की एक यूनिवर्सिटी के हॉस्टल में किसी से मिलने गया था, और मुझे याद है कि मैंने लिविंग रूम में एक फ़्रेम में जड़ा हुआ एक टुकड़ा देखा था, जिस पर बाइबल का एक अंश—नीतिवचन 31:10–31—अंग्रेज़ी में "एक नेक औरत" शीर्षक के तहत कढ़ाई किया हुआ था। उस समय, मैंने मन ही मन सोचा कि यह कुंवारा भाई ज़रूर किसी ऐसी बहन से शादी करने की चाह रखता होगा जो नीतिवचन 31 में बताई गई "नेक औरत" की मिसाल हो। शायद इस चाहत में वह अकेला नहीं है। अगर यीशु में विश्वास रखने वाला हर कुंवारा भाई नहीं, तो भी उनमें से बहुत से भाई ज़रूर यह सपना देखते होंगे कि नीतिवचन 31:10–31 में बताई गई "नेक औरत" ही उनकी भविष्य की जीवनसाथी बने। यहाँ, "नेक औरत" वाक्यांश का सीधा अनुवाद "ताकतवर औरत" या "काबिल औरत" होता है; यह ऐसी औरत की ओर इशारा करता है जिसमें नैतिक गुणों और सही तौर-तरीकों को बनाए रखने की व्यावहारिक क्षमता हो (पार्क यून-सन)।

निजी तौर पर, मैंने हमेशा यही मान रखा था कि "नेक औरत" की अवधारणा सिर्फ़ नीतिवचन 31 में ही मिलती है। हालाँकि, लगभग 2009 के आस-पास, जब मैं रूत की किताब पढ़ रहा था, तो मुझे पता चला कि रूत 3:11 में भी एक "नेक औरत" का ज़िक्र है: "और अब, मेरी बेटी, डर मत। तू जो कुछ भी माँगेगी, मैं तेरे लिए वह सब करूँगा, क्योंकि मेरे शहर के सभी लोग जानते हैं कि तू एक नेक औरत है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "अब, बिल्कुल भी मत डर। तूने जो भी गुज़ारिश की है, मैं उसे पूरा करूँगा। यह बात कि तू एक नेक औरत है,

हमारे शहर के सभी लोग पहले से ही जानते हैं"]। ये शब्द बोअज़ नाम के एक यहूदी पुरुष ने रूत नाम की एक मोआबी औरत से कहे थे; बोअज़ ने कहा कि शहर के सभी लोग रूत को एक नेक चरित्र वाली औरत के तौर पर जानते थे। नतीजतन, मैंने इस अंश पर मनन किया—यह सोचा कि रूत किस तरह की औरत रही होगी कि बोअज़ और शहर के लोग, दोनों ही उसे इतने गुणों वाली औरत के तौर पर पहचानते थे—और मैंने तीन मुख्य विशेषताएँ पहचानीं:

पहली, रूत एक ऐसी औरत थी जो पूरी लगन से अनुग्रह की तलाश करती थी। दूसरे शब्दों में, एक नेक चरित्र वाली स्त्री वह है जो परमेश्वर की कृपा पाने की चाह रखती है।

बोअज़ ने रूथ पर अपनी कृपा दिखाई; इसे पाकर, रूथ ने स्वीकार किया कि वह यह समझ नहीं पा रही थी कि वह उसके जैसी किसी पर—जो महज़ एक परदेसी थी—इतनी कृपा और परवाह क्यों दिखा रहा था (2:10)। इस बातचीत के दौरान, बोअज़ से सांत्वना पाकर और उसके दिल को खुश करने वाली बातें सुनकर, रूथ ने कहा, "हे मेरे प्रभु, तेरी नज़रों में मुझ पर कृपा बनी रहे" (2:13)। उसने तो यहाँ तक कह दिया कि वह बोअज़ की दासियों में से एक भी गिनी जाने के लायक नहीं थी (पद 13)। इस प्रकार, रूथ—एक नेक चरित्र वाली स्त्री—ने नम्रतापूर्वक बोअज़ की कृपा चाही।

जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे यह एहसास हुआ—भले ही थोड़ा-सा ही सही—कि मुझे खुद सबसे पहले एक "नेक चरित्र वाला मसीही" बनने की कोशिश करनी चाहिए। इसके अलावा, मुझे यह सीख मिली कि ऐसा मसीही बनने के लिए, मुझे परमेश्वर की कृपा पाने की चाह और भी गहराई से करनी चाहिए। जब मैं इस तरह से सोचता हूँ, तो मेरे मन में रोमियों 5:20 का यह वचन आता है: "...परन्तु जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ कृपा और भी अधिक बढ़ गई।" मैं परमेश्वर की कृपा का और भी गहरा एहसास पाना चाहता हूँ, यहाँ तक कि अपने पापों के बीच भी—वे पाप जो एक पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में लगातार उजागर होते रहते हैं। जब ऐसा होगा, तो मैं भजनकार की तरह ही यह स्वीकार किए बिना नहीं रह पाऊँगा: "हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसका ध्यान रखता है, या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी परवाह करता है?" (भजन संहिता 144:3)। इसके अलावा, जैसे-जैसे मुझे परमेश्वर की कृपा की प्रचुरता का धीरे-धीरे एहसास होता जाएगा, मैं प्रार्थना करने के लिए विवश

हो जाऊँगा—ठीक रूथ की तरह, जिसने स्वीकार किया था, "तेरी नज़रों में मुझ पर कृपा क्यों हुई, कि तूने मुझ पर ध्यान दिया, जबकि मैं एक परदेसी हूँ?" (रूथ 2:10), और प्रेरित पौलुस की तरह, जिसने स्वीकार किया था, "मैं पापियों में सबसे बड़ा हूँ" (1 तीमुथियुस 1:15)—और मैं कहूँगा, "हे प्रभु, मैं पापियों में सबसे बड़ा हूँ; फिर तू मुझ पर इतनी महान कृपा क्यों करता है?" इसका कारण यह है कि परमेश्वर मुझ जैसे व्यक्ति पर—जो पापियों में सबसे बड़ा है—जो कृपा दिखाता है, वह इतनी ज़्यादा है कि उसे समझना इंसान के बस की बात नहीं है। उस पल, मेरे पास प्रभु के सामने खुद को दीन बनाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। इसलिए, ठीक वैसे ही जैसे रूथ ने बोअज़ से कहा था, “मेरे प्रभु... मैं तो तुम्हारी दासियों में से एक के बराबर भी नहीं हूँ” (रूथ 2:13), और ठीक वैसे ही जैसे उस भटके हुए बेटे ने अपने पिता से कहा था, “पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और तुम्हारे सामने पाप किया है, और अब मैं तुम्हारा बेटा कहलाने लायक नहीं रहा” (लूका 15:21), मैं भी प्रभु के सामने यह स्वीकार करने पर मजबूर हो जाऊँगा: “हे परमेश्वर, मैं तो तेरे सेवकों में से एक गिना जाने के भी लायक नहीं हूँ (रूथ 2:13)। मैं पापियों में सबसे बड़ा हूँ; इसलिए, मैं इस लायक नहीं हूँ कि तू मुझे कीमती और आदरणीय समझे” (यशायाह 43:4)।

दूसरी बात, रूथ एक आज्ञा मानने वाली स्त्री थी। दूसरे शब्दों में, एक नेक स्त्री परमेश्वर के वचन का पालन करती है।

रूथ एक ऐसी बहू थी जो अपनी सास, नाओमी की बातों का पालन करती थी। वह एक ऐसी बहू थी जिसने नाओमी के हर निर्देश का पूरी ईमानदारी से पालन किया (रूथ 3:5–6)। मेरा मानना है कि रूथ एक ऐसी स्त्री थी जिसने परमेश्वर की कृपा को पहचाना—और, इससे भी बढ़कर, वह और भी ज़्यादा कृपा पाने की गहरी चाह रखती थी—इसलिए उसके पास एक ऐसा हृदय और रवैया था जो दीनता में डूबी हुई आज्ञाकारिता से भरा था। इस प्रकार, रूथ ने अपनी सास की आज्ञा का पालन एक सीधे-सादे मन से किया, और उस पर कोई भी आपत्ति नहीं जताई। अपनी आज्ञाकारिता में, यहाँ तक कि जब उसकी सास नाओमी ने उसे निर्देश देते हुए कहा, “नहाओ, इत्र लगाओ, और अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनो; फिर खलिहान में जाओ। लेकिन, जब तक वह अपना शाम का भोजन खत्म न कर ले, तब तक उसे नज़र मत आना। ध्यान देना कि वह कहाँ सोता है; जब वह

सो जाए, तो उसके पैरों के पास जाना, उसके पैरों से चादर हटाना, और वहीं लेट जाना। तब वह तुम्हें बताएगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए"—तो रूथ ने जवाब दिया, "मैं ठीक वैसा ही करूँगी जैसा तुमने मुझे बताया है।" अपने वचन की पक्की, वह सचमुच "उस रात खलिहान में गई और ठीक वैसा ही किया जैसा उसकी सास ने उसे सिखाया था" (रूत 3:3–6)। इस तरह, रूत—एक नेक चरित्र वाली स्त्री—ने अपनी सास, नाओमी की आज्ञा मानी।

जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मुझे एक सीख मिलती है: एक नेक चरित्र वाला मसीही बनने के लिए, मुझे परमेश्वर के असीम अनुग्रह को पूरी तरह समझना होगा और, उसी अनुग्रह से सशक्त होकर, उसके वचन का पालन करना होगा। जब मैं इस पर विचार करता हूँ, तो जो वचन मेरे मन में आता है, वह है 1 कुरिन्थियों 15:10: "परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ; और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं गया; बल्कि मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम किया—फिर भी यह मैं नहीं, बल्कि परमेश्वर का अनुग्रह था जो मेरे साथ था।" इस वचन के मन में आने का कारण यह है कि प्रेरित पौलुस ने, परमेश्वर के अनुग्रह से, "उन सब से बढ़कर परिश्रम किया।" दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति धीरे-धीरे परमेश्वर के अनुग्रह को और गहराई से जानने लगता है, वह न केवल अधिकाधिक विनम्र होता जाता है—["मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ..." (पद 9); "मुझ पर, जो सब पवित्र लोगों में सबसे छोटा हूँ, यह अनुग्रह किया गया..." (इफिसियों 3:8); "...पापियों में मुख्य हूँ" (1 तीमुथियुस 1:15)]—बल्कि वह परमेश्वर के वचन का अधिकाधिक आज्ञाकारी भी होता जाता है। इस प्रकार, प्रभु से मिले अपने मिशन—यानी सुसमाचार की गवाही देने—को पूरा करने में, उसने अपने जीवन को बिल्कुल भी कीमती नहीं समझा (प्रेरितों के काम 20:24)। इसलिए, जैसे-जैसे मैं अपने विश्वास का जीवन जीता जाता हूँ—और परमेश्वर के अनुग्रह की अपनी समझ को गहरा करता जाता हूँ—मेरी भी यही इच्छा है कि मैं स्वयं को और भी अधिक विनम्र और दीन करूँ, प्रभु के वचन का पालन करूँ और मृत्यु तक स्वयं को उसके अधीन कर दूँ, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने किया था (फिलिप्पियों 2:8)।

तीसरी और आखिरी बात, रूथ एक ऐसी स्त्री थी जो प्रेमपूर्ण दया का अभ्यास करती थी। दूसरे शब्दों में, एक सद्गुणी स्त्री वह है जो प्रेमपूर्ण दया दिखाती है।

रूथ ने अपनी सास नाओमी के निर्देश का पालन किया—बोअज़ के पैरों से चादर हटाकर, उनके आराम से लेट जाने के बाद वह वहीं लेट गई (रूथ 3:4, 7)—और जब आधी रात को बोअज़ अचानक जागे, तो उन्होंने रूथ को वहाँ पाया। तब बोअज़ ने रूथ से कहा: "...हे मेरी बेटी, यहोवा तुझे आशीष दे। तेरी यह दया उस दया से भी बढ़कर है जो तूने पहले दिखाई थी: तूने जवान पुरुषों के पीछे भाग-दौड़ नहीं की, चाहे वे अमीर हों या गरीब" (पद 10)। इस प्रकार, रूथ एक ऐसी स्त्री थी जो प्रेमपूर्ण दया का अभ्यास करना जानती थी।

जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि एक सद्गुणी मसीही बनने के लिए, मुझे परमेश्वर के अनुग्रह का स्वाद और भी गहराई से चखना और उसके लिए निरंतर तरसना चाहिए। उस अनुग्रह से सशक्त होकर, मुझे परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए ताकि प्रभु के प्रति मेरा प्रेम धीरे-धीरे और भी अधिक परिपूर्ण होता जाए—उस प्रेम से भी बढ़कर जो मैंने तब महसूस किया था जब मैंने पहली बार यीशु पर विश्वास किया था। जब मैं इस पर विचार कर रहा था, तो मेरे मन में एक विशेष भजन आया: "तुझसे और अधिक प्रेम, हे मसीह" (नया भजन संग्रह, सं. 314)। इसके बोल इस प्रकार हैं: "...यही मेरी प्रार्थना है: तुझसे और अधिक प्रेम, हे मसीह, तुझसे और अधिक प्रेम!" (पद 1); "यही मेरी प्रार्थना है: तुझसे और अधिक प्रेम, हे मसीह, तुझसे और अधिक प्रेम!" (पद 2, 3)। मेरी इच्छा है कि मैं इन बोलों के अनुसार अपना जीवन जीऊँ—और प्रभु से अधिकाधिक प्रेम करना ही मेरे हृदय की सच्ची अभिलाषा बन जाए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब प्रभु मेरी ओर देखें, तो उन्हें मुझमें एक ऐसा व्यक्ति दिखाई दे जो—परमेश्वर के अनुग्रह की सामर्थ्य से—अब उनसे और भी अधिक प्रेम करता है, उस समय की तुलना में जब मैंने पहली बार यीशु पर अपना विश्वास रखा था।

एक सद्गुणी स्त्री वह है जो परमेश्वर के अनुग्रह के लिए और भी गहराई से तरसती है, परमेश्वर के वचन का पालन बढ़ती हुई निष्ठा के साथ करती है, और परमेश्वर से निरंतर बढ़ते हुए समर्पण के साथ प्रेम करती है। ऐसी सद्गुणी स्त्री मोतियों से भी अधिक अनमोल होती है (नीतिवचन 31:10, *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन*)। क्या आपने कभी यह कहावत सुनी है, "मोती एक ऐसा रत्न है जो दर्द से पैदा होता है"? मैंने हाल ही में—एक ऑनलाइन लेख के ज़रिए—यह जाना कि मोती का वर्णन इस तरह क्यों किया जाता है। "जब एक सीप (oyster) जीवित रहने के लिए अलग-अलग काम करती है—जैसे खाना खाना और साँस लेना—तो रेत के कण या छोटे कीड़े जैसी बाहरी

चीज़ें उसके शरीर में घुस सकती हैं और उसके मांस में गहराई तक समा सकती हैं। इस दर्द से उबरने के लिए, कहा जाता है कि सीप लगातार एक पदार्थ निकालना शुरू कर देती है। जिस पल वह बाहरी चीज़ अंदर घुसती है और असहनीय पीड़ा शुरू होती है, उसी पल से अपनी जान बचाने का संघर्ष शुरू हो जाता है; जैसे-जैसे वह स्राव (secretion) पतली-पतली परतों के रूप में जमता जाता है, यह 'दर्द का क्रिस्टलीकरण' धीरे-धीरे आकार लेने लगता है। क्योंकि यह एक ऐसा रत्न है जो जितना ज़्यादा घायल होता है, उतना ही बड़ा और चमकदार बनता जाता है—जैसे-जैसे वह स्राव चोट को ढकने के लिए बाहर निकलता है—इसलिए मोती को 'दर्द का रत्न' कहा जाता है। इसके अलावा, नैक्रे (nacre)—यानी स्राव की परत—जितनी मोटी होती है, उसकी चमक उतनी ही शानदार होती है; सच तो यह है कि चमक और मोटाई, दोनों ही मोती की गुणवत्ता तय करने में अहम कारक माने जाते हैं। जिस मोती की नैक्रे परत मोटी होती है और जो दाग-धब्बों से मुक्त होता है, वही असल में 'सबसे ऊँची श्रेणी का मोती' कहलाता है" (स्रोत: इंटरनेट)। इस प्रकार, स्वर्ग के राज्य के बारे में एक दृष्टांत सुनाते हुए, यीशु ने मत्ती 13:46 में कहा: "जब उसे एक बहुत कीमती मोती मिला, तो वह चला गया और उसके पास जो कुछ भी था, सब बेचकर उसे खरीद लिया।" मोती सचमुच इतनी ज़्यादा कीमत वाली चीज़ें हैं कि कोई व्यक्ति सिर्फ़ एक मोती पाने के लिए अपनी सारी संपत्ति बेच सकता है। फिर भी, नीतिवचन 8:11 में, बाइबल कहती है: "क्योंकि बुद्धि मोतियों से बेहतर है, और तुम्हारी सारी इच्छाएँ उसकी बराबरी नहीं कर सकतीं" (जैसा कि *मॉडर्न मैन बाइबल* में कहा गया है: "बुद्धि मोतियों से बेहतर है और दुनिया की किसी भी दूसरी चीज़ से उसकी तुलना नहीं की जा सकती")। यह दर्शाता है कि बुद्धि असल में कितनी कीमती, महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

हालाँकि, आज के अंश—नीतिवचन 31:10—में राजा लेमुएल की माँ अपने बेटे, राजा लेमुएल से कहती हैं कि "एक गुणवान स्त्री (या पत्नी) मोतियों से भी ज़्यादा कीमती होती है।" वह कितनी बुद्धिमान माँ है! मेरा मानना है कि लेमुएल की माँ—जो अपने प्यारे बेटे लेमुएल को एक नेक औरत (या पत्नी) के बारे में सिखाती है, जो मोतियों से भी ज़्यादा दुर्लभ, कीमती और अनमोल है—हर मायने में, सचमुच एक समझदार माँ है। किसी वजह से, मुझे लगता है कि लेमुएल की माँ ने अपने बेटे को इस नेक औरत के बारे में इसलिए सिखाया—जो मोतियों से भी ज़्यादा कीमती है—क्योंकि उसे उम्मीद थी कि उसका बेटा ऐसी ही किसी नेक औरत को ढूँढ़कर अपनी पत्नी बनाएगा। तो, इस नेक औरत की असल कीमत क्या है—जिसे राजा लेमुएल की माँ मोतियों से भी ज़्यादा कीमती

मानती थी—और एक शब्द में कहें तो, वह किस तरह की औरत है? कृपया आज का अंश देखें, नीतिवचन 31:29: "बहुत सी स्त्रियों ने भले काम किए हैं, पर तू उन सब में श्रेष्ठ है" (*मॉडर्न मैन बाइबल* के अनुसार: "दुनिया में बहुत सी बेहतरीन औरतें हैं, लेकिन तुम उन सब में सबसे महान हो")। ...और उसकी तारीफ़ करता है।" एक नेक औरत की कीमत—जो मोतियों से भी ज़्यादा कीमती है (पद 10)—उसके पति की नज़र में (पद 28), "बाकी सभी औरतों से कहीं ज़्यादा है" (पद 29)। इस तरह, पति अपनी नेक पत्नी की तारीफ़ करते हुए कहता है, "दुनिया में बहुत सी बेहतरीन औरतें हैं, लेकिन तुम उन सब में सबसे महान हो" (पद 29; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इसके अलावा, बाइबल कहती है कि उसके बच्चे "उठकर उसे धन्य कहते हैं"—या, जैसा कि *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* कहती है, "उसके बच्चे अपनी माँ के लिए शुक्रगुज़ार महसूस करते हैं"—यह उस नेक औरत के बारे में कहा गया है (पद 28)। तो फिर, ऐसी औरत कैसे मिल सकती है? सच में, अगर हम आज के अंश के पद 10 के पहले हिस्से को देखें—जहाँ राजा लेमुएल की माँ पूछती है, "नेक औरत कौन पा सकता है?"—तो हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं: *कौन* ऐसी औरत पा सकता है, और वह *कैसे* मिल सकती है? डॉ. पार्क यून-सन ने यह बात कही: "जो लोग सिर्फ़ बाहरी सुंदरता की तलाश करते हैं, उन्हें ऐसी काबिल औरत मिलना मुश्किल होगा। सिर्फ़ वही लोग जो परमेश्वर से प्रार्थना करके तलाश करते हैं, उन्हें ही ऐसी काबिल औरत मिलेगी।" "ऐसी पत्नी परमेश्वर की ओर से एक उपहार है" (पार्क यून-सन)। इसी संदर्भ में, उन्होंने बाइबल के दो अंशों का उल्लेख किया: "जो पत्नी पाता है, वह उत्तम वस्तु पाता है, और यहोवा का अनुग्रह उस पर होता है" (18:22), और "घर और धन-सम्पत्ति तो पुरखाओं की ओर से मीरास में मिलते हैं, परन्तु समझदार पत्नी यहोवा ही की ओर से मिलती है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल: "घर और सम्पत्ति तो पुरखाओं से मीरास में मिलते हैं, परन्तु समझदार पत्नी यहोवा द्वारा दिया गया एक उपहार है")] (19:14)।

आज के पाठ—नीतिवचन 31:10—पर दृष्टि डालते हुए, हम देखते हैं कि राजा लेमुएल की माँ अपने पुत्र, राजा लेमुएल (पद 1) से कह रही हैं: "भली पत्नी कौन पा सकता है? क्योंकि उसका मूल्य मूंगों से भी बहुत अधिक है" ["भली पत्नी कौन पा सकता है? वह मूंगों से भी अधिक अनमोल है" (समकालीन कोरियाई बाइबल)] (पद 10)।

आज के अंश—नीतिवचन 31:10–31—को केंद्र में रखते हुए, और "भली पत्नी" शीर्षक के अंतर्गत, मेरा उद्देश्य लगभग छह मुख्य बिंदुओं पर विचार करना है, ताकि हम उन शिक्षाओं को ग्रहण कर सकें जो परमेश्वर इस पाठ के माध्यम से हमें प्रदान करते हैं।

सबसे पहले, एक नेक महिला अपने पति में विश्वास जगाती है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश, नीतिवचन 31:11–12 पर ध्यान दें: "उसके पति का हृदय उस पर भरोसा करता है, और उसे किसी लाभ की कमी नहीं होगी। वह अपने जीवन के सभी दिनों में उसका भला करती है, न कि नुकसान" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "उसका पति उस पर पूरी तरह भरोसा करता है, और उसके पास वह सब कुछ होगा जिसकी उसे ज़रूरत है। वह जब तक जीवित रहती है, उसका भला करती है—कभी नुकसान नहीं"]। अक्सर ऐसा लगता है जैसे हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ कोई भी वास्तव में भरोसे के लायक नहीं है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो दूसरों पर भरोसा करने के बाद, अंत में निराश और गहरे रूप से आहत होते हैं। परिणामस्वरूप, बहुत से लोग किसी पर भी बहुत जल्द भरोसा करने से हिचकिचाते हैं। यहाँ तक कि विवाह के भीतर भी, पति-पत्नी अक्सर एक-दूसरे पर पूरा भरोसा करने में असफल रहते हैं। इसके विपरीत, ऐसा लगता है कि कई जोड़े एक-दूसरे के बारे में संदेह पालते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बड़ी संख्या में पति-पत्नी चिंता करते हैं—और सोचते हैं—कि कहीं उनके पति या पत्नी का किसी और के साथ प्रेम-संबंध तो नहीं चल रहा है। विशेष रूप से, उस जीवनसाथी के साथ फिर से विश्वास बनाना, जिसने पहले बेवफाई के माध्यम से उस बंधन को तोड़ा है, किसी बहुत बड़ी चुनौती से कम नहीं है। इस प्रकार, हम वर्तमान में एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ हम उन लोगों पर भी पूरा भरोसा नहीं कर सकते जिनसे हम प्यार करते हैं। अविश्वास की ऐसी दुनिया में, हमें—ईसाई होने के नाते—कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए? हमें उन लोगों के साथ विश्वास की एक गहरी और मज़बूत नींव बनाने का प्रयास करना चाहिए जिनसे हम प्यार करते हैं। विशेष रूप से, हमें अपने जीवनसाथी के साथ विश्वास की एक गहरी भावना विकसित करनी चाहिए—वह साथी जिसे स्वयं परमेश्वर ने हमारे जीवन में लाया है। तो फिर, हमें यह कैसे करना चाहिए? मैं इस प्रश्न को चार मुख्य बिंदुओं के माध्यम से समझना चाहूँगा:

(1) जिन लोगों से हम प्यार करते हैं, उनके साथ विश्वास की एक गहरी नींव बनाने के लिए, सबसे पहला कदम परमेश्वर पर भरोसा करना है।

इसका सबसे बड़ा कारण कि प्रियजन एक-दूसरे पर भरोसा करने में असफल क्यों होते हैं, ठीक यही है कि उनमें परमेश्वर पर भरोसे की कमी होती है। उदाहरण के लिए, एक जोड़ा जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं करता, वह एक-दूसरे पर भी भरोसा नहीं कर पाएगा। इसका कारण यह है कि हम अपने प्रिय जीवनसाथी पर—एक क्षैतिज संबंध—तभी भरोसा कर सकते हैं, जब परमेश्वर के साथ हमारे ऊर्ध्वाधर संबंध में विश्वास हो। इसलिए, जिस व्यक्ति से हम प्यार करते हैं, उसके साथ गहरा विश्वास बनाने के लिए सबसे पहली चीज़ जो हमें करनी चाहिए, वह है ईश्वर पर अपना विश्वास रखना।

(2) जिस व्यक्ति से हम प्यार करते हैं, उसके साथ गहरा विश्वास बनाने के लिए, हमें उन पर अपना विश्वास जताना चाहिए; और ऐसा हमें ईश्वर पर अपने स्वयं के विश्वास के कारण करना चाहिए।

जो लोग एक-दूसरे से प्यार करते हैं, उन्हें एक-दूसरे पर विश्वास रखना चाहिए, क्योंकि वे ईश्वर पर विश्वास रखते हैं। वे ईश्वर पर जितना अधिक विश्वास करेंगे, उतना ही अधिक वे एक-दूसरे पर विश्वास कर पाएंगे। हालाँकि आपसी विश्वास ज़रूरी है, लेकिन प्रेम-संबंध में जुड़े लोगों को अपने साथी से बदले में विश्वास की उम्मीद करने के बजाय, पहले खुद उन पर विश्वास जताना चाहिए। जब तक साथी "विश्वास के योग्य" न लगे—यानी जब तक ऐसा न लगे कि उन्होंने विश्वास कमा लिया है—तब तक विश्वास को रोककर रखने के बजाय, हमें अपने प्रिय पर तब भी विश्वास जताना चाहिए, जब उनमें ऐसे गुणों की कमी दिखाई दे; और ऐसा हमें ईश्वर पर अपने स्वयं के विश्वास के कारण करना चाहिए। जिस तरह ईश्वर का प्रेम बिना किसी शर्त के होता है, उसी तरह हमें भी अपने साथी से बिना किसी शर्त के प्यार करना चाहिए। और यदि हम सचमुच बिना किसी शर्त के प्यार कर रहे हैं, तो हमें अपने साथी पर भी बिना किसी शर्त के विश्वास जताना चाहिए। यदि वास्तव में हमें अपने प्रिय जीवनसाथी के हाथों विश्वासघात का सामना करना पड़े, तो ईश्वर-केंद्रित जोड़ा यीशु की ओर देखेगा और उन पर भरोसा करेगा—जिन्हें स्वयं उनके अपने लोगों ने धोखा दिया था—और इस प्रकार वे अपने आंतरिक संघर्ष पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और ऐसे उथल-पुथल के बीच भी, जिस साथी के साथ विश्वासघात हुआ है, वह उस साथी को

क्षमा कर देगा जिसने उसे धोखा दिया था; और ऐसा वह ईश्वर के प्रेम की शक्ति के माध्यम से करेगा। हालाँकि मानवीय समझ के नज़रिए से देखने पर यह असंभव लग सकता है, लेकिन यदि हम ईश्वर पर विश्वास रखें, तो यह पूरी तरह से संभव हो जाता है। ईश्वर इसे संभव बनाने में पूरी तरह से सक्षम हैं। उसी ईश्वर पर भरोसा करते हुए, हमें उस व्यक्ति पर अपना विश्वास जताना चाहिए जिससे हम प्यार करते हैं।

(3) जिस व्यक्ति से हम प्यार करते हैं, उस पर विश्वास रखने के लिए, हमें उनके साथ भी उतना ही सच्चा होना चाहिए, जितना हम ईश्वर के साथ होते हैं।

जो लोग एक-दूसरे से प्यार करते हैं, उन्हें सच्चे ईसाई बनने का प्रयास करना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें ईमानदार होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे से झूठ नहीं बोलना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के साथ धोखेबाजी वाले कामों में शामिल नहीं होना चाहिए। उन्हें न केवल ईश्वर के सामने, बल्कि एक-दूसरे के साथ अपने व्यवहार में भी सच्चा होना चाहिए। उन्हें एक-दूसरे के सामने सच्चाई का ऐसा स्तर बनाए रखना चाहिए, जिससे वे सचमुच यह कह सकें, "ईश्वर मेरे गवाह हैं" (फिलिप्पियों 1:8)। ईश्वर हमारे हर काम को देखते हैं। इसके अलावा, ईश्वर हमारे मन में उठने वाले हर विचार को जानते हैं। इसलिए, जिस तरह हम परमेश्वर के सामने सच्चे होते हैं, उसी तरह हमें उस व्यक्ति के सामने भी सच्चा होना चाहिए जिससे हम प्यार करते हैं।

(4) जिससे हम प्यार करते हैं, उसके साथ विश्वास बनाने के लिए, हमें अपनी गलतियों को स्वीकार करना चाहिए और जब भी हमने उनके साथ कुछ गलत किया हो, तो उनसे माफ़ी माँगनी चाहिए। इसके अलावा, हमें खुद में बदलाव लाने के लिए पक्का इरादा करना चाहिए।

अगर हमने जिससे प्यार किया है, उसे धोखा दिया है या उससे झूठ बोला है, तो हमें उससे माफ़ी माँगनी चाहिए। हमें अपने पापों को पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ उनके सामने स्वीकार करना चाहिए। इसके अलावा, हमें न केवल उनसे यह वादा करना चाहिए कि हम फिर कभी वैसी गलती नहीं दोहराएँगे, बल्कि हमें अपने कामों से उस वादे को साबित भी करना चाहिए। इसके विपरीत, जब जिससे हम प्यार करते हैं, वह हमारे साथ की गई किसी गलती के लिए हमसे माफ़ी माँगता है, तो हमें उसे माफ़ कर देना चाहिए। हालाँकि, उन्हें माफ़ करते समय, हमें अपने मन में कोई बैर नहीं रखना चाहिए या लंबे समय तक उनके द्वारा की गई गलतियों का हिसाब अपने मन में नहीं रखना चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:5)। जिस तरह परमेश्वर, "अपनी बड़ी दया के अनुसार...

[हमारे] अपराधों को मिटा देता है" (भजन संहिता 51:1), उसी तरह हमें भी उनके अपराधों की याद को अपने दिल से पूरी तरह मिटा देना चाहिए। फिर हमें परमेश्वर के कभी न बदलने वाले प्यार के साथ उनसे प्यार करने का पक्का इरादा करना चाहिए। हमें उस व्यक्ति पर भरोसा करने के अपने वादे को भी फिर से पक्का करना चाहिए जिससे हम प्यार करते हैं। अपने रिश्ते को—जो इंसानी कमज़ोरियों की वजह से खराब हो सकता है—खराब होने देने के बजाय, हमें इसे प्रभु में अपने विश्वास के आधार पर खुद में बदलाव लाने के एक मौके के तौर पर देखना चाहिए। इसलिए, हमें उस व्यक्ति के साथ मिलकर आगे बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए जिससे हम प्यार करते हैं, और प्रभु में मज़बूती से टिके रहना चाहिए। हमें एक समझदार और परिपक्व इंसान के तौर पर खुद को मज़बूत बनाना चाहिए।

आज के पवित्र शास्त्र के अंश—नीतिवचन 31:11–12—को देखने पर, हम पाते हैं कि राजा लेमुएल (नीतिवचन के इस हिस्से के लेखक) की माँ ने अपने बेटे लेमुएल से खास तौर पर एक "नेक और गुणी स्त्री" के बारे में बात की थी। उसने यह पूछकर शुरुआत की, "एक नेक औरत किसे मिल सकती है? क्योंकि उसकी कीमत मणियों से कहीं ज़्यादा है" (पद 10), और फिर उसके बारे में विस्तार से बताया: "उसके पति का दिल उस पर पूरी तरह भरोसा करता है; इसलिए उसे किसी भी चीज़ की कमी नहीं होगी। वह अपनी पूरी ज़िंदगी अपने पति का भला करती है, बुरा नहीं" [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) "क्योंकि ऐसी औरत का पति अपनी पत्नी पर भरोसा करता है, इसलिए उसे किसी भी चीज़ की कमी नहीं होगी। ऐसी औरत अपनी पूरी ज़िंदगी अपने पति का भला करती है और उसे कभी नुकसान नहीं पहुँचाती"]। राजा लेमुएल की माँ ने अपने प्यारे बेटे, राजा लेमुएल से कहा कि जिस पति की पत्नी एक नेक औरत होती है—एक ऐसी औरत जिसकी कीमत मणियों से ज़्यादा होती है, या सच कहूँ तो दुनिया के सभी खज़ानों से भी ज़्यादा कीमती होती है (पार्क यून-सन के अनुसार)—वह अपनी पत्नी पर भरोसा करता है। दूसरे शब्दों में, ऐसी नेक औरत के पति को अपनी पत्नी पर पूरा भरोसा होता है। वह अपनी नेक पत्नी पर इतना भरोसा क्यों करता है? इसका क्या कारण है? मेरा मानना है कि इसका सीधा कारण पद 12 में मिलता है: "वह अपनी पूरी ज़िंदगी अपने पति का भला करती है, बुरा नहीं" [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) "ऐसी औरत अपनी पूरी ज़िंदगी अपने पति का भला करती है और उसे कभी नुकसान नहीं पहुँचाती"] (पद 12)। कहने का मतलब यह है कि नेक औरत का पति उस पर इसलिए भरोसा करता है क्योंकि वह "अपनी पूरी ज़िंदगी" अपने पति का "भला करती है, बुरा नहीं।" दोस्तों, आप उस पत्नी के बारे में क्या सोचते हैं जो अपनी पूरी ज़िंदगी—जितने भी दिन वह जीवित रहती है—सिर्फ़ अपने पति का भला करती है और उसे कभी नुकसान

नहीं पहुँचाती? जब मैं इस अंश पर विचार करता हूँ, तो मैं एक नेक औरत को एक "अच्छी औरत" मानता हूँ—एक ऐसी औरत जो सक्रिय रूप से अच्छे काम करती है—और इसके अलावा, क्योंकि वह अपनी पूरी ज़िंदगी अपने पति का भला करती है, इसलिए मैं उसे एक "वफ़ादार औरत" मानता हूँ। नतीजतन, उसका पति अपनी नेक पत्नी पर भरोसा करता है। पास के पद 12 में बताए गए कारणों से परे, मैंने इस बात की और भी गहरी वजह खोजने की कोशिश की कि एक नेक औरत का पति उस पर क्यों भरोसा करता है, और मुझे वह वजह आज के पाठ के पद 30 में मिली: "आकर्षण धोखा देने वाला होता है, और सुंदरता पल भर की होती है; लेकिन जो औरत प्रभु का डर मानती है, उसकी तारीफ़ होनी चाहिए।" दूसरे शब्दों में, एक नेक औरत का पति उस पर इसलिए भरोसा करता है क्योंकि वह एक "समझदार औरत" है—एक ऐसी औरत जो परमेश्वर से डरती है। ऐसी समझदार और नेक औरत, जो परमेश्वर से डरती है, बुराई से नफ़रत करती है (8:13)। इसके अलावा, ऐसी औरत न सिर्फ़ बुराई से नफ़रत करती है, बल्कि अच्छाई से प्यार भी करती है (आमोस 5:15)। साथ ही, जो औरत परमेश्वर से डरती है—जो उसकी अपनी है—वह बुराई की नकल नहीं करती, बल्कि अच्छाई की मिसाल बनती है, और इस तरह वह सही काम करती है (3 यूहन्ना 1:11)। निजी तौर पर, मैं अक्सर अपने प्यारे बच्चों को यह सलाह देता हूँ कि जब उनकी शादी का समय आए, तो उनके होने वाले जीवनसाथी का चरित्र सबसे ज़्यादा ज़रूरी होना चाहिए। और जिस खास चरित्र-गुण पर मैं ज़ोर देता हूँ, वह है "ईमानदारी।" मैंने अपने बच्चों को सलाह दी है कि वे उन लोगों से सावधान रहें जो झूठ बोलते हैं। मैंने अपने बच्चों के सामने चरित्र में ईमानदारी के महत्व पर इसलिए ज़ोर दिया है, क्योंकि जब वे जीवनसाथी के लिए प्रार्थना करते हैं और उसे खोजते हैं, तो मेरी सबसे गहरी इच्छा यही है कि उन्हें सचमुच एक भरोसेमंद इंसान मिले।

भाइयों और बहनों, हम—यानी कलीसिया—को अपने दूल्हे, यीशु के भरोसे के लायक दुल्हन बनने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, कलीसिया—जो प्रभु की दुल्हन है—को विश्वासियों का ऐसा समुदाय बनना चाहिए जिसे उसके दूल्हे, यीशु की नज़रों में भरोसेमंद माना जाए। इसे हासिल करने के लिए, प्रभु की कलीसिया को तब तक लगातार वही काम करते रहना चाहिए जो उसके दूल्हे, यीशु की नज़रों में अच्छे हैं—और बुराई करने से पूरी तरह दूर रहना चाहिए—जब तक वह इस धरती से विदा न हो जाए। यहाँ, कलीसिया के लिए अपने दूल्हे, यीशु की नज़रों में "अच्छा काम करने" का मतलब है, परमेश्वर की अच्छी इच्छा को (रोमियों

12:2) इस धरती पर पूरा करना; ऐसा उन लोगों की तरह जीकर करना जिन्हें "मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए रचा गया था" (इफिसियों 2:10)। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारी कलीसिया एक ऐसा समुदाय बने जो हमारे दूल्हे, यीशु में पूरा भरोसा जगाए।

दूसरी बात, एक गुणी स्त्री लगन से काम करती है।

भाइयों और बहनों, शादी के बाद भी, हमें यह पक्का करने के लिए लगातार मेहनत करते रहना चाहिए कि हमारा प्यारा जीवनसाथी हमारी तरफ आकर्षित बना रहे। इन कोशिशों में न केवल शारीरिक आकर्षण, बल्कि व्यक्तिगत चरित्र भी शामिल होना चाहिए। और जहाँ तक व्यक्तिगत चरित्र की बात है, मेरा मानना है कि ईमानदारी—ऐसी ईमानदारी जो जीवनसाथी में भरोसा जगाती है—सबसे ज़्यादा ज़रूरी है; यह उस सीख को दोहराती है जो हमने पहले वचन 11–12 से सीखी थी: "सबसे पहले, एक गुणी स्त्री अपने पति में भरोसा जगाती है।" संक्षेप में, व्यक्तिगत चरित्र का एक मुख्य पहलू जिसे एक जोड़े को मिलकर विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए, वह है ईमानदारी जो आपसी भरोसे को बढ़ाती है। इन साझा कोशिशों के बीच, मेरा मानना है कि एक और गुण है जिसे एक जोड़े को पूरी लगन से अपनाना चाहिए: वह है "लगन" खुद।

जब हम नीतिवचन की किताब पर नज़र डालते हैं—जिस पर हम पिछले कुछ समय से हर बुधवार की प्रार्थना सभाओं में मनन करते आ रहे हैं—तो हम देखते हैं कि नीतिवचन का लेखक अक्सर आलस बनाम लगन के विषयों पर बात करता है। उदाहरण के लिए, आलस के बारे में, नीतिवचन का लेखक नीतिवचन 6:10 और 24:33 में कहता है: "थोड़ी सी नींद, थोड़ी सी झपकी, आराम करने के लिए हाथों को थोड़ा सा मोड़ना।" ऐसा आलसी व्यक्ति सिर्फ़ यह नहीं कहता, “मुझे थोड़ी देर और सोने दो, मुझे थोड़ी देर और ऊँघने दो, मुझे हाथ बाँधकर थोड़ी देर और लेटे रहने दो”; बल्कि वह सचमुच सोने, ऊँघने और लेटे रहने लगता है। दूसरे शब्दों में, आलसी व्यक्ति तय समय पर जागने में नाकाम रहता है, और इसे बाद के लिए टाल देता है। इसके अलावा, आलसी व्यक्ति काम के लिए तय समय पर काम करने में भी नाकाम रहता है, और उसे भी बाद के लिए टाल देता है। फिर भी, अपनी ही आलस को दोष देने के बजाय, वह दूसरी चीज़ों को दोष देता है—हालात, दूसरे लोग, वगैरह। संक्षेप में, आलसी व्यक्ति ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं होता। इसका नतीजा क्या होता है?

नीतिवचन 6:11 और 24:34 पर नज़र डालें: "तेरी गरीबी एक लुटेरे की तरह आएगी, और तेरी ज़रूरत एक हथियारबंद आदमी की तरह।" इसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि आलसी व्यक्ति के लिए, ऐसी गरीबी आने वाली है जिससे बचा नहीं जा सकता—ऐसी गरीबी जो ठीक वैसे ही आती है जैसे कोई लुटेरा किसी शिकार पर हावी होकर उसे काबू में कर लेता है (24:33) (मैकआर्थर)। एक दिलचस्प बात नीतिवचन 24:30 में मिलती है; वहाँ, नीतिवचन का लेखक बताता है कि वह वहाँ से गुज़रा और उसने "आलसी" के खेत और "उस आदमी की दाख की बारी" को देखा जिसमें समझ की कमी थी। यहाँ, नीतिवचन का लेखक "आलसी" और "उस आदमी जिसमें समझ की कमी है" शब्दों का इस्तेमाल एक-दूसरे के पर्यायवाची के तौर पर करता है। कहने का मतलब यह है कि, परिभाषा के अनुसार, आलसी व्यक्ति वह है जिसमें समझ की कमी होती है। और इस संदर्भ में, "वह आदमी जिसमें समझ की कमी है"—अगर अंग्रेज़ी बाइबल से कोरियाई भाषा में अनुवाद किया जाए—तो इसका खास मतलब निकलता है "वह जिसमें परखने की शक्ति की कमी हो" या "वह जिसमें सही समझ की कमी हो।" तो फिर, वह कौन सी खास समझ है जिसकी आलसी व्यक्ति में कमी होती है? मेरा मानना है कि यह प्राथमिकताओं को तय करने की क्षमता है। दूसरे शब्दों में, आलसी व्यक्ति में यह समझने की समझ की कमी होती है कि पहले क्या किया जाना चाहिए और बाद में क्या किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा, "परन्तु पहले तुम उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो, तब ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी" (मत्ती 6:33)। हालाँकि, भविष्यवक्ता हाग्गै के समय में, इस्राएल के लोग परमेश्वर के घर पर ध्यान देने से पहले अपने खुद के घर बनाने में व्यस्त थे (हाग्गै 1:4, 9)। उन्होंने मंदिर—जो परमेश्वर का घर है—को खंडहर के रूप में पड़ा रहने दिया, जबकि वे पूरी तरह से अपने आलीशान घर बनाने में ही व्यस्त थे। उनकी प्राथमिकताएँ पूरी तरह से गलत थीं। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को दंड दिया। इस दंड में क्या शामिल था? हग्गै 1:6 और वचन 9 के पहले भाग को देखिए: "तुमने बहुत बोया है, पर काटा थोड़ा है। तुम खाते हो, पर तुम्हारा पेट नहीं भरता। तुम पीते हो, पर तुम्हारी प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर तुम्हें गर्मी नहीं मिलती। तुम मज़दूरी कमाते हो, पर उसे एक ऐसे बटुए में रखते हो जिसमें छेद हैं" (वचन 6); "तुमने बहुत की आशा की, पर मिला थोड़ा। जब तुम उसे घर लाए, तो मैंने उसे उड़ा दिया..." (वचन 9a)। इसका क्या अर्थ है? परमेश्वर ने यहूदा के लोगों की फसलों पर अकाल (सूखा) डाल दिया (हग्गै 1:11), जिससे उनकी फसल

बहुत कम हो गई (वचन 6, 9) (पार्क यून-सन)। अंततः, इसका अर्थ यह है कि जब हम सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजने में असफल रहते हैं, तो परमेश्वर हमारे वित्त पर सूखे का संकट आने देता है, जिससे हम दरिद्रता में डूब जाते हैं। दूसरे शब्दों में, यदि हम परमेश्वर की नज़रों में अपनी प्राथमिकताओं को सही ढंग से निर्धारित नहीं करते, तो हमारा गरीब होना निश्चित है। इस प्रकार, आलसी व्यक्ति, जिसमें बुद्धि की कमी होती है, उन कार्यों पर ध्यान नहीं देता जिन्हें सबसे पहले किया जाना चाहिए—और परिणामस्वरूप, वह गरीब हो जाता है। इसलिए, नीतिवचन का लेखक नीतिवचन 6:6 में कहता है: "हे आलसी, चींटी के पास जा; उसके कामों पर विचार कर और बुद्धिमान बन।" इसका क्या कारण है? एक आलसी व्यक्ति को चींटी के पास जाकर, उसके कार्यों को देखकर और बुद्धि क्यों प्राप्त करनी चाहिए? क्या यह वचन स्वयं यह संकेत नहीं देता कि एक आलसी व्यक्ति, वास्तव में, चींटी से भी अधिक मूर्ख है? सचमुच, वह कौन सी बुद्धि है जो एक आलसी व्यक्ति को चींटी से सीखनी चाहिए? (पार्क यून-सन के अनुसार) दो मुख्य बातें हैं:

(1) चींटियाँ बिना किसी देखरेख करने वाले के भी, लगन से, अपनी मर्ज़ी से और मिल-जुलकर काम करती हैं।

नीतिवचन 6:7 को देखिए: "उसका कोई सेनापति, कोई निरीक्षक या शासक नहीं होता।" आलसी व्यक्ति को चींटियों के पास जाना चाहिए—जो बिना किसी निगरानी वाली चींटी के भी, आपसी सहयोग की भावना से एक-दूसरे की मदद करते हुए, लगन और अपनी मर्ज़ी से काम करती हैं—उन्हें करीब से देखना चाहिए, और उनसे समझदारी सीखनी चाहिए।

(2) चींटियाँ भविष्य के लिए पहले से ही तैयारियाँ कर लेती हैं।

नीतिवचन 6:8 को देखें: "वह गर्मियों में अपना भोजन जमा करती है और कटाई के समय अपना खाना इकट्ठा करती है।" बाइबल उन लोगों को सलाह देती है जो चींटी से भी पीछे रह जाते हैं, कि वे चींटी के पास जाएँ और भविष्य के लिए पहले से तैयारी करने की समझदारी सीखें। नीतिवचन 30:25 में, बाइबल इसी तरह चींटी का वर्णन इस प्रकार करती है: "चींटी—एक ऐसा जीव जिसमें बहुत कम ताकत होती है, फिर भी वह गर्मियों में

अपना भोजन जमा करती है," यहाँ उन चींटियों का ज़िक्र है जो गर्मियों के मौसम में अपना भोजन पहले से ही तैयार कर लेती हैं। चींटियाँ "गर्मियों" के दौरान अपने सर्दियों के भोजन की तैयारी क्यों करती हैं? डॉ. पार्क यून-सन के अनुसार, फ़िलिस्तीन के इलाके में गर्मियाँ ही कटाई का मौसम होता है। इसलिए, इसी समय चींटियाँ वह भोजन इकट्ठा करती हैं जिसे वे सर्दियों के महीनों में खाएँगी (पार्क यून-सन)। इस तरह, चींटियाँ कटाई के मौसम के दौरान उस भोजन के लिए पहले से ही तैयारियाँ कर लेती हैं जिसकी उन्हें पूरी सर्दियों में ज़रूरत पड़ेगी। कृपया आज के अंश, नीतिवचन 31:13–19 पर ध्यान दें: "वह ऊन और सन की खोज करती है, और अपने हाथों से लगन से काम करती है। वह व्यापारी जहाजों के समान है, जो दूर से अपना भोजन लाती है। वह अभी रात रहते ही उठ जाती है; वह अपने परिवार के लिए भोजन और अपनी सेविकाओं के लिए उनका हिस्सा तैयार करती है। वह किसी खेत पर विचार करती है और उसे खरीद लेती है; अपनी कमाई से वह एक दाख की बारी लगाती है। वह पूरे जोश के साथ अपने काम में जुट जाती है; उसके हाथ अपने कार्यों के लिए मज़बूत हैं। वह देखती है कि उसका व्यापार लाभदायक है, और रात में उसका दीपक नहीं बुझता। अपने हाथ में वह तकली थामे रहती है और अपनी उंगलियों से चरखे को पकड़ती है" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "वह ऊन और सन की खोज करती है और लगन से काम करती है; एक व्यापारी जहाज की तरह, वह दूर से भोजन लाती है। वह भोर होने से पहले ही उठ जाती है ताकि अपने परिवार के लिए नाश्ता तैयार कर सके और अपनी सेविकाओं को उनके काम सौंप सके। वह किसी खेत का मुआयना करने जाती है, उस पर ध्यान से विचार करती है, और फिर उसे खरीद लेती है; अपनी कमाई के पैसों से वह एक दाख की बारी लगाती है। वह हमेशा मज़बूत और मेहनती रहती है, और बड़े उत्साह के साथ काम करती है। वह जानती है कि उसका काम लाभदायक है, और वह देर रात तक मेहनत करती रहती है, अपने हाथों से धागा कातती और कपड़ा बुनती है"]। यह अंश एक सदाचारी स्त्री के परिश्रम के बारे में बताता है; संक्षेप में, यह यह संदेश देता है कि एक सदाचारी स्त्री में "परिश्रम का सौंदर्य"—अर्थात् अपने कार्यों को लगन से संभालने का सौंदर्य—विद्यमान होता है (पार्क यून-सन)। डॉ. पार्क यून-सन ने लगभग तीन ऐसे तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत की है, जिनके द्वारा वह सदाचारी स्त्री अपने कार्यों को लगन से संभालती थी:

(1) एक गुणवान स्त्री वस्त्रों (कपड़े/फैब्रिक) के उत्पादन में लगी रहती है।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश पर ध्यान दें—नीतिवचन 31:13, 18, और 19: “वह ऊन और सन की खोज करती है, और अपने हाथों से उत्साहपूर्वक काम करती है... वह देखती है कि उसका माल लाभदायक है, और रात में उसका दीपक नहीं बुझता; वह अपने हाथों से तकली की ओर बढ़ती है, और उसकी उंगलियाँ चरखे को थामती हैं” [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) “वह ऊन और सन की खोज करती है और लगन से काम करती है... उसे एहसास होता है कि उसका काम लाभदायक है और वह देर रात तक मेहनत करती है, खुद चरखा चलाकर धागा निकालती है और कपड़ा बुनती है”]। गुणवान स्त्री छोटे पैमाने के उद्योग में लगी रहती है—विशेष रूप से, घर के भीतर अपने हाथों और साधारण औजारों का उपयोग करके किया जाने वाला छोटा-मोटा निर्माण कार्य। उदाहरण के लिए, आज के अंश के पद 13 को देखें, तो गुणवान स्त्री “ऊन और सन की खोज करती है, और अपने हाथों से उत्साहपूर्वक काम करती है।” पद 19 (समकालीन कोरियाई बाइबिल में) कहता है कि अपने काम में, वह “खुद चरखा चलाकर धागा निकालती है और कपड़ा बुनती है।” इसके अलावा, बाइबिल हमें (पद 18 में) बताती है कि वह इन सामग्रियों का उपयोग “व्यापार” के लिए करती है; यह महसूस करते हुए कि उसका व्यवसाय फल-फूल रहा है, वह देर रात तक काम करती है—इतनी देर तक, वास्तव में, कि वह अपना दीपक भी नहीं बुझाती। जब मैं इस अंश पर विचार कर रहा था, तो मुझे लगा कि आज के घरों में पत्नियों के लिए इस गुणवान स्त्री का अनुकरण करना लाभदायक होगा—यानी घर-आधारित शिल्पों को महत्व देना और उत्पादक, छोटे पैमाने के उद्योगों में संलग्न होना। विशेष रूप से आज जैसी दुनिया में, मेरा मानना है कि हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ पत्नियाँ निश्चित रूप से घर से ही विभिन्न उत्पादक, छोटे पैमाने के व्यवसायों का प्रबंधन कर सकती हैं—चाहे वह घर-आधारित शिल्पों के माध्यम से हो या कंप्यूटर और इंटरनेट के ज़रिए। इसका अर्थ है कि पत्नियों के लिए छोटे पैमाने के व्यावसायिक अवसर उपलब्ध हैं, जिन्हें वे अपने बच्चों की देखभाल करने और घर-गृहस्थी संभालने के साथ-साथ भी अपना सकती हैं। मेरा मानना है कि प्रत्येक पत्नी के लिए यह एक अद्भुत प्रयास होगा कि वह अपने घर के भीतर ऐसा काम पहचाने जिसे वह करना चाहती है—अपनी अद्वितीय प्रतिभाओं के अनुरूप—और उसे एक व्यावसायिक उद्यम के रूप में लगन से आगे बढ़ाए।

(2) एक गुणवान स्त्री अपने घरेलू जीवन का अच्छी तरह प्रबंधन करती है। आज के वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 31:14–15a: "वह व्यापारी जहाज़ों के समान है, जो दूर से अपना भोजन लाती है। वह अभी रात रहते ही उठ जाती है और अपने घर वालों के लिए भोजन का प्रबंध करती है" [(Modern People's Bible) "व्यापारी जहाज़ों की तरह, वह दूर से भोजन लाती है; भोर होने से पहले ही उठकर, वह अपने परिवार के लिए नाश्ता तैयार करती है"]। व्यक्तिगत रूप से, मेरा मानना है कि मसीह में एक ऐसी बहन जो अपने कलीसियाई जीवन में तो बहुत जोशीली है, लेकिन अपने घरेलू जीवन की उपेक्षा करती है, वह एक असंतुलित विश्वास जी रही है। यह बात विशेष रूप से तब सच होती है जब उसका पति एक अविश्वासी हो, जो यीशु पर विश्वास नहीं करता; ऐसे मामले में, मेरा मानना है कि उसके द्वारा अपने घरेलू जीवन की उपेक्षा करना, 1 पतरस 3:1 में दिए गए बाइबल के निर्देश का उल्लंघन है: "हे पत्नियों, तुम भी अपने-अपने पतियों के अधीन रहो, ताकि यदि उनमें से कोई वचन को न भी मानता हो, तो भी वे बिना किसी शब्द के, अपनी पत्नियों के व्यवहार द्वारा जीत लिए जाएँ" [(Modern People's Bible) "हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो। तब, भले ही कोई पति प्रभु के वचन पर विश्वास न करता हो, तो भी वह तुम्हारे कार्यों को देखकर परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए प्रेरित हो सकता है—शब्दों के द्वारा नहीं, बल्कि तुम्हारे व्यावहारिक आचरण के द्वारा"]। वर्तमान में, कई पत्नियाँ जो यीशु पर विश्वास करती हैं—लेकिन जिनके पति अविश्वासी हैं—वे अपने कलीसियाई जीवन में तो बहुत जोशीली हैं, जबकि अपने घरेलू जीवन की उपेक्षा करती हैं। हो सकता है कि वे कलीसिया के भीतर एक उदाहरण के रूप में सेवा कर रही हों, लेकिन वे अपने ही घरों के भीतर एक उदाहरण बनने में असफल हो रही हैं। मैं इसे एक असंतुलित मसीही जीवन मानता हूँ। तो फिर, क्या किया जाना चाहिए? एक बुद्धिमान पत्नी न केवल कलीसिया के भीतर, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण रूप से, अपने ही घर के भीतर एक उदाहरण के रूप में सेवा करती है। वह अपने घर के भीतर एक उदाहरण के रूप में तब सेवा करती है, जब वह अपने अविश्वासी पति के अधीन रहती है—ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती। डॉ. पार्क यून-सन ने निम्नलिखित बात कही: "एक अविश्वासी पति अपनी पत्नी के विश्वास को देखकर सुसमाचार की सच्चाई को पहचान सकता है और परिवर्तित हो सकता है। यह अपने कार्यों के द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करना है। यदि सुसमाचार के बारे में हमारी मौखिक गवाही के साथ एक सदाचारी जीवन नहीं जुड़ा होता, तो वह शक्तिहीन बनी रहती है" (पार्क यून-सन)। एक बुद्धिमान पत्नी अपनी सुसमाचार की गवाही को केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं रखती। वह अपने अविश्वासी पति से कभी भी

केवल यह नहीं कहती, "चलो चर्च चलते हैं।" बल्कि, वह अपने पति के अधीन रहकर सुसमाचार की सच्चाई को दर्शाती है—ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती। वह अपने जीवन जीने के तरीके से यीशु मसीह को प्रकट करती है। परिणामस्वरूप, प्रभु उसे एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते हैं ताकि उसके अविश्वासी पति का भी उद्धार हो सके।

आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 31:14–15a—में, हम पाते हैं कि राजा लेमुएल की माँ अपने बेटे, राजा लेमुएल को "गुणी स्त्री" के बारे में बता रही हैं। वह कहती हैं कि यह स्त्री "व्यापारी जहाजों के समान है, जो दूर से अपना भोजन लाती है," और वह "अभी रात रहते ही उठ जाती है और अपने घर वालों के लिए भोजन का प्रबंध करती है।" गुणी स्त्री के बारे में हम यहाँ जो बात समझ सकते हैं, वह यह है कि वह अपने परिवार के लिए आवश्यक सामग्री—यहाँ तक कि दूर-दराज के स्थानों से भी—जुटाती है और उन्हें घर लाती है। इसके अलावा, वह जो सामग्री दूर से लाती है, वह केवल साधारण भोजन नहीं होता, बल्कि वह अत्यंत उच्च गुणवत्ता वाला भोजन होता है (मैकआर्थर)। डॉ. पार्क यून-सन ने टिप्पणी की: "दूर के स्थानों से सामग्री खरीदने का उसका उद्देश्य किफायती दाम पर उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुएँ प्राप्त करना होता है। इस प्रकार, वह बड़ी ही कुशलता से अपने घर की भोजन-सामग्री का प्रबंधन करती है।" क्या हमारी पत्नियों में भी यही कुशलता नहीं होनी चाहिए? यह बात न केवल घर की भोजन-सामग्री के प्रबंधन पर लागू होती है, बल्कि घर के समग्र प्रशासन पर भी लागू होती है; गुणी पत्नियों को अपने वित्त (पैसे) के प्रबंधन में बुद्धिमानी का परिचय देना चाहिए—व्यर्थ खर्च से बचना चाहिए और इसके विपरीत, किफायती दामों पर गुणवत्ता वाली वस्तुएँ ढूँढ़कर खरीदनी चाहिए। यदि इसके बजाय, कोई परिवार बिना किसी रोक-टोक के और फिजूलखर्ची करके अपने संसाधनों को बर्बाद कर दे, तो उस घर का क्या होगा? वास्तव में, आज के अंश—नीतिवचन 31:27—में, राजा लेमुएल की माँ (जो नीतिवचन के इस भाग की लेखिका हैं) "गुणी स्त्री" का वर्णन ऐसी स्त्री के रूप में करती हैं जो "अपने घर-परिवार के कार्यों पर नज़र रखती है और आलस की रोटी नहीं खाती" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "वह अपने घर-परिवार के कार्यों पर नज़र रखती है और आलस की रोटी नहीं खाती"]। गुणी स्त्री पूरी लगन से अपने घरेलू कर्तव्यों का पालन करती है और कड़ी मेहनत के द्वारा अपनी आजीविका कमाती है। इस प्रकार, बाइबल हमें बताती है कि एक नेक स्त्री न केवल अपने परिवार के लिए उचित कीमतों पर उच्च-गुणवत्ता वाली चीज़ें ढूँढ़कर खरीदती है—भले ही इसके लिए उसे दूर-दराज तक जाना पड़े—बल्कि वह "अभी रात रहते ही उठ जाती है... ताकि अपने

परिवार के लिए भोजन तैयार कर सके" (पद 15a, Contemporary English Version)। मैं कल्पना करता हूँ कि, विशेष रूप से शादी के शुरुआती दिनों में, पति के लिए अपनी पत्नी द्वारा तैयार किया गया नाश्ता करके काम पर जाना काफी आम बात है। बेशक, मैं यह नहीं मानता कि हर नवविवाहित जोड़े के साथ ऐसा ही होता है। मुझे लगता है कि कई नवविवाहित जोड़े, शुरू से ही, या तो अपना नाश्ता खुद ही बना लेते हैं या अक्सर सुबह का भोजन पूरी तरह से छोड़ देते हैं। विशेष रूप से आज की दुनिया में, जहाँ दोनों पति-पत्नी का कमाना एक आम बात है, मैं मानता हूँ कि एक पत्नी के लिए विशेष रूप से अपने पति के लिए नाश्ता तैयार करना कोई आसान काम नहीं है। छोटे बच्चों वाले परिवार में पत्नी के लिए यह और भी बड़ी चुनौती होती है, क्योंकि उसे न केवल अपने पति के लिए, बल्कि अपने बच्चों के लिए भी नाश्ता तैयार करना होता है। फिर भी, आज का अंश—नीतिवचन 31:15—इस बात की पुष्टि करता है कि एक नेक स्त्री "अभी रात रहते ही उठ जाती है... ताकि अपने परिवार के लिए भोजन तैयार कर सके।" इस पद के संबंध में, डॉ. पार्क यून-सन ने निम्नलिखित टिप्पणी की: "...वह स्वयं अपने परिवार के लिए भोजन तैयार करती है और परोसती है। इस प्रकार, परिवार की मेज़ बड़े ही यत्न और समर्पण के साथ तैयार की जाती है—एक ऐसा स्थान जहाँ पारिवारिक जीवन की गर्माहट और आनंद बसता है।" इसका अर्थ यह है कि एक नेक स्त्री, अपने परिवार के प्रति प्रेम के कारण, सुबह तड़के ही प्रसन्न हृदय से नाश्ता तैयार करने के लिए उठ जाती है। दूसरे शब्दों में, वह अपने घरेलू कर्तव्यों का पूरी लगन से पालन करती है।

(3) एक गुणवान स्त्री अपने उद्यम को विकसित करती है।

कृपया आज के पाठ, नीतिवचन 31:15b–19 पर ध्यान दें: “...अपनी दासियों को काम सौंपती है; वह एक खेत का मुआयना करती है और उसे खरीद लेती है, और अपने हाथों की कमाई से, वह एक दाख की बारी लगाती है; वह अपनी कमर को शक्ति से कसती है और अपनी भुजाओं को मज़बूत करती है; वह समझती है कि उसका माल लाभदायक है, और उसका दीपक रात में बुझता नहीं; वह अपने हाथ तकुए की ओर बढ़ाती है, और उसकी उंगलियाँ चरखे को थामती हैं” [(आधुनिक लोगों के लिए बाइबल) “...वह अपनी दासियों को काम सौंपती है, एक खेत का मुआयना करने बाहर जाती है, उस पर ध्यान से विचार करती है, और फिर उसे खरीद लेती है; अपनी कमाई के पैसों से, वह एक दाख की बारी स्थापित करती है, हमेशा मज़बूत, मेहनती और परिश्रमी बनी रहती है। वह पहचानती है कि उसका काम लाभदायक है, देर रात तक परिश्रम करती है, और स्वयं चरखा

चलाकर धागा निकालती है और कपड़ा बुनती है"]। इन वचनों से, हम देख सकते हैं कि वह गुणवान स्त्री केवल घर के काम-काज ही नहीं करती थी और न ही अकेले छोटे पैमाने पर उत्पादन के काम में लगी रहती थी; बल्कि, वह अपनी दासियों के साथ मिलकर काम करती थी, जिन्हें वह विशिष्ट कार्य सौंपती थी। यह देखते हुए कि यह गुणवान स्त्री अपनी दासियों को निर्देश देती थी कि उन्हें कौन से काम करने हैं, इससे पता चलता है कि उसमें नेतृत्व करने की एक विशिष्ट क्षमता थी। इसके अलावा, यह देखकर कि वह "एक खेत का मुआयना करती है और उसे खरीद लेती है, और अपने हाथों की कमाई से, वह एक दाख की बारी लगाती है" (पद 16), मेरा मानना है कि उसने घर के भीतर छोटे पैमाने पर उत्पादन से जो पैसा कमाया, उसे जमा किया, और फिर—(पार्क यून-सन के अनुसार) "गहराई से विचार करने" के बाद—एक दाख की बारी खरीदी और स्वयं उसकी खेती की। यह दर्शाता है कि वह बुद्धिमान और गुणवान स्त्री न केवल अपने घरेलू मामलों के प्रबंधन में मेहनती है, बल्कि अपने स्वयं के व्यावसायिक प्रयासों को संचालित करने में भी उतनी ही मेहनती है, जिससे वह लगातार अपने उद्यम का विस्तार करती रहती है। डॉ. पार्क यून-सन ने इसे इस प्रकार कहा है: "वह अपनी आय बढ़ाने के लिए अपने उत्पादों को दूर-दराज के स्थानों पर निर्यात करने का प्रयास करती है, जिससे वह अपने उद्यम का विकास और विस्तार करती है (पद 17–19)।" ऐसी गुणवान स्त्री के पास मज़बूत वित्तीय सक्षमता होती है, एक ऐसी क्षमता जिसकी जड़ें उसकी अपनी कड़ी मेहनत और लगन में निहित होती हैं (पार्क यून-सन)। [(पद 17, *The Bible for Modern People*) "वह हमेशा मज़बूत और मेहनती होती है, और बड़े उत्साह से काम करती है।"] इसलिए, "उसे लगता है कि उसका काम फ़ायदेमंद है, और वह देर रात तक मेहनत करती है" (पद 18, *The Bible for Modern People*)। मेरा मानना है कि ऐसा ही एक फ़ायदेमंद काम ठीक वही है जिसका ज़िक्र आज के पाठ के पद 24 में किया गया है: "वह कपड़े और कमरबंद बनाती है, और उन्हें व्यापारियों को बेचती है" (पद 24, *The Bible for Modern People*)। यह देखते हुए कि आज की युवा महिलाएँ ऑनलाइन कपड़े कैसे बेचती हैं, मेरा मानना है कि एक समझदार और नेक महिला के लिए यह पूरी तरह से मुमकिन है कि वह पूरी लगन से एक ऑनलाइन बिज़नेस चलाए—जैसे कपड़े बेचना—और साथ ही अपने घर-गृहस्थी के कामों को भी बहुत अच्छे से संभाले।

प्यारे दोस्तों, एक समझदार और नेक महिला यह पहचान लेती है कि उसके काम फ़ायदेमंद हैं या नहीं। इसलिए, वह बेकार के कामों में समय बर्बाद करने से बचती है और इसके बजाय पूरे उत्साह और लगन से फ़ायदेमंद कामों में जुट जाती है। इसके अलावा, एक मेहनती और नेक महिला में पैसे-रुपये की अच्छी समझ होती है। इसलिए, वह अपनी कमाई को बचाती है और सोच-समझकर खर्च करती है; अपनी कड़ी मेहनत से वह अपने बिज़नेस को बढ़ाती और फैलाती है। हमारा चर्च—जो यीशु, हमारे दूल्हे की दुल्हन है—ठीक ऐसा ही होना चाहिए। हमें यह पहचानना होगा कि परमेश्वर की नज़रों में असल में क्या फ़ायदेमंद है, और पूरे उत्साह और लगन से प्रभु का काम करके उसके राज्य का विस्तार करना होगा।

तीसरी बात, एक नेक महिला गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करती है।
कुछ समय पहले (8 मई, 2018 को), मैंने *Korea Daily* (JoongAng Ilbo) के ऑनलाइन संस्करण में एक लेख पढ़ा, जिसका शीर्षक था, “दस में से सात ईसाई अपने गरीब पड़ोसियों की मदद करते हैं।” उस लेख के अनुसार, पोलिंग संस्था बार्ना रिसर्च ने हाल ही में एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसका शीर्षक था “वैश्विक गरीबी के बारे में उम्मीद रखने के 3 कारण।” बार्ना रिसर्च के अनुसार, दस में से सात सक्रिय ईसाइयों (75%) ने जवाब दिया कि उन्होंने “गरीब लोगों या कम आय वाले परिवारों को खाना दिया है।” यहाँ, “सक्रिय ईसाई” का मतलब उन “चर्च सदस्यों से है जो नियमित रूप से धार्मिक गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं और यह मानते हैं कि वे अपने रोज़मर्रा के जीवन में अपने विश्वास को सक्रिय रूप से जीते हैं।” रिपोर्ट में बताया गया है कि "ईसाइयों ने सभी श्रेणियों में आम वयस्क आबादी की तुलना में ज़्यादा प्रतिक्रिया दर दिखाई, जिनमें शामिल हैं: 'कपड़े, फ़र्नीचर या पैसे जैसी चीज़ें दान करना (72% बनाम 64% आम वयस्कों के लिए)'; 'गरीबों के लिए प्रार्थना करने के लिए खास समय निकालना (62% बनाम 33%)'; 'अपने स्थानीय समुदाय में कम आय वाले निवासियों की मदद के लिए स्वेच्छा से काम करना (47% बनाम 29%)'; 'अमेरिका के भीतर किसी सेवा संगठन के साथ स्वेच्छा से काम करना (39% बनाम 24%)'; और 'गरीबों की मदद के लिए विदेश यात्रा करना (10% बनाम 6%)।'" बार्ना रिसर्च ने गरीबी की समस्याओं के समाधान के बारे में आशा बनाए रखने के लिए निम्नलिखित कारण बताए हैं: ▶ सक्रिय ईसाई अमेरिका और दुनिया भर में कई तरह के परोपकारी कामों में लगे हुए हैं; ▶ जो लोग मानते हैं कि गरीबी को हल करने के लिए सक्रिय भागीदारी ज़रूरी है, वे अन्य सामाजिक मुद्दों में भी काफ़ी दिलचस्पी

दिखाते हैं; और ▶ जो लोग गरीबी को मिटाने के बारे में आशावान रहते हैं, वे समाधान खोजने में ज़्यादा सक्रिय रूप से भाग लेते हैं (स्रोत: इंटरनेट)। आज के अंश, नीतिवचन 31:20 में, राजा लेमुएल की माँ अपने बेटे, राजा लेमुएल को एक गुणी स्त्री के बारे में इस तरह बताती हैं: “वह ज़रूरतमंदों की ओर अपने हाथ बढ़ाती है और गरीबों की ओर अपने हाथ फैलाती है” [(आधुनिक कोरियाई संस्करण) “वह गरीबों और दुर्भाग्यशालियों की मदद करती है”]। यहाँ, वाक्यांश “अपने हाथ फैलाती है” का अर्थ है “दयालुता से उन गरीबों को भी भौतिक सहायता भेजना जो बहुत दूर हैं” (मैथ्यू हेनरी, पार्क यून-सन)। इसका मतलब है कि वह गुणी स्त्री न केवल अपने आस-पास के गरीबों को दयालु सहायता देती है, बल्कि उन लोगों को भी परोपकारी सहायता भेजती है जो दूर हैं। वह न केवल आस-पास के गरीबों को, बल्कि दूर के लोगों को भी इतनी दयालु सहायता क्यों देती है? मेरा मानना है कि इसका कारण यह है कि उसके पास एक ऐसा दिल है जो गरीबों के लिए करुणा महसूस करता है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि उस गुणी स्त्री के दिल में बेसहारा लोगों के लिए दया है, इसलिए वह उन्हें दयालु सहायता देती है।

व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं इस “करुणा भरे दिल” के बारे में सोचता हूँ, तो मैं हेनरी नौवेन के “करुणा” पर लिखे लेखों को नहीं भूल पाता। उन्होंने समझाया कि "करुणा" के लिए मूल हिब्रू शब्द *रहामीम* है, एक ऐसा शब्द जो विशेष रूप से याहवे (ईश्वर) के "गर्भ" को संदर्भित करता है। परिणामस्वरूप, जब मैं इंटरनेट पर "गर्भ" के बारे में जानकारी खोज रहा था, तो मुझे इसकी तीन अलग-अलग विशेषताएं मिलीं; फिर मैंने इन तीन विशेषताओं और ईश्वर की करुणा के बीच तुलना की:

(1) जिस तरह एक गर्भ "बाहरी पदार्थ" को अस्वीकार नहीं करता, बल्कि उसे अपना लेता है, उसी तरह पिता परमेश्वर भी हमें—पापी होते हुए भी—अस्वीकार नहीं करते, बल्कि कृपापूर्वक हमें स्वीकार करते हैं और अपनाते हैं।

(2) जिस तरह एक गर्भ, प्लेसेंटा (अपरा) के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने हेतु, प्लेसेंटा की रक्त वाहिकाओं के प्रवेश को स्वीकार करता है, उसी तरह पुत्र परमेश्वर—यीशु—हम पापियों के भीतर "पाप के प्रवेश" को भी स्वीकार करते हैं; अर्थात, हमारे पापों का बोझ स्वयं उठाकर, उन्होंने क्रूस पर अपनी मृत्यु के

माध्यम से हमें "जीवन की रोटी" प्रदान की। इसलिए, जो कोई भी यीशु पर—जो स्वयं यह रोटी हैं—अपना विश्वास रखता है, उनके लिए अब वह "पाप के प्रवेश" को रोकने के लिए हस्तक्षेप करते हैं, जिससे "पाप की धारा" कट जाती है, ताकि वह अब किसी के पूरे शरीर और आत्मा को दूषित न कर सके।

(3) इसके अलावा, जिस तरह गर्भाशय की परत, गर्भ में शिशु के विकास के दौरान कोशिकाओं की स्वाभाविक मृत्यु को रोकती है—और जिस तरह गर्भावस्था के अंतिम चरणों में गर्भ स्वयं पतला और नरम हो जाता है ताकि भ्रूण माँ के पेट की दीवार के सहारे स्वतंत्र रूप से हिल-डुल सके—उसी तरह पवित्र आत्मा हमें एक जीवंत आध्यात्मिक जीवन जीने में सक्षम बनाते हैं, जिससे हम प्रभु के भीतर पूर्ण स्वतंत्रता के साथ आगे बढ़ सकें और कार्य कर सकें।

इस प्रकार, जिनके हृदय में ऐसी करुणा होती है, वे गरीबों और कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों की सहायता हेतु दान-पुण्य के कार्यों में संलग्न होंगे; वे ऐसा मत्ती 6:2–4 में पाए गए यीशु के वचनों की आज्ञा मानते हुए करेंगे: "इसलिए, जब तुम ज़रूरतमंदों को दान दो, तो तुरहियाँ बजाकर उसका ढिंढोरा न पीटो, जैसा कि कपटी लोग आराधनालयों और सड़कों पर करते हैं, ताकि दूसरे लोग उनका सम्मान करें। मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्हें..." "...उन्हें अपना प्रतिफल पहले ही मिल चुका है। लेकिन जब तुम ज़रूरतमंदों को दान दो, तो अपने बाएँ हाथ को यह पता न चलने दो कि तुम्हारा दायाँ हाथ क्या कर रहा है, ताकि तुम्हारा दान गुप्त रहे। तब तुम्हारा पिता, जो गुप्त में किए गए कार्यों को देखता है, तुम्हें उसका प्रतिफल देगा।" एक दिलचस्प बात यह है कि जो लोग दया दिखाते हैं, वे न केवल गरीबों को दान देकर परोपकार के काम करते हैं, बल्कि वे परमेश्वर से प्रार्थना भी करते हैं। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति गरीबों पर दया दिखाता है, वह परोपकार के कामों के ज़रिए अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है, और साथ ही परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में एक विश्वासपूर्ण प्रार्थना-जीवन भी बनाए रखता है। इसी कारण से, मत्ती 6 में, 2 से 4 पदों में "ज़रूरतमंदों को दान देने" के बारे में बात करने के बाद, यीशु ने 5 से 15 पदों में "प्रार्थना" के बारे में बात की। इसका एक बेहतरीन उदाहरण कुरनेलियुस है, जो एक भक्त व्यक्ति था और जिसका वर्णन प्रेरितों के काम अध्याय 10 में किया गया है। प्रेरितों के काम 10:2 पर नज़र डालें: "वह एक भक्त व्यक्ति था और अपने पूरे परिवार के साथ परमेश्वर का भय मानता था; वह लोगों को उदारतापूर्वक दान देता था, और हमेशा परमेश्वर से प्रार्थना करता था।" और एक स्वर्गदूत के माध्यम से, परमेश्वर ने कुरनेलियुस से बात की, और कहा: "उसने कहा, 'कुरनेलियुस! परमेश्वर ने तेरी प्रार्थना सुन ली है और

तेरे परोपकार के कामों को याद रखा है'" (पद 31)। संक्षेप में, इसका अर्थ यह है कि जिस तरह की ईश्वरीयता को परमेश्वर याद रखता है, उसमें प्रार्थना और परोपकार के काम—दोनों शामिल होते हैं।

आज के अंश—नीतिवचन 31:20—में, एक गुणी स्त्री अपने घर के काम-काज को बढ़ाने के लिए (पद 15b–19) लगन से काम करती है (पद 13) और मेहनत से परिश्रम करती है (पद 17); फिर भी, वह न केवल अपने घर के भीतर अपने प्यारे परिवार के लिए भोजन का प्रबंध करती है (पद 14), बल्कि अपने पड़ोसियों में से गरीब और ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने और उन्हें राहत पहुँचाने के लिए भी आगे आती है। जब मैं इस गुणी स्त्री के बारे में सोचता हूँ, तो मैं उसे एक "बुद्धिमान और धनवान व्यक्ति" मानता हूँ। इसका कारण यह है कि एक बुद्धिमान और धनवान व्यक्ति प्रभु का भय मानता है (नीतिवचन 22:4; 31:30) और लगन से काम करता है; इसके अलावा, एक विनम्र रवैये के साथ, वे गरीबों की दुर्दशा को समझते हैं (29:7), उन पर दया करते हैं (भजन संहिता 72:13), और उन्हें मदद और राहत पहुँचाते हैं (नीतिवचन 28:27; 31:20)। ऐसा बुद्धिमान और धनवान व्यक्ति मन में घमंडी नहीं बनता, न ही वे अपनी आशा धन पर रखते हैं—जो स्वभाव से ही अनिश्चित है—बल्कि वे अपना भरोसा केवल परमेश्वर पर रखते हैं, जो हमें आनंद लेने के लिए उदारतापूर्वक सभी चीज़ें प्रदान करता है। इसके अलावा, बुद्धिमान और धनवान व्यक्ति एक उदार इंसान होता है जो भलाई करता है, अच्छे कामों में समृद्ध होता है, और दूसरों के साथ बांटने में आनंद पाता है (1 तीमुथियुस 6:17–19)। बाइबल, नीतिवचन 28:27 में कहती है कि जो लोग गरीबों को राहत देते हैं, उन्हें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी: "जो गरीबों को देता है, उसे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी; लेकिन जो उनसे अपनी आँखें फेर लेता है, उसे बहुत से श्राप मिलेंगे।" इसके विपरीत, बाइबल—विशेष रूप से नीतिवचन 11:24—कहती है: "एक व्यक्ति उदारतापूर्वक देता है, फिर भी और अधिक धनवान होता जाता है; दूसरा वह चीज़ रोक लेता है जो उसे देनी चाहिए, और केवल अभाव ही झेलता है।"

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारा कलीसिया भी एक ऐसा कलीसिया बने जो परोपकार का अभ्यास करे, ठीक वैसे ही जैसे अंतियोख का कलीसिया करता था। जब उनके यहूदी भाई-बहन एक गंभीर अकाल के कारण कष्ट झेल रहे थे, तो अंतियोख के कलीसिया ने—जिसका हर सदस्य अपनी-अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार स्वेच्छा से दान दे रहा था—राहत के लिए चंदा इकट्ठा किया और उसे बरनबास और पौलुस के माध्यम से यरूशलेम के

कलीसिया के प्राचीनों (बुज़ुर्गों) के पास भेज दिया (प्रेरितों के काम 11:29–30)। अगर हमारा चर्च, अंताकिया के उदाहरण का पालन करते हुए, न केवल अपने आस-पड़ोस के लोगों को, बल्कि दूर-दराज के मिशन क्षेत्रों में संघर्ष कर रहे चर्चों को भी भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों तरह का सहारा दे—और इस तरह प्रभु के चर्च को मज़बूत करे और ऐसे अनमोल सेवकों को तैयार करे जिनके सपने प्रभु पर केंद्रित हों—तो क्या यह उस सुंदर 'दुल्हन'—यानी चर्च—की ही तो छवि नहीं होगी, जिसका रिश्ता उसके 'दूल्हे'—यानी यीशु—के साथ तय हो चुका है?

चौथी बात, एक नेक स्त्री चिंता नहीं करती।

प्रिय मित्रों, हम इस समय एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जो चिंता करने के अनगिनत कारणों से भरी हुई है। एक ऐसी दुनिया में जहाँ हर दिन तरह-तरह की चिंताओं से भरा रहता है, हम—विश्वासी होने के नाते—यह जानते हैं कि हमें अपनी सारी चिंताएँ प्रभु पर डाल देनी चाहिए, जैसा कि 1 पतरस 5:7 में आज्ञा दी गई है; फिर भी, हम अक्सर अपनी चिंताओं का पूरा बोझ उस प्रभु को सौंपने में नाकाम रहते हैं, जो हमारी परवाह करता है। इसके बावजूद, जैसा कि यीशु ने लूका 12:22 और 29 में निर्देश दिया है, हमें इस बात की चिंता या फिक्र नहीं करनी चाहिए कि हम अपनी ज़िंदगी चलाने के लिए क्या खाएँगे या पिएँगे, और न ही इस बात की कि अपने शरीर को ढकने के लिए क्या पहनेंगे। इसका क्या कारण है?

(1) पहला कारण यह है कि "तुम में से कौन चिंता करके अपनी उम्र में एक घंटा भी बढ़ा सकता है?" (पद 25)। हमारी चिंता करने से क्या भला होता है? हमें चिंता करने से बचना चाहिए—क्योंकि इससे न तो कोई मदद मिलती है और न ही किसी तरह का कोई फ़ायदा होता है—यह कुछ ऐसा है जो हम बस कर ही नहीं सकते।

(2) दूसरा कारण यह है कि हम "छोटे से छोटा काम" भी पूरा करने में असमर्थ हैं (पद 26)। मेरी समझ में यह नहीं आता कि हम "दूसरी बातों" की चिंता क्यों करते हैं, जबकि हम "इतनी छोटी-मोटी चीज़ों" का भी इंतज़ाम नहीं कर सकते (पद 26, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

(3) तीसरा कारण यह है कि "ये सब वे चीज़ें हैं जिन्हें पाने के लिए अविश्वासी लोग ज़ोर लगाते हैं" (मत्ती 6:32, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

(4) चौथा कारण यह है कि हमारे "पिता को अच्छी तरह मालूम है कि तुम्हें [हमें] इन सब चीज़ों की ज़रूरत है" (लूका 12:30, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। चूँकि परमेश्वर पिता को ठीक-ठीक पता है कि हमें किस चीज़ की ज़रूरत है, इसलिए हमें चिंता नहीं करनी चाहिए; फिर भी, हम चिंता करते हैं—बार-बार। इसका कारण यह है कि हम "कम विश्वास वाले लोग" हैं (पद 28)। क्योंकि हम कम विश्वास वाले लोग हैं, इसलिए हम—आज भी और कल भी—इस बात की चिंता करते हैं कि अपने जीवन को बनाए रखने के लिए हम क्या खाएँगे और अपने शरीर को ढकने के लिए क्या पहनेंगे (पद 22)।

तो फिर, हमें क्या करना चाहिए? हमें कौओं पर विचार करना चाहिए (पद 24)। हमें आकाश के पक्षियों को देखना चाहिए (मत्ती 6:26)। मुझे यह अभी भी स्पष्ट रूप से याद है। हमारी इंग्लिश मिनिस्ट्री के लिए हाल ही में पहाड़ों में आयोजित एक संयुक्त रिट्रीट के दौरान—एक सुबह मैं अपने ठहरने की जगह के बाहर, पिछले बरामदे में रखी एक कुर्सी पर बैठा था। जब मैं पक्षियों को उड़ते हुए, पेड़ों पर बैठते हुए और फिर से उड़ान भरते हुए देख रहा था, तो मत्ती 6:26 के शब्द मेरे मन में आए: "आकाश के पक्षियों को देखो; वे न तो बोते हैं, न काटते हैं, और न ही खलिहानों में जमा करते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?" इसलिए, जब मैं उन पक्षियों को देख रहा था और एक पल के लिए उस शास्त्र पर मनन कर रहा था, तो मेरे मन में यह विचार आया: 'यदि मेरा स्वर्गीय पिता पक्षियों की भी परवाह करता है, तो वह मेरी परवाह करने में कैसे असफल हो सकता है—मैं वह व्यक्ति हूँ जिसे वह उन पक्षियों की तुलना में कहीं अधिक कीमती, मूल्यवान और सम्माननीय मानता है?' वास्तव में, अब तक अपने पूरे जीवन में, मेरे स्वर्गीय पिता ने मेरी परवाह की है; उसने मुझे मेरी रोज़ की रोटी दी है—और इतनी प्रचुरता से दी है—कि भोजन की कमी के कारण मुझे कभी एक बार भी भूखा नहीं रहना पड़ा। इसके अलावा, मेरे स्वर्गीय पिता ने मुझे कपड़े भी दिए हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि पहनने के लिए कुछ न होने के कारण मुझे कभी नंगा न घूमना पड़े। इसके विपरीत, परमेश्वर ने मुझे भोजन और कपड़ों की प्रचुरता का आनंद लेते हुए जीने दिया है—जो मेरे हक से कहीं अधिक है। फिर भी, इन सबके बावजूद, मैं अभी भी खुद को विभिन्न बातों की चिंता करते हुए पाता हूँ। दूसरों के साथ

अपने संबंधों में, मैं इस बात की चिंता करता हूँ कि क्या कहूँ और कैसे कहूँ। मैं सांसारिक मामलों की भी चिंता करता हूँ, यह सोचते हुए कि मैं अपनी पत्नी को कैसे खुश कर सकता हूँ। मैं कलीसिया से संबंधित मामलों के बारे में चिंता और बेचैनी महसूस करता हूँ। मुझे चिंता होती है कि कलीसिया के कुछ सदस्य कलीसिया से या यहाँ तक कि यीशु से भी दूर हो सकते हैं। सबसे बढ़कर, मुझे इस बात की चिंता होती है कि कहीं मैं खुद शैतान के प्रलोभनों का शिकार न हो जाऊँ। इस प्रकार, मेरा हृदय "जीवन की चिंताओं" के कारण सुस्त पड़ गया है; और ऐसी "सांसारिक चिंताओं" में उलझकर, मैं परमेश्वर के वचन को दब जाने देता हूँ, जिससे मैं कभी भी फल नहीं दे पाता। हालाँकि मैं जानता हूँ कि मुझे ऐसा नहीं होना चाहिए, फिर भी मैं आज भी हर तरह की बातों को लेकर चिंता करता रहता हूँ। मैं न केवल आज की चिंताओं के बारे में सोचता हूँ, बल्कि कल की घटनाओं—यानी भविष्य—के बारे में भी चिंता करता हूँ, जो अभी तक घटित भी नहीं हुई हैं। इस स्थिति में, प्रभु मुझसे ये शब्द कहते हैं: "इसलिए कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की चिंता कल करेगा..." ...और न ही व्याकुल हो; क्योंकि हर दिन की अपनी मुसीबतें काफी होती हैं" (मत्ती 6:34)।

कृपया आज के वचन पर ध्यान दें, नीतिवचन 31:21–22: "उसे अपने परिवार के लिए बर्फ़ का कोई डर नहीं है, क्योंकि उन सभी ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए हैं। वह अपने बिस्तर के लिए चादरें बनाती है;" "उसने बढ़िया मलमल और बैंगनी कपड़े पहने हैं" [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "उसने अपने पूरे परिवार को पहनाने के लिए गर्म कपड़े तैयार कर रखे हैं, इसलिए जब सर्दियाँ आती हैं तो उसे कोई चिंता नहीं होती।"] ["वह अपने बेडरूम को खूबसूरती से सजाती है और प्यारे, बढ़िया रेमी कपड़े और बैंगनी चोगे पहनती है।"] इस अंश के आधार पर, बाइबल हमें बताती है कि उस नेक स्त्री ने अपने घर के सदस्यों को गहरे लाल रंग के कपड़े पहनाए—इस हद तक कि उसे उनके बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी—जबकि उसने खुद बढ़िया मलमल और बैंगनी कपड़े पहने थे। यहाँ, गहरे लाल और बैंगनी, दोनों तरह के कपड़ों को महँगा पहनावा माना जाता था (*बाइबल नॉलेज कमेंट्री* के अनुसार)। इससे हम यह समझ सकते हैं कि वह नेक स्त्री इस तरह से रहती थी कि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके परिवार के सदस्यों को किसी भी चीज़ की कमी न हो, बल्कि वे खुशहाली में रहें। इस उद्देश्य के लिए, उस नेक स्त्री ने लगन से काम किया (पद 13) और अपने घरेलू उद्यम को बढ़ाया (पद 15b–19), जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उसके परिवार के सदस्यों को कभी भी अपनी आजीविका के बारे में चिंता न करनी पड़े (पद 21–22)। उसकी सफलता ऐसी थी कि उसका पति—जिसे अपनी नेक पत्नी

पर पूरा भरोसा था—यह कह सका कि उसे "किसी भी चीज़ की कमी नहीं है" (पद 11; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। अंततः, उस नेक स्त्री को अपने घर के सदस्यों के बारे में चिंता करने का कोई कारण इसलिए नहीं था क्योंकि उसने लगन से अपने घरेलू मामलों की देखरेख की, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उसके परिवार को कभी भी आर्थिक असुरक्षा का सामना न करना पड़े ["वह अपने घर के मामलों पर नज़र रखती है और आलस की रोटी नहीं खाती" (पद 27; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)]. इस प्रकार, आज का हमारा पाठ—नीतिवचन 31:25 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)—कहता है: "उसने शक्ति और गरिमा के वस्त्र पहने हैं, और उसे भविष्य के बारे में कोई चिंता नहीं है।"

साथियों, आइए हम चिंता न करें। विशेष रूप से, हम माता-पिता को अपनी चिंताएँ अपने बच्चों के सामने ज़ाहिर नहीं करनी चाहिए। इसका कारण यह है कि जब माता-पिता अपनी चिंताएँ अपने बच्चों के सामने दिखाते हैं, तो बच्चे भी चिंतित हो जाते हैं। इसके बजाय, हमें अपने बच्चों को यह दिखाना चाहिए कि प्रार्थना के द्वारा अपनी सारी चिंताएँ प्रभु को सौंप देना कैसा होता है। भले ही हमारा विश्वास कमज़ोर हो—और भले ही हम अपने बच्चों के सामने अपनी चिंताओं को छिपाने या नकारने की हद तक न जाएँ—फिर भी हमें, शास्त्रों के अनुसार, उन्हें यह दिखाना चाहिए कि हम अपनी सारी चिंताएँ प्रभु को सौंप रहे हैं। लगभग चार साल पहले (2015 में), मैंने अनुग्रह का एक क्षण अनुभव किया: मुझे एहसास हुआ कि परमेश्वर, जो मेरे कमज़ोर विश्वास और मेरी चिंताओं से पूरी तरह अवगत थे, उन्होंने मुझे ठीक वही दिया जिसकी मुझे ज़रूरत थी—और वह भी ऐसे तरीके से जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। उस क्षण, मुझे एक झलक मिली—भले ही वह कितनी भी छोटी क्यों न हो—कि परमेश्वर पिता मुझसे कितना गहरा प्रेम करते हैं, और मैंने उन्हें अपने हृदय से धन्यवाद दिया। तब मैंने स्वयं को देखा और पाया कि मैं एक ऐसा व्यक्ति था जो, यह जानते हुए भी कि मुझे हर गुज़रते पल में विश्वास के साथ जीना चाहिए, फिर भी अपनी आँखों से दिखाई देने वाली चीज़ों के आधार पर जीने की कोशिश करता रहा; विश्वास में चुपचाप प्रतीक्षा करने—प्रार्थना करने और परमेश्वर के कार्य की आशा रखने—के बजाय, मैंने अपनी ही समझ पर भरोसा किया, आवेग में आकर काम किया, परिणामों का अनुमान लगाने की कोशिश की, और स्वयं को चिंता में डूब जाने दिया। अब मैं उस तरह से जीना नहीं चाहता। अब मैं अपने दिन चिंता और फिक्र में बिताते हुए नहीं गुज़ारना चाहता। इसके बजाय, मेरी इच्छा है कि मैं अपनी सारी चिंताएँ प्रभु को सौंप दूँ और विश्वास का जीवन जीऊँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे कलीसियाई परिवार का प्रत्येक सदस्य अपनी सारी

चिंताएँ, विश्वास के साथ, यीशु—हमारे दूल्हे—को सौंप दे। आइए अब हम अपनी ही समझ पर भरोसा न करें; इसके बजाय, आइए हम अपना पूरा भरोसा और निर्भरता प्रभु—हमारे दूल्हे—पर रखें और सारी चिंताओं को एक तरफ हटा दें।

पाँचवीं बात, एक गुणवती स्त्री अपने पति को दूसरों से सम्मान प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

साथियों, आप किस प्रकार की स्त्री को एक बुद्धिमान पत्नी मानते हैं? सुंगशिन महिला विश्वविद्यालय की एक मनोविज्ञान प्रोफेसर द्वारा दो दशकों की युगल परामर्श (couples counseling) के दौरान संकलित प्रमुख अंतर्दृष्टियों में से, एक उल्लेखनीय भाग "सात बातें जो पति अपनी पत्नियों से चाहते हैं" को रेखांकित करता है। इनमें सबसे प्रमुख इच्छा यह है कि उनकी पत्नियाँ "उन्हें सम्मान दें और उनके आत्म-सम्मान को बढ़ाएँ।" एक पति को सबसे ज़्यादा जो बात बर्दाश्त नहीं होती, वह है अपनी पत्नी द्वारा नज़रअंदाज़ किए जाने का एहसास। खासकर, पतियों को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आती जब उनकी पत्नियां उनकी तुलना दूसरे पुरुषों से करती हैं—विशेष रूप से, दूसरी महिलाओं के पतियों से। ऐसा कहा जाता है कि जब महिलाएं अपने पतियों का मूल्यांकन करती हैं, तो तुलना के लिए वे जिन आम बातों का सहारा लेती हैं, उनमें शामिल हैं: उनकी तनख्वाह, उनके दिए गए तोहफ़े, छुट्टियों की योजनाएं, वे अपने ससुराल वालों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, और वे घर के कामों में कितनी मदद करते हैं। प्रोफेसर चे सलाह देते हैं कि अपने पतियों की तुलना दूसरे पुरुषों से करके उनके व्यवहार को बदलने की कोशिश करने के बजाय, महिलाओं को अपने पतियों के मौजूदा कामों पर ध्यान देना चाहिए—उन कामों की सराहना करनी चाहिए जो वे अच्छे से करते हैं, और जिन व्यवहारों की वे इच्छा रखती हैं, उनके लिए स्पष्ट अनुरोध करने चाहिए। मैं आपके साथ 22 मई, 2005 को लिखा अपना एक लेख साझा करना चाहूंगा, जिसका शीर्षक था “समझदार पत्नी”: “एक समझदार पत्नी वह है जो अपने पति के अधीन रहती है—जो उसका आदर या सम्मान करती है। हालाँकि, मुझे लगता है कि इस आधुनिक युग में, ‘अधीनता’ या ‘आदर’ जैसे शब्द वैवाहिक संबंधों में शायद ही कभी देखने को मिलते हैं। यद्यपि परमेश्वर के अपरिवर्तनीय वचन को हमारे लगातार बदलते समय पर लागू किया जाना चाहिए, मुझे चिंता है कि कई ईसाई जोड़े—और साथ ही अविवाहित लोग भी—उस वचन के शाश्वत, अटल सिद्धांतों की अनदेखी कर रहे हैं; इसके बजाय, वे

इस बदलते युग की अनियंत्रित धाराओं में बहते जा रहे हैं। एक पत्नी का उचित कर्तव्य है कि वह प्रभु के प्रति आदर रखते हुए अपने पति के अधीन रहे, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं प्रभु के अधीन रहती (कुलुस्सियों 3:18); इसके अलावा, उसका महान ईश्वरीय बुलावा यह है कि वह एक ऐसा माध्यम बने जिसके द्वारा एक अविश्वासी पति भी उद्धार पा सके। फिर भी, मुझे डर है कि आज कई पत्नियां इस बुलावे को ईमानदारी से पूरा करने में असफल हो रही हैं। इसके अलावा, जहाँ एक पत्नी के लिए अपने पति का सम्मान करना—और इस प्रकार उसे मज़बूत बनाना—एक नेक काम है, वहीं मैं देखता हूँ कि आजकल कई पत्नियां अपने पतियों की अनदेखी करने लगती हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। हे समझदार पत्नियों, तुम ऐसी बनो जो अपने पतियों के अधीन रहकर और उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करके अपने घरों को खूबसूरती से संवारती हैं!"

कृपया आज के शास्त्र-वचन, नीतिवचन 31:23 की ओर देखें: "उसका पति नगर के फाटकों पर जाना जाता है, जहाँ वह देश के बुजुर्गों के बीच बैठता है" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "और उसका पति भी एक नेता के रूप में जाना जाता है और उसका बहुत सम्मान किया जाता है"]। इस अंश से, हम यह समझ सकते हैं कि एक "गुणी स्त्री" वास्तव में एक "बुद्धिमान स्त्री" होती है; क्योंकि वह अपने पति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है—विशेष रूप से उसे "शहर के फाटकों पर देश के बड़ों के बीच बैठने" (मैकआर्थर) के योग्य बनाकर। आपको शायद आश्चर्य हो कि इसमें इतनी खास बात क्या है; हालाँकि, ऐसा कहा जाता है कि उन दिनों, "शहर का फाटक" वह स्थान होता था जहाँ नेता—चाहे वे किसी शहर के हों या किसी प्रांतीय क्षेत्र के—स्थानीय निवासियों से जुड़े मामलों पर निर्णय लेने के लिए एकत्रित होते थे (अय्यूब 31:21; पार्क यून-सन)। यह तथ्य कि इस "गुणी स्त्री" का पति वहाँ "देश के बड़ों के बीच" बैठता था, यह दर्शाता है कि वह केवल एक आम आदमी नहीं था, बल्कि उसे एक "प्रमुख हस्ती" के रूप में पहचाना जाता था (नीतिवचन 31:23; *मॉडर्न मैन्स बाइबिल*)। क्या इस गुणी स्त्री का पति उसकी सहायता के बिना नेतृत्व के ऐसे उच्च पद तक पहुँच पाता? उसकी गुणी पत्नी के सहयोग के बिना उसकी सफलता निस्संदेह असंभव होती। इस प्रकार, गुणी स्त्री वह है जो अपने पति को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करने में सहायता करती है जिसे दूसरों से पहचान और सम्मान, दोनों प्राप्त होते हैं (पद 23b)। मेरी विवाहित बहनों के लिए: आपको कैसा लगेगा यदि आपको यह एहसास हो कि आपका पति—जब वह दुनिया में बाहर निकलता है—तो न केवल अपनी सफलता के शिखर को छू रहा है,

बल्कि उसके आस-पास के लोगों द्वारा उसे पहचाना और सम्मानित भी किया जा रहा है? क्या इससे आपका हृदय आनंद से भर नहीं जाएगा?

आज सुबह, विभिन्न ईसाई वेबसाइटों को देखते समय, मुझे एक बहुत ही दिलचस्प लेख मिला। यह प्रसिद्ध उपदेशक, चार्ल्स स्पर्जन की पत्नी के बारे में था। लेख का शीर्षक था, "स्पर्जन की पत्नी के बारे में 3 बातें जो आप नहीं जानते थे।" इन तीन बिंदुओं में से पहला यह था कि स्पर्जन की पत्नी, सुज़ाना को विवाह के संबंध में कुछ कठिन सबक सीखने पड़े। एक ऐसे पति के साथ रहते हुए, जिस पर परमेश्वर के राज्य, प्रभु के कार्य और सुसमाचार के प्रचार की immense (अत्यधिक) ज़िम्मेदारी थी, उसे—एक कष्टदायक प्रक्रिया के माध्यम से—यह सीखना पड़ा कि एक पत्नी के रूप में, वह कभी भी अपने पति के हृदय में प्रथम स्थान पाने की अपेक्षा नहीं कर सकती थी। इसलिए, उन्होंने यह पक्का करने का दृढ़ संकल्प लिया कि वे अपने पति की परमेश्वर के राज्य के लिए की जाने वाली सेवा या प्रभु के लिए किए जाने वाले काम में कभी बाधा नहीं बनेंगी। दूसरी बात, अपनी बीमारी और दुख-तकलीफ़ों के ज़रिए, श्रीमती सुज़ाना को यह एहसास हुआ कि परमेश्वर उनके चरित्र को गढ़ रहे हैं, और उन्हें अपने और भी करीब ला रहे हैं। उन्हें न केवल अपने पति का साथ देना पड़ा, जब वे डिप्रेशन और बीमारी से जूझ रहे थे, बल्कि उन्हें खुद भी गंभीर शारीरिक बीमारियों का सामना करना पड़ा। फिर भी, वे इस विश्वास पर कायम रहीं कि परमेश्वर ठीक उनकी इसी टूटन के ज़रिए उनके चरित्र को आकार दे रहे हैं। इसके अलावा, उनका मानना था कि उनकी शारीरिक पीड़ा उन्हें प्रभु के साथ और भी गहरे जुड़ाव में ले जाने का काम करती है। तीसरी बात, श्रीमती सुज़ाना ने एक ऐसी सेवा (ministry) शुरू की जिसकी पहुँच पूरी दुनिया तक थी। उन्होंने "द बुक फंड" नाम से एक चैरिटी संस्था बनाई, जिसके ज़रिए उन्होंने ज़रूरतमंद पादरियों को 3,058 धर्मशास्त्रीय किताबें और अलग-अलग तरह के ग्रंथों की 71,000 प्रतियाँ बांटीं (ऑनलाइन स्रोतों के अनुसार)। मेरा मानना है कि ठीक इसी वजह से—क्योंकि उनके पास इतनी समझदार पत्नी थी, एक ऐसी महिला जिसका विश्वास अनुकरणीय था—उनके पति, पादरी स्पर्जन, इतने प्रभावशाली सेवक बन पाए, और प्रभु के चर्च और परमेश्वर के राज्य के लिए इतने महान काम कर पाए। आज के धर्मग्रंथ के अंश—नीतिवचन 31:23—की भाषा में कहें तो, नेक श्रीमती सुज़ाना ही वह थीं जिन्होंने अपने पति को एक ऐसे सेवक के रूप में स्थापित किया जो अनगिनत लोगों के आदर और प्रशंसा का पात्र बना।

एक नेक और समझदार पत्नी न केवल अपने पति का आदर करती है (इफिसियों 6:33), बल्कि वह अपने पति को दूसरों से आदर पाने में भी मदद करती है (नीतिवचन 31:23)। तो फिर, एक नेक पत्नी अपने पति को "शहर के फाटकों पर देश के बड़ों के साथ बैठने" में मदद करने और उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्थापित करने में कैसे महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है, जिसे समाज से पहचान और आदर मिले? मुझे इसका उत्तर आज के धर्मग्रंथ के अंश, नीतिवचन 31:11–12 में मिला: "उसके पति का हृदय उस पर पूरी तरह भरोसा करता है; इसलिए उसे किसी लाभ की कमी नहीं होगी। वह अपने जीवन के सभी दिनों में उसके साथ भलाई करती है, बुराई नहीं" [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) "क्योंकि ऐसी पत्नी का पति अपनी पत्नी पर भरोसा करता है, इसलिए उसे किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। ऐसी पत्नी अपने पूरे जीवन अपने पति के साथ भलाई करती है और कभी उसे नुकसान नहीं पहुँचाती"]। अपने पूरे जीवन अपने पति के साथ भलाई करके—और कभी उसके साथ बुराई न करके—एक नेक पत्नी अपने पति के मन में अपने प्रति गहरा विश्वास जगाती है। इसलिए, मेरा मानना है कि क्योंकि एक पति जो ऐसी नेक पत्नी पर भरोसा करता है, उसे "किसी चीज़ की कमी नहीं होगी" (पद 11, समकालीन कोरियाई बाइबिल), वह—अपनी पत्नी की मदद से—"शहर के फाटकों पर देश के बड़ों के साथ बैठने" और लोगों से पहचान (और आदर) पाने में सक्षम हो पाता है (पद 23)।

हाल ही में, मेरी नज़र एक लेख पर पड़ी जिसका शीर्षक था: "वह पत्नी जो अपने पति को समझने में असफल रहती है, वह पति जो शब्दों से घाव देता है।" यह लेख बताता है कि एक पति को तब गहरी निराशा होती है, जब उसे लगता है कि उसकी पत्नी उसे स्वीकार या पहचान नहीं रही है। लेखक ने आगे यह भी कहा कि जब एक पति को अपनी पत्नी से वह शक्ति नहीं मिलती, जिसकी उसे दुनिया में बाहर जाकर संघर्ष करने और सफल होने के लिए ज़रूरत होती है, तो वह हतोत्साहित हो जाता है और अपनी सारी ऊर्जा खो देता है। इसी संदर्भ में, उन्होंने यह बात कही: "पत्नियां अक्सर यह महसूस करने में असफल रहती हैं—और अक्सर इस बात को नज़रअंदाज़ कर देती हैं—कि उनके पतियों पर उनका कितना गहरा प्रभाव होता है" (इंटरनेट)। बहनों, आपको यह पहचानना होगा कि आपके पतियों पर आपका कितना गहरा प्रभाव है। मेरा मानना है कि अपने पतियों पर सकारात्मक प्रभाव डालने का सबसे प्रभावी तरीका है—परमेश्वर के वचन का पालन करना। परमेश्वर का वह खास वचन इफिसियों 5:33 में मिलता है, जो एक नेक स्त्री को यह निर्देश देता है कि वह "अपने पति का आदर करे।" इस प्रकार, एक नेक पत्नी अपने पति को इस तरह से संवारती है कि वह दूसरों की नज़रों में भी आदर के

योग्य पुरुष बन जाता है। प्यारे दोस्तों, हम—यानी कलीसिया, जो दुल्हन है—को यीशु का आदर करना चाहिए, जो हमारे दूल्हा हैं। इसलिए, हमें अपना आचरण इस तरह से रखना चाहिए जिससे दूसरे लोग भी यीशु का आदर करें। इसे हासिल करने के लिए, हमें प्रभु के वचन का पालन करना होगा। हमें आज्ञा माननी होगी, और ऐसा करते हुए, हमें इस दुनिया में अपना जीवन उस तरीके से जीना होगा जो कलीसिया—यानी यीशु की दुल्हन, हमारे दूल्हा—के लिए उचित हो। हमें ठीक वैसे ही जीना चाहिए जैसे अंताकिया की कलीसिया जीती थी, जैसा कि 'प्रेरितों के काम' की किताब में दर्ज़ है। जब हम ऐसा करेंगे, तो प्रभु—हमारे दूल्हा—का इस दुनिया के लोगों द्वारा सम्मान और आदर किया जाएगा।

अंत में—और छठी बात यह है—कि एक नेक स्त्री की ज़बान समझदारी भरी होती है।

दोस्तों, क्या आपने कभी यह कहावत सुनी है, "आपको अपनी तीन इंच की ज़बान का इस्तेमाल बहुत सावधानी से करना चाहिए"? इसका क्या मतलब है? "तीन इंच की ज़बान" मुहावरे का मतलब लगभग 10 सेंटीमीटर लंबी ज़बान से है; इसका संकेत यह है कि इस छोटे से अंग से बोले गए शब्द इतने ज़्यादा महत्वपूर्ण होते हैं कि वे किसी भी व्यक्ति की किस्मत—यहाँ तक कि उसके जीवन या मृत्यु—का भी फैसला कर सकते हैं। इसका मतलब यह है कि हालाँकि ज़बान खुद छोटी होती है (यहाँ इसे "तीन इंच" बताया गया है), लेकिन उससे निकलने वाले शब्दों के परिणाम सचमुच बहुत बड़े होते हैं। कृपया बाइबल में याकूब 3:5 देखें: "इसी तरह, ज़बान भी शरीर का एक छोटा सा अंग है, फिर भी वह बड़ी-बड़ी बातें करती है। ज़रा सोचिए कि एक छोटी सी चिंगारी पूरे जंगल में आग कैसे लगा देती है।" हमारी ज़बान से निकलने वाले शब्द कुछ लोगों को बहुत ज़्यादा दर्द, निराशा, हताशा और श्राप दे सकते हैं; वहीं दूसरों के लिए, वे आशा, हिम्मत और जीवन ला सकते हैं; और कुछ दुखद मामलों में, बिना सोचे-समझे बोला गया एक भी शब्द किसी व्यक्ति को अपनी जान लेने पर भी मजबूर कर सकता है। अगर यह बात हर किसी के लिए सच है, तो फिर हमारे—यानी यीशु में विश्वास रखने वाले मसीहियों—द्वारा बोले गए शब्द कितने ज़्यादा महत्वपूर्ण होंगे? इसीलिए नीतिवचन 18:21 हमें बताता है: "ज़बान में जीवन और मृत्यु की शक्ति होती है, और जो लोग बातें करना पसंद करते हैं, उन्हें उसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं।" नीतिवचन 15:2 पर फिर से नज़र डालें—एक ऐसा अंश जिस पर हम पहले ही मनन कर चुके हैं—बाइबल

कहती है: “बुद्धिमान की जीभ सही ढंग से ज्ञान बांटती है, लेकिन मूर्ख का मुँह मूर्खता उगलता है।” इस वचन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैंने बुद्धिमान की जीभ की चार विशेषताओं पर विचार किया:

(1) बुद्धिमान की जीभ दूसरे व्यक्ति के क्रोध को शांत करती है।

नीतिवचन 15:1 के पहले भाग को देखें: “नम्र उत्तर क्रोध को दूर करता है...” जब दूसरा व्यक्ति क्रोधित होता है, तो बुद्धिमान व्यक्ति क्रोध से जवाब नहीं देता। इसके विपरीत, जब उसे दूसरे के क्रोध का सामना करना पड़ता है, तब भी बुद्धिमान व्यक्ति आसानी से बुरा नहीं मानता (वचन 18)। ऐसे क्षणों में, वे ठीक-ठीक जानते हैं कि क्रोधित व्यक्ति को कैसे जवाब देना है। वह जवाब होता है—नम्र उत्तर देकर दूसरे व्यक्ति के क्रोध को शांत करना। दूसरे शब्दों में, बुद्धिमान व्यक्ति कोमल शब्दों का प्रयोग करके दूसरे के क्रोध को शांत करता है। इसके अलावा, बुद्धिमान व्यक्ति क्रोधित व्यक्ति के साथ धैर्य से व्यवहार करता है (25:15)। ऐसा करते समय, बुद्धिमान व्यक्ति दूसरे पक्ष को मनाने के लिए एक नम्र जीभ का उपयोग करता है, जिससे उस व्यक्ति के हृदय में छिपा क्रोध शांत हो जाता है।

(2) बुद्धिमान की जीभ अच्छी तरह से ज्ञान बांटती है।

नीतिवचन 15:2 के पहले आधे भाग को देखें: “बुद्धिमान की जीभ अच्छी तरह से ज्ञान बांटती है...” इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि बुद्धिमान की जीभ परमेश्वर के वचन को प्रभावशाली ढंग से बोलती है (पार्क यून-सन)। दूसरे शब्दों में, बुद्धिमान की जीभ परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह से बोलती है, जिससे ज्ञान फैलता है (वचन 7)। इसका कारण यह है कि बुद्धिमान की आँखें परमेश्वर के वचन को पढ़ती हैं, उनके कान ज्ञान की खोज करते हैं (नीति. 18:15), और उनका जीवन दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिए समर्पित होता है (भजन 1:2)। कहने का तात्पर्य यह है कि, क्योंकि बुद्धिमान व्यक्ति दिन-रात परमेश्वर के वचन पर मनन करता है, इसलिए उसके पास उस वचन का ज्ञान होता है और इस प्रकार वह उस ज्ञान को प्रभावशाली ढंग से दूसरों तक पहुँचाने में सक्षम होता है।

(3) बुद्धिमान की जीभ घावों को भरती है। नीतिवचन 15:4 के पहले हिस्से पर ध्यान दें: “नम्र जीभ जीवन का पेड़ है...” यहाँ, “नम्र जीभ” का मतलब है “ठीक करने वाली जीभ।” दूसरे शब्दों में, जहाँ मूर्ख के होंठ कड़े शब्द बोलते हैं जो दूसरे के दिल पर घाव करते हैं, वहीं बुद्धिमान की जीभ उन घावों को भर देती है। क्या आप ऐसी जीभ पाना नहीं चाहेंगे? बुद्धिमान की जीभ घावों को ठीक कैसे करती है? यह परमेश्वर के वचन को असरदार तरीके से बोलकर घावों को ठीक करती है (पद 2 का पहला हिस्सा)। परमेश्वर के वचन को अच्छे से बोलकर—खासकर नम्र शब्दों (नरम जवाब) के ज़रिए (पद 1 का पहला हिस्सा)—बुद्धिमान की जीभ दूसरों के ज़ख्मी दिलों को ठीक करती है। इस “ठीक करने वाली जीभ” के बारे में, डॉ. पार्क यून-सन कहते हैं कि यह सच्चाई और शांति के शब्द देती है, जिससे सुनने वाले को तसल्ली मिलती है, उनमें जान आ जाती है, और उनमें उम्मीद जागती है। ऐसे शब्दों को “नमक से सने हुए, मानो अनुग्रह से भरे हुए” बताया गया है (कुलुस्सियों 4:6) (पार्क यून-सन)। इसलिए, क्योंकि बुद्धिमान की जीभ सुनने वाले को तसल्ली देती है, उसमें नई जान डालती है, और उम्मीद जगाती है, बाइबल इसे “जीवन का पेड़” कहती है (नीतिवचन 15:4)। दूसरे शब्दों में, बुद्धिमान की जीभ जीवन के पेड़ का काम करती है जो मरती हुई आत्माओं को ठीक करती है, क्योंकि यह यीशु मसीह का प्रचार करती है—जो खुद जीवन का स्रोत हैं।

(4) बुद्धिमान की जीभ ऐसे शब्द बोलती है जो सही समय पर बोले जाते हैं।

नीतिवचन 15:23 पर विचार करें: “सही जवाब देने में इंसान को खुशी मिलती है; और सही समय पर बोला गया शब्द कितना अच्छा होता है!” असल में, मैंने कई बार यह अनुभव किया है कि मेरे अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा मुझे ठीक सही समय पर सही शब्द बोलने की शक्ति देता है। उदाहरण के लिए, जब मैं ऑनलाइन चैट के ज़रिए काउंसलिंग देता हूँ, और हम मैसेज का आदान-प्रदान कर रहे होते हैं, तो कभी-कभी मुझे दूसरे इंसान के दिल में परमेश्वर के पवित्र आत्मा को काम करते हुए देखने का मौका मिलता है; वह मुझे बाइबल के कुछ खास पद बताने के लिए प्रेरित करता है जो मेरे मन में आते हैं, और वे पद सीधे तौर पर दूसरे इंसान की मदद करते हैं। ऐसे पलों में, मैं खुद अक्सर हैरान रह जाता हूँ। इसका कारण यह है कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने मेरे मन में जो खास शब्द डाले थे, ठीक उसी पल, वे वही शब्द थे जिनकी उस खास इंसान को सुनने की ज़रूरत थी। नीतिवचन 25:11–12 में, बाइबल कहती है: "ठीक समय पर कहा गया शब्द, चाँदी की टोकरियों में रखे सोने

के सेबों जैसा होता है। सुनने वाले कान के लिए, समझदारी से डाँटने वाला व्यक्ति, सोने की बाली और शुद्ध सोने के आभूषण जैसा होता है।" इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि सही समय पर दी गई सलाह के शब्द अच्छे फल देते हैं (पार्क यून-सन)। यहाँ, मूल हिब्रू शब्द का अर्थ, जिसका अनुवाद "परिस्थिति" के रूप में किया गया है, वास्तव में "पहिया" है। दूसरे शब्दों में, यह घूमने या हिलने-डुलने की उस क्रिया को दर्शाता है, जिसे उस पल की विशिष्ट स्थिति और परिस्थितियों के अनुसार सावधानीपूर्वक समायोजित किया जाता है। यह हमें सिखाता है कि जब कोई सलाहकार किसी दूसरे व्यक्ति से बात करता है, तो उसे सावधानीपूर्वक निर्णय लेना चाहिए और विभिन्न कारकों को ध्यान में रखते हुए उचित समायोजन करना चाहिए (पार्क यून-सन): "सलाहकार को तभी बोलना चाहिए जब वह स्वयं प्रेम और शांति से भरा हुआ हो। उसे तिरस्कारपूर्ण रवैये के साथ नहीं बोलना चाहिए। उसे जल्दबाजी में नहीं बोलना चाहिए। उसे बिना शिष्टाचार के नहीं बोलना चाहिए।" बाइबल कहती है कि जब सलाह इस तरह से दी जाती है—और दूसरा व्यक्ति उसे अच्छी तरह स्वीकार करता है—तो यह सलाहकार के लिए एक बहुत बड़ा सम्मान होता है (जिसे "चाँदी की टोकरियों में रखे सोने के सेबों" और "सोने की अंगूठी तथा शुद्ध सोने के आभूषण" की उपमाओं के माध्यम से व्यक्त किया गया है) (पार्क यून-सन)।

कृपया आज के वचन, नीतिवचन 31:26 पर ध्यान दें: “वह बुद्धि से अपना मुँह खोलती है, और उसकी जीभ पर कृपा की शिक्षा रहती है” [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) “वह बुद्धिमानी और कृपा से बोलती है”]। एक सद्गुणी स्त्री केवल एक अच्छी गृहणी ही नहीं है जो अपने घर-परिवार को बनाने के लिए लगन से काम करती है; वह अपने परिवार का मार्गदर्शन भी बुद्धि के वचनों से भली-भांति करती है (द पल्पिट कमेंट्री)। तो फिर, वे कौन से बुद्धि के वचन हैं जो उसके होठों से निकलते हैं? मेरा मानना है कि उसके मुँह से निकलने वाले बुद्धि के वचन, मूल रूप से, ज्ञान हैं (15:7)—और यह ज्ञान, विशेष रूप से, सत्य है (8:7)। इसका कारण यह है कि उसका हृदय सत्य के जीवन-दायक वचन से उमड़ रहा है (18:4; पार्क यून-सन)। एक बुद्धिमान, सद्गुणी स्त्री के होठों से, यीशु मसीह का सुसमाचार—जो अनंत जीवन प्रदान करता है—प्रवाहित होना चाहिए। उसके होठों से न केवल यीशु मसीह के ज्ञान की घोषणा होनी चाहिए, बल्कि यीशु मसीह के धन्य समाचार को भी साझा किया जाना चाहिए—उसकी खबर, जिसे हमें अनंत जीवन देने के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया और जिसने मृत्यु का वरण किया, और जो तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठा। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के सत्य का वचन उसके होठों से प्रवाहित होना चाहिए। वह ज्ञान जो परमेश्वर की गहरी समझ की ओर ले जाता है, उसे व्यक्त किया जाना चाहिए,

और बुद्धि के वचन उमड़कर बाहर आने चाहिए। इसके अलावा, बाइबल कहती है कि सद्‌गुणी स्त्री अपनी जीभ से "कृपा की शिक्षा" (या नियम) बोलती है (नीतिवचन 31:26)। *समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण* इसका अनुवाद इस अर्थ में करता है कि वह कृपापूर्वक बोलती है। मेरा मानना है कि एक सद्‌गुणी स्त्री का हृदय न केवल सत्य के जीवन-दायक वचन से उमड़ रहा होता है, बल्कि उसमें परमेश्वर का प्रेम भी प्रचुर मात्रा में होता है। ठीक इसी कारण से वह अपनी जीभ से कृपा की शिक्षा बोलती है। जब वह बोलती है, तो उसकी जीभ—जो परमेश्वर के प्रेम द्वारा संचालित होती है—कृपा की शिक्षा को व्यक्त करती है (द पल्पिट कमेंट्री)। मेरा मानना है कि यदि "कृपा की शिक्षा" को हम विश्वासियों पर लागू किया जाए जो नए नियम (New Covenant) के युग में जी रहे हैं, तो यह यीशु की "दोहरी आज्ञा" के अनुरूप है। इस दोहरे आदेश में दो भाग हैं: "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी बुद्धि से प्रेम करो," और "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" (मत्ती 22:37, 39)। एक सदाचारी पत्नी इस दोहरे आदेश को न केवल अपने दैनिक जीवन के माध्यम से—घर के भीतर अपने पति और बच्चों को दिखाकर—प्रदर्शित करती है, बल्कि इसे सिखाने के लिए अपने होंठ खोलकर भी प्रदर्शित करती है।

ठीक ऐसा ही चर्च—यीशु की दुल्हन, हमारे दूल्हे—को भी दिखना चाहिए। हमें, यानी चर्च को, यीशु के दोहरे आदेश का पालन करना चाहिए; हमें न केवल अपने जीवन के माध्यम से परमेश्वर के दया के नियम को प्रदर्शित करना चाहिए, बल्कि हमें सत्य के वचन की घोषणा करने के लिए अपने मुँह भी खोलने चाहिए। सत्य के वचन की घोषणा करते समय, चर्च को स्वयं यीशु मसीह की घोषणा करने के लिए अपने होंठ खोलने चाहिए, जो सच्चा ज्ञान हैं। दूसरे शब्दों में, हमें सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए। यही चर्च की सच्ची छवि है—यीशु की बुद्धिमान और सदाचारी दुल्हन, हमारे दूल्हे की दुल्हन।

मैं वचन पर इस मनन को समाप्त करना चाहूँगा। मेरी दादी ने, जब वे जीवित थीं, मुझसे एक विशेष बात कही थी—एक ऐसी बात जिसे मैं कभी भूल नहीं पाया हूँ। वह बात और कुछ नहीं, बल्कि नीतिवचन 31:30 थी: "सुंदरता छलावा है, और रूप-लावण्य क्षणभंगुर है; परंतु जो स्त्री प्रभु का भय मानती है, उसकी प्रशंसा होनी

चाहिए।" मुझे आज भी वह बात स्पष्ट रूप से याद है। मुझे वह विशेष बातचीत याद नहीं है जिसके कारण मेरी दादी ने नर्सिंग होम में मेरे उनसे मिलने पर बाइबल का वह विशेष वचन सुनाया था; हालाँकि, मुझे जो बात पूरी स्पष्टता के साथ याद है, वह यह है कि—अपनी बढ़ती उम्र और चेहरे पर पड़ी अनेक झुर्रियों के बावजूद—उन्होंने ठीक मेरे सामने नीतिवचन 31:30 सुनाया था। जब मैंने उस क्षण अपनी दादी के माध्यम से उन शब्दों को सुना, तो मैं इस कथन की सच्चाई को—एक अत्यंत गहरे, आंतरिक और व्यक्तिगत तरीके से—महसूस किए बिना न रह सका: "सुंदरता छलावा है, और रूप-लावण्य क्षणभंगुर है।" इसका कारण यह था कि, समय बीतने के साथ, मैं इस बात पर विचार किए बिना न रह सका कि एक स्त्री की शारीरिक सुंदरता का वास्तव में क्या सच्चा महत्व है। फिर भी, मुझे इस बात का एहसास हुआ कि धर्मग्रंथ का यह सत्य कितना गहरा और महत्वपूर्ण है: "जो स्त्री प्रभु का भय मानती है, उसकी प्रशंसा होनी चाहिए।" सचमुच, जिस स्त्री को ऐसी प्रशंसा मिलती है—वह जो सचमुच परमेश्वर से डरती है—वह बुद्धि और नेक चरित्र वाली स्त्री होती है। नेक चरित्र वाली स्त्री वह है जो अपने पति में विश्वास जगाती है, लगन से काम करती है, गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करती है, और चिंता से मुक्त रहती है। इसके अलावा, उसके मुँह से बुद्धि की बातें निकलती हैं, और उसके कारण, उसके पति को भी दूसरों की नज़रों में पहचान और सम्मान मिलता है। उसके बच्चे उठकर उसे धन्य कहते हैं, और उसका पति उसकी प्रशंसा करते हुए कहता है: "तुम बाकी सभी स्त्रियों से बढ़कर हो"—जिसका अर्थ है कि भले ही दुनिया में कई बेहतरीन स्त्रियाँ हों, लेकिन वह उन सबमें सबसे महान है। मेरी यह दिली उम्मीद है कि हम, कलीसिया के तौर पर—जो मसीह की दुल्हन है—एक ऐसा समुदाय बनें जो हमारे दूल्हे, प्रभु में इतना गहरा विश्वास जगाए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम—आप और मैं, दोनों—ऐसे लोग बनें जो प्रभु का काम लगन से करें, गरीबों और बेसहारा लोगों की मदद करें, सारी चिंताएँ त्याग दें, और अपनी बुद्धि भरी बातों का इस्तेमाल करके यीशु मसीह के सुसमाचार और परमेश्वर के वचन की सच्चाई का प्रचार करें और उसे सिखाएँ। इस प्रकार, जब हम आखिरकार प्रभु के सामने खड़े होंगे, तो हम सब उनकी यह प्रशंसा पाने के योग्य पाए जाएँ: "शाबाश, हे अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक।"

हैप्पी बर्थडे, जेन!

यहां सुबह के 4:20 बज रहे हैं। आज मेरी प्यारी पत्नी का जन्मदिन है। हालांकि वह अभी सो रही है, लेकिन मैंने अपने परिवार के पांच लोगों के ग्रुप चैट में नीचे दी गई फोटो के साथ जन्मदिन की बधाई पहले ही शेयर कर दी है। हमारी पत्नी के काम खत्म करने के बाद आज दोपहर हम बर्थडे डिनर के साथ जश्न मनाने का प्लान बना रहे हैं। मैंने पहले सोचा था कि सिर्फ मेरी पत्नी, हमारी सबसे छोटी बेटी (ये-यून) और मैं साथ में खाना खाएंगे, लेकिन मुझे कुछ देर पहले एक मैसेज मिला जिसमें बताया गया कि डायलन और जेसिका भी हमारे साथ आ सकते हैं। यह बिल्कुल सही रहा! चूंकि डायलन ने हाल ही में जेसिका को प्रपोज किया है, इसलिए मेरी पत्नी निश्चित रूप से बहुत खुश होगी कि वे सभी उसके जन्मदिन पर इस तरह एक साथ खाना खा सकते हैं।

जब मैं अपनी पत्नी का जन्मदिन मना रहा हूं, तो मैं उन चीजों की लिस्ट बनाना चाहूंगा जिनके लिए मैं भगवान और अपनी पत्नी दोनों का शुक्रगुजार हूं जब भी मैं उसके बारे में सोचता हूं:

1. मेरी पत्नी भगवान की कृपा का तोहफा है।

2. मेरी पत्नी के जरिए, भगवान मुझे बदल रहे हैं।

3. अपनी पत्नी के ज़रिए मैं खुद को बेहतर जान रहा हूँ।

4. मुझे अपनी पत्नी से ऐसा प्यार मिलता है जिसके मैं लायक नहीं हूँ।

5. मैं बस अपनी पत्नी के होने के लिए शुक्रगुजार हूँ।

अपनी प्यारी पत्नी का जन्मदिन मनाते हुए...

आज जब मैं अपनी प्यारी पत्नी का जन्मदिन मना रहा हूँ, तो मैं नीतिवचन (Proverbs) के अध्याय 15 के शब्दों पर मनन कर रहा हूँ, और उन्हें अपने वैवाहिक जीवन के संदर्भ में लागू करते हुए उन पर विचार कर रहा हूँ:

1. वैवाहिक रिश्ते में, एक कोमल उत्तर क्रोध को शांत कर देता है, जबकि कठोर शब्द उसे और भड़का देते हैं (संदर्भ: नीतिवचन 15:1, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

2. एक बुद्धिमान पति परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा की खोज करता है, और उसके होंठ उस ज्ञान को अपनी प्यारी पत्नी तक कृपापूर्वक पहुँचाते हैं; इसके विपरीत, एक मूर्ख पति ऐसा करने में असफल रहता है, वह मूर्खता में आनंद पाता है और मूर्खतापूर्ण बातें ही उगलता है (संदर्भ: नीतिवचन 15:2, 7, 14, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

3. वैवाहिक रिश्ते में, कोमल शब्द जीवन के वृक्ष के समान होते हैं, जबकि कठोर शब्द इंसान के दिल को घायल कर देते हैं (संदर्भ: नीतिवचन 15:4, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

4. परमेश्वर एक ईमानदार जोड़े की प्रार्थनाओं में प्रसन्न होता है और उन लोगों से प्रेम करता है जो धार्मिकता की राह पर चलते हैं (संदर्भ: नीतिवचन 15:8, 9, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

5. एक बुद्धिमान जोड़ा यह भली-भांति जानता है कि भले ही वे अपने विचार एक-दूसरे से छिपा सकते हों, लेकिन वे उन्हें परमेश्वर से कभी नहीं छिपा सकते (संदर्भ: नीतिवचन 15:11, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

6. एक अहंकारी पति अपनी पत्नी द्वारा डांटे जाने से नफ़रत करता है और एक बुद्धिमान पत्नी की सलाह नहीं लेता (संदर्भ: नीतिवचन 15:12, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

7. पत्नी के दिल में बसा आनंद उसके चेहरे को रोशन कर देता है, जबकि पति के दिल में बसा दुख उसकी आत्मा को घायल कर देता है (संदर्भ: नीतिवचन 15:13, *द मॉडर्न मैन्स बाइबल*)।

8. कष्ट झेल रहे जोड़े का जीवन भले ही दयनीय हो, लेकिन जिनके दिलों में आनंद होता है, वे हमेशा प्रफुल्लित रहते हैं (संदर्भ: नीतिवचन 15:15, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)।

9. एक जोड़े के लिए यह बेहतर है कि वे गरीब हों, फिर भी परमेश्वर की सेवा एक साथ और श्रद्धापूर्वक करें; बजाय इसके कि वे अमीर हों, लेकिन लगातार उथल-पुथल और अशांति में जिएँ। (संदर्भ: नीतिवचन 15:17, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

10. एक गुस्सैल पति झगड़ा खड़ा करता है, लेकिन जो पत्नी जल्दी गुस्सा नहीं करती, वह झगड़ों को खत्म कर देती है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:18, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

11. एक आलसी जोड़े का रास्ता काँटों भरी झाड़ी जैसा होता है, जबकि एक ईमानदार जोड़े का रास्ता राजमार्ग जैसा होता है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:19, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

12. एक समझदार पत्नी अपने पति को खुशी देती है, लेकिन एक मूर्ख पति अपनी पत्नी का अपमान करता है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:20, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

13. एक नासमझ जोड़ा मूर्खता में खुश रहता है, लेकिन एक समझदार जोड़ा साथ मिलकर सही रास्ते पर चलता है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:21, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

14. एक ऐसे पति की वजह से जो समझदारी भरी सलाह देता है, उसकी पत्नी की योजनाएँ सफल होती हैं। (संदर्भ: नीतिवचन 15:22, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

15. एक समझदार जोड़ा सही समय पर सही बातें कहकर और सही जवाब देकर एक-दूसरे को खुशी देता है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:23, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

16. परमेश्वर उन जोड़ों के विचारों से खुश होता है जिनके दिल पवित्र होते हैं। (संदर्भ: नीतिवचन 15:26, *मॉडर्न कोरियन बाइबल*)

17. एक समझदार और नेक जोड़ा जो परमेश्वर से डरता है, बेईमानी से कमाए गए धन का लालच करके अपने परिवार को नुकसान नहीं पहुँचाता। (संदर्भ: नीतिवचन 15:27, *द कंटेम्पररी बाइबल*)

18. जहाँ एक नेक जोड़ा एक-दूसरे से कही गई बातों को ध्यान से तोलता है, वहीं एक दुष्ट जोड़ा बिना सोचे-समझे एक-दूसरे पर बुरी बातें बरसाता है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:28, *द कंटेम्पररी बाइबल*)

19. एक समझदार जोड़ा न केवल एक-दूसरे की रचनात्मक सुधार वाली बातें सुनना जानता है, बल्कि ऐसी सुधार वाली बातों को खुशी-खुशी अपनाता भी है, जिससे उन्हें समझ मिलती है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:31, 32, *द कंटेम्पररी बाइबल*)

20. जो जोड़ा परमेश्वर से डरता है, वह विनम्र होता है, क्योंकि उन्होंने समझदारी हासिल कर ली होती है। (संदर्भ: नीतिवचन 15:33, *द कंटेम्पररी बाइबल*)

माता-पिता के कर्तव्य

इस शनिवार (28 सितंबर, 2024) की सुबह की प्रार्थना सभा के दौरान—जब मैं "संघर्ष एक अवसर है" शीर्षक के तहत, रोमियों 12:16 पर आधारित होकर परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहा था—तो मैंने माता-पिता के अपने बच्चों के पालन-पोषण से जुड़े कर्तव्यों के संदेश पर गहराई से विचार किया और उसे विभिन्न तरीकों से अपने जीवन में लागू किया। जैसे-जैसे मैं इन पैतृक कर्तव्यों पर एक बार फिर से मनन करता हूँ, मैं अपने विचारों को इस प्रकार लिखता हूँ:

1. यह तथ्य कि मेरी पत्नी और मैं तीन बच्चों के माता-पिता बने हैं, पूरी तरह से परमेश्वर की कृपा के कारण है। इसका अर्थ यह है कि, माता-पिता बनने की हमारी पूर्ण अयोग्यता के बावजूद, परमेश्वर ने कृपापूर्वक हमें इन अनमोल जीवनों—यानी हमारे बच्चों—का उपहार प्रदान किया।

2. परमेश्वर परिस्थितियों को इस प्रकार संचालित कर रहे हैं कि हमारे बच्चे ही हम पर कृपा बरसा रहे हैं। मेरे मामले में—एक पिता के तौर पर, जिसके तीन बच्चे हैं—मैंने अक्सर उन्हें निराश किया है और उनके विरुद्ध पाप किए हैं; फिर भी, मेरे तीनों बच्चों के मन में मेरे प्रति न तो कोई कड़वाहट है और न ही कोई रोष। मैं इसे परमेश्वर की अद्‌भुत कृपा और एक सच्चे चमत्कार से कम कुछ नहीं मानता। मैं एक ऐसा पिता हूँ जो अपने बच्चों से कृपा, क्षमा और प्रेम प्राप्त करता है।

3. परमेश्वर की कृपा से, अपनी पत्नी से विवाह करने के बाद—और परमेश्वर से एक कृपापूर्ण उपहार के रूप में अपनी पहली संतान, जूयंग (कैरिस) को प्राप्त करने से पहले—मैंने अपनी प्रिय पत्नी से एक स्पष्ट सीमा निर्धारित करने का आग्रह किया था। मेरा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि हमारे बच्चे—जो, एक अर्थ में,

हमारे वैवाहिक मिलन के लिए 'तीसरे पक्ष' (third parties) के समान हैं—हमारे और मेरी पत्नी के बीच के पति-पत्नी वाले रिश्ते में न तो कोई दखल दें और न ही कोई हस्तक्षेप करें। हालाँकि, क्योंकि हमारी बेटी जूयंग का जन्म एक चिकित्सीय समस्या (medical condition) के साथ हुआ था, इसलिए हमारे लिए उसके साथ ऐसी कोई स्पष्ट सीमा निर्धारित करना असंभव हो गया; इसके बजाय, हम पूरी तरह से उसकी देखभाल में स्वयं को समर्पित करने के लिए विवश हो गए। जूयंग के मेरी बाहों में ही इस संसार से विदा हो जाने के बाद, परमेश्वर ने मेरी पत्नी और मुझे तीन और बच्चों का उपहार दिया: डिलन (जिसके माध्यम से हमने परमेश्वर के 'पुनर्स्थापक प्रेम' का अनुभव किया), येरी (जिसके माध्यम से हमने परमेश्वर के 'असीम प्रेम' का अनुभव किया), और यीउन—जिसका अंग्रेजी नाम 'कैरिस' है (जिसका अर्थ भी "कृपा" ही है, ठीक हमारी पहली संतान जूयंग के नाम की तरह)—(जिसके माध्यम से परमेश्वर ने हमें यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया कि, "परमेश्वर प्रेम है")। हालाँकि, जब हम इन तीन बच्चों को पाल-पोस रहे थे, तो ऐसा लगता है कि मेरी पत्नी और मेरे बीच बहुत ज़्यादा बहस होती थी। असल में, हमने अपने बच्चों को अपने वैवाहिक रिश्ते में दखल देने की छूट दे दी थी। नतीजतन, हम अक्सर बच्चों से जुड़े मामलों पर आपस में तू-तू, मैं-मैं और झगड़ा करते रहते थे। हम इतने नासमझ थे कि हम बच्चों की परवरिश के मामले में कोई साफ़ और सही सीमाएँ तय नहीं कर पाए थे।

4. फिर भी, प्रभु हमारे तीनों बच्चों में से हर एक की परवरिश खुद कर रहे थे—और इससे भी बड़ी बात यह कि वे मेरी पत्नी और मेरी भी परवरिश कर रहे थे। इन तीन बच्चों के माता-पिता होने के नाते, बच्चों को कैसे पाला जाए, इस बारे में मेरी पत्नी और मेरे विचार अलग-अलग थे। जब भी हममें से कोई एक इस बात पर अड़ जाता था कि उसका तरीका ही सही है—या अपने नज़रिए को थोपने की कोशिश करता था—तो नतीजा हमेशा बहस और झगड़े के रूप में ही निकलता था। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, हमारा अपना घमंड और हमारी नासमझी साफ़ तौर पर सामने आ जाती थी। फिर भी, परमेश्वर की अद्‌भुत कृपा और प्रेम के कारण, प्रभु ने इन्हीं अनुभवों का इस्तेमाल करके हमें अपने मतभेदों को पहले से कहीं ज़्यादा साफ़ तौर पर समझने में मदद की। इसके अलावा, प्रभु ने हमें उन बुनियादी कारणों को समझने की भी शक्ति दी कि आखिर बच्चों की परवरिश के मामले में हमारे विचार इतने अलग-अलग क्यों थे। इसकी जड़ इस बात में थी कि हम दोनों बिल्कुल अलग-अलग माहौल में पले-बढ़े थे। हमारा अलग होना लाज़मी था; आखिर, ऐसा कौन सा जोड़ा है जिसकी परवरिश बिल्कुल एक जैसी हुई हो? एक तो, हमारे माता-पिता ही अलग-अलग थे। और जब हम अपने-अपने माता-पिता

के बारे में सोचते हैं, तो उनके अपने वैवाहिक रिश्तों में भी कितने ही मतभेद रहे होंगे? इस तरह, अलग-अलग माता-पिता के मार्गदर्शन में प्रेम पाकर... क्योंकि मेरी पत्नी और मैं अपने-अपने माता-पिता के अलग-अलग प्रभावों में पले-बढ़े थे, इसलिए हमारे तीनों बच्चों की परवरिश के हमारे तरीके भी स्वाभाविक रूप से अलग-अलग थे। हालाँकि, एक जोड़े के तौर पर हमारे बीच जो झगड़े होते थे, उनके ज़रिए प्रभु ने धीरे-धीरे हमें यह एहसास दिलाया: कि बच्चों की परवरिश के हमारे अलग-अलग तरीकों की तुलना करने के बजाय, हमें एक-दूसरे का पूरक बनने की कोशिश करनी चाहिए। नतीजतन, जब मैंने अपने तीनों बच्चों की माँ के तौर पर अपनी पत्नी की खूबियों को पहचानना शुरू किया, तो मैंने बच्चों की परवरिश के उसके तरीकों का सम्मान करना भी शुरू कर दिया। बदले में, मेरी प्यारी पत्नी ने भी बच्चों की परवरिश के मेरे तरीके का सम्मान करना शुरू कर दिया। आखिरकार, प्रभु ने हम दोनों को—अपने तीनों बच्चों के माता-पिता के तौर पर—एक "टीम" बनने में मदद की, और इस तरह धीरे-धीरे हमें एक "टीम फ़ैमिली मिनिस्ट्री" (पारिवारिक सेवा) की ओर आगे बढ़ाया। एक-दूसरे के पालन-पोषण के तरीकों में निहित खूबियों का सम्मान करके, हम एक-दूसरे की कमियों को पूरा कर पाए; जिससे हम अपने हर बच्चे का पालन-पोषण इस तरह से कर सके, जिसने उनकी अपनी अलग पहचान का सम्मान किया।

5. जब मैं इस सफ़र पर सोचता हूँ, तो मेरा मन इस सच्चाई के लिए गहरी कृतज्ञता से भर जाता है: प्रभु, जो हमारे घर के असली मालिक हैं, मेरी पत्नी और मुझसे बहुत प्यार करते हैं, और उन्होंने हम पर असीम दया और कृपा दिखाई है। नतीजतन—बच्चों के पालन-पोषण में हमसे हुई अनगिनत गलतियों के बावजूद—उन्होंने हमें सब्र से सिखाया है, हमें समझ दी है, और आज भी ऐसा करना जारी रखे हुए हैं। मुझे मिले सभी सबकों और समझ में से, जिस एक बात ने मेरे दिल पर सबसे गहरा असर डाला है—और जो अभी और भविष्य में भी डालती रहेगी—वह यह है: परमपिता परमेश्वर हमारे बच्चों से दुनिया में किसी भी और इंसान से ज़्यादा प्यार करते हैं—शायद मेरी पत्नी और मुझसे भी ज़्यादा। इसलिए, जब भी मैं—एक पिता के तौर पर—अपने बच्चों से वैसा प्यार करने में मुश्किल महसूस करता हूँ जैसा मुझे करना चाहिए, या जब मैं खोया हुआ और आगे कैसे बढ़ूँ, इस बारे में अनिश्चित महसूस करता हूँ, तो पवित्र आत्मा प्रभु से मिली उस कीमती सीख और समझ को मेरे मन में वापस ले आती है। मुझे उस सच्चाई पर विश्वास के साथ टिके रहने और परमेश्वर पर भरोसा रखने की शक्ति देकर, उन्होंने आज तक हर कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया है और मुझे संभाला है।

6. कई बार ऐसा हुआ जब मेरे दिल में बहुत गहरा दर्द उठा और मुझे इतनी पीड़ा हुई कि मैं परमेश्वर के सामने फूट-फूटकर रोया। इस दुख का कारण यह एहसास था कि ये बच्चे—जिनसे परमेश्वर सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं—... एक पिता के तौर पर, मुझे लगा कि मैं उनसे ठीक से प्यार करने में नाकाम रहा हूँ; इसके अलावा, मुझे एहसास हुआ कि मैंने जो कोशिशें कीं—यह सोचकर कि मैं उन्हें प्यार दिखा रहा हूँ—वे कभी-कभी उनके लिए बिल्कुल भी मददगार नहीं थीं, और कई बार तो शायद उनसे उन्हें नुकसान भी पहुँचा होगा। नतीजतन, जब भी मैं एक पिता के तौर पर अपने बच्चों के बारे में सोचता था, तो मैं खुद को अपराधबोध से घिरा हुआ पाता था और खुद को कोसने लगता था। फिर, जब मुझे अपनी प्यारी सबसे छोटी बेटी, यीउन के उद्धार के लिए प्रार्थना करने की प्रेरणा मिली, तो प्रभु ने मुझे यह दिली गुहार लगाने के लिए प्रेरित किया: "हे प्रभु, भले ही आपको मेरी जान लेनी पड़े, कृपया मेरी प्यारी यीउन को उद्धार प्रदान करें।" हालाँकि मैं इसके लायक नहीं हूँ, फिर भी पवित्र आत्मा ने मुझे अपनी प्यारी बेटी के उद्धार के लिए प्रार्थना में अपना जीवन ही बलिदान के रूप में अर्पित करने के लिए प्रेरित किया। अंततः, परमेश्वर—जो यीउन से किसी भी अन्य व्यक्ति से कहीं अधिक प्रेम करते हैं—ने अपनी कृपा से उसे विश्वास का अनमोल उपहार प्रदान किया, जिससे वह प्रभु यीशु मसीह पर अपना भरोसा रख सकी। जब मुझे इस गहरे सत्य का एहसास हुआ, तो मुझे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता पर—पहले से भी कहीं अधिक गहराई से—भरोसा करने और उन पर निर्भर रहने की अनमोल कृपा प्राप्त हुई। इसके अलावा, जैसे-जैसे प्रभु विश्वासयोग्यता के साथ मेरे परिवार को संवारना जारी रखे हुए हैं, उन्होंने मेरे प्यारे बेटे, डिलन को भी बुलाया और उसे एक ईश्वरीय बुलाहट प्रदान की। डिलन इस समय धर्म-सेवा (ministry) के उम्मीदवार के रूप में सेमिनरी में अध्ययन कर रहा है; वह हमारे चर्च में कैंपस मिनिस्ट्री लीडर के रूप में सेवा करता है और स्नातक होने के बाद भी अपने पुराने शिक्षण संस्थान (alma mater) में ईसाई संगति की सेवा करना जारी रखे हुए है। हाल ही में—चार से पाँच साल की प्रेम-अवधि (courtship) के बाद, जिसकी शुरुआत मिशन के क्षेत्र में हुई थी—प्रभु ने उसे जेसिका से विवाह करने और अपना स्वयं का परिवार बसाने में सक्षम बनाया। मेरी प्यारी बेटी, येरी ने भी प्रभु की बुलाहट का जवाब दिया; जापान में एक साल का मिशन-कार्य पूरा करने के बाद, वह पिछले बुधवार को दूसरे वर्ष की मिशनरी सेवा के लिए जापान वापस चली गई। जिस अद्‌भुत रीति से प्रभु उसके जीवन में कार्य कर रहे हैं, उसे देखकर मेरी पत्नी और मैं—विश्वास की आँखों से—यह देख पाते हैं कि कैसे हमारे सचमुच विश्वासयोग्य परमेश्वर, 1 पतरस 5:10 में दिए गए वादे को येरी के जीवन में पूरा कर रहे हैं।

7. आज शनिवार की सुबह की प्रार्थना-सभा के दौरान, [मैंने] रोमियों की पुस्तक पर मनन किया... परमेश्वर के वचन की घोषणा करने के बाद—जिसका केंद्र-बिंदु अध्याय 12, पद 16 का अंश था, और जिसका उपदेश-शीर्षक "संघर्ष एक अवसर है" था—मैंने उस संदेश को सीधे अपने पारिवारिक जीवन पर लागू करते हुए अपनी बात शुरू की। ऐसा करते समय, प्रभु ने मेरे मन में यह शिक्षा बिठाई: अपने परिवार के मुखिया के रूप में, मैं अक्सर अहंकारी और मूर्ख रहा हूँ, और मैंने घर के भीतर ही परमेश्वर तथा अपने परिवार के सदस्यों, दोनों के विरुद्ध अनगिनत पाप किए हैं; फिर भी, परमेश्वर ने मुझ पर अपनी अद्‌भुत, प्रचुर कृपा, प्रेम और दया बरसाई है। सचमुच, परमेश्वर मेरे परिवार के प्रत्येक सदस्य के जीवन में चमत्कारी रीति से कार्य कर रहे हैं—उन लोगों के जीवन में, जिनसे वह किसी भी अन्य व्यक्ति से कहीं अधिक गहराई से प्रेम करते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मुझे निरंतर विनम्र बनाते रहें और मेरे अहंकार को तोड़ते रहें, ताकि मैं यीशु के विनम्र हृदय का अनुकरण कर सकूँ (देखें: फिलिप्पियों 2:5–8)। इसके अतिरिक्त, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मुझ पर अपनी स्वर्गीय बुद्धि और भी अधिक मात्रा में उंडेल दें, ताकि मैं—अपनी पत्नी के साथ मिलकर, जिसे उन्होंने मुझे अपनी कृपा के एक अद्‌भुत उपहार के रूप में दिया है—अपने बच्चों का पालन-पोषण एक ही हृदय, एक ही मन और एक ही उद्देश्य के साथ कर सकूँ; और यह सब उनकी इच्छा, उनके हृदय और उनके प्रेम के मार्गदर्शन में हो। वे उन्हें—और उनकी उन सभी संतानों को जो अभी पैदा होनी हैं—परमेश्वर के ऐसे सेवकों के रूप में स्थापित करें, जिनके स्वप्न मसीह-केंद्रित हों; ताकि यीशु, सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य की सेवा में, उनके महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनका उपयोग हो सके।

बच्चों के बारे में परमेश्वर के वचन पर एक छोटा सा ध्यान

मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारे बच्चों को सभी विरोधियों से बचाए, उन्हें शांति और स्थिरता प्रदान करे, ताकि वे शांतिप्रिय लोग बन सकें (संदर्भ: 1 इतिहास 22:9)।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर, अपने वादे के अनुसार, हमारे बच्चों के साथ रहे, और उन्हें अपने राज्य की भलाई के लिए परमेश्वर का कार्य सफलतापूर्वक पूरा करने में सक्षम बनाए (संदर्भ: 1 इतिहास 22:11)।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारे बच्चों को बुद्धि और समझ प्रदान करे, ताकि वे परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन करते हुए विश्वासयोग्यता से अपना जीवन जी सकें (संदर्भ: 1 इतिहास 22:12)।

यदि हमारे बच्चे परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का सावधानीपूर्वक पालन करेंगे, तो वे अपने हर काम में सफल होंगे (संदर्भ: 1 इतिहास 22:13)।

मैं अपने बच्चों से यह कहना चाहता हूँ: "मज़बूत और साहसी बनो; किसी भी चीज़ से मत डरो" (संदर्भ: 1 इतिहास 22:13)।

मैं अपने बच्चों से यह कहना चाहता हूँ: "पूरे दिल और आत्मा से परमेश्वर की खोज करो, और अपना जीवन परमेश्वर के राज्य और उसकी कलीसिया की भलाई के लिए जियो" (संदर्भ: 1 इतिहास 22:19)।

आज सुबह जब मैं बच्चों के बारे में परमेश्वर के वचन के इन छोटे-छोटे अंशों पर ध्यान कर रहा था, तो मुझे कल दोपहर एक जोड़े के साथ हुई बातचीत याद आ गई। इसका कारण यह था कि हमारी बातचीत मुख्य रूप से हमारे बच्चों के विषय पर केंद्रित थी। इसलिए, आज सुबह जब मैं कल की उस बातचीत पर एक बार फिर विचार कर रहा हूँ, तो मैं बच्चों के बारे में अपने कुछ निजी विचार—एक-एक करके—लिखना चाहूँगा:

1. तीन बच्चों के पिता के तौर पर, अनगिनत बार ऐसा हुआ है जब मुझे सचमुच समझ नहीं आया कि उन्हें कैसे पाला जाए। नतीजतन, मैं बाइबल में सैमसन के पिता, मनोह द्वारा की गई प्रार्थना से पूरी तरह से जुड़ाव महसूस करता हूँ—जिन्होंने परमेश्वर से विनती की थी कि वह उन्हें सिखाए कि अपने बच्चे का पालन-पोषण कैसे करें (न्यायियों 13:8, 12)।

2. मैं—परमेश्वर और लोगों, दोनों के सामने—यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि जब अपने बच्चों के पालन-पोषण की बात आती है, तो मुझमें बुद्धि की भारी कमी है। इसलिए, मैं जेम्स 1:5 के इन शब्दों को थामे रहता हूँ: "यदि आप में से किसी में बुद्धि की कमी है, तो उसे परमेश्वर से माँगनी चाहिए, जो बिना कोई दोष निकाले, सबको उदारता से देता है; और वह उसे दी जाएगी।"

3. मैं बच्चों की परवरिश के बारे में धीरे-धीरे, एक-एक करके, उन अनगिनत गलतियों से सीख रहा हूँ जो मैंने खुद की हैं। नतीजतन, मैं अपने तीन प्यारे बच्चों से कहता हूँ: "गलतियाँ करना और असफल होना ठीक है—बशर्ते कि तुम उन गलतियों और असफलताओं से सीखो।"

4. जब भी मैं अपने बच्चों के बारे में सोचता हूँ, तो परमेश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ: "हे प्रभु, कृपया मेरे प्यारे डिलन, येरी और यीउन को ऐसे कार्यकर्ता के रूप में तैयार कर, जिनके सपने मसीह-केंद्रित हों—ऐसे सपने जो तेरे राज्य के विस्तार में योगदान दें।"

5. जब मैं अपने बच्चों की ओर से परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तो मैं विशेष रूप से इस तरह प्रार्थना करता हूँ: (डिलन के लिए) "हे परमेश्वर, डिलन पर अपनी सच्चाई और वफ़ादारी प्रकट कर, ताकि वह तेरे प्रति सच्चा और वफ़ादार बन सके"; (येरी के लिए) "हे परमेश्वर, येरी के जीवन में एप्रैम का कार्य कर, ताकि वह 'दोगुनी फलदायी' बन सके"; (यीउन के लिए) "हे परमेश्वर, यीउन को ऐसी अंतर्दृष्टि दे कि वह तेरी कृपा की गहराई को सचमुच समझ सके, ताकि वह उस कृपा को दूसरों तक पहुँचाने और बाँटने वाला जीवन जी सके।"

6. मुझे अपने तीनों बच्चों के जीवन में परमेश्वर को सक्रिय रूप से कार्य करते हुए देखने के अवसर मिलते हैं। यह परमेश्वर की कृपा से कम नहीं है। मेरा मानना है कि, एक पिता के रूप में मेरी कमियों के बावजूद—कि

मैं अतीत में अपने बच्चों के साथ सही नहीं कर पाया, और अब भी मुझसे चूक होती रहती है—परमेश्वर स्वयं व्यक्तिगत रूप से उनकी परवरिश कर रहा है, क्योंकि वह उनसे किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक गहरा प्रेम करता है।

7. मैं अपने तीनों प्यारे बच्चों के लिए ऐसा पिता बनना चाहता हूँ जो उन्हें "छोटे यीशु" की याद दिलाए। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे इस संसार से चले जाने के बाद, जब मेरे बच्चे मुझे याद करें, तो वे यह कह सकें: "मेरे पिता यीशु से प्रेम करते थे, और उन्होंने मुझे यीशु दिखाया" (संदर्भ: इब्रानियों 11:4)।

डिलन, येरी और यीउन के नाम—जो यीशु से प्रेम करते हैं

गुरुवार, 7 मई, 2015

मेरे प्यारे डिलन, येरी और यीउन,

लगभग सत्रह साल पहले, जब तुम्हारी बड़ी बहन—जूयंग—बहुत ज़्यादा बीमार थी और लॉस एंजिल्स के चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल के इंटेंसिव केयर यूनिट (ICU) में भर्ती थी, तब मैंने रेडियो कोरिया पर एक घोषणा सुनी। उसमें एक प्रतियोगिता के बारे में बताया गया था, जिसमें माता-पिता को अपने प्यारे बच्चों के नाम लिखे हुए पत्र भेजने के लिए आमंत्रित किया जा रहा था। इससे प्रेरित होकर, मैंने एक पत्र लिखा जिसका शीर्षक था, "जूयंग के नाम—जो यीशु से प्रेम करती है।" उस समय, मैंने वह पत्र अपने दिल की बात लिखकर ज़ाहिर करने के लिए लिखा था; मैं अपनी प्यारी बच्ची जूयंग के बारे में सोच रहा था, जो बहुत तकलीफ़ में थी—वह न तो एक शब्द बोल पा रही थी और न ही रो पा रही थी, क्योंकि वह एक वेंटिलेटर से जुड़ी हुई थी। मेरी बस यही इच्छा थी कि मैं जूयंग के प्रति अपना प्यार ज़ाहिर करूँ। क्या तुम यकीन कर सकते हो कि तब से अब तक सत्रह साल बीत चुके हैं?

अभी कुछ ही दिन पहले, गाड़ी चलाते समय, मैंने गलती से एक कोरियन रेडियो स्टेशन लगाया और सुना कि वे एक बार फिर "बच्चों के नाम पत्र" प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं। बहुत सोचने-विचारने के बाद, आज सुबह मैंने यह पत्र लिखने की हिम्मत जुटाई। आज सुबह की हमारी प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने तुम सबके बारे में

सोचते हुए—मेरे प्यारे डिलन, येरी और यीउन—पिता परमेश्वर से प्रार्थना की। ठीक वैसे ही, जैसे सत्रह साल पहले मैंने जूयंग के प्रति अपने प्यार भरे दिल की बात लिखकर ज़ाहिर की थी, वैसे ही अब मैं इन लिखे हुए शब्दों के माध्यम से तुम सबके प्रति—डिलन, येरी और यीउन—अपना प्यार ज़ाहिर करना चाहता हूँ। इस प्रकार, मैं यह पत्र लिखना शुरू करता हूँ, जिसका शीर्षक है, "डिलन, येरी और यीउन के नाम—जो यीशु से प्रेम करते हैं।"

मेरे प्यारे बेटे, डिलन,

तुम मेरे लिए एक अनमोल बेटे हो। तुम्हारी बड़ी बहन, जूयंग, जब मेरी गोद में ही सो गई और इस दुनिया से चली गई, तब तुम्हारी माँ और मैं गहरे दुख में डूब गए थे। जूयंग की अस्थियाँ विसर्जित करके लौटने के बाद, मैं—तुम्हारा पिता—इतनी गहरी पीड़ा और दुख से भर गया था कि मैंने तुम्हारी माँ से यहाँ तक कह दिया था कि वह हमारे घर से जूयंग की एक-एक तस्वीर हटा दे। तुम्हारी माँ और मैंने पूरी लगन से प्रार्थना की कि हमें एक और संतान का सुख मिले, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया और कोई बच्चा नहीं हुआ, हमें निराशा का सामना करने में बहुत मुश्किल हुई। फिर भी, उस संघर्ष के बीच, ईश्वर ने तुम्हें सबसे सही और उचित समय पर गर्भ में आने दिया। ठीक उसी पल—जिस पल तुम्हारी माँ को पता चला कि वह तुमसे गर्भवती है—मैं गहरी कृतज्ञता से भर गया। जू-यंग के गुज़र जाने के बाद महीनों तक, मैं दुख की एक अवस्था में फँसा हुआ था; लेकिन तुम्हारे जन्म के माध्यम से, मुझे ईश्वर के पुनर्जीवित करने वाले प्रेम का अनुभव हुआ। तुम्हारी बड़ी बहन, जू-यंग के माध्यम से, मैंने ईश्वर के पवित्र प्रेम का अनुभव किया था... और अब, मुझ पर अपनी दया दिखाते हुए, ईश्वर ने तुम्हारी माँ और मुझे तुम्हारा उपहार दिया—एक ऐसा जीवन जो अत्यंत अनमोल है। मैंने तुम्हारे लिए "डिलन" नाम इसलिए चुना, क्योंकि इसका अर्थ मेरे हृदय में गहराई से गूंजा। मुझे आशा है कि तुम, मेरे प्यारे डिलन, यह कभी नहीं भूलोगे कि तुम्हारे नाम का अर्थ "वफ़ादार और सच्चा" है। मेरी रोज़ की प्रार्थना यह है: "हे स्वर्गीय पिता, कृपया हमारे डिलन को एक ऐसा इंसान बनने दें जो वफ़ादार और सच्चा हो।" लेकिन सबसे पहले, मैं खुद एक वफ़ादार और सच्चा इंसान बनने के लिए प्रार्थना करूँगा और प्रयास करूँगा।

मेरी प्यारी बेटी, ये-री,

तुम्हारे माध्यम से, मुझे ईश्वर के प्रचुर प्रेम का अनुभव हुआ है। मैं पहले से ही बहुत अधिक कृतज्ञ था कि ईश्वर ने हमें तुम्हारे बड़े भाई, डिलन, को एक उपहार के रूप में दिया; लेकिन जब उन्होंने तुम्हें भी एक उपहार के रूप में देकर हमें आशीर्वाद दिया, तो मैं—तुम्हारा पिता—यह समझने लगा, भले ही थोड़े ही रूप में, कि ईश्वर का प्रेम केवल एक पवित्र प्रेम या पुनर्जीवित करने वाला प्रेम ही नहीं है, बल्कि एक प्रचुर प्रेम भी है। तुम्हें एक उपहार के रूप में पाने के बाद, जब मैंने प्रार्थना की और बाइबल का अध्ययन किया, तो मुझे "एप्रैम"—जो यूसुफ का दूसरा पुत्र था—नाम के पीछे का अर्थ पता चला। उस नाम का अर्थ है "दोगुना फलदायक।" उस अर्थ पर विचार करते हुए, मैंने तुम्हारा कोरियाई नाम "ये-री" चुना। जहाँ तक मुझे याद है, हमारे चर्च के एक बुज़ुर्ग सज्जन ने बताया था कि "ये-री" के चीनी अक्षरों का अर्थ "प्रचुरता" भी होता है—हालाँकि मुझे माफ़ी माँगनी पड़ेगी, क्योंकि मैं खुद इस तथ्य की पुष्टि नहीं कर पाया हूँ! (हाहा।) फिर भी, मेरी प्यारी ये-री, तुम जानती हो न कि मेरे हृदय में क्या था? मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम एक ऐसा जीवन जियो जो दोगुना फलदायक हो, और तुम दूसरों को दोगुने रूप में वापस देने वाला जीवन जियो। मैं प्रार्थना करूँगा और यह कोशिश करूँगा कि सबसे पहले मैं खुद अपनी ज़िंदगी जीकर तुम्हारे सामने वह मिसाल पेश करूँ।

मेरी सबसे प्यारी, सबसे छोटी बच्ची, यीउन,

तुम मेरी ज़िंदगी में बहुत सारी हँसी लेकर आई हो। तुमसे, यीउन—वह जो मुझे अक्सर मुस्कुराने की वजह देती है—मैं कहना चाहता हूँ: "धन्यवाद!" जब तुम पैदा हुई थी, तो मैंने खुद को यह बात कहते हुए पाया: "ईश्वर ही प्रेम है।" तुम्हारी सबसे बड़ी बहन, जूयंग के ज़रिए, ईश्वर ने मुझे "पवित्र प्रेम" का अनुभव करने का मौका दिया; तुम्हारे भाई, डिलन के ज़रिए, "मरहम लगाने वाले प्रेम" का; और तुम्हारी बहन, येरी के ज़रिए, "असीम प्रेम" का। इसलिए, जब ईश्वर ने तुम्हें—हमारी यीउन को—तुम्हारी माँ और मुझे एक तोहफ़े के तौर पर दिया, तो मैं खुद को यह कहने से रोक नहीं पाया: "ईश्वर ही प्रेम है।" मेरी प्यारी यीउन, क्या तुम्हें याद है जो मैंने तुम्हें कई बार पहले बताया है? मैंने, तुम्हारे पिता ने, तुम्हें अंग्रेज़ी नाम "Karis" (जिसका ग्रीक में मतलब "कृपा" होता है) इसलिए दिया, ताकि तुम कभी यह न भूलो कि मैंने तुम्हें वही नाम—"Charis" (बिल्कुल वही ग्रीक शब्द, बस

अलग स्पेलिंग के साथ)—दिया है, जो मैंने पहले तुम्हारी बड़ी बहन, जूयंग को दिया था। मुझे हैरानी होती है कि क्या तुम्हें अब भी वह दिन याद है जब मैं तुम्हें लॉस एंजिल्स के बच्चों के अस्पताल ले गया था—जहाँ तुम्हारी बहन जूयंग कभी भर्ती थी—तुम्हें वह इमारत दिखाई थी, और तुम्हें तुम्हारी बड़ी बहन के बारे में सब कुछ बताया था। मैंने तुम्हारे लिए अंग्रेज़ी नाम "Karis" इसलिए चुना, यीउन (जिसके कोरियाई नाम का मतलब "यीशु की कृपा" है), क्योंकि मैंने तुम्हारी बड़ी बहन के ज़रिए ईश्वर की कृपा और प्रेम का अनुभव किया था। जूयंग की छोटी सी ज़िंदगी और उसके गुज़र जाने के ज़रिए, मैंने ईश्वर के शानदार और हैरान कर देने वाले प्रेम का अनुभव किया, यहाँ तक कि सबसे गहरे दुख और दर्द के बीच भी। ईश्वर की कृपा के अलावा, वह और क्या हो सकता था? इसीलिए मैं तुम्हें वही नाम देना चाहता था। तुमने, मेरी प्यारी यीउन, एक बार मुझे एक कीमती सबक सिखाया था: "बाँटना ही देखभाल करना है।" और इसलिए, जैसा तुमने मुझे सिखाया, मैंने अपने Naver ब्लॉग का नाम "Sharing is Caring" रखा है, और इसके ज़रिए, अब मैं धर्मग्रंथों और दूसरी चीज़ों पर अपने विचार कई लोगों के साथ बाँटता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम भी दूसरों के साथ बाँटने के लिए समर्पित ज़िंदगी जियो। हर दिन, मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि जैसे-जैसे आप जीवन की यात्रा पर आगे बढ़ेंगे, आप ईश्वर की उस असीम कृपा को गहराई से महसूस करेंगे और उसकी सराहना करेंगे जो वह आप पर बरसाता है—और, उस कृपा के प्रति कृतज्ञता और विस्मय से भरकर, आप अपना जीवन ईश्वर की कृपा और प्रेम को दूसरों तक पहुँचाते हुए जिएँगे। मैं भी, ईश्वर द्वारा मुझे दी गई कृपा के अनुरूप—एक अत्यंत आनंदित और प्रसन्न हृदय के साथ—दूसरों के साथ बाँटने वाला जीवन जीने के लिए प्रार्थना करता रहूँगा और प्रयास करता रहूँगा। डिलन, येरी, और यीउन—वे बच्चे जो यीशु से प्रेम करते हैं: यह वह प्रार्थना है जो मैं हमारे पिता-ईश्वर के चरणों में अर्पित करता हूँ:

"हे पिता-ईश्वर, आपका धन्यवाद। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मेरी पत्नी और मुझे चार बच्चों का अनमोल उपहार प्रदान किया। सबसे बढ़कर, मैं इन चार बच्चों के माध्यम से अपना प्रेम हम पर प्रकट करने के लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। हे प्रभु, मैं इन बच्चों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ। यद्यपि हम इस पृथ्वी पर थोड़े ही समय के लिए निवास करते हैं, इन अनमोल बच्चों को हमारी देखभाल के लिए हमारे सुपुर्द किया गया है; मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम उन्हें पालने-पोसने की अपनी ईश्वर-प्रदत्त ज़िम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभाएँ—न केवल तब जब हम उन्हें अंततः उनके अपने मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए तैयार कर रहे हों, बल्कि तब भी जब हम स्वयं इस संसार से विदा होने की तैयारी कर रहे हों। हे ईश्वर, आप हमें इन बच्चों को

पालने-पोसने के लिए अपने माध्यम के रूप में उपयोग करें—जिन्हें आपने कृपा के उपहार के रूप में हमें दिया है—ताकि वे मसीह-केंद्रित सपनों वाले कर्मवीर बन सकें, और इस प्रकार आपके राज्य का विस्तार करने में उनका उपयोग हो सके। मैं यह प्रार्थना यीशु के नाम में करता हूँ। आमीन।"

अपनी प्यारी बेटी यीउन (कैरिस) का निबंध, “हेनरी नौवेन की किताब *Beloved* के साथ पिछले साल पर विचार” पढ़ने के बाद

पिछले शनिवार, सुबह लगभग 3:20 बजे, जब मैं यीउन का लिखा निबंध पढ़ रहा था—जिसका शीर्षक था “हेनरी नौवेन की किताब *Beloved* के साथ पिछले साल पर विचार”—तो मैं इतना ज़्यादा भावुक हो गया कि मेरा दिल भावनाओं से भर गया, और मेरी आँखों में आँसू भी आ गए। इसका कारण यह था कि, विश्वास की नज़रों से, मुझे इसकी एक झलक मिली कि कैसे परमेश्वर पिता—मेरी अधूरी प्रार्थनाओं के जवाब में भी—यीउन के दिल और जीवन में सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। मुझे विशेष रूप से इस बात ने प्रभावित किया कि, हेनरी नौवेन की किताब *Beloved* पढ़ने के बाद, यीउन इतनी ईमानदारी से अपना आत्म-चिंतन कर पाई; उसने इतनी पारदर्शिता से लिखा, यहाँ तक कि अपनी कमज़ोरियों को भी साझा किया। इसके अलावा, मैं परमेश्वर के प्रेम और कृपा के लिए अपनी सच्ची कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ—वही प्रेम और कृपा जो उन्होंने लगभग बीस साल पहले (2001 और 2003 के बीच) मुझ पर बरसाई थी, जब, काम के बोझ से पूरी तरह थककर (burnout), मैं एकांत में रहने के लिए कोरिया चला गया था। उस समय, परमेश्वर ने हेनरी नौवेन की किताबों का इस्तेमाल मेरे दिल को सांत्वना देने, मेरी आत्मा को शांति देने, मुझे एक नई चुनौती देने और मुझे मज़बूत बनाने के लिए किया। अब, मैं बहुत आभारी हूँ कि, मेरे तीन बच्चों में से, परमेश्वर ने यीउन को हेनरी नौवेन की रचनाएँ पढ़ना शुरू करने के लिए प्रेरित किया है—ठीक वैसे ही जैसे मैंने किया था—और उसे ऐसे चिंतनशील लेख लिखने के लिए भी प्रेरित किया है, जिससे उसके दिल और जीवन पर एक अनमोल प्रभाव पड़ रहा है। सच तो यह है कि, इस साल की शुरुआत में, मेरी प्यारी पत्नी बाइबल अध्ययन सत्र के बाद रोते हुए घर लौटी थी, और उसने मुझे बताया था कि वह इस एहसास से कितनी गहराई से प्रभावित हुई थी कि वह भी परमेश्वर की एक “प्यारी” बेटी है। इसे

देखते हुए, मैं खुद को बहुत ज़्यादा आभारी महसूस करने से रोक नहीं पा रहा हूँ कि परमेश्वर ने अब वही कृपा और प्रेम यीउन तक भी पहुँचाया है, नौवेन की किताब *Beloved* को पढ़ने के ज़रिए। आज आधी रात के कुछ ही समय बाद मैं जाग गया और, जैसे-जैसे मैं धीरे-धीरे यीउन की लिखी बातें दोबारा पढ़ रहा था, मैंने अपने विचारों को—एक-एक करके—लिखना शुरू कर दिया, और उन संदेशों पर विचार किया जो परमेश्वर उसके शब्दों के ज़रिए मुझ तक पहुँचाना चाहते थे। मैंने अपने मनन के लिए ये-यून की लिखी बातों को तीन हिस्सों में बाँटा:

सबसे पहले, मैंने "प्रिय" (Beloved) शब्द पर विचार किया—यह उस किताब का शीर्षक था जिसे ये-यून ने पढ़ा था।

मैंने एक ऑनलाइन बाइबल संसाधन का इस्तेमाल करके उन सभी जगहों को खोजा जहाँ पवित्र शास्त्र में "प्रिय" शब्द आया है। हालाँकि यह शब्द बाइबल की सभी 66 किताबों में मिलता है, लेकिन मैंने खास तौर पर पाँच आयतों को चुना जिन पर मैं ध्यान देना चाहता था: (1) (मत्ती 3:17) "और स्वर्ग से एक आवाज़ आई, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।'" (2) (मत्ती 12:18) "देखो, मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है, मेरा प्रिय जिससे मेरी आत्मा बहुत प्रसन्न है। मैं उस पर अपना आत्मा डालूँगा, और वह अन्यजातियों में न्याय की घोषणा करेगा।" (3) (2 पतरस 1:17) "क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई, तो उस महान महिमा से उसके पास यह आवाज़ आई: 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।'" (4) (श्रेष्ठगीत 7:10) "मैं अपने प्रिय की हूँ, और उसकी चाहत मेरे लिए है।" (5) (रोमियों 9:25, *समकालीन कोरियाई बाइबल*) "यह ठीक वैसा ही है जैसा परमेश्वर ने होशे की भविष्यवाणी में कहा था: 'जो लोग मेरे लोग नहीं हैं, उन्हें मैं "अपने लोग" कहूँगा, और जिन्हें मैंने प्यार नहीं किया, उन्हें मैं "अपना प्रिय" कहूँगा।'" जब मैं इन वचनों पर मनन कर रहा था—खास तौर पर रोमियों 9:25 (जो *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* अनुवाद से लिया गया है)—तो मैंने इस बात पर विचार किया कि यीशु पर विश्वास करने से पहले, परमेश्वर हमें "उन लोगों" के रूप में देखते थे जिन्हें वे प्यार नहीं करते थे। फिर भी, अपने ईश्वरीय प्रेम और असीम अनुग्रह के द्वारा, हम "उनके प्रियजन" बन गए हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम और भी गहराई से यह जान पाएँ कि परमेश्वर का प्रेम और अनुग्रह वास्तव में कितना विशाल है। इसके अलावा, जब मैंने मत्ती 3:17, मत्ती 12:18, और 2 पतरस 1:17 पर एक साथ मनन किया, तो मैं उस पल से बहुत प्रभावित हुआ जब परमेश्वर पिता—जो स्वर्ग में वास करते हैं—ने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह

के बारे में यह घोषणा की: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" मुझे एहसास हुआ कि उस पल में, यीशु मसीह को परमेश्वर पिता से आदर और महिमा प्राप्त हुई; इसके अलावा, परमेश्वर की आत्मा को प्राप्त करके, उन्हें राष्ट्रों के सामने परमेश्वर के न्याय की घोषणा करने की शक्ति मिली। एक ऑनलाइन बाइबल संसाधन को देखने पर, मुझे पता चला कि बाइबल की जिस पुस्तक में "प्रिय" शब्द सबसे अधिक बार आता है, वह कोई और नहीं बल्कि 'सुलैमान का गीत' (Song of Solomon) है। इस शब्द वाले कई पदों में से, मैंने 'सुलैमान का गीत' 7:10 पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया। इस पद को चुनने का मेरा कारण इस विचार में निहित था कि जिस तरह यीशु परमेश्वर पिता के हैं—जो उनसे प्रेम करते हैं—और जिस तरह परमेश्वर पिता अपने इकलौते पुत्र, यीशु के लिए तरसते हैं, ठीक उसी तरह हम भी यीशु के हैं—जो हमसे प्रेम करते हैं—और ठीक उसी तरह यीशु भी हमारे लिए तरसते हैं। जब मैंने इस सत्य पर विचार किया, तो मेरे हृदय को गहरी शांति मिली, और मैंने प्रार्थना की कि मैं प्रभु के उस प्रेम की विशालता—उसकी चौड़ाई, प्रचुरता और ऊँचाई—को सचमुच समझ सकूँ, जो मेरी ओर निर्देशित है।

दूसरी बात, मैंने *Beloved* (या *A Being of Love*) नामक पुस्तक पर विचार किया—जिसे यीउन ने पढ़ा था—और विशेष रूप से उस पहले पाठ पर, जिसका उसने उल्लेख किया था कि उसने इस पुस्तक से सीखा है: यह एहसास कि "अकेलापन कोई बुरी चीज़ नहीं है।" जब मैं "अकेलेपन" (solitude) के विषय पर विचार करता हूँ, तो सबसे पहले मेरे मन में हेनरी नौवेन की यह प्रेरणादायक बात आती है: "उस एकाकी निर्जन स्थान को अकेलेपन के एक बगीचे में बदल दो।" मुझे यह वाक्यांश सबसे पहले नौवेन की किसी पुस्तक में लगभग बीस साल पहले मिला था; इसने मुझ पर इतना गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है कि मैं इसे भूल नहीं पाया हूँ—और वास्तव में, यह आज भी मुझे प्रभावित करता रहता है। जब मैंने इन शब्दों के पीछे छिपे अर्थ पर चिंतन किया, तो मेरे विचार यीशु की ओर मुड़ गए, जिन्होंने स्वयं उस एकाकी निर्जन स्थान को अकेलेपन के एक बगीचे में बदल दिया था। जब कोई Synoptic Gospels (मत्ती, मरकुस और लूका के सुसमाचार) को पढ़ता है, तो उसे ऐसे विवरण मिलते हैं जिनमें बताया गया है कि यीशु, अपनी सार्वजनिक सेवा के दौरान, प्रार्थना करने के लिए कैसे किसी "एकांत स्थान" पर चले जाते थे (मरकुस 1:35; लूका 5:16)। हालाँकि, यीशु के प्रार्थना करने के लिए किसी "एकांत स्थान" पर जाने का विशेष ज़िक्र इन ग्रंथों में केवल दो बार ही आता है, लेकिन असल में, परमपिता परमेश्वर के साथ संवाद करने के लिए ऐसे एकांत स्थलों पर जाना उनकी नियमित आदत थी। जैसा कि लूका

22:39 में कहा गया है: "यीशु अपनी आदत के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गए, और उनके चेले भी उनके पीछे हो लिए।" वहाँ, यीशु ने अपने चेलों से कहा, "प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो" (पद 40)। फिर, उनसे लगभग एक पत्थर फेंकने जितनी दूरी पर हटकर, यीशु घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे (पद 41): "हे पिता, यदि तेरी इच्छा हो, तो यह प्याला मुझसे हटा ले; फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो" (पद 42)। ठीक यही वह बात है जो एक वीरान जंगल को एकांत के बगीचे में बदल देती है। हालाँकि, जब हम यीशु के उदाहरण का पालन करते हुए और इस दुनिया में प्रभु का कार्य करते हुए कभी-कभी भीड़ के बीच भी अकेलापन महसूस कर सकते हैं, तो वह अकेलापन—जैसा कि यीउन ने अपने लेखन में बताया है—कुछ ऐसा है जिसे हम परमेश्वर *के साथ* बिता सकते हैं। मैं इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देखता हूँ जिसके द्वारा प्रभु हमें एक ऐसी जगह पर आमंत्रित करते हैं जहाँ हम "यह सत्य खोज सकें कि हम वास्तव में कौन हैं।" प्रभु के इस आमंत्रण को स्वीकार करने के लिए, हमें—जैसा कि यीउन ने सुझाव दिया है—"अपनी व्यस्तता को एक तरफ रखना होगा" और अपने "खालीपन" को किसी बड़ी चीज़ के अवसर के रूप में देखना सीखना होगा। यीउन ने अपने खालीपन की भावना को "अपना हृदय खोलने" और उसे "किसी बेहतर चीज़—किसी वास्तव में अच्छी चीज़"—यानी, परमेश्वर के प्रेम से भरने के एक अवसर के रूप में स्वीकार किया। संक्षेप में, केवल तभी जब हम अपनी व्यस्तता को एक तरफ रखते हैं और अपने खालीपन को स्वीकार करते हैं, तभी हम वास्तव में अपने हृदयों को सबसे बेहतरीन चीज़ों से भर सकते हैं: परमेश्वर का प्रेम और परमेश्वर की इच्छा। इसीलिए, गेथसेमानी के बगीचे में, यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता से यह विनती की थी: "फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:39)। अंत में—तीसरा बिंदु—मैंने उस चौथी और अंतिम अंतर्दृष्टि पर विचार किया जो यीउन को *Beloved* किताब को पढ़ते और उस पर मनन करते हुए प्राप्त हुई थी: "मैं ईश्वर की और भी अधिक आनंदपूर्वक सेवा करना चाहती हूँ—अपनी योग्यता के लिए नहीं, बल्कि *उनके* (ईश्वर के) लिए।"

मुझे यह बात बहुत दिलचस्प लगी कि यीउन ने भगवान की सेवा और भी ज़्यादा खुशी से करने की इच्छा ज़ाहिर की—अपनी खुद की काबिलियत के लिए नहीं, बल्कि खुद भगवान के लिए। मेरी नज़र में, इसका कारण यह है कि अगर हम अपनी काबिलियत के बारे में ही सोचते रहें, उस पर ही निर्भर रहें, या उसके बारे में ही शेखी बघारते रहें, तो हम सचमुच खुशी से भगवान की सेवा नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो, अगर हमारे मन में अपनी काबिलियत के आधार पर किसी भी तरह के हक का ज़रा सा भी एहसास हो, तो हम खुशी भरे दिल

से भगवान की सेवा नहीं कर पाते। काबिलियत पर आधारित सोच हमें इंसानों से मिलने वाली तारीफ से मिलने वाली खुशी का पूरा आनंद लेने देती है, लेकिन यह हमें उस दिव्य आनंद का अनुभव करने से रोकती है जो सिर्फ़ भगवान ही दे सकते हैं। इसलिए, काबिलियत पर आधारित सोच के प्रति पूरी तरह से सावधान रहते हुए, हमें इसके बजाय भगवान की कृपा के एहसास से पूरी तरह भर जाना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं—उनकी कृपा की शक्ति से भगवान की सेवा करते हैं—तो हम उनकी सेवा और भी गहराई से कर पाते हैं, और उस कृतज्ञता और खुशी से भर जाते हैं जो वह खुद हमें देते हैं।

एक और बात जिस पर मैं सोचना चाहता हूँ, वह मार्था और मरियम की बाइबिल की कहानी (लूका 10:38–42) से जुड़ी है, जिसका ज़िक्र यीउन ने अपनी लिखी बातों में हेनरी नौवेन के शब्दों के ज़रिए किया है: “असल में, वह [हेनरी नौवेन] यह तर्क देते हैं कि यीशु ने मार्था को सिर्फ़ इसलिए नहीं डांटा कि वह उनकी सेवा करने में बहुत ज़्यादा व्यस्त थी, बल्कि इसलिए डांटा क्योंकि उसकी अपनी अंदरूनी बेचैनी ही उसकी उस व्यस्तता का कारण थी। वह कहते हैं कि अगर हमारी गतिविधियाँ हमारी अपनी पहचान को लेकर किसी असुरक्षा से पैदा होती हैं, तो हो सकता है कि वे सचमुच भगवान के राज्य की सेवा न कर रही हों। ऐसे काम विश्वासहीनता के काम बन जाते हैं—जो कुछ साबित करने या खुद को दिखाने की बेताब ज़रूरत से प्रेरित होते हैं” (यीउन)। जब मैंने इस अंश को दोबारा पढ़ा, तो मुझे यह बात समझ में आई कि मार्था का बेचैन व्यवहार उसकी अपनी पहचान को लेकर एक असुरक्षा—यानी अपनी असली पहचान के बारे में पक्के विश्वास की कमी—से पैदा हुआ था। इसके विपरीत सोचें: अगर मार्था को यह पक्का विश्वास होता कि वह भगवान की प्यारी बेटी है, तो वह कभी भी ऐसा बेचैन व्यवहार नहीं करती। उसका दिल “सारी तैयारियों में उलझा हुआ” (पद 40) नहीं होता। और न ही वह यीशु से यह कहती, “हे प्रभु, क्या आपको इस बात की कोई परवाह नहीं है कि मेरी बहन ने मुझे सारा काम अकेले करने के लिए छोड़ दिया है? उससे कहिए कि वह मेरी मदद करे!” (पद 40, *समकालीन कोरियाई बाइबिल*)। संक्षेप में, यदि मार्था को अपनी पहचान के बारे में एक स्पष्ट और दृढ़ विश्वास होता—कि वह परमेश्वर की एक प्रिय बेटी है—तो वह "बहुत सी बातों को लेकर चिंतित और परेशान" (पद 41) नहीं होती; बल्कि, उसे यह एहसास होता कि "केवल कुछ ही चीज़ों की ज़रूरत है—या वास्तव में केवल एक की" (पद 42)। अपनी बहन मैरी की तरह, वह भी "बेहतर हिस्सा" चुनती—यानी प्रभु के चरणों में बैठकर उनके वचनों को सुनना (पद

39, *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल*)। इस पर विचार करते हुए मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि परमेश्वर के प्रिय बेटों और बेटियों के रूप में हमारी पहचान के बारे में एक स्पष्ट और अटूट विश्वास रखना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। इसे एक ही वाक्यांश में सारांशित करें, तो यह हेनरी नौवेन की उस किताब का शीर्षक है जिसे यीउन ने पढ़ा था: *Beloved* (प्रिय)। यदि हम इस विश्वास को दृढ़ता से थामे रहते हैं कि, "मैं परमेश्वर का एक प्रिय संतान हूँ!"—एक ऐसा प्राणी जिसे वह संजोकर रखता है—तो "प्रिय" होने के उस आश्वासन से स्वाभाविक रूप से निकलने वाले कार्य (या सेवा के कार्य) कभी भी असुरक्षा से ग्रस्त नहीं होंगे (जैसे कि चिंता करना, घबराना, या अपनी तुलना अपने आस-पास के लोगों से करना)। इसके बजाय, हम प्रभु की नज़रों में "बेहतर हिस्सा" चुनेंगे—यानी उनके चरणों में बैठकर, उनके वचनों को सुनकर और उनकी आज्ञा मानकर जीवन जीना।

मैं अब इस चर्चा को समाप्त करना चाहूँगा। "हेनरी नौवेन की *Beloved* के साथ पिछले वर्ष पर चिंतन" नामक एक लेख में, यीउन ने निम्नलिखित बातें लिखीं: "अंततः, यह किताब केवल एक माध्यम है जो मुझे इस बात के प्रति अधिक सचेत होने में मदद करती है कि परमेश्वर मेरे दैनिक जीवन में किस तरह से कार्य कर रहा है और अपनी उपस्थिति दर्शा रहा है। मुझे आशा है कि यह चिंतन मुझे—और मेरे जीवन में अन्य लोगों को भी—यह याद दिलाने का काम करेगा कि परमेश्वर वास्तव में वास्तविक (जीवित) है और सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। वह इस तरह के आशीषों के माध्यम से मुझे लगातार आश्चर्यचकित करता रहता है। अनुग्रह सहित, कैरिस।" जैसा कि यीउन ने कहा है, हमारा परमेश्वर वास्तव में जीवित है! मैं कृतज्ञता से भर जाता हूँ कि हमारे जीवित परमेश्वर ने अपनी प्रिय बेटी, यीउन को इस तरह से—विशेष रूप से हेनरी नौवेन की किताब, *Beloved* के माध्यम से—आशीष देने का चुनाव किया है। जब भी मैं अपने तीनों बच्चों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तो मैं उनमें से प्रत्येक के लिए उनके नामों के अर्थ के अनुरूप प्रार्थनाएँ अर्पित करता हूँ; उसका अंग्रेज़ी नाम, "कैरिस," ग्रीक भाषा में "अनुग्रह" (grace) का अर्थ रखता है (यह नाम मैंने अपने पहले बच्चे को भी दिया था—एक बच्ची जिसका नाम "चारिस" था और जिसकी मृत्यु मेरी ही गोद में हुई थी)। इसके अलावा, उसका कोरियाई नाम "यीउन" है, जिसका अर्थ है "यीशु का अनुग्रह।" इसलिए, जब भी मैं उसकी ओर से ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, तो मैं कहता हूँ: "हे ईश्वर, मेरी प्रिय यीउन को वह अंतर्दृष्टि प्रदान कर, जिससे वह तेरे अनुग्रह को सचमुच समझ सके; ताकि वह ऐसी इंसान बन सके जो दूसरों तक भी उस अनुग्रह को पहुँचाए।" और अब, मुझे यह

सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि मैं—यीउन के जीवन के माध्यम से ही—ईश्वर के उस अनुग्रह और आशीर्वाद का अनुभव कर सकूँ, जिससे यह सिद्ध होता है कि मेरी अपनी अयोग्यता के बावजूद भी, ईश्वर मेरी इस विनम्र प्रार्थना का उत्तर सचमुच दे रहे हैं। जैसा कि यीउन ने ज़िक्र किया है, मैं प्रार्थना करता हूँ कि उसका यह चिंतन-लेख—जिसका शीर्षक है "हेनरी नौवेन की *Beloved* के साथ बीते वर्ष पर चिंतन"—और साथ ही उसके शब्दों को पढ़ने के बाद मेरे द्वारा लिखा गया यह प्रत्युत्तर, आप सभी को यह याद दिलाने का माध्यम बनें कि ईश्वर सचमुच वास्तविक (और जीवित) हैं, और वे निरंतर सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

आपको अपने बच्चों को जाने देना ही होगा!

“क्या तुम्हारे सामने पूरी ज़मीन नहीं है? चलो, हम अलग हो जाते हैं। अगर तुम बाईं ओर जाओगे, तो मैं दाईं ओर जाऊँगा; अगर तुम दाईं ओर जाओगे, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।” (उत्पत्ति 13:9)

जिन जोड़ों को मैं अभी जानता हूँ, उनमें से कई सास और बहू के बीच झगड़े का सामना कर रहे हैं—जिसे आम तौर पर "सास-बहू का झगड़ा" कहा जाता है। बहुओं के नज़रिए से, यह स्थिति अक्सर बहुत ज़्यादा परेशान करने वाली होती है। हालाँकि इस मुश्किल के पीछे कई वजहें हो सकती हैं, लेकिन मेरी राय में, सबसे दुखद पहलू वह पति है जो अपनी पत्नी और अपनी माँ के बीच बेबस होकर डगमगाता रहता है। पत्नियों के नज़रिए से, अपने पतियों को—वही मर्द जिन्हें उनका साथी होना चाहिए—असल में "अजनबी" बनते देखना दिल तोड़ने वाला होता है, जो हमेशा अपनी पत्नियों के बजाय अपनी माँ का पक्ष लेते हैं। यह परेशानी तब और बढ़ जाती है जब पत्नियों को लगता है कि उनके पति वही हैं जिन्हें आम तौर पर "मम्मी के लाडले" कहा जाता है। जब कोई पत्नी देखती है कि उसका पति अपनी माँ के प्रति बहुत ज़्यादा लगाव और दीवानगी दिखा रहा है—एक ऐसा लगाव जो उसकी पत्नी के साथ उसके लगाव से भी ज़्यादा मज़बूत है—तो वह पूरी तरह से हताश हो जाती है। हो सकता है कि उसने अभी-अभी अपने पति से बात की हो, लेकिन वह तुरंत अपनी माँ के साथ फिर से उलझ जाता है, और उनकी हर बात को आज्ञाकारी होकर मानता है। पत्नी को ऐसा लगता है जैसे उसके अंदर ही अंदर गुस्सा फूट रहा हो; उसे शायद अपने पति और उसकी माँ के बीच मौजूद अत्यधिक लगाव, दीवानगी और उलझन से घुटन महसूस होती है। तो फिर, सास और बहू के बीच पैदा हुए इस झगड़े को हम कैसे सुलझाएँ? इस खास सास-बहू के झगड़े के अलावा, बहू और उसके पति के माता-पिता के बीच, या दामाद और उसकी

पत्नी के माता-पिता के बीच भी तनाव पैदा हो सकता है। इसके अलावा, परिवार के अंदर, पति-पत्नी के बीच शादी से जुड़े झगड़ों के साथ-साथ, माता-पिता और बच्चों के बीच, या भाई-बहनों के बीच भी झगड़ों की काफी गुंजाइश होती है। जब हम खुद को ऐसे झगड़ों के बीच पाते हैं, तो हमें असल में क्या करना चाहिए? मुझे आज के धर्मग्रंथ के अंश—उत्पत्ति 13:9—में वह सिद्धांत मिला; विशेष रूप से एक ही वाक्यांश में, जो चाचा अब्राम ने अपने भतीजे लूत से कहा था: "तुम चले जाओ।" वह सिद्धांत बस इतना है: "इंसान को जाने देना चाहिए।"

कृपया आज के पाठ, उत्पत्ति 13:9 पर नज़र डालें: "क्या सारा देश तुम्हारे सामने नहीं है? चलो, हम अलग हो जाएँ। यदि तुम बाईं ओर जाओगे, तो मैं दाईं ओर जाऊँगा; यदि तुम दाईं ओर जाओगे, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।" ये शब्द चाचा अब्राम ने अपने भतीजे लूत से कहे थे; अब्राम ने लूत से कहा, "मुझसे दूर चले जाओ।" अब्राम ने लूत से ऐसा क्यों कहा? इसका कारण यह था कि वे आपस में झगड़ा न करें। उत्पत्ति 13:8 पर नज़र डालें: "तब अब्राम ने लूत से कहा, 'चलो, तुम्हारे और मेरे बीच, या तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न हो, क्योंकि हम करीबी रिश्तेदार हैं'" [(समकालीन कोरियाई बाइबिल) "उस समय, अब्राम ने लूत से कहा, 'हम रिश्तेदार हैं। चलो, तुम्हारे और मेरे बीच, या मेरे चरवाहों और तुम्हारे चरवाहों के बीच कोई झगड़ा न होने दें'"]। रिश्तेदार होने के बावजूद, अब्राम और लूत सचमुच झगड़ा कर रहे थे। मुझे ऐसा लगता है कि झगड़ा सीधे तौर पर अब्राम और लूत के बीच नहीं था, बल्कि अब्राम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के बीच था। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि बाइबिल के संशोधित कोरियाई संस्करण में कहा गया है, "चलो, हम [उन्हें] आपस में झगड़ा न करने दें।" दूसरे शब्दों में, क्योंकि उसके अपने चरवाहे और उसके भतीजे लूत के चरवाहे आपस में झगड़ा कर रहे थे, इसलिए अब्राम ने लूत से बात की और प्रस्ताव रखा कि वे अपने बीच के इस झगड़े को खत्म कर दें। तो फिर, वे चरवाहे क्यों झगड़ा कर रहे थे? इसका कारण उत्पत्ति 13:6 में बताया गया है: "वह देश उनके एक साथ रहने के लिए काफी नहीं था, क्योंकि उनकी संपत्ति इतनी ज़्यादा थी कि वे एक साथ नहीं रह सकते थे" [(समकालीन अंग्रेजी संस्करण) "अब्राम और लूत के पास इतने ज़्यादा पशु थे कि उस देश के चारागाह उनके एक साथ रहने के लिए काफी नहीं थे"]। अब्राम के चरवाहों और लूत के चरवाहों के आपस में झगड़ने का कारण यह था कि अब्राम और लूत दोनों के पास इतने विशाल झुंड थे कि जिस इलाके में वे साथ रह रहे थे, वहाँ की चरागाहें उन दोनों के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त थीं। आज के ज़माने के शब्दों में सीधे-सीधे कहें तो, वे इसलिए झगड़े क्योंकि उनके पास बहुत ज़्यादा दौलत थी—बहुत ज़्यादा "संपत्ति" थी। सच तो यह है कि आज भी कई पारिवारिक झगड़ों की जड़ अक्सर क्या होती है—संपत्ति ही तो होती है? भाई-बहन आपस में क्यों लड़ते हैं?

क्या यह अपने माता-पिता की संपत्ति को लेकर नहीं होता? जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मेरे मन में एक सवाल उठा: अब्राम और लूत को इतनी बड़ी "संपत्ति" (दौलत) आखिर मिली कैसे (पद 6)? संक्षेप में, मुझे ऐसा लगता है कि अब्राम से किए गए अपने वादे (12:1–3) के मुताबिक, परमेश्वर ने उसे भरपूर आशीष दी। उसने कनान देश में, जहाँ अब्राम रह रहा था, एक भयंकर अकाल भी पड़ने दिया, जिसके कारण अब्राम को मिस्र जाना पड़ा (पद 10, Contemporary English Version)। वहाँ, अपनी सुंदर पत्नी, साराई की वजह से, परमेश्वर ने मिस्र के राजा—फ़िरौन—को प्रेरित किया कि वह अब्राम के साथ बहुत उदारता से पेश आए, और उसे भेड़ें, मवेशी, गधे, नौकर-नौकरानियाँ और ऊँट भेंट करे (पद 16, Contemporary English Version)। नतीजतन, अब्राम पशुधन, चाँदी और सोने के मामले में बेहद अमीर हो गया (13:2, Contemporary English Version)। लेकिन फिर, अब्राम के भतीजे, लूत के पास इतनी बड़ी मात्रा में पशुधन कैसे आया? बेशक, जहाँ उत्पत्ति 13:5 में कहा गया है कि "लूत के पास भी झुंड, मवेशी और तंबू थे," वहीं पद 6 में आगे कहा गया है कि "अगर वे साथ रहते तो वह ज़मीन उन दोनों का गुज़ारा नहीं कर सकती थी, क्योंकि उनकी संपत्ति बहुत ज़्यादा थी" (NIV)। इससे यह सवाल उठता है: लूत के पास इतनी ज़्यादा मात्रा में पशुधन कैसे आया? हालाँकि हम पूरी निश्चितता के साथ यह नहीं जान सकते क्योंकि बाइबल में इसका स्पष्ट रूप से ज़िक्र नहीं है, मेरा मानना है कि लूत के पशुधन की दौलत के दो स्रोत थे: पहला, उसे संभवतः अपने दिवंगत पिता, हारान से विरासत में संपत्ति मिली होगी; और दूसरी बात—जिसे परमेश्वर के आशीर्वाद से और भी मदद मिली—उन्हें शायद अपने चाचा अब्राम से काफ़ी सारे जानवर मिले होंगे, जिनके अपने झुंड बहुत ज़्यादा बढ़ गए थे (देखें: "चलो हम झगड़ा न करें")। सच में, अब्राम और लूत के पास इतने बड़े झुंड थे कि उनके अपने-अपने चरवाहे आपस में झगड़ने लगे; इस झगड़े की वजह यह थी कि जिस इलाके में वे रह रहे थे, वहाँ चराने के लिए ज़मीन इतनी नहीं थी कि अब्राम और लूत दोनों एक साथ रह सकें। यहाँ जिस "ज़मीन पर वे रह रहे थे" का ज़िक्र है, उसका मतलब उस इलाके से है जहाँ अब्राम मिस्र छोड़ने के बाद आए थे—अपनी पत्नी, अपने भतीजे लूत, और अपनी सारी चीज़ों को साथ लेकर—और दक्षिणी कनान में नेगेव तक का सफ़र किया था (पद 1)। वहाँ से, उन्होंने "उत्तर की ओर बेतेल और ऐ के बीच के इलाके तक अपना सफ़र जारी रखा—ठीक उसी जगह जहाँ उन्होंने पहले अपना तंबू लगाया था और एक वेदी बनाई थी" (पद 3)। यहाँ "पहले" शब्द का मतलब उत्पत्ति 12:5–8 से है, जिसमें बताया गया है कि कैसे अब्राम—अपनी पत्नी साराई, अपने भतीजे लूत, और उन सभी चीज़ों और नौकरों को लेकर जो उन्होंने हारान में हासिल किए थे—कनान देश में दाखिल हुए (पद 5)। उस ज़मीन से गुज़रते हुए शकेम में मोरे के बांज

के पेड़ तक पहुँचने के बाद (पद 6)—जहाँ उन्हें परमेश्वर का वादा मिला था—अब्राम ने "वहाँ एक वेदी बनाई" (पद 7)। फिर वे "वहाँ से दक्षिण की ओर बढ़े और बेतेल और ऐ के बीच अपना तंबू लगाया—बेतेल पश्चिम में और ऐ पूरब में था। वहाँ भी उन्होंने एक वेदी बनाई और प्रभु की आराधना की" (पद 8)। ठीक इसी जगह पर—जहाँ उन्होंने परमेश्वर की आराधना की थी—अब्राम (चाचा) और लूत (भतीजे) के चरवाहों के बीच उन "चीज़ों" (13:6) को लेकर झगड़ा हो गया, जो उन्हें परमेश्वर के आशीर्वाद के तौर पर मिली थीं। तो फिर, अब्राम ने इस झगड़े—इस टकराव—को कैसे सुलझाया?

उत्पत्ति 13:9 को फिर से देखें: "क्या यह सारी ज़मीन तुम्हारे सामने नहीं है? चलो हम अलग हो जाते हैं। अगर तुम बाईं ओर जाओगे, तो मैं दाईं ओर जाऊँगा; अगर तुम दाईं ओर जाओगे, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा।" अब्राम ने अपने भतीजे लूत के साथ हुए झगड़े को कैसे सुलझाया? उसने लूत से कहा, "मुझे छोड़ दो" (*मॉडर्न मैन बाइबल* इसका अनुवाद इस तरह करती है, "चलो हम अलग हो जाते हैं")। क्या अब्राम के लिए अपने भतीजे लूत से ऐसी बात कहना सचमुच आसान था? मेरा मानना है, बिना किसी शक के, कि ऐसा नहीं था। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि, उत्पत्ति 12:4–5 के अनुसार, जब वाचा के परमेश्वर ने अब्राम को आज्ञा दी—यह कहते हुए, "अपनी जन्मभूमि, अपने रिश्तेदारों और अपने पिता के परिवार को छोड़ दो, और उस देश में जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा" (पद 1, *मॉडर्न मैन बाइबल*)—तो अब्राम ने उस आज्ञा का पालन करते हुए अपनी जन्मभूमि, अपने रिश्तेदारों और हारान में अपने घर को "लूत के साथ" छोड़ा। दूसरे शब्दों में, यह देखते हुए कि अब्राम ने अपने भतीजे लूत—अपने "रिश्तेदार" (पद 1)—को अपने साथ लिया था जब वह अपनी जन्मभूमि हारान से निकला था, मेरा मानना है कि वह एक ऐसा चाचा था जो लूत से बहुत गहरा प्रेम करता था। विशेष रूप से, यह विचार करते हुए कि अब्राम का भाई हारान (लूत का पिता) कसदियों के ऊर में मर गया था, जबकि उनके पिता तेरह अभी भी जीवित थे (11:28, *मॉडर्न मैन बाइबल*), और यह भी कि अब्राम स्वयं निःसंतान था क्योंकि उसकी पत्नी साराई गर्भधारण नहीं कर सकती थी (पद 30, *मॉडर्न मैन बाइबल*), मुझे लगता है कि वह अपने भतीजे लूत से इतना अधिक प्रेम करता था कि वह उसे अपने ही बेटे जैसा मानता था। फिर भी अब, अब्राम लूत से कहता है: "मुझे छोड़ दो। यदि तुम बाईं ओर जाओगे, तो मैं दाईं ओर जाऊँगा; यदि तुम दाईं ओर जाओगे, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा" [(मॉडर्न मैन बाइबल) "उस देश को चुनो जिसकी तुम इच्छा करते हो।" उसने कहा, "यदि

तुम पूर्व की ओर जाओगे, तो मैं पश्चिम की ओर जाऊँगा; और यदि तुम पश्चिम की ओर जाओगे, तो मैं पूर्व की ओर जाऊँगा" (13:9)]। यहाँ, "पूर्व" का तात्पर्य "ऐ" (Ai) की दिशा से है (पद 3), जबकि "पश्चिम" का तात्पर्य "बेतेल" (Bethel) की दिशा से है (पद 3)। "ऐ" के संबंध में और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, पूर्व की ओर का क्षेत्र—ऐ की तरफ—ठीक वही स्थान था जहाँ सोअर, सदोम और अमोरा स्थित थे। अब्राम और लूत ने अपने तंबू गाड़ लिए थे और "बेतेल और ऐ के बीच" (पद 3) बस गए थे; चूंकि उनके चरवाहे इस इलाके में अपने विशाल पशु-धन को चरा रहे थे, इसलिए अब्राम ने, अपने-अपने चरवाहों के बीच किसी भी और झगड़े को रोकने की इच्छा से (पद 8), लूत से कहा, "कृपया मुझसे अलग हो जाओ।" फिर उन्होंने प्रस्ताव दिया कि यदि लूत पूरब की ओर जाना चुनते हैं, तो वे स्वयं पश्चिम की ओर जाएँगे, और यदि लूत पश्चिम की ओर जाना चुनते हैं, तो वे स्वयं पूरब की ओर जाएँगे (पद 9)। क्या अपने भतीजे लूत से इस तरह बात करना सचमुच अब्राम के लिए सबसे अच्छा विकल्प था?

परिवार के भीतर, जब माता-पिता और बच्चों के बीच झगड़े होते हैं, तो माता-पिता के लिए अपने बच्चे से यह कहना कि, "मुझे छोड़ दो," यकीनन कोई आसान काम नहीं होता। यह बात तब और भी ज़्यादा सच हो जाती है जब वे दो या तीन दशकों तक साथ रहे हों; बच्चे को दूर भेजना—भले ही झगड़ा सुलझाने और माता-पिता व बच्चे के बीच तालमेल बिठाने के लिए ही क्यों न हो—एक बेहद मुश्किल काम होता है। इसके अलावा, अगर बच्चे में अभी तक आज़ादी की भावना विकसित नहीं हुई है—और अगर माता-पिता व बच्चे के बीच का रिश्ता 'को-डिपेंडेंट' (एक-दूसरे पर अत्यधिक निर्भर) हो गया है—तो मेरा मानना है कि, माता-पिता के नज़रिए से, बच्चे को सचमुच जाने देना लगभग नामुमकिन होता है। [यहाँ, "को-डिपेंडेंसी" (या "को-एडिक्शन") का मतलब आपसी रिश्तों में एक ऐसी व्यवहारिक स्थिति से है जहाँ एक व्यक्ति दूसरे की लत, नशे की लत, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं, बचपने, गैर-ज़िम्मेदारी, या कमज़ोर प्रदर्शन को "बढ़ावा" देता है। को-डिपेंडेंसी की मुख्य पहचान दूसरों पर अत्यधिक निर्भरता होती है—अक्सर ऐसा अपनी अहमियत साबित करने या अपनी खुद की पहचान बनाने की कोशिश में किया जाता है। हालाँकि इसकी परिभाषाएँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन आम तौर पर को-डिपेंडेंसी को एक ऐसी व्यवहारिक स्थिति के तौर पर परिभाषित किया जाता है—जो कभी दबे-छिपे, कभी किसी खास स्थिति में, या कभी-कभी अचानक सामने आती है—और जो 'डिपेंडेंट

पर्सनैलिटी डिसऑर्डर' (निर्भर व्यक्तित्व विकार) से काफी मिलती-जुलती होती है (इंटरनेट स्रोत)।] बेशक, कोई भी व्यक्ति अपने और अपने बच्चे के बीच शारीरिक दूरी बनाने की हर मुमकिन कोशिश कर सकता है। लेकिन, समस्या यह है: माता-पिता अपने बच्चे को शारीरिक तौर पर चाहे कितनी भी दूर क्यों न भेज दें, अगर वे मानसिक या भावनात्मक दूरी बनाने में नाकाम रहते हैं, तो उन्होंने असल में बच्चे को जाने नहीं दिया है। असल में, मैं तो यह कहूँगा कि भावनात्मक अलगाव के बिना शारीरिक दूरी बनाने से, बच्चे के प्रति मानसिक और भावनात्मक लगाव और भी ज़्यादा बढ़ सकता है। इसी वजह से, मेरा मानना है कि अपनी पूरी ज़िंदगी बच्चों के इर्द-गिर्द ही गुज़ार देना—खास तौर पर माँओं के लिए—बेहद नुकसानदायक होता है। अक्सर कोरियन नाटकों में यह स्थिति देखने को मिलती है, जहाँ एक माँ अपने बच्चे से कहती है: "क्या तुम्हें ज़रा भी अंदाज़ा है कि मैंने तुम्हारे लिए कितनी कुर्बानियाँ दी हैं...?" जब मैंने एक ऐसा दृश्य देखा जिसमें एक माँ अपनी ममता और समर्पण की बातें कर रही थी—और यह दावा कर रही थी कि उसने अपने बच्चे से पूरी शिद्दत और खुद को कुर्बान करके प्यार किया है—तो मुझे यह एहसास हुआ कि, भले ही वह अपने नज़रिए से इस बात को सच मानती हो, लेकिन अगर वह माँ अपने बच्चे को जाने नहीं देती, तो उसका यह "नेक इरादों वाला प्यार" असल में उस बच्चे के लिए एक बेहद तकलीफ़देह और दर्दनाक अनुभव बन सकता है। यह बात तब और भी ज़्यादा सच हो जाती है, जब बच्चा पहले से ही शादीशुदा हो और उसकी पत्नी हो; अगर माँ अभी भी अपने बच्चे से चिपकी रहती है और उसे जाने नहीं देती, तो उसका "सबसे अच्छा प्यार" उस बच्चे के लिए अपराध-बोध और दुख का बोझ बन जाता है, क्योंकि वह अपनी पत्नी और अपनी माँ के बीच फँसा होता है। कहने की ज़रूरत नहीं कि अपनी प्यारी पत्नी और अपनी प्यारी माँ के बीच फँसे बेटे की हालत सचमुच दयनीय होती है। इस बात की बहुत कम संभावना है कि उसका वैवाहिक रिश्ता सुखद होगा। ऐसी पत्नी के लिए, जिसका पति ऐसा हो, शादीशुदा ज़िंदगी कितनी तकलीफ़देह होगी? ज़रा उस पत्नी की भावनाओं की कल्पना कीजिए, जो पहले से ही अपनी सास के साथ बिगड़े रिश्तों को लेकर रो रही है, और तभी उसका पति उसके पास आता है—ज़ाहिर तौर पर उसे दिलासा देने के लिए—लेकिन फिर अपनी ही माँ का पक्ष लेने लगता है। वह ऐसे पति पर कैसे भरोसा या निर्भर रह सकती है, जो अपनी पत्नी की रक्षा करने में असमर्थ है—यहाँ तक कि अपनी ही माँ से भी नहीं बचा सकता? जो माँ अपने बच्चे को जाने नहीं देती, वह न केवल उस बच्चे की ज़िंदगी बर्बाद करने का जोखिम उठाती है, बल्कि पूरी संभावना है कि वह उसकी शादी भी तबाह कर देगी।

जब अब्राम ने अपने भतीजे लूत से कहा, "कृपया मुझसे अलग हो जाओ। अगर तुम बाईं ओर (पश्चिम) जाओगे, तो मैं दाईं ओर जाऊँगा; अगर तुम दाईं ओर (पूर्व) जाओगे, तो मैं बाईं ओर जाऊँगा" (पद 9), तो लूत ने पूर्व दिशा चुनी। उसने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि जब उसने "अपनी आँखें उठाईं और यरदन के पूरे इलाके को ज़ोअर तक देखा, तो उसने पाया कि पूरी ज़मीन में पानी की अच्छी व्यवस्था थी—यहोवा के बाग़ की तरह, मिस्र देश की तरह—इससे पहले कि यहोवा सदोम और अमोरा को नष्ट करता" (पद 10)। उसके इस चुनाव का कारण बस यही था कि उसकी नज़र में, पूर्वी इलाका एक ऐसी जगह थी जहाँ "पूरी ज़मीन... ज़ोअर तक पानी से भरपूर थी" (पद 10)। यह देखते हुए कि उसके पास पशुओं का एक बड़ा झुंड था, पानी की भरपूर आपूर्ति वाली जगह निस्संदेह—उसकी भौतिक आँखों को—सबसे समझदारी भरा और सही चुनाव लगी होगी। खास तौर पर, लूत की नज़र में, पूरब की ज़मीन "यहोवा के बाग़ जैसी, मिस्र देश जैसी" दिखाई दी ["वह ज़मीन अदन के बाग़ जैसी और मिस्र की उपजाऊ ज़मीन जैसी थी" (मॉडर्न मैन बाइबल)] (पद 10)। लूत ने एक व्यावहारिक चुनाव किया था। मेरी राय में, उसके फ़ैसले का आधार उसकी अपनी ढेर सारी संपत्ति (दौलत) को बचाना था। हालाँकि, जिस बात पर उसने ध्यान नहीं दिया, वह यह थी कि उसने पूरब का जो इलाका चुना था, वह ऐसी जगह थी जहाँ "सदोम के लोग बहुत ज़्यादा दुष्ट थे और यहोवा के ख़िलाफ़ बहुत ज़्यादा पाप कर रहे थे" (पद 13, मॉडर्न मैन बाइबल), और यह "यहोवा द्वारा सदोम और अमोरा को नष्ट करने से पहले" की बात थी (पद 10, मॉडर्न मैन बाइबल)। नतीजतन, जब सदोम, अमोरा, अदमा, सबोईम और बेला (यानी सोअर) के राजा सिद्दीम की घाटी में एलाम (कदोर्लाओमेर), गोईम (तिदाल), शिनार (अम्रापेल) और एल्लासार (अर्योक) के राजाओं के ख़िलाफ़ लड़ने गए—और हार गए—तो चारों विजयी राजाओं ने सदोम और अमोरा की सारी दौलत और सामान लूट लिया। इस दौरान, लूत—अब्राम का भतीजा जो सदोम में रह रहा था—को बंदी बना लिया गया, और उसकी सारी संपत्ति भी लूट ली गई (उत्पत्ति 14:8–12, मॉडर्न मैन बाइबल)। इसके अलावा, सदोम और अमोरा शहरों में, लूत को उन बेक़ानून लोगों के बेलगाम व्यवहार के कारण बहुत ज़्यादा दुख उठाना पड़ा (2 पतरस 2:7)। दूसरे शब्दों में, वह बहुत ज़्यादा परेशान था, क्योंकि वह दिन-ब-दिन उन अधर्मी लोगों के बुरे काम देखता और सुनता रहता था (पद 8, मॉडर्न मैन बाइबल)। पूरब को चुनने के लूत के फ़ैसले का ठीक यही नतीजा निकला। यह लूत के व्यावहारिक चुनाव का सीधा परिणाम था। अपनी संपत्ति (दौलत) को बचाने की कोशिश में पूरब को चुनकर, वह अंततः—भौतिक अर्थों में—युद्धबंदी बन गया और उसकी सारी संपत्ति लूट ली गई; इसके अलावा, उसकी धर्मी आत्मा... ...को भी नुकसान पहुँचा (पद 8)। क्या अब्राम को सच में ये सारी बातें पता थीं, जब उन्होंने

अपने भतीजे लूत से कहा था, "मुझसे अलग हो जाओ" (उत्पत्ति 13:9)? ज़ाहिर है, उन्हें ये बातें पता नहीं हो सकती थीं। अगर अब्राम को इन बातों का पता होता, तो वे चुपचाप खड़े होकर यह नहीं देखते रहते, जब उनके भतीजे लूत ने पूरब की दिशा चुनी थी। हालाँकि, हम जिस बात को पक्के तौर पर जान सकते हैं, वह यह है कि अब्राम ने अपने भतीजे लूत को पहली पसंद चुनने का अधिकार दिया था (पद 9)। और मेरा मानना है कि उन्होंने लूत के फ़ैसले का सम्मान किया। इसका मतलब यह है कि जब लूत ने पूरब की दिशा चुनी, तो अब्राम ने बिना कोई भी उलाहना भरा शब्द कहे, उनकी पसंद का सम्मान किया—जैसे कि, "तुमने पूरब की दिशा क्यों चुनी?" या "मैं समझता हूँ कि तुमने यह इसलिए चुना, क्योंकि ज़ोअर तक की सारी ज़मीन में पानी की अच्छी व्यवस्था है, लेकिन क्या सिर्फ़ अपने जानवरों की भलाई के लिए पूरब की दिशा चुनना सही है?" या "तुम्हें सिर्फ़ अपनी दौलत बचाने पर ध्यान नहीं देना चाहिए; तुम्हें सावधानी से परमेश्वर की इच्छा को समझना चाहिए और कोई भी फ़ैसला लेने से पहले प्रार्थना करनी चाहिए।" मैंने अक्सर अपने तीनों बच्चों से कुछ इसी तरह की बात कही है: "तुम्हारे लिए गलतियाँ करना और अपनी पसंद के ज़रिए नाकामयाबी का सामना करना ठीक है—बशर्ते कि तुम उन गलतियों और नाकामयाबियों से कुछ सीख सको। हालाँकि, तुम्हें अपनी पसंद के नतीजों की ज़िम्मेदारी लेना सीखना होगा।" मैं अक्सर अपने बच्चों से इस तरह इसलिए बात करता था, क्योंकि उनके पिता के तौर पर, मैं फ़ैसले लेने में उनकी आज़ादी का सम्मान करना चाहता था। इसके अलावा, मैं इस सोच पर चलता हूँ कि—बिल्कुल मेरी तरह—वे भी अनजाने में गलत फ़ैसले ले सकते हैं और गलतियों तथा नाकामयाबियों का सामना कर सकते हैं; फिर भी, मेरा मानना है कि यह बहुत ज़रूरी है कि वे उन सबकों को सीखें, जो प्रभु ऐसे कड़वे अनुभवों के ज़रिए हममें से हर किसी को सिखाना चाहते हैं। और एक बात और: मेरी यह इच्छा है कि न सिर्फ़ मैं, बल्कि मेरे तीनों बच्चे भी ऐसे इंसान बनें, जो ज़िम्मेदारी लेना जानते हों। क्योंकि मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि हम ऐसे मसीही बनें, जो जब कोई गलत फ़ैसला लेते हैं और उस फ़ैसले के कड़वे नतीजों का सामना करते हैं, तो उन नतीजों से भागने की कोशिश न करें, बल्कि उनकी पूरी ज़िम्मेदारी लें। यह... अगर हम इस स्थिति को उनके चाचा, अब्राम के नज़रिए से देखें, तो हम पाते हैं कि क्योंकि लूत ने पूरब की दिशा चुनी थी, इसलिए अब्राम ने उस पसंद के कड़वे नतीजों को अपनी आँखों से देखा—यानी, लूत को युद्धबंदी के तौर पर पकड़ लिया गया और उसकी सारी संपत्ति लूट ली गई (उत्पत्ति 14)। इसके अलावा, परमेश्वर के साथ अपनी बातचीत में अब्राम ने पूछा, “क्या आप सचमुच नेक लोगों को दुष्टों के साथ मिटा देंगे? मान लीजिए कि शहर [सोदोम और अमोरा, जहाँ लूत रहता था] में पचास नेक लोग हैं—तो क्या आप उस जगह को नष्ट कर देंगे और उन पचास नेक लोगों

की खातिर उसे बख्शेंगे नहीं जो वहाँ हैं?" (18:23–24)। फिर वह संख्या को कम करने के लिए मोलभाव करता रहा—45, 40, 30, 20, और यहाँ तक कि 10 तक—जब तक कि उसने अंत में परमेश्वर से यह नहीं पूछ लिया, "क्या होगा अगर वहाँ केवल दस लोग ही मिलें?" (पद 25–32)। उस समय, परमेश्वर ने उत्तर दिया, "उन दस लोगों की खातिर, मैं इसे नष्ट नहीं करूँगा" (पद 32)। हालाँकि, अंततः, जब परमेश्वर ने सोदोम और अमोरा को नष्ट किया—ऐसे शहर जहाँ दस नेक लोग भी नहीं थे—तो उसने "अब्राहम को याद किया और लूत को उस तबाही से सुरक्षित बाहर निकाल लिया" (19:29, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इस प्रक्रिया के दौरान, अब्राहम "सुबह तड़के उठा और उसी जगह लौट आया जहाँ वह प्रभु के सामने खड़ा था; और जब उसने सोदोम और अमोरा तथा पूरे मैदान की ओर देखा, तो उसने ज़मीन से घना, काला धुआँ ऊपर उठते हुए देखा" (पद 27–28, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। उस पल अब्राहम की भावनाएँ कैसी रही होंगी? इस प्रकार, क्योंकि अब्राहम ने उदारतापूर्वक अपने भतीजे लूत को पहला चुनाव करने का मौका दिया था (13:9), इसलिए उसे उस निर्णय के परिणामस्वरूप लूत को भुगतने पड़े कड़वे परिणामों की पूरी हद को देखने के लिए विवश होना पड़ा। यदि अब्राहम को पहले से पता होता कि लूत का पूरब की ओर का चुनाव उसे जीवन में ऐसी कड़वाहट का अनुभव कराएगा—तो फिर, किस बात ने उसे पश्चिम की ओर चुनने के लिए प्रेरित किया होता? शायद यह एक माता-पिता के सच्चे हृदय को दर्शाता है: "मेरे लिए यह बेहतर है कि मैं स्वयं कष्ट सह लूँ, बजाय इसके कि मैं चुपचाप खड़ा होकर अपने बच्चे को कष्ट सहते हुए देखूँ।" फिर भी, क्या यह सचमुच अपने बच्चे से परमेश्वर जैसा प्रेम करना कहलाता है? निस्संदेह, परमेश्वर का प्रेम एक त्यागमय प्रेम है—इतना गहरा कि उसने अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को, हमारी खातिर क्रूस पर मरने दिया। लेकिन क्या ईश्वर का प्रेम सचमुच ऐसा है कि वह हमारे—यानी अपने ही बच्चों द्वारा किए गए—चुनावों का सम्मान नहीं करता? हालाँकि अब्राहम ने शायद अपने प्यारे भतीजे, लूत द्वारा किए गए चुनाव के परिणामों का पहले से अंदाज़ा नहीं लगाया था, लेकिन क्या पिता-ईश्वर हमसे इतना प्रेम नहीं करते कि वे हमारे चुनावों का सम्मान करें—भले ही वे चुनाव भटकाव भरे क्यों न हों—और ऐसा वे उन चुनावों से होने वाले परिणामों को भली-भांति जानते हुए भी करते हैं?

आज शनिवार की सुबह की हमारी प्रार्थना सभा खत्म होने के बाद, मैंने कुछ समय अकेले प्रार्थना करते हुए बिताया; परमेश्वर ने मेरे दिल में जो संदेश डाला था, उस पर सोचते हुए, मैंने अपने लिए, अपनी प्यारी पत्नी के

लिए, और हमारे तीन बच्चों के लिए उनसे प्रार्थनाएँ कीं। मैंने परमेश्वर से विश्वास के साथ माँगा कि वे मुझे अपनी प्यारी पत्नी और बच्चों को जाने देने—उन्हें अपनी देखभाल में सौंप देने—की कृपा प्रदान करें। बेशक, मेरी प्यारी पत्नी और मैं इस धरती पर तब तक अपना जीवन साथ-साथ बिताते रहेंगे जब तक कि मौत हमें अलग न कर दे; फिर भी, मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की कि मुझमें इतना विश्वास हो कि जब भी वह पहाड़ों पर जाए—जहाँ उसे दौड़ना, हाइकिंग करना, या रॉक क्लाइंबिंग करना पसंद है—तो मैं उसे "विदा कर सकूँ"—उसे परमेश्वर की सुरक्षा में सौंप सकूँ। जैसा कि मैंने पहले भी कई बार बताया है, जहाँ इब्रानियों 11:6 में कहा गया है, "बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है," वहीं मेरे लिए इसका व्यक्तिगत अर्थ यह है: "बिना विश्वास के, अपनी पत्नी का साथ देना मेरे लिए असंभव है।" *[हँसते हुए]* लेकिन सच कहूँ तो—ज़रा सोचिए कि एक पति होने के नाते मुझे कैसा महसूस होता होगा, जब वह घर आकर मुझे पहाड़ों में दौड़ने और वहाँ पहाड़ी शेरों या भालुओं से सामना होने की कहानियाँ सुनाती है! *[मुस्कुराते हुए]* और आपको क्या लगता है, मेरा दिल कितना दुखता होगा जब मैं ऑनलाइन खबरें पढ़ता हूँ कि अकेली हाइकिंग पर निकली किसी महिला की जान चली गई, या रॉक क्लाइंबिंग करते हुए लोगों का कोई समूह काल के गाल में समा गया? *[आह भरते हुए]* फिर भी, मैं अपनी प्यारी पत्नी का साथ देता रहता हूँ—बार-बार, विश्वास के साथ—उसे परमेश्वर के हाथों में सौंपकर। जहाँ तक मेरे प्यारे बेटे, डिलन की बात है, तो प्रभु ने उसके दिल में सेवा-कार्य के लिए एक खास लगन पैदा की है; वह अभी उसी ईसाई कैंपस मिनिस्ट्री में पूरे समय के कर्मचारी के तौर पर सेवा कर रहा है, जिससे वह अपने कॉलेज के दिनों में जुड़ा हुआ था। उसके एक साल के सेवा-कार्य की अवधि इस जुलाई के अंत में पूरी होने वाली है, लेकिन उसने अपनी इस प्रतिबद्धता को एक और साल के लिए बढ़ाने का फैसला किया है। इस सेवा-कार्य के साथ-साथ, डिलन एक ऐसी युवती के साथ रिश्ते में भी है, जिससे वह प्यार करता है। मेरा मानना है कि वे जल्द ही अपनी तीसरी सालगिरह मनाने वाले हैं। ऐसा लगता है कि वह मसीह में अपनी इस बहन से शादी करने का इरादा रखता है। इसी वजह से—और कुछ हद तक इसलिए भी कि हमारी कलीसिया की इंग्लिश मिनिस्ट्री में अभी महिला सदस्यों की कमी है—उसने अपनी प्रेमिका के बारे में बहुत प्रार्थना और सोच-विचार करने के बाद यह फैसला किया है कि आने वाला रविवार ही वह आखिरी रविवार होगा, जब वह हमारी कलीसिया में हमारे साथ आराधना करेगा। पिछले हफ़्ते, मेरी पत्नी और मैंने हमारे चर्च की इंग्लिश मिनिस्ट्री के इंचार्ज पादरी को बताया कि आने वाला रविवार हमारा इस मंडली के साथ आखिरी रविवार होगा। मेरी दोनों बेटियाँ पहले से ही एक दूसरे चर्च में साथ जा रही हैं, और अब मेरा बेटा, डिलन भी हमारा चर्च छोड़ रहा है। मैं अपने प्यारे बेटे के

फ़ैसले का सम्मान करता हूँ और उस चर्च को छोड़ने के उसके चुनाव का पूरी तरह समर्थन करता हूँ जहाँ मैं सेवा करता हूँ (हालाँकि, ज़ाहिर है, मेरी माँ ने इस पर आपत्ति जताई—या कम से कम ऐसा लगा तो सही! शायद वह अब भी इससे सहमत नहीं हैं, हाहा)। मेरी प्यारी बेटी, येरी, हाल ही में बहुत ज़्यादा व्यस्त रही है। उसका बॉयफ़्रेंड दूसरे राज्य से यहाँ दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया आया है और लगभग दो हफ़्तों से एक रिश्तेदार के घर रुका हुआ है। ऐसा लगता है कि येरी हर सुबह वहाँ जाती है; वे दोनों पूरा दिन एक साथ डेट्स पर बिताते हैं और शायद सुबह के बहुत जल्दी के घंटों तक घर वापस नहीं आते (क्योंकि तब तक मेरी पत्नी और मैं आमतौर पर गहरी नींद में सो रहे होते हैं!)। जानकारी के लिए बता दूँ, यह नौजवान इकलौता बेटा है। हमारी नज़र में—मेरी और मेरी पत्नी की—वह एक ऐसा नौजवान है जिसने अभी तक अपने माता-पिता से आज़ादी हासिल नहीं की है। वह बहुत ही आज्ञाकारी बेटा लगता है; असल में, ऐसा लगा कि पिछले रविवार को मुझसे और मेरी पत्नी से मिलने से पहले उसने अपने माता-पिता से इजाज़त भी ली थी। यह जानने पर, मेरी पत्नी के लिए थोड़ी चिंता महसूस करना स्वाभाविक ही था। ज़ाहिर है, मुझे भी अपनी चिंताएँ हैं—खासकर जब मैं उन दूसरे जोड़ों के वैवाहिक रिश्तों के बारे में सोचता हूँ जिनमें इकलौते बेटे शामिल होते हैं और जिन्हें अपनी सास के साथ झगड़ों का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, आज सुबह अपनी प्रार्थनाओं के दौरान, मैंने येरी को ईश्वर के हाथों में सौंप दिया। चूँकि ईश्वर येरी से किसी भी और इंसान से कहीं ज़्यादा गहरा प्यार करते हैं, इसलिए मैंने एक बार फिर उसके चुनावों का सम्मान करने और विश्वास के साथ उसे अपना अटूट समर्थन देते रहने का संकल्प लिया है। मैं उनके रिश्ते के भविष्य को भी—चाहे उसमें कुछ भी लिखा हो—पूरी तरह से ईश्वर को सौंपता हूँ। भले ही हमारी मौजूदा चिंताएँ सचमुच हकीकत बन जाएँ, तब भी मैं ईश्वर पर ही भरोसा रखूँगा; इसलिए, मैं येरी पर भरोसा करना, उसके फ़ैसलों का सम्मान करना, और—चाहे उन चुनावों के नतीजे कुछ भी हों—उन सबको ईश्वर को सौंप देना चुनता हूँ। यही वह प्रार्थना थी जो मैंने आज सुबह उनसे की। जब भी मैं अपनी प्यारी सबसे छोटी बेटी, यीउन के बारे में सोचती हूँ और उसके लिए प्रार्थना करती हूँ, तो मैं भगवान का धन्यवाद किए बिना नहीं रह पाती। इसका कारण यह है कि मैंने परमपिता परमेश्वर से पूरी लगन से विनती की थी—यहाँ तक कि अपनी जान भी प्रभु को सौंपने की पेशकश की थी—कि अगर वह यीउन को मुक्ति (salvation) दे दें; और बस कुछ ही महीने पहले, भगवान ने सचमुच उसे वह मुक्ति प्रदान कर दी। यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने के बाद, उसे उस चर्च में ईसाई संगति (Christian fellowship) के माध्यम से भगवान के प्रेम का अनुभव होने लगा, जहाँ वह अपनी बड़ी बहन, येरी

के साथ जाती है। जब उसने व्यक्तिगत रूप से प्रभु यीशु मसीह का अनुभव किया—और कार में हमारे साथ होते हुए उसने अपनी गवाही (testimony) भी मेरे साथ साझा की—तो मैं भगवान का धन्यवाद किए बिना नहीं रह सकी। भविष्य में, यदि यह प्रभु की इच्छा हुई, तो यीउन को शायद कोई बॉयफ्रेंड मिलेगा और अंततः उसकी शादी हो जाएगी; मैं इस महत्वपूर्ण मामले को भी पूरी तरह से भगवान के हाथों में सौंप रही हूँ। अपने दिल में, मैंने अपने तीनों बच्चों को पहले ही दुनिया में जाने के लिए आज़ाद कर दिया है; हालाँकि मैं विभिन्न मामलों को लेकर अपने भीतर एक आंतरिक संघर्ष करती रहती हूँ, लेकिन उन पलों में, मैं प्रार्थना करने का प्रयास करती हूँ—भगवान पर भरोसा रखते हुए—ताकि मैं अपने बच्चों पर विश्वास कर सकूँ, उनकी पसंद का सम्मान कर सकूँ, और सभी परिणामों को उसी के हाथों में सौंप सकूँ।

मैं अपने इस बाइबिल संबंधी चिंतन को यहीं समाप्त करना चाहूँगी। पिछले शनिवार को, सुबह की प्रार्थना सेवा के बाद, मैंने 'उत्पत्ति 13:8' (Genesis 13:8) पर आधारित एक चिंतन लिखा था, जिसका शीर्षक था, "आइए हम आपस में झगड़ा न करें (1)," और इसे विभिन्न जगहों पर साझा किया था। हालाँकि, आज सुबह की प्रार्थना सेवा के बाद, मैंने उस शीर्षक को बदलकर केवल "आइए हम आपस में झगड़ा न करें" रखने का निर्णय लिया। इस बदलाव का कारण यह है कि, आज के चिंतन के लिए, मैंने "आइए हम आपस में झगड़ा न करें (2)" के बजाय "हमें अपने बच्चों को जाने देना चाहिए!" शीर्षक चुना। मैंने यह शीर्षक इसलिए चुना क्योंकि मैंने उन विवाहित बच्चों की पीड़ा को देखा है—और अब भी देख रही हूँ—जिनके माता-पिता (विशेषकर माताएँ, शायद?) उन्हें विश्वास के साथ आज़ाद करने में असफल रहे हैं। मेरा दिल तब खास तौर पर दुखता है, जब मैं एक बहन के बारे में सोचता हूँ—एक ऐसी बहन जो अपनी सास के साथ झगड़े से इतनी ज़्यादा दुखी थी कि वह मेरे सामने खुलकर रो पड़ी (और, हैरानी की बात यह है कि उसके पति के भाई-बहन ने भी मेरे सामने आँसू बहाए, जबकि उस समय मैं उनके लिए बिल्कुल अजनबी था... *सिसकी*)। मैं एक और जोड़े को देखता हूँ, जहाँ मेरी नज़र में, सास और बहू के बीच लंबे समय से चले आ रहे झगड़े ने उनके वैवाहिक रिश्ते पर बहुत ही बुरा असर डाला है। उस मामले में भी, मेरा मानना है कि वह विधवा सास—जो अपने इकलौते बेटे को भरोसे के साथ उसकी अपनी ज़िंदगी जीने के लिए आज़ाद नहीं कर पा रही है—अनजाने में ही अपने बेटे के परिवार को बहुत ज़्यादा दुख दे रही है। मुझे एक और बहन के साथ हुई बातचीत भी याद आती है—एक तीसरे जोड़े में पत्नी—जिसने

मुझे बताया कि वह अपने पति और उसकी माँ के बीच के रिश्ते की असलियत को बिल्कुल भी समझ नहीं पा रही थी। मुझे पता चला कि उस जोड़े के बीच एक ज़बरदस्त झगड़े के बाद उनके घर में एक बहुत बड़ा संकट आ गया था—एक ऐसा संकट जिसका सामना वे असल में आज भी कर रहे हैं। हालात इतने बुरे हो गए थे कि, इस पारिवारिक उथल-पुथल के बीच, पति के भाई-बहन ने खुद मुझसे संपर्क करके यह बात बताई कि वे आत्महत्या करने के बारे में सोच रहे थे। मैंने अपने आस-पास के इन तीन जोड़ों के बारे में मोटे तौर पर इसलिए बताया है: जब भी मैं उन परिवारों के बारे में सोचता हूँ जो इसलिए दुख झेल रहे हैं क्योंकि माता-पिता—खास तौर पर माँएँ—अपने बच्चों (खास तौर पर इकलौते बेटों) को भरोसे के साथ उनकी अपनी ज़िंदगी जीने के लिए आज़ाद नहीं कर पा रहे हैं, तो मुझे एक बहुत ही ज़रूरी और गहरी बात का एहसास होता है। इसलिए, मैंने इस धार्मिक चिंतन का शीर्षक यह रखा है: "आपको अपने बच्चों को आज़ाद करना ही होगा!" बेशक, मैं यह चिंतन सबसे पहले खुद पर इसलिए लागू करता हूँ क्योंकि मैं भी अब्राहम—"विश्वास के पिता"—जैसा बनना चाहता हूँ। जिस तरह उन्होंने अपने प्यारे भतीजे लूत को विश्वास के साथ आज़ाद किया था, उसी तरह मैंने भी अपने तीनों बच्चों को उनकी अपनी आज़ाद ज़िंदगी जीने के लिए आज़ाद कर दिया है; मैं उन्हें आज भी आज़ाद कर रहा हूँ, और भविष्य में भी उन्हें आज़ाद करता रहूँगा। यानी, बेशक, उस दिन तक जब तक मुझे प्रभु का बुलावा नहीं आ जाता—और उस समय, *मैं* ही वह होऊँगा जो इस दुनिया को छोड़कर जा रहा होगा! *[हँसते हुए]* उस पल तक, अपने परिवार के मुखिया के तौर पर—और उस व्यक्ति के तौर पर जिसे परमेश्वर ने अपनी कृपा से पत्नी और तीन बच्चों का उपहार दिया था, और जिन्हें पालने-पोसने की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी थी—मैंने परमेश्वर में अपने विश्वास के द्वारा, उन्हें आगे भेजने का संकल्प लिया। ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम ने लूत को विदा किया था—और ठीक वैसे ही जैसे बाद में परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को नष्ट कर दिया था (वे पूर्वी इलाके जिन्हें लूत ने चुना था), क्योंकि वहाँ के निवासी परमेश्वर की नज़रों में दुष्ट और बड़े पापी थे—ठीक वैसे ही परमेश्वर पिता ने भी अपने इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को—जिसे वे प्रेम करते हैं और जिससे वे अत्यंत प्रसन्न रहते हैं—इस संसार में भेजा; एक ऐसा संसार जहाँ केवल वही लोग बसते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट और बड़े पापी हैं। हालाँकि लूत ने पूर्वी इलाकों को चुनते समय यह नहीं सोचा था कि सदोम और अमोरा के लोग वास्तव में कितने दुष्ट और पापी थे, लेकिन परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह, इस पापी और दुष्ट संसार में पूरी तरह से सचेत होकर आए—वे

जानते थे कि यह संसार मानवीय दुष्टता से भरा हुआ है और मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होने वाली हर योजना निरंतर दुष्ट ही होती है (उत्पत्ति 6:5)—और उन्होंने स्वेच्छा से हमारे खातिर क्रूस पर अपने प्राण त्याग दिए (1 यूहन्ना 3:16)। उस पल, जब वे क्रूस पर थे, यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46); फिर भी, परमेश्वर पिता ने अपने प्रिय पुत्र की आवाज़ से अपना मुख फेर लिया। परमेश्वर पिता हमसे इतना गहरा प्रेम करते हैं कि वे अपने स्वयं के पुत्र से भी मुख फेरने को तैयार हो गए। इसलिए, परमेश्वर के इसी प्रेम पर भरोसा करते हुए, अब मैं डिलन, येरी और यीउन को आगे भेजता हूँ—जिनसे मैं उसी दिव्य प्रेम के साथ प्रेम करता हूँ।

“एक ‘भेजने वाले माता-पिता’ बनें”

यहाँ मिशन के क्षेत्र में, अभी शनिवार की सुबह के 3:10 बजे हैं। कल मैं सुबह 2:30 बजे उठा था, और आज फिर लगभग 1:30 बजे उठा; अपनी पत्नी के साथ वीडियो-चैट करने के बाद, मैंने परमेश्वर के वचन पर मनन किया और विभिन्न मंचों पर कुछ संक्षिप्त भक्तिपूर्ण विचार साझा किए। फिर, यह सोचते हुए कि क्या मुझे पढ़ने के लिए कोई अच्छा ईसाई लेख मिल सकता है, मैंने कुछ ईसाई वेबसाइटों पर खोज की। मुझे तुरंत एक लेख मिला जिसका शीर्षक था “एक ‘भेजने वाले माता-पिता’ बनें,” और मैं इस पर अपने कुछ विचार यहाँ साझा करना चाहूँगा:

1. मेरा मानना है—ठीक वैसे ही जैसे इस लेख के लेखक का तर्क है—कि माता-पिता को “भेजने वाले माता-पिता” होना चाहिए।

2. इसे अभी अपने जीवन पर लागू करते हुए, मेरी पत्नी और मुझे जून के अंत में अपनी प्यारी बेटी, येरी को, बहुत दूर जापान भेजना होगा। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने येरी को बुलाया है और उसे मिशन कार्य के लिए जापान भेज रहे हैं।

3. संक्षेप में, क्योंकि परमेश्वर हमारी प्यारी बेटी येरी को भेज रहे हैं, इसलिए मेरी पत्नी और मैं भी उसे भेज रहे हैं।

4. हालाँकि, जब हम उसे भेजते हैं, तो मेरी पत्नी और मुझे ऐसा विश्वास के साथ करना चाहिए। उसके माता-पिता के रूप में, हमें उसे एक साल के लिए दूर जापान भेजते समय मन में पहले से ही चिंताएँ और घबराहट

नहीं पालनी चाहिए। परमेश्वर पर भरोसा करने वाले माता-पिता के रूप में, हमें उसे परमेश्वर को सौंप देना चाहिए और विश्वास के साथ उसे आगे भेजना चाहिए।

5. इसके अलावा, किसी दिन—परमेश्वर के सही समय पर—न केवल येरी, बल्कि डिलन और यीउन भी प्रभु में विवाह करेंगे, और उस समय, हमें उन्हें भी जाने देना होगा।

6. उदाहरण के लिए, ऐसा लगता है कि हमारा प्यारा बेटा, डिलन, अगले साल किसी समय शादी करने की योजना बना रहा है; जब वह समय आएगा, तो मेरी पत्नी और मुझे उसे विश्वास के साथ जाने देना होगा। यदि वह अगले साल अपनी प्रेमिका से शादी करता है, तो हमें उसे न केवल शारीरिक अर्थों में (हालाँकि वह पहले ही हमारे घर से बाहर चला गया है और कई वर्षों से अकेले रह रहा है) बल्कि भावनात्मक और मानसिक रूप से भी जाने देना होगा। इस तरीके में हम—एक ऐसे जोड़े के रूप में जो परमेश्वर पर भरोसा करता है—विश्वास के माध्यम से डिलन पर भी वही भरोसा करते हैं।

7. हमारी सबसे छोटी बच्ची, यीउन—अपने बड़े भाई, डिलन, और बड़ी बहन, येरी की तरह ही—कॉलेज जाने के कारण अब हमसे अलग रहने लगी है। सच कहूँ तो, जब हमने अपने तीनों बच्चों को यूनिवर्सिटी भेजा, तो उनके माता-पिता के तौर पर हमने उन्हें विश्वास के साथ दुनिया में जाने दिया। इसके अलावा, यीउन इस आने वाले जुलाई में एक हफ़्ते के मिशन ट्रिप पर जाने वाली है। इसलिए, मेरी पत्नी और मैं यीउन को भी उसी विश्वास की भावना के साथ इस मिशन ट्रिप पर भेजने का इरादा रखते हैं।

8. जहाँ तक मुझे याद है, पहली बार जब मेरी पत्नी और मैंने सचमुच डिलन, येरी और यीउन को अपने से अलग होने देना शुरू किया, तब वे टीनएजर थे। इसका कारण यह था कि, जैसे-जैसे वे किशोरावस्था की "बढ़ने की तकलीफ़ों" से गुज़र रहे थे, वे स्वाभाविक रूप से हमसे दूर होने लगे थे। मैं इसे एक अनिवार्य और पूरी तरह से सामान्य बात मानता हूँ। अगर मेरी पत्नी और मैंने—माता-पिता के तौर पर—उस दौर में उन्हें धीरे-धीरे और स्वाभाविक रूप से अलग नहीं होने दिया होता, और इसके बजाय उन्हें शिशु या प्राइमरी स्कूल के बच्चों की तरह ही देखा या उनके साथ वैसा ही बर्ताव किया होता, तो हम लगातार उन्हें अपनी गोद में ही समेटकर रखने की कोशिश करते रहते। मेरा मानना है कि यह स्वस्थ परवरिश नहीं है।

9. जैसा कि इस लेख के लेखक ने कहा है, ठीक वैसे ही जैसे परमपिता परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे, यीशु को इस पाप भरी दुनिया में भेजा था, मेरा भी मानना है कि माता-पिता के तौर पर हमें भी अपने बच्चों को विश्वास के साथ दुनिया में भेजने के लिए तैयार रहना चाहिए।

10. अब, जैसे-जैसे सितंबर नज़दीक आ रहा है—और यह देखते हुए कि हमारा प्यारा बेटा, डिलन, सेमिनरी (धर्म-शिक्षा संस्थान) में पढ़ने का इरादा रखता है—मेरी पत्नी और मैं उसे विश्वास के साथ धर्म-शिक्षा स्कूल भेजने की तैयारी कर रहे हैं। जून के आखिर तक, हम अपनी प्यारी बेटी, येरी को बहुत दूर जापान भेज देंगे। और जुलाई में, हम अपनी सबसे छोटी बच्ची, यीउन को उसके एक हफ़्ते के मिशन ट्रिप पर भेज देंगे—एक बार फिर, विश्वास के साथ। फिर, परमेश्वर के अपने समय पर—जब हमारे तीनों बच्चे आखिरकार शादी करेंगे—मेरी पत्नी और मैं उन्हें विश्वास के साथ विदा करेंगे। और उसके भी बाद, अगर परमेश्वर की यही इच्छा हुई—और फिर से, उनके अपने समय पर—तो वही तीनों बच्चे मेरी पत्नी और मुझे (उनके माता-पिता को) विश्वास के साथ स्वर्ग भेजेंगे! हाहा।

हमारे प्यारे बच्चों के प्रेम-संबंधों और विवाह के विषय में...

कल, रविवार की सुबह-सवेरे, मैंने KakaoTalk के माध्यम से अपनी प्यारी बेटी, येरी (Yeri) के साथ संदेशों का आदान-प्रदान किया, जो इस समय जापान में है। उस बातचीत का विषय प्रेम-संबंधों (romantic relationships) के बारे में कहा जा सकता है। उसी सुबह—अभी भी रविवार ही था—मेरा एक प्रिय मित्र, जो स्वयं भी एक पादरी है, हमारे चर्च आया; रविवार की आराधना (service) के दौरान परमेश्वर का वचन सुनाने से पहले, हमारी चर्च के अध्ययन-कक्ष में एक बहुत ही अनमोल बातचीत हुई, जिसके दौरान हमने अपने बच्चों के विवाह के विषय पर भी चर्चा की। उसी क्षण, मेरे मन में यह विचार आया कि सुबह-सवेरे येरी के साथ प्रेम-संबंधों के विषय में जो बातचीत मैंने की थी, वह कोई मात्र संयोग नहीं था; बल्कि इसने मेरे विचारों को मेरे प्यारे बेटे, डिलन (Dylan) और जेसिका (Jessica) के होने वाले विवाह की ओर भी मोड़ दिया। फिर, आज सुबह—सोमवार को—मैंने अपनी प्यारी पत्नी के साथ एक हृदयस्पर्शी बातचीत में इन विचारों को साझा किया। इन सभी बातचीत का मूल विषय ठीक यही है: "हमारे प्यारे बच्चों के प्रेम-संबंधों और विवाह के विषय में।" इसलिए, मैं इन बातचीत का विवरण यहाँ लिखित रूप में प्रस्तुत करना चाहूँगा, और अपने विचारों को बिंदु-दर-बिंदु व्यवस्थित करने का प्रयास करूँगा:

1. परमेश्वर के कार्य करने के तरीके सचमुच बहुत ही अद्‌भुत हैं। मेरा मानना है कि मेरे पादरी मित्र के साथ जो बातचीत हुई—जो येरी के साथ मेरी बातचीत के ठीक बाद हुई थी—वह कोई संयोग नहीं था, बल्कि एक ऐसी बातचीत थी जो परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के अधीन संपन्न हुई। इसके अलावा, मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई कि जब हमने मिलकर उन बातचीत के सार पर चर्चा की, तो मैंने पाया कि मैं अपनी पत्नी के विचारों से पूरी तरह सहमत था और उसके प्रति गहरी सहानुभूति रखता था।

2. मेरा मानना है कि इन बातचीत के माध्यम से, मेरे भीतर कुछ विशेष अंतर्दृष्टियाँ (insights) जाग्रत हुई हैं, और कुछ ऐसे विशिष्ट पाठ हैं जो परमेश्वर मुझे सिखाना चाहते हैं।

3. सबसे पहले, जो एक बात मेरे मन में आई, वह यह है: तीन बच्चों के माता-पिता होने के नाते, यह पूरी तरह से स्वाभाविक है—और वास्तव में, इसके पर्याप्त आधार भी हैं—कि मेरी पत्नी और मैं अपने बच्चों के प्रेम-संबंधों और विवाह के विषय में चिंताएँ और फिक्रें पालें। इसके अतिरिक्त, मुझे यह भी एहसास है कि जैसे-जैसे हम भविष्य की ओर आगे बढ़ेंगे, यही चिंताएँ और फिक्रें और भी अधिक ठोस वास्तविकताएँ बन सकती हैं।

4. एक और विचार जो मेरे मन में आया, वह यह है: एक माता-पिता के दृष्टिकोण से, यह पूरी तरह से संभव है कि हम उस व्यक्ति से पूरी तरह प्रसन्न न हों—या उसे पूरी तरह से स्वीकार न करें—जिसके साथ हमारा बच्चा इस समय प्रेम-संबंध में है। हालाँकि, इससे भी ज़्यादा दिलचस्प बात यह है कि—भले ही हमें, माता-पिता के तौर पर, वह इंसान पसंद हो जिसे हमारा बच्चा डेट कर रहा है—लेकिन ज़रूरी नहीं कि हम उस इंसान के माता-पिता, हालात या बैकग्राउंड से भी खुश हों। (मेरे एक पादरी दोस्त ने एक बार कहा था कि मेरे बेटे की होने वाली पत्नी और उसके अपने पिता के बीच रिश्ते की प्रकृति बहुत ज़्यादा मायने रखती है। दूसरे शब्दों में, पिता-बेटी का रिश्ता बहुत अहम होता है। अगर जिस औरत से मेरा बेटा शादी करना चाहता है, उसके अपने पिता के साथ रिश्ते में तनाव है—और उसे अपने पिता से गहरे और गंभीर भावनात्मक घाव मिले हैं—तो, अगर वह आखिरकार मेरे बेटे से शादी करती है, तो उनका अपना वैवाहिक जीवन काफी मुश्किल भरा साबित हो सकता है। नतीजतन, अपने दोस्त की बातें सुनकर, मुझे अपनी बेटियों, येरी और यीउन के साथ अपने रिश्ते के बारे में सोचने पर मजबूर होना पड़ा। इसी सिद्धांत को अपनी बेटियों पर लागू करते हुए, मेरा मानना है कि यह भी उतना ही ज़रूरी है कि हम उस लड़के और उसकी माँ के बीच के रिश्ते की प्रकृति पर भी गौर करें, जिसे वे डेट कर रही हैं। अगर उसका अपनी माँ के साथ रिश्ता ठीक नहीं है—उदाहरण के लिए, अगर वह "माँ का लाडला" है—तो, अगर वह आखिरकार मेरी बेटी से शादी करता है, तो उसे न केवल उसके साथ अपने रिश्ते में, बल्कि खुद और अपनी सास के बीच के जटिल रिश्तों को संभालने में भी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।) ऐसे हालात या माहौल को देखते हुए, मेरा मानना है कि यह पूरी तरह से स्वाभाविक है—और सच कहूँ तो, सही

भी है—कि हम अपनी प्यारी बेटी के बारे में सोचकर गहरी चिंता और फिक्र महसूस करें कि वह आखिरकार ऐसे हालात में, उस लड़के से शादी करने जा रही है जिससे वह प्यार करती है।

5. माता-पिता के नज़रिए से, हमें यह भरोसा हो सकता है कि हमारे कुछ बच्चे—एक खास स्तर की समझदारी हासिल करने के बाद—अपने प्रेम संबंधों और भविष्य की शादियों को स्वतंत्र रूप से और सफलतापूर्वक संभालने में सक्षम होंगे; हालाँकि, दूसरे बच्चों के मामले में, जिन्हें हम अभी भी कुछ हद तक नासमझ मानते हैं, यह स्वाभाविक ही है कि हमारे मन में कुछ हद तक चिंता या आशंका बनी रहे।

6. अगर हमें, माता-पिता के तौर पर, यह लगता है कि हमारा बच्चा बहुत ज़्यादा नासमझ है—और अपने प्रेमी/प्रेमिका के प्यार में इतना ज़्यादा डूबा हुआ है कि वह अपनी सोचने-समझने की शक्ति खो चुका है और कोई नासमझी भरा कदम उठाने की कगार पर है—तो हमने एक बहुत ज़रूरी सबक सीखा है: हमें अपने प्यारे बच्चे को समझदारी से सलाह देनी चाहिए और उसे समझाना चाहिए, ताकि उसे ऐसे संभावित खतरनाक व्यवहार में शामिल होने से रोका जा सके। (उदाहरण के लिए, इस तरह के दखल में हमारे बच्चे को उस व्यक्ति से कुछ शारीरिक दूरी बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना शामिल हो सकता है, जिसे वे डेट कर रहे हैं। हालाँकि, इसकी बहुत कम संभावना है कि कोई बच्चा, अपने माता-पिता की सलाह या डांट सुनकर, स्वेच्छा से उस व्यक्ति से दूरी बनाने के लिए सहमत हो जाएगा जिससे वह प्यार करता है।) मेरा मानना है कि यह एक ऐसा सबक है जिसे अमल में लाना किसी भी तरह से आसान नहीं है। वास्तव में, मुझे पूरा विश्वास है कि इस सबक को असल में काम में लाना ईश्वर की सहायता के बिना असंभव है। (उदाहरण के लिए, अंततः, यह ईश्वर ही हैं जिन्हें दखल देना होगा—शायद ऐसी परिस्थितियाँ बनाकर जो हमारे बच्चे और उसके प्रेमी/प्रेमिका के बीच शारीरिक दूरी पैदा करें—ताकि ऐसा अलगाव वास्तव में हो सके।) इस हद तक, हम स्वीकार करते हैं कि, माता-पिता के रूप में, हमें ईश्वर की मदद की सख्त ज़रूरत है।

7. अंततः, जब मैं अपनी प्यारी बेटी, एक पादरी मित्र और अपनी पत्नी के साथ हुई बातचीत पर एक बार फिर विचार करता हूँ, तो मैं जिस व्यक्तिगत निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, वह यह है: तीन बच्चों के पिता के रूप में, मुझमें यह विश्वास होना चाहिए कि प्रभु—जो हमारे बच्चों से हमसे भी ज़्यादा प्यार करते हैं, और वास्तव में उनसे सबसे

ज़्यादा प्यार करते हैं—उनके प्रेम संबंधों और भविष्य के विवाहों की बागडोर अपने हाथों में ले लेंगे, और अपनी अच्छी, परिपूर्ण और मनभावन इच्छा को पूरा करेंगे। (बेशक, मेरी पत्नी को भी इसी विश्वास में मेरे साथ शामिल होना चाहिए।) विश्वास की इस मज़बूत नींव पर दृढ़ता से खड़े होकर—और ईश्वर की सहायता पर भरोसा करते हुए—मेरा मानना है कि मेरी पत्नी और मुझे अपने प्रत्येक बच्चे के प्रेम संबंधों और विवाहों में विनम्रतापूर्वक सेवा और समर्थन देना चाहिए, जिस भी पल जिसकी ज़रूरत हो, वह प्रदान करना चाहिए, और ईश्वर द्वारा हमें दी गई बुद्धि और आध्यात्मिक समझ से निर्देशित होकर, तथा पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का पालन करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, मेरा मानना है कि हमारी सबसे पहली प्राथमिकता यह है कि हम विनम्रतापूर्वक—विश्वास के साथ—अपनी पत्नी और मेरे दिल पर बोझ बने हर डर, चिंता और फिक्र को पूरी तरह से प्रभु को सौंप दें। इसके अलावा, जैसे-जैसे मेरी पत्नी और मैं ईश्वर पर अपना पूरा भरोसा और निर्भरता और भी मज़बूती से बढ़ाते हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम माता-पिता के रूप में अपनी भारी ज़िम्मेदारियों को बुद्धिमानी और विश्वास के साथ पूरा कर सकें—पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होकर, जो हमारे प्यारे बेटे डिलन और जेसिका के विवाह, येरी और क्रिस के प्रेम संबंधों, और—यदि समय आता है तो—यीउन के भविष्य के प्रेम संबंधों के संबंध में भी कृपापूर्वक समय पर सहायता प्रदान करते हैं।

मेरे बच्चों की शादियों पर मेरा नज़रिया

मैं और मेरी पत्नी अब उस उम्र में पहुँच गए हैं, जहाँ हमारे बच्चों की शादी का समय अब और भी करीब आता दिख रहा है। हमारे सामाजिक दायरे में, हमसे थोड़े बड़े कुछ ऐसे जोड़े भी हैं जिनके सबसे बड़े बच्चों की न सिर्फ़ शादी हो चुकी है, बल्कि उन्होंने अपना परिवार भी बसा लिया है। आज, अपने प्यारे बड़े बेटे, डिलन से फ़ोन पर बात करते हुए, हमारी उसके भविष्य की शादी के बारे में बातचीत हुई। उस बातचीत के आधार पर—साथ ही हमारी पीढ़ी के उन माता-पिता की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए जिनके बच्चों की शादी हो चुकी है—मैं इस मामले पर अपना निजी नज़रिया बताना चाहूँगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि ये विचार, किसी न किसी रूप में, हमारे सभी बच्चों की भविष्य की शादियों के लिए फ़ायदेमंद साबित होंगे:

1. एक पिता के तौर पर, मैंने डिलन, येरी और यीउन से—जब वे हाई स्कूल में थे, तब से ही बार-बार—कहा है कि जब वे अपने भविष्य के जीवनसाथी के लिए प्रार्थना करें और उसे ढूँढ़ें, तो वे चुनाव के लिए सबसे पहली प्राथमिकता अपने साथी के "चरित्र" (स्वभाव/व्यक्तित्व) को दें। इसके अलावा, मैंने अपने बच्चों पर इस बात पर भी ज़ोर दिया कि चरित्र के विभिन्न पहलुओं में से, "सच्चाई" (ईमानदारी) का विशेष महत्व है। मैंने उनसे कहा: "अगर, जब आप एक-दूसरे को डेट कर रहे हों, आपको पता चले—खासकर अगर ऐसा बार-बार हो—कि आपके साथी ने आपसे झूठ बोला है, तो आपको इस बात पर गंभीरता से दोबारा सोचना चाहिए कि क्या आपको वह रिश्ता जारी रखना चाहिए।"

2. मैं इस विषय पर एक बार फिर इसलिए सोच-विचार कर रहा हूँ, क्योंकि मेरा पक्का मानना है कि अगर हमारे बच्चे जीवनसाथी चुनने में कोई ग़लत फ़ैसला कर लें—और उन्हें अपनी उस ग़लती का एहसास बाद में हो—तो उस फ़ैसले के नतीजे यकीनन बहुत गंभीर होंगे। ऐसी स्थिति का सबसे गंभीर पहलू यह है कि इसका

दुख सिर्फ़ उस जोड़े के रिश्ते तक ही सीमित नहीं रहता; बल्कि, उस शादी के अंदर की समस्याएँ, दोनों परिवारों के माता-पिता के लिए भी गहरा दुख और मानसिक पीड़ा का कारण बनती हैं। इसके अलावा, शादीशुदा जोड़े के भाई-बहनों को भी इसके परिणामस्वरूप दुख झेलना पड़ सकता है। इसलिए, जहाँ यह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है कि हमारे बच्चे अपनी आस्था की यात्रा के दौरान अपने भावी जीवनसाथी के बारे में ईश्वर से प्रार्थना करें, वहीं मेरा मानना है कि हम माता-पिता के लिए यह उतना ही—या शायद उससे भी अधिक—महत्वपूर्ण है कि हम अपने बच्चों का पालन-पोषण इस तरह करें कि वे आस्था की नज़रों से उस जीवनसाथी को पहचान सकें जिसे ईश्वर ने उनके लिए तैयार किया है, और ठोस, ईश्वरीय मानकों के आधार पर सही चुनाव कर सकें।

3. भले ही हम माता-पिता अपने बच्चों के विवाह के लिए ईश्वर से पूरी लगन से प्रार्थना करें और उन्हें अच्छी तरह पालने-पोसने में खुद को समर्पित कर दें, फिर भी इसकी कोई पूर्ण गारंटी नहीं लगती कि हमारे बच्चे अंततः अपने भावी जीवनसाथी का चुनाव बुद्धिमानी से ही करेंगे। परिणामस्वरूप, यदि हमारे बच्चे कोई ऐसा चुनाव करते हैं जो हम आस्तिक माता-पिता की नज़रों में एक गलती—यानी जीवनसाथी का एक अनुचित चुनाव—प्रतीत होता है, तो उससे होने वाला कष्ट केवल हमारे बच्चों को ही नहीं भुगतना पड़ता; हम माता-पिता भी अनिवार्य रूप से उस कष्ट में भागीदार बनने के लिए विवश हो जाते हैं। यदि हमें पता चलता है कि हमारे विवाहित बच्चे अपने वैवाहिक संबंधों में लगातार कठिनाइयों और पीड़ा का सामना कर रहे हैं, तो हमें स्वयं जो दर्द महसूस होगा, उसे सहना अत्यंत कठिन और दुष्कर होगा। फिर भी, मेरा मानना है कि ऐसे गहरे कष्टों के बीच भी, ईश्वर इन परीक्षाओं का उपयोग हम माता-पिता को विभिन्न तरीकों से परिष्कृत और सुदृढ़ बनाने के लिए करते हैं।

4. आज, डिलन से बात करते समय, मैंने उसे समझाया कि जब एक पापी दूल्हा और एक पापी दुल्हन विवाह के बंधन में बंधते हैं—और एक घर बसाने तथा उसे साझा करने के लिए "एक देह" बन जाते हैं—तो एक पवित्र ईश्वर अनिवार्य रूप से उनके पापों को और भी अधिक स्पष्ट रूप से उजागर कर देते हैं। ठीक इसी कारण से, मैंने उसे बताया, वैवाहिक संबंधों के भीतर ईश्वर की कृपा की आवश्यकता और भी अधिक तीव्रता से होती है (रोमियों 5:20)। मैंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि जहाँ विवाह समारोह की तैयारी करना निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, वहीं जो बात वास्तव में मायने रखती है, वह समारोह समाप्त होने के *बाद* शुरू होती है। इसलिए, मैंने यह इंगित किया कि केवल *विवाह समारोह* की तैयारी करने की तुलना में, *विवाह* (वैवाहिक जीवन) की तैयारी करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। तैयारी की इस प्रक्रिया के संदर्भ में, मैंने डिलन से यह बात साझा की:

"यद्यपि विवाहित लोगों से मिलने वाली यदा-कदा की सलाह मूल्यवान होती है, लेकिन तुम्हारे पिता के अनुभव में, विवाह संबंधी पुस्तकें—अतीत में भी और आज भी—तुम्हारी माँ और मेरे बीच के रिश्ते को मज़बूत बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई हैं।" जब हम बात कर रहे थे, तो मैंने डिलन के साथ *Love & Respect* किताब के बारे में अपने विचार शेयर किए—इसकी एक कॉपी मैंने पिछले साल डिलन के जन्मदिन पर हुए डिनर के दौरान उसकी मंगेतर, जेसिका को दी थी।

5. ऐसा लगता है कि डिलन और जेसिका ने अपनी शादी के लिए जगह और तारीख पहले ही तय कर ली है; हालाँकि, ऐसा लगता है कि वे जितने मेहमानों को बुला सकते हैं, उनकी संख्या की एक सीमा है (जगह की क्षमता की कमी के कारण)। इसलिए, मैंने डिलन से कहा, "मम्मी और पापा की चिंता मत करो; तुम और जेसिका बस आगे बढ़ो और जिसे चाहो उसे बुलाओ।" मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि दिसंबर में—जब मैंने डिलन, जेसिका, अपनी पत्नी और यीउन के साथ अपनी पत्नी के जन्मदिन पर डिनर किया था—तो मैंने सुझाव दिया था कि अगर उन्हें कोई ऐसी बड़ी जगह मिल जाए जहाँ ज़्यादा मेहमान आ सकें, तो यह बहुत अच्छा होगा। हालाँकि, वह सिर्फ़ मेरी अपनी राय थी, और चूँकि डिलन और जेसिका की इच्छाएँ ही सबसे ज़्यादा मायने रखती हैं, इसलिए मैंने आज डिलन को मेहमानों की लिस्ट की पूरी ज़िम्मेदारी खुद लेने के लिए प्रोत्साहित किया। मैं यह खास किस्सा इसलिए शेयर कर रहा हूँ क्योंकि, डिलन के माता-पिता के तौर पर, मेरी पत्नी और मुझे लगा कि मेरे लिए—उसके पिता के तौर पर—समझदारी और स्पष्टता के साथ कुछ अच्छी सीमाएँ तय करने की पहल करना बहुत ज़रूरी था। मैं पहले ऐसा बहुत अच्छे से नहीं कर पाया था, लेकिन आज, मैंने आखिरकार डिलन के लिए वह सीमा तय कर दी। मुझे भरोसा है कि डिलन और जेसिका सब कुछ बहुत खूबसूरती से खुद ही संभाल लेंगे। क्योंकि मुझे भगवान पर भरोसा है, इसलिए मैं डिलन पर भी और भी ज़्यादा भरोसा करना चाहता हूँ।

हमारा घर, जो बुद्धि से और भी मज़बूती से बना है

“बुद्धि से घर बनता है, और समझ से वह स्थिर होता है; ज्ञान से उसके कमरे दुर्लभ और सुंदर खज़ानों से भर जाते हैं” (नीतिवचन 24:3-4)।

1 जनवरी, 2024—नए साल के पहले दिन—मैंने नीतिवचन 24 के शब्दों पर मनन किया। ऐसा करते हुए, मैंने एक छोटा सा भक्तिपूर्ण चिंतन लिखा; आज के अंश—नीतिवचन 24:3-4 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबिल* में दिए गए अनुसार)—को केंद्र में रखते हुए, मैंने निम्नलिखित बातें लिखीं: “जैसे ही मैं 2024 के नए साल का स्वागत करता हूँ, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि हमारा घर बुद्धि के द्वारा और भी मज़बूती से बने और सभी प्रकार के दुर्लभ और सुंदर खज़ानों से भर जाए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपने परिवार—मेरी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों, जिन्हें प्रभु ने मुझे कृपापूर्ण उपहारों के रूप में दिया है—की सेवा करके यह कार्य पूरा कर सकूँ; और यह सेवा उस बुद्धि, समझ और ज्ञान के साथ कर सकूँ जो परमेश्वर प्रदान करता है।” आज, मैं इस छोटे से भक्तिपूर्ण चिंतन को तीन भागों में बाँटना चाहता हूँ, ताकि मैं उस कृपा और उन सबकों को ग्रहण कर सकूँ जो परमेश्वर इनके माध्यम से हमें सिखाता है।

सबसे पहले, मैं घर के भीतर अपनी सेवा (ministry) को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करता हूँ, और यह संकल्प लेता हूँ कि मैं इस तथ्य को कभी नहीं भूलूँगा—बल्कि लगातार याद रखूँगा—कि परमेश्वर ने मुझे मेरी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों को कृपापूर्ण उपहारों के रूप में दिया है।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं अपनी पत्नी का पति होने के योग्य नहीं हूँ, और मुझमें अपने तीन बच्चों का पिता होने की योग्यता की कमी है; फिर भी, क्योंकि परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है, इसलिए मेरा विश्वास है कि उसने मेरी पत्नी और बच्चों को कृपा के उपहारों के रूप में मुझे प्रदान किया है। इस सत्य को अपने मन में दृढ़ता से रखते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं इस आने वाले वर्ष के दौरान घर के भीतर अपनी सेवा को पूरा कर सकूँ, और पूरी तरह से उस कृपा पर निर्भर रहूँ जो परमेश्वर प्रदान करता है। विशेष रूप से, मैं 2 कुरिन्थियों 3:5 (*नए अनुवाद* से) के शब्दों को दृढ़ता से थामे रहता हूँ: "हम यह नहीं सोचते कि हमारे पास स्वयं से ऐसी चीज़ें करने की क्षमता है; बल्कि, हमारी क्षमता परमेश्वर से आती है।" दूसरे, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपने प्यारे परिवार के सदस्यों की सेवा उस बुद्धि के साथ कर सकूँ जो परमेश्वर प्रदान करता है।

2024 के नए साल में 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' का आदर्श वाक्य है: "हे प्रभु, हमारी सेवा के दायरे को विस्तृत कर।" इसके साथ दिया गया धर्मग्रंथ का वचन है यूहन्ना 13:15: "क्योंकि मैंने तुम्हें एक उदाहरण दिया है, ताकि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही करो।" यहाँ, यीशु ने अपने शिष्यों के लिए जो कार्य किया, उसका संदर्भ उनके पैर धोने से है (वचन 14)। इस प्रकार एक उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: "यदि मैंने, जो तुम्हारा प्रभु और गुरु हूँ, तुम्हारे पैर धोए हैं, तो तुम्हें भी एक-दूसरे के पैर धोने चाहिए" (वचन 14)। यीशु के इस कार्य का अनुकरण करते हुए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं इसकी शुरुआत अपनी पत्नी की सेवा करके करूँ। प्रभु की दृष्टि में यही सही है। इस नेक कार्य को करने के लिए, मुझे वास्तव में और अत्यंत आवश्यकता है—बेशक—परमेश्वर के प्रेम की, लेकिन साथ ही मुझे यीशु जैसी नम्रता की भी आवश्यकता है।

पिछले रविवार के उपदेश के दौरान, हमने सीखा कि "नम्रता" उन पाँच सद्गुणों की सूची में तीसरा स्थान रखती है, जो उस "नए स्वरूप" का निर्माण करते हैं जिसे हमें धारण करना है (कुलुस्सियों 3:12)। इस संदर्भ में, "नम्रता" का अर्थ है स्वयं को सबसे अंत में रखना और स्वयं को सबसे कम महत्वपूर्ण समझना (KJV टीका)। प्रेरित पौलुस की तरह, मेरी भी यह अभिलाषा है कि मैं—बढ़ती हुई स्पष्टता और तत्परता के साथ—यह अनुभव करूँ कि मैं वास्तव में एक अत्यंत साधारण और महत्वहीन व्यक्ति हूँ। केवल तभी मैं यीशु का अनुकरण कर पाऊँगा और

अपने परिवार के सदस्यों की सेवा कर पाऊँगा। "नम्रता" के अतिरिक्त, अपने परिवार की सेवा करने के लिए मुझे जिस चीज़ की अत्यंत आवश्यकता है, वह है परमेश्वर से प्राप्त होने वाली "बुद्धि"। जब मैंने नए वर्ष का स्वागत किया, तो केवल एक दिन—1 जनवरी—को पीछे मुड़कर देखने पर ही मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई; मैंने देखा कि मैंने कितनी मूर्खतापूर्ण बातें की थीं और कैसे मूर्खतापूर्ण कार्य किए थे। विशेष रूप से, मुझे अपने अंतर्मन में एक गहरी टीस महसूस हुई, जब मुझे यह एहसास हुआ कि मेरे होंठ तो एक मूर्ख के होंठों के समान थे। तत्पश्चात्, आज—2 जनवरी को—नीतिवचन अध्याय 25 पर मनन करते हुए, मैंने यह संक्षिप्त चिंतन लिखा; इसका केंद्र-बिंदु वचन 15 था, जैसा कि *Modern People's Bible* में प्रस्तुत किया गया है: "मुझे एक ऐसी कोमल ज़बान की आवश्यकता है जो हड्डियों को भी तोड़ सकने में सक्षम हो, और एक ऐसे धैर्यपूर्ण अनुनय की आवश्यकता है जो अत्यंत हठी हृदयों को भी परिवर्तित कर सकने में सक्षम हो।" जब मैं इस वचन को अपने जीवन के लिए एक दर्पण के रूप में देखता हूँ, तो मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि मेरे होंठों में अक्सर कोमलता का अभाव रहा है, और यह कि—मेरे अपने धैर्य की कमी के कारण—मेरे शब्दों में अक्सर दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति का अभाव रहा है। इसके अलावा, नीतिवचन 24:25 (जो *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* से लिया गया है) पर विचार करते हुए—जिस पर मैंने कल मनन किया था—मुझे अपनी ही मूर्खता की एक झलक दिखाई दी; क्योंकि यह घोषणा करने के बाद भी कि 2024 के नए साल का स्वागत करते हुए, मैं परमेश्वर के वचन द्वारा—साहसपूर्वक और बिना किसी रोक-टोक के—डाँटे जाने की इच्छा रखता हूँ, मैं अभी भी खुद को कमज़ोर पाता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरा कठोर हृदय साहसपूर्वक डाँटा जाए—मानो उस पर हथौड़े से चोट की गई हो—और यह कि, अंतरात्मा की चुभन के कष्टों के माध्यम से, मेरे वे हिस्से जो पहले टूटकर बिखरने ज़रूरी हैं, वे सचमुच टूटकर गिर जाएँ। केवल तभी मैं प्रभु में ठीक से और अधिक मज़बूती से निर्मित हो सकता हूँ। और मेरा मानना है कि, केवल तभी, मेरी पत्नी और बच्चे भी अधिक दृढ़ता के साथ निर्मित हो पाएँगे।

अंत में—और तीसरी बात—मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे परिवार को दृढ़ता से स्थापित करें, और हमारे घर को हर प्रकार के कीमती और सुंदर खज़ानों से भर दें।

नीतिवचन 25:4 (जो *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* से लिया गया है) पर विचार करते हुए—जिस पर मैंने आज सुबह मनन किया था—मैंने एक प्रार्थना की: कि प्रभु मेरे भीतर से हर प्रकार की अशुद्धि को दूर करते रहें—भले ही इसके लिए मेरे जीवन को "बड़े भूकंप" जैसी विपत्तियों और कष्टों से गुज़रना पड़े। क्योंकि मेरा मानना है कि केवल इसी तरह प्रभु हमारे घर को हर प्रकार के कीमती और सुंदर खज़ानों से भरेंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि, परमेश्वर के वचन का पालन करके, हमारा पूरा परिवार न केवल अपने घर को चट्टान पर दृढ़ता से स्थापित देखेगा, बल्कि हममें से प्रत्येक अपने घर का एक बुद्धिमान प्रबंधक भी बनेगा, और स्वर्ग में प्रचुर मात्रा में खज़ाने जमा करेगा।

मेरी आस्थावान माँ

मंगलवार सुबह, 14 मार्च, 2023.

कल सुबह—सोमवार को—मुझे अपनी प्यारी छोटी बहन से खबर मिली कि माँ की तबीयत अचानक बहुत बिगड़ गई है, जिसके चलते उसे 911 पर कॉल करके एम्बुलेंस बुलानी पड़ी। यह समझते हुए कि शायद एम्बुलेंस रवाना हो चुकी होगी, मैं जल्दी से तैयार हो गया; अपने बड़े भाई, भाभी और पत्नी को यह खबर देने के बाद, मैं सीधे गाड़ी चलाकर अस्पताल पहुँचा। मेरे पिताजी ने भी मुझे KakaoTalk के ज़रिए एक मैसेज भेजा, जिसमें उन्होंने बताया कि एम्बुलेंस आ गई है, वे माँ को अस्पताल ले गए हैं, और मेरी छोटी बहन, यून-मी, उनके साथ गई है। अस्पताल पहुँचने पर, मेरी बहन बाहर आ गई, और मैंने इमरजेंसी रूम के अंदर उसकी जगह ले ली, जहाँ माँ लेटी हुई थीं (क्योंकि विज़िटर प्रतिबंधों के अनुसार, एक समय में इमरजेंसी रूम के अंदर केवल एक ही व्यक्ति को जाने की अनुमति थी)। जैसे ही मैं अंदर गया और माँ के चेहरे की ओर देखा, वे बहुत ज़्यादा तकलीफ़ में लग रही थीं (और जब मैंने उनके चेहरे के हाव-भाव देखे, तो मुझे उनमें अपने बड़े भाई की झलक दिखाई दी—हाहा)। माँ ने मुझे उन प्रार्थनाओं के बारे में बताया जो वे "पिता" परमेश्वर से कर रही थीं। उनकी प्रार्थनाओं से यह ज़ाहिर होता था कि उन्होंने पिता परमेश्वर के सामने एक सच्ची आस्था वाला जीवन जीने के लिए कितनी लगन से प्रयास किया था। इसके अलावा, माँ ने यह भी कहा कि यदि पिता परमेश्वर उन्हें अपने पास—यानी स्वर्ग में—बुला लें, तो वे शांतिपूर्वक और बिना किसी कष्ट के इस दुनिया से विदा होना चाहती हैं। इसलिए, मैंने माँ को उनकी पसंदीदा बाइबल आयत याद दिलाई: यशायाह 41:10 ("मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ; निराश मत हो, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तुझे बल दूँगा और तेरी सहायता करूँगा; मैं अपने धर्ममय दाहिने हाथ से तुझे सम्भाले रहूँगा")। उस वादे पर भरोसा करते हुए, मैंने पिता परमेश्वर से आस्थापूर्ण प्रार्थना की। माँ के होठों से लगातार एक ही शब्द निकल रहा था: "आमीन! आमीन!" मेरी माँ ने मुझे बताया कि उनका सबसे पसंदीदा

भजन (hymn) संख्या 412 है, जिसका शीर्षक है: "Far Away in the Depths of My Spirit" (मेरी आत्मा की गहराइयों में)। तो, मैंने उससे कहा कि मुझे भी चौथे पद के बोल बहुत पसंद हैं: "जैसे-जैसे हम इस धरती के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर आगे बढ़ते हैं, सच्ची शांति कहाँ मिल सकती है? आइए, हम सब यीशु को अपना मित्र बना लें, और इस तरह सच्ची शांति का आनंद लें।" इसका दोहराया जाने वाला हिस्सा (refrain) कुछ इस तरह है: "शांति, ओह शांति! यह ऊपर स्वर्ग से उतरकर आती है। काश, उसके प्रेम की लहरें मेरी आत्मा को हमेशा के लिए ढक लें।" मुझे पूरा भरोसा है कि परमेश्वर की अद्भुत शांति मेरी माँ के हृदय को पूरी तरह से अपने अधिकार में ले लेगी।

जब तक यीशु वापस नहीं आ जाते, तब तक हमारे परिवार की पीढ़ियों में से लगातार प्रभु के सेवकों के उठते रहने का आशीष पाने के लिए...

जब तक यीशु वापस नहीं आ जाते, तब तक हमारे परिवार की पीढ़ियों में से लगातार प्रभु के सेवकों के उठते रहने का आशीष पाने के लिए—हमें अपने बच्चों और वंशजों के साथ मिलकर—सभी मामलों में सावधान रहना चाहिए, परमेश्वर के सामने अपनी पूरी सामर्थ्य से कार्य करते हुए सच्चाई से जीवन जीना चाहिए, और उसके वचन का पालन करना चाहिए (संदर्भ: 1 राजा 2:4, *द मॉडर्न मैन बाइबल*)।

भाग 5:

पुनरुद्धार

सच्चे पुनरुद्धार की खातिर

“जब उन्होंने यह सुना, तो उनके दिल पर गहरी चोट लगी और उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से कहा, ‘भाइयो, हम क्या करें?’” (प्रेरितों के काम 2:37)।

पिछले मंगलवार को, मैंने कोरिया गॉस्पेल ब्रॉडकास्टिंग नेटवर्क पर एक रेडियो इंटरव्यू सुना, जिसमें पादरी किम क्यूंग-वॉन शामिल थे। वे हमारे चर्च में होने वाली पुनरुद्धार सभाओं का नेतृत्व करने के लिए आने वाले हैं। इंटरव्यू के दौरान, जब होस्ट ने पादरी किम से पूछा कि हमें इन सभाओं के लिए कैसे तैयारी करनी चाहिए, तो उनका जवाब था कि हमें "पश्चाताप भरे दिल से" तैयारी करनी चाहिए। यह जवाब सुनकर, मैं खुद को उनसे सहमत होने से रोक नहीं पाया। मैंने परमेश्वर का धन्यवाद भी किया, क्योंकि वे पहले से ही मेरे दिल को—और हमारे चर्च के भाइयों और बहनों के दिलों को—ठीक उसी तरह तैयार कर रहे थे, जैसे-जैसे हम इन पुनरुद्धार सभाओं के करीब पहुँच रहे थे।

आज, इस बुधवार की प्रार्थना सभा के दौरान, मेरी इच्छा है कि हम आने वाली पुनरुद्धार सभाओं के लिए और भी अधिक लगन से तैयारी करें। मैं चाहता हूँ कि हम पश्चाताप का संदेश सुनकर अपने दिलों को तैयार करें। इसके अलावा, मैं चाहता हूँ कि हम सब मिलकर परमेश्वर से पश्चाताप भरे दिल के लिए पूरी लगन से प्रार्थना करें। मैं परमेश्वर से यह प्रार्थना करना चाहता हूँ, जो आज के हमारे शास्त्र-वचन—प्रेरितों के काम 2:37—पर आधारित है: “जब उन्होंने यह सुना, तो उनके दिल पर गहरी चोट लगी और उन्होंने पतरस और दूसरे प्रेरितों से कहा, ‘भाइयो, हम क्या करें?’”

हमें अपने परमेश्वर से मिलकर यह प्रार्थना करनी चाहिए कि, जैसे-जैसे हम प्रभु का वचन सुनें, हमारे दिल पर गहरी चोट लगे और वे गहराई से प्रभावित हों।

हम आध्यात्मिक असंवेदनशीलता के दौर में जी रहे हैं। हम अक्सर देखते हैं कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन के संदर्भ में हमारे दिल कठोर होते जा रहे हैं। हम परमेश्वर के वचन के प्रति अपना आदर-भाव खोते जा रहे हैं। हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ लोग उस वचन का पालन करने की कोशिश करने से भी कतराते हैं। हमें इब्रानियों 4:7 में लिखे शब्दों पर ध्यान देना चाहिए: "... आज, यदि तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को कठोर मत करो ..." हमें दाऊद के उदाहरण का अनुकरण करना चाहिए। जैसा कि 2 शमूएल 24:10 में दर्ज है, बाइबल बताती है कि जब उसने अपनी कमान के तहत सैनिकों की गिनती की—और परमेश्वर के बजाय उन पर भरोसा किया—तो उसे "अपने दिल में अपराध-बोध" महसूस हुआ। दूसरे शब्दों में, उसके अंतःकरण को चोट पहुँची। इसके बाद, उसने अपने पाप का पश्चाताप इस प्रकार किया: "...मैंने जो किया है, उसमें मैंने बहुत बड़ा पाप किया है। अब, हे प्रभु, मैं आपसे विनती करता हूँ, अपने दास का अधर्म दूर कर दीजिए, क्योंकि मैंने बहुत बड़ी मूर्खता की है।" इसलिए, आइए हम पश्चाताप के योग्य फल लाने की इच्छा रखें। कृपया प्रेरितों के काम 26:20 और मत्ती 3:8 देखें: "...पश्चाताप करें और परमेश्वर की ओर मुड़ें, और अपने पश्चाताप के योग्य काम करें..." (प्रेरितों के काम 26:20), और "इसलिए पश्चाताप के योग्य फल लाओ" (मत्ती 3:8)।

सच्चा पश्चाताप हमारे बीच मेल-मिलाप, बहाली, सुधार और आत्मिक जागृति का मार्ग प्रशस्त करता है। मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर हमारे 'विक्ट्री कम्युनिटी' के भीतर आत्मिक जागृति का ऐसा अद्‌भुत आशीष प्रदान करें।

वचन का पुनरुद्धार

“एज्रा ने यहोवा, महान परमेश्वर को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने हाथ उठाकर उत्तर दिया, ‘आमीन, आमीन!’ तब उन्होंने अपने सिर झुकाए और अपने चेहरे ज़मीन की ओर करके यहोवा की आराधना की। येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, केलीता, अजरियाह, योजाबाद, हानान, पेलायाह, और लेवी लोगों ने, लोगों को व्यवस्था समझने में मदद की, जबकि लोग अपनी-अपनी जगहों पर खड़े रहे। उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ा, उसे स्पष्ट किया और उसका अर्थ बताया, ताकि लोग समझ सकें कि क्या पढ़ा जा रहा है। क्योंकि जब सब लोगों ने व्यवस्था के वचन सुने, तो वे रो पड़े। तब हाकिम नहेमायाह, याजक और शास्त्री एज्रा, और लेवी लोगों ने, जो लोगों को सिखा रहे थे, सब लोगों से कहा, ‘यह दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र है; शोक मत करो और न ही रोओ’” (नहेमायाह 8:6–9)।

हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो नैतिक रूप से शिथिल हो गई है। आजकल, हम अक्सर "नैतिक जोखिम" (moral hazard) शब्द सुनते हैं। मूल रूप से, इस शब्द का अर्थ यह था कि लोग एक बार बीमा करवा लेने के बाद कम सावधान हो जाते हैं। इसका सुझाव यह है कि यदि किसी के पास कार बीमा है, तो उसे यातायात दुर्घटनाओं का उतना डर नहीं लगता; इसी तरह, यदि किसी के पास जीवन बीमा है, तो वह अपने स्वास्थ्य पर उतना ध्यान नहीं देता। यह एक ऐसी स्थिति का वर्णन करता है जहाँ किसी की अंतरात्मा असंवेदनशील

हो गई है—ठीक वैसे ही जैसे कोई रिमोट कंट्रोल अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमता खो देता है। यह सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता के खो जाने का संकेत है। हालाँकि नैतिक जोखिम की यह घटना निश्चित रूप से कोई नई बात नहीं है, लेकिन इसकी व्यापकता यह बताती है कि हमारे पास कोई निश्चित मानक नहीं है (जैसा कि डिजिटल क्षेत्र में देखा जाता है)। तो फिर, हमारा मानक क्या है? यह, बहुत ही सरलता से कहें तो, बाइबल है। बाइबल को "कैनन" (Canon) कहा जाता है। इसका मूल अर्थ "मापने की छड़ी" है। आमोस 7:7–8 में पाए गए बिंब को उधार लेते हुए, यह एक "साहुल" (plumb line) है। साहुल निर्माण स्थलों पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक औजार है। यह एक डोरी से वज़न लटकाकर एक सच्ची ऊर्ध्वाधर रेखा स्थापित करने का कार्य करता है। परमेश्वर के वचन का ठीक यही कार्य और भूमिका है। अगर हम परमेश्वर के वचन से भटक जाते हैं, तो हम अपनी ही मनमर्ज़ी के अनुसार जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। नतीजतन, न्यायियों 21:25 में हमें ये शब्द मिलते हैं: "उन दिनों इस्राएल में कोई राजा नहीं था; हर कोई वही करता था जो उसे सही लगता था।" आज के धर्मग्रंथ के अंश पर आधारित और "वचन का पुनरुद्धार (II)" शीर्षक के तहत, मैं परमेश्वर के वचन में निहित आध्यात्मिक पुनरुद्धार के तीन विशिष्ट संकेतों की पड़ताल करना चाहूँगा।

पहला है स्तुति और आराधना।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश, नहेमायाह 8:6 पर नज़र डालें: "एज्रा ने यहोवा, महान परमेश्वर की स्तुति की; और सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाए और जवाब दिया, 'आमीन! आमीन!' फिर वे झुक गए और अपने चेहरे ज़मीन पर टिकाकर यहोवा की आराधना की।" अपनी किताब *द पर्सन गॉड सीक्स* में, पादरी होंग सियोंग-गियोन "परमेश्वर की आराधना के दो चरण" बताते हैं। आराधना के पहले चरण—यानी, "स्तुति"—के बारे में लेखक लिखते हैं: "यह परमेश्वर के पास जाने का वह चरण है जिसमें हम उस काम पर भरोसा करते हैं जो उसने यीशु मसीह के ज़रिए हमारे लिए पूरा किया है—उन कामों पर जो उसने किए हैं। ... जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं, तो इसकी शुरुआत उस काम को याद करने और उसके लिए धन्यवाद देने से होती है जो परमेश्वर ने यीशु मसीह में पहले ही पूरा कर दिया है। फिर हम उसके बारे में गीत गाते हैं। हम उसका ऐलान करते हैं। हम उसके लिए स्तुति करते हैं।" "आराधना"—जो आराधना सेवा का दूसरा चरण है—के बारे में लेखक ये बातें कहते हैं: "जब हम परमेश्वर के पास जाते हैं, तो हम उस काम के लिए

गीत गाते हुए और धन्यवाद देते हुए आते हैं जो उसने हमारे अंदर पूरा किया है; हालाँकि, एक बार जब हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने पहुँच जाते हैं, तो हम उसकी महिमा को देखते हैं। उस पल, परमेश्वर द्वारा किए गए कामों पर ध्यान देने के बजाय, हम स्वयं परमेश्वर की बड़ाई करते हैं—परमेश्वर जैसा वह अपने अस्तित्व में है। हम उसकी कृपा, प्रेम, पवित्रता, दया और उसकी परोपकारी महिमा के लिए उसकी स्तुति करते हैं। ... अब, हम परमेश्वर की स्तुति केवल इसलिए नहीं करते कि उसने क्या किया है, बल्कि हम उसकी आराधना इसलिए करते हैं कि वह कौन है—उसके स्वयं के ईश्वरत्व के लिए।" आज के पाठ के पद 6 में, हम देखते हैं कि एज्रा स्तुति कर रहा है, जबकि इस्राएल के लोग आराधना में लगे हुए हैं: "एज्रा ने महान परमेश्वर, यहोवा को धन्य कहा..." एज्रा समझ गया था कि "महान परमेश्वर"—यानी, शक्तिशाली परमेश्वर [तुलना करें 1:5 ("महान और भयानक परमेश्वर"); 4:14 ("वह प्रभु जो महान है")]—ने अपनी असीम शक्ति [1:10 ("महान शक्ति")] के द्वारा, इस विशाल कार्य [6:3 ("एक महान कार्य"); 4:19] को पूरा किया था: यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण [6:16: "...क्योंकि वे जानते थे कि हमारे परमेश्वर ने इस कार्य को पूरा किया है"]। इस प्रकार, इस्राएल के सभी लोगों के सामने खड़े होकर—जो मूसा की व्यवस्था सुनने के लिए जल-फाटक चौक पर इकट्ठा हुए थे—एज्रा ने महान परमेश्वर की स्तुति की। एज्रा 3:11 पर विचार करें: "स्तुति और धन्यवाद के साथ उन्होंने बारी-बारी से प्रभु के लिए गाया: 'वह भला है; इस्राएल के प्रति उसका प्रेम सदा बना रहता है।' और सभी लोगों ने प्रभु की स्तुति में ज़ोर से जयकार की, क्योंकि प्रभु के भवन की नींव रखी गई थी।" इसके जवाब में, इस्राएल की पूरी सभा "झुक गई और प्रभु की आराधना की।" नहेमायाह 8:6 का दूसरा आधा भाग देखें: "और सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाकर जवाब दिया, 'आमीन, आमीन!' फिर उन्होंने अपने सिर झुकाए और ज़मीन पर अपना चेहरा रखकर प्रभु की आराधना की।" यह, बिना किसी संदेह के, वचन का एक अद्भुत और सच्चा पुनरुद्धार है। बाइबल हमें बताती है कि जल-फाटक चौक पर इकट्ठा हुए सभी इस्राएलियों ने शास्त्री एज्रा की स्तुति—उनके "आशीर्वाद"—का जवाब "आमीन, आमीन" कहकर दिया, जो उन्होंने "महान परमेश्वर" के लिए की थी, और विनम्रतापूर्वक उसकी "आराधना" की। दूसरे शब्दों में, इस्राएलियों ने "आमीन, आमीन" इसलिए कहा क्योंकि उन्होंने स्वीकार किया कि महान परमेश्वर—शक्तिशाली परमेश्वर—ने एक महान कार्य पूरा किया था: यरूशलेम शहर का पुनर्निर्माण। इसके अलावा, इस्राएली केवल उस कार्य के लिए एज्रा की स्तुति में शामिल होकर ही नहीं रुके जो परमेश्वर ने पूरा किया था; बल्कि, विनम्रता और

विस्मय के साथ, उन्होंने परमेश्वर की उसके अपने स्वभाव के लिए—उसके "ईश्वरत्व" के लिए, "महान परमेश्वर" होने के लिए, और उसकी सर्वोच्च महानता के लिए—आराधना की।

एज्रा की तरह, हमें भी परमेश्वर के कार्यों के लिए उसकी स्तुति करनी चाहिए, क्योंकि हम परमेश्वर के भले हाथ को उस वादे को पूरा करने के लिए कार्य करते हुए देखते हैं जो उसने हमारे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' से किया था—वह वादा जो मत्ती 16:18 में पाया जाता है। इसके अलावा, इस्राएलियों की ही तरह, हमें भी विनम्रतापूर्वक परमेश्वर की वफ़ादारी, अनुग्रह और भलाई—यानी परमेश्वर के रूप में उनके मूल स्वभाव—को स्वीकार करना चाहिए, विशेषकर तब जब वे अपने वादे के अनुसार अपने वचन को पूरा करने के लिए कदम उठाते हैं; और इस प्रकार, हमें उनकी आराधना करने के लिए उनके अनुग्रह के सिंहासन के निकट जाना चाहिए।

दूसरी बात, यह समझ है।

कृपया आज का पाठ देखें, नहेमायाह 8:7–8: "येशूअ, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बताई, होदियाह, मासेयाह, केलीता, अजरियाह, योजाबाद, हानान, पेलायाह, और लेवीय—ये सब अपनी-अपनी जगह पर खड़े हुए और लोगों को व्यवस्था की शिक्षा दी। उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ा, उसे स्पष्ट किया और उसका अर्थ बताया, ताकि लोग समझ सकें कि क्या पढ़ा जा रहा है।" जब शास्त्री एज्रा ने परमेश्वर की स्तुति ("धन्यवाद") की, और इस्राएल के लोगों ने "आमीन, आमीन" कहकर जवाब दिया और परमेश्वर की आराधना की, तो पद 7 में बताया गया है कि कैसे लेवियों ने जल-फाटक के पास चौक में खड़े इस्राएलियों को व्यवस्था की शिक्षा दी। यहाँ, हम बाइबल सिखाने के तरीके के बारे में कई सिद्धांत पहचान सकते हैं।

(1) इसमें पवित्रशास्त्र को पढ़ना शामिल है।

लेवियों ने "परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में से पढ़ा।"

(2) किसी को भी पवित्रशास्त्र से जो विषय सिखाना है, उसे स्पष्ट रूप से बताना चाहिए और उसकी व्याख्या करनी चाहिए।

लेवियों ने इस्राएल के लोगों के लिए "परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक" के "अर्थ की व्याख्या" की। और भी सटीक रूप से कहें तो, इसका मतलब है कि लेवियों ने मूसा की व्यवस्था की व्याख्या ऐसी भाषा में की जिसे इस्राएली समझ सकें। इसका कारण यह है कि इब्रानी भाषा—जिसका उपयोग मूसा ने तब किया था जब उसने पेंटाट्यूक (बाइबल की पहली पाँच पुस्तकें, उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक) लिखी थी—नहेमायाह और एज्रा के समय तक काफी बदल चुकी थी। इसलिए, लेवियों ने मूसा की व्यवस्था की व्याख्या इस तरह से की कि वह इस्राएलियों के लिए आसानी से समझ में आ जाए। जे. आई. पैकर बताते हैं कि लेवियों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक के अर्थ की व्याख्या इस तरह से की कि इस्राएली उस व्यवस्था को अपने दैनिक जीवन में लागू करने में सक्षम हो सकें। (3) बाइबल अध्ययन का उद्देश्य सीखने वालों को परमेश्वर के वचन का अर्थ समझने में सक्षम बनाना है।

लेवियों ने इस्राएल के लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था समझने में मदद की। जॉन मिल्टन ग्रेगरी की किताब *The 7 Laws of Teaching* में—खास तौर पर पहले नियम, "सिखाने का नियम" (The Law of Teaching) में—उन्होंने "सिखाने" को इस तरह परिभाषित किया है: "सिखाना, अपने सबसे सरल अर्थ में, अनुभव का आदान-प्रदान है। ... यह किसी दूसरे के मन में अपने मन की तस्वीर बनाना है—विचार और समझ को किसी ऐसी सच्चाई की समझ के अनुरूप ढालना, जिसे शिक्षक जानता है और बताना चाहता है।" यहाँ जिस "आदान-प्रदान" की बात की गई है, वह केवल बौद्धिक ज्ञान का हस्तांतरण नहीं है; बल्कि, इसका अर्थ है सीखने वाले की मदद करना ताकि वह शिक्षक के अपने अनुभव को दोहरा सके। इस संदर्भ में, ग्रेगरी ने शिक्षक के बारे में यह अंतर्दृष्टि दी: एक शिक्षक को उस पाठ की पूरी और गहरी समझ होनी चाहिए जिसे वह सिखाना चाहता है। इसका मतलब है पूरे दिल से और स्पष्ट समझ के साथ सिखाना। इसके अलावा, शिक्षक को ऐसी भाषा का उपयोग करना चाहिए जो स्पष्ट और जीवंत हो—ऐसी भाषा जो उसके और उसके छात्रों, दोनों के लिए समझने योग्य हो।

तीसरा, *रोना*।

कृपया आज के धर्मग्रंथ के अंश के पहले भाग को देखें, नहेमायाह 8:9: "क्योंकि जब सब लोगों ने व्यवस्था की बातें सुनीं, तब वे रोने लगे..." जैसे ही उन्होंने मूसा की व्यवस्था (Law of Moses) सुनी, इस्राएल के सभी लोग रोने लगे। इसका कारण यह था कि, व्यवस्था के माध्यम से, उन्हें अपने पापों का एहसास हो गया था। रोमियों 3:20 पर विचार करें: "...क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।" जे. आई. पैकर ने इस्राएलियों के रोने का कारण इस तरह समझाया: ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर के वचन के एहसास ने उनके दिलों की गहराई में एक गहरा आघात पहुँचाया। लोग तब रोते हैं जब वे भावनाओं से अभिभूत हो जाते हैं; और ऐसे आँसू, जो भावनाओं से पैदा होते हैं, किसी विशेष वास्तविकता की स्पष्ट और विशिष्ट पहचान से उत्पन्न होते हैं। आध्यात्मिक पुनरुद्धार की जड़ें—चाहे वह व्यक्ति के लिए हो या समुदाय के लिए—हमेशा परमेश्वर की पवित्रता, भलाई और दया में, और हमारे अपने व्यक्तिगत पापों की स्पष्ट पहचान में निहित होती हैं: हमारी दुष्टता, शर्म, ढिठाई और आत्म-विनाशकारी मूर्खता।

पिछली बार हमने परमेश्वर का वचन सुनकर कब आँसू बहाए थे? पिछली बार उस वचन ने हमारे दिलों को कब छेदा था, हमारे पापों को उजागर किया था और हमें पश्चाताप के आँसू बहाने के लिए प्रेरित किया था? हमारे पश्चाताप के आँसू क्यों सूख गए हैं? मुझे इसका जवाब आमोस 8:11 में मिलता है: यह "प्रभु के वचन सुनने की अकाल" के कारण है कि हम अपने पापों को पहचानने में असफल रहते हैं। यहाँ थॉमस वॉटसन "पश्चाताप" पर कहते हैं: "पश्चाताप पाखंडियों के लिए आवश्यक है। पाखंड पवित्रता का मुखौटा है; पाखंडी—या 'मंच का अभिनेता'—केवल नैतिकतावादी से एक कदम आगे जाता है, और खुद को धर्म के लिबास में सजाता है। वह ईश्वर-भक्ति का रूप तो धारण करता है, पर उसकी शक्ति को नकारता है (2 तीमुथियुस 3:5)। पाखंडी उस घर की तरह है जिसका बाहरी हिस्सा तो सुंदर है, फिर भी अंदर का हर कमरा अंधेरा है। वह एक सड़ा हुआ खंभा है जिस पर सोने की सुंदर परत चढ़ी है; अपनी धार्मिक स्वीकारोक्ति के मुखौटे के नीचे, वह अपने पापों के सड़ते हुए घावों को छिपाता है। पाखंडी शायद चेहरे पर कॉस्मेटिक पेंटिंग का विरोध करे, फिर भी वह बनावटी पवित्रता का मेकअप लगाता है। ठीक इसी कारण से कि वह बाहर से अच्छा दिखता है, वह अंदर से वास्तव में बुरा हो सकता है। पाखंडी की आँखें स्वर्ग पर टिकी हुई प्रतीत होती हैं, फिर भी उसका हृदय अशुद्ध, शारीरिक वासनाओं से भरा होता है। वह गुप्त पाप में जीता है, और अपनी ही

अंतरात्मा की सीधी अवहेलना करते हुए कार्य करता है। वह वचन सुनता है, लेकिन केवल अपने कानों से। वह कलीसिया के प्रति अपनी भक्ति में जोशीला होता है—और इस संबंध में दूसरों की नज़रें और प्रशंसा बटोरता है—फिर भी वह अपने घर में और अपने निजी एकांत में प्रार्थना की उपेक्षा करता है। पाखंडी विनम्रता का दिखावा करता है, लेकिन वह ऐसा केवल दुनिया में अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए करता है। वह विश्वास रखने का दावा करता है, फिर भी विश्वास को ढाल के रूप में उपयोग करने के बजाय, वह इसे एक मुखौटे के रूप में इस्तेमाल करता है। वह अपनी बगल में बाइबल दबाए चलता है, लेकिन वह इसे अपने हृदय में धारण नहीं करता। परमेश्वर के वचन का दीपक लो और अपने हृदय की गहराइयों की जाँच करो; देखो कि क्या, संयोगवश, तुम्हें वहाँ कोई ऐसी बात मिल जाए जिसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता हो" (इंटरनेट)।

हम आध्यात्मिक अकाल के एक युग में प्रवेश कर चुके हैं—एक ऐसा समय जब हम परमेश्वर के वचन को सुनने से वंचित हैं (आमोस 8:11)। हबक्कूक 1:4 में, भविष्यवक्ता हबक्कूक ने घोषणा की: "...व्यवस्था शिथिल पड़ गई है, और न्याय कभी नहीं होता। क्योंकि दुष्ट लोग धर्मी लोगों को घेर लेते हैं; इसलिए न्याय विकृत हो जाता है।" आज के समय में, जब कानून का पालन करने में ढिलाई आ गई है, तो हम विश्वासियों को कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए? इस स्थिति को देखते हुए, परमेश्वर के भविष्यवक्ता हबक्कूक ने यह प्रार्थना की: "हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है और मैं डर गया हूँ। हे यहोवा, इन वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर! इन वर्षों के बीच इसे प्रकट कर; अपने क्रोध में भी दया को याद रख" (3:2)। यहाँ "फिर से जीवित करने" के लिए जिस इब्रानी शब्द का प्रयोग किया गया है, वह *chayah* है, जो इस गहरी चाहत को व्यक्त करता है कि परमेश्वर अपना जीवन ही हम पर उंडेल दे। इब्रानी दृष्टिकोण से, पुनरुद्धार का अर्थ हमेशा अपने पापों का पश्चाताप करना और "परमेश्वर की ओर लौटना" होता है। नए नियम में भी, "परमेश्वर की ओर लौटने" के इस कार्य को ही पुनरुद्धार के रूप में परिभाषित किया गया है। सच्चे पुनरुद्धार का अर्थ है उन चीज़ों को छोड़ देना जिनका हम पीछा कर रहे थे—जिन्हें हम परमेश्वर की महिमा से ज़्यादा प्राथमिकता दे रहे थे—और प्रभु की ओर वापस मुड़ना। यह एक कमज़ोर पड़ चुकी आत्मा को फिर से प्रज्वलित करना है—यह "एक बार फिर से जोशीला" बन जाने का अनुभव है। यह एक ऐसा समय होता है जब विश्वासियों का

विश्वास परिपक्व होता है, और अविश्वासी बड़ी संख्या में परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं। हमें अपने पापों से तुरंत मुड़ना चाहिए और परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले जीवन की ओर लौटना चाहिए।

“हे प्रभु, इन वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर!”

“हे प्रभु, मैंने तेरे बारे में सुना और डर गया; हे प्रभु, इन वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर! इन वर्षों के बीच इसे प्रकट कर; अपने क्रोध में भी दया को याद रख” (हबक्कूक 3:2)।

प्रिय मित्रों, “पुनरुद्धार” (revival) आखिर है क्या? जैसे-जैसे हमारा चर्च 1 जुलाई को अपनी स्थापना की 32वीं वर्षगांठ के करीब पहुँच रहा है, हम शुक्रवार, 29 जून और शनिवार, 30 जून को एक “वचन सभा” (Word Gathering) आयोजित कर रहे हैं, जिसमें पादरी सॉन्ग सांग-ह्यून हमारे अतिथि वक्ता होंगे। जहाँ कई चर्च आमतौर पर ऐसे कार्यक्रमों को “पुनरुद्धार सभा” या “पुनरुद्धार सम्मेलन” कहते हैं, वहीं हमारा चर्च इसे “वचन सभा” कहना पसंद करता है। इसका कारण मेरा यह विश्वास है कि “पुनरुद्धार” की जो अवधारणा—जिसे आज के चर्च चाहते हैं, जिसके बारे में बात करते हैं, जिसके लिए प्रार्थना करते हैं और जिसका प्रचार करते हैं—उसे एक विकृत अर्थ दे दिया गया है। इस विकृत अर्थ का तात्पर्य यह है कि जब हम “पुनरुद्धार” के बारे में सोचते हैं, तो हम एक ऐसे चर्च की कल्पना करते हैं जो आकार में बहुत विशाल हो गया हो—भव्य प्रार्थना-भवन बना रहा हो, जिसके सदस्यों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही हो, और जो भरपूर चढ़ावा इकट्ठा कर रहा हो—और हम *उसी* को एक “पुनरुद्धारित” (revived) चर्च मानते हैं। किसी न किसी तरह, ऐसा लगता है कि पुनरुद्धार के बारे में

आधुनिक ईसाई दृष्टिकोण, “किसी भी कीमत पर विकास,” “प्रदर्शन-आधारित सफलता,” और “आर्थिक वर्चस्व” की विचारधारा के साथ घुल-मिल गया है। यह एक ऐसे धर्मनिरपेक्ष चर्च की छवि प्रस्तुत करता है—एक ऐसा चर्च जो दुनिया के तर्क से भ्रमित हो गया है। इसीलिए मैं अपने चर्च के कार्यक्रम को “पुनरुद्धार सभा” या “पुनरुद्धार सम्मेलन” का नाम न देकर, बल्कि “वचन सभा” कहना पसंद करता हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास इसलिए है, क्योंकि मेरा मानना है कि यदि हम ईसाई वास्तव में शास्त्रों में वर्णित सच्चे पुनरुद्धार की इच्छा रखते हैं, तो हमें परमेश्वर के वचन की ओर लौटना होगा। इसके अलावा, मेरा मानना है कि परमेश्वर के उस वचन को सुनने के बाद, हमें सच्चे मन से पश्चाताप करना चाहिए। इसका कारण सीधा-सा है: पश्चाताप के बिना कोई पुनरुद्धार संभव नहीं है। आज के पाठ, हबक्कूक 3:2 को देखते हुए, भविष्यवक्ता हबक्कूक परमेश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते हैं: “हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है और मैं डर गया हूँ। हे यहोवा, वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर! वर्षों के बीच उसे प्रकट कर! क्रोध में दया को याद रख।” हबक्कूक 3:1 में, पाठ कहता है, “भविष्यवक्ता हबक्कूक की एक प्रार्थना, जो *शिगियोनोथ* की धुन पर है”; फिर भी, अंतिम पद में—पद 19 के दूसरे भाग में—शास्त्र कहता है, “प्रधान गायक के लिए। मेरे तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ।” इसका क्या अर्थ है? पद 1 में, शास्त्र इसे एक “प्रार्थना” के रूप में संदर्भित करता है, जबकि पद 19 में, इसे एक “गीत” कहता है; तो, क्या आज का पाठ—भविष्यवक्ता हबक्कूक के शब्द—एक प्रार्थना है या एक गीत? इसके अलावा, एक और प्रश्न उठता है: पद 1 में उल्लिखित शब्द *शिगियोनोथ* का क्या अर्थ है? सबसे पहले, आइए हम पद 1 में दिखाई देने वाले शब्द *शिगियोनोथ* के अर्थ पर विचार करें। यह शब्द पूरी बाइबिल में केवल दो बार आता है: हबक्कूक 3:1 में और भजन संहिता 7 के शीर्षक में। हालाँकि इसका सटीक अर्थ अभी भी स्पष्ट नहीं है, डॉ. पार्क यून-सन का सुझाव है कि “इस संदर्भ में, यह केवल एक धुन का नाम प्रतीत होता है—विशेष रूप से, एक ऐसा प्रकार जिसकी विशेषता भावविभोर करने वाली प्रकृति है” (पार्क यून-सन)। इसके अतिरिक्त, पादरी जॉन मैकआर्थर के अनुसार, इस शब्द का संगीत-युक्त आराधना के संदर्भ में महत्व है, जो यह दर्शाता है कि हबक्कूक अध्याय 3 को एक गीत के रूप में गाया जाना अभिप्रेत था (मैकआर्थर)। एक ही वाक्यांश में सारांशित करने के लिए: आज के पाठ में पाई जाने वाली भविष्यवक्ता हबक्कूक की प्रार्थना को एक ऐसे प्रार्थना के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसे एक जोशीले गीत के माध्यम से व्यक्त किया गया है। इसलिए, आज—इस “हबक्कूक

के गीत" के दूसरे पद पर ध्यान केंद्रित करते हुए और उन विशिष्ट प्रार्थना अनुरोधों पर मनन करते हुए जो भविष्यवक्ता हबक्कूक ने गीत के रूप में परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किए—मेरी यह इच्छा है कि हम उन शिक्षाओं को अपनाएँ जो हमें दी गई हैं और, बदले में, "पुनरुद्धार" को अपनी प्रार्थनाओं का मुख्य विषय बनाएँ, और परमेश्वर की जोशीली स्तुति करें। आज के पाठ के पहले हिस्से—हबक्कूक 3:2—पर फिर से नज़र डालते हुए, हम पढ़ते हैं: "हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है और मैं डर गया हूँ; हे यहोवा, इन वर्षों के बीच अपने काम को फिर से जीवित कर! इन वर्षों के बीच इसे प्रकट कर।" तो फिर, प्रभु के विषय में वह कौन सी "खबर" थी जिसे भविष्यवक्ता हबक्कूक ने सुना था? इस खबर का स्वरूप कैसा था जिसने भविष्यवक्ता को विस्मय से भर दिया? वह खबर और कुछ नहीं, बल्कि परमेश्वर की यह घोषणा थी कि वह यहूदा (1:5–11) और बाबुल (2:2–20) दोनों पर अपना न्याय लाएगा। परमेश्वर ने यह घोषणा क्यों की कि वह अपने ही लोगों—यहूदा के लोगों—का न्याय करेगा? इसका कारण यह था कि वे "दुष्टता" और "विश्वासघात" के साथ काम कर रहे थे, "लूटपाट और हिंसा" में लिप्त थे, और अपने बीच "झगड़े और कलह" को हावी होने दे रहे थे (1:3)। दूसरे शब्दों में, क्योंकि यहूदा के लोग बुरे काम और अन्याय के कार्य कर रहे थे, इसलिए उन्होंने अनिवार्य रूप से परमेश्वर के न्याय को अपने ऊपर बुला लिया। यहूदा के लोग परमेश्वर के विरुद्ध किस हद तक बुराई कर रहे थे? जैसा कि हबक्कूक 1:4 का दूसरा हिस्सा प्रकट करता है, "दुष्ट लोग धर्मी को घेर लेते हैं; इसलिए न्याय विकृत होकर निकलता है।" परिणामस्वरूप, उस समय, यहूदा राष्ट्र ऐसी स्थिति में था जहाँ "व्यवस्था शक्तिहीन हो गई है, और न्याय कभी बाहर नहीं निकलता" (पद 4, पहला हिस्सा)। क्या यहूदा के लोगों का यह वर्णन आज हम मसीहियों की वास्तविकता का दर्पण नहीं है? यद्यपि हम विभिन्न प्रकार की दुष्टता और अन्याय के कार्यों में लिप्त हो सकते हैं, क्या परमेश्वर की व्यवस्था—उसकी आज्ञाओं—को बनाए रखने का हमारा उत्साह ठंडा नहीं पड़ गया है, ठीक वैसे ही जैसे हबक्कूक के दिनों में यहूदा के लोगों के बीच हुआ था? इसका परिणाम क्या है? इसका परिणाम यह है कि हम मसीही इस संसार के प्रकाश और नमक के रूप में अपनी भूमिका निभाने में असफल हो रहे हैं। और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, हम मसीही आज एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान देने में असफल हो रहे हैं; इस समुदाय के भीतर न्याय का अभ्यास करने के बजाय, हम अन्याय में लिप्त हो रहे हैं। ठीक वैसे ही जैसे हबक्कूक के दिनों में दुष्ट लोगों ने धर्मी लोगों को घेर लिया था, वैसे ही आज के युग और समाज में भी, ऐसे मसीही लोग ज़्यादा हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हुए जीते हैं, बजाय उन धर्मी लोगों के जो विश्वास से जीते हैं। इसलिए, पवित्र और न्यायी परमेश्वर ने हबक्कूक 1:5 में यहूदा के लोगों से कहा: "जातियों के बीच देखो

और ध्यान दो—पूरी तरह से चकित हो जाओ! क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में कुछ ऐसा करने जा रहा हूँ जिस पर तुम विश्वास नहीं करोगे, भले ही तुम्हें उसके बारे में बताया जाए।" वह कौन सा खास काम है जिसे परमेश्वर करने वाले हैं—ठीक वही काम जो यहूदा के लोगों को पूरी तरह से चकित कर देगा? इसका ठीक-ठीक यही अर्थ है: कि परमेश्वर का इरादा "कसदियों"—या बाबुलियों—को खड़ा करके यहूदा के लोगों का न्याय करने का है; जिन्हें वह "एक क्रूर और उतावले लोग" के रूप में वर्णित करते हैं, "जो अपनी ज़मीन की चौड़ाई में मार्च करते हैं ताकि उन रहने की जगहों पर कब्ज़ा कर सकें जो उनकी अपनी नहीं हैं" (पद 6)। हालाँकि, न्याय का यह संदेश सुनकर, भविष्यवक्ता हबक्कूक समझ गए कि यह परमेश्वर द्वारा चाहा गया एक प्रकार का दंड था, जिसका उद्देश्य यहूदा के लोगों के पापों के विरुद्ध एक चेतावनी के रूप में काम करना था (पद 12)। इसके अलावा, वह जानते थे कि क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर पवित्र है, इसलिए वह इस्राएल को बाबुलियों के हाथों पूरी तरह से नष्ट नहीं होने देगा—ऐसे लोग जो खुद इस्राएल से भी ज़्यादा दुष्ट थे (पद 12)। बल्कि, उन्होंने इस सच्चाई को पहचाना कि सनातन परमेश्वर—जो अनादि काल से अस्तित्व में है—अपने प्रेम के कारण, अपने चुने हुए लोगों, इस्राएल की हमेशा देखभाल और रखवाली करता रहेगा (पार्क यून-सन)। परिणामस्वरूप, भविष्यवक्ता हबक्कूक परमेश्वर के प्रति विस्मय और श्रद्धा से भरे बिना नहीं रह सके। प्रभु के बारे में यह बात सुनकर उनके विस्मय से भर जाने का कारण केवल यह नहीं था कि परमेश्वर बाबुलियों के माध्यम से इस्राएल के लोगों को दंड देने वाले थे; बल्कि, यह "परमेश्वर की साक्षात उपस्थिति में अनुभव की गई विस्मय की भावना, या परमेश्वर और उसके रहस्यमय तरीकों के प्रति निर्देशित आराधना और स्तुति का एक कार्य" की अभिव्यक्ति थी (लॉयड-जोन्स)। परमेश्वर का यह रहस्यमय तरीका—जैसा कि हबक्कूक अध्याय 2 में बताया गया है—यह था कि, यहूदी राष्ट्र को दंड देने के बाद, परमेश्वर अपने लोगों के उद्धार के लिए बाबुल का न्याय करेंगे। दूसरे शब्दों में, हबक्कूक विस्मय से भर गया था क्योंकि उसे यह खबर मिली थी कि परमेश्वर बाबुल राष्ट्र का न्याय करेगा—एक ऐसा राष्ट्र जिसका दिल घमंडी था (2:3, 4), जिसने अपनी ही आत्मा के विरुद्ध पाप किया (पद 10), जो नशे में धुत जैसा व्यवहार करता था (पद 5, 15) और जिसके कार्यों पर कोई रोक नहीं थी, और—क्षेत्रीय विस्तार की महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर—एक उन्मत्त साम्राज्यवाद में लिप्त था (पार्क यून-सन) (पद 5), जो विभिन्न राष्ट्रों को लूटता था, इंसानी खून बहाता था, और हिंसा के कार्य करता था (पद 8)। भविष्यवक्ता हबक्कूक परमेश्वर के प्रति विस्मय में खड़े हुए बिना नहीं रह सका। इसी विस्मय की भावना के बीच, हबक्कूक ने एक गीत के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना

की, और विनती की: “हे प्रभु, वर्षों के बीच अपने कार्य को पुनर्जीवित कर” (3:2)। तो फिर, यहाँ “तेरा कार्य” किसे संदर्भित करता है? यह विशेष रूप से प्रभु के उस कार्य की ओर संकेत करता है जिसमें वह बाबुल पर न्याय लाकर अपने लोगों—इस्राएल—को बचाता है। यह प्रभु का यही कार्य था—कि वह वर्षों के बीच इसका पुनरुद्धार करेगा—जिसके लिए भविष्यवक्ता हबक्कूक ने अपने गीत के माध्यम से परमेश्वर से पूरी लगन से विनती की (3:2)।

भाइयों और बहनों, हम परमेश्वर की उपस्थिति में उनकी स्तुति और आराधना करने, और उन्हें धन्यवाद देने क्यों आते हैं? हम उनकी उपस्थिति में—जो श्रद्धा और विस्मय से भरी है—अपनी स्तुति और आराधना करने क्यों जाते हैं? क्या इसका कारण वह रहस्यमयी तरीका नहीं है जिससे परमेश्वर ने आपके और मेरे उद्धार के लिए कार्य किया? यह कैसे संभव हुआ कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र, यीशु को, क्रूस पर—उस श्राप के वृक्ष पर—कीलों से जड़वा दिया, और इस प्रकार हमें बचाया, जिनका भाग्य अन्यथा अनंत विनाश ही था? जब हम परमेश्वर के उद्धार के इस अद्‌भुत कार्य पर विचार करते हैं, तो हम कैसे उनकी उपस्थिति में लापरवाही से, या घमंडी हृदय के साथ, बिना किसी श्रद्धा के अपनी स्तुति और आराधना करने जा सकते हैं? भविष्यवक्ता हबक्कूक केवल यही कर सके कि वे स्तुति के माध्यम से परमेश्वर से अपनी विनती करें, और पुकार उठें: “हे यहोवा, वर्षों के बीच अपने कार्य को पुनर्जीवित कर! वर्षों के बीच इसे प्रकट कर...” (3:2)। इसका क्या अर्थ है? डॉ. लॉयड-जोन्स ने कहा: “उन्होंने न तो उद्धार या सांत्वना मांगी; न ही उन्होंने यह मांगा कि इस्राएल के लोग बच जाएं, या उन्हें कसदियों के साथ युद्ध से मुक्ति मिले। इसके अलावा, उन्होंने कष्टों से बचने के लिए, या यरूशलेम को लूटपाट से बचाने के लिए, या मंदिर को पूर्ण विनाश से सुरक्षित रखने के लिए भी प्रार्थना नहीं की। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें एहसास था कि ये घटनाएं अनिवार्य थीं—वास्तव में, कि वे होनी ही थीं। उन्होंने परमेश्वर से अपनी योजनाओं को बदलने के लिए प्रार्थना नहीं की। भविष्यवक्ता की एकमात्र चिंता यह थी कि परमेश्वर का कार्य और उद्देश्य परमेश्वर के राज्य के भीतर और पूरे संसार में पूरे हों। उनकी बस यही इच्छा थी कि सब कुछ ठीक हो जाए। वास्तव में, वे उस बिंदु तक पहुंच गए थे जहां वे यह स्वीकारोक्ति कर सकते थे: ‘चाहे मुझ पर या मेरे लोगों पर कोई भी कष्ट क्यों न आ पड़े, यदि प्रभु का कार्य पुनर्जीवित होता है और पवित्रता के साथ पूरा किया जाता है, तो मुझे उस कष्ट की कोई चिंता नहीं है।’ उनकी एकमात्र विनती यही थी कि परमेश्वर वर्षों के बीच अपने

कार्य को पुनर्जीवित करे" (लॉयड-जोन्स)। तो फिर, यह "पुनरुद्धार" क्या था जिसकी भविष्यवक्ता हबक्कूक ने इतनी उत्कटता से इच्छा की थी? क्या ऐसा नहीं था कि इस्राएल—जो परमेश्वर के अपने लोग थे—बाबुल के आक्रमण से आई सारी पीड़ा और कष्टों के बीच (जिसे परमेश्वर की ओर से एक दैवीय दंड के रूप में देखा गया), अपने सभी पापों का पश्चाताप करेंगे, परमेश्वर की ओर लौटेंगे, और उनके पवित्र लोगों के लिए उचित तरीके से जीवन बिताएंगे? हिब्रू भाषा में, "पुनरुद्धार" (revival) शब्द का मुख्य अर्थ "बचाए रखना" या "जीवित रखना" होता है; फिर भी, इन परिभाषाओं से परे, इसमें "शुद्ध करना," "सुधारना," और "सारी बुराई को दूर करना" जैसी अवधारणाएँ भी शामिल हैं (लॉयड-जोन्स)। इस्राएल के लोगों को दंडित करने के लिए बाबुलियों को खड़ा करके—जिन्होंने पाप किया था और पश्चाताप करने से इनकार कर दिया था—परमेश्वर का उद्देश्य इस्राएल के भीतर की सारी दुष्टता को दूर करना, उन्हें शुद्ध करना, और इस प्रकार उन्हें अपने शुद्ध और पवित्र लोगों के रूप में पुनः स्थापित करना था। इस समाचार को सुनकर, भविष्यवक्ता हबक्कूक—जो विस्मय और आश्चर्य से भर गए थे—ने परमेश्वर के सामने यह विनती की: "हे यहोवा, वर्षों के बीच अपने कार्य को पुनर्जीवित कर! वर्षों के बीच इसे प्रकट कर!"

इसके अलावा, आज के पाठ के बाद वाले भाग में—हबक्कूक 3:2—भविष्यवक्ता ने परमेश्वर से यह विशेष विनती की: "अपने क्रोध में दया को याद रखना।" हबक्कूक जानता था कि यदि परमेश्वर इस्राएल के लोगों को उनके द्वारा किए गए पापों के अनुसार ही कठोरता से दंडित करेंगे, तो उन्हें अनिवार्य रूप से पूर्ण विनाश का सामना करना पड़ेगा। दूसरे शब्दों में, वह समझ गया था कि यदि पवित्र और धर्मी परमेश्वर इस्राएल के पाप करने वाले लोगों पर अपने क्रोध की पूरी तीव्रता उंडेल देंगे, तो बाबुल के आक्रमण से एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा; वे सभी पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे। इसी कारण से हबक्कूक ने परमेश्वर से विनम्रतापूर्वक विनती की: "अपने क्रोध में दया को याद रखना" (3:2)। इस विनती का अर्थ निम्नलिखित है: "यदि आप हमारे पापों के अनुसार ही हमें प्रतिफल देंगे, तो यहूदी राष्ट्र नष्ट हो जाएगा, और उसका कुछ भी शेष नहीं रहेगा; इसलिए, जब आप इस राष्ट्र को अनुशासित करने की प्रक्रिया में हों, तब भी मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उन पर दया करें और उन्हें एक बार फिर बचा लें" (पार्क यून-सन)। यह प्रार्थना एक विनती है—जो भजन संहिता 85:2 के शब्दों की प्रतिध्वनि करती है—कि परमेश्वर "अपने सभी लोगों के अधर्म को क्षमा कर दें और उनके सभी पापों को ढक

दें।" इसके अलावा, यह प्रार्थना एक विनती है—जो भजन संहिता 85:3 को दर्शाती है—कि परमेश्वर "अपना सारा क्रोध हटा लें और अपने भयंकर कोप से मुँह फेर लें।" इसी प्रकार भविष्यवक्ता हबक्कूक ने परमेश्वर से विनती की: "अपने क्रोध को दया से शांत करें। हम केवल यही माँग सकते हैं कि आप अपने ही ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार कार्य करें और, अपने क्रोध के बीच भी, हम पर अपनी करुणा दिखाएँ" (लॉयड-जोन्स)। क्या हमारे चर्च को भी परमेश्वर से ठीक यही विनती नहीं करनी चाहिए? मैं धर्मग्रंथों पर आधारित इस ध्यान के समय को अब समाप्त करना चाहूँगा। व्यक्तिगत रूप से, जब भी मैं "Revival" (पुनरुद्धार) शीर्षक वाला सुसमाचार भजन गाता हूँ, तो अक्सर पाता हूँ कि उसके बोल मेरे हृदय में गहराई तक गूँजते हैं। विशेष रूप से, जब मैं ये पंक्तियाँ गाता हूँ, "इस देश की उजाड़ी को देखो / हे स्वर्ग के परमेश्वर, हे दया दिखाने वाले प्रभु," तो कभी-कभी मैं खुद को ऐसे हृदय से स्तुति करते हुए पाता हूँ जो दयालु परमेश्वर की खोज में है, और साथ ही हमारे चर्च की आध्यात्मिक बंजरता पर भी मेरी नज़र होती है। ऐसे विचारों के बीच, जब मैं प्रार्थनापूर्ण हृदय से गाता हूँ—और परमेश्वर से हमारी कलीसिया के पापों को क्षमा करने की विनती करता हूँ—तो मैं एक नई समर्पण भावना के साथ उसकी स्तुति करता हूँ: कि अब हम सब एक होकर इस चर्च की टूटी हुई नींव को फिर से बनाने के लिए एकजुट हो सकें। सत्य का वचन हमारे चर्च में नया जीवन लाएगा। परमेश्वर की कृपा की नदी इस कलीसिया में से होकर बहेगी, और पवित्र आत्मा की हवा अब बहना शुरू हो जाएगी। प्रभु हमें एक नया दिन प्रदान करेगा, जो उसकी महिमा से लबालब भरा होगा। मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर आए।

जब हम अपने परिवारों के बारे में सोचते हैं...

1. हम परमेश्वर के महान अनुग्रह और दया की अभिलाषा करते हैं।

2. हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें उद्धार का अनुग्रह प्रदान करें।

3. परमेश्वर हमारे दुखों, घावों और पीड़ा का भी उपयोग हमारे परिवार के हर सदस्य को विनम्र बनाने के लिए करें, ताकि हम अपनी आँखें केवल प्रभु पर टिका सकें और केवल उन्हीं पर भरोसा कर सकें।

4. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें पूरी तरह से तोड़ डालें और हमारे कठोर स्वभाव को चूर-चूर कर दें, जिससे हमारे हृदय कोमल हो जाएँ।

5. हमारी इच्छा है कि परमेश्वर हमारे पापों को उजागर करें, ताकि हम उन्हें पहचान सकें, स्वीकार कर सकें और मान सकें, और यीशु के क्रूस के बहुमूल्य लहू पर भरोसा करते हुए क्षमा माँग सकें।

6. परमेश्वर हमें क्षमा का आश्वासन प्रदान करें; और उस असीम अनुग्रह और प्रेम के आधार पर, जिसके द्वारा हमें क्षमा किया गया है, हमें एक-दूसरे को क्षमा करने में समर्थ करें, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।

7. हमारी इच्छा है कि परमेश्वर हमारे बच्चों की रक्षा करें और उन पर अपनी नज़र बनाए रखें। विशेष रूप से, हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे बच्चों के घायल हृदयों को कोमलता से स्पर्श करें और उन्हें चंगा करें।

8. हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे पारिवारिक संकटों को अवसरों में बदल दें, और हमें उनका महान तथा उद्धार करने वाला प्रेम—उसकी पूरी गहराई, विस्तार और विशालता के साथ—अनुभव करने का अनुग्रह प्रदान करें।

9. हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर—जो हमारे घर के प्रभु हैं—हमारे परिवार पर शासन और राज करें, और हमें सभी दुष्ट शक्तियों तथा शैतान की चालों से बचाएँ और हमारी रक्षा करें।

10. परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के दिव्य प्रेम के फल अधिकाधिक मात्रा में उत्पन्न करने में समर्थ करे; और वह हमें अपने प्रेम के माध्यम के रूप में उपयोग करे, ताकि हमारे परिवार का हर सदस्य प्रभु के प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम कर सके।

सच्चा पुनरुद्धार?

वह सच्चा पुनरुद्धार जिसे परमेश्वर लाता है, पश्चाताप से शुरू होता है। हालाँकि, वह "पुनरुद्धार" जिसे हम इंसान अपनी कोशिशों से लाने का प्रयास करते हैं, वह बहाली से शुरू होता प्रतीत होता है।

पश्चाताप
मेल-मिलाप
बहाली
सुधार
पुनरुद्धार

वह हृदय जो परमेश्वर के पुनरुद्धार का अनुभव करता है

वह हृदय जो परमेश्वर के पुनरुद्धार का अनुभव करता है, वह स्तुति और शांति से भरा होता है (यशायाह 57:19)। इसके विपरीत, वह हृदय जो स्तुति और शांति से रहित होता है, वह एक अहंकारी हृदय होता है—एक ऐसा हृदय जो सक्रिय रूप से पाप कर रहा होता है।

मैंने परमेश्वर की भलाई का स्वाद चखा

“अहा, चखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है...” (भजन संहिता 34:8a)।

पिछले रविवार (18 अगस्त) को, सियुंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च में आराधना सेवा के दौरान, मैं बहुत धन्य महसूस कर रहा था, जब मैंने सियुंगरी क्वायर को "Good God" (भला परमेश्वर) गीत के साथ परमेश्वर की स्तुति गाते हुए सुना। विशेष रूप से, मैं उन गीतों से बहुत प्रभावित हुआ, जिनमें हमारे "भले परमेश्वर" का वर्णन ऐसे किया गया था, जो "हमारे जीवन का मार्गदर्शन करता है।" "आमीन!" और इसलिए, जब मैंने अपना उपदेश शुरू किया, तो मैंने घोषणा की: "हे सब लोगो, हमारा परमेश्वर *सचमुच* एक भला परमेश्वर है!"

आज सुबह (20 अगस्त, 2024), हमारी मंगलवार की पारिवारिक आराधना के लिए संदेश तैयार करते समय, आज का पाठ—भजन संहिता 34:8 का पहला भाग—मेरे मन में आया: "अहा, चखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है..." यह एक ऐसा वचन है, जिसे मेरे भीतर वास करने वाले पवित्र आत्मा ने लगभग 28 साल पहले मुझे याद दिलाया था, जब मैं और मेरी पत्नी परमेश्वर को अपनी विवाह सेवा समर्पित कर रहे थे। उस समय—जब मैं अपनी प्यारी पत्नी से केवल छह महीने पहले ही मिला था—यादों का सैलाब मेरे मन में एक वीडियो रील की तरह उमड़ आया; वे यादें बता रही थीं कि कैसे, केवल छह महीने की इतनी छोटी सी अवधि में, हम विवाह करने के लिए वहाँ खड़े थे। उन विचारों के बीच, पवित्र आत्मा ने मुझे परमेश्वर की भलाई को सचमुच महसूस करने—उसका *स्वाद चखने*—में समर्थ बनाया। परिणामस्वरूप, मैं कृतज्ञता के आँसू बहाए बिना न रह सका।

पिछले शनिवार को, मेरे प्यारे बेटे, डिलन के विवाह के बाद हुए स्वागत समारोह के दौरान, भोजन से पहले अनुग्रह की प्रार्थना करते समय मेरी आँखों में आँसू आ गए। अगली सुबह—रविवार को—जब मैं अपने चर्च के अध्ययन कक्ष में था, तो मैंने उन आँसुओं की प्रकृति पर विचार किया, जो मैंने बहाए थे। वे, निस्संदेह, "कृतज्ञता के आँसू" थे। इसलिए, "मैंने कृतज्ञता के आँसू बहाए" शीर्षक के तहत, मैंने दस छोटे-छोटे विचार लिखे और उन्हें अपने प्रियजनों के साथ यहाँ-वहाँ साझा किया। मैं उन दस बातों में से दूसरी बात आपके साथ शेयर करना चाहूँगा: “मुझे सच में नहीं पता कि मैं इतना भावुक इंसान क्यों हूँ। हाहा। शायद जब भी मैं डिलन के बारे में सोचता हूँ, तो मेरी आँखों में आँसू इसलिए आ जाते हैं, क्योंकि हमारे पहले बच्चे, जूयंग (चारिस) के मेरी गोद में सो जाने—यानी गुज़र जाने—के बाद का वह समय मुझे याद आ जाता है; मेरी प्यारी पत्नी और मैं दूसरा बच्चा पाने के लिए बहुत ज़्यादा तरस रहे थे, लेकिन वह गर्भधारण नहीं कर पा रही थी। फिर, जब हमें आखिरकार पता चला कि डिलन गर्भ में आ गया है, तो हम खुशी और कृतज्ञता से भर गए। उस पल, डिलन के ज़रिए, हमने ईश्वर के ठीक करने वाले प्यार का अनुभव किया। अब, उसी बच्चे को—जो कभी बस एक शिशु था—एक जवान आदमी बनते और शादी करते देखकर, मेरा दिल कृतज्ञता से इतना भर गया है कि मेरी आँखों में एक बार फिर आँसू आ गए हैं।” जब मैं कृतज्ञता के आँसू बहाने की इन यादों के बारे में सोचता हूँ, तो मैं आपके साथ तीन खास तरीके शेयर करना चाहूँगा, जिनके ज़रिए पवित्र आत्मा ने मुझे पिछले तीन दिनों में—पिछले शनिवार से लेकर कल, सोमवार तक—ईश्वर की भलाई का अनुभव करने का मौका दिया।

सबसे पहले, मैंने पिछले शनिवार (17 अगस्त) को अपने प्यारे बड़े बेटे, डिलन से मिले एक टेक्स्ट मैसेज के ज़रिए ईश्वर की भलाई का अनुभव किया।

खास तौर पर, मैंने डिलन के टेक्स्ट मैसेज के एक खास हिस्से के ज़रिए ईश्वर की भलाई का अनुभव किया: “डैड, आपको शायद लगे कि आपने अतीत में गलतियाँ की हैं, लेकिन मेरी नज़र में, मेरा मानना है कि आपने हमारे परिवार के लिए सच में बहुत अच्छा और वफ़ादार काम किया है—और आप अभी भी ऐसा ही कर रहे हैं।” इस मैसेज में, मैंने अपने बेटे के “कृपालु प्यार” को खास तौर पर उसके कहने के तरीके से महसूस किया: “डैड, आपको शायद लगे कि आपने अतीत में गलतियाँ की हैं, लेकिन मेरी नज़र में...” मैंने इसे अपने बेटे के कृपालु

प्यार का काम इसलिए माना, क्योंकि मुझे लगा कि डिलन ने न सिर्फ़ मुझे पहले ही माफ़ कर दिया है, बल्कि उसने मेरे द्वारा की गई गलती को पूरी तरह से भुला भी दिया है—उसे अब वह गलती याद भी नहीं है। इसके विपरीत, मुझे एहसास हुआ कि मैं अभी तक खुद को माफ़ नहीं कर पाया हूँ, और मैं अभी भी उस याद को पकड़े हुए हूँ कि मैंने उसके साथ कैसे गलत किया था। दूसरी बात, मुझे पिछले रविवार (18 अगस्त) को अपनी प्यारी भतीजी सोफी—जो मेरी दिवंगत चचेरी बहन सु-जियोंग (जो अब प्रभु की गोद में सो गई हैं) की पाँच बेटियों में सबसे छोटी है—से मिले एक टेक्स्ट मैसेज के ज़रिए परमेश्वर की भलाई का अनुभव हुआ।

उस दोपहर, मैंने सु-जियोंग की पाँचों बेटियों को डिलन और जेसिका की शादी की एक तस्वीर वाला टेक्स्ट मैसेज भेजा। जवाब में, सु-जियोंग की तीसरी बेटी, केट ने कहा, "वाह, बहुत बढ़िया लग रही है!" जबकि उसकी सबसे छोटी बेटी, सोफी ने कहा, "तस्वीर बहुत पसंद आई," और फिर जोड़ा, "बहुत सुंदर!" एला और कारा ने भी जवाब दिया, "तस्वीर बहुत पसंद आई।" तो, मैंने पाँचों भतीजियों को यह टेक्स्ट भेजा: "धन्यवाद, लड़कियों। कल, एक महिला ने मेरी पत्नी को देखा और उससे कहा कि डिलन बिल्कुल अपनी माँ जैसा दिखता है। उस समय मैं अपनी पत्नी के ठीक बगल में खड़ा था! हाहा।" सु-जियोंग की सबसे बड़ी बेटी, कारा ने मेरे मैसेज पर "हँसी" वाला रिएक्शन दिया, और फिर जवाब दिया: "माफ़ करना, अंकल जेम्स, लेकिन मुझे भी उस महिला की बात माननी पड़ेगी!"—साथ में दो हँसने वाले इमोजी भी थे। हाहा। तो, मैंने पाँचों भतीजियों से पूछा, "आप सब कैसी हैं?" इस पर, सोफी ने जवाब दिया, "हम सब ठीक हैं!" तो मैंने सोफी को जवाब दिया, "धन्यवाद, सोफी!" उसने जवाब दिया, "ठीक है।" कारा ने भी जवाब दिया, "हम सब ठीक हैं। एलीज़ साइनस इन्फेक्शन से उबर रही है और लड़कियों का स्कूल कल से शुरू हो रहा है।" तो, मैंने कारा को एक टेक्स्ट मैसेज भेजा: "ओह नहीं! मुझे उम्मीद है और मैं प्रार्थना करता हूँ कि एलीज़ जल्द ही ठीक हो जाए। अगर स्कूल कल से शुरू हो रहा है, तो मैं आप लोगों को लंच और डेज़र्ट नहीं खिला पाऊँगा। कोई बात नहीं! अगली बार—हमारे प्रभु के वापस आने से पहले!" (हाहा।) इस पर, कारा ने मेरे मैसेज पर बस "पसंद आया" वाला रिएक्शन दिया। जब मैंने अपनी भतीजियों के साथ हुई इस बातचीत पर एक बार फिर सोचा—हालाँकि कारा ने सच में कहा था, "हम सब ठीक हैं"—फिर भी किसी वजह से, मेरा दिल और दिमाग 11 साल की सोफी की कही बात की तरफ़ ज़्यादा खिंचा: "हम सब ठीक हैं!" शायद इसकी वजह यह है कि, हालाँकि दोनों बहनों के जवाब एक जैसे लग रहे थे, फिर भी उनमें एक साफ़ फ़र्क था। वह फ़र्क था विस्मयादिबोधक चिह्न (“!”) जो सोफ़ी ने लगाया था। उस

विस्मयादिबोधक चिह्न का मकसद बात पर ज़ोर देना था। जब मैंने उस चिह्न को देखा, तो मुझे लगा कि सोफ़ी सचमुच मुझ पर—अपने अंकल पर—ज़ोर देकर कह रही है कि वह सच में *ठीक* है। और इससे मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि सोफ़ी अभी यह मानती है कि उसकी माँ स्वर्ग में "बहुत अच्छा समय" बिता रही हैं। उस पल, मुझे लगा कि सोफ़ी का विश्वास एक शुद्ध, मिलावट-रहित विश्वास था, और मुझे इब्रानियों 11:6 में लिखे शब्द याद आ गए: "और विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है, क्योंकि जो कोई उसके पास आता है, उसे यह विश्वास करना होगा कि वह है, और जो लोग उसे सच्चे दिल से खोजते हैं, वह उन्हें प्रतिफल देता है।"

तीसरा और आख़िर में, कल—सोमवार को—मैंने अपनी प्यारी पत्नी के साथ दिल से बातचीत और प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया।

मैं बहुत आभारी हूँ कि मेरी पत्नी ने कल मुझसे संपर्क किया और ईमानदारी से अपने दिल की बातें और भावनाएँ मेरे साथ साझा कीं। हालाँकि मैं शायद पूरी तरह से सक्षम नहीं था—पूरी तरह से समझने, सहानुभूति रखने, या उसके अनुभव की गहराई को सचमुच समझने में असमर्थ था—फिर भी हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा मेरी पत्नी और मेरे, दोनों के दिलों में काम कर रहा था। नतीजतन, मेरी पत्नी और मैं परमेश्वर की उपस्थिति में और प्रभु के भीतर, सचमुच एक सच्ची और दिल से दिल की बातचीत कर पाए। उसके बाद, हम एक-दूसरे से सटकर बैठे और परमेश्वर के सामने अपनी विनतियाँ रखीं, और हम दोनों मिलकर फूट-फूटकर रोए। पवित्र आत्मा ने मुझे अपनी पत्नी से ईमानदारी से माफ़ी माँगने में मदद की—जिससे मुझे उस गहरे अपराध-बोध से मुक्ति मिली, जिसे मैं लंबे समय से अपने दिल की गहराइयों में छिपाए बैठा था, क्योंकि मैंने उसके साथ एक बहुत बड़ी ग़लती की थी। और उसी पवित्र आत्मा ने मेरी पत्नी के दिल में भी काम किया, जिससे वह मुझे माफ़ी दे पाई। आख़िरकार—दस साल से भी ज़्यादा समय के बाद—मुझे उस अपराध-बोध के बोझ से आज़ादी मिल गई है। इसके अलावा, मेरा मानना है कि पवित्र आत्मा ने मेरी पत्नी के दिल के ज़ख्मों को भी भर दिया है।

मैं परमेश्वर के वचन पर अपने इस चिंतन को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। "दोस्तों, हमारे परमेश्वर सचमुच एक अद्भुत और भले परमेश्वर हैं!" हमें परमेश्वर की भलाई को खुद चखकर देखना चाहिए। विशेष रूप से, हमें उन

पलों को याद रखना चाहिए और उनका उत्सव मनाना चाहिए, जब हमने अपने प्यारे परिवार के सदस्यों के साथ अपने रोज़मर्रा के जीवन में परमेश्वर की भलाई का अनुभव किया है। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम पूरे दिल से यह स्तुति कर पाएँगे, “भले परमेश्वर, भले परमेश्वर—मेरे सचमुच भले परमेश्वर।” इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम सब ऐसे लोग बनें जो परमेश्वर की महिमा करते हैं।

प्रभु-केंद्रित परिवार का हर सदस्य—बुद्धि और ज्ञान से परिपूर्ण

प्रभु-केंद्रित परिवार का हर सदस्य—जो बुद्धि और ज्ञान, दोनों से संपन्न है—एकचित्त और एकमन होकर स्वर्ग की आज्ञाओं का पालन करता है और उन्हें अपने जीवन में उतारता है; वही स्वर्ग जहाँ हम एक दिन अनंत काल तक निवास करने के लिए प्रवेश करेंगे। ठीक वैसे ही, जैसा कि प्रभु ने आज्ञा दी है: "अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे मन से प्रेम करो" (प्रभु के साथ एक ऊर्ध्वगामी संबंध) और "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम स्वयं से करते हो" (पड़ोसी के साथ एक क्षैतिज संबंध)। (संदर्भ: व्यवस्थाविवरण 4:5-6; मत्ती 22:37, 39)

ईश्वर का प्रिय बच्चा

सोमवार दोपहर, 6 मार्च, 2023

कल शाम और आज सुबह मैंने अपनी प्यारी पत्नी के साथ जो बातचीत की, उसके लिए मैं खुद को बहुत ज़्यादा आभारी महसूस करने से रोक नहीं पा रहा हूँ। मेरा दिल—बार-बार—हमारे पिता ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर जाता है, खासकर जब मुझे याद आता है कि मेरी प्यारी पत्नी ने कैसे मेरे सामने अपना दिल खोलकर रख दिया, और अपने मन की सबसे गहरी बातें पूरी ईमानदारी से मेरे साथ साझा कीं। उसने अपनी बात का अंत विश्वास की एक स्वीकारोक्ति के साथ किया—यह पक्का करते हुए कि वह सचमुच ईश्वर की एक *प्रिय* संतान है—और हमारे स्वर्गीय पिता के असीम प्रेम के लिए धन्यवाद देते हुए मेरे सामने सच्चे दिल से आँसू बहाए। अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ और कल रात और आज सुबह अपनी पत्नी के साथ हुई बातचीत पर एक बार फिर से विचार करता हूँ, तो मुझे पूरा यकीन है कि हमारे जीवित और प्रेम करने वाले स्वर्गीय पिता मेरी सच्ची प्रार्थनाओं का उत्तर दे रहे हैं। लगभग छब्बीस साल पहले—ईश्वर की कृपा और मार्गदर्शन से—मेरी मुलाकात मेरी पत्नी से हुई और हमारी शादी हुई; तब से लेकर अब तक, मैंने अपने दिल में एक खास प्रार्थना की विनती सँजोकर रखी है, जिसे मैं अपनी प्यारी पत्नी की ओर से पूरी लगन के साथ ईश्वर के सामने रखता रहा हूँ। वह प्रार्थना की विनती सीधे तौर पर यूहन्ना 8:32 से ली गई है: "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" पवित्र आत्मा ने मेरे अंदर इस धर्मग्रंथ के लिए एक गहरी ललक जगा दी, जिससे मैं इसे मज़बूती से थामे रख सका और मुझे अपनी प्यारी पत्नी के लिए मध्यस्थता करने वाला दिल मिला। कल रात और आज सुबह हुई हमारी बातचीत के ज़रिए, मुझे यह पक्का भरोसा मिला कि ईश्वर सचमुच मेरी पत्नी को सत्य जानने में मदद कर रहे हैं, और वह उसी सत्य का उपयोग करके उसे स्वतंत्र कर रहे हैं। विशेष रूप से, कल और आज हमारी बातचीत में मेरी प्यारी पत्नी ने जो स्वीकारोक्ति मेरे साथ साझा की,

उसका मूल भाव यह था: "ईश्वर मुझसे बहुत गहरा प्रेम करते हैं—और इसका कारण बस इतना है कि मैं उनकी *प्रिय* संतान हूँ।" यह स्वीकारोक्ति इस बात का स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण है कि ईश्वर सचमुच मेरी प्यारी पत्नी को सत्य को समझने की आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा, यह इस बात का भी अकाट्य प्रमाण है कि ईश्वर सचमुच मेरी पत्नी को स्वतंत्र कर रहे हैं। ईश्वर के प्रेम और कृपा के माध्यम से, मेरी पत्नी यह समझने लगी है—पहले से कहीं ज़्यादा पूरी तरह, गहराई से, व्यापक रूप से और गहनता से—कि ईश्वर उससे कितना अधिक प्रेम करते हैं। अपने स्वर्गीय पिता के इस प्रेम से अभिभूत होकर, उसने कल रात ठीक मेरे सामने कृतज्ञता के आँसू बहाए—और आज सुबह भी उसने ऐसा ही किया। इसलिए, मैंने अपनी प्यारी पत्नी के लिए अपनी बाहें खोल दीं और उसे अपने आलिंगन में कसकर थाम लिया। फिर, उसके साथ जॉन 8:32 के वचन साझा करते हुए, मैंने उससे कहा, "परमेश्वर तुम्हें आज़ाद कर रहा है, ठीक वैसे ही जैसा उसका वचन वादा करता है।"

एक और बात जिसके लिए मैं सचमुच कृतज्ञ हूँ, वह यह है कि आज सुबह, अपनी नौकरी पर जाने से पहले, मेरे बगल में बैठकर ऑनलाइन काम करते हुए, मेरी पत्नी ने एक खास लेख पढ़ा। उसने कहा कि वह लेख उसके दिल को गहराई से छू गया—कि उसे ऐसा लगा मानो वह लेख सिर्फ़ उसी के लिए लिखा गया हो—और इस बात ने हमारे बीच एक लंबी बातचीत शुरू कर दी। वह लेख ADHD (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) के बारे में था; जब मेरी पत्नी और मैंने उस लेख की बातों पर चर्चा की, तो हमने एक-दूसरे के साथ कई अहम बातें—या शायद सबक—साझा किए जो हमने उस लेख से सीखे थे:

1. चूँकि परमेश्वर ने हममें से हर किसी को अनोखे ढंग से बनाया है, इसलिए किसी खास स्थिति या विकार को "गलत" का लेबल लगाने के बजाय, हमें परमेश्वर के उदाहरण का पालन करना चाहिए: ठीक वैसे ही जैसे वह किसी व्यक्ति से प्यार करता है और उसे वैसे ही स्वीकार करता है जैसा वह है, वैसे ही हमें भी करना चाहिए।

2. परमेश्वर को बेहतर ढंग से जानने की प्रक्रिया के माध्यम से खुद को बेहतर ढंग से जानना एक गहरा अनुग्रह और आशीर्वाद है।

3. जब हम अपनी खोज की इस यात्रा पर निकलते हैं, तो यह बहुत ज़रूरी है—खासकर जब हम इस तरह के लेख पढ़ते हैं—कि हम न केवल अपने कुछ पहलुओं के बारे में *जागरूक* हों, बल्कि उन्हें *स्वीकार* भी करें और उनकी पुष्टि भी करें।

4. जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर के प्रेम से खुद से प्यार करने में सक्षम हो जाते हैं—खुद को वैसे ही गले लगाते हैं और स्वीकार करते हैं जैसे हम हैं।

5. तभी हम सचमुच एक-दूसरे से प्यार कर सकते हैं और एक-दूसरे को वैसे ही स्वीकार कर सकते हैं जैसे हम अपने वैवाहिक जीवन में हैं (और, वास्तव में, उन सभी मानवीय रिश्तों में जो हम बनाते हैं)।

एक ऐसा परिवार जिसने प्रार्थना और स्तुति का चमत्कार अनुभव किया

[2 इतिहास 20:15-22]

पिछले सोमवार की दोपहर, मैंने अपने विश्वविद्यालय के दिनों के एक प्यारे छोटे भाई के साथ अकेले में एक प्रार्थना सभा की। हमारी दिल से दिल की बातचीत के दौरान, उसने मुझे एक कहानी सुनाई जो पिछले रविवार को 'मदर्स डे' (मातृ दिवस) के अवसर पर अपनी प्यारी माँ से मिलने के लिए उनके नर्सिंग होम जाने के बारे में थी। उसने मुझे बताया कि, हालाँकि उसकी माँ डिमेंशिया (भूलने की बीमारी) से पीड़ित हैं और अब उसे या उसके परिवार के सदस्यों को पहचान नहीं पातीं, फिर भी वह मुस्कुराईं। यह सुनकर, मैंने उससे कहा कि उसे आभारी होना चाहिए कि उसकी माँ कम से कम मुस्कुरा तो पा रही हैं। मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मेरे चर्च की एक प्यारी डीकनेस (सेविका)—जो डिमेंशिया से पीड़ित थीं, एक नर्सिंग होम में रहती थीं, और अब प्रभु की गोद में समा चुकी हैं—आखिरकार एक ऐसी स्थिति में पहुँच गई थीं जहाँ वह मुस्कुरा भी नहीं पाती थीं (पूरी तरह से भावहीन हो गई थीं)। जैसे-जैसे हमारी यह बातचीत आगे बढ़ी, मेरे भाई और मैं एक आपसी सहमति पर पहुँचे: हमने कृतज्ञता चुनने का संकल्प लिया—अपनी परिस्थितियों को विश्वास की नज़रों से देखने का—भले ही वे परिस्थितियाँ ऐसी क्यों न हों, जो हमारी भौतिक आँखों से देखने पर, धन्यवाद देने का कोई आधार न देती प्रतीत हों।

जब हम आज के शास्त्र-वचन—2 इतिहास 20:15-22—के संदर्भ की जाँच करते हैं, तो हम पाते हैं कि यहूदा का राजा यहोशापात एक अत्यंत कठिन परिस्थिति का सामना कर रहा था—एक ऐसी परिस्थिति जिसमें, मानवीय दृष्टिकोण से, कृतज्ञता का कोई भी कारण बिल्कुल नहीं था। यह गंभीर संकट तब उत्पन्न हुआ जब मोआबी और अम्मोनी लोग—जिनके साथ कुछ मेऊनी लोग भी शामिल हो गए थे—एक "विशाल सेना" के साथ यहूदा पर चढ़ाई करने आ गए (पद 1-2)। इसके जवाब में, राजा यहोशापात "भयभीत हो गया; इसलिए उसने प्रभु से पूछने का निश्चय किया और पूरे यहूदा के लिए उपवास की घोषणा कर दी" (पद 3)। परिणामस्वरूप, यहूदा के हर नगर से लोग यरूशलेम में "प्रभु से सहायता मांगने के लिए" एकत्रित हुए (पद 4)। जब मैं इस शास्त्र-वचन पर मनन कर रहा था, तो मैंने इससे एक मुख्य शिक्षा ग्रहण की। वह सबक यह है: जब अचानक हमारे सामने बहुत बड़ी मुश्किलें आ जाएँ, तो हमें—ठीक डैनियल की तरह—यह तय करना चाहिए कि हम परमेश्वर के सामने खुद को दीन-हीन बनाएँगे (डैनियल 10:12, *मॉडर्न मैन′स बाइबल*), और—राजा यहोशापात की तरह—यह तय करें कि हम उससे सलाह लेंगे (2 इतिहास 20:3, *मॉडर्न मैन′स बाइबल*), और फिर अपनी प्रार्थनाएँ उसके सामने रखें। खास तौर पर, घर के मुखिया के तौर पर, मुझे एक खास सबक मिला: कि जब हमारे परिवार पर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आए, तो सबसे पहले मुझे खुद परमेश्वर से प्रार्थना करने का पक्का इरादा करना चाहिए, और फिर अपनी प्यारी पत्नी और तीन बच्चों को भी मेरे साथ मिलकर उसकी मदद माँगने के लिए हिम्मत देनी चाहिए, यह पक्का करते हुए कि परिवार का हर सदस्य प्रार्थना में परमेश्वर की ओर मुड़े।

जब यहूदा के सभी लोग यरूशलेम में मंदिर के नए आँगन में इकट्ठा हुए, तो राजा यहोशापात भीड़ के बीच खड़ा हुआ और परमेश्वर से यह प्रार्थना की। मैं 2 इतिहास 20:6 (*मॉडर्न मैन′स बाइबल*) से उद्धृत करता हूँ: “हे प्रभु, हमारे पुरखों के परमेश्वर, क्या तू वह परमेश्वर नहीं है जो स्वर्ग से पृथ्वी के सभी राष्ट्रों पर राज करता है? तेरे पास इतनी शक्ति और सामर्थ्य है कि कोई भी तेरे सामने खड़ा नहीं हो सकता।” जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे इससे एक दूसरा सबक मिला। वह सबक यह है: जब हमारे सामने बहुत बड़ी मुश्किलें आती हैं, तो सबसे पहले हमें यह समझना और मानना चाहिए कि ऐसी बड़ी चुनौतियों को हल करने की शक्ति और काबिलियत हममें खुद नहीं है। मैं पद 12 (*मॉडर्न मैन′स बाइबल*) से उद्धृत करता हूँ: “हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उन्हें न्याय नहीं देगा? हमारे पास इस विशाल सेना का सामना करने की कोई शक्ति नहीं है जो हमारे

खिलाफ बढ़ रही है। हमें नहीं पता कि क्या करें, इसलिए हम सिर्फ तेरी ही ओर देखते हैं।" इस प्रार्थना की बातों पर गौर करने पर—खास तौर पर राजा यहोशापात की परमेश्वर से की गई इस घोषणा पर, "हमारे पास इस विशाल सेना का सामना करने की कोई शक्ति नहीं है"—हम देखते हैं कि उसने न सिर्फ अपनी, बल्कि यहूदा के पूरे लोगों की पूरी तरह से बेबसी और लाचारी को स्वीकार किया। इसी समझ के बीच, राजा यहोशापात ने परमेश्वर से पूरी लगन से विनती की: "हमें नहीं पता कि क्या करें, इसलिए हम सिर्फ तेरी ही ओर देखते हैं।" ठीक राजा यहोशापात की तरह, कई बार ऐसा भी हुआ है जब हमें भी बहुत बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है—ऐसे पल जब अपनी बेबसी और नाकामी को समझते और मानते हुए, और यह न जानते हुए कि क्या कदम उठाएँ, हम प्रभु पर अपनी नज़रें टिकाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे। इन भारी चुनौतियों के ज़रिए, जिनका हम सामना करते हैं—ऐसी चुनौतियाँ जो हमें अपनी बेबसी और नाकामी को समझने और मानने पर मजबूर करती हैं—हमें साथ ही इस सच्चाई को भी पहचानना और मानना चाहिए: कि स्वर्ग में केवल परमेश्वर के पास ही ऐसी बड़ी मुश्किलों को हल करने की शक्ति और काबिलियत है। इसलिए, हम यह सबक सीखते हैं कि हमें इस परमेश्वर पर अपना विश्वास और भरोसा रखना चाहिए, और उससे मदद माँगनी चाहिए।

एक और सबक जो हम सीखते हैं—असल में, तीसरा सबक—वह यह है कि जब हमें भारी मुश्किलों का सामना करना पड़े, तो हमें परमेश्वर की उपस्थिति में चुपचाप रहना चाहिए और उस कृपा पर सोचना चाहिए जो उसने अतीत में हम पर बरसाई है। यह सबक राजा यहोशापात की परमेश्वर से की गई प्रार्थना के 7वें वचन पर आधारित है, जैसा कि *मॉडर्न पीपल्स बाइबल* में लिखा है: "हे हमारे परमेश्वर, क्या तूने इस देश के निवासियों को इस्राएल के लोगों के सामने से नहीं भगाया और इस देश को हमेशा के लिए अब्राहम के वंशजों को नहीं दे दिया, जो तेरा मित्र था?" इस प्रार्थना के शब्दों पर गौर करने पर हम देखते हैं कि जब राजा यहोशापात परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था, तो उसे याद आया कि कैसे, यहोशू के ज़माने में, प्रभु ने कनान के मूल निवासियों को इस्राएल के लोगों के सामने से भगा दिया था और कनान की ज़मीन "अब्राहम के वंशजों को, जो तेरा मित्र था" (वचन 7, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) को दे दी थी। एक दिलचस्प बात यह है कि राजा यहोशापात ने इस्राएल के लोगों को "अब्राहम के वंशजों, जो तेरा मित्र था" (वचन 7, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) कहकर संबोधित किया। जब मैं इस वचन पर मनन कर रहा था, तो मुझे यूहन्ना 15:13 की याद आई: "इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के

लिए अपना प्राण दे दे।" जब मैं इस वचन पर मनन कर रहा था, तो मेरे विचार यीशु के उस असीम प्रेम की ओर मुड़ गए—जिसने मुझ जैसे एक पापी को भी अपना मित्र मानते हुए, मेरे सारे पापों को क्षमा करने और मुझे अनंत जीवन (मुक्ति) देने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दे दिए। उस पल, प्रभु की असीम कृपा और प्रेम से अभिभूत होकर, मैं विश्वास के साथ परमेश्वर को अपने हृदय से धन्यवाद देने के अलावा और कुछ नहीं कर सका। जिस परमेश्वर ने अतीत में हमें भारी कठिनाइयों से बचाने और हमारी सहायता करने का काम किया था, वही परमेश्वर आज हमारे सामने खड़ी विशाल मुश्किलों से भी हमें निश्चित रूप से बचाएगा और हमारी सहायता करेगा। इसका कारण यह है कि, जैसा कि इब्रानियों 13:8 में कहा गया है, हमारे उद्धार का परमेश्वर वह है जो कभी नहीं बदलता—कल, आज और सदा के लिए। इसलिए, भजनकार की तरह, हम भी अपनी आँखें पहाड़ों की ओर उठाते हैं। हमारी सहायता कहाँ से आती है? हमारी सहायता परमेश्वर से आती है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का रचयिता है (भजन संहिता 121:1–2)। जब यहूदा के राजा यहोशापात ने परमेश्वर से प्रार्थना की (पद 7–12), तो परमेश्वर का पवित्र आत्मा यहजीएल पर उतरा—जो एक लेवी था और सभा के बीच खड़ा था (पद 14)—और उसने उसे राजा यहोशापात तथा यहूदा और यरूशलेम के लोगों के सामने परमेश्वर का संदेश इस प्रकार सुनाने के लिए प्रेरित किया: "हे यहूदा और यरूशलेम के सब लोगों, और हे राजा यहोशापात, मेरी सुनो! यहोवा तुमसे यह कहता है: 'इस विशाल सेना के कारण न तो डरो और न ही तुम्हारा मन कच्चा हो। क्योंकि यह लड़ाई तुम्हारी नहीं, बल्कि परमेश्वर की है। कल तुम उनके विरुद्ध चढ़ाई करना। वे ज़िज़ की घाटी से होकर ऊपर आएँगे, और तुम उन्हें उस घाटी के सिरे पर पाओगे जो यरूएल के जंगल की ओर खुलती है। तुम्हें इस लड़ाई में लड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अपनी-अपनी जगह पर डटे रहो; दृढ़ता से खड़े रहो और देखो कि यहोवा तुम्हें कैसे बचाता है। हे यहूदा और यरूशलेम के लोगों, न तो डरो और न ही तुम्हारा मन कच्चा हो। कल बाहर निकलकर उनका सामना करो, क्योंकि यहोवा तुम्हारे साथ रहेगा'" (पद 15–17)। परमेश्वर के इस संदेश में, हम देखते हैं कि उसने राजा यहोशापात तथा यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दो बार यह निर्देश दिया कि वे उस विशाल सेना को देखकर "न तो डरें और न ही उनका मन कच्चा हो," जिसने उनके देश पर आक्रमण कर दिया था। इसका क्या कारण था? परमेश्वर ने उनसे ऐसा क्यों कहा कि वे न डरें और न ही उनका मन कच्चा हो? इसके दो कारण थे: (1) क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों के साथ होंगे ("यहोवा तुम्हारे साथ होगा") (पद 17), और (2) क्योंकि उस विशाल सेना के विरुद्ध युद्ध परमेश्वर का युद्ध था ("यह युद्ध तुम्हारा नहीं, बल्कि परमेश्वर का है") (पद 15)।

जहाज़ील के ज़रिए परमेश्वर का यह वचन सुनकर, राजा यहोशापात—यहूदा और यरूशलेम के लोगों के साथ—झुक गए और परमेश्वर की "आराधना" की (पद 18)। फिर, "कोहाती और कोराही गोत्रों के लेवी खड़े हो गए और इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की बहुत ऊँची आवाज़ में स्तुति की" (पद 19)। "अगली सुबह तड़के, जब यहूदा की सेना तकोआ के जंगल की ओर कूच करने की तैयारी कर रही थी, तो राजा यहोशापात खड़े हुए और" लोगों से यह घोषणा की: "मेरी बात सुनो, यहूदा और यरूशलेम के लोगों! अपने परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखो, और वह तुम्हें संभालेगा। उसके नबियों पर भरोसा रखो, और तुम विजयी होगे" (पद 20)। राजा यहोशापात ने उन्हें दो बार यह कहकर प्रोत्साहित किया, "भरोसा रखो।" उन्होंने उन्हें परमेश्वर पर और परमेश्वर के नबियों पर भरोसा रखने के लिए पुकारा। दिलचस्प बात यह है कि जहाँ परमेश्वर ने दो बार कहा था, "डरो मत और न ही निराश हो" (पद 15, 17), वहीं राजा यहोशापात ने बदले में दो बार कहा, "भरोसा रखो।"

जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो चौथा सबक जो मैं सीखता हूँ, वह यह है कि शैतान और उसकी सेनाएँ हमारे परिवारों पर चाहे कितनी भी ज़ोरदार हमला क्यों न करें, हमें डरना या निराश नहीं होना चाहिए। इसका कारण यह है कि यह आत्मिक लड़ाई हमारी लड़ाई नहीं, बल्कि परमेश्वर की लड़ाई है। परमेश्वर की लड़ाई में, परमेश्वर स्वयं हमारी ओर से लड़ता है; वह हमें छुड़ाएगा और हमें विजय दिलाएगा। इसलिए, हमें केवल परमेश्वर के इस वादे पर विश्वास करने की ज़रूरत है कि वह हमारे साथ है और हमें संभालेगा, और फिर शैतान और उसकी सेनाओं के विरुद्ध विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए। इसके अलावा, हमें विश्वास में परमेश्वर की आराधना और स्तुति करनी चाहिए। यहाँ तक कि जब हम भारी कठिनाइयों का सामना करते हैं, तब भी हमें परमेश्वर पर और उसके सेवकों के ज़रिए दिए गए वचन पर अपना भरोसा रखना चाहिए; इस प्रकार, उद्धार और विजय के आश्वासन के साथ, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और उसकी स्तुति करनी चाहिए, यह घोषणा करते हुए कि उसका प्रेम सदा बना रहता है। “लोगों से सलाह करने के बाद, यहोशापात ने कुछ लोगों को चुना जो सेना के आगे-आगे चलते हुए यहोवा के लिए गाते और उसकी पवित्रता की महिमा की स्तुति करते, और कहते: ‘यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसका प्रेम सदा बना रहता है’” (पद 21, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमारी “आकोर की तराई” (मुसीबत की तराई) (यहोशू 7:24–26) को “स्तुति की तराई” (आशीष की तराई) (2 इतिहास 20:26, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) में बदल देगा!

मैं वचन पर इस मनन को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। 2 इतिहास 20 के इस अंश पर मनन करते हुए, जिसका विषय है “एक ऐसा परिवार जो प्रार्थना और स्तुति के चमत्कार का अनुभव करता है,” मुझे प्रेरितों के काम 16:25 का वह पद याद आया—जिस पर मैंने इस साल की नए साल की आराधना सेवा के दौरान, “स्तुति के चमत्कार का अनुभव करें!” शीर्षक के तहत विचार किया था: “आधी रात के करीब पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और दूसरे कैदी उन्हें सुन रहे थे।” जब मैंने एक बार फिर उन तीन चमत्कारों पर मनन किया जो प्रभु ने तब किए थे जब प्रेरित पौलुस और सीलास ने जेल में परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी स्तुति के गीत गाए, तो आज मेरा ध्यान 2 इतिहास अध्याय 20 के अंश पर गया। उस चमत्कार पर विचार करते हुए, जिसमें परमेश्वर ने यहूदा को विजय दिलाई—जिससे वे एक विशाल सेना को हराने में सक्षम हुए—और यह सब तब हुआ जब राजा यहोशापात, यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों ने उससे प्रार्थना की और स्तुति करने के लिए एक गायक-दल (choir) का आयोजन किया, मैंने चार सबक सीखे हैं:

(1) पहला सबक जो मैंने सीखा है, वह यह है कि जब अचानक हमारे सामने बड़ी मुश्किलें आती हैं, तो हमें परमेश्वर के सामने खुद को दीन करने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे दानिय्येल ने किया था (दानिय्येल 10:12)—और परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने का संकल्प लेना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे राजा यहोशापात ने किया था (2 इतिहास 20:3)—और हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। विशेष रूप से, हम यह सबक सीखते हैं कि जब हमारे परिवारों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो घर के हर सदस्य को परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए एक साथ मिलकर जुड़ना चाहिए।

(2) दूसरा सबक यह है कि जब हम बहुत बड़ी मुश्किलों का सामना करते हैं, तो हमें सबसे पहले यह समझना और मानना चाहिए कि उन भारी समस्याओं को सुलझाने की ताकत और काबिलियत हममें खुद नहीं है। साथ ही, हमें यह भी समझना और मानना चाहिए कि स्वर्ग में केवल परमेश्वर के पास ही ऐसी बड़ी मुश्किलों को सुलझाने की ताकत और काबिलियत है। इसलिए, हम यह सीखते हैं कि हमें इस परमेश्वर पर ही अपना विश्वास और भरोसा रखना चाहिए और उनसे मदद माँगनी चाहिए।

(3) तीसरा सबक यह है कि जब हम बहुत बड़ी मुश्किलों से घिर जाते हैं, तो हमें चुपचाप परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहिए और उन कृपाओं पर विचार करना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें अतीत में दी हैं।

(4) चौथा सबक यह है कि शैतान और उसकी ताकतें हमारे परिवारों पर चाहे कितनी भी ज़ोरदार हमला क्यों न करें, हमें न तो डरना चाहिए और न ही हिम्मत हारनी चाहिए। इसका कारण यह है कि यह आध्यात्मिक लड़ाई हमारी लड़ाई नहीं, बल्कि परमेश्वर की लड़ाई है। यहाँ तक कि जब हम बहुत बड़ी मुश्किलों का सामना करते हैं, तब भी हमें परमेश्वर और उनके सेवकों के द्वारा दिए गए वचन पर अपना भरोसा रखना चाहिए; इस तरह, उद्धार और जीत के भरोसे के साथ, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए कि उनका प्रेम सदा बना रहता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर "मुसीबत की घाटी" (अकोर) को "आशीष की घाटी" (स्तुति) में बदल देंगे।

वह वफ़ादार परमेश्वर जो पक्षपात करने वाले माता-पिता का भी उपयोग करता है

“जैसे-जैसे लड़के बड़े हुए, एसाव एक कुशल शिकारी बन गया और उसे बाहर घूमना पसंद था, जबकि याकूब एक शांत स्वभाव का व्यक्ति था जिसे घर पर रहना ज़्यादा पसंद था। इसहाक एसाव से प्यार करता था क्योंकि उसे वह मांस पसंद था जो एसाव शिकार करके घर लाता था, लेकिन रिबका याकूब से प्यार करती थी” (उत्पत्ति 25:27–28)।

माता-पिता अपने बच्चों के प्रति पक्षपात क्यों दिखाते हैं? कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस (UCD) के शोधकर्ताओं ने 768 भाई-बहनों (384 जोड़ों) और उनके माता-पिता के साक्षात्कार लिए। उनके निष्कर्षों से पता चला कि 70% पिताओं और 65% माताओं ने स्वीकार किया कि वे अपने किसी एक बच्चे का पक्ष लेते हैं—और ज़्यादातर मामलों में, वह बच्चा पहला जन्मा (ज्येष्ठ) होता है (इंटरनेट)। इसके अलावा, जिन बच्चों को माता-पिता के पक्षपात के कारण गंभीर भावनात्मक क्षति पहुँचती है, उन्हें कथित तौर पर खुद को स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में पहचानने में काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है; साथ ही, ऐसे अनुभवों से उनके प्रेम संबंधों और वैवाहिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की भी बहुत अधिक संभावना होती है। ऐसा कहा जाता है कि वे अपने रिश्तों को लेकर अत्यधिक जुनूनी हो सकते हैं—अपने माता-पिता के प्यार की कमी से पैदा हुए खालीपन को अपने प्रेम-साथियों के माध्यम से भरने की कोशिश करते हैं—और साथ ही, उन्हें अपने साथियों द्वारा छोड़ दिए जाने का लगातार डर और चिंता भी सताती रह सकती है। पक्षपात के कारण आहत हुए बच्चे भी गंभीर भावनात्मक कठिनाइयों का अनुभव करने के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं (इंटरनेट)।

आज के धर्मग्रंथ के अंश—उत्पत्ति 25:28—को देखते हुए, *द कंटेम्पररी बाइबल* कहती है: “इसहाक एसाव से प्यार करता था क्योंकि उसे वह मांस पसंद था जो एसाव शिकार करके घर लाता था, लेकिन रिबका याकूब से प्यार करती थी।” पिता इसहाक और माता रिबका ने अपने बच्चों के प्रति पक्षपात क्यों दिखाया? पिता इसहाक अपने पहले जन्मे बेटे एसाव से प्यार करता था—जो एक “कुशल शिकारी” था (पद 28, *द कंटेम्पररी बाइबल*)—और इसका कारण बस यह था कि इसहाक को वह मांस पसंद था जो एसाव अपने शिकार से घर लाता था (पद 28, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। तो फिर, उनकी माता रिबका अपने छोटे बेटे याकूब से क्यों प्यार करती थी? मेरी राय में, इसका कारण यह प्रतीत होता है कि याकूब एक “शांत स्वभाव का व्यक्ति था जिसे घर पर रहना ज़्यादा पसंद था।” दरअसल, आयत 29 को देखने पर—खास तौर पर *Modern Man’s Bible* में दिए गए अनुवाद को, जिसमें कहा गया है, "एक दिन याकूब स्टू बना रहा था"—ऐसा लगता है कि वह घर के अंदर चुपचाप खाना बना रहा था। नतीजतन, इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि उसने अपना काफी समय अपनी माँ, रिबका के साथ बिताया होगा, जो घर-गृहस्थी संभालती थीं; मुझे यह भी लगता है कि उसने खाना बनाने की कला उन्हीं से सीखी होगी, और शायद इसीलिए वह स्टू बना रहा था। हालाँकि, जैसा कि हम आयत 29 के बाद के हिस्से में पढ़ते हैं, एसाव शिकार से भूखा-प्यासा घर लौटा—उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह "भूख से मर रहा हो" (आयत 30 और 32, *Modern Man’s Bible*)—और उसने अपने छोटे भाई याकूब से, जो स्टू बना रहा था, कहा: "मुझे वह लाल स्टू थोड़ा सा दे दो" (आयत 30, *Modern Man’s Bible*)। उसी पल, याकूब ने जवाब दिया, "पहले, तुम अपना पहलौठे का अधिकार मुझे बेच दो।" एसाव ने जवाब दिया, "मैं तो बस मरने ही वाला हूँ; भला इस पहलौठे के अधिकार का मुझे क्या फ़ायदा?" (आयत 31–32, *Modern Man’s Bible*)। तब याकूब ने ज़ोर देकर कहा, "मुझसे कसम खाओ कि तुम फिर कभी इस पहलौठे के अधिकार पर अपना दावा नहीं करोगे।" एसाव ने याकूब के सामने कसम खाई और अपना पहलौठे का अधिकार उसे बेच दिया (आयत 33, *Modern Man’s Bible*)। इसकी वजह यह थी कि एसाव अपनी पहलौठे की हैसियत को बहुत कम अहमियत देता था (आयत 34)। इस तरह, एसाव—वह बड़ा भाई जिसने अपने पहलौठे के अधिकार को इतनी हल्के में लिया कि उसने उसे अपने छोटे भाई याकूब को, बस एक कटोरी लाल स्टू के बदले बेच दिया—उसे बाद में, उत्पत्ति अध्याय 27 में पता चला कि उसे अपने पिता इसहाक से मिलने वाला आशीर्वाद भी नहीं मिला: "...यह दूसरी बार है जब उसने मुझे धोखा दिया है। पहले, उसने मेरा पहलौठे का अधिकार छीन लिया, और अब उसने मेरा आशीर्वाद भी छीन लिया है..." (27:36, *Modern Man’s Bible*)। आज, उत्पत्ति

(Genesis) के 27वें अध्याय के अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैं उस प्रक्रिया पर विचार करना चाहता हूँ जिसके द्वारा छोटे बेटे, याकूब ने, उस आशीर्वाद को हथिया लिया जो सही मायने में उसके बड़े भाई, एसाव का था—और ऐसा करते हुए, उन सबकों को समझना चाहता हूँ जो यह कहानी हमें सिखाती है। विशेष रूप से, आज मैं पिता, इसहाक की जाँच करके शुरुआत करना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने पहले जन्मे बेटे, एसाव के प्रति पक्षपात दिखाया; फिर, अगले शनिवार को, मैं अपना ध्यान माँ, रिबका की ओर मोड़ना चाहता हूँ, जिन्होंने छोटे बेटे, याकूब का पक्ष लिया।

सबसे पहले, जब हम इसहाक—उस पिता पर विचार करते हैं जिसने अपने पहले जन्मे बेटे, एसाव का पक्ष लिया—तो मेरा मानना है कि इसहाक ने छोटे बेटे, याकूब को अपना आशीर्वाद इसलिए दिया क्योंकि उनमें सही-गलत को पहचानने की समझ (विवेक) की कमी थी।

कृपया उत्पत्ति 27:23 देखें: “उन्होंने उसे नहीं पहचाना, क्योंकि उसके हाथ उसके भाई एसाव के हाथों की तरह रोएँदार थे; इसलिए उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया।” पिता इसहाक में विवेक की कमी थी। दूसरे शब्दों में, उन्होंने अपने छोटे बेटे, याकूब—जो उन्हें धोखा दे रहा था—को अपना प्रिय पहला जन्मा बेटा, एसाव समझकर आशीर्वाद दे दिया। वह अपने प्रिय पहले जन्मे बेटे, एसाव, और अपने छोटे भाई, याकूब के बीच अंतर करने में असमर्थ थे। शायद इसका कारण यह था कि इसहाक काफी वृद्ध हो चुके थे, और उनकी आँखों की रोशनी कम हो गई थी, जिससे उनके लिए साफ-साफ देखना मुश्किल हो गया था (पद 1, *द कंटेम्पररी बाइबिल*)। इसके अलावा, चूंकि उनके दोनों बेटे, एसाव और याकूब, "जुड़वाँ" थे (25:24), इसलिए उनके लिए उन दोनों में फर्क करना और भी मुश्किल रहा होगा। और एक और बात: मेरी राय में, इसहाक अपने पसंदीदा बेटे, एसाव, और याकूब के बीच अंतर इसलिए नहीं कर पाए क्योंकि याकूब ने—अपनी माँ, रिबका की पूरी मदद से—इसहाक के साथ अपना धोखा इतनी कुशलता से अंजाम दिया था। इसहाक, अपने पहले जन्मे बेटे एसाव से गहरा प्रेम करते थे, और यह जानते हुए कि वे वृद्ध हो चुके हैं और उन्हें नहीं पता कि उनकी मृत्यु कब हो सकती है (27:2), उन्होंने चाहा कि एसाव उनके लिए उनका पसंदीदा स्वादिष्ट भोजन आखिरी बार तैयार करे, ताकि वे उसे खा सकें और अपनी मृत्यु से पहले उसे अपना अंतिम आशीर्वाद दे सकें (पद 2–3)। फिर भी, जैसा कि हुआ, समझ की कमी के कारण, उसने जैकब को आशीर्वाद दे दिया—वही जैकब जो उसे धोखा दे रहा था (पद 12)—इसके

बजाय (पद 23)। फिर भी, जब जैकब उसे धोखा दे रहा था, तो इसहाक ने—मेरी नज़र में—कम से कम सात बार यह जाँचने की कोशिश की कि क्या जैकब सचमुच एसाव ही था, वह पहला बेटा जिसे वह इतना प्यार करता था:

(1) "तुम कौन हो, मेरे बेटे?" (पद 18)

जब जैकब स्वादिष्ट भोजन और रोटी लेकर इसहाक के पास आया और "पिताजी" कहकर पुकारा, तो इसहाक ने पूछा, "तुम कौन हो, मेरे बेटे?" (पद 18)। असल में, इसहाक जैकब की पहचान के बारे में पूछ रहा था। ज़ाहिर है, इसहाक को उम्मीद रही होगी और वह एसाव का इंतज़ार कर रहा होगा कि वह उसके लिए वह स्वादिष्ट भोजन लेकर आए जो उसे पसंद था। अगर उस समय "पिताजी" कहकर पुकारने वाली आवाज़ सचमुच एसाव की होती, तो इसहाक यकीनन यह न पूछता, "तुम कौन हो, मेरे बेटे?"

(2) "ऐसा कैसे हुआ कि तुम्हें यह इतनी जल्दी मिल गया, मेरे बेटे?" (पद 20)

जब इसहाक ने जैकब से पूछा, "तुम कौन हो, मेरे बेटे?" (पद 18), तो जैकब ने जवाब दिया, "मैं एसाव हूँ, तुम्हारा पहला बेटा। मैंने ठीक वैसा ही किया है जैसा तुमने मुझे आज्ञा दी थी; कृपया उठो, बैठो, और वह शिकार खाओ जो मैंने किया है, ताकि तुम मुझे जी भरकर आशीर्वाद दे सको" (पद 19)। यह सुनकर, इसहाक ने अपने बेटे से पूछा, "ऐसा कैसे हुआ कि तुम्हें यह इतनी जल्दी मिल गया, मेरे बेटे?" (पद 20)। इसका कारण साफ़ है: इसहाक ने एसाव से साफ़-साफ़ कहा था, "अपना धनुष लो, खेतों में जाओ, कुछ शिकार करो, और वह स्वादिष्ट भोजन तैयार करो जो मुझे पसंद है। जब मैं उसे खा लूँगा, तो मरने से पहले मैं तुम्हें अपना आखिरी आशीर्वाद दूँगा" (पद 3–4)। हालाँकि, जब एसाव खेतों में शिकार कर रहा था (पद 5), तो उसकी माँ, रिबका—जिसने इसहाक की एसाव को दी गई हिदायतें सुन ली थीं (पद 5)—ने अपने प्यारे छोटे बेटे, जैकब को बुलाया। यह पक्का करने के लिए कि इसहाक का आशीर्वाद एसाव को नहीं, बल्कि याकूब को मिले, उसने वह स्वादिष्ट खाना बनाया जो इसहाक को बहुत पसंद था (पद 9), उसे—कुछ रोटी के साथ—याकूब के हाथों में दिया (पद 17), और उसे इसहाक के पास भेज दिया। नतीजतन, इसहाक के नज़रिए से, उसके पास यह उम्मीद करने का कोई कारण

ही नहीं था कि एसाव इतनी जल्दी शिकार कर लेगा, स्वादिष्ट खाना बना लेगा, और उसे इतनी जल्दी उसके पास ले आएगा। जब इस बारे में पूछा गया, तो याकूब ने अपने पिता, इसहाक से जवाब दिया, “मैं इतनी जल्दी शिकार इसलिए ढूँढ़ पाया क्योंकि यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने मेरी मदद की” (पद 20)। याकूब अपने ही पिता, इसहाक को धोखा देने की हिम्मत कैसे जुटा पाया—यहाँ तक कि उसने “यहोवा परमेश्वर” के नाम का भी इस्तेमाल कर लिया?

(3) "मेरे बेटे, पास आओ, ताकि मैं तुम्हें छूकर यह पक्का कर सकूँ कि तुम सचमुच मेरे बेटे एसाव हो या नहीं" (पद 21)।

इसहाक ने याकूब से—जिसने दावा किया था, "मैं तुम्हारा पहला बेटा, एसाव हूँ" (पद 19)—"पास आओ" (पद 21) इसलिए कहा, ताकि वह उसे छूकर यह जाँच सके कि क्या वह सचमुच उसका बेटा एसाव है (पद 21)। इसहाक को इस बात पर इतना शक था कि याकूब ही एसाव है, कि उसने उसकी पहचान पक्की करने के लिए यह कदम उठाया। इस तरह, यह जाँचने की कोशिश में कि क्या याकूब ही एसाव है, उसने उसे और पास आने को कहा ताकि वह उसके हाथों को महसूस कर सके। इसके पीछे तर्क यह था कि एसाव एक रोएँदार आदमी था, जबकि याकूब की त्वचा चिकनी और बिना रोएँ वाली थी (पद 11; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

(4) "आवाज़ तो याकूब की है, लेकिन हाथ एसाव के हैं" (पद 22)।

जब याकूब अपने पिता इसहाक के निर्देशानुसार पास आया, तो इसहाक ने उसे छुआ और कहा, "आवाज़ तो याकूब की है, लेकिन हाथ एसाव के हैं" (पद 22)। दूसरे शब्दों में, इसहाक ने पहचान लिया कि जो आवाज़ वह सुन रहा था, वह एसाव की आवाज़ नहीं थी। हालाँकि, क्योंकि वह काफ़ी बूढ़ा हो चुका था और उसकी आँखों की रोशनी कम हो गई थी—जिससे वह साफ़-साफ़ देख नहीं पाता था (पद 1; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)—इसलिए वह देखकर यह पहचान नहीं पाया कि उसके सामने खड़ा व्यक्ति याकूब है या नहीं; इसलिए, उसने उसके हाथों को छूकर उसकी पहचान पक्की करने की कोशिश की। इस खास तरीके को अपनाने का कारण यह था कि एसाव के हाथ रोएँदार थे (पद 11)। फिर भी, याकूब के हाथों को छूने के बाद, उसने यह नतीजा निकाला, "हाथ तो एसाव के हैं" (पद 22)। यह देखते हुए कि याकूब के हाथ निस्संदेह चिकने और बिना रोएँ वाले

थे (पद 11; *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*), इसहाक उन्हें छूने के बाद यह कैसे कह सकता था, "हाथ तो एसाव के हैं"? इसका कारण यह था कि उसकी माँ, रिबका ने अपने बड़े बेटे, एसाव के सबसे अच्छे कपड़े—जिन्हें उसने घर के अंदर संभालकर रखा था—लिए और उन्हें अपने छोटे बेटे, याकूब को पहना दिया (पद 15, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

(5) "क्या तुम सचमुच मेरे बेटे एसाव हो?" (पद 24)।

इसहाक, जिसने याकूब से—जो एसाव होने का नाटक कर रहा था—पूछा था, "तुम कौन हो, मेरे बेटे?" (पद 18), ने अपने हाथों से याकूब को टटोलकर देखा। यह देखकर कि उसके हाथ बालों वाले थे—ठीक "एसाव के हाथों" की तरह, भले ही "आवाज़ याकूब की थी"—वह सच्चाई को पहचान नहीं पाया और याकूब को आशीष देने के लिए तैयार हो गया (पद 23)। इससे पहले, इसहाक ने याकूब से पूछा था, "क्या तुम सचमुच मेरे बेटे एसाव हो?" (पद 24)। यह इस बात को दर्शाता है कि इसहाक को इस बारे में कितनी अनिश्चितता थी कि क्या याकूब सचमुच एसाव ही था—वह बेटा जिससे वह प्यार करता था। उस पल, याकूब ने जवाब दिया, "हाँ, मैं ही हूँ" (पद 24, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

(6) "मेरे पास आओ, मेरे बेटे, और मुझे चूमो" (पद 26)।

इसहाक ने याकूब से कहा, "मुझे वह शिकार खाने दो जो मेरे बेटे ने किया है, ताकि मैं पूरे दिल से तुम्हें आशीष दे सकूँ।" जब याकूब भोजन लेकर इसहाक के पास आया (पद 25), तो इसहाक ने खाया और दाखमधु (वाइन) पी; उसके बाद, उसने कहा, "मेरे पास आओ, मेरे बेटे, और मुझे चूमो" (पद 26)। ऐसा लगता है कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसे लगा कि याकूब से खुद को चुमवाकर, वह ज़्यादा निश्चितता के साथ यह तय कर पाएगा कि याकूब सचमुच एसाव है या नहीं।

(7) "जब वह पास आया और उसने उसे चूमा, तो इसहाक को उसके कपड़ों की महक आई..." (पद 27, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)।

याकूब अपने पिता, इसहाक के पास गया और उसे चूमा, ठीक वैसे ही जैसा उसे बताया गया था; उसी पल, इसहाक को उन कपड़ों की महक आई जो याकूब ने पहने हुए थे। यह उसका आखिरी प्रयास था—एक अंतिम पुष्टि—यह तय करने के लिए कि क्या याकूब सचमुच एसाव ही था—वह प्यारा बड़ा बेटा। हालाँकि, याकूब ने पहले ही एसाव के सबसे बढ़िया कपड़े ले लिए थे—जिन्हें उसकी माँ, रिबका ने घर के अंदर सँभालकर रखा था—और उन्हें खुद पहन लिया था; नतीजतन, इसहाक को एसाव के कपड़ों की महक आए बिना न रह सकी।

इस प्रकार, अंततः सच्चाई को पहचान न पाने के कारण, इसहाक ने याकूब को ही एसाव समझ लिया और उसे अपना आशीर्वाद दे दिया (पद 23, 28–29)।

जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे यह एहसास हुआ कि हम चीज़ों को परखने के कितने भी अलग-अलग तरीके क्यों न अपना लें, जब तक हमारे पास आध्यात्मिक समझ की एक अच्छी-खासी परिपक्वता नहीं होगी, हम शैतान के धोखों का शिकार बनने के लिए मजबूर होंगे। इसका कारण यह है कि जब हम आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व होते हैं, तो हमारी आध्यात्मिक दृष्टि धुंधली हो जाती है और हममें सही-गलत को पहचानने की क्षमता की कमी हो जाती है, जिससे हम शैतान की चालाक चालों से धोखा खाने के प्रति अतिसंवेदनशील हो जाते हैं (तुलना करें: इफिसियों 4:14, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। तो फिर, आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व मसीही कौन हैं? वे ठीक वही लोग हैं जो सच्चाई से प्रेम नहीं करते (2 थिस्सलोनिकियों 2:10, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। जो मसीही परमेश्वर की सच्चाई से प्रेम नहीं करते, वे आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व ही बने रहते हैं और उनमें आध्यात्मिक समझ की कमी होती है; परिणामस्वरूप, जब शैतान "ज्योति के दूत का रूप धर लेता है" (2 कुरिन्थियों 11:14), तो वे उसे पहचान नहीं पाते, और न ही वे उसके सेवकों को पहचान पाते हैं जब वे "धर्म के सेवकों का रूप धर लेते हैं" (पद 15, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। नतीजतन, उन्हें शैतान और उसके एजेंटों के चालाक झूठ और धोखों के आगे घुटने टेकने का गंभीर खतरा बना रहता है। इसका एक प्रमुख उदाहरण वह स्त्री है जिसका वर्णन उत्पत्ति अध्याय 3 में किया गया है। जब साँप—जो परमेश्वर द्वारा बनाए गए सभी जंगली जीवों में सबसे चालाक था—उसे बहकाने और लुभाने के लिए उसके पास आया (उत्पत्ति 3:1–5), तो वह उसके चालाक झूठ और धोखों के जाल में फँस गई। अंततः, उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया (उत्पत्ति 2:17), 'भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष' से फल तोड़ा और खाया, और फिर उसमें से कुछ अपने पति, आदम—

जो उस समय उसके साथ ही था—को दिया, और उसने भी उसे खा लिया (उत्पत्ति 3:6)। उस पल, अगर उसके पति, आदम में आध्यात्मिक समझ होती और उसमें सही-गलत को पहचानने की आध्यात्मिक क्षमता होती, तो वह 'अच्छाई और बुराई के ज्ञान का फल' नहीं खाता—वही फल जो उसकी पत्नी ने तोड़ा था और उसे खाने के लिए दिया था। इसके अलावा, अगर वह आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होता और उसमें ऐसी समझ होती, तो जब उसकी पत्नी उस चालाक साँप के बहकावे और प्रलोभनों में आकर फल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ा रही थी, तब वह उसे फल खाने से रोकने के लिए कदम उठाता। फिर भी आदम, जो ठीक वहीं उसके साथ मौजूद था (पद 6), उसने तब कोई कदम नहीं उठाया जब उसकी पत्नी ने फल तोड़ा और खाया; बल्कि, जब उसकी पत्नी ने उसे फल दिया, तो उसने भी उसे खा लिया। आदम में आध्यात्मिक समझ की इस घोर कमी पर विचार करते हुए, हमें—ईश्वर के सत्य के प्रति अपने प्रेम के कारण—अपने अंदर आध्यात्मिक समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। हमें हर चीज़ की बारीकी से जाँच करने और यह पहचानने की क्षमता विकसित करनी चाहिए कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। इस प्रकार, इस आध्यात्मिक समझ से लैस होकर, हमें हर चीज़ की परख करनी चाहिए; जो अच्छा है उसे थामे रहना चाहिए और बुराई के हर रूप को त्याग देना चाहिए (तुलना करें: 1 थिस्सलोनिकियों 5:21–22)। हमें 'ईश्वर के वचन'—जो 'पवित्र आत्मा की तलवार' है—का उपयोग करके अपने मन को पैना बनाना चाहिए, ताकि आध्यात्मिक समझ के द्वारा हम शैतान की चालों को पहचान सकें; और ईश्वर के वचन की शक्ति तथा निरंतर प्रार्थना के द्वारा, हमें शैतान से लड़ना चाहिए और विजयी होना चाहिए—हर दिन, हर पल।

पिछले सोमवार को, जब मैं अपने विश्वविद्यालय के दिनों के कुछ युवा मित्रों के साथ प्रभु की संगति में समय बिता रहा था—विशेष रूप से जब मैं एक ऐसे मित्र की गवाही सुन रहा था जो पिछले दिसंबर में दिल का दौरा पड़ने से लगभग मर ही गया था—तभी मुझे विश्वविद्यालय के एक अन्य मित्र से 'काकाओटॉक' (KakaoTalk) पर एक संदेश मिला। उस संदेश में यह खबर थी कि उस मित्र की माँ ने शांतिपूर्वक इस संसार को अलविदा कह दिया है; उन्हें अपनी अंतिम विश्राम-स्थली मिल गई है—वे शांतिपूर्वक 'पिता परमेश्वर' और 'प्रभु यीशु मसीह' की प्रेममयी बाहों में समा गई हैं। मैं उस संदेश का केवल एक अंश यहाँ साझा कर रहा हूँ: 'मैं प्रभु से आपके लिए आशीष की प्रार्थना करता हूँ, कि आप प्रभु और अन्य लोगों से प्रेम करके अपनी माँ का सम्मान करें—ठीक वैसे

ही, जैसा उन्होंने अपने पूरे सांसारिक जीवन में किया था।' अपने रोज़मर्रा के जीवन के ज़रिए, उन्होंने हमारे स्वर्गीय पिता और प्रभु यीशु मसीह के प्रति सच्चा प्रेम और विश्वास दिखाया। जब वे अपनी प्यारी माँ को विदाई दे रहे थे, तो मुझे बच्चों के मन में उनके लिए मौजूद अनमोल प्रेम की एक झलक मिली—एक ऐसा प्रेम जो इस दिली इच्छा के रूप में व्यक्त हुआ कि वे भी प्रभु और दूसरों से उसी सच्चे प्रेम के साथ प्रेम करके अपनी माँ का सम्मान करेंगे, जैसा प्रेम स्वयं उनकी माँ ने परमपिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के प्रति दिखाया था। यह बात *न्यू हिमनल* (New Hymnal) के भजन 579 की याद दिलाती है, जिसका शीर्षक है “एक माँ का असीम प्रेम”: (पद 1) एक माँ का असीम प्रेम—कितना अनमोल और दुर्लभ होता है; वह प्रेम सदा मुझे अपनी गोद में समेटे रहता है। जब मैं रोता हूँ, तो मेरी माँ प्रभु से प्रार्थना करती है; जब मैं खुशी से हँसता हूँ, तो वह स्तुति के गीत गाती है। (पद 2) बाइबल, जिसे मेरी माँ सुबह-शाम पढ़ती थी—उसके हर उस पद में, जो उनके स्पर्श से घिसकर चिकना हो गया है, मुझे उन्हीं की छवि दिखाई देती है। “जो कोई विश्वास करेगा, उसे अनंत जीवन मिलेगा”—ये अनमोल शब्द जो उन्होंने मुझसे कहे थे, अब मेरी शक्ति बन गए हैं। (पद 3) जब मैं अकेले दुख में पड़ा होता हूँ, या भटकते-भटकते थक जाता हूँ, तो उनके गाए भजनों की गूँज मेरे कानों में साफ़ सुनाई देती है। भले ही चट्टान से पानी फूट पड़े, या बीहड़ जंगल में फूल खिल उठें, यदि मैं यीशु के साथ-साथ चलूँ, तो मुझे किसी बात का कोई डर नहीं। (पद 4) कोमल, विनम्र, नेक और अटल—मैं अपनी माँ की विरासत का सम्मान करूँगा और एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जिऊँगा। तूफ़ानों और संघर्षों से भरी इस दुनिया में, जीवन की अच्छी लड़ाई लड़ने के बाद, हम सब मिलकर उस जगह सदा-सदा के लिए निवास करेंगे, जहाँ जीवन की नदी बहती है।

आखिर में, जब मैं रिबेकाह के बारे में सोचता हूँ—वह माँ जिसने अपने छोटे बेटे, याकूब के प्रति पक्षपात दिखाया—तो मुझे लगता है कि उसने परदे के पीछे से एक मुख्य योजनाकार की तरह काम किया, और हर छोटी-बड़ी बात को इस तरह से व्यवस्थित किया ताकि यह पक्का हो सके कि याकूब को इसहाक का आशीर्वाद मिले।

उत्पत्ति 25:28 के दूसरे हिस्से को देखें, तो बाइबल कहती है, "रिबेकाह याकूब से प्यार करती थी।" रिबेकाह ने अपने पहले जन्मे बेटे, एसाव के बजाय अपने छोटे बेटे, याकूब को क्यों ज़्यादा पसंद किया? मेरी नज़र में, इसका कारण यह है कि याकूब "एक शांत स्वभाव का आदमी था, जो तंबुओं में ही रहता था" (पद 27)। जहाँ

उसका बड़ा भाई, एसाव—एक कुशल शिकारी होने के नाते—बाहर की दुनिया से प्यार करता था और खेतों में घूमना पसंद करता था, वहीं याकूब एक शांत, घर-प्रेमी आदमी था; नतीजतन, उसने शायद अपनी माँ रिबेकाह के साथ कहीं ज़्यादा समय बिताया होगा। इसके अलावा, उसके द्वारा स्टू बनाने की घटना (पद 29) को देखते हुए, यह मानना तर्कसंगत लगता है कि याकूब ने खाना पकाने की कला भी अपनी माँ, रिबेकाह से ही सीखी होगी। मेरा मानना है कि एक और वजह रिबेकाह की अपने पहले जन्मे बेटे, एसाव को लेकर चिंता थी: उसने हित्ती लोगों की दो औरतों से शादी कर ली थी, और ये दोनों बहुएँ उसके लिए गहरे दुख का कारण बन गईं (26:35)—इतनी ज़्यादा कि उसे उनके कारण अपना जीवन ही "एक बोझ" लगने लगा (27:46)। उसका दुख ज़रूर बहुत गहरा रहा होगा, क्योंकि उसने अपने पति, इसहाक से यहाँ तक कह दिया था: "इन हित्ती औरतों की वजह से मैं जीने से ऊब गई हूँ। अगर याकूब इस देश की औरतों में से—यानी हित्ती औरतों में से—किसी से शादी कर लेता है, तो मेरे जीवन का क्या फ़ायदा?" (पद 46)। मुझे ऐसा लगता है कि सास और बहुओं के बीच काफ़ी मनमुटाव था। रिबेकाह और उसकी दो हित्ती बहुओं के बीच इसी तनावपूर्ण रिश्ते की वजह से ही उसने अपने पति, इसहाक से यह शिकायत की थी कि उसे अपना जीवन "एक बोझ" लगता है (पद 46)। इन्हीं कारणों से, मेरा मानना है कि रिबेकाह ने अपना प्यार अपने पहले जन्मे बेटे, एसाव के बजाय अपने छोटे बेटे, याकूब पर बरसाना चुना। मेरा मानना है कि कोई भी सास, जिसका अपनी बहू के साथ अभी कोई झगड़ा चल रहा हो, वह कम से कम कुछ हद तक तो रेबेका की भावनाओं को समझ ही सकती है। अगर उसकी अपने सबसे बड़े बेटे की पत्नी से अनबन है, तो इस बात की बहुत ज़्यादा संभावना है कि वह अपने दूसरे बेटे—जिसकी अभी शादी नहीं हुई है—से और भी ज़्यादा प्यार करने लगे। खासकर, अगर उस बड़ी बहू के साथ झगड़ा इस हद तक पहुँच गया हो कि रेबेका की तरह जीना बिल्कुल ही असहनीय हो गया हो, तो उस सास की ज़िंदगी में और क्या खुशी बचेगी? (पद 46, *मॉडर्न मैन बाइबल*) ऐसी परिस्थितियों में, क्या यह बिल्कुल स्वाभाविक नहीं होगा कि वह अपने पहले बेटे के मुकाबले अपने दूसरे बेटे से ज़्यादा प्यार करे? खासकर अगर उस दूसरे बेटे का स्वभाव शांत हो—बिल्कुल याकूब की तरह—और उसे घर पर रहना पसंद हो, तो क्या कोई भी माँ स्वाभाविक रूप से उस बड़े बेटे के मुकाबले उसका पक्ष नहीं लेगी, जो हमेशा बाहर घूमता रहता है? इसके अलावा, अगर वह लगातार अपने पति को—जिसके साथ उसके रिश्ते तनावपूर्ण हैं—अपने बड़े बेटे के प्रति खुलकर अपना प्यार जताते हुए देखे, तो क्या वह माँ अपने दूसरे बेटे पर और भी ज़्यादा प्यार लुटाने के लिए ज़्यादा इच्छुक नहीं होगी?

क्योंकि वह अपने दूसरे बेटे, याकूब से प्यार करती थी, इसलिए उसकी माँ रेबेका ने बीच में दखल देकर—या यूँ कहें कि *हथियाकर* (पद 36)—वह आखिरी आशीर्वाद हासिल कर लिया, जो उसके पति, इसहाक, अपनी मृत्यु से पहले अपने प्यारे बड़े बेटे, एसाव को देना चाहते थे (पद 27:4, *मॉडर्न मैन बाइबल*); ऐसा करके, उसने यह सुनिश्चित किया कि वह आशीर्वाद याकूब को ही मिले। मुझे ऐसा इसलिए लगता है कि इस पूरी योजना के पीछे रेबेका का ही दिमाग था, क्योंकि याकूब खुद इस बात से बहुत डरा हुआ था कि कहीं वह अपने पिता की नज़रों में "धोखेबाज़" न बन जाए; उसे डर था कि अगर वह ऐसा करते हुए पकड़ा गया, तो उसे "आशीर्वाद नहीं, बल्कि श्राप" मिलेगा (पद 12, *मॉडर्न मैन बाइबल*)। लेकिन, जब उसकी माँ रेबेका ने उसे भरोसा दिलाया—यह कहते हुए, "मैं वह श्राप अपने ऊपर ले लूँगी" (पद 13, *मॉडर्न मैन्स बाइबल*)—और उसे हिदायत दी, "मैं जो कह रही हूँ उसे ध्यान से सुनो, और ठीक वैसा ही करो जैसा मैं तुम्हें बताती हूँ" (पद 8, *मॉडर्न मैन्स बाइबल*)—तो याकूब ने बस अपनी माँ पर भरोसा किया और ठीक उसके कहे अनुसार ही काम किया। आज की भाषा में अगर थोड़ा साफ़-साफ़ कहें, तो ऐसा लगता है कि याकूब असल में एक "माँ का लाडला" था। ऐसा लगता है कि याकूब छोटा बेटा था—एक ऐसा बेटा जिसमें अकेले कोई काम करने की क्षमता नहीं थी और जो इसके बजाय अपनी माँ, रेबेका पर बहुत ज़्यादा निर्भर रहता था। नतीजतन, रेबेका के नज़रिए से, अपने प्यारे छोटे बेटे याकूब को बहला-फुसलाकर एसाव की जगह अपने पिता इसहाक का आशीर्वाद दिलवाना शायद काफ़ी आसान रहा होगा। याकूब को बहलाने-फुसलाने की कोशिश शुरू करने से पहले, रेबेका ने सबसे पहला काम यह किया कि उसने अपने पति, इसहाक और उसके प्यारे बड़े बेटे, एसाव के बीच हो रही बातचीत को छिपकर सुना। इसका ज़िक्र उत्पत्ति 27:5–6 (*मॉडर्न मैन्स बाइबल* के अनुवाद से) में मिलता है: "ठीक उसी पल, रेबेका ने सुन लिया कि इसहाक एसाव से क्या कह रहा था; इसलिए, जब एसाव शिकार करने के लिए खेतों में गया हुआ था, तो उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा, 'मैंने अभी-अभी तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से बात करते हुए सुना है...'" यह वाक्यांश "ठीक उसी पल" उस समय की ओर इशारा करता है जब इसहाक—जो अब काफ़ी बूढ़ा हो चुका था और लगभग अंधा भी—ने अपने प्यारे बड़े बेटे, एसाव को अपने पास बुलाया। अपनी नश्वरता और इस बात की अनिश्चितता को समझते हुए कि उसकी ज़िंदगी कब खत्म हो सकती है (पद 1–2), इसहाक ने एसाव से कहा था: "अपना धनुष उठाओ, खेतों में जाओ, कुछ शिकार करो, और एक स्वादिष्ट पकवान बनाओ जो मुझे पसंद है। मैं उसे खाऊँगा, और अपनी मृत्यु से पहले, मैं तुम्हें अपना अंतिम आशीर्वाद दूँगा" (पद 3–4)। ठीक "उसी पल" रेबेका ने इसहाक और एसाव के बीच हो रही बातचीत को छिपकर सुन लिया था।

एक बार, मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, "आप और एल्डर पादरी के दफ़्तर में जो भी बातचीत कर रहे हैं, वह सब मुझे ठीक बगल वाले कमरे से सुनाई दे रही है; शायद आपको अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी रखनी चाहिए।" मुझे लगता है कि उस समय मेरी पत्नी शायद बगल वाले कमरे में—जहाँ फोटोकॉपी मशीन रखी है—कुछ काम कर रही थी। अगर वह फेलोशिप हॉल में होती, और रविवार की सेवा के बाद हमेशा की तरह दूसरे लोगों के साथ खाना खा रही होती, तो वह एल्डर और मेरे बीच की बातचीत नहीं सुन पाती। इसके अलावा, उसने हमारी बातचीत इसलिए नहीं सुनी कि वह जान-बूझकर हमारी बातें सुनने की कोशिश कर रही थी; बल्कि, सिर्फ इसलिए कि वह पादरी के दफ़्तर के ठीक बगल वाले कमरे में थी, इसलिए उसके लिए हमारी बातें *न* सुनना नामुमकिन था। मैं यहाँ जो मुख्य बात कहना चाहता हूँ, वह यह है कि रेबेका ने "अनजाने में सुन लिया" कि इसहाक एसाव से क्या कह रहा था—इस बात से पता चलता है कि वह उनके बहुत करीब थी। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अगर वह करीब न होती, तो वह उनकी बातचीत नहीं सुन पाती। इससे यह सवाल उठता है: क्या रेबेका ने जो कुछ कहा जा रहा था, उसे सिर्फ इसलिए सुन लिया क्योंकि वह उस समय उस जगह के पास थी, जब इसहाक एसाव से बात कर रहा था? या क्या वह जान-बूझकर उनके पास गई थी, ताकि वह सुन सके कि इसहाक उससे क्या कह रहा है? जैसा कि शब्द "अनजाने में सुन लिया" (पद 5) से साफ पता चलता है, रेबेका जान-बूझकर उनके पास गई थी, ताकि वह इसहाक और एसाव के बीच की बातचीत सुन सके। उसने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि यही एकमात्र तरीका था जिससे वह यह सुन सकती थी कि इसहाक उससे क्या कह रहा है। उदाहरण के लिए, अगर मेरी पत्नी फेलोशिप हॉल में होती, लेकिन जान-बूझकर मेरे स्टडी रूम के बगल वाले कमरे में चली जाती—क्योंकि वह एल्डर के साथ मेरी बातचीत सुनना चाहती थी—तो क्या वह सेशन (पादरी और एल्डर्स) के बीच हो रही चर्चा को नहीं सुन पाती? ठीक इसी तरह, रेबेका भी शायद जान-बूझकर उनके पास गई थी, ताकि वह सुन सके कि इसहाक एसाव से क्या कह रहा है। और जब उसने अपने पति इसहाक की कही हुई सारी बातें सुन लीं, तो उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा: "मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से बात करते हुए सुना। उन्होंने कहा कि अगर तुम्हारा भाई शिकार पर जाता है और कोई स्वादिष्ट पकवान बनाकर लाता है, तो वह उसे खाएगा और मरने से पहले प्रभु की उपस्थिति में उसे आशीष देगा" (पद 6–7)। अपने पति की अपने सबसे बड़े बेटे से कही हुई बातें सुनने के बाद, रेबेका ने देखा कि कैसे याकूब ने अपने पिता इसहाक से आशीष पाई और वहाँ से चला गया। इसके कुछ ही समय बाद, उसका भाई एसाव शिकार से लौट आया (पद 30); जब उसे पता चला कि उसके छोटे भाई याकूब ने उनके पिता इसहाक को धोखा दिया है और उसके लिए तय आशीर्वाद चुरा लिया

है (पद 35–36), तो एसाव याकूब से नफ़रत करने लगा (पद 41) और, अपने गुस्से में (पद 44), उसने मन ही मन बुदबुदाया: "मेरे पिता की मृत्यु निकट आ रही है; जैसे ही वे गुज़र जाएँगे, मैं याकूब को मार डालूँगा" (पद 41)। हालाँकि, जब एसाव के मन ही मन बुदबुदाए ये शब्द "रिबका के कानों तक पहुँचे" (*द मॉडर्न मैन्स बाइबल* में इसका अनुवाद "उसे बताया गया" के रूप में किया गया है) (पद 42), तो उसने अपने छोटे बेटे, याकूब को बुलाया और उससे कहा: "तुम्हारा भाई एसाव अपना बदला लेने के लिए तुम्हें मारना चाहता है। मेरे बेटे, अब मैं तुमसे जो कह रही हूँ, ठीक वैसा ही करो। तुरंत हारान में मेरे भाई लाबान के पास जाओ और कुछ समय के लिए वहाँ शरण लो, जब तक कि तुम्हारे भाई का गुस्सा शांत न हो जाए। एक बार जब उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह भूल जाएगा कि तुमने क्या किया था, तो मैं किसी को तुम्हें वहाँ से वापस लाने के लिए भेजूँगी। मुझे एक ही दिन तुम दोनों को क्यों खोना पड़े?" (पद 42–45)। एसाव के मन ही मन बुदबुदाए शब्द रिबका के कानों तक कैसे पहुँच गए? शुरू में, मैंने मान लिया था कि रिबका एसाव के इतनी करीब रही होगी कि वह उसकी बुदबुदाहट सुन सकी होगी; हालाँकि, अब मुझे लगता है कि उसने शायद इसे परोक्ष रूप से सुना होगा—शायद किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से (जैसे कि उसका कोई वफ़ादार नौकर)। मुख्य बात यह है: रिबका ने इसहाक और एसाव, दोनों के बोले गए शब्दों पर अपने कान लगाए रखे। रिबका, जिसने अपने पति इसहाक द्वारा अपने सबसे बड़े बेटे, एसाव से कहे गए शब्दों को छिपकर सुना था—और जिसे, जैसा कि पता चलता है, एसाव के मन ही मन बुदबुदाए शब्दों की भी भनक लग गई थी—ने यह दिखाया कि अपने प्यारे दूसरे बेटे, याकूब के प्रति अपनी भक्ति के कारण, वह हर छोटी-बड़ी बात पर पूरी तरह से ध्यान देती थी: अपने पति द्वारा अपने पहले जन्मे बेटे से कहे गए शब्दों से लेकर, एसाव के अपने मन ही मन किए गए निजी बुदबुदाहट तक।

जब मैं रिबेकाह के बारे में सोचती हूँ—वह माँ जिसने अपने छोटे बेटे, याकूब के प्रति पक्षपात दिखाया—तो मैं उसे हर उस चाल के पीछे का मुख्य सूत्रधार मानती हूँ, जिसने याकूब को इसहाक का आशीर्वाद पाने में मदद की। इस प्रक्रिया का पहला कदम यह था कि रिबेकाह ने सुना—और बहुत ध्यान से सुना। उसने अपने पति, इसहाक की बातें सुनीं, जो वह अपने प्यारे बड़े बेटे, एसाव से कह रहे थे; उसने तो वे शब्द भी सुन लिए जो एसाव अकेले में खुद से बुदबुदा रहा था। उसके कान लगातार उसके पति, इसहाक, और उसके बड़े बेटे,

एसाव के बीच होने वाली बातचीत पर लगे रहते थे। यह सारा ध्यान से सुनना उसने अपने प्यारे छोटे बेटे, याकूब की खातिर किया था। उसकी इच्छा थी कि इसहाक का आशीर्वाद एसाव को नहीं, बल्कि याकूब को मिले। नतीजतन, जब इसहाक ने एसाव को अपने पास बुलाया, तो उसने इसहाक के दिए गए निर्देशों को चुपके से सुन लिया। फिर उसने अपने प्यारे दूसरे बेटे, याकूब को बुलाया, और उसे वह सब कुछ बता दिया जो उसके पिता ने उसके बड़े भाई, एसाव से कहा था; ऐसा करके, उसने याकूब को अपने ही पिता के साथ छल करने वाला बना दिया, और ऐसी परिस्थितियाँ रचीं जिससे याकूब वह आशीर्वाद छीन सके, जिस पर असल में एसाव का हक था। यह देखते हुए कि अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर को यह सब ज़रूर पता रहा होगा, तो परमेश्वर ने रिबेकाह के प्यारे छोटे बेटे, याकूब को वह आशीर्वाद क्यों छीनने दिया, जो उसके बड़े भाई, एसाव के लिए था? परमेश्वर के किस संप्रभु उद्देश्य के कारण उसने रिबेकाह को परदे के पीछे से घटनाओं को अपनी मर्ज़ी से मोड़ने की अनुमति दी, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि याकूब को ही इसहाक का आशीर्वाद मिले? मेरा मानना है कि इसका उत्तर उत्पत्ति 25:23 में मिलता है: “तेरी कोख में दो जातियाँ हैं; दो प्रकार के लोग तेरे शरीर से अलग होंगे। एक जाति दूसरी से अधिक बलवान होगी, और बड़ा भाई छोटे भाई की सेवा करेगा” (मॉडर्न मैन बाइबल)। मेरा मानना है कि क्योंकि यह परमेश्वर—वाचा के परमेश्वर—की संप्रभु इच्छा थी कि बड़ा भाई, एसाव, छोटे भाई, याकूब की सेवा करे, इसलिए परमेश्वर ने घटनाओं को उसी तरह घटने दिया जैसे वे घटीं; उसने याकूब को—जिसे रिबेकाह पसंद करती थी—इसहाक से वह पैतृक आशीर्वाद छीनने की अनुमति दी, जिस पर असल में उसके बड़े भाई, एसाव का हक था, भले ही परमेश्वर को पूरी तरह पता था कि क्या हो रहा है। इसके पीछे परमेश्वर की यह योजना थी कि वह मसीहा—यानी मसीह यीशु—को याकूब के वंशजों के द्वारा इस संसार में भेजे, और उसे क्रूस पर मरने दे। परमेश्वर पिता ने, हर एक बात सुनने के बाद भी, अपने प्यारे और दुलारे इकलौते पुत्र, यीशु मसीह को मरने की अनुमति क्यों दी—तब भी जब यीशु ने पुकारकर कहा था, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)? इसका कारण हमारे पापों को क्षमा करना और हमारा उद्धार करना है।

पिछले मंगलवार को, मैं मसीह में अपनी एक छोटी बहन—जो मेरी ही यूनिवर्सिटी की छात्रा भी रह चुकी है—की माँ के अंतिम संस्कार में शामिल हुई, और परमेश्वर को समर्पित की जाने वाली अंतिम विदाई सेवा में

भाग लिया। उस बहन ने, अपनी माँ के जीवित रहते हुए उनके द्वारा परमेश्वर का *सच्चा प्रेम* पाया था; उसने एक प्रार्थना का निवेदन किया: कि यद्यपि उसकी माँ अब मृत्यु की नींद सो चुकी हैं, फिर भी वह अपनी माँ का सम्मान करना चाहती है—और वह ऐसा परमेश्वर के उसी सच्चे प्रेम को दर्शाकर करना चाहती है—जिस प्रेम का उदाहरण उसकी माँ ने अपने जीवन में प्रस्तुत किया था—और अब वह उसी प्रेम को अपने पड़ोसियों के प्रति अपने व्यवहार में दिखाना चाहती है। इस निवेदन पर विचार करते हुए, मैं उस माँ के प्रेम की सचमुच अनमोल प्रकृति से बहुत अधिक प्रभावित हुई। [उस दोपहर से लेकर कल, शुक्रवार तक, मैंने उस अंतिम विदाई सेवा में उपस्थित पादरी द्वारा दिए गए उपदेश के आधार पर एक लंबा भक्तिपूर्ण लेख तैयार किया। मैंने उनके संदेश को थोड़ा-सा संशोधित किया, और 2 कुरिन्थियों 4:18 से 5:2 तक के अंश पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उसे यह शीर्षक दिया: "उस दिन की प्रतीक्षा जब हम परमेश्वर का शरीर धारण करेंगे।"]

आज के शास्त्र-अंश—उत्पत्ति 25:27–28—को देखने पर हम पाते हैं कि पिता, इसहाक, अपने पहलौठे पुत्र, एसाव से प्रेम करता था, क्योंकि उसे एसाव द्वारा शिकार से घर लाए गए भोजन का आनंद लेना पसंद था; इसके विपरीत, माँ, रिबका, अपने छोटे पुत्र, याकूब से प्रेम करती थी। इसहाक, वह पिता जो एसाव से प्रेम करता था, अपनी मृत्यु से पहले उसे अंतिम आशीष देना चाहता था—भले ही अब वह बहुत वृद्ध हो चुका था और उसकी आँखों की रोशनी भी कम हो गई थी—और यह सब उस तथ्य के बावजूद था कि एसाव का चालीस वर्ष की आयु में दो हित्ती स्त्रियों से विवाह (मेरी दृष्टि में, यह विवाह उसने अपने माता-पिता की अनुमति लिए बिना ही किया था) उसके हृदय के लिए गहरे दुख का कारण बन गया था (26:35; 27:1–4, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। लेकिन, उसकी माँ, रिबका ने अपने पति इसहाक की बातें "सुन लीं" जो वह अपने प्यारे बेटे एसाव से कह रहा था; फिर, जब एसाव शिकार करने के लिए खेतों में गया हुआ था (पद 5, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*), तो उसने परदे के पीछे एक योजना बनाई ताकि यह पक्का हो सके कि उसका अपना प्यारा छोटा बेटा, याकूब (25:28, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*), ही इसहाक का आशीर्वाद पाए।

(1) इस प्रक्रिया का पहला कदम यह था कि रिबका ने सुना—और बहुत ध्यान से सुना।

उसने सिर्फ़ इसहाक की बातें ही नहीं सुनीं जो वह अपने प्यारे बेटे एसाव से कह रहा था (27:5, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*); बाद में उसे उन बातों की भी भनक लग गई जो एसाव ने खुद से कही थीं—ये बातें याकूब के लिए उसकी नफ़रत से पैदा हुई थीं, जब इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दे दिया था—उसने कसम खाई थी, "मेरे पिता की मौत करीब आ रही है; जब वह गुज़र जाएँगे, तो मैं याकूब को मार डालूँगा" (पद 41–42, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इस तरह, रिबका ने अपने पति, इसहाक, और अपने बड़े बेटे, एसाव की बातों पर अपने कान पूरी तरह से लगाए रखे। यह सारा ध्यान से सुनना उसके प्यारे छोटे बेटे, याकूब के लिए किया गया था; उसकी इच्छा थी कि याकूब—वह बेटा जिससे वह प्यार करती थी—एसाव के बजाय, इसहाक का आशीर्वाद पाए।

(2) अपने प्यारे छोटे बेटे, याकूब को इसहाक का आशीर्वाद दिलाने की अपनी परदे के पीछे की चालबाज़ी का दूसरा कदम यह पक्का करना था कि याकूब उसकी बातें आज्ञाकारी होकर सुने और उसके निर्देशों का ठीक वैसे ही पालन करे जैसा उसने कहा था। उत्पत्ति 27:8 में यह लिखा है (*द कंटेम्पररी बाइबल* से): "मेरे बेटे, मेरी बातें ध्यान से सुनो, और अब से ठीक वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे कहती हूँ।" रिबका ने इसहाक और एसाव के बीच की बातचीत सुन ली थी; इसलिए, जब एसाव शिकार करने के लिए खेतों में गया हुआ था, तो उसने याकूब को अपने पास बुलाया और कहा: "मैंने तुम्हारे पिता को तुम्हारे भाई एसाव से बात करते हुए सुना, जिसमें उन्होंने कहा कि अगर एसाव शिकार करके उनके लिए कोई स्वादिष्ट पकवान बनाए, तो वह उसे खाएँगे और अपनी मौत से पहले प्रभु की मौजूदगी में उसे आशीर्वाद देंगे" (पद 5–7, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। नतीजतन, उसने याकूब को हिदायत दी कि वह उसकी बातों को ध्यान से सुने और ठीक वैसा ही करे जैसा उसने हुक्म दिया था (पद 8, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मेरे मन में एक सवाल उठता है: “क्या किसी बच्चे को सचमुच *हर बात* ठीक वैसी ही करनी चाहिए जैसी उसकी माँ उसे सिखाती है?” मैं यह सवाल इसलिए पूछता हूँ: ठीक वैसे ही जैसे रिबका ने याकूब से कहा था कि वह ठीक वैसा ही करे जैसा उसने कहा—खास तौर पर अपने पिता को धोखा देकर अपने भाई का आशीर्वाद छीनने के लिए—मेरा मानना है कि अगर हमारी अपनी माँएँ हमें इस तरह से दूसरों को धोखा देने का हुक्म दें, तो हम उनकी बात मानने के लिए बाध्य नहीं हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि बाइबल हुक्म देती है, “हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो” (इफिसियों 6:1); यह हमें प्रभु के बाहर अपने माता-पिता की आज्ञा

मानने का हुक्म *नहीं* देती—यहाँ तक कि दूसरों को धोखा देने के हद तक भी नहीं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि हमारे माता-पिता—अदृश्य, अनंत चीज़ों पर अपनी नज़रें टिकाने के बजाय—धोखे से हासिल की गई दौलत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो एक कोहरे की तरह है जो एक पल के लिए दिखाई देता है और फिर अदृश्य में गायब हो जाता है (2 कुरिन्थियों 4:18; नीतिवचन 21:6, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। अगर वे लगातार हमें सांसारिक सफलता और दिखाई देने वाली दौलत पाने के लिए उकसाते रहें, तो मेरा मानना है कि हमें अपने माता-पिता के ऐसे हुक्मों को नहीं मानना चाहिए। क्योंकि अगर हम अपने माता-पिता की उन खास बातों को मानेंगे, तो निस्संदेह हम दो मालिकों की सेवा करने लगेंगे। ये यीशु के शब्द हैं: "कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता। क्योंकि तुम एक से नफ़रत करोगे और दूसरे से प्यार, या एक के प्रति समर्पित रहोगे और दूसरे को तुच्छ समझोगे। तुम परमेश्वर और पैसे, दोनों की सेवा नहीं कर सकते" (मत्ती 6:24, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। इससे मुझे मीका की माँ की याद आती है, जिसका ज़िक्र न्यायियों के अध्याय 17 में किया गया है। मीका की माँ—पूरी तरह से अपने ही फैसले के मुताबिक काम करते हुए—अपने बेटे मीका के लिए आशीर्वाद चाहती थी, तब भी जब उसने उसकी 1,100 चाँदी की मुहरें चुरा ली थीं (17:2)। उसने चाँदी उसे सिर्फ इसलिए वापस की थी क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसे अपनी माँ का श्राप न मिल जाए। यह कैसे मुमकिन है? वह अपने चोर बेटे को जवाबदेह ठहराए बिना, उसे आशीर्वाद कैसे दे सकती थी और उसके लिए परमेश्वर की कृपा की कामना कैसे कर सकती थी? वह एक ऐसी माँ है जिसे समझना मुश्किल है। इससे भी ज़्यादा हैरान करने वाली बात यह है कि, 1,100 चाँदी के सिक्के वापस मिलने के बाद, उसने यह ऐलान किया कि वह उन्हें परमेश्वर को समर्पित कर देगी; लेकिन इसके ठीक बाद—खास तौर पर *अपने बेटे की खातिर* (पद 3)—उसने 200 चाँदी के सिक्के एक सुनार को दे दिए ताकि वह उनसे एक मूर्ति ढालकर उसे एक पवित्र प्रतिमा का रूप दे सके (पद 4), जिसे बाद में उसने अपने बेटे को भेंट कर दिया (पद 3–4)। यह सचमुच एक माँ का ऐसा व्यवहार है जो किसी को भी पूरी तरह से हक्का-बक्का कर देता है। नतीजतन, उसके बेटे मीका ने अपनी माँ से मिली उस मूर्ति को अपने ही घर में रख लिया (पद 4)। सचमुच सबसे ज़्यादा हैरानी की बात यह है कि मीका—जिसे अपनी माँ का यह आशीर्वाद मिला था, "मेरे बेटे, परमेश्वर तुझे आशीष दे"—के घर के भीतर ही एक निजी मंदिर (या "देवताओं का घर") भी मौजूद था (पद 5)। मेरा मानना है कि मीका एक ऐसा बेटा था जिसने अपना जीवन अपनी माँ के वचनों के अनुसार जिया, और एक सांसारिक माँ के सांसारिक प्रेम में डूबा रहा।

(3) परदे के पीछे से घटनाओं को इस तरह से अंजाम देने की प्रक्रिया में, ताकि यह पक्का हो सके कि उसके प्यारे छोटे बेटे, याकूब को इसहाक का आशीर्वाद मिले, रिबका ने—तीसरी बार—याकूब को इसहाक का "धोखेबाज़" बना दिया।

उत्पत्ति 27:12 (*मॉडर्न पीपल्स बाइबिल* से) में लिखा है: "क्या होगा अगर पिता मुझे छू लें? उनकी नज़रों में मैं एक धोखेबाज़ बन जाऊँगा, और आशीर्वाद पाने के बजाय, हो सकता है कि मुझे सचमुच श्राप मिल जाए।" अपनी माँ रिबका को यह कहते हुए सुनने के बाद, "मेरी बातों को ध्यान से सुनो और अब से मैं जैसा कहूँ, ठीक वैसा ही करो। बाहर जाओ और मेरे लिए दो मोटे-ताज़े जवान बकरे ले आओ। मैं उनका इस्तेमाल करके वे स्वादिष्ट पकवान बनाऊँगी जो तुम्हारे पिता को पसंद हैं; फिर तुम उन्हें उनके पास ले जाना ताकि वे उन्हें खा सकें। ऐसा करने पर, तुम्हारे पिता अपनी मृत्यु से पहले तुम्हें आशीर्वाद देंगे" (पद 8–10), याकूब ने अपनी माँ को जवाब दिया: "मेरा भाई एसाव रोएँदार शरीर वाला आदमी है, जबकि मेरी त्वचा चिकनी है। क्या होगा अगर पिता मुझे छू लें? उनकी नज़रों में मैं एक धोखेबाज़ बन जाऊँगा, और आशीर्वाद पाने के बजाय, हो सकता है कि मुझे सचमुच श्राप मिल जाए" (पद 11–12)। याकूब के इन शब्दों से यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि उसे पूरी तरह से पता था कि अगर वह अपनी माँ रिबका के निर्देशों का पालन करेगा, तो वह खुद को अपने पिता, इसहाक के "धोखेबाज़" की भूमिका में डाल रहा होगा। जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मेरा मानना है कि असली "धोखेबाज़" तो असल में शैतान है। शैतान ही वह है जो पूरी दुनिया को धोखा देता है, और वही आरोप लगाने वाला भी है (प्रकाशितवाक्य 12:9–10)। यह अंश यूहन्ना 8:44 से है: "तुम अपने पिता, शैतान के हो, और तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह शुरू से ही हत्यारा था, और उसने सच्चाई का साथ नहीं दिया, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब भी वह झूठ बोलता है, तो वह अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।" शैतान अपने स्वभाव के अनुसार ही झूठ बोलता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है (इंटरनेट)। वह खुद को रोशनी के फ़रिश्ते के रूप में छिपा लेता है (2 कुरिन्थियों 11:14), और उसके सेवक भेड़ों की खाल में भेड़ियों जैसे होते हैं (मत्ती 7:15)। इसके अलावा, वे दुष्ट लोग हैं जो शैतान की शक्ति के साथ आते हैं, हर तरह के झूठे चमत्कार और अजूबे दिखाते हैं, और उन लोगों के खिलाफ़ हर मुमकिन धोखे का इस्तेमाल करते हैं जो नाश की ओर बढ़ रहे हैं (2 थिस्सलोनिकियों 2:9–10, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। हमें शैतान और उसके सेवकों के चालाक झूठों से धोखा नहीं खाना चाहिए (2 कुरिन्थियों 11:3, *मॉडर्न पीपल्स

बाइबल*)। उनके मुँह टेढ़े—विकृत—होते हैं, ताकि वे सच्चाई को तोड़-मरोड़ सकें, और सिर्फ़ झूठ और धोखा ही बोलें। वे हमें भ्रमित करने की कोशिश में परमेश्वर के वचन को तोड़-मरोड़ देते हैं। उनकी सबसे कपटी चालों में से एक यह कोशिश करना है कि हम उस चीज़ पर विश्वास करें जिसे "मिली-जुली सच्चाई" कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, शैतान और उसके सेवक परमेश्वर के सच्चे वचन में झूठ मिलाकर, हमें इस "मिली-जुली सच्चाई" को स्वीकार करने के लिए राज़ी करने की अथक कोशिश करते हैं। हमें इस बात को पक्के तौर पर ध्यान में रखना चाहिए। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उनके मुँह से निकलने वाले शब्द झूठ और धोखे के सिवा कुछ नहीं हैं (नीतिवचन 6:12, वाल्वोर्ड)। इसका कारण यह है कि उनके दिल टेढ़े—विकृत—हैं। एक टेढ़े दिल से, सिर्फ़ टेढ़े शब्द ही निकल सकते हैं। अगर हम धोखा खा जाते हैं, तो हमारे दिल भ्रष्ट हो जाएँगे, जिससे हम मसीह के प्रति अपनी वफ़ादारी और पवित्रता को छोड़ देंगे (पद 3, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। हमें शैतान और उसके सेवकों के चालाक झूठों और धोखों को पहचानने के लिए आध्यात्मिक विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि हम उनके शिकार न बनें।

(4) पर्दे के पीछे से घटनाओं को इस तरह से अंजाम देने की प्रक्रिया में, ताकि उसके प्यारे छोटे बेटे, याकूब को इसहाक का आशीर्वाद मिल सके, रिबका ने—चौथे कदम के तौर पर—यहाँ तक कह दिया कि वह अपने बेटे की जगह खुद ही उस श्राप को स्वीकार कर लेगी।

उत्पत्ति 27:12–13 (*द कंटेम्पररी बाइबल*) में लिखा है: "क्या होगा अगर पिता मुझे छू लें? मेरा धोखा पकड़ा जा सकता है; आशीर्वाद मिलने के बजाय, मैं शायद अपने ऊपर श्राप ले लूँ!" इस पर उसकी माँ ने जवाब दिया: "मेरे बेटे, मैं उस श्राप को अपने ऊपर ले लूँगी; तुम बस जाओ और मेरे लिए बकरियाँ ले आओ।" याकूब को डर था कि अगर वह अपनी माँ रिबका के कहने पर अपने पिता इसहाक को धोखा देगा, तो वह पकड़ा जा सकता है। इसलिए, उसने अपनी माँ रिबका से कहा: "मैं एक धोखेबाज़ के तौर पर बेनकाब हो सकता हूँ; मुझे आशीर्वाद मिलने के बजाय, मैं अपने ऊपर श्राप ले सकता हूँ" (पद 12, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। उसी पल, उसकी माँ रिबका ने जवाब दिया: "मेरे बेटे, मैं वह श्राप अपने ऊपर ले लूँगी..." (पद 13, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। रिबका याकूब की जगह खुद श्राप लेने को तैयार थी, बस शर्त यह थी कि उसका प्यारा छोटा बेटा इसहाक का आशीर्वाद पा सके। याकूब के लिए उसके प्यार की गहराई इतनी ज़्यादा थी। लेकिन क्या इस तरह का माँ का प्यार सचमुच सेहतमंद होता है? मेरा मानना है कि यह एक तरह का

बीमार प्यार है—ऐसा प्यार जो आखिरकार बच्चे को भी बीमार बना देता है। बच्चे के लिए माँ का यह "बीमार प्यार" हेरफेर के रूप में सामने आता है—बच्चे से प्यार करने की आड़ में उसे कंट्रोल करना—ठीक वैसे ही जैसे रिबका ने याकूब से कहा था: "मैं जो कह रही हूँ उसे ध्यान से सुनो, और अब से मैं जैसा कहूँ ठीक वैसा ही करो" (पद 8, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*) और "अब, मैं जैसा कहूँ ठीक वैसा ही करो" (पद 43, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इस तरह के हेरफेर का शिकार बच्चा कई तरीकों से—खासकर मानसिक और भावनात्मक रूप से—अपनी माँ से अलग नहीं हो पाता, और इसलिए वह दुख झेलने के लिए मजबूर हो जाता है, क्योंकि उसका अपना दिल, भावनाएँ और विचार भी बीमार हो जाते हैं। इसके अलावा, अगर बच्चा पहले से शादीशुदा है, तो यह स्थिति उसके वैवाहिक रिश्ते पर भी बुरा असर डालती है, जिससे वह रिश्ता भी बीमार हो जाता है। इस तरह, बच्चे के लिए माँ का बीमार प्यार दूरगामी परिणामों वाली लहरें पैदा करता है। फिर भी, एक माँ जो अपने बच्चे की जगह खुद श्राप लेने तक को तैयार हो जाती है, वह अक्सर इस बात से अनजान रहती है कि उसका यह बीमार प्यार असल में कितना विनाशकारी असर डाल रहा है। ऐसी माँ को अपने पापों के लिए क्षमा माँगनी और प्राप्त करनी चाहिए (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14; 1 यूहन्ना 1:9)। इसके लिए उसे अपने पापों को स्वीकार करना और उनका पश्चाताप करना होगा, और यीशु के अनमोल लहू पर भरोसा रखना होगा—जिन्होंने हमारे सारे पाप अपने ऊपर ले लिए और क्रूस पर, जिसे "श्राप का वृक्ष" कहा गया है (व्यवस्थाविवरण 21:23; गलातियों 3:13), हमारे उद्धार के लिए अपनी जान दे दी। इसके बाद उसे अपने बच्चे से परमेश्वर के सच्चे प्रेम के साथ प्रेम करना सीखना चाहिए और विश्वास के साथ, उसे अपना जीवन स्वयं जीने के लिए स्वतंत्र कर देना चाहिए। उसे अपने बच्चे के साथ अपने रिश्ते में स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करनी चाहिए। इसके अलावा, उसे अपने बच्चे के प्रति हमेशा सच बोलने वाला व्यक्ति होना चाहिए। इसे हासिल करने के लिए, उसे सबसे पहले स्वयं परमेश्वर के सामने सच्चाई भरा जीवन जीना होगा और सच्चाई के मार्ग पर चलना होगा। उसे झूठ और छल-कपट से घृणा करनी चाहिए। और उसे यह पहचानना चाहिए कि प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना, अपने आप में, उसके लिए एक बहुत बड़ा आशीष है (भजन संहिता 119:56, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। साथ ही, उसे अपने बच्चों के लिए आशीष की यह प्रार्थना करनी चाहिए: "प्रभु तुम्हें आशीष दे और तुम्हारी रक्षा करे" (गिनती 6:24, *द कंटेम्पररी बाइबल*)।

(5) अपने प्यारे छोटे बेटे, याकूब को इसहाक का आशीष दिलाने के लिए, परदे के पीछे से की गई अपनी युक्तियों के पाँचवें कदम के रूप में, रिबका ने अपने पहलौठे बेटे, एसाव के सबसे बेहतरीन वस्त्र लिए और याकूब को उन्हें पहना दिया।

उत्पत्ति 27:15 (*द कंटेम्पररी बाइबल*) में लिखा है: "तब रिबका ने अपने बड़े बेटे एसाव के सबसे बेहतरीन कपड़े लिए, जो घर में रखे हुए थे, और उन्हें अपने छोटे बेटे याकूब को पहना दिया।" याकूब इस बात को लेकर चिंतित था कि अगर उसके पिता, इसहाक, उसे छू लेंगे तो क्या होगा; वह जानता था कि उसका भाई एसाव एक रोएँदार शरीर वाला व्यक्ति था, जबकि उसकी अपनी त्वचा चिकनी थी (पद 11–12, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। उसी क्षण, उसकी माँ, रिबका ने अपने पहलौठे बेटे, एसाव के सबसे बेहतरीन वस्त्र निकाले—जिन्हें उसने घर के अंदर सहेजकर रखा हुआ था—और उन्हें अपने छोटे बेटे, याकूब को पहना दिया (पद 15, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। रेबेका ने अपने पहले बेटे एसाव के सबसे अच्छे कपड़े घर के अंदर क्यों संभालकर रखे थे? अगर वे सचमुच उसके सबसे अच्छे कपड़े थे, तो क्या एसाव उन्हें सहेजकर नहीं रखता और खुद उन्हें पहनकर खुश नहीं होता? ऐसे में, निश्चित रूप से एसाव को ही—न कि रेबेका को—उन कपड़ों को सावधानी से संभालकर रखना चाहिए था, है ना? क्या ऐसा हो सकता है कि रेबेका ने एसाव के सबसे अच्छे कपड़े घर के अंदर इसलिए संभालकर रखे थे, ताकि वह उन्हें अपने प्यारे छोटे बेटे, याकूब के लिए इस्तेमाल कर सके? और जब आखिरकार याकूब के लिए उन कपड़ों का इस्तेमाल करने का समय आया, तो क्या उसने बस एसाव के सबसे अच्छे कपड़े निकाले और अपने छोटे बेटे, याकूब को वे कपड़े पहना दिए? आखिर में, रेबेका ने उन बकरियों के बच्चों की खाल का इस्तेमाल किया जो याकूब लाया था, ताकि वह उसके हाथों और गर्दन के चिकने हिस्सों को ढक सके (पद 16, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। नतीजतन, जब याकूब ने बाद में एसाव के सबसे अच्छे कपड़े पहने, अपने पिता इसहाक के सामने गया, और उन्हें चूमने के लिए पास पहुँचा—जैसा कि इसहाक ने कहा था, "मेरे बेटे, पास आओ और मुझे चूमो"—तो इसहाक ने "उसके कपड़ों की महक सूँघी" और याकूब को इन शब्दों के साथ आशीर्वाद दिया: "मेरे बेटे की महक उस खेत की महक जैसी है जिसे प्रभु ने आशीर्वाद दिया है!" (पद 26–27, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। इस अंश को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि इसहाक—जिसकी आँखों की रोशनी बुढ़ापे के कारण कम हो गई थी, जिससे उसे साफ-साफ देखने में मुश्किल होती थी (पद 1)—ने जान-बूझकर याकूब से पास आने और उसे चूमने

के लिए कहा (पद 26)। इसका कारण शायद उसकी यह इच्छा थी कि वह कपड़ों की महक सूँघकर यह पक्का कर सके कि उसके सामने खड़ा व्यक्ति सचमुच उसका प्यारा पहला बेटा, एसाव ही है। इस बात का अंदाज़ा लगाते हुए, रेबेका ने ज़ाहिर तौर पर एसाव के सबसे अच्छे कपड़े लिए और अपने छोटे बेटे, याकूब को वे कपड़े पहना दिए। इस तरह, रेबेका ने बड़ी बारीकी से याकूब को अपने पहले बेटे, एसाव के रूप में तैयार किया, जिससे आखिरकार वह इसहाक का आशीर्वाद पाने में कामयाब हो सका। जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मेरे मन में यह सवाल उठता है कि क्या एक माँ की अपने बच्चे को केवल "सबसे बेहतरीन" (पद 15 देखें)—उस बच्चे के प्रति अपने प्रेम के कारण—देने की बिना शर्त इच्छा, सचमुच उस बच्चे के लिए *अंततः* सबसे बेहतरीन काम है। हालाँकि, जब एक माँ अपने बच्चे को सबसे बेहतरीन चीज़ें देने की कोशिश करती है, तो उसके पीछे उसका प्रेमपूर्ण हृदय और बच्चे की सफलता की चाह हो सकती है; लेकिन मेरा मानना है कि इसका परिणाम हमेशा उसकी उम्मीदों के अनुरूप नहीं होता। इसके विपरीत—और उन उम्मीदों के बिल्कुल उलट—मुझे लगता है कि जिस चीज़ को माता-पिता अपने बच्चे के लिए "सबसे बेहतरीन" मानते हैं, असल में वही चीज़ उस बच्चे के लिए सबसे बुरी साबित हो सकती है। लेकिन, हमारे स्वर्गीय पिता—क्योंकि वे हमसे सबसे ज़्यादा प्रेम करते हैं (यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:32) और हमें सबसे अच्छी तरह जानते हैं (भजन संहिता 139:1–4)—हमें वही देते हैं जो हमारे लिए सबसे बेहतरीन होता है; वे ऐसा अपने तय समय पर और अपने ही तरीके से करते हैं, और अपनी उस कृपा के द्वारा करते हैं जो हमारी ज़रूरत के समय हमारी सहायता करती है (इब्रानियों 4:16)। रोमियों 8:32 में लिखा है: "जिसने अपने स्वयं के पुत्र को भी नहीं छोड़ा, बल्कि हम सब के लिए उसे दे दिया—वह अपने पुत्र के साथ-साथ हमें बाकी सभी चीज़ें भी मुफ़्त में क्यों नहीं देगा?"

(6) परदे के पीछे से घटनाओं को इस तरह से व्यवस्थित करने की प्रक्रिया के हिस्से के तौर पर, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसके प्यारे छोटे बेटे, याकूब को इसहाक का आशीर्वाद मिले, रिबका ने एक अंतिम, छठा कदम उठाया: उसने वह स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जो उसके पति, इसहाक को पसंद था—ऐसा उसने अपने प्यारे छोटे बेटे, याकूब की खातिर किया—और उसे याकूब के हाथों में सौंप दिया।

निम्नलिखित अंश उत्पत्ति 27:14 और 17 (*The Bible for Modern People* से) से लिया गया है: "इसलिए याकूब बकरियों को अपनी माँ के पास ले आया, और उसकी माँ ने वह स्वादिष्ट भोजन तैयार किया जो उसके पति को पसंद था। ... उसने तैयार स्वादिष्ट भोजन और रोटी याकूब के हाथों में रख दी।" चूंकि उसके पिता, इसहाक को उस मांस से विशेष लगाव था जिसे एसाव शिकार करके लाता था (25:27), इसलिए उसने अपने प्यारे एसाव से कहा: "अपना धनुष उठाओ, शिकार करने के लिए खेतों में जाओ, और मेरे लिए वह स्वादिष्ट भोजन तैयार करो जो मुझे पसंद है। मैं उसे खाऊंगा, और मरने से पहले, मैं तुम्हें अपना अंतिम आशीर्वाद दूंगा" (27:3–4)। इन शब्दों को सुन लेने के बाद, रिबका ने—जब एसाव खेतों में शिकार कर रहा था (पद 5)—याकूब को इस तरह से मनाया कि उसने ठीक वैसा ही किया जैसा रिबका ने उसे निर्देश दिया था (पद 8); विशेष रूप से, उसने स्वयं वह स्वादिष्ट भोजन तैयार किया, उसे याकूब के हाथों में रखा, और उससे कहा कि वह उसे अपने पिता, इसहाक के पास ले जाए, ताकि वह उसे खा सके (पद 10, 17)। जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मेरे मन में यह सवाल उठा: इसहाक को पसंद आने वाला वह स्वादिष्ट भोजन, उसके दो बेटों में से किसने बेहतर ढंग से तैयार किया होगा—उसके बड़े बेटे, एसाव ने, या उसकी पत्नी, रिबका ने? मेरे अनुमान से, यह अत्यधिक संभव प्रतीत होता है कि रिबका ने इसहाक के लिए वह भोजन एसाव की तुलना में कहीं अधिक बेहतर ढंग से तैयार किया होगा। मुझे ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि रिबका को इसहाक के स्वाद की समझ एसाव की तुलना में कहीं अधिक बेहतर रही होगी; इसके अलावा, मेरा मानना है कि रिबका ने इसहाक को पसंद आने वाले स्वादिष्ट भोजन को तैयार करने और परोसने में एसाव की तुलना में कहीं अधिक समय बिताया था। जब याकूब अपनी माँ रिबका द्वारा तैयार किया गया भोजन लेकर आया और अपने पिता को पुकारा, तो इसहाक ने पूछा, "तुम कौन हो?" इसहाक ने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा? मैंने इसका कारण वचन 20 के पहले भाग में ढूँढ़ा: "मेरे बेटे, तुमने इसे इतनी जल्दी कैसे पकड़ लिया?" इस सवाल को देखते हुए, मेरा मानना है कि इसहाक के नज़रिए से, उसके बड़े बेटे, एसाव को शिकार के लिए खेतों में गए हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ था (वचन 5); फिर भी यहाँ याकूब था, जो एसाव का रूप धरकर कमरे में दाखिल हो रहा था। इसहाक ने निस्संदेह पहले भी कई मौकों पर एसाव द्वारा शिकार किए गए जानवरों से बने स्वादिष्ट व्यंजन खाए थे। इसका मतलब है कि इसहाक को शायद एक मोटा-मोटा अंदाज़ा था कि एसाव को आमतौर पर शिकार करने और ऐसा भोजन तैयार करने में कितना समय लगता था। इसलिए, चूँकि याकूब उस अपेक्षित समय-सीमा से कहीं पहले ही स्वादिष्ट व्यंजन लेकर आ गया था, तो क्या यह बात समझ में नहीं आती कि इसहाक ने पूछा हो, "मेरे बेटे, तुमने इसे इतनी जल्दी कैसे पकड़ लिया?"

(वचन 20)? अब, याकूब का जवाब देखिए: "क्योंकि यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने मेरी मदद की, इसलिए मैं जल्दी ही शिकार ढूँढ़ पाया" (वचन 20)। कैसे—वह ऐसा झूठ कैसे बोल सका, यहाँ तक कि उसने "यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर" के पवित्र नाम का भी सहारा ले लिया? इसके अलावा, असल में तो उसकी माँ रिबका ने उसकी मदद की थी, न कि "यहोवा, उसके पिता के परमेश्वर" ने; है ना? याकूब अपने पिता से इतनी हद तक झूठ बोलने की हिम्मत कैसे जुटा पाया? आखिरकार, उसके पिता इसहाक याकूब के धोखे में आ गए और उन्होंने उसे अपना आशीर्वाद दे दिया (वचन 27–30)। जब मैं इस अंश पर मनन करता हूँ, तो मैं सोचता हूँ कि रिबका—जो यह पक्का करने पर तुली हुई थी कि उसके पसंदीदा छोटे बेटे, याकूब को उसके पति, इसहाक से आशीर्वाद मिले—उसने इसहाक को धोखा देने के लिए हर मुमकिन तरीका अपनाया। ऐसा करते हुए, उसने याकूब को भी एक धोखेबाज़ बना दिया, और आखिरकार वह याकूब के लिए इसहाक का आशीर्वाद पाने में कामयाब हो गई, ठीक वैसे ही जैसा उसने चाहा था। इसके अलावा, मेरा मानना है कि रिबका के तरीके सही नहीं थे; मैं निश्चित रूप से उन्हें ऐसे तरीके नहीं मानता जो परमेश्वर को प्रसन्न करें। फिर भी, मेरा मानना है कि परमेश्वर ने अपनी संप्रभु इच्छा पूरी की—ठीक वैसे ही जैसा उसने रिबका से वादा किया था: "...बड़ा बेटे छोटे बेटे की सेवा करेगा" (उत्पत्ति 25:23)। मुझे पूरी तरह समझ नहीं आता कि एक ऐसा परमेश्वर जो इतना सच्चा और वफ़ादार है, वह अपनी संप्रभु इच्छा को पूरा करने के लिए रेबेका के धोखेबाज़ और बेईमान तरीकों का भी इस्तेमाल कैसे कर सकता है। एकमात्र सच जो मैं जानता हूँ और जिस पर मैं मज़बूती से कायम हूँ, वह 2 तीमुथियुस 2:13 में मिलता है: "यदि हम अविश्वासी भी हों, तो भी वह विश्वासयोग्य बना रहता है; क्योंकि वह अपने आप से मुकर नहीं सकता।" परमेश्वर ने अपनी संप्रभु इच्छा को पूरा करने के लिए इसहाक—वह नासमझ पिता जिसने अपने पहलौठे बेटे, एसाव का पक्ष लिया—और रेबेका—वह बेईमान माँ जिसने अपने छोटे बेटे, याकूब का पक्ष लिया—दोनों के द्वारा काम किया: कि बड़ा भाई, एसाव, छोटे भाई, याकूब की सेवा करेगा। जब मैं इस सच्चे और वफ़ादार परमेश्वर के बारे में सोचता हूँ—जो ऐसे पक्षपाती माता-पिता का इस्तेमाल करके भी अपनी संप्रभु इच्छा को आगे बढ़ाता है—तो मुझे भजन 393, "तेरी वफ़ादारी महान है" (Great Is Thy Faithfulness) के पहले पद के बोल याद आते हैं: "तेरी वफ़ादारी महान है, हे परमेश्वर मेरे पिता; तुझमें बदलने की कोई छाया नहीं है। तू बदलता नहीं, तेरी

करुणाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं; जैसा तू पहले था, वैसा ही तू हमेशा रहेगा।" "जिसने वादा किया है, वह वफ़ादार है" (इब्रानियों 10:23a, मॉडर्न बाइबल)।

"सूरज की तरह जो हर दिन उगता है, हे तू कितना वफ़ादार है, प्यारे प्रभु, तू कितना वफ़ादार है
उस बारिश की तरह जो तू लाता है, और हर उस साँस की तरह जो मैं लेता हूँ
तू कितना वफ़ादार है, प्रभु। उस गुलाब की तरह जो हर वसंत में खिल उठता है
हे तू कितना वफ़ादार है, प्यारे प्रभु, तू कितना वफ़ादार है
उस जीवन की तरह जो तू देता है, मेरे दिल की हर धड़कन को
तू कितना वफ़ादार है, प्रभु। मैं एक क्रूस देखता हूँ, और वह कीमत जो तुझे चुकानी पड़ी
मैं उस लहू को देखता हूँ, जो मेरे पापों को धो डालता है
तूफ़ान के बीच, हवा और लहरों के पार भी
तू फिर भी वफ़ादार रहेगा, हे तू फिर भी वफ़ादार रहेगा
जब तारे चमकने से इनकार कर देंगे, और समय समाप्त हो जाएगा
तू फिर भी वफ़ादार रहेगा, हे तू फिर भी वफ़ादार रहेगा। हे प्रभु
तेरी वफ़ादारी महान है। प्रभु, मेरे प्रति।"

[सुसमाचार भजन, "तू कितना वफ़ादार है"]

हमारे बच्चों के और अधिक फलने-फूलने के लिए...

"उसे बढ़ना चाहिए, पर मुझे घटना चाहिए।" (यूहन्ना 3:30, *द बाइबल फॉर मॉडर्न मैन*)

पवित्र आत्मा ने हाल ही में मेरी पत्नी और मुझे एक अनमोल सबक सिखाया है, वह यह है: "बच्चों को और अधिक फलना-फूलना चाहिए, जबकि माता-पिता को और अधिक घटना चाहिए।" पवित्र आत्मा द्वारा हमें यह सबक सिखाने का आधार ठीक यूहन्ना 3:30 के शब्दों में निहित है। जिस तरह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोषणा की थी कि यीशु को बढ़ना चाहिए, जबकि उसे स्वयं घटना चाहिए, उसी तरह पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के इस वचन को मेरे स्मरण में लाया और मुझे इस पर मनन करने के लिए प्रेरित किया, जिससे मेरी पत्नी और मेरे बीच एक बातचीत शुरू हुई। उस बातचीत का मूल-तत्व यह था: अपने प्यारे बच्चों—डिलन, येरी और यीउन—को पालने वाले माता-पिता के रूप में, उनके जीवन में हमारी भूमिका धीरे-धीरे कम होती जानी चाहिए। इसे और अधिक ठोस रूप से लागू करने का अर्थ है कि हमें अपने प्यारे बच्चों के जीवन में *कम* हस्तक्षेप करना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें डिलन, येरी और यीउन को अपने विचारों से जूझने, प्रार्थना करने और परमेश्वर के सामने अपने स्वयं के निर्णय लेने की अनुमति देनी चाहिए—या उन्हें "छोड़ देना" चाहिए। इसका अर्थ है कि, जब तक वे हमसे सलाह न मांगें या हमारी सहायता न चाहें, तब तक हमारी सच्ची भूमिका उन पर विश्वास की नज़रों से नज़र रखना और पृष्ठभूमि से उनके लिए प्रार्थना करना है—न कि उनके पास जाकर यह हुक्म चलाना कि उन्हें अपना जीवन कैसे जीना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें विश्वास में चुपचाप उन पर नज़र रखनी चाहिए, यह भरोसा करते हुए कि वे सोचेंगे, जूझेंगे और अपने स्वयं के निर्णय लेंगे। हालाँकि, यदि—परमेश्वर पर भरोसा करने के बावजूद—हम अपने बच्चों पर भरोसा करने में विफल रहते हैं, और इसके बजाय, अपने स्वयं के कमज़ोर विश्वास के कारण, लगातार चिंता, फिक्र और आशंका के साथ उन पर ध्यान केंद्रित करते रहते हैं, तो हम अपने बड़े हो चुके बच्चों

के जीवन में बार-बार हस्तक्षेप करने की अपनी प्रवृत्ति पर कभी काबू नहीं पा पाएंगे। यदि ऐसा होता है, तो हम पाएंगे कि हम लगातार उनसे संपर्क कर रहे हैं और उन्हें परेशान कर रहे हैं; ऐसा करके, हम अपनी ही चिंताओं, फिक्रों और भयों को उन पर थोप देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे भी हमारे—अपने माता-पिता के—बारे में ही सोचते रहने और चिंतित रहने लगते हैं। माता-पिता और बच्चे के बीच इस तरह की गतिशीलता एक स्वस्थ रिश्ते का निर्माण नहीं करती है। इसके विपरीत, इस प्रकार का माता-पिता-बच्चे का रिश्ता केवल बच्चे को नुकसान पहुँचाने का काम करता है; यह उनके विकास और उन्नति में बिल्कुल भी कोई लाभ नहीं पहुँचाता है। इसलिए, मेरी पत्नी और मैंने अपने बच्चों की परवरिश में जॉन 3:30 के वचनों को लागू किया है—जिन्हें पवित्र आत्मा ने हमें याद दिलाया—और हमने खुद को "घटने" (यानी कम प्रमुख होने) के सिद्धांत के प्रति समर्पित कर दिया है। ऐसा करते हुए, इस भरोसे के साथ कि प्रभु हमारे बच्चों से कहीं ज़्यादा गहरा प्रेम करते हैं जितना हम कभी कर सकते हैं, हमें विश्वास है कि वे स्वयं व्यक्तिगत रूप से उनका पालन-पोषण करेंगे और उन्हें "बढ़ाएँगे" (यानी उन्हें फलने-फूलने और महान बनने में मदद करेंगे)।

“हे परमेश्वर, हमारे परिवार को भरपूर फ़सल दे।”

[रूत 1:1–22]

मेरा मानना है कि प्रार्थना के जिन विषयों को हमें अपनी पूरी ज़िंदगी—अपनी मृत्यु के अंतिम क्षण तक—परमेश्वर के सामने रखना चाहिए, उनमें से एक हमारा परिवार है; यह एक ऐसा अनुग्रह का उपहार है जो उसने हमें दिया है। हममें से हर किसी के पास निश्चित रूप से कुछ खास प्रार्थनाएँ होती हैं, जिन्हें हम अपने परिवारों की ओर से परमेश्वर के सामने रखते हैं। बेशक, हम शायद अपने जीवनसाथियों के लिए भी परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं; फिर भी, हमारे लिए यह लगभग असंभव है कि हम हर दिन, विशेष रूप से अपने बच्चों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना *न* करें। हालाँकि इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन अगर मैं इसे एक ही वाक्य में कहूँ, तो वह बस इतना है: माता-पिता का हृदय अपने बच्चों के लिए प्रेम से भरा होता है। इसलिए, अपने प्यारे बच्चों के लिए, हम परमेश्वर पिता से प्रार्थना करते हैं—चाहे ज़ोर से बोलकर या बस अपने मन ही मन—हर दिन, और हर उस पल जब भी वे हमारे खयाल में आते हैं। प्रार्थना के इन अनेक विषयों में से, आज मुझे एक नया विषय मिला है, जो रूत अध्याय 1 में पाए जाने वाले संदेश पर आधारित है। वह प्रार्थना का विषय यह है: “हे परमेश्वर, हमारे परिवार को भरपूर फ़सल दे।”

गुरुवार की सुबह, आज के पाठ—रूत 1:1–22—पर मनन करने के बाद, मैंने एक छोटा सा भक्ति-लेख लिखा और उसे दूसरों के साथ साझा किया। फिर, शुक्रवार की दोपहर को जब मैं उस अंश पर दोबारा मनन कर रहा था, तो मेरा ध्यान पद 1 में आए शब्द “अकाल” और पद 6 में आए शब्द “भरपूर फ़सल” (*मॉडर्न मैन बाइबल* के अनुसार) की ओर गया। जब मैंने रूत अध्याय 1 के पूरे प्रसंग पर एक बार फिर विचार किया, तो मैंने पाया कि हालाँकि यहूदा देश में शुरू में “अकाल” (पद 1) पड़ा था, लेकिन लगभग दस साल

बीत जाने के बाद (पद 4) ही परमेश्वर ने अपने लोगों को आशीष दी और उसी देश में "भरपूर फ़सल" (पद 6, *मॉडर्न मैन बाइबल*) दी। फिर मैंने इस संदेश को अपने ही परिवार पर लागू करने की कोशिश की। ऐसा करते समय, मेरे मन में यह विचार आया कि हममें से हर किसी के परिवार में भी, "अकाल" और "भरपूर फ़सल"—दोनों तरह के दौर आ सकते हैं। उदाहरण के लिए, Naver Dictionary "अकाल" (famine) शब्द को इस तरह परिभाषित करती है: "एक ऐसा वर्ष जिसमें फसलें पिछले वर्षों की तरह अच्छी तरह से नहीं उग पातीं, जिसके परिणामस्वरूप भुखमरी फैलती है।" फिर भी, जब हम अपने ही घरों पर विचार करते हैं, तो मेरा मानना है कि "घरेलू अकाल" (household famine) का पड़ना पूरी तरह से संभव है—एक ऐसा समय जब बच्चों को पालने-पोसने की "फसल" उस प्रचुरता से कम रह जाती है जिसका अनुभव हमने तब किया था जब वे छोटे थे। इसके अलावा, भौतिक प्रचुरता के बीच भी घरेलू अकाल मौजूद हो सकता है; भले ही मेज पर ढेर सारा भोजन रखा हो, लेकिन बच्चे "प्रेम की भूख" से पीड़ित हो सकते हैं, यदि उन्हें ईश्वर का प्रेम—जो उनके माता-पिता के माध्यम से उन तक पहुँचता है—सच्चे और सार्थक तरीके से प्राप्त न हो। मेरा मानना है कि इसी स्थिति को हम आम तौर पर "स्नेह-वंचन" (affection deprivation) कहते हैं। Naver Dictionary इस स्थिति को इस प्रकार परिभाषित करती है: "बचपन के दौरान माता-पिता से पर्याप्त स्नेह न मिलने के कारण एक अस्थिर भावनात्मक स्वभाव का होना, और अपने आस-पास के लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में असमर्थ होना।" हालाँकि, हमें जिस चीज़ की अभिलाषा करनी चाहिए, वह है "घरेलू फसल" (household harvest)—घर के भीतर प्रचुरता का समय। उदाहरण के लिए, Naver Dictionary "फसल वर्ष" (harvest year) को इस प्रकार परिभाषित करती है: "एक ऐसा वर्ष जिसमें फसलें असाधारण रूप से अच्छी तरह उगती और पकती हैं, जिससे औसत से अधिक पैदावार होती है।" इसी भावना के साथ, जिस "घरेलू फसल" की हमें अभिलाषा करनी चाहिए—और जिसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए—वह एक ऐसा समय है जब हमारे बच्चों की "फसल" खूब फले-फूले; एक ऐसा समय जब हमारे बच्चे प्रभु के सानिध्य में, शारीरिक और आध्यात्मिक—दोनों ही रूपों में—मजबूती से विकसित हों, और ऐसी प्रचुर तथा अनमोल फसल (फल) उत्पन्न करें जो हर तरह से ईश्वर की महिमा करे। इसके अलावा, एक सच्ची "घरेलू फसल" को एक ऐसे घर के रूप में वर्णित किया जा सकता है जो साल-दर-साल, ईश्वर के प्रेम की निरंतर बढ़ती हुई प्रचुर फसल उत्पन्न करता है। क्या आप भी ऐसी ही किसी "घरेलू फसल" की अभिलाषा नहीं करते? इसलिए,

मैं प्रस्ताव करता हूँ कि आज के लिए हम प्रार्थना का यह विषय अपनाएँ: "हे ईश्वर, हमारे घर को प्रचुरता की फसल प्रदान कर।" इसके अतिरिक्त, जब हम आज के धर्मग्रंथ के अंश—रूत (Ruth) अध्याय 1—पर मनन करें, और नाओमी नामक एक स्त्री के जीवन में आए अकाल तथा फसल (समृद्धि) के विषयों पर विचार करें, तो आइए हम उस कृपा और आध्यात्मिक शिक्षाओं को प्राप्त करने का प्रयास करें, जिन्हें ईश्वर हममें से प्रत्येक को प्रदान करना चाहते हैं। विशेष रूप से, मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब हम इस बात पर मनन करें कि कैसे परमेश्वर ने एक परिवार के अकाल के समय को बहुतायत के समय में बदल दिया, तो हम—आप और मैं—अपने परिवारों के लिए परमेश्वर के सामने पूरी लगन से विनती करने के लिए प्रेरित हों, और ऐसा करते समय हम उस अनुग्रह और उन सबकों से शक्ति पाएँ जो वह हमें प्रदान करता है।

सबसे पहले, मैं उस अकाल पर मनन करना चाहूँगा जो नाओमी नाम की एक महिला के परिवार पर आया था, जिसका ज़िक्र आज के धर्मग्रंथ के अंश में मिलता है।

आज का पाठ रूत 1:1 से लिया गया है: “उन दिनों में जब न्यायी शासन करते थे, देश में अकाल पड़ गया। इसलिए यहूदा के बेतलेहेम का एक व्यक्ति, अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ, कुछ समय के लिए मोआब देश में रहने चला गया” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “उस युग में जब न्यायी राष्ट्र पर शासन करते थे, देश में अकाल पड़ गया। उस समय, एलीमेलेक नाम का एक व्यक्ति अपनी पत्नी नाओमी, और अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर, अपना गृहनगर छोड़कर मोआब देश में रहने चला गया। वे सभी यहूदा के बेतलेहेम के मूल निवासी थे और एफ़्रात गोत्र से संबंध रखते थे”]। इस अंश को देखने पर, यह कहता है कि “देश में अकाल पड़ गया” (पद 1, समकालीन कोरियाई बाइबल); पद 7 के अनुसार, “वह देश” विशेष रूप से “यहूदा देश” को संदर्भित करता है। इसके अलावा, जिस समय यह अकाल यहूदा देश पर आया था, वह ठीक वही समय था “जब न्यायी शासन करते थे” (पद 1)। संदर्भ के लिए, “उन दिनों में जब न्यायी शासन करते थे” (पद 1), “इस्राएल में कोई राजा नहीं था; हर कोई वही करता था जो उसे सही लगता था” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “चूँकि उस समय इस्राएल में कोई राजा नहीं था, इसलिए हर कोई वही करता था जो उसे अपनी नज़रों में सही लगता था”] (न्यायियों 17:6; 21:25)। “उस समय,” “यहूदा के बेतलेहेम

के एक व्यक्ति" (रूत 1:1) के संबंध में, *समकालीन कोरियाई बाइबल* कहती है कि "एलीमेलेक नाम का एक व्यक्ति अपनी पत्नी नाओमी, और अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर, अपना गृहनगर छोड़कर मोआब देश में रहने चला गया" (पद 1) (नोट: *संशोधित कोरियाई संस्करण* इस कथन को पद 2 में रखता है)। जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मुझे बाइबल की उन कहानियों की याद आई जहाँ "अकाल" ने लोगों को पलायन करने पर मजबूर कर दिया था। इसका एक प्रमुख उदाहरण 'जेनेसिस' (Genesis) की किताब में मिलता है: याकूब और उसके वंशजों की कहानी, जिन्हें कनान देश में आए भीषण अकाल का सामना करना पड़ा (Gen. 41:56–57; 43:1), और अंततः वे मिस्र चले गए (अध्याय 46)। इसी तरह, आज के पाठ—'रूथ' (Ruth) अध्याय 1—में हम देखते हैं कि यहूदा देश में आए अकाल के कारण, एलीमेलेक अपनी पत्नी नाओमी और अपने दो बेटों, महलोन और चिलियोन को लेकर अपना वतन छोड़कर मोआब देश चले गए, और वहीं बस गए। ऐसा लगता है कि इस परिवार के यहूदा में अपना वतन छोड़कर मोआब जैसे परदेस में जाने का एक कारण अपनी भारी संपत्ति को बचाना भी था। हम 'रूथ' 1:21 को देखकर यह अनुमान लगा सकते हैं: "मैं तो भरी-पूरी निकली थी, पर यहोवा ने मुझे खाली हाथ लौटा दिया है..." [(समकालीन अंग्रेज़ी संस्करण) "जब मैंने यह जगह छोड़ी थी, तो मेरे पास बहुत कुछ था, लेकिन यहोवा ने मुझे खाली हाथ लौटा दिया है"]। तो, एलीमेलेक के परिवार का क्या हुआ—जो यहूदा में आए अकाल से मजबूर होकर, अपना वतन छोड़कर मोआब देश में जाकर बस गए थे? यह अंश 'रूथ' 1:3–5 से लिया गया है: "नाओमी का पति एलीमेलेक मर गया, और वह अपने दो बेटों के साथ रह गई। उन्होंने मोआब की स्त्रियों से विवाह कर लिया; एक का नाम ओरपा था और दूसरी का रूथ। वहाँ लगभग दस साल रहने के बाद, महलोन और चिलियोन भी मर गए, और वह स्त्री अपने दोनों बेटों और पति के बिना अकेली रह गई" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "जब वे वहाँ रह रहे थे, तो एलीमेलेक की मृत्यु हो गई, और वह अपने पीछे केवल अपनी पत्नी नाओमी और अपने दो बेटों को छोड़ गया। दोनों बेटों ने मोआबी स्त्रियों से विवाह किया—एक का नाम ओरपा और दूसरी का रूथ था। उस देश में लगभग दस साल रहने के बाद, महलोन और चिलियोन भी मर गए, और नाओमी बिल्कुल अकेली रह गई, क्योंकि उसने अपने पति और अपने दोनों बच्चों को खो दिया था"]। अंत में, मोआब देश में लगभग दस साल रहने के बाद, केवल एलीमेlेक ही नहीं मरा; उसके दो बेटे, महलोन और किलियोन भी गुज़र गए, जिससे नाओमी बिल्कुल अकेली रह गई—अपने पति और अपने दोनों बच्चों, दोनों से ही वंचित। मैंने इस अनुभव को नाओमी के लिए "परिवार के भीतर का

अकाल" माना। दूसरे शब्दों में, उसके पारिवारिक जीवन में इस "अकाल" का मतलब केवल पैसे या संपत्ति का नुकसान नहीं था, बल्कि परिवार के तीन प्यारे सदस्यों का नुकसान था।

मेरा मानना है कि हममें से हर किसी का परिवार भी ऐसे "पारिवारिक अकाल" का अनुभव कर सकता है। अगर मैं इस पारिवारिक अकाल को एक शब्द में परिभाषित करूँ, तो वह बस होगा: "नुकसान।" बेशक, नाओमी के मामले में—जिसका ज़िक्र आज के पाठ, रूत की किताब के पहले अध्याय में है—उसे कई नुकसान उठाने पड़े: उसने अपने पति, अपने दो बेटों और अपनी सारी भौतिक संपत्ति खो दी। जब मैं इस सच्चाई पर मनन कर रहा था, तो मेरे विचार बाइबल के एक और पात्र, अय्यूब की ओर मुड़ गए, जिसका ज़िक्र अय्यूब की किताब में मिलता है। उसने केवल अपनी भौतिक संपत्ति ही नहीं खोई (अय्यूब 1:12–17); उसने अपने दसों बच्चों को भी खो दिया (पद 18)। इसके अलावा, अय्यूब ने अपना स्वास्थ्य भी खो दिया, और "पैर के तलवों से लेकर सिर की चोटी तक भयानक फोड़ों" से पीड़ित हो गया (अय्यूब 2:7); नतीजतन, वह "राख के ढेर पर बैठ गया और खुद को खुरचने के लिए मिट्टी के टूटे हुए बर्तन का एक टुकड़ा उठा लिया" (पद 8)। आज हमारे अपने घर की क्या स्थिति है? क्या हम भी, शायद, इस समय किसी नुकसान का सामना कर रहे हैं—ठीक नाओमी या अय्यूब की तरह? अगर ऐसा है, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उस घर में अकाल के मौसम को हमारे अपने घर के लिए समृद्धि के मौसम में बदल दे।

“हे प्रभु, हमारे पूरे परिवार और हमारे सभी रिश्तेदारों को एक ऐसे परिवार के रूप में स्थापित कर, जो प्रेम से भरा हो।”

“इसी कारण से, बाइबल कहती है: ‘एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिल जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे।’ इसमें एक गहरा अर्थ छिपा है। मैं यहाँ मसीह और कलीसिया (चर्च) के बीच के रिश्ते के बारे में बात कर रहा हूँ। इसलिए, तुममें से हर कोई अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करे जैसे वह स्वयं से करता है, और पत्नी अपने पति का आदर करे” (इफिसियों 5:31–33)।

पिछले रविवार को, हमने सियुंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च की स्थापना की 42वीं वर्षगांठ मनाने के लिए परमेश्वर को एक धन्यवाद-सेवा (Thanksgiving Service) अर्पित की; इसी चर्च में मैं वरिष्ठ पादरी के रूप में सेवा करता हूँ। मत्ती 16:18 में प्रभु द्वारा दिए गए वादे को केंद्र में रखते हुए, और “प्रभु द्वारा स्थापित सियुंगरी प्रेस्बिटेरियन चर्च” विषय के अंतर्गत, हमें प्रार्थना के पाँच विशेष विषय प्राप्त हुए। मैंने प्रार्थना के इन पाँचों विषयों को अपने पूरे परिवार और रिश्तेदारों पर लागू किया, और कल—मंगलवार—को हमारी ऑनलाइन पारिवारिक प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने उन पर परमेश्वर के वचन की घोषणा की: “हे प्रभु, हमारे पूरे परिवार और हमारे सभी रिश्तेदारों को (1) कृतज्ञता से भरे परिवार के रूप में, (2) एक दृढ़ परिवार के रूप में, (3) एक विजयी परिवार के रूप में, (4) एक ऐसे परिवार के रूप में जो तेरे राज्य के लिए सेवकों को तैयार करता है, और (5) एक ऐसे परिवार के रूप में जो परमेश्वर के राज्य का विस्तार करता है—स्थापित कर।” मेरी यह हार्दिक प्रार्थना है कि हमारा पूरा

परिवार और हमारे सभी रिश्तेदार सचमुच यह जान पाएँ—और इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें—कि जहाँ परिवार के भीतर पाप बढ़ता है, वहाँ परमेश्वर का सर्व-पर्याप्त अनुग्रह (2 कुरिन्थियों 12:9) उससे भी कहीं अधिक बढ़ता है (रोमियों 5:20) (कुलुस्सियों 1:6)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे पूरे परिवार और हमारे सभी रिश्तेदारों को उस 'चट्टान'—अर्थात् यीशु मसीह—पर दृढ़ता से स्थापित करे (मत्ती 16:18; 1 कुरिन्थियों 10:4)। हम यीशु मसीह में गहरी जड़ें जमाएँ, अपने जीवन की नींव उसी पर रखें, और विश्वास में वैसे ही दृढ़ता से खड़े रहें जैसा हमें सिखाया गया है (कुलुस्सियों 2:7)। परमेश्वर के वचन को अमल में लाकर—यानी, उसका पालन करके (मत्ती 7:24-25)—हमारा पूरा परिवार और हमारे सभी रिश्तेदार अडिग और स्थिर रहें; चाहे हमारे घर-परिवार पर कैसी भी परीक्षाएँ, धोखे, विपत्तियाँ या कठिनाइयों का तूफ़ान क्यों न आ जाए, और हम हमेशा पूरे मन से प्रभु के कार्य में समर्पित रहें (1 कुरिन्थियों 15:58)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे पूरे परिवार और सभी रिश्तेदारों में जीत का पक्का विश्वास (पद 37) हो, जो त्रिएक परमेश्वर के प्रेम के भरोसे पर आधारित हो (रोमियों 8:35-39)। इसके अलावा, 1 कुरिन्थियों 10:13 के वादे पर भरोसा रखते हुए—कि क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, इसलिए वह हमें हमारी सहन-शक्ति से ज़्यादा परीक्षा में नहीं पड़ने देगा, बल्कि जब हम परीक्षा में होंगे, तो उससे निकलने का एक रास्ता भी देगा ताकि हम उसे सह सकें—हम अपने विश्वास से भरे जीवन की लड़ाइयों के बीच, अपने आत्मिक युद्ध में विजयी होकर निकलें। इस समय में, जब आत्माओं के उद्धार के लिए आत्मिक फसल बहुत ज़्यादा है—यानी "फसल"—लेकिन उस उद्धार के लिए काम करने वाले प्रचारक—यानी "फसल काटने वाले"—बहुत कम हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मेरे पूरे परिवार और रिश्तेदारों में से एक ऐसा सेवक खड़ा करे, जिसके पास मसीह-केंद्रित सपना हो (मत्ती 9:37-38)। इस प्रकार, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु उस सेवक को अलग-अलग जगहों पर भेजे, और हमारे पूरे परिवार तथा सभी रिश्तेदारों का उपयोग परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए एक साधन के रूप में किया जाए। मैंने इन पाँच प्रार्थना-निवेदनों में एक और बात जोड़ी और इसे अपने पूरे परिवार और दूर के रिश्तेदारों पर लागू किया: "हे प्रभु, कृपया हमारे पूरे परिवार और दूर के रिश्तेदारों को प्रेम का एक परिवार बना दे।"

आज, इस छठे प्रार्थना-निवेदन पर ध्यान केंद्रित करते हुए—"हे प्रभु, कृपया हमारे पूरे परिवार और दूर के रिश्तेदारों को प्रेम का एक परिवार बना दे"—मैंने अपने विचारों को सात बिंदुओं में सारांशित किया है; ये विचार

उन दो लेखों से लिए गए हैं जो मैंने रविवार दोपहर और सोमवार सुबह परिवार के विषय पर लिखे थे, साथ ही आज के शास्त्र-वचन, इफिसियों 5:31–33 से भी लिए गए हैं:

पहला, परिवार सचमुच बहुत महत्वपूर्ण है।

हमारे बड़े परिवार और रिश्तेदारों के दायरे के भीतर का हर एक घर सचमुच बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभु हमारे हर एक परिवार से प्रेम करता है और उन्हें बहुत अधिक महत्व देता है। इसके अलावा—हमारे हर घर के स्वामी के तौर पर—प्रभु हर परिवार की आत्मिक सेहत को बहुत ज़्यादा अहमियत देते हैं (3 यूहन्ना 1:2)। इसलिए, हमें भी—एक पूरे परिवार और रिश्तेदारों के समूह के तौर पर—हर अलग-अलग घर को बहुत ज़्यादा अहमियत देनी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु देते हैं; इसी तरह, हमें हर परिवार की आत्मिक सेहत को सबसे पहले रखना चाहिए।

दूसरा, पति की आत्मिक सेहत—जो घर का मुखिया होता है—सचमुच बहुत ज़रूरी है।

पति की आत्मिक सेहत—जो हमारे बड़े परिवार के दायरे में हर अलग-अलग घर का मुखिया होता है—सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। बेशक, पत्नी की आत्मिक सेहत भी बहुत ज़्यादा ज़रूरी है, सिर्फ़ पति की ही नहीं। लेकिन, अगर पति खुद आत्मिक तौर पर सेहतमंद नहीं है, तो वह परमेश्वर के वचन के ज़रिए अपनी पत्नी का सही तरीके से पालन-पोषण कैसे कर सकता है? (इफिसियों 5:29)। एक समझदार और सयानी पत्नी अपने पति की आत्मिक सेहत के लिए प्रार्थना करती है और त्याग की भावना से उसका साथ देती है। इस तरह, पति को—घर के मुखिया के तौर पर—आत्मिक तौर पर सेहतमंद होना चाहिए, ताकि वह न सिर्फ़ अपनी प्यारी पत्नी का, बल्कि अपने प्यारे बच्चों का भी पालन-पोषण प्रभु के निर्देशों और अनुशासन के मुताबिक कर सके (इफिसियों 6:4)। जब ऐसा होगा, तो हमारा पूरा परिवार और रिश्तेदारों का दायरा आत्मिक सेहत पा सकेगा। तीसरा, पति की आत्मिक समझदारी और अगुवाई—घर के मुखिया के तौर पर—सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

एक आत्मिक तौर पर सेहतमंद पति अपनी प्यारी पत्नी का पालन-पोषण परमेश्वर के वचन के ज़रिए पूरी वफ़ादारी से करता है, ताकि उसकी आत्मिक भलाई हो सके। इस प्रक्रिया में, वह खुद सबसे पहले परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए ज़िंदगी जीता है। चाहे उसे घर के बाहर परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए ज़िंदगी जीने के लिए दूसरों से कितनी भी पहचान और तारीफ़ क्यों न मिले, अगर वह अपने ही घर में उस तरह से ज़िंदगी नहीं जी पाता, तो इसे सचमुच परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए वफ़ादारी भरी ज़िंदगी नहीं माना जा सकता। एक आत्मिक तौर पर सयाना पति परमेश्वर के वचन का पालन करने का उदाहरण पेश करके—यह दिखाकर कि परमेश्वर के वचन का पालन करने का क्या मतलब है—अपनी पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण करता है। पति की तरफ़ से यह सयानी और आज्ञाकारी अगुवाई बेहद ज़रूरी है।

चौथा, एक आत्मिक तौर पर सेहतमंद और सयाना पति अपनी पत्नी के लिए अपने प्यार को सबसे पहले रखता है।

शास्त्रों के अनुसार, एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करता है, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए स्वयं को समर्पित कर दिया (इफिसियों 5:23)। अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करके, जैसे वह स्वयं से करता है (पद 28, 33), वह वास्तव में स्वयं से ही प्रेम कर रहा होता है (पद 28)। ऐसा आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति—जो अपनी पत्नी से इस रीति से प्रेम करता है—सक्रिय रूप से किसी भी तीसरे पक्ष को अपनी पत्नी के प्रति अपने प्रेम में दखल देने या बाधा डालने से रोकता है। यहाँ "तीसरे पक्ष" से तात्पर्य बच्चों, माता-पिता, भाई-बहनों, या यहाँ तक कि मित्रों से है। इसके विपरीत, एक आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ और अपरिपक्व पति वैवाहिक संबंध को प्राथमिकता देने में असफल रहता है और, इसके अतिरिक्त, तीसरे पक्षों को उस संबंध में दखल देने और उसे बाधित करने की अनुमति दे देता है। परिणामस्वरूप, वह युगल आपसी संघर्ष, मनमुटाव और कलह में उलझ जाता है। यह उस प्रकार का वैवाहिक संबंध या पति-पत्नी का प्रेम नहीं है, जिसकी परमेश्वर अभिलाषा करता है।

पाँचवीं बात, एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति स्पष्ट रूप से स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करता है।

आज का धर्मग्रंथ अंश, इफिसियों 5:31 (*कंटेम्पररी इंग्लिश वर्शन* से), कहता है: “इसी कारण से, बाइबल कहती है: ‘एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे।’” क्योंकि एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति अपनी पत्नी से जुड़ने के लिए अपने माता-पिता को छोड़ चुका होता है—और इस प्रकार एक तन बन जाता है—वह बुद्धिमानी और प्रभावी ढंग से किसी को भी—चाहे वे उसके बच्चे हों, उसके ससुराल वाले हों, उसके भाई-बहन हों, या उसके दोस्त हों—अपने वैवाहिक रिश्ते में दखल देने या हस्तक्षेप करने से रोकता है। दूसरे शब्दों में, क्योंकि वह अपनी शादी को प्राथमिकता देता है, वह दूसरों के साथ स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करता है ताकि कोई भी उसकी पत्नी के साथ उसके रिश्ते में दखल न दे सके और वैवाहिक कलह पैदा न कर सके। इसके विपरीत, एक आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ और अपरिपक्व पति स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करने में विफल रहता है; परिणामस्वरूप, वह आसानी से दूसरों के प्रभाव में आ जाता है, जिससे अक्सर उसकी शादी में कलह पैदा होती है। यह विशेष रूप से उस पति के लिए सच है जो अपने माता-पिता—विशेषकर अपनी माँ—से अत्यधिक प्रभावित होता है; वह अक्सर अपनी माँ और अपनी पत्नी के बीच कलह का मुख्य कारण बन जाता है। कई मामलों में, पति—जिसे अपनी पत्नी और अपनी माँ के बीच शांतिदूत होना चाहिए—इसके बजाय स्थिति को और बिगाड़ देता है, जिससे रिश्ता और भी खराब हो जाता है। इसका मूल कारण उसकी अपनी माँ के साथ उसका सह-निर्भर (codependent) रिश्ता है, जिस पर वह अत्यधिक निर्भर रहता है। परिणामस्वरूप, क्योंकि वह अपनी माँ के साथ स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करने में विफल रहता है, वह अपनी पत्नी के प्रति अपने प्रेम को प्राथमिकता देने में असमर्थ रहता है; इसके बजाय, वह अक्सर खुद को बीच में फँसा हुआ पाता है—अपनी पत्नी और अपनी माँ के बीच डगमगाता हुआ—और बिना किसी दिशा के भटकता रहता है, यह तय नहीं कर पाता कि कैसे प्रतिक्रिया दे या क्या करे। ऐसी स्थिति में, जब एक पत्नी देखती है कि उसका पति उसका पक्ष लेने के बजाय अपनी माँ का पक्ष ले रहा है—जिससे वह उस पर भरोसा करने या निर्भर रहने में असमर्थ हो जाती है, और उसे वह प्रेम नहीं मिल पाता जिसकी वह अपने पति से इच्छा रखती है और जिसकी उसे आवश्यकता है (इफिसियों 5:25-28, 33)—तो इस बात की बहुत अधिक संभावना होती है कि वह इसके बजाय अपने बच्चों पर अत्यधिक प्रेम बरसाने लगती है। परिणामस्वरूप, क्योंकि वह अपने बच्चों के साथ स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ निर्धारित करने में विफल रहती है, इस बात की काफी संभावना होती है कि उनका रिश्ता भी सह-निर्भर हो जाएगा। नतीजतन, उस

दम्पति का वैवाहिक रिश्ता उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं रह जाता; जब पति—जो स्वस्थ सीमाएँ तय करने में असमर्थ है—अनिर्णय की स्थिति में डगमगाता रहता है, तो पत्नी के लिए यह बहुत संभव है कि वह अपने बच्चों के साथ अपने रिश्ते को बाकी सब चीज़ों से ज़्यादा प्राथमिकता दे। इसके अलावा, यदि वे बच्चे शादीशुदा वयस्क हैं, तो माँ का अत्यधिक स्नेह उनके अपने विवाहों में भी टकराव पैदा कर सकता है, जिससे इस बात की संभावना बढ़ जाती है कि उनके वैवाहिक रिश्ते भी खराब हो जाएँगे। इसलिए, एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व पति—घर के मुखिया के तौर पर—स्पष्ट और स्वस्थ सीमाएँ तय करता है। ऐसा करके, वह यह सुनिश्चित करता है कि न तो उसके अपने माता-पिता, न उसके ससुराल वाले, और न ही उसके बच्चे उसके वैवाहिक रिश्ते की प्रधानता को कमज़ोर कर सकें। प्रभु में एक स्वस्थ जोड़े के रूप में, पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है—ठीक वैसे ही जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए खुद को समर्पित कर दिया—वह उससे अपने ही शरीर की तरह प्रेम करता है, ठीक वैसे ही जैसे वह खुद से प्रेम करता है (इफिसियों 5:25, 28, 33)। ऐसे प्रेम को पाने के बदले में, पत्नी अपने पति का आदर करती है (पद 33) और हर बात में उसके अधीन रहती है, ठीक वैसे ही जैसे कलीसिया मसीह के अधीन रहती है (पद 24)। परिणामस्वरूप, यह जोड़ा एक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व जोड़े के रूप में लगातार मज़बूत होता रहेगा।

छठा, वैवाहिक रिश्ते में संकट या निर्णायक मोड़ आ सकते हैं। मेरा मानना है कि वैवाहिक रिश्ते में संकट या निर्णायक मोड़ निश्चित रूप से आ सकते हैं—न केवल उन जोड़ों के लिए जो आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ और अपरिपक्व हैं, बल्कि उनके लिए भी जो आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व हैं। दूसरे शब्दों में, हर जोड़ा अपने विवाह में संकट या कठिन दौर का अनुभव करने की चपेट में आ सकता है। बेशक, इन दोनों प्रकार के जोड़ों के सामने आने वाले संकटों या चुनौतियों की विशिष्ट प्रकृति कभी-कभी समान हो सकती है, फिर भी अन्य समयों पर, वे काफी भिन्न हो सकती हैं। मेरी राय में, जो बात सबसे महत्वपूर्ण है, वह यह है कि किसी भी समूह को किसी गलत धारणा के तहत नहीं जीना चाहिए: आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ और परिपक्व जोड़ों को यह नहीं मान लेना चाहिए कि वे वैवाहिक संकटों से पूरी तरह सुरक्षित हैं, और न ही आध्यात्मिक रूप से अस्वस्थ और अपरिपक्व जोड़ों को यह मान लेना चाहिए कि उनका विवाह हमेशा संकट की स्थिति में ही रहेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो, मुख्य बात यह है: चूंकि कोई भी जोड़ा अप्रत्याशित संकटों या निर्णायक मोड़ों का सामना कर सकता है, इसलिए उन्हें तैयार रहना चाहिए—विशेष रूप से, उन्हें इस बात की स्पष्ट समझ होनी चाहिए कि यदि उनके

विवाह में ऐसी कठिनाइयाँ आती हैं, तो उन्हें कौन से कदम उठाने हैं और कैसे प्रतिक्रिया देनी है। मैं ऐसी तैयारी के उपायों के बारे में व्यक्तिगत रूप से केवल तीन विचार साझा करना चाहूँगा: (1) मेरा मानना है कि शादी में आया कोई संकट वास्तव में एक कीमती अवसर हो सकता है, जो प्रभु—उनके रिश्ते के सच्चे स्वामी—द्वारा उस जोड़े को दिया गया हो। दूसरे शब्दों में, शादी का संकट प्रभु द्वारा दिया गया एक अनमोल अवसर बन सकता है, जिससे रिश्ते में विकास और परिपक्वता आ सके। (2) यह "अनमोल अवसर" विशेष रूप से उस जोड़े के लिए एक मौका होता है कि वे मिलकर पूरी लगन से प्रभु की शरण लें। जब शादी का रिश्ता कमज़ोर पड़ रहा हो—दुख और तकलीफ़ों के बोझ तले कराह रहा हो—तो जोड़े के लिए निराश होना, और यहाँ तक कि हताशा और निराशा के गहरे गर्त में डूब जाना बहुत आसान होता है। फिर भी, ठीक उसी समय जब हम अपनी शादी को लेकर ऐसी निराशा की भावनाओं से घिरे होते हैं, प्रभु हमारे दिलों में अपनी महान कृपा बरसाते हैं, और हमारे भीतर उनके लिए एक गहरी चाह जगाते हैं। वह इस चाह को प्रज्वलित करते हैं, और हमें—हमारी निराशा के बीच भी—उन्हें ही अपनी और अपनी शादी की अंतिम आशा के रूप में अपनाने की शक्ति देते हैं। संक्षेप में, शादी के रिश्ते में आया संकट सच्ची प्रार्थना का एक अवसर होता है—एक ऐसा समय जब हम गहरी चाह के साथ ईश्वर की शरण लेते हैं। (3) एक और अनमोल अवसर इसमें छिपा है: प्रभु उस जोड़े के दिलों की ज़मीन को तैयार करते हैं और नरम बनाते हैं, जो प्यासी आत्माओं के साथ, ईश्वर से गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं; फिर वह उस उपजाऊ ज़मीन में अपने वचन का बीज बो देते हैं। दूसरे शब्दों में, शादी के रिश्ते में आया संकट ईश्वर के वचन के बीज को हमारे दिलों की ज़मीन में बोने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, जब हमारी शादी किसी संकट या मुश्किल मोड़ से गुज़र रही हो, और हम पूरी लगन से ईश्वर की शरण लेते हैं, तो वह हमारे दिलों में किसी विशेष धर्मग्रंथ का बीज बो सकते हैं—जैसे कि 1 कुरिन्थियों 10:13—जो जीत का आश्वासन देता है: "जिन परीक्षाओं का सामना आपने किया है, वे दूसरों द्वारा अनुभव की जाने वाली परीक्षाओं से अलग नहीं हैं। ईश्वर विश्वासयोग्य हैं; वह आपको आपकी शक्ति से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देंगे, बल्कि जब आप परीक्षा में होंगे, तो वह उससे निकलने का एक मार्ग भी प्रदान करेंगे ताकि आप उसे सह सकें" (आधुनिक कोरियाई संस्करण)। जैसे ही हम इस वचन को ग्रहण करते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में चुपचाप इस पर मनन करते हैं—पवित्र आत्मा द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि से निर्देशित होकर—हम एक प्रार्थनापूर्ण हृदय के साथ अपनी आत्मा से बात करने में सक्षम होंगे: ‘मेरे विवाह में जिस परीक्षा का मैं सामना कर रहा हूँ, वह एक ऐसी परीक्षा है जो सभी लोगों के लिए आम है। चूँकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, इसलिए मैं इस सत्य को दृढ़ता से थामे रहूँगा कि

वह मुझे मेरी क्षमता से अधिक प्रलोभित होने की अनुमति नहीं देगा; इसके अलावा, मुझे भरोसा है कि जब मैं प्रलोभन का सामना करूँगा, तो वह निश्चित रूप से बचने का एक मार्ग प्रदान करेगा, जिससे मैं इस वैवाहिक परीक्षा को सहन करने में सक्षम हो सकूँगा।' मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर का यह वचन—जिसे हमने एक युगल के रूप में विश्वास के साथ ग्रहण किया है—हमारे भीतर शक्तिशाली रूप से कार्य करे (1 थिस्सलोनिकियों 2:13), और हम सभी को शैतान के विरुद्ध आध्यात्मिक युद्ध में विजयी होकर उभरने के लिए सशक्त करे (1 यूहन्ना 2:14, मॉडर्न कोरियन संस्करण)।

अंत में—और सातवीं बात—पति और पत्नी के बीच का रिश्ता, मसीह और कलीसिया के रिश्ते के अनुरूप होना चाहिए।

आज का धर्मग्रंथ का अंश इफिसियों 5:32 से लिया गया है (*The Bible for Modern Man* से): "यह एक गहरा रहस्य है। मैं मसीह और कलीसिया के बीच के रिश्ते के बारे में बात कर रहा हूँ।" इफिसियों को लिखे इस पत्र में, इफिसियों की कलीसिया के विश्वासियों को पति और पत्नी के रिश्ते के बारे में संबोधित करते हुए, प्रेरित पौलुस ने उत्पत्ति 2:24 का हवाला देते हुए अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया: "इसी कारण से, धर्मग्रंथ कहता है: 'एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे'" (इफिसियों 5:31, *The Bible for Modern Man*)। इसके तुरंत बाद, उन्होंने घोषणा की: "यह एक गहरा रहस्य है। मैं मसीह और कलीसिया के बीच के रिश्ते के बारे में बात कर रहा हूँ" (पद 32, *The Bible for Modern Man*)। इन शब्दों का महत्व यह है कि जब एक पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ता है—और एक तन हो जाता है—तो पति को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे वह स्वयं से प्रेम करता है, ठीक वैसे ही जैसे "मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए स्वयं को बलिदान कर दिया" (पद 25, 28, 33, *The Bible for Modern Man*); उसी प्रकार, पत्नी को हर बात में अपने पति के अधीन रहना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे "कलीसिया मसीह के अधीन रहती है"—और उसका आदर करना चाहिए (पद 33)। यहाँ का मुख्य केंद्र-बिंदु "मसीह" है (पद 24, 25)। दूसरे शब्दों में, मसीह-केंद्रित जोड़ा मसीह और कलीसिया के बीच के

बाइबल-सम्मत रिश्ते को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, एक मसीह-केंद्रित वैवाहिक रिश्ता, मसीह और कलीसिया के बीच के बाइबल-सम्मत रिश्ते के साथ पूरी तरह से मेल खाता है।

मैं वचन पर आधारित इस मनन को अब यहीं समाप्त करना चाहूँगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मेरे पूरे परिवार और मेरे सभी रिश्तेदारों को कृतज्ञता से भरे एक घराने के रूप में स्थापित करें—एक ऐसा दृढ़ और विजयी घर जो मसीह-केंद्रित सपनों वाले सेवकों को तैयार करे, और फिर उन्हें परमेश्वर के राज्य के विस्तार के कार्य में उपयोग होने के लिए आगे भेजे—और इस प्रकार, एक ऐसा परिवार बन जाए जो वास्तव में प्रभु पर केंद्रित हो। विशेष रूप से, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु मेरे पूरे परिवार और मेरे सभी रिश्तेदारों को प्रेम से लबालब एक ऐसा घर बनाए, जिससे परमेश्वर की महिमा हो।

एक ऐसा परिवार जो कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करता है

[कुलुस्सियों 3:18-21]

"जब हम अपने परिवारों पर विचार करते हैं" शीर्षक के अंतर्गत, मैंने निम्नलिखित विचार लिखे हैं: (1) हम परमेश्वर के असीम अनुग्रह और दया के लिए तरसते हैं। (2) हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें उद्धार का अनुग्रह प्रदान करे। (3) हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर—हमारे दुखों, घावों और पीड़ा के बावजूद भी—हमारे परिवार के प्रत्येक सदस्य को विनम्र बनाए और हमें केवल प्रभु की ओर देखने तथा केवल उसी पर भरोसा करने में समर्थ करे। (4) हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें पूरी तरह से तोड़ डाले और हमारी रक्षा-दीवारों को ध्वस्त कर दे, जिससे हमारे हृदय कोमल हो सकें। (5) हमारी अभिलाषा है कि परमेश्वर हमारे पापों को उजागर करे, ताकि हम उन्हें पहचान सकें, स्वीकार कर सकें और उनका अंगीकार कर सकें; और यीशु के क्रूस के बहुमूल्य लहू पर भरोसा रखते हुए क्षमा मांग सकें। (6) हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमें क्षमा का आश्वासन प्रदान करे; और उस असीम अनुग्रह और प्रेम के बल पर—जिसके द्वारा हमें क्षमा प्राप्त हुई है—हम एक-दूसरे को क्षमा करने में समर्थ हो सकें, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है। (7) हमारी अभिलाषा है कि परमेश्वर हमारे बच्चों की रक्षा करे और उन पर अपनी दृष्टि रखे। विशेष रूप से, हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे बच्चों के घायल हृदयों को कोमलता से स्पर्श करे और उन्हें चंगाई प्रदान करे। (8) हम पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर हमारे पारिवारिक संकटों को अवसरों में बदल दे, और हमें ऐसा अनुग्रह प्रदान करे जिससे हम उसके महान उद्धारकारी प्रेम का अनुभव—गहरे, विस्तृत, प्रचुर और गहन रूप

में—कर सकें। (9) हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर—जो हमारे घराने का प्रभु है—हमारे परिवार पर शासन और राज करे, तथा हमें समस्त दुष्ट शक्तियों और शैतान की चालों से सुरक्षित रखे और हमारी रक्षा करे। (10) परमेश्वर पवित्र आत्मा हमें इस योग्य बनाए कि हम परमेश्वर के दिव्य प्रेम के फलों को और भी अधिक प्रचुरता से उत्पन्न कर सकें; और वह हमें अपने प्रेम के माध्यम (channels) के रूप में उपयोग करे, ताकि हमारे घराने का प्रत्येक सदस्य प्रभु के प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम कर सके। मई 2023 में, "एक परिवार जो प्रार्थना और स्तुति के चमत्कारों का अनुभव कर रहा है" विषय के तहत, हमने 2 इतिहास अध्याय 20 में पाए जाने वाले संदेश पर मनन किया। 2 इतिहास 20 में, यहूदा के राजा यहोशापात ने खुद को एक अत्यंत कठिन परिस्थिति में पाया—एक ऐसी परिस्थिति जिसके लिए, मानवीय दृष्टिकोण से, धन्यवाद देना बिल्कुल असंभव होता। यह गंभीर संकट तब उत्पन्न हुआ जब मोआबी और अम्मोनी—जिनके साथ कुछ मेऊनी भी शामिल हो गए थे—ने एक "विशाल सेना" के साथ यहूदा पर आक्रमण कर दिया (पद 1–2)। उस क्षण, राजा यहोशापात "घबरा गया; इसलिए उसने प्रभु से पूछने का निश्चय किया और पूरे यहूदा के लिए उपवास की घोषणा की" (पद 3)। परिणामस्वरूप, यहूदा के हर नगर से लोग यरूशलेम में "प्रभु से सहायता मांगने" के लिए एकत्रित हुए (पद 4)। अंततः, जब राजा यहोशापात—यहूदा और यरूशलेम के लोगों के साथ मिलकर—ने परमेश्वर से प्रार्थना की और उसकी स्तुति करने के लिए एक गायक-दल (choir) का आयोजन किया, तो परमेश्वर ने यहूदा को विजय प्रदान की, जिससे वे उस विशाल सेना को हराने में सक्षम हुए। जब मैंने इस चमत्कारी विजय पर मनन किया, तो मैंने चार सबक सीखे:

(1) पहला सबक जो हम सीखते हैं वह यह है कि जब भी हमें अचानक भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो हमें परमेश्वर के सामने खुद को दीन करने का निश्चय करना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे दानिय्येल ने किया था (दानिय्येल 10:12)—और परमेश्वर से पूछने का निश्चय करना चाहिए—ठीक वैसे ही जैसे राजा यहोशापात ने किया था (2 इतिहास 20:3)—और हमें उससे प्रार्थना करनी चाहिए। विशेष रूप से, हम यह सबक सीखते हैं कि जब भी हमारे परिवार को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो घर के प्रत्येक सदस्य को परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए एकजुट होना चाहिए।

(2) दूसरा सबक जो हम सीखते हैं वह यह है कि जब हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो हमें सबसे पहले यह महसूस और स्वीकार करना चाहिए कि उन्हें हल करने की शक्ति और क्षमता हममें स्वयं नहीं है। साथ ही, हमें यह महसूस और स्वीकार करना चाहिए कि स्वर्ग में केवल परमेश्वर के पास ही ऐसी भारी कठिनाइयों को हल करने की शक्ति और क्षमता है। इसलिए, हमें यह सिखाया जाता है कि हमें इस परमेश्वर पर अपना विश्वास और भरोसा रखना चाहिए और उसकी सहायता मांगनी चाहिए।

(3) तीसरा सबक जो हम सीखते हैं वह यह है कि जब हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तो हमें परमेश्वर के सामने चुपचाप बने रहना चाहिए और उस अनुग्रह पर विचार करना चाहिए जो उसने अतीत में हम पर बरसाया है।

(4) चौथा सबक जो हम सीखते हैं, वह यह है कि शैतान और उसकी सेनाएँ हमारे परिवारों पर चाहे कितनी भी ज़ोरदार हमला क्यों न करें, हमें न तो डरना चाहिए और न ही हिम्मत हारनी चाहिए। इसका कारण यह है कि यह आध्यात्मिक लड़ाई हमारी नहीं, बल्कि परमेश्वर की लड़ाई है। जब हम बहुत बड़ी मुश्किलों का सामना कर रहे हों, तब भी हमें परमेश्वर पर और उसके सेवकों के द्वारा दिए गए वचन पर भरोसा रखना चाहिए; इस प्रकार, उद्धार और जीत के भरोसे के साथ, हमें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए और उसकी स्तुति करनी चाहिए, यह घोषणा करते हुए कि उसका प्रेम सदा बना रहता है। जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर "मुसीबत की घाटी (अकोर)" को "आशीष की घाटी (स्तुति)" में बदल देगा।

(5) जब आज मैं हमारे धर्मग्रंथ के अंश—कुलुस्सियों 3:18–21—पर मनन कर रहा था, तो मेरे मन में यह सवाल उठा: किस तरह का परिवार सचमुच इन वचनों का पालन करते हुए जीता है? जब मैं इस पर विचार कर रहा था, तो जिन आयतों ने मेरा ध्यान खींचा और जिन पर मेरी नज़र पड़ी, वे ठीक वही थीं जिन पर हम पहले ही मनन कर चुके थे—कुलुस्सियों 3:16 और 3:17 के पिछले हिस्से: “...धन्यवाद भरे हृदय से परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते हुए” (पद 16b), और “उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते हुए” (पद 17b)। जब मैंने इन दोनों अंशों पर कुलुस्सियों 3:18–21 के साथ मिलाकर मनन किया, तो मुझे यह एहसास हुआ कि परमेश्वर के वचन का पालन करने वाला परिवार, असल में, "एक ऐसा परिवार है जो धन्यवाद भरे हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करता है।" इसलिए, "एक ऐसा परिवार जो धन्यवाद भरे हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करता है" विषय के

तहत, मैं उन चार सबकों पर मनन करना चाहूँगा जो परमेश्वर आज हमारे परिवारों को देता है, और हमारा मुख्य पाठ, कुलुस्सियों 3:18–21, हमारा केंद्र-बिंदु रहेगा: (1) परमेश्वर पत्नियों से क्या कहता है; (2) परमेश्वर पतियों से क्या कहता है; (3) परमेश्वर बच्चों से क्या कहता है; और (4) परमेश्वर माता-पिता से क्या कहता है।

यहाँ "पारिवारिक समस्याओं और संकटों पर मेरे विचार" दिए गए हैं: (1) क्योंकि पारिवारिक समस्याएँ बहुत ही निजी होती हैं, इसलिए मेरा मानना है कि वे अनिवार्य रूप से गहरे घाव देती हैं और बहुत ज़्यादा तनाव पैदा करती हैं। (2) मेरा मानना है कि पारिवारिक समस्याएँ हमें हमारी मानवीय प्रकृति में निहित सीमाओं के प्रति पूरी तरह से जागरूक कर देती हैं। (3) मेरा मानना है कि, परमेश्वर के हस्तक्षेप के बिना, पारिवारिक समस्याएँ सचमुच पूरी तरह से निराशाजनक हो सकती हैं। (4) मेरा मानना है कि हमें पारिवारिक संकटों को परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों के रूप में देखना चाहिए—ऐसे अवसर जिनके द्वारा हम विश्वास में दृढ़ रहें और डटे रहें, केवल उसी पर भरोसा करें और अपनी विनतियाँ उसके सामने रखें। (5) मेरा मानना है कि यह "अवसर" इस बात में निहित है कि परमेश्वर पारिवारिक संकटों का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए करता है—पति-पत्नी, माता-पिता और बच्चों, सभी में परिवर्तन लाता है। (6) मेरा मानना है कि इस परिवर्तन के मूल तत्वों में से एक है अहंकार का टूटना और चूर-चूर हो जाना; इस प्रक्रिया के माध्यम से, परमेश्वर हमें केवल उसी पर अपना पूर्ण विश्वास और भरोसा रखने की ओर ले जाता है, और अंततः हमें परमेश्वर की भलाई का अनुभव करने में सक्षम बनाता है—वही जो सब बातों को मिलकर भलाई के लिए करता है (रोमियों 8:28; भजन संहिता 34:8)। (7) जैसे-जैसे हम परमेश्वर पर अपना भरोसा और बढ़ाते जाते हैं, हमें एक महान अनुग्रह और आशीष प्राप्त होती है—वह है "शांत रहना, और यह जानना कि वही परमेश्वर है" (भजन संहिता 46:10)।

सबसे पहले, परमेश्वर पत्नियों से क्या कहते हैं?

आज के लिए हमारा वचन है कुलुस्सियों 3:18: “हे पत्नियों, अपने-अपने पतियों के अधीन रहो, जैसा प्रभु में उचित है।” इफिसियों 5:22 में, बाइबल कहती है: “हे पत्नियों, अपने-अपने पतियों के अधीन रहो, जैसा प्रभु के अधीन।” *मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* इसका अनुवाद इस प्रकार करता है: “हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो, ठीक वैसे ही जैसे तुम प्रभु के अधीन रहती हो।” अपनी किताब *द क्रिश्चियन लाइफ* में, डॉ. मार्टिन लॉयड-

जोन्स ने लिखा: "... इस वाक्यांश 'जैसा प्रभु के अधीन' का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है: 'हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो, क्योंकि ऐसा करना प्रभु के प्रति तुम्हारे कर्तव्य का एक हिस्सा है, और क्योंकि इस तरह से काम करना प्रभु के प्रति तुम्हारी अधीनता की एक अभिव्यक्ति है।'" यदि तुम, हमारी विश्वासी बहनें, अपने पतियों के अधीन नहीं हो, तो तुम न केवल प्रभु के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने में असफल हो रही हो, बल्कि तुम यह भी दिखा रही हो कि वास्तव में तुम प्रभु के अधीन नहीं हो। इसका तात्पर्य यह है कि, जबकि दूसरों की नज़रों में तुम्हारा विश्वास बहुत बड़ा लग सकता है, प्रभु की नज़रों में तुम बड़े विश्वास वाली स्त्री नहीं हो। जो स्त्री अपने उस पति के अधीन नहीं रहती जिसे वह अपनी शारीरिक आँखों से देख सकती है, वह उस प्रभु के अधीन नहीं रह रही है जिसे वह देख नहीं सकती।

आप में से कुछ बहनें शायद पूछ सकती हैं: "क्या मुझे अपने पति के अधीन 'जैसा प्रभु के अधीन' रहना चाहिए, भले ही वह यीशु पर विश्वास न करता हो?" यहाँ 1 पतरस 3:1–5 का वह अंश दिया गया है, जो *द बाइबल फॉर मॉडर्न पीपल* से लिया गया है: "हे पत्नियों, अपने-अपने पतियों के अधीन रहो। तब, भले ही पति प्रभु के वचन पर विश्वास न करता हो, वह तुम्हारे कार्यों को देखकर—विशेष रूप से, तुम्हारे व्यवहार में तुम्हारी शांत अधीनता को देखकर—परमेश्वर पर विश्वास करने लगेगा। पति देख रहे हैं कि तुम कैसे परमेश्वर की सेवा करती हो और एक पवित्र जीवन जीती हो। केवल बाहरी सजावट से खुद को मत सजाओ; इसके बजाय, एक कोमल और नम्र आत्मा से अपने आंतरिक स्वरूप को सुंदर बनाओ। परमेश्वर की नज़रों में यह बहुत कीमती है। बीते समय में, पवित्र स्त्रियाँ जिन्होंने परमेश्वर पर अपनी आशा रखी थी, उन्होंने भी इसी तरह से खुद को सजाया था—अपने-अपने पतियों के अधीन रहकर।" जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मैंने ये संक्षिप्त विचार लिखे: "पत्नियों, केवल अपने बाहरी रूप को सजाने के बजाय—हालाँकि परमेश्वर की दृष्टि में वह भी कीमती है—तुम्हें एक कोमल और विनम्र आत्मा से अपने आंतरिक स्वरूप को सुंदर बनाना चाहिए। इसके अलावा, पत्नियों, तुम्हें अपने पतियों के अधीन रहकर खुद को सजाना चाहिए। जब तुम अपने पतियों के अधीन रहती हो, तो यहाँ तक कि वह पति भी जो प्रभु के वचन पर विश्वास नहीं करता, तुम्हारे कार्यों—विशेष रूप से, तुम्हारे व्यवहार में तुम्हारी मौन आज्ञाकारिता—को देखकर परमेश्वर पर विश्वास करने लगेगा। तुम्हारे पति तुम्हें देख रहे हैं कि तुम कैसे परमेश्वर की सेवा करती हो और एक पवित्र जीवन जीती हो।"

आपकी नज़र में, किस तरह की महिला विश्वासी को सचमुच महान विश्वास वाली माना जा सकता है? आम तौर पर, जब हम महान विश्वास वाली किसी महिला विश्वासी के बारे में सोचते हैं, तो हम ऐसी किसी महिला की कल्पना करते हैं जो कलीसिया के भीतर पूरी लगन से प्रार्थना करती है। इसका कारण शायद यह है कि हम यह मान लेते हैं कि जो महिला परमेश्वर से इतनी गंभीरता से प्रार्थना करती है, वह निश्चित रूप से अपना विश्वास और भरोसा पूरी तरह से उसी पर रखती होगी। इस प्रकार, हम शायद हन्नाह—शमूएल की माँ—जैसी महिला को महान विश्वास वाली महिला विश्वासी का एक बेहतरीन उदाहरण मान सकते हैं। इसके अलावा, कुछ महिला विश्वासी ऐसी भी हो सकती हैं जो, हन्नाह की ही तरह, संतानहीन हों; जब वे संतान के लिए परमेश्वर से पूरी लगन से प्रार्थना करती हैं, तो वे शायद यह मन्नत माँगती हैं: “हे परमेश्वर, यदि तू मुझे याद करे और मुझे एक संतान दे, तो मैं उस संतान को उसके पूरे जीवन के लिए तुझे समर्पित कर दूँगी” (देखें 1 शमूएल 1:11, *द कंटेम्पररी बाइबल*)। जब हम महिलाओं को इतनी गंभीरता और भक्ति के साथ प्रार्थना करते हुए—परमेश्वर को इतनी तीव्रता से खोजते हुए—देखते हैं, तो हम शायद उन्हें महान विश्वास वाली महिलाएं मानते हैं।

यदि हम मत्ती 15:21–28 की ओर देखें, तो हमें एक ऐसी महिला मिलती है जिसके बारे में यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा था कि उसका “महान विश्वास” है (पद 28)। मरकुस 7:25–26 के अनुसार, इस महिला की पहचान एक “यूनानी, सिरो-फिनिशियाई मूल की” महिला के रूप में की गई है। सबसे पहले, “यूनानी” शब्द यह दर्शाता है कि वह एक अन्यजाति थी—न कि यहूदी। वह “सिरो-फिनिशियाई मूल की” थी—यानी, सीरिया क्षेत्र से संबंधित एक फिनिशियाई महिला। यह लोगों का समूह कनानी लोगों का वंशज था, जिन्हें उस समय—जब इस्राएलियों ने कनान पर विजय प्राप्त की थी—उत्तर की ओर खदेड़ दिया गया था और उस भूमि से निकाल दिया गया था (पार्क यून-सन)। परिणामस्वरूप, मत्ती इस स्त्री का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसे केवल एक "कनानी स्त्री" कहता है (मत्ती 15:22)। अब, इस कनानी स्त्री की एक छोटी बेटी थी, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा समाई हुई थी। इसलिए, जैसे ही उसने यीशु के बारे में खबरें सुनीं, उसने उन्हें ढूँढ़ा और उनके सामने उपस्थित हुई (पद 22)। तो मेरा प्रश्न यह है: यीशु ने इस स्त्री से ऐसा क्यों कहा, "हे स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा है" (पद 28)? मेरा मानना है कि इसके कम से कम दो कारण हैं:

(1) एक बड़े विश्वास वाली स्त्री वह है जो यह मानती है कि यीशु ही प्रभु और मसीह दोनों हैं। जोसेफस के अनुसार—जो पहली शताब्दी ई. में रहने वाला एक यहूदी इतिहासकार था—टायर का क्षेत्र (जहाँ यीशु और कनानी स्त्री की भेंट हुई थी) सिरो-फीनीशिया का हिस्सा था। गलील के ठीक उत्तर में स्थित इस क्षेत्र में अन्यजाति लोग रहते थे, जो यहूदियों को अपना शत्रु मानते थे। फिर भी, यीशु के बारे में खबर सुनते ही, यह कनानी स्त्री—जो स्वयं एक अन्यजाति थी—सीधे उनके पास आई और उनके चरणों में गिर पड़ी। इसका कारण यह था कि उसने यीशु को केवल एक और यहूदी के रूप में नहीं देखा, जैसा कि अन्य अन्यजाति लोग देख सकते थे; बल्कि, उसने उन्हें "प्रभु, दाऊद का पुत्र" माना (मत्ती 15:22)। इसी विश्वास के साथ वह यीशु के पास आई थी।

(2) एक बड़े विश्वास वाली स्त्री वह है जो प्रभु से अत्यंत दीनतापूर्वक विनती करती है (पद 22)।

अपनी बेटी की ओर से—जो एक दुष्ट आत्मा के गंभीर प्रभाव के कारण अत्यंत कष्ट झेल रही थी—उसने प्रभु से अत्यंत दीनतापूर्वक पुकारते हुए कहा, "मुझ पर दया कर!" वह लगातार यीशु को पुकारती रही (पद 23)। विशेष रूप से, वह यीशु का पीछा करने और उन्हें पुकारने में लगी रही, भले ही उन्होंने उसकी अत्यंत दीनतापूर्ण विनतियों के उत्तर में "उसे एक भी शब्द नहीं कहा" (पद 23)। वह यीशु से जिस बात की इतनी दीनतापूर्वक और लगातार याचना कर रही थी, वह यह थी कि वे उसकी बेटी में से उस दुष्ट आत्मा को निकाल दें (मरकुस 7:26)। आखिरकार, यीशु ने इस कनानी स्त्री—जो बहुत बड़े विश्वास वाली स्त्री थी—की सच्ची प्रार्थना सुनी और उसे स्वर्ग के राज्य का आशीर्वाद दिया। इसके परिणामस्वरूप, उसकी भूत-ग्रस्त बेटी ठीक हो गई और पूरी तरह चंगी हो गई। उन विश्वासी स्त्रियों के लिए, जो ऐसा महान विश्वास रखती हैं—ऐसी स्त्रियाँ जो निस्संदेह यीशु को प्रभु मानती हैं और जीवन भर उन्हें अपने हृदय में बसाए रखती हैं—मेरा प्रश्न यह है: "क्या वह सचमुच यीशु को प्रभु मानती है और उन्हें अपने हृदय में केवल कलीसिया के भीतर और बाहरी दुनिया में ही नहीं, बल्कि अपने स्वयं के घर के भीतर भी बसाए रखती है?" मैं यह प्रश्न इसलिए पूछता हूँ, क्योंकि हमारे दृष्टिकोण से, ऐसा प्रतीत होता है कि इन महान विश्वास वाली स्त्रियों में से कुछ—जो कलीसिया के भीतर और बाहर, दोनों जगह यीशु को प्रभु के रूप में सम्मान देने और उनके वचन का पालन करने के लिए अत्यंत समर्पण के साथ प्रयास करती हैं—अपने घरों की चारदीवारी के भीतर पहुँचने पर इस तरह से जीने में असफल हो जाती हैं। जब मैं कहता हूँ कि ये

महान विश्वास वाली स्त्रियाँ अपने घरों के भीतर प्रभु के वचन का पालन करने के लिए समर्पण के साथ प्रयास करने में असफल हो रही हैं, तो मेरा विशेष अर्थ यह है कि वे अपने पतियों के अधीन नहीं हो रही हैं, ठीक वैसे ही जैसा कि आज का धर्मशास्त्र का अंश—कुलुस्सियों 3:18—निर्देश देता है। ऐसा आचरण "परमेश्वर के वचन की निंदा का कारण बनता है" (तीतस 2:5)। बाइबल स्पष्ट रूप से कहती है कि पत्नियों का अपने पतियों के अधीन होना "प्रभु में उचित है" (पद 18)—अर्थात्, यह प्रभु में विश्वास रखने वाले व्यक्ति का उचित कर्तव्य है; फिर भी, हम देखते हैं कि कुछ स्त्रियाँ, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में महान विश्वास प्रदर्शित करती हैं, घर पर होने पर इस विशिष्ट आज्ञा के अनुसार जीने में असफल हो जाती हैं। यदि वास्तव में ऐसा ही है, तो हमें स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए: "क्या परमेश्वर की दृष्टि में यह सचमुच सही है कि एक महान विश्वास वाली स्त्री यह मान ले कि उसे केवल सीधे प्रभु के अधीन होने की आवश्यकता है, जबकि वह अपने स्वयं के घर के भीतर उस कर्तव्य को पूरा करने की उपेक्षा करती है जो 'प्रभु में उचित है'—अर्थात्, अपने पति के अधीन होना?" आप क्या सोचते हैं? क्या यह सोचना सचमुच सोचने का एक सही तरीका है कि कोई व्यक्ति धर्मशास्त्र के स्पष्ट निर्देश के विपरीत, अपने पति के अधीन होने में असफल रहते हुए भी, केवल प्रभु के अधीन हो सकता है?

आप सभी के लिए—हमारी महिला संतों, यानी आस्थावान महिलाओं के लिए—परमेश्वर का वचन बिल्कुल स्पष्ट है। परमेश्वर का वचन आपको निर्देश देता है कि आप अपने पतियों के अधीन रहें (कुलुस्सियों 3:18; इफिसियों 5:22; 1 पतरस 3:1, 5)। आपको अपने पतियों के अधीन क्यों रहना चाहिए? बाइबल इसके तीन कारण बताती है:

(1) क्योंकि पति ही पत्नी का सिर होता है।

इफिसियों 5:23 कहता है: “क्योंकि पति ही पत्नी का सिर है, ठीक वैसे ही जैसे मसीह कलीसिया का सिर है...” यह अंश घर के भीतर पति की स्थिति—या दर्जे—को उजागर करता है। वह स्थिति या दर्जा यह है कि पति पत्नी के सिर (मुखिया) के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा, यह अंश यह भी संकेत देता है कि पति की स्थिति (दर्जे) को स्पष्ट रूप से परिभाषित करके, घर के भीतर एक व्यवस्था या क्रम होना अनिवार्य है। जब एक पत्नी अपने पति की स्थिति को समझती है—उसे "अपना सिर" मानती है—और इस प्रकार इस तथ्य को स्वीकार करती है और इसकी पुष्टि करती है कि उसका पति ही घर का मुखिया है, तो ऐसा करके वह अपने पति के गौरव

को बनाए रखती है। यह एक पत्नी के अत्यंत महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक है। पादरी ली डोंग-वोन की पुस्तक, *एक्ट्स ऑफ़ द न्यू फ़ैमिली* (Sae Gajeong Haengjeon) में, एक सर्वेक्षण का उल्लेख किया गया है। उस सर्वेक्षण के अनुसार, पुरुषों को अपनी पत्नियों से जिन पाँच प्रमुख आवश्यकताओं की सूची में से सबसे अधिक जिस चीज़ की ज़रूरत होती है—वह है 'आत्म-सम्मान' की भावना। एक समझदार पत्नी अपने पति के अधीन रहती है क्योंकि वह घर के मुखिया और अगुवा के रूप में उसकी स्थिति को स्वीकार करती है; ऐसा करके, वह उस आत्म-सम्मान की भावना को पुष्ट करती है जिसकी उसके पति को इतनी गहरी आवश्यकता होती है।

(2) क्योंकि एक पत्नी का अपने पति के अधीन रहना प्रभु में उचित है।

कुलुस्सियों 3:18 कहता है: “हे पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो, जैसा कि प्रभु में उचित है।” हमारा परमेश्वर अव्यवस्था का नहीं, बल्कि शांति का परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 14:33)। इसलिए, प्रभु द्वारा स्थापित किसी भी घर में कोई अव्यवस्था नहीं होती, बल्कि वहाँ शांति का वास होता है। दूसरे शब्दों में, जिस घर में शांति होती है, वहाँ एक उचित व्यवस्था भी होती है। उस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, घर के प्रत्येक सदस्य को पूरी निष्ठा और विनम्रता के साथ अपने-अपने बाइबल-सम्मत दायित्वों को पूरा करना चाहिए। खास तौर पर, घर के अंदर, एक पत्नी की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने पति के अधीन रहे। बाइबल कहती है कि ऐसा करना प्रभु की नज़र में उचित है। यह एक पत्नी का कर्तव्य है। प्रभु द्वारा स्थापित पारिवारिक संस्था के भीतर, एक पत्नी का अपने पति के अधीन रहना—ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती—उनकी नज़रों में उचित ("fitting") और सही ("proper") दोनों है।

(3) इसका उद्देश्य एक अविश्वासी पति को उद्धार की ओर ले जाना है।

1 पतरस 3:1 कहता है: “हे पत्नियों, तुम भी अपने-अपने पतियों के अधीन रहो, ताकि यदि उनमें से कोई वचन को न भी मानता हो, तो भी तुम्हारे पवित्र और आदर सहित चाल-चलन को देखकर बिना किसी वचन के तुम्हारी चाल-चलन के द्वारा ही जीत लिया जाए।” आजकल, कई विश्वासी पत्नियाँ जिनके पति अभी तक यीशु पर विश्वास नहीं करते, वे अपने चर्च के जीवन में तो बहुत मेहनती होती हैं, लेकिन अपने घर के जीवन की उपेक्षा करती हैं। वे चर्च के भीतर तो एक मिसाल कायम कर रही हो सकती हैं, लेकिन वे अपने ही घरों के भीतर एक मिसाल

कायम करने में असफल रहती हैं। यह एक ऐसे मसीही जीवन को दर्शाता है जिसमें संतुलन की कमी है। तो फिर, क्या किया जाना चाहिए? एक समझदार पत्नी न केवल चर्च के भीतर, बल्कि—विशेष रूप से—अपने घर के भीतर भी एक मिसाल कायम करती है। वह अपने अविश्वासी पति के अधीन रहकर अपने घर में एक मिसाल के तौर पर काम करती है—ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती। डॉ. पार्क यून-सन ने निम्नलिखित बात कही: “एक अविश्वासी पति अपनी पत्नी के ईश्वरीय चरित्र को देखकर सुसमाचार की सच्चाई को पहचान सकता है और उसका मन परिवर्तन हो सकता है। यह अपने कार्यों के माध्यम से परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करना है। यदि सुसमाचार के प्रति हमारी गवाही के साथ एक सदाचारी जीवन नहीं जुड़ा होता, तो वह शक्तिहीन रह जाती है” (पार्क यून-सन)। एक समझदार पत्नी केवल शब्दों के माध्यम से ही सुसमाचार की गवाही नहीं देती। वह कभी भी अपने अविश्वासी पति से केवल यह नहीं कहती, "चलो चर्च चलते हैं।" बल्कि, वह अपने पति के अधीन रहकर सुसमाचार की प्रामाणिकता को सिद्ध करती है—ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती। वह अपने जीवन के माध्यम से ही यीशु मसीह को प्रकट करती है। परिणामस्वरूप, प्रभु उसका उपयोग उसके अविश्वासी पति के उद्धार को लाने के लिए भी करते हैं।

तो फिर, एक समझदार पत्नी अपने पति के अधीन कैसे रहती है? बाइबल इसे दो तरीकों से बताती है:

(1) एक समझदार पत्नी अपने पति के अधीन रहती है, और ऐसा वह ठीक वैसे ही करती है जैसे वह प्रभु के अधीन रहती। यह बात इफिसियों 5:22 के पिछले हिस्से और इफिसियों 5:24 के शुरुआती हिस्से में मिलती है: "जैसे प्रभु की" (पद 22b), और "जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है..." (पद 24a)। एक पत्नी को अपने पति के अधीन क्यों रहना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे वह प्रभु के अधीन रहती है? इसका कारण यह है कि "पति पत्नी का सिर है, जैसा कि मसीह कलीसिया का सिर है" (पद 23)। जब हम "पति" शब्द की जाँच करते हैं, तो हम पाते हैं कि इब्रानी भाषा में इसका अर्थ *बाल*—या "स्वामी"—होता है, जबकि यूनानी भाषा में इसका अर्थ "प्रभु" या "वह पुरुष जो सबसे ऊपर है" होता है। दूसरे शब्दों में, पति वह व्यक्ति है जो घर-परिवार की अच्छी देखभाल करता है और घर के भीतर एक कोमल स्वामी के रूप में कार्य करता है। प्रेरित पतरस कहते हैं, "हे पत्नियों, तुम भी अपने-अपने पतियों के अधीन रहो..." (1 पतरस 3:1); यहाँ, "भी" (likewise) शब्द उस निर्देश की ओर संकेत करता है जो 1 पतरस 2:18 में मिलता है: "हे सेवकों, अपने स्वामियों के अधीन रहो..." इस प्रकार, सारा ने भी अपने पति अब्राहम के अधीन रहते हुए उन्हें "प्रभु" कहकर संबोधित किया (1 पतरस 3:6; उत्पत्ति 18:12)।

एक समझदार पत्नी यह पहचानती है कि प्रभु ने उसके पति को घर का मुखिया नियुक्त किया है; उसके अधिकार को स्वीकार करते हुए, वह उसके अधीन रहती है। वह अपने पति के अधीन रहती है; विशेष रूप से, वह उसकी बातों को ध्यान से सुनती है और उसकी पूरी बात सुनती है। मूल रूप से, "अधीनता" (submission) शब्द दो पदों का मेल है: एक पूर्वसर्ग जिसका अर्थ है "नीचे" और एक क्रिया-पद जिसका अर्थ है "अच्छी तरह सुनना।" इसलिए, एक पत्नी का अपने पति के अधीन रहना, सबसे बढ़कर, इस बात का संकेत है कि वह अपने पति की बातों को ध्यान से सुनती है; यह उसके पति के अधिकार को स्वीकार करने की एक ठोस अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है (ली डोंग-वोन)।

(2) एक समझदार पत्नी अपने पति के अधीन रहती है, लेकिन वह ऐसा मसीह के प्रति आदर-भाव के कारण करती है। यह बात इफिसियों 5:21 के पहले हिस्से से ली गई है: "मसीह के आदर के कारण..." दूसरे शब्दों में, जिस तरह मसीह ने—"केवल नम्र मन" (फिलिप्पियों 2:3) के साथ—"खुद को खाली कर दिया" (फिलिप्पियों 2:7) और "खुद को दीन किया और मृत्यु तक आज्ञाकारी बन गए" (फिलिप्पियों 2:8), ठीक उसी तरह एक समझदार पत्नी भी यीशु की नकल करते हुए और प्रभु का आदर करते हुए अपने पति के अधीन रहती है।

तो फिर, किन मामलों में एक पत्नी को अपने पति के अधीन रहना चाहिए? उसे सभी बातों में अधीन रहना चाहिए। यह बात इफिसियों 5:24 के दूसरे हिस्से में कही गई है: "...ठीक वैसे ही पत्नियों को भी हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए।"

एक अच्छी पत्नी और एक बुरी पत्नी में क्या अंतर होता है? एक अच्छी पत्नी एक अच्छे पति को संतुष्ट करती है, जबकि एक बुरी पत्नी अपने पति को चुप करा देती है। एक सचमुच आदर्श पत्नी कभी भी एक आदर्श पति की उम्मीद नहीं करती। एक समझदार पत्नी अपने अधीन रहने के द्वारा अपने पति का मार्गदर्शन करती है (इंटरनेट)। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप एक ऐसी समझदार पत्नी बनें जो प्रभु के आदर के साथ अपने पति के अधीन रहती है—उसके अधीन ठीक वैसे ही रहती है जैसे आप स्वयं प्रभु के अधीन रहतीं।

इस सदी के जाने-माने प्रचारक, रेव. बिली ग्राहम को एक ऐसी पत्नी का आशीर्वाद मिला था—रूथ ग्राहम—जिन्होंने अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उनके सेवा-कार्य में शानदार ढंग से सहयोग दिया। यहाँ एक सवाल है जो मुझे

एक बार एक ईसाई पत्रकार से मिला था: "श्रीमती रूथ! आपने दशकों तक एक पादरी की पत्नी के रूप में जीवन बिताया है—एक ऐसे व्यक्ति की पत्नी के रूप में जिसे प्रेरित पौलुस के बाद सबसे महान पुनरुत्थानवादी माना जाता है। उन सभी लंबे वर्षों के दौरान, क्या आपने कभी एक बार भी तलाक लेने के बारे में सोचा?" श्रीमती रूथ ग्राहम ने जवाब दिया, "नहीं! कभी एक बार भी नहीं! हालाँकि, एक और बात थी जिसके बारे में मैं लगभग हर दिन सोचती थी!" जिज्ञासा से भरकर, पत्रकार ने पूछा, "और वह क्या थी?" मुस्कुराते हुए, श्रीमती रूथ ग्राहम ने जवाब दिया, "हत्या... उसे मार डालना!" देवियों, क्या कभी ऐसा समय आया है जब आप लोगों ने भी अपने पतियों के प्रति इतना गहरा गुस्सा महसूस किया हो कि आप उन्हें मार डालना चाहती हों? 1 यूहन्ना 3:15 का पहला हिस्सा (*मॉडर्न इंग्लिश वर्शन* से) कहता है: "हर वह व्यक्ति जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह एक हत्यारा है..."

दूसरी बात, परमेश्वर पतियों से क्या कहना चाहते हैं? आज का हमारा पाठ कुलुस्सियों 3:19 से लिया गया है: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ कठोरता का व्यवहार न करो।" परमेश्वर ने हम पतियों को हमारे परिवारों का मुखिया बनाया है और हमें ईश्वरीय अधिकार सौंपा है। इस अधिकार के साथ ही, हम पतियों पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी भी आ जाती है। वास्तव में, हम पर डाली गई यह ज़िम्मेदारी कितनी भारी है? वह ज़िम्मेदारी बस इतनी सी है कि एक पति को अपनी पत्नी और परिवार के सदस्यों से प्रेम करना चाहिए (इफिसियों 5:25), और उसे उनकी रक्षा करनी चाहिए तथा उनकी ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। इसके अलावा, रक्षा करने और ज़रूरतों को पूरा करने के मामले में, एक पति को अपनी पत्नी और परिवार की भलाई के लिए बलिदान देने को भी तैयार रहना चाहिए। जब हम आज के अपने पाठ—कुलुस्सियों 3:19—पर नज़र डालते हैं, तो हम देखते हैं कि बाइबल पतियों को दो विशेष निर्देश देती है:

(1) यह कहा गया है कि पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए।

तो फिर, हम पतियों को अपनी पत्नियों से कैसे प्रेम करना चाहिए? आइए, हम इफिसियों 5:25 की ओर देखें: “हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।” मैंने हमारे विचार के लिए लगभग पाँच बिंदु पहचाने हैं:

(a) हम पतियों को अपनी पत्नियों को एक ऐसे वरदान के रूप में देखना चाहिए जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

नीतिवचन 18:22 कहता है: "जिसको पत्नी मिल गई, उसको उत्तम पदार्थ मिला, और उस पर यहोवा का अनुग्रह हुआ।" यहाँ, बाइबल किसी भी पत्नी की बात नहीं कर रही है। जिस "पत्नी" की बात बाइबल यहाँ कर रही है, वह एक "उत्तम पत्नी" (12:4), एक "समझदार पत्नी" (19:14), या "भले चाल-चलन वाली पत्नी" (31:10) है। ऐसी स्त्री समर्थ होती है (पद 10); वह सीधी और सदाचारी होती है। उसमें बुद्धि और विवेक होता है, जो उसे अपने पति के लिए एक सच्ची सहायक बनने में सक्षम बनाता है। बाइबल घोषणा करती है कि जिस पुरुष को ऐसी अच्छी, समझदार और भले चाल-चलन वाली पत्नी मिलती है, उसे वास्तव में एक वरदान मिला है और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है। जिस पति के पास ऐसी पत्नी होती है, वह एक धन्य पुरुष होता है। इसका कारण यह है कि ऐसी अच्छी, समझदार और भले चाल-चलन वाली पत्नी उसके लिए एक सच्चा वरदान—अत्यधिक मूल्यवान व्यक्ति—बन जाती है।

फिर भी, ऐसा क्यों है कि इतने सारे पति अपनी पत्नियों को परमेश्वर द्वारा दिए गए वरदान के रूप में देखने में असफल रहते हैं? इसका क्या कारण है? एक कारण यह है कि जिस स्त्री की बात हो रही है, वह कोई भले चाल-चलन वाली, समझदार या अच्छी पत्नी नहीं है, बल्कि "एक ऐसी पत्नी है जो लज्जा का कारण बनती है" (12:4)। यहाँ, "एक ऐसी पत्नी जो लज्जा का कारण बनती है," विशेष रूप से उस स्त्री को संदर्भित करती है जो अपने पति के साथ झगड़ा करने की आदी होती है (पार्क यून-सन)। यह उस स्त्री को भी संदर्भित करती है जो अपने शर्मनाक शब्दों या कार्यों के माध्यम से अपने पति पर लज्जा लाती है (इंटरनेट)। झगड़ालू स्त्री के विषय में बाइबल कहती है: "झगड़ालू स्त्री के साथ बड़े घर में रहने से, छत के कोने पर रहना ही भला है" (21:9), और "झगड़ालू और चिड़चिड़ी स्त्री के साथ रहने से, जंगल में रहना ही भला है" (25:24)। शायद हम पुरुषों में से कुछ ऐसे भी हों जिन्हें यह बहाना बनाने का मन करे: "चूँकि परमेश्वर ने मुझे कोई नेक औरत नहीं दी, बल्कि इसके बजाय एक झगड़ालू और बदमिज़ाज औरत दी, तो मैं ऐसी पत्नी को आशीर्वाद कैसे मान सकता हूँ?" क्या यह बहाना सुनने में काफी हद तक सही नहीं लगता? अगर मैं ऐसी बातें सुनूँ, तो मैं उस भाई से यह कहना चाहूँगा: "परमेश्वर ने तुम्हें कोई झगड़ालू और बदमिज़ाज औरत नहीं दी; बल्कि, *तुमने* खुद ऐसी औरत चुनी। इसलिए, इसकी ज़िम्मेदारी लो और उसे एक नेक औरत के रूप में ढालो।" अक्सर ऐसा लगता है कि हम पुरुष परमेश्वर द्वारा दी

गई कोमल, समझदार और नेक औरतों को ठुकरा देते हैं, और इसके बजाय ऐसी औरतों से शादी करना चुनते हैं जो—भले ही हमारी आँखों को सुंदर और आकर्षक लगें—लेकिन बाद में झगड़ालू और बदमिज़ाज निकलती हैं। अगर हमने ऐसा चुनाव किया है, तो हमें इसकी ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए और अपनी पत्नियों को नेक औरतों के रूप में ढालने के लिए खुद को समर्पित कर देना चाहिए। आजकल, बहुत से पुरुष अपनी ही चुनी हुई पत्नियों के प्रति सचमुच गैर-ज़िम्मेदाराना बातें और हरकतें करते हैं। उन्हें अपनी पत्नियों को कोसने में ज़रा भी डर नहीं लगता, और अपनी हरकतों से वे अपनी पत्नियों को यह महसूस कराते हैं कि वे बोझ के सिवा कुछ नहीं हैं—मानो वे कोई जीता-जागता अभिशाप हों। संक्षेप में कहें तो, आज बहुत सी पत्नियाँ अपने पतियों से प्यार पाए बिना ही अपनी ज़िंदगी गुज़ार रही हैं। एक औरत के लिए यह कितनी दुखद ज़िंदगी है! हम पतियों को अपनी पत्नियों को एक आशीर्वाद—एक अनमोल खज़ाना—मानना चाहिए, जो परमेश्वर ने हमें दिया है। सचमुच, पत्नी एक ऐसा आशीर्वाद है जो परमेश्वर ने हम पतियों को दिया है। हमें अपनी पत्नियों से खुश रहना चाहिए और हमेशा उनकी गोद में पूरी संतुष्टि पानी चाहिए।

(b) हम पतियों को अपनी पत्नियों को बहुत प्यार और अपनापन देना चाहिए।

यह बात 1 पतरस 3:7 के पहले हिस्से में मिलती है: “हे पतियों, तुम भी अपनी पत्नियों के साथ रहते हुए समझदारी से पेश आओ, और उन्हें कमज़ोर साथी मानकर उनका आदर करो, क्योंकि वे भी तुम्हारे साथ जीवन का यह अनमोल तोहफ़ा पाने की वारिस हैं...” आधुनिक समाजशास्त्र के शोध से पता चलता है कि शादीशुदा ज़िंदगी में एक पत्नी की तीन बुनियादी ज़रूरतें होती हैं। इनमें सबसे पहली ज़रूरत है प्यार और अपनापन पाना (बाकी दो हैं—समझा जाना और आदर पाना)। हम पतियों को अपनी पत्नियों को बहुत प्यार और अपनापन देना चाहिए। चूँकि प्रभु स्वयं हमारी पत्नियों को सँजोकर रखते हैं, तो हम—जो केवल पति हैं—कौन होते हैं कि परमेश्वर की उस बेटी के साथ तिरस्कार या अपमान का व्यवहार करें, जिसे वह इतना प्रिय मानते हैं? 1 यूहन्ना 4:20 कहता है: “यदि कोई कहे, ‘मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ,’ फिर भी अपने भाई से घृणा करे, तो वह झूठा है। क्योंकि जो कोई अपने भाई से प्रेम नहीं करता, जिसे उसने देखा है, वह परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकता, जिसे उसने नहीं देखा है।” यदि हम पति लोग यह दावा करते हैं कि हम प्रभु को सँजोकर रखते हैं—उस अदृश्य आत्मा, परमेश्वर

की स्तुति इन शब्दों के साथ गाते हैं, “प्रभु यीशु से अधिक कीमती कोई नहीं है” (भजन 102)—फिर भी अपनी पत्नियों को सँजोने में असफल रहते हैं, जिन्हें हम देख सकते हैं, तो यह पाखंड के अलावा और कुछ नहीं है।

आज, 16 जून को, यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में—जहाँ हम रहते हैं—”फादर्स डे” (पिता दिवस) के रूप में मनाया जाता है। मुझे भारत में एक स्थानीय मिशनरी से “हैप्पी फादर्स डे” की एक तस्वीर मिली, और मुझे लगा कि जिस तरह से “F.A.T.H.E.R.S.” शब्द का प्रयोग किया गया था, वह वास्तव में उत्कृष्ट था:

F: Faithful (एक पिता वफ़ादार होता है)।
A: Always there (एक पिता हमेशा मौजूद रहता है)।
T: Trustworthy (एक पिता भरोसेमंद होता है)।
H: Honoring (हम अपने पिता का सम्मान करते हैं)।
E: Ever-loving (एक पिता बिना शर्त प्रेम करता है)।
R: Righteous (एक पिता धर्मी होता है)।
S: Supportive (एक पिता कभी भी अपना समर्थन नहीं रोकता)।

एक स्थानीय भारतीय मिशनरी और उसके पिता—जो वास्तव में “परमेश्वर के जन” थे—के बारे में सोचते हुए, मैंने निम्नलिखित विचार लिखे, जिन्हें मैंने अपने जीवन पर भी लागू किया:

- हमारे पिता—उस परिवार के मुखिया जो यीशु में विश्वास करता है और उससे प्रेम करता है—वास्तव में “परमेश्वर के जन” हैं।
- हमारे पिता—परमेश्वर के इस जन—के माध्यम से, हमारे प्रेमी परमेश्वर ने हम पर, जो उसकी संतान हैं, एक गहरा और सकारात्मक प्रभाव डाला है; वह अभी भी ऐसा करना जारी रखे हुए है, और वह उस दिन तक ऐसा करता रहेगा जब तक हमारी मृत्यु नहीं हो जाती।
- हालाँकि इस संसार में हमें इस प्रेमी पिता से थोड़े समय के लिए अलग होना पड़ता है, मुझे पूरा विश्वास है कि हम आने वाले संसार में फिर मिलेंगे। फिर भी, अपने प्रिय पिता के लिए जो तड़प मैं महसूस करता हूँ, वह

शब्दों से परे एक दुख जैसा लगता है। • मैं इसे परमेश्वर की ओर से एक महान कृपा और आशीर्वाद मानता हूँ कि हम भी—अपने पिता के उदाहरण का पालन करते हुए—यीशु में विश्वास करते हैं और उनसे प्रेम करते हैं, और यह कि हम अपना जीवन यीशु और सुसमाचार के लिए जीने का प्रयास करते हैं।

• जिस प्रकार हमें अपने पिता से इतना गहरा और सकारात्मक प्रभाव मिला, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे अपने बच्चों को भी हमसे वैसा ही प्रभाव मिले।

(c) हम पतियों को अपनी पत्नियों में आनंदित होना चाहिए।

यह हमें नीतिवचन 5:18 पर ले आता है: "तेरा सोता धन्य रहे, और तू अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनंदित हो।" वास्तव में, हम पति अपनी पत्नियों में "आनंदित" कैसे हों? हम पतियों को अपनी पत्नियों के आलिंगन में सदैव पूर्ण संतुष्टि मिलनी चाहिए। यही नीतिवचन 5:19 का संदेश है: "वह एक प्रेममयी हिरनी, एक सुंदर मृगी के समान है; तुम सदैव उसके आलिंगन से मोहित रहो और उसके प्रेम में सदा लीन रहो।" "सदैव उसके आलिंगन से मोहित रहने" का निर्देश यह दर्शाता है कि हम पतियों को अपने हृदय को अपनी पत्नियों के प्रेम द्वारा पूरी तरह से मोहित—मानो बंदी बना हुआ—होने देना चाहिए। विशेष रूप से, हम पतियों को अपने हृदय को अपनी पत्नियों की शारीरिक सुंदरता के बजाय उनके सद्गुणों द्वारा मोहित होने देना चाहिए। "एक प्रेममयी हिरनी" और "एक सुंदर मृगी" के रूप में उनका वर्णन करने वाले रूपक का ठीक यही अर्थ है (पार्क यून-सन)। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम केवल अपनी पत्नियों के प्रेम में आनंदित होंगे—जो हमारे लिए "कुएँ" और "सोते" का काम करती हैं (पद 15)—और हम कभी भी उन्हें छोड़कर किसी व्यभिचारिणी के घर की तलाश में नहीं जाएँगे। दूसरे शब्दों में, जब हमें अपनी पत्नियों के माध्यम से—यौन और भावनात्मक दोनों तरह से—संतोषजनक ताज़गी मिलती है, तो हम कभी भी किसी व्यभिचारिणी के आलिंगन की लालसा नहीं करेंगे और न ही उसके प्रेम का लोभ करेंगे (पद 20)। नीतिवचन 5:16–17 कहता है: "क्या तेरे सोते सड़कों पर, और तेरी जलधाराएँ चौकों में बहें? वे केवल तेरी ही रहें, और अजनबियों के साथ कभी साझा न की जाएँ।"

फिर भी, आज कितने पति अपने सोतों को अपने घरों के बाहर बहने दे रहे हैं, और अपने जल को अजनबियों के साथ साझा कर रहे हैं? कितने पुरुष दूसरी स्त्रियों के पीछे भागने के लिए अपनी पत्नियों को छोड़ रहे हैं? ठीक

इसी क्षण, अनेक पति अपनी पत्नियों के आलिंगन में पूर्ण संतुष्टि पाने में असफल हो रहे हैं; क्योंकि वे अपनी पत्नियों में आनंद नहीं पाते, इसलिए वे अपनी पत्नियों के प्रेम को महत्व नहीं देते (पद 19)। इसके बजाय, वे व्यभिचारिणी स्त्रियों के प्रेम की लालसा करते हैं और दूसरी स्त्रियों की गोद में सुख खोजते हैं (पद 20)। इस प्रकार, जब हम पुरुष अपनी पत्नियों को छोड़कर दूसरी स्त्रियों के पीछे भागते हैं और व्यभिचार में लिप्त होते हैं, तो हमें अनिवार्य रूप से अपने पापपूर्ण चुनावों के परिणामों का सामना करना पड़ता है (पद 7–14)। इन परिणामों में मान-सम्मान की हानि (पद 9), समय की हानि (पद 9), धन की हानि (पद 10), स्वास्थ्य की हानि (पद 11), और एक पीड़ित अंतरात्मा से उत्पन्न कष्ट शामिल हैं (पद 12–14)। इसलिए, व्यभिचार के दुष्परिणामों से पूरी तरह अवगत होते हुए, हमें उस लुभाने वाली स्त्री की लालसा करने से बचना चाहिए। इसके बजाय, हमें अपनी पत्नियों के आलिंगन में ही निरंतर संतोष पाना चाहिए और केवल उन्हीं में आनंदित होना चाहिए।

आज के वचन—कुलुस्सियों 3:19—को देखते हुए, हम पाते हैं कि बाइबल पतियों को दो खास निर्देश देती है। इनमें से पहला यह है कि पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए। तो फिर, हम पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम कैसे करना चाहिए? हमने इस बारे में पाँच बाइबल-आधारित सिद्धांतों में से तीन पर पहले ही मनन कर लिया है: (1) एक पति को अपनी पत्नी को परमेश्वर द्वारा दिया गया एक वरदान समझना चाहिए (नीतिवचन 18:22)। (2) एक पति को अपनी पत्नी का आदर करना चाहिए (1 पतरस 3:7)। (3) एक पति को अपनी पत्नी में आनंद पाना चाहिए (नीतिवचन 5:18)। खास तौर पर, पतियों को अपनी पत्नियों में आनंद कैसे पाना चाहिए? हम पतियों को अपनी पत्नियों के आलिंगन में निरंतर और पूर्ण संतुष्टि मिलनी चाहिए। नीतिवचन 5:19 का संदेश यही है: "वह एक प्रेममयी हिरणी, एक सुंदर मृगी के समान है; तुम सदा उसके प्रेम में मग्न रहो और उसके आलिंगन में पूर्ण संतुष्टि पाओ।" यहाँ, "सदा उसके आलिंगन में पूर्ण संतुष्टि पाना" का निर्देश यह दर्शाता है कि एक पति का हृदय अपनी पत्नी के प्रेम से पूरी तरह से मुग्ध—यानी वश में—हो जाना चाहिए।

हमने पिछले रविवार को इस तीसरे बाइबल-आधारित सिद्धांत पर चर्चा की थी; फिर, पिछले शुक्रवार को, मैंने हमारे "आपसी प्रार्थना सहयोग (KakaoTalk) समूह" में भाई येओंग-सांग द्वारा पोस्ट किया गया एक छोटा सा भक्तिपूर्ण विचार पढ़ा—एक ऐसे भाई जिन्हें मैं अपनी ऑनलाइन सेवकाई के माध्यम से जान पाया था। उनका विचार "श्रेष्ठगीत 4:9" पर केंद्रित था। वह वचन इस प्रकार है: "हे मेरी बहन, हे मेरी दुल्हन, तूने मेरा हृदय चुरा

लिया है; अपनी आँखों की एक ही झलक से, अपने हार के एक ही रत्न से, तूने मेरा हृदय चुरा लिया है।" इस संदर्भ में, "तूने मेरा हृदय चुरा लिया है" और "तूने मेरे हृदय को मुग्ध कर लिया है"—ये वाक्यांश—भाई येओंग-सांग के अनुसार, यह दर्शाते हैं कि "किसी व्यक्ति का अपने ही हृदय पर से नियंत्रण समाप्त हो गया है और वह पूरी तरह से मुग्ध हो गया है; इस हद तक कि उसका हृदय किसी भी समय और किसी भी स्थान पर सहज रूप से उमड़ पड़ता है, और उसका हर पल पूरी तरह से उस दूसरे व्यक्ति की ओर ही समर्पित रहता है।" इसका अर्थ यह है कि प्रभु—जो हमारे दूल्हा हैं—उनका हृदय पूरी तरह से मुग्ध हो गया है; यहाँ तक कि हम—यानी कलीसिया जो उनकी दुल्हन है—की एक क्षणिक झलक मात्र से, अथवा हमारे गले में सजे किसी एक छोटे से आभूषण से भी। जब मैंने एक बार फिर इस अंश पर विचार किया, तो बाइबल के तीन खास वचन मेरे मन में आए: (1) (यशायाह 43:4) "क्योंकि मेरी नज़रों में तुम अनमोल और सम्मानित हो, और क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इसलिए मैं तुम्हारे बदले दूसरे लोगों को दूँगा, और तुम्हारी जान के बदले दूसरे राष्ट्रों को।" (2) (सपन्याह 3:17) "तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ है, वह शक्तिशाली योद्धा जो बचाता है। वह तुममें बहुत खुश होगा; अपने प्यार में वह तुम्हें अब और नहीं डाँटेगा, बल्कि गीत गाकर तुम्हारे ऊपर आनंद मनाएगा।" (3) (भजन संहिता 139:17-18) "हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिए कितने अनमोल हैं! उनकी गिनती कितनी ज़्यादा है! अगर मैं उन्हें गिनने लगूँ, तो वे रेत के कणों से भी ज़्यादा होंगे—जब मैं जागता हूँ, तब भी मैं तेरे साथ ही होता हूँ।"

जब मैंने एक बार फिर इस सच्चाई पर मनन किया कि प्रभु, जो हमारे दूल्हा हैं, हमसे—यानी कलीसिया से, जो उनकी दुल्हन है—कितना असाधारण प्यार करते हैं, तो मैंने खुद से यह आत्म-निरीक्षण वाला सवाल पूछा: "क्या *मैं* भी अपनी पत्नी से उसी हद तक प्यार करता हूँ?" जैसा कि नीतिवचन 5:19 में कहा गया है, मैंने खुद से पूछा: "क्या मुझे अपनी पत्नी का आलिंगन हमेशा पूरी तरह से संतोषजनक और पर्याप्त लगता है?" और "क्या मेरा दिल सचमुच मेरी पत्नी के प्यार से मोहित है?" डॉ. पार्क यून-सन के अनुसार, पतियों को अपने दिलों को अपनी पत्नियों की शारीरिक सुंदरता के बजाय उनके गुणों से मोहित होने देना चाहिए। इसलिए, कल—शनिवार को—मैंने खुद से पूछा, "मेरी पत्नी के वे कौन से खास गुण हैं जिन्होंने सचमुच मेरे दिल को मोहित कर लिया है?" हालाँकि, जब मुझे एहसास हुआ कि मैं "गुण" शब्द का अर्थ पूरी तरह से नहीं समझ पाया हूँ, तो मैंने इसे ऑनलाइन खोजने का फैसला किया। एक कोरियाई शब्दकोश इसे इस तरह परिभाषित करता है: "एक ऐसा

कार्य जो नैतिक रूप से सही और सुंदर हो, या आम तौर पर ऐसा आचरण" (इंटरनेट)। फिर भी, इस सामान्य परिभाषा के बजाय, मैं पादरी जोनाथन एडवर्ड्स द्वारा अपनी किताब *The Nature of True Virtue* में बताए गए अर्थ की ओर ज़्यादा गहराई से आकर्षित हुआ। पास्टर एडवर्ड्स के अनुसार, सच्चे सद्‌गुण की परिभाषा है "ईश्वर के प्रति बिना शर्त प्रेम और संतों के प्रति बिना शर्त प्रेम।" हालाँकि, इस सद्‌गुण के सच्चे स्वामी स्वयं ईश्वर ही हैं; वास्तव में, ईश्वर *ही* सच्चा सद्‌गुण हैं। हम इस सच्चे सद्‌गुण को तभी प्राप्त कर पाते हैं, जब हम ईश्वर द्वारा प्रदान की गई पवित्र आत्मा के माध्यम से 'पुनर्जन्म' पाते हैं। परिणामस्वरूप, हम ईश्वर से बिना शर्त प्रेम करने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, हम उन साथी विश्वासियों से भी—बिना शर्त—प्रेम करने लगते हैं, जिन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है; क्योंकि पवित्र आत्मा स्वयं उन लोगों के भीतर सीधे तौर पर विद्यमान रहती है, जिन्होंने उसके माध्यम से पुनर्जन्म पाया है" (इंटरनेट)। अपनी पत्नी के सद्‌गुणों पर और अधिक ठोस रूप से विचार करने की इच्छा से, मैंने नीतिवचन 31:10–31 में वर्णित "उत्तम पत्नी" की छह विशेषताओं वाले अंश को—जिसका अध्ययन मैं पहले भी कर चुका था—एक बार फिर से पढ़ा और उस पर मनन किया; तथा उन विशिष्ट तरीकों पर विचार किया, जिनके द्वारा मेरी पत्नी एक ऐसी सद्‌गुणी स्त्री के गुणों को अपने जीवन में साकार करती है। उन छह बिंदुओं में से, मेरा मानना है कि तीन बिंदु विशेष रूप से मेरी पत्नी पर लागू होते हैं: (1) इस वचन पर किए गए मनन के अनुसार—"एक सद्‌गुणी स्त्री अपने पति में विश्वास जगाती है" (पद 11–12)—मेरी पत्नी मुझ पर अपना विश्वास रखती है। परिणामस्वरूप, मैं भी उस पर अपना विश्वास रखता हूँ। (2) इस वचन पर किए गए मनन के अनुसार—"एक सद्‌गुणी स्त्री अपने पति को दूसरों द्वारा सम्मानित होने में सहायक सिद्ध होती है" (पद 23)—मेरी पत्नी मुझे एक ऐसे पुरुष के रूप में स्थापित करने में सहायता करती है, जिसे मेरे आस-पास के लोग पहचानते हैं और सम्मान देते हैं। (3) इस वचन पर किए गए मनन के अनुसार—"एक सद्‌गुणी स्त्री की वाणी में बुद्धिमत्ता होती है" (पद 26)—मेरी पत्नी की वाणी में—मेरी दृष्टि में—वास्तव में बुद्धिमत्ता है। "बुद्धिमत्तापूर्ण वाणी" से मेरा तात्पर्य यह है कि मेरी पत्नी "उचित अवसर पर उचित बात" कहने में निपुण है (15:23)। दूसरे शब्दों में, जब वह दूसरों से बात करती है, तो वह विभिन्न कारकों पर सावधानीपूर्वक विचार करती है और अत्यंत विवेक के साथ अपनी वाणी को संयमित करती है (पार्क यून-सन)।

(d) हम पतियों को अपनी पत्नियों से वैसा ही प्रेम और उनकी वैसी ही कद्र करनी चाहिए, जैसा हम अपने स्वयं के शरीर की करते हैं। यह बात इफिसियों 5:28 और वचन 33 के पहले भाग से ली गई है: “इसी तरह, पतियों

को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे वे अपने शरीर से करते हैं। जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है, वह स्वयं से प्रेम करता है... फिर भी, आप में से हर एक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे वह स्वयं से करता है।" जिस तरह हम पति अपने शरीर की ज़रूरतों का ध्यान रखते हैं, उसी तरह हमारी पत्नियों के प्रति हमारा प्रेम उनकी ज़रूरतों को पूरा करने वाला होना चाहिए, जिससे उनके विकास और उन्नति को बढ़ावा मिले। इसके अलावा, हम पतियों को अपनी पत्नियों से दो खास उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रेम करना चाहिए। ये दो उद्देश्य हैं: उसे पवित्र बनाना (इफिसियों 5:26a) और उसे प्रभु के सामने एक दीप्तिमान पत्नी के रूप में प्रस्तुत करना (वचन 27)। इसके अतिरिक्त, इस उद्देश्य को प्राप्त करने की विधि का वर्णन इफिसियों 5:26 के पहले भाग में किया गया है, जिसमें कहा गया है, "वचन के द्वारा जल से स्नान कराकर उसे शुद्ध करना," और 1 पतरस 1:22 में, जिसमें कहा गया है, "सत्य की आज्ञा मानकर अपने प्राणों को पवित्र करने के बाद..." हम पतियों को अपनी पत्नियों को परमेश्वर के सत्य के वचन से शिक्षा देनी चाहिए और उन्हें उस वचन का पालन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे हम उन्हें संसार से अलग एक जीवन जीने का मार्गदर्शन दे सकें—अर्थात्, परमेश्वर में पवित्रता का जीवन। इसलिए, हम पतियों को अपनी पत्नियों का इस प्रकार पालन-पोषण करना चाहिए कि वे प्रभु की दृष्टि में "महिमामयी पत्नियाँ" बन सकें—ऐसी पत्नियाँ जिनके द्वारा उसकी महिमा प्रकाशित हो।

(e) हम पतियों को अपनी पत्नियों के लिए त्याग करने को तैयार रहना चाहिए।

इफिसियों 5:25 कहता है: "हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।" पतियों को त्यागपूर्ण प्रेम का अभ्यास करना चाहिए; हालाँकि, इस प्रेम का एकमात्र उद्देश्य पत्नी की भलाई के लिए होना चाहिए—यह इस उम्मीद से नहीं किया जाना चाहिए कि उससे कोई इनाम मिलेगा, बल्कि यह उसकी देखभाल करने की सच्ची इच्छा से प्रेरित होना चाहिए। पतियों को छोटी-छोटी बातों से शुरुआत करते हुए त्याग करना सीखना चाहिए। उदाहरण के लिए, ध्यान देने के छोटे-छोटे इशारे दिखाना—जैसे उसकी बात ध्यान से सुनना, साथ समय बिताना, कभी-कभी कूड़ा बाहर रखना, या यहाँ तक कि रसोई में जाकर बर्तन धोने का दिखावा करना—भी पत्नी को गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में महसूस हो सकता है।

(f) हम पतियों को अपने बच्चों के पालन-पोषण की सक्रिय ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए।

इफिसियों 6:4 कहता है: “हे पिताओं, अपने बच्चों को गुस्सा न दिलाओ, बल्कि उन्हें प्रभु के अनुशासन और शिक्षा में पालो।” अपने घरों के मुखिया होने के नाते, हम पतियों को अपना आध्यात्मिक पालन-पोषण केवल अपनी पत्नियों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए; हमें अपने बच्चों को भी प्रभु के अनुशासन और शिक्षा में पालना चाहिए। जब बच्चों के पालन-पोषण की बात आती है, तो हमें यह पूरा काम केवल अपनी पत्नियों पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए, जबकि हम खुद निष्क्रिय बने रहें। हमें अपने बच्चों के पालन-पोषण में अपनी ज़िम्मेदारियों को सक्रिय रूप से और आगे बढ़कर निभाना चाहिए।

अपनी किताब *Spiritual Life* में, डॉ. मार्टिन लॉयड-जोन्स ने लिखा: “एक पति को अपनी पत्नी से अपने ही शरीर की तरह, अपने ही एक हिस्से की तरह प्रेम करना चाहिए। वह उसका अपमान नहीं करता। वह उसे नज़रअंदाज़ नहीं करता। वह उससे यह उम्मीद नहीं करता कि वह पूरी तरह से परिपूर्ण हो। वह उसकी कमज़ोरियों के क्षेत्रों में उसकी रक्षा करता है। वह उसे मज़बूत बनाता है।” काश, हम पति ऐसे पुरुष बनें जो अपनी पत्नियों से प्रेम करने के लिए सचमुच समर्पित हों। कल, हमारी शनिवार की सुबह की प्रार्थना सभा के बाद, मैंने अपने उपदेश का वीडियो, जिसका शीर्षक था “शोक एक अवसर है (1)”, कई लोगों के साथ साझा किया। बाद में, आज की रविवार की सभा की तैयारी करते समय, मैंने “GRACE TO KOREA” नाम की एक ईसाई वेबसाइट देखी। जब मैं वहाँ प्रकाशित लेखों की सुर्खियों पर नज़र डाल रहा था, तो एक खास शीर्षक ने मेरा ध्यान खींचा: “बाइबल के अनुसार विवाह: 10. वैवाहिक संघर्ष को सुलझाना (1)।” मैंने इसे पढ़ने का फ़ैसला किया। लेख में लेखक लिखते हैं, “जीवनसाथी प्यार का पात्र होता है, फिर भी झगड़े के बीच, वह विवाद का पात्र बन जाता है।” फिर लेखक *Standard Korean Language Dictionary* में दिए गए “झगड़ा” (*galdeung*) शब्द की परिभाषा समझाते हैं: “एक ऐसी स्थिति जिसमें व्यक्ति या समूह—ठीक वैसे ही जैसे कुडज़ू और विस्टेरिया की बेलें आपस में उलझ जाती हैं—एक-दूसरे को दुश्मनी की नज़र से देखते हैं या अलग-अलग लक्ष्यों या हितों के कारण आपस में टकराते हैं।” इसलिए, बात यह है कि पति और पत्नी के बीच भी दुश्मनी पैदा हो सकती है, अगर उनके लक्ष्य या हित अलग-अलग हों। तो, शादीशुदा ज़िंदगी में झगड़ा क्यों होता है? मैं सिर्फ़ दो मुख्य कारणों पर विचार करना चाहूँगा:

- “अंतर”

“अगर आपने कभी अपने जीवनसाथी की तरफ़ देखकर कहा हो, ‘मैं तुम्हें बिल्कुल भी नहीं समझ पाता!’—तो आप ऐसे व्यक्ति हैं जो पहले से ही अच्छी तरह जानते हैं कि झगड़ा ठीक इसी वजह से होता है क्योंकि लोग अलग-अलग होते हैं। हालाँकि हमारे अंतर, अपने आप में, पाप नहीं हैं, शादी में दो अलग-अलग व्यक्ति मिलकर ‘एक तन’ बन जाते हैं; इसलिए, सच्ची एकता पाने के लिए इन ‘अंतरों’ को समझने और एक-दूसरे को स्वीकार करने के लिए लगातार कोशिश की ज़रूरत होती है।”

- “पाप”

“हालाँकि पति और पत्नी के बीच के अंतर अपने आप में पाप नहीं हैं, पति और पत्नी दोनों में मौजूद घमंड और शारीरिक इच्छाएँ ही झगड़े के मुख्य कारण हैं—और उनकी जड़ें पाप में हैं (गलातियों 5:19–21; याकूब 4:1–3)। पाप अक्सर एक बहुत छोटी सी इच्छा के रूप में शुरू होता है, फिर भी यह हमेशा एक ज़बरदस्त माँग के रूप में खत्म होता है। एक ‘ज़रूरत’ एक ‘चाहत’ में बदल जाती है, और वह ‘चाहत’ तेज़ी से एक ‘माँग’ में बदल जाती है।” उस लेख की सामग्री में से, जिस हिस्से ने मेरा ध्यान सबसे ज़्यादा खींचा, उसका शीर्षक था: “उन जोड़ों की विशेषताएँ जो झगड़े को ठीक से संभाल नहीं पाते या सुलझा नहीं पाते।”

- “पूरी तरह से चुप रहना”

“समस्याओं को सुलझाने के लिए सक्रिय रूप से काम करने के बजाय, ऐसे जोड़े बस कुछ नहीं करते, यह उम्मीद करते हुए कि समस्याएँ अपने आप ही खत्म हो जाएँगी। हालाँकि, असल में, यह अपनी पत्नी के प्रति प्यार का काम नहीं है, बल्कि ऐसा काम है जिससे उसे तकलीफ़ होती है (कुलुस्सियों 3:19)।” • “एक-दूसरे से दूर हटना”

"यह व्यवहार इस उम्मीद से पैदा होता है कि एक-दूसरे से दूरी बनाए रखने से, हर पति-पत्नी को अकेले में कुछ हद तक शांति मिल पाएगी और वे उसका आनंद ले पाएँगे। फिर भी, यह तरीका बाइबल के इस आदेश से बहुत अलग है कि 'एक-दूसरे से गहरा प्रेम करो' और 'बहुत से पापों को ढाँप लो' (1 पतरस 4:8)। यह शादीशुदा ज़िंदगी की नज़दीकी को कुर्बान करने की इच्छा दिखाता है, और इसकी जगह बस बड़े झगड़ों से बचने को ही काफी मान लेता है। पति-पत्नी जान-बूझकर उन विषयों को टाल सकते हैं जिन पर बात करना बहुत ज़रूरी है—इस डर से कि उन पर बात करने से झगड़ा शुरू हो जाएगा—या वे कुछ बातों को छिपा सकते हैं या अपने गहरे ज़ख्मों को दबा सकते हैं। उन्हें लग सकता है कि ऐसा करने से झगड़ा टल जाएगा; लेकिन सच तो यह है कि वे बस समस्याओं को नज़रअंदाज़ कर रहे होते हैं। क्योंकि इन समस्याओं पर सही समय पर ध्यान नहीं दिया जाता, इसलिए वे धीरे-धीरे और बिगड़ जाती हैं और फिर अचानक फूट पड़ती हैं, जिससे और भी बड़े झगड़े होते हैं।"

दूसरी बात, पतियों को यह हिदायत दी गई है कि वे अपनी पत्नियों को दुख न पहुँचाएँ।

यह बात कुलुस्सियों 3:19 में मिलती है: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ कठोरता से पेश न आओ।" हम पति अपनी पत्नियों को दुख कब पहुँचाते हैं? असल में, मुझे लगता है कि हमें अक्सर पता भी नहीं चलता कि हम *कब* उन्हें दुख पहुँचा रहे हैं। या, अगर हमें पता चल भी जाता है और फिर भी हम उन्हें दुख पहुँचाते रहते हैं, तो यह उस तरह का प्रेम नहीं है जैसा मसीह ने कलीसिया से किया था। हम पतियों को इतना संवेदनशील होना चाहिए कि हम पहचान सकें कि *कब*—और *किन कारणों से*—हमारी प्यारी पत्नियाँ हमारी वजह से दुख उठा रही हैं। इसलिए, हमें अपनी पत्नियों को दुख नहीं पहुँचाना चाहिए। अपनी पत्नी को दुख पहुँचाना, असल में, खुद को ही दुख पहुँचाना है; इसका कारण यह है कि हम एक ही शरीर हैं। घर में, एक मूर्ख पति—जो घर के मुखिया के तौर पर मूर्खतापूर्ण व्यवहार करता है—अपनी पत्नी से प्रेम करने के बजाय उसके साथ कठोरता से पेश आता है (कुलुस्सियों 3:19)। अपनी पत्नी की बातों का नरमी से जवाब देने के बजाय, वह अपनी कठोर बातों से उसे गुस्सा दिलाता है (नीतिवचन 15:1)। इसके अलावा, एक मूर्ख पति अपनी पत्नी को लगातार ताने मारकर भी दुख पहुँचाता है। "हर तरह की चिक-चिक में से, जो बात एक पत्नी के दिल को सबसे ज़्यादा गहरी चोट पहुँचाती है, वह है बिना किसी शर्त के की जाने वाली आलोचना—ऐसी बातें जैसे, 'तुम

सारा दिन घर पर रहती हो; आखिर तुम *करती* क्या हो?' या 'क्या तुम यह एक छोटी सी चीज़ भी ठीक से नहीं कर सकती?'" एक चिक-चिक करने वाला पति—खासकर वह जो घर के पैसों पर अपना कंट्रोल रखता है—अक्सर अपनी पत्नी को खुद से कमतर समझता है; चाहे जान-बूझकर हो या अनजाने में, वह दिन-ब-दिन अपनी चिक-चिक दोहराकर उसे ज़ख्म देता रहता है। ज़्यादातर चिक-चिक करने वाले पति अपनी पत्नियों से बातचीत करने के बजाय गुस्से में उन पर बरस पड़ते हैं; ऐसा पति, अपनी पत्नी से ठीक से बात करने से इनकार करके, शायद किसी अंदरूनी मानसिक समस्या से जूझ रहा होता है, जिससे उसके लिए सच्ची बातचीत करना मुश्किल हो जाता है, और वह लगातार चिक-चिक करने लगता है (स्रोत: इंटरनेट)। जब हम आज के धर्मग्रंथ के अंश—कुलुस्सियों 3:19—को देखते हैं, तो बाइबल हमें यह निर्देश देती है: "हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ कठोरता से पेश न आओ।" जब मैंने एक बार फिर इस वचन पर मनन किया, तो मेरे मन में यह विचार आया कि "एक पत्नी के लिए सबसे बड़ी पीड़ा यही है कि उसे प्यार न मिले।" 11 जनवरी, 2018 को, मैंने "वह स्त्री जिसे उसके पति ने प्यार नहीं किया" शीर्षक से एक भक्तिपूर्ण लेख लिखा था, जिसमें मैंने उत्पत्ति 29:31 और लेआ की कहानी पर ध्यान केंद्रित किया था—एक ऐसी स्त्री जिसे उसके पति, याकूब ने प्यार नहीं किया था। जिस पत्नी को उसके पति का प्यार नहीं मिलता, उसे गहरी पीड़ा सहनी ही पड़ती है। यह बात खासकर परमेश्वर की बेटियों—उन नेक और अनमोल स्त्रियों के लिए सच है जो उसका प्यार पाने के लिए पैदा हुई हैं—कि यदि उन्हें न केवल अपने पतियों से प्यार नहीं मिलता, बल्कि इससे भी बुरा यह कि उन्हें अपने पतियों की दुश्मनी का सामना करना पड़ता है, और वे अपने दिन चोट, दर्द और आँसुओं के चक्र में बिताती हैं। यह सचमुच कितना कष्टदायक जीवन होगा! लेआ को याकूब का प्यार न मिलने का कारण यह था कि वह उसकी छोटी बहन, राहेल—जो सुंदर और प्यारी थी—से लेआ की तुलना में कहीं ज़्यादा प्यार करता था, जिसकी नज़र कमज़ोर थी (वचन 17–18)। ऐसे मामलों में, जिन पत्नियों को अपने पतियों से प्यार नहीं मिलता, उन्हें अक्सर अनजाने में अपने बच्चों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्यार बरसाते हुए देखा जा सकता है, ताकि वे अपनी शादी में प्यार की कमी की भरपाई कर सकें। नतीजतन, क्योंकि इन बच्चों को अपनी माँ का अत्यधिक प्यार और ज़रूरत से ज़्यादा सुरक्षा मिलती है, इसलिए उनमें "माँ के लाडले" या "माँ की लाडलियाँ" बनने का काफ़ी ज़्यादा जोखिम दिखाई देता है।

आखिरकार, एक कमज़ोर वैवाहिक रिश्ता माता-पिता और बच्चे के रिश्ते को भी बिगाड़ देता है। "ऐसी स्थितियों में, माता-पिता अनजाने में अपनी शादी में अधूरी रह गई भावनात्मक, सामाजिक या यौन ज़रूरतों को अपने बच्चों के ज़रिए पूरा करने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा, वे अक्सर अपने जीवनसाथी के प्रति अपने मन में दबी नाराज़गी और दुश्मनी—जो उन्हें अपने जीवनसाथी से न मिल पाने वाली चीज़ों की वजह से होती है—की भरपाई बच्चे का पक्ष लेकर करने की कोशिश करते हैं, और इस तरह वे अपने जीवनसाथी को परिवार के दायरे से ही बाहर कर देते हैं" (स्रोत: इंटरनेट)। ऐसा लगता है कि कई जोड़े खुद से यह कहकर अपनी शादी निभाते रहते हैं कि, "हम बच्चों की खातिर साथ रह रहे हैं," और उनका इरादा यह होता है कि जब बच्चे बड़े हो जाएँगे, तो वे तलाक़ ले लेंगे। सच तो यह है कि 2019 में मैंने एक लेख पढ़ा था, जिसके अनुसार उस साल कोरिया में तलाक़ के कुल 108,684 मामले सामने आए थे; इनमें से "सिल्वर तलाक़"—यानी ऐसे जोड़ों के तलाक़, जिनकी शादी को 20 साल से ज़्यादा हो चुके थे—की हिस्सेदारी सबसे ज़्यादा, यानी 33.3% (36,327 मामले) थी, और इसके बाद 0 से 4 साल पहले शादी करने वाले नए जोड़ों का नंबर था, जिनकी हिस्सेदारी 21.4% थी। मेरा मानना है कि जब वैवाहिक रिश्ता न तो सौहार्दपूर्ण होता है और न ही उसमें कोई अपनापन होता है, तो पत्नी—खास तौर पर—अनजाने में अपने बच्चों पर ज़रूरत से ज़्यादा प्यार बरसाने लगती है, ताकि उसे अपने पति से जो प्यार नहीं मिल रहा है, उसकी भरपाई हो सके। इसकी वजह यह है कि अवचेतन स्तर पर, पत्नी शायद अपने बच्चों *से* प्यार पाने की चाहत रखती है। हमें एक पल रुककर अपने वैवाहिक रिश्तों की मौजूदा स्थिति पर विचार करना चाहिए। इसकी वजह यह है कि हमारे बच्चे शायद भावनात्मक रूप से तकलीफ़ झेल रहे हों—उनके दिल बीमार पड़ रहे हों—क्योंकि उनके माता-पिता अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ उन्हीं पर केंद्रित करके जी रहे हैं। आखिरकार, आज के धर्मग्रंथ के अंश—कुलुस्सियों 3:19—के अनुसार, मेरा मानना है कि पतियों के लिए अपनी पत्नियों से सच्चा प्यार करना ही यह सुनिश्चित करने का सबसे सही तरीका है कि वे उन्हें कड़वाहट न दें। दूसरे शब्दों में, इससे मिलने वाला सबक यह है कि पतियों को अपनी पत्नियों से प्यार करना चाहिए, लेकिन उन्हें ऐसा "ठीक वैसे ही करना चाहिए, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्यार किया और उसके लिए खुद को कुर्बान कर दिया" (इफिसियों 5:25)। यहाँ *कंटेम्पररी कोरियन बाइबल* से इफिसियों 5:28 दिया गया है: "इसी तरह, पतियों को अपनी पत्नियों से अपने ही शरीर के समान प्रेम करना चाहिए। अपनी पत्नी से प्रेम करना, स्वयं से प्रेम करना है।"

तीसरी बात, परमेश्वर बच्चों से क्या कहते हैं?

यह कुलुस्सियों 3:20 में मिलता है: “हे बच्चों, सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह प्रभु को भाता है” [(समकालीन कोरियाई बाइबल) “हे बच्चों, सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो। यही वह बात है जो प्रभु को प्रसन्न करती है”]। 11 मई, 2021 को, मुझे एक लेख मिला जिसका शीर्षक था “’यदि तुम अपने माता-पिता की बातों का कड़ाई से पालन करोगे, तो तुम्हारा हाल भी मेरी तरह ही होगा’—नो सो-यंग का पछतावा,” जिसे मैंने बड़े चाव से पढ़ा। उस लेख में निम्नलिखित अंश था: “...निर्देशक नो ने अपने परिचितों के साथ यह बात साझा की कि उनकी माँ, श्रीमती किम ने उनसे कहा था: ‘मुझे खेद है—खेद है कि मैंने तुम्हें अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने से रोका और तुम्हें घर की चारदीवारी में ही कैद रखा; खेद है कि मैंने तुमसे ऐसे पति का इंतज़ार करने को कहा जो कभी लौटा ही नहीं; और खेद है कि मैंने इस बात पर ज़ोर दिया कि एक स्त्री की खुशी मुख्य रूप से उसके परिवार में ही निहित होती है। तुम मुझसे बिल्कुल अलग इंसान हो, फिर भी ऐसा लगता है कि मैंने यह सब अपनी ही स्वार्थी इच्छाओं के चलते किया।’ निर्देशक नो ने आगे कहा, ‘यदि तुम अपने माता-पिता की बातों का कड़ाई से पालन करोगे, तो तुम्हारा हाल भी बिल्कुल मेरी तरह ही होगा। मैं यह संदेश हर युवा व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ’” (इंटरनेट)। जब मैंने यह लेख पढ़ा, तो मुझे लगा कि यह एक ऐसा विषय है जिस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है, इसलिए मैंने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए एक लेख लिखा [जिसका शीर्षक था “लेख पढ़ने के बाद: ‘नो सो-यंग का चेहरा मुरझा गया, आँखों में आँसू थे... उनके पिता, जिन्होंने धैर्य के साथ सब कुछ सहा’”। उस लेख में जो विशिष्ट वाक्यांश मुझे लगा कि हमारे गहन विचार का हकदार है, वह ठीक यही था: “यदि तुम अपने माता-पिता की बातों का कड़ाई से पालन करोगे, तो तुम्हारा हाल भी बिल्कुल मेरी तरह ही होगा।” इस कथन पर हमारे विचार की आवश्यकता का कारण यह है कि जहाँ बाइबल स्पष्ट रूप से आज्ञा देती है, “हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है” (इफिसियों 6:1), वहीं निर्देशक नो ने कहा, “यदि तुम अपने माता-पिता की बातों का कड़ाई से पालन करोगे, तो तुम्हारा हाल भी बिल्कुल मेरी तरह ही होगा।” यदि यह पूछा जाए कि, “हमें किसकी बातें सुननी चाहिए?” हममें से ज़्यादातर लोग स्वाभाविक रूप से यही जवाब देंगे कि हमें बाइबल के वचनों का पालन करना चाहिए। हालाँकि, मेरा मानना है कि धर्मग्रंथों का पालन करते समय भी, हमें 'डायरेक्टर नोह' नाम के एक व्यक्ति

द्वारा कही गई बातों पर ध्यान से गौर करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जहाँ एक तरफ परमेश्वर के वचन में हमें अपने माता-पिता की आज्ञा मानने का आदेश दिया गया है—विशेष रूप से "प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो" (इफिसियों 6:1)—वहीं मेरा मानना है कि हमें इस बाइबल-संबंधी निर्देश पर, डायरेक्टर नोह द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि के साथ-साथ, गंभीरता से विचार करना चाहिए। प्रार्थना के माध्यम से, परमेश्वर हममें से हर किसी को वह बुद्धि प्रदान करेगा जिससे हम यह पहचान सकें और अंतर कर सकें कि माता-पिता के किन निर्देशों का पालन हमें *प्रभु में* करना चाहिए और किनका नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा बिना किसी शर्त के नहीं माननी चाहिए।

उदाहरण के लिए, मैं निश्चित रूप से यह नहीं चाहता कि मेरे प्यारे बच्चे—डिलन, येरी और यीउन—ऐसे बच्चे बनें जो अपने पिता के रूप में मेरी आज्ञा बिना कोई सवाल किए मान लें। इसका कारण यह है कि जब मैं उनसे बात करता हूँ, तो हो सकता है कि मेरी बातें गलत हों। मैं प्रभु की पूरी इच्छा को कैसे जान सकता हूँ? मैं यह कैसे सुनिश्चित कर सकता हूँ कि मैं अपने बच्चों से जो भी बात कहता हूँ, वह पूरी तरह से प्रभु के आदेशों के अनुरूप हो और विश्वास के साथ कही गई हो? मैं किसी भी तरह से ऐसा पिता नहीं हूँ जो इतनी पूर्णता हासिल कर सके। इसके अलावा, जब परमेश्वर मेरे तीनों बच्चों में से हर एक के जीवन में अपने विशिष्ट उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम कर रहा है, तो क्या होगा यदि मैं—अज्ञानता या समझ की कमी के कारण—उन्हें मनमाने आदेश दे दूँ? उनके दृष्टिकोण से, परमेश्वर निश्चित रूप से उनके साथ उनके व्यक्तिगत संबंधों के संबंध में विशिष्ट प्रेरणाएँ और मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है; यदि मैं, उनके पिता के रूप में, उस ईश्वरीय मार्गदर्शन का खंडन करूँ, तो इसका क्या परिणाम होगा? अंततः, मेरी यही इच्छा है कि मेरे बच्चे परमेश्वर के वचन का पालन करें। जिस लेख को पढ़ने के बाद मुझे यह लेख लिखने की प्रेरणा मिली—शायद कुछ हद तक जोश के साथ—उसका कारण यह है कि, अक्सर हम माता-पिता अपने बच्चों का पालन-पोषण परमेश्वर के हृदय और इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी स्वार्थी इच्छाओं, अपूर्ण विश्वास और दोषपूर्ण आध्यात्मिक दृष्टिकोणों के अनुसार करते हैं। अगर, इस सच्चाई को पहचानने और स्वीकार करने में नाकाम रहते हुए—और अपने बच्चों से प्यार करने की आड़ में (अक्सर हद से ज़्यादा, जिसमें बहुत ज़्यादा सुरक्षा देना, हर चीज़ में दखल देना, वगैरह शामिल है)—हम लगातार उनके कामों पर हुक्म चलाते रहें, यहाँ तक कि उनसे अपने फ़ैसले लेने का हक़ भी छीन लें, तो उनका क्या होगा? *आह*... मुझे नहीं लगता कि यह सही तरीका है।

आज के धर्मग्रंथ के अंश, कोलोसियों 3:20 को देखें, तो बाइबल कहती है: "बच्चों, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इससे प्रभु खुश होते हैं।" जब मैं इस वचन पर, इफिसियों 6:1 के साथ मिलाकर मनन कर रहा था, तो मैंने अपना ध्यान सिर्फ़ इस आज्ञा पर नहीं लगाया कि बच्चों को "हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए," बल्कि उस खास शर्त पर लगाया: अपने माता-पिता की आज्ञा मानना "*प्रभु में*" (इफिसियों 6:1)। इस पर ध्यान देने की वजह यह है कि "प्रभु में विश्वास रखने वाले व्यक्ति के तौर पर ऐसा करना ही सही काम है" (वचन 1, *मॉडर्न पीपल्स बाइबल*)। अगर हम इफिसियों 6:1 को दूसरे नज़रिए से देखें, तो इसका मतलब यह निकलता है कि बच्चों का अपने माता-पिता की आज्ञा *प्रभु से बाहर* रहकर मानना, एक विश्वासी के लिए सही काम नहीं है; बल्कि, यह एक गलत—या भ्रामक—रास्ता है। दूसरे शब्दों में, जहाँ आज का अंश कोलोसियों 3:20 कहता है, "बच्चों, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो..." और इफिसियों 6:1 कहता है, "बच्चों, अपने माता-पिता की आज्ञा *प्रभु में* मानो..."—जब हम इन दोनों अंशों को एक साथ ध्यान में रखते हैं, तो बाइबल बच्चों को जो पूरा संदेश (या निर्देश) देती है, वह यह है: "बच्चों, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, *प्रभु में*।" हालाँकि, ऐसा लगता है कि बच्चे अक्सर इस पूरे नज़रिए को नज़रअंदाज़ कर देते हैं; इन धर्मग्रंथों पर पूरी तरह से मनन करने और उन्हें समझने में नाकाम रहते हुए, वे बस यह मान लेते हैं कि वे *हर एक मामले में* बिना किसी शर्त के अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए बाध्य हैं। इसका मतलब यह है कि बच्चे अक्सर अपने माता-पिता की आज्ञा *प्रभु में* मानने की आज्ञा को गलत समझ लेते हैं; वे गलती से यह मान लेते हैं कि उन्हें अपने माता-पिता की *हर बात* माननी चाहिए—यहाँ तक कि वे निर्देश भी जो प्रभु के संदर्भ से बाहर दिए गए हों। उदाहरण के लिए, जब माता-पिता अपनी मर्ज़ी और स्वार्थी इच्छाओं के अनुसार अपने बच्चों से बात करते हैं—न कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार—तो बच्चों को, परमेश्वर की बुद्धि से, यह समझना चाहिए कि ऐसे निर्देश *प्रभु में* आज्ञापालन नहीं कहलाते, और इसलिए उन्हें विनम्रतापूर्वक उनका पालन करने से मना कर देना चाहिए। फिर भी, धर्मग्रंथ की गलतफहमी के कारण, वे अक्सर अपने माता-पिता की आँख मूँदकर और बिना किसी शर्त के आज्ञा मानने के लिए विवश महसूस करते हैं। जैसा कि आज के हमारे पाठ में कहा गया है—कुलुस्सियों 3:20 (*मॉडर्न मैन्स बाइबिल* अनुवाद से)—यह ऐसा कार्य नहीं है जिससे प्रभु प्रसन्न होते हैं।

अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के मामले में, बच्चों को अपने माता-पिता को प्रसन्न करने के बजाय प्रभु को प्रसन्न करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। मुझे अभी भी अपने विश्वविद्यालय के दिनों की एक घटना याद है—लगभग 34 साल पहले—जब कैंपस में मेरी मुलाक़ात एक जूनियर छात्रा से हुई, जो अपने खराब अकादमिक अंकों (grades) को लेकर परेशान लग रही थी। मैंने उसे कुछ प्रोत्साहन दिया, और सुझाव दिया कि वह बस अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करे और अपने अंकों का परिणाम परमेश्वर के हाथों में छोड़ दे। उस समय उसका जवाब था कि उसके माता-पिता अप्रसन्न हो जाएँगे। दूसरे शब्दों में, वह स्पष्ट रूप से इस बात को लेकर चिंतित थी कि यदि उसका अकादमिक प्रदर्शन खराब रहा, तो उसके माता-पिता खुश नहीं होंगे। मेरा मानना है कि, आज भी, कई बच्चे—अपने माता-पिता के प्रति अपने सच्चे प्रेम के कारण—उन्हें खुशी देने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। ऐसे प्रयासों के बीच, कुछ बच्चे अंततः खुद को एक कठिन प्रश्न से जूझते हुए पा सकते हैं: क्या अपने माता-पिता को प्रसन्न करना वास्तव में प्रभु को प्रसन्न करने के बराबर है? इस प्रश्न के उठने का कारण यह है कि कई बार ऐसा होता है जब अपने माता-पिता को प्रसन्न करना सीधे तौर पर प्रभु को प्रसन्न करने के विपरीत हो जाता है। जब उनके हृदयों में ऐसा टकराव उत्पन्न होता है, तो हमारे बच्चों को वास्तव में क्या करना चाहिए? शायद उन्हें प्रार्थना करने का अभ्यास करने की आवश्यकता है—ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने गेथसेमानी के बगीचे में किया था, जब उन्होंने विनती की थी, "हे पिता, यदि संभव हो, तो यह दुख का प्याला मुझसे दूर कर दे। फिर भी, जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" (मत्ती 26:39)—यह कहते हुए, "यह मेरे माता-पिता की इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि प्रभु की इच्छा के अनुसार हो।" सबसे ज़रूरी बात यह है: हालाँकि बच्चों के लिए अपने माता-पिता को खुश करने के इरादे से उनकी आज्ञा मानना एक नेक काम है, लेकिन अगर ऐसी आज्ञाकारीता प्रभु की आज्ञाकारीता से टकराती है—जो उन्हें खुश करने के लिए की जाती है—तो बच्चों को प्रभु की आज्ञा मानने और इस तरह उन्हें खुश करने का चुनाव करना चाहिए।

तो फिर, बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानते हुए प्रभु को कैसे खुश करना चाहिए? सबसे पहले, अपने माता-पिता के निर्देशों का पालन करते समय, उन्हें यह जाँच लेना चाहिए कि क्या वे निर्देश परमेश्वर के वचन के अनुरूप हैं। ठीक इसी कारण से प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 6:1 में कहा: "हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है।" दूसरे शब्दों में, यदि उनके माता-पिता के निर्देश प्रभु की आज्ञाओं के विपरीत

हैं, तो बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं माननी चाहिए; बल्कि, उन्हें उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना चाहिए, क्योंकि ऐसे मामले में आज्ञा मानना "प्रभु में आज्ञा मानना" नहीं होगा। यह हमें प्रेरितों के काम 4:19 में पाए जाने वाले शब्दों की याद दिलाता है: "पतरस और यूहन्ना ने उत्तर देकर उनसे कहा, 'तुम ही न्याय करो कि परमेश्वर की दृष्टि में तुम्हारे बात मानना परमेश्वर की बात मानने से अधिक उचित है या नहीं'" [(समकालीन कोरियाई बाइबल) "तब पतरस और यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'तुम ही तय करो कि परमेश्वर की दृष्टि में तुम्हारी बात मानना परमेश्वर की बात मानने से अधिक उचित है या नहीं'"]। वास्तव में, बच्चों को स्वयं ही यह समझना चाहिए कि क्या परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करते हुए अपने माता-पिता की बातों पर ध्यान देना, परमेश्वर की दृष्टि में सचमुच एक धर्मपूर्ण कार्य है। यदि बच्चों ने यह पुष्टि कर ली है कि उनके माता-पिता के शब्द परमेश्वर के वचन के अनुरूप हैं, तो स्वाभाविक रूप से उन्हें उन शब्दों का पालन करना चाहिए। "क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं" (कुलुस्सियों 3:20)। "क्योंकि यह प्रभु में उचित है" (इफिसियों 6:1)। जो बच्चे प्रभु में विश्वास करते हैं, वे उन्हें खुश करने की अपनी इच्छा से, उनकी इस आज्ञा का पालन करेंगे कि "हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो" (कुलुस्सियों 3:20)—एक ऐसा कार्य जो उनकी दृष्टि में उचित है।

नीतिवचन 23:15–16 में लिखा है: "हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन बुद्धिमान हो, तो मेरा मन सचमुच आनन्दित होगा; जब तेरे होंठ सही बातें बोलेंगे, तो मेरा अंतर्मन हर्षित होगा।" वह बच्चा जो माता-पिता के हृदय में खुशी और आनंद लाता है, वह ऐसा बच्चा होता है जिसका मन बुद्धिमान होता है और जिसके होंठ ईमानदारी की बातें बोलते हैं—यानी, जो सही है। ऐसा बुद्धिमान बच्चा अपने माता-पिता की बातें सुनता है (पद 19, 22)। भले ही वे बातें डांट-फटकार के रूप में हों, वह उन्हें विनम्रता के साथ सुनता है (25:12)। इसके अलावा, वह निरंतर अधिक से अधिक बुद्धि प्राप्त करता है और अपने ही मन को सही मार्ग पर ले जाता है (23:19)। वह कभी भी खुद को गलत राह पर भटकने नहीं देता (पद 20)। इसके अतिरिक्त, एक बुद्धिमान बच्चा अपने माता-पिता का तिरस्कार केवल इसलिए नहीं करता क्योंकि वे बूढ़े हो गए हैं (पद 22)। इसके विपरीत, जो बच्चा अपने माता-पिता का तिरस्कार उनकी वृद्धावस्था के कारण करता है, उसमें बुद्धि की कमी होती है (11:12)। दूसरे शब्दों में, वह मूर्ख है। एक मूर्ख, अबुद्धिमान बच्चा अपने माता-पिता का तिरस्कार इसलिए करता है, क्योंकि वास्तव में वह परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करता है (13:13)। इस पर विचार करें: इफिसियों 6:1 स्पष्ट रूप से कहता

है, “हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है।” फिर भी, मूर्ख बच्चा इस आज्ञा की उपेक्षा और तिरस्कार करता है, और परिणामस्वरूप, वह अपने माता-पिता की आज्ञा मानने में असफल रहता है। मूर्ख, अबुद्धिमान बच्चा न केवल परमेश्वर के वचन का तिरस्कार करता है, बल्कि अपने माता-पिता की बातों के प्रति भी अवमानना का भाव रखता है, और उन्हें सुनने से इनकार कर देता है (23:9)। इस प्रकार का आचरण करना, परमेश्वर की दृष्टि में गलत कार्य करना है। यह परमेश्वर के विरुद्ध पाप करना है (14:21)।

अंत में—चौथी बात—परमेश्वर माता-पिता से क्या कहना चाहते हैं? आज के लिए हमारा शास्त्र-पाठ कुलुस्सियों 3:21 से लिया गया है: “हे पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, कहीं ऐसा न हो कि वे हतोत्साहित हो जाएं।” “अगर चर्च जाने वाले माता-पिता ऐसा व्यवहार करेंगे, तो उनके बच्चे चर्च छोड़ देंगे” शीर्षक वाले एक लेख में यह बात कही गई है: “हालांकि चर्च जाने वाले लोगों की औसत उम्र बढ़ रही है, लेकिन आज कोरियाई चर्च के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि उन युवाओं को कैसे रोका जाए जो विश्वास से दूर होते जा रहे हैं और चर्च छोड़ रहे हैं। चर्च में बढ़ती उम्र वाले लोगों की प्रवृत्ति को रोकने और आने वाली पीढ़ियों—जो विश्वास की विरासत को आगे बढ़ाएंगी—को चर्च के भीतर मज़बूती से स्थापित करने के लिए, बच्चों वाले परिवारों में माता-पिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है” (इंटरनेट)। “इस संबंध में, बच्चों वाले माता-पिता से यह आग्रह किया जाता है कि वे विश्वास का एक सच्चा उदाहरण प्रस्तुत करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके बच्चे चर्च से दूर न हों। इसके विपरीत, यह लेख विश्वास से संबंधित लगभग छह विशिष्ट दृष्टिकोणों की पहचान करता है जिनसे माता-पिता को सख्ती से बचना चाहिए”: (1) चर्च केवल कभी-कभार जाना; (2) चर्च के बारे में शिकायत करना; (3) अपने बच्चों को केवल युवा-उन्मुख संस्कृति तक ही सीमित रखना; (4) अपने बच्चों के महत्वपूर्ण सवालों को नज़रअंदाज़ करना; (5) बार-बार चर्च बदलना; और (6) सुसमाचार को कोई तुच्छ चीज़ समझना। “चर्च एक ऐसा समुदाय है जो मसीह के सुसमाचार पर आधारित है। हालांकि, जब माता-पिता सुसमाचार को महत्वहीन समझते हैं—या इसे अपने जीवन के केंद्र में रखने के बजाय हाशिये पर धकेल देते हैं—तो उनके बच्चे चर्च से कट जाते हैं, जो कि मसीह का शरीर है। यदि माता-पिता अपने बच्चों को यह दिखाते हैं कि चर्च केवल एक ऐसी जगह है जहाँ जाना उनकी मजबूरी है—न कि ऐसी जगह जो उनके जीवन में सुसमाचार-केंद्रित

प्राथमिकता रखती है—तो वे बच्चे भी अपने माता-पिता के उदाहरण का ही अनुसरण करेंगे और सुसमाचार को अपने जीवन के हाशिये पर धकेल देंगे" (इंटरनेट)।

आज के हमारे पाठ—कुलुस्सियों 3:21—को देखते हुए, हम बाइबल को इन शब्दों में हमसे बात करते हुए सुनते हैं: "हे पिताओं, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ, कहीं ऐसा न हो कि वे हताश हो जाएँ।" प्रेरित पौलुस माता-पिता से कहते हैं, "अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ।" या, *द कंटेम्पररी बाइबल* के शब्दों में कहें तो, वे कहते हैं, "हे माता-पिता, अपने बच्चों की भावनाओं को ठेस न पहुँचाओ या उन्हें क्रोधित न करो।" जब मैं इस अंश पर मनन कर रहा था, तो मैंने खुद से यह सवाल पूछा: "क्या हम—माता-पिता के तौर पर—सचमुच अपने बच्चों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील हैं? क्या हम सचमुच उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं?" मुझे लगता है कि यह सवाल इसलिए उठा, क्योंकि मैं खुद भी अक्सर अपने बच्चों की भावनाओं को पूरी तरह समझ नहीं पाता या उनकी भावनाओं में शामिल नहीं हो पाता। तीन बच्चों का पिता होने के नाते, मुझे अब भी यह समझने में मुश्किल होती है कि मैं ऐसा क्या करूँ—या कैसे पेश आऊँ—जिससे डिलन, येरी और यीउन की भावनाएँ आहत हों या उन्हें गुस्सा आ जाए। हालाँकि, एक बात जो मैं *ज़रूर* जानता हूँ, वह यह है कि जब भी मेरी पत्नी और मैं अपने आपसी रिश्ते में प्रभु के प्रेम के साथ एक-दूसरे से प्रेम करने में चूक जाते हैं, तो मेरे बच्चों की भावनाएँ बहुत ज़्यादा आहत होती हैं। इसके अलावा, मेरा मानना है कि जब मैं ईमानदारी भरा जीवन जीने में नाकाम रहा—जहाँ मेरे शब्द और काम एक जैसे नहीं थे—या जब मैंने जल्दबाज़ी में कुछ कहा या किया, तो मैंने उन्हें गुस्सा दिलाया। बेशक, इन मौकों के अलावा, कौन जाने कितनी अनगिनत बार मैंने अपने तीनों बच्चों की भावनाओं को आहत किया होगा या उन्हें गुस्सा दिलाया होगा? फिर भी, असली समस्या यह है कि मैं अक्सर उनकी असली भावनात्मक स्थिति से अनजान ही रहता हूँ।

इफिसियों 6:4 के पहले हिस्से में, प्रेरित पौलुस दोहराते हैं: "हे पिताओं, अपने बच्चों को गुस्सा मत दिलाओ..." [(जैसा कि *द कंटेम्पररी बाइबल* में लिखा है: "हे माता-पिता, अपने बच्चों की भावनाओं को आहत मत करो या उन्हें गुस्सा मत दिलाओ...")] दूसरे शब्दों में, वह माता-पिता को निर्देश देते हैं कि वे अपने बच्चों को गुस्सा न दिलाएँ, उन्हें अपना विरोधी न बनाएँ, और उनके क्रोध को न भड़काएँ। तो फिर, हम—माता-पिता के तौर पर—

अपने बच्चों को गुस्सा कैसे दिला सकते हैं? इसके कई संभावित जवाब हो सकते हैं। उदाहरण के लिए: (1) रोब जमाने वाले तरीके से पेश आना या गुस्सा दिखाना; (2) भड़काऊ या चोट पहुँचाने वाली बातें कहना; (3) गलत तरीके से अनुशासन लागू करना; (4) खुद खराब नैतिक चरित्र वाला जीवन जीते हुए बच्चे की गलतियाँ निकालना; और (5) "यह मान लेना कि, सिर्फ़ माता-पिता होने के नाते, बच्चे उनकी निजी संपत्ति हैं—और इस तरह उन पर बिना शर्त अपना अधिकार जताना, उनके साथ ज़बरदस्ती करना, उनके साथ बुरा बर्ताव करना, या उनकी गरिमा की परवाह न करना" (पी जोंग-जिन)। *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमेंट्री* में छह खास कारण बताए गए हैं कि क्यों पिता अपने बच्चों को गुस्सा दिला सकते हैं या उन्हें निराश कर सकते हैं: (1) अपने शब्दों के मुताबिक काम न करना; (2) अपने बच्चों में लगातार गलतियाँ निकालना और कभी उनकी तारीफ़ न करना; (3) अनुशासन के मामलों में एकरूपता और निष्पक्षता की कमी; (4) घर के भीतर पक्षपात दिखाना; (5) वादे करने के बाद उन्हें तोड़ देना; और (6) बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण मामलों को उदासीनता या हल्केपन से लेना। मेरी राय में, इन बिंदुओं के अलावा, माता-पिता जिस सबसे महत्वपूर्ण तरीके से अपने बच्चों को गुस्सा दिला सकते हैं, वह तब होता है जब माता-पिता खुद एक-दूसरे से प्यार करने में असफल रहते हैं। मेरा मानना है कि बच्चे विशेष रूप से तब नाराज़ होते हैं जब वे देखते हैं कि उनके पिता उनकी माँ से प्यार नहीं करते। वास्तव में, जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, यदि वे देखते हैं कि उनकी माँ को कष्ट हो रहा है, वह संघर्ष कर रही है, या यहाँ तक कि बीमार पड़ रही है क्योंकि उनके पिता उनसे प्यार नहीं करते, तो उनके पास अपने पिता के प्रति गहरी नाराज़गी रखने का हर कारण होता है। इसके अलावा, ऐसी परिस्थितियाँ आसानी से हमारे बच्चों को बहुत अधिक हतोत्साहित कर सकती हैं।

मैंने हाल ही में एक लेख पढ़ा जिसका शीर्षक था, "आप कहते हैं कि हमें अपने बच्चों को गुस्सा नहीं दिलाना चाहिए?" उस लेख का मुख्य उपदेश यह था: "माता-पिता को अपने बच्चों को आत्मविश्वास के साथ बड़ा होने में मदद करनी चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे हतोत्साहित न हों।" तो फिर, किन परिस्थितियों में बच्चे अपने माता-पिता द्वारा आहत महसूस करते हैं और उनके प्रति मन में गुस्सा पाल लेते हैं? हमें इसे समझना होगा ताकि हम बाइबिल की उस आज्ञा का ठीक से पालन कर सकें जिसमें कहा गया है कि हमें अपने बच्चों को गुस्सा नहीं दिलाना चाहिए। क्या यह ऐसी बात नहीं है जिसे हम निभा सकते हैं? इस लेख के लेखक के अनुसार—जिन्होंने कई लोगों से प्रतिक्रियाएँ एकत्र कीं—सामूहिक भावना को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है: "हम तब गुस्सा महसूस करते हैं जब हमारे भाई-बहनों की तुलना में हमारे साथ भेदभाव किया जाता है—चाहे केवल बेटी

होने के कारण हो या विभिन्न अन्य कारणों से; जब हमारे माता-पिता अपने वादे निभाने में असफल रहते हैं; जब हम अपने माता-पिता में पाखंड देखते हैं; जब हमारी पढ़ाई पर अत्यधिक दबाव डाला जाता है; जब हमें उन विषयों को पढ़ने या उन रास्तों को चुनने से रोका जाता है जिन्हें हम चुनना चाहते हैं, और इसके बजाय हमें अपने माता-पिता की मांगों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है; या जब हम पर भारी जिम्मेदारियों का बोझ डाल दिया जाता है, केवल इसलिए कि हम सबसे बड़े बेटे या बेटी हैं।" लेखक टिप्पणी करते हैं, "इन प्रतिक्रियाओं में से, सबसे अधिक लोगों द्वारा जिस बात का ज़िक्र किया गया, वह थी: 'जब हमारे माता-पिता आपस में लड़ते हैं।'" "बच्चों के गहरे रूप से आहत, क्रोधित और निराश महसूस करने का प्राथमिक कारण, वास्तव में, वैवाहिक कलह है। जब माता-पिता आपस में लड़ते हैं तो बच्चों को बहुत गहरी चोट पहुँचती है" (इंटरनेट)। इससे हम इफिसियों 6:4 के दूसरे हिस्से पर आते हैं: “उन्हें प्रभु की शिक्षा और उपदेश में पालो।” प्रेरित पौलुस हमें—माता-पिता के तौर पर—यह बता रहे हैं कि हम अपने बच्चों को शिक्षित करें, उन्हें मज़बूत बनाएँ, और तब तक उनका पालन-पोषण करें जब तक वे परिपक्व न हो जाएँ। यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द “उन्हें पालो” (bring them up) ठीक वही शब्द है जो इफिसियों 5:29 में मिलता है, जहाँ पतियों को अपनी पत्नियों का “पालन-पोषण” करने का निर्देश दिया गया है। दूसरे शब्दों में, इसका मतलब यह है कि एक पिता—घर के आध्यात्मिक अगुवा के तौर पर—न केवल अपनी पत्नी का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी उठाता है, बल्कि अपने बच्चों का भी पालन-पोषण करता है। तो फिर, माता-पिता को अपने बच्चों की परवरिश कैसे करनी चाहिए?

(1) हम माता-पिता को अपने बच्चों का पालन-पोषण “प्रभु के अनुशासन में” करना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, जिस तरह हम माता-पिता पहले प्रभु के अनुशासन के अधीन होते हैं—खुद को सुधारे जाने और तराशे जाने देते हैं—और फिर उस मार्ग पर चलते हैं जिस पर वह चले हैं, ठीक उसी तरह हमें अपने बच्चों का पालन-पोषण भी करना चाहिए। नीतिवचन 22:6 का संदेश यही है: “बालक को उस मार्ग की शिक्षा दे जिस पर उसे चलना है; जब वह बूढ़ा भी हो जाएगा, तब भी वह उससे नहीं हटेगा।” हमें अपने बच्चों को वह मार्ग सिखाना चाहिए जिस पर उन्हें चलना है—यानी बुद्धिमानी का मार्ग, या ईश्वरीय जीवन का मार्ग। शिक्षा के क्षेत्र में, मैं—

भले ही अपूर्ण रूप से—अपने बच्चों और हमारे चर्च के बच्चों में तीन विशेष बातें डालने का प्रयास करता हूँ। ये हैं: (1) सही मूल्य, (2) उद्देश्य की स्पष्ट भावना, और (3) जीवन के प्रति एक अनंत दृष्टिकोण।

(2) हम माता-पिता को अपने बच्चों का पालन-पोषण प्रभु के "निर्देशों" के माध्यम से करना चाहिए।

हम माता-पिता को अपने बच्चों को सलाह, चेतावनी और प्रोत्साहन देना चाहिए—ये सभी प्रेम पर आधारित होने चाहिए। वास्तव में, हमें अपने बच्चों को "निर्देश" कैसे देने चाहिए? अपनी पुस्तक *Shepherding a Child's Heart* में, टेड ट्रिप दो मुख्य तत्वों की पहचान करते हैं: समृद्ध और पूर्ण संवाद (खुलकर बातचीत करना) और "छड़ी" (शारीरिक अनुशासन)। प्रभु के "निर्देशों" के माध्यम से बच्चों का पालन-पोषण करने का अर्थ है, छड़ी के बजाय संवाद पर अधिक ज़ोर देना। तो, हमें अपने बच्चों के साथ बातचीत कैसे करनी चाहिए? इसके तीन मार्गदर्शक सिद्धांत हैं: हमें अपने बच्चों *से* (एकतरफ़ा) बात नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनके *साथ* (आपसी) बात करनी चाहिए। (2) हमें केवल अपने विचार ही व्यक्त नहीं करने चाहिए (जैसा कि नीतिवचन 18:13 में चेतावनी दी गई है); इसके बजाय, हमें अपने बच्चों को *उनके* विचार व्यक्त करने का अवसर देना चाहिए (केवल अपने विचार ही व्यक्त न करें; बल्कि, यह सीखें कि उनके विचारों को कैसे बाहर लाया जाए)। (3) हमें अपने बच्चों को समझने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमारे बच्चे जिन संघर्षों का सामना कर रहे हैं, उनकी वास्तविक प्रकृति को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें अपनी ऊर्जा और प्रयास इस बात को समझने में लगाना चाहिए कि *क्यों* वे अपनी भावनाओं को उस विशेष तरीके से व्यक्त करते हैं।

मैं वचन पर आधारित इस चिंतन को यहीं समाप्त करना चाहूँगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे परिवारों में से हर एक को मज़बूत बनाएँ (देखें मत्ती 16:18)—विशेष रूप से, कि वे हमारे सभी घरों को ऐसे परिवारों के रूप में स्थापित करें जो कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करते हैं। आज के धर्मग्रंथ के अंश—कुलुस्सियों 3:18–21—पर केंद्रित होकर, और "एक ऐसा परिवार जो कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर पिता की स्तुति करता है" विषय के अंतर्गत, हमने उन चार सबकों पर विचार किया है जो परमेश्वर हमारे परिवारों को देते हैं: (1) पत्नियों के लिए परमेश्वर का संदेश है: "पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो, जैसा कि प्रभु में उचित है" [(*आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण*: "पत्नियों, अपने पतियों के अधीन रहो; प्रभु में विश्वासी होने के नाते तुम्हें यही करना चाहिए")]

(कुलुस्सियों 3:18)। (2) पतियों के लिए परमेश्वर का संदेश है: "पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ कठोरता न बरतो" [(*आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण*: "पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो और उनके साथ दुर्व्यवहार न करो")] (कुलुस्सियों 3:19)। (3) बच्चों के लिए परमेश्वर का संदेश है: "बच्चों, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं" [(*आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण*: "बच्चों, हर बात में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो; इसी से प्रभु प्रसन्न होते हैं")] (कुलुस्सियों 3:20)। (4) माता-पिता के लिए परमेश्वर का संदेश है: "पिताओं, अपने बच्चों को कड़वाहट न दो, अन्यथा वे हतोत्साहित हो जाएँगे" [(*आधुनिक अंग्रेज़ी संस्करण*: "माता-पिता, अपने बच्चों को क्रोध न दिलाओ; यदि तुम ऐसा करोगे, तो वे हतोत्साहित हो जाएँगे")] (कुलुस्सियों 3:21)।

जब मैं 2023 में अपने परिवार को पीछे मुड़कर देखता हूँ...

1. यह परमेश्वर के असीम प्रेम और कृपा के कारण ही है कि मेरी पत्नी, मेरे तीन बच्चे और मैं आज के दिन तक सुरक्षित पहुँच पाए हैं।

2. हालाँकि, घर के मुखिया के तौर पर, मैं अक्सर अपनी पत्नी और तीन बच्चों को वैसा प्यार देने में असफल रहा जैसा मुझे देना चाहिए था—यानी सच्चा और सही प्यार—लेकिन प्रभु, जो हमारे घर के सच्चे स्वामी हैं, उन्होंने स्वयं उन्हें प्यार दिया।

3. इस तथ्य के बावजूद कि पिछले पूरे साल मैं अपनी पत्नी के लिए एक पति के तौर पर और अपने तीन बच्चों के लिए एक पिता के तौर पर बहुत पीछे रहा, परमेश्वर अपनी भरपूर कृपा के साथ मेरे साथ बने रहे, और उन्होंने—मेरी कमियों के बावजूद—मुझे आज के दिन तक परिवार के भीतर अपनी सेवा (ministry) जारी रखने में सक्षम बनाया।

4. हालाँकि मेरे पास अपनी पत्नी का पति बनने की, या अपने तीन बच्चों का पिता बनने की कोई जन्मजात योग्यता नहीं है, फिर भी मेरा मानना है कि मेरे पास जो भी योग्यता है, वह पूरी तरह से परमेश्वर की ओर से ही आती है (2 कुरिन्थियों 3:5, *न्यू कोरियन रिवाइज्ड वर्जन*)।

5. मैं सचमुच आभारी हूँ कि प्रभु ने मेरे प्यारे बेटे, डिलन को अपना सेवक बनने के लिए बुलाया; उन्होंने उसका अभिषेक किया, उसे सेवा के लिए अलग किया, और उस बुलाहट के लिए तैयार करने हेतु उसे सेमिनरी में भेजा। इसके अलावा, प्रभु ने डिलन को उस चर्च में कॉलेज सेवा (college ministry) के लिए एक *Jeondosa* (सहायक पादरी) के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया है, जहाँ वह अभी जाता है।

6. मैं इस बात के लिए भी गहरा आभारी हूँ कि प्रभु ने जेसिका को डिलन के जीवन में उसकी जीवन-साथी के रूप में भेजा। इसके परिणामस्वरूप इस साल फरवरी में परिवारों की औपचारिक मुलाकात हुई (जहाँ मेरी पत्नी और मैं जेसिका की माँ से मिले), और उसके बाद दिसंबर में डिलन ने जेसिका को शादी का प्रस्ताव दिया। वे अगले साल के उत्तरार्ध में अपनी शादी करने की योजना बना रहे हैं।

7. अंत में, मैं सचमुच आभारी हूँ कि प्रभु ने मेरी प्यारी बेटी, येरी को एक साल के लिए मिशनरी के तौर पर सेवा करने हेतु दूर जापान भेजा। मैं उन्हें अपना गहरा धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे विश्वास की आध्यात्मिक आँखें दीं, ताकि मैं उन्हें अपना वह वादा पूरा करते हुए देख सकूँ जो उन्होंने मुझसे किया था—वे शब्द जो 1 पतरस 5:10 में मिलते हैं। इसके अलावा, मैं सचमुच आभारी हूँ कि मेरी पत्नी और मैं पिछले अक्टूबर में येरी के साथ समय बिताने के लिए जापान तक की यात्रा कर पाए। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मेरी प्यारी बेटी येरी, मेरी पत्नी और मुझे प्रभु में एक साथ इतनी अनमोल यादें बनाने का अवसर दिया।

8. एक बात जिसके लिए मैं सचमुच आभारी हूँ, वह यह है कि प्रभु ने मेरी प्यारी बेटी, यीउन के हृदय में मिशन (धर्म-प्रचार) के लिए एक विशेष चाह जगाई है। थैंक्सगिविंग की छुट्टियों के दौरान, जब मैं अपनी प्यारी पत्नी और यीउन के साथ अपनी सास और साले से मिलने जा रहा था—जो काफी दूर रहते हैं—तो कार में यीउन ने मुझसे कहा कि उसे लगता है कि उसे विवाह करने के बजाय मिशन के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए बुलाया गया है। यह उस गहरी दृढ़ता को दर्शाता है जो प्रभु ने उसके हृदय में मिशन के प्रति स्थापित की है। मैं सचमुच, हृदय से आभारी हूँ। मैं इस बात के लिए भी आभारी हूँ कि मैंने देखा कि पिछले एक वर्ष के दौरान प्रभु ने यीउन के जीवन में कितने अद्‌भुत तरीकों से कार्य किया है, और मैंने उसकी आध्यात्मिकता और विश्वास में वृद्धि को भी देखा है। जब मैं यीउन के बारे में सोचता हूँ—जो वर्तमान में अपने विश्वविद्यालय के ईसाई क्लब की अध्यक्ष के रूप में सेवा कर रही है—तो मैं बड़ी उत्सुकता के साथ उन कार्यों की प्रतीक्षा करता हूँ जिन्हें प्रभु भविष्य में उसके द्वारा पूरा करेंगे।

9. मैं सचमुच आभारी हूँ कि मेरी प्यारी पत्नी इस पूरे वर्ष बिना किसी दुर्घटना के बिता पाई, और प्रभु में रहते हुए अपनी पसंदीदा गतिविधियों—दौड़ना (मैराथन), हाइकिंग, कैंपिंग, और यहाँ तक कि रॉक क्लाइंबिंग—में

खुलकर हिस्सा ले पाई। हालाँकि वह वर्तमान में कोरोनावायरस से संक्रमित होने के कारण अस्वस्थ है—जिसके चलते वह आज काम पर नहीं जा पाई, चर्च में शामिल नहीं हो पाई, और कल हमारे बड़े परिवार के नए साल के मिलन समारोह में भी शामिल नहीं हो पाएगी—फिर भी मैं इस बात के लिए भी आभारी हूँ, क्योंकि यह उसे उस अत्यंत आवश्यक विश्राम का अवसर प्रदान करता है जिसकी उसे ज़रूरत है। एक पूर्णकालिक नौकरी को घर और चर्च में सेवा-कार्य (ministry) के साथ संतुलित करना—और साथ ही इन विभिन्न गतिविधियों को भी जारी रखना—निश्चित रूप से अत्यंत कठिन रहा होगा; फिर भी, प्रभु ने मेरी पत्नी को स्वास्थ्य प्रदान किया—न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि उसके हृदय और मन को भी और अधिक मज़बूत किया—और इसके लिए, उसके पति के रूप में, मैं परमेश्वर का हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

10. मैं सचमुच और हृदय से आभारी हूँ कि, पिछले पूरे वर्ष के दौरान, प्रभु ने मुझ पर अपनी महान दया, करुणा, अनुग्रह और प्रेम बरसाया है। उन्होंने न केवल मुझे उनके वचन पर अपना व्यक्तिगत ध्यान और अपनी इंटरनेट सेवा जारी रखने में सक्षम बनाया है—जिससे "पाँच रोटियों और दो मछलियों" (यूहन्ना 6:1–15) के संबंध में उनका वादा पूरा हुआ है—बल्कि उन्होंने मुझे 'विक्ट्री प्रेस्बिटेरियन चर्च' की सेवा करने की भी अनुमति दी है, जो उनके चर्च को बनाने के वादे (मत्ती 16:18) के अनुरूप है; और उन्होंने मुझे परिवार के भीतर अपनी सेवा करने के लिए भी सशक्त बनाया है, और मुझे आज के इस दिन तक सुरक्षित पहुँचाया है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने केवल अपनी कृपा और प्रेम के द्वारा, मुझे इस पूरे वर्ष भर इन सभी सेवाओं को करने में सक्षम बनाया है।

निष्कर्ष

मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा की एक ज़ोरदार हवा हम पर बहे, जिससे हमारे हर घर में पुनरुद्धार की लौ तेज़ी से जल उठे। मैं पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा, परमेश्वर के शक्तिशाली वचन के द्वारा—जो एक हथौड़े के समान है—हमारे परिवार के सदस्यों के दिलों की कठोरता को तोड़ डाले; कि वह हमारे ठंडे और उदासीन दिलों को उसी वचन से पिघला दे, जो आग के समान है; और यह कि, परमेश्वर के वचन को आत्मा की तलवार के रूप में इस्तेमाल करते हुए, वह लगातार हमारी अंतरात्मा को भेदता रहे, जिससे हम—यीशु के क्रूस के शक्तिशाली, प्रायश्चित करने वाले लहू पर भरोसा करते हुए—अपने परिवारों के भीतर हर पाप को पहचान सकें, स्वीकार कर सकें, मान सकें और उसका पश्चाताप कर सकें। इसके अलावा, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा—पारिवारिक संकटों के बीच भी—पतियों और पिताओं को प्रेरित करे, जो अपने घरों के मुखिया के रूप में सेवा करते हैं, कि वे सबसे पहले अपने परिवारों के पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करें और पश्चाताप करें। मैं पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा हमारे पतियों को न केवल वैवाहिक झगड़ों के दौरान किए गए पापों का, बल्कि अपने बच्चों के पालन-पोषण में किए गए पापों का भी पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करे; और इसी तरह, वह हमारी पत्नियों को प्रभु में अपने पतियों के अधीन न रहने की अपनी असफलता का पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करे, और हमारी माताओं को अपने बच्चों से परमेश्वर के प्रेम के बजाय, अत्यधिक, विशुद्ध रूप से मानवीय प्रेम करने के पाप का पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करे। इसके अलावा, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा उन बच्चों के पापों को उजागर करे और हमारे संज्ञान में लाए, जो प्रभु में अपने माता-पिता का आदर करने में असफल रहते हैं, साथ ही भाई-बहनों के साथ हमारे संबंधों में किए गए उन सभी पापों को भी, जहाँ हम प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार प्रेम करने में असफल रहे हैं; और यह कि, यीशु के क्रूस के प्रायश्चित करने वाले लहू की शक्ति पर भरोसा करते हुए, हम इन पापों को स्वीकार करें और उनका पश्चाताप करें। अंत में, परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने के बाद, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि—पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में—हम अपने परिवारों के भीतर एक-दूसरे को क्षमा करने

में सक्षम हों। हमारे दिलों में छिपे घावों, दर्द और कड़वाहट के कारण हम अब एक-दूसरे के प्रति नफ़रत न पालें; बल्कि, पवित्र आत्मा के शक्तिशाली कार्य के द्वारा, हम एक-दूसरे को क्षमा करने के लिए सशक्त हों, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने हमें क्षमा किया है। मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा की शक्तिशाली हवा हमारे घर पर बहे, हमें शांति के बंधन में एक साथ बाँधे, और हमें अपने परिवार की एकता को पूरी लगन से बनाए रखने में सक्षम बनाए। मैं पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा हमारे घर के हर सदस्य को इस बात के लिए प्रेरित करे कि वे आपस में फूट डालने वाले न बनें, बल्कि इसके बजाय हमें शांति स्थापित करने वाले बनने की शक्ति दे—ऐसे लोग जो हमारे घर के सौहार्द की सक्रिय रूप से रक्षा करें। पवित्र आत्मा—प्रभु की वही आत्मा जिसने न केवल हमें परमेश्वर के साथ, बल्कि एक-दूसरे के साथ भी मेल कराया है—हमें यह अनुग्रह प्रदान करे कि हम उसके मेल कराने वाले वचन का पालन करें, और पूरी निष्ठा तथा दृढ़ता के साथ मेल कराने की अपनी सेवा को पूरा करें। इसके अलावा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वैवाहिक कलह और विवादों के बीच भी, पवित्र आत्मा हम पति-पत्नी को प्रभु में एक-दूसरे को और भी गहराई से जानने में सक्षम बनाए; हम अपने मतभेदों को स्वीकार करना और उन पर विजय पाना सीखें, और उन विभिन्नताओं को एक-दूसरे की कमियों को पूरा करने का साधन बनने दें, ताकि हम पवित्र आत्मा द्वारा स्थापित एकता को पूरी लगन से बनाए रख सकें—प्रभु में एक हृदय, एक मन और एक प्रेम में एकजुट होकर। भले ही जीवन के बड़े-बड़े तूफ़ान उठें और हमारे परिवार की नाव को डुबोने की धमकी दें, मुझे विश्वास है कि—ठीक नबी योना की तरह, जिसने एक बड़ी मछली के पेट से परमेश्वर को पुकारा था और यह स्वीकार किया था कि "उद्धार प्रभु की ओर से आता है"—हम भी, अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को पूरी लगन से पुकारकर, प्रभु को अपने परिवार का बचाव और उद्धार करते हुए देखेंगे।

मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा की शक्तिशाली हवा हमारे घर पर बहे और हमारे परिवार को उसकी मूल, संपूर्ण अवस्था में बहाल करे। भले ही हम स्वयं अपने प्रयासों से यह बहाली लाने में खुद को असमर्थ पाएँ, मैं पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारे घर के भीतर बहाली का एक चमत्कारी कार्य करे—हमारे परिवार के हर सदस्य को चंगा करे और नया करे, यहाँ तक कि उन्हीं संकटों के माध्यम से भी जिनका सामना हम वर्तमान में कर रहे हैं। चाहे वैवाहिक संबंधों में कोई संकट हो या हमारे बच्चों से जुड़ी कोई चुनौती, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु, अपने अटल प्रेम के साथ, हमारे परिवारों को बहाल करे, और हमें परमेश्वर के उस बहाली करने वाले प्रेम का अनुभव उसकी सबसे गहरी और पूर्णतम सीमा तक करने

में सक्षम बनाए। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारी सभी दर्दनाक भावनाओं, घावों और चोटों को चंगा करे—विशेष रूप से हमें हमारे माता-पिता द्वारा पहुँचाए गए किसी भी नकारात्मक प्रभाव, निशानों या दर्द से मुक्त करे—ताकि हम प्रभु में सच्ची स्वतंत्रता का आनंद ले सकें। मेरा विश्वास है कि प्रभु हमारे परिवारों में से हर एक को दिए गए बहाली के वचन को विश्वासयोग्यता से पूरा करेंगे; भले ही हमारे परिवार अभी अस्थायी कठिनाइयों से गुज़र रहे हों, मुझे भरोसा है कि परमेश्वर के सही समय पर और उनकी दिव्य विधियों के द्वारा, वह निश्चित रूप से हमारे परिवारों को बहाल करेंगे, उन्हें मज़बूत, स्थिर और लचीला बनाएंगे!

मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा की एक शक्तिशाली हवा हमारे घरों से होकर गुज़रे, और परिवार के हर सदस्य को वापस परमेश्वर के वचन पर ही पूरी तरह निर्भर होने के लिए प्रेरित करे। परिणामस्वरूप, मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे परिवारों में से हर एक परमेश्वर के वचन से पूरी तरह से सुसज्जित हो जाए, ताकि हम शैतान की चालाक योजनाओं के खिलाफ लड़ सकें—जो हमारे परिवारों पर लगातार हमला करता रहता है—और विश्वास के द्वारा विजयी होकर उभर सकें। हालाँकि शैतान हमारे परिवारों को तोड़ने के लिए लगातार प्रयास करता है, मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारी रक्षा और सुरक्षा करें, और हमारे परिवारों को यीशु मसीह के सुसमाचार की नींव पर मज़बूती से स्थापित करें, ताकि हम ऐसे मज़बूत और दृढ़ परिवारों के रूप में खड़े रह सकें जो किसी भी प्रलोभन की हवाओं के बीच भी अडिग रहें। इसके अलावा, मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमारे परिवारों में से हर एक को परमेश्वर-केंद्रित, रूपांतरित और ईश्वरीय परिवारों के रूप में निर्मित करें—जो गवाहों के समुदायों के रूप में सेवा करें—ताकि, इस युग में जहाँ परिवार अक्सर टूट जाते हैं, हम मसीह की सुगंध बिखेर सकें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु सबसे पहले हमारे पतियों को—जो हमारे परिवारों के मुखिया और हमारे बच्चों के पिता हैं—परिवार की सेवा के लिए खुद को समर्पित करने में सक्षम करें। वे विश्वासयोग्यता से अपनी प्यारी पत्नियों और बच्चों का पालन-पोषण परमेश्वर के वचन के साथ करें, और उन्हें परमेश्वर के सत्य में पालते हुए, सबसे पहले उन्हें परमेश्वर के अपने प्रेम से प्रेम करना सीखें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि पति और पत्नी एक मसीह-केंद्रित जोड़े के रूप में और अधिक स्थापित हों और विकसित हों, मसीह के उदाहरण का अनुकरण करें; और यह कि, परमेश्वर पर अपना भरोसा रखकर, वे एक-दूसरे पर भी भरोसा करना सीखें। इसके अलावा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि, परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के माध्यम से, वे ऐसे माता-पिता बनें जो अपने बच्चों में विश्वास और सुरक्षा की गहरी भावना पैदा करें। माता-पिता के रूप में, वे अपने बच्चों

का पालन-पोषण विश्वास, प्रेम और आशा में करें—उन्हें स्नेह और वचन दोनों के साथ पोषित करें—और, परमेश्वर के सही समय पर और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, वे अपने बच्चों को दुनिया में भेजने में सक्षम हों। और उन बच्चों के लिए जिन्हें भेजा जाता है: मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने माता-पिता को विश्वास में छोड़कर, परमेश्वर पर और भी अधिक पूरी तरह से निर्भर होना सीखें; ताकि वे प्रभु की पुकार का पालन कर सकें; और अपने माता-पिता के उदाहरण का अनुकरण करते हुए, वे मसीह-केंद्रित सेवकों के रूप में स्थापित और उपयोग किए जा सकें—जो विश्वास से भरे हों और जिनमें प्रभु, उनके कलीसिया और उनके राज्य की सेवा करने का एक दर्शन हो। इसलिए, जहाँ तक मेरा और मेरे घराने का सवाल है, हम केवल प्रभु की ही सेवा करें!

मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा की एक शक्तिशाली हवा हमारे घर पर बहे, जिससे पुनरुद्धार की ज्वालाएँ तेज़ी से और ज़ोर से जल उठें। ठीक वैसे ही जैसे भविष्यवक्ता हबक्कूक ने पुकारा था, "हे प्रभु, इन वर्षों के बीच अपने कार्य को पुनर्जीवित कर," वैसे ही हम भी पूरी लगन से आपसे प्रार्थना करते हैं, हे प्रभु: "हे प्रभु, हमारे घर पर पवित्र आत्मा की एक शक्तिशाली हवा भेज, और हमारे भीतर एक पुनरुद्धार ला!" मैं पूरी लगन से प्रार्थना करता हूँ कि हमारे स्वर्गीय पिता—हमारे अब्बा परमेश्वर—हमारे घर के भीतर की आध्यात्मिक उजाड़ता को करुणा और दया की दृष्टि से देखें; कि वे हमारे पापों और अधर्मों को क्षमा करें; और कि वे हमारे परिवार में चंगाई और बहाली लाएँ। जैसे-जैसे हमारे परिवार के सभी सदस्य अब प्रभु में एक होते हैं और हमारे घर की टूटी हुई नींवों को फिर से बनाते हैं, हम प्रार्थना करते हैं कि पवित्र आत्मा की शक्तिशाली आग—जो हमारी सभी मूर्तियों को भस्म कर देती है—हम पर उतर आए। हे प्रभु, हमारे घर के भीतर पुनरुद्धार की ज्वालाएँ तेज़ी से जलने दे। सत्य का वचन हमारे परिवार को नया करे और उसे रूपांतरित करे। परमेश्वर के अनुग्रह की नदी बहुतायत से बहे और हमारे हर एक घराने में उमड़ पड़े। पवित्र आत्मा की शक्तिशाली हवा अब हम पर बहे, और आपके महिमा से भरा एक नया दिन लेकर आए। हे प्रभु, परमेश्वर का राज्य हमारे घर में आए। परमेश्वर पवित्र आत्मा की शक्तिशाली हवा हमारे हर एक घराने में बहे, और वचन का एक सच्चा पुनरुद्धार लाए; और परिवार का हर सदस्य उस वचन के अधिकार के अधीन हो जाए, ताकि—अपने पूरे हृदय, आत्मा और मन से—हम सब मिलकर अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करें और अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करें। हम धन्यवाद देते हैं कि आप हमारे परिवारों को स्वर्ग की इन दो महान आज्ञाओं का पालन करने के लिए स्थापित कर रहे हैं;

हम ऐसे घराने बनें जो कृतज्ञता से भरे हृदयों के साथ पिता परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं। हम यह पूरी लगन से की गई प्रार्थना यीशु के अनमोल नाम में चढ़ाते हैं। आमीन!